इति द्रोणपर्वसूचीपत्रं समाप्तिं पफाणेति शम्॥

महाभारत भाषा ॥

द्रोणपर्व

जिसमें

द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, दुर्योधनआदि वीरों से अर्जुन, भीमसेन आदिकों का घोरसंग्राम, दुश्शासनसुतकृत अभिमन्यु वध, अर्जुनकृत जयद्रथवध, भगदत्तआदि वीरों का वध व धृष्टद्युम्नकृत द्रोणाचार्यवध आदि वर्णित है.

जिसको,

श्रीमान् भार्गववंशीय मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई.,
ने निज व्यय से आगरा [illegible] पीपलमण्डी निवासी
पण्डित कालीचरणजी [illegible] संस्कृत महाभारत
का भाषानुवाद कराया.

तीसरी बार

लखनऊ.

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध मे
मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छापागया
सन् १९१३ ई० ॥

महाभारत द्रोणपर्व भाषा का सूचीपत्र ॥

महाभारत भाषा द्रोणपर्व ॥

मङ्गलाचरण ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतं प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् । गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् ॥ १ ॥ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाकवीनां वदनारविन्दे । सा शारदा शारदचन्द्रविम्वा ध्येयप्रभा नः प्रतिभां व्यनक्तु ॥ २ ॥ पाण्डवानां यशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्म्मलम् । व्यधायि भारतं येन तं वन्दे वादरायणम् ॥ ३ ॥ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन । तं शारदालब्धवरप्रसादं वन्दे गुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ॥ ४ ॥ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः । कथानुगं मञ्जुलद्रोणपर्व्वभाषानुवादं विदधाति सम्यक् ॥ ५ ॥

अथ द्रोणपर्वणि भाषावार्त्तिकप्रारम्भः ॥

श्रीनारायणजी को और नरोत्तम नररूप को और श्रीसरस्वती देवी को नमस्कार करके जयनाम इतिहास को वर्णन करता हूं जनमेजय बोले कि, हे ब्रह्मर्षे ! उस बुद्धि बल तेज के निधान अतुलपराक्रमी देवव्रत भीष्मजी को पाञ्चालदेशीय शिखण्डी के हाथ से मराहुआ सुनकर १ महाशोकाकुल नेत्र-वाले बड़े पराक्रमी राजा धृतराष्ट्र ने उक्त प्रभाववाले अपने पिता के मरनेपर क्या किया २ और हे तपोधन, भगवन् ! उसका पुत्र दुर्योधन जोकि भीष्म द्रोणाचार्य्य आदिक रथियों की सहायता से बड़े धनुर्द्धर पाण्डवों को विजयकर के राज्य को चाहता था ३ उसने सब धनुषधारियों में विजयरूप भीष्मजी के मरनेपर सब कौरवलोगों समेत जो कुछ मन किया वह सब आप मुझ से वर्णन कीजिये ४ वैशम्पायनजी बोले कि पितामह को मृतक सुनकर चिन्ता और शोक से व्याकुल कौरवों के राजा धृतराष्ट्र ने शान्ति को नहीं पाया ५ तद-नन्तर उस राजा के दुःख और शोच को वारंवार शोचतेहुए अत्यन्त शुद्ध अन्तःकरणवाले सञ्जय युद्धभूमि से लौटकर आये ६ हे महाराज ! अम्बिका के

पुत्र धृतराष्ट्र ने उस युद्धभूमि के डेरों में से हस्तिनापुर में आयेहुए सञ्जय से भी पूछा ७ जब सञ्जय ने भी उनके मरने का सब वृत्तान्त कहा उसको सुनकर अत्यन्त अप्रसन्न और व्याकुलचित्त धृतराष्ट्र अपने पुत्रों की विजय को चाहताहुआ महावेदना युक्त रोगी के समान रुदन करनेलगा ८ और रोदन करने कीही दशा में सञ्जय से यह वचन बोला कि हे तात! महाभयानक कर्म करनेवाले मेरे पिता महात्मा भीष्मजी के बड़े २ शोक विचारों को करके काल से प्रेरित कौरव लोगों ने फिर क्या काम किया ९ अर्थात् उस दुर्जय शूरवीर महात्मा भीष्म के मरनेपर शोक समुद्र में डूबेहुए कौरवों ने कौन सा काम किया १० और हे सञ्जय! महात्मा पाण्डवों की उस तीनोंलोकों को भयभीत करनेवाली ११ असङ्ख्य सेना के बड़े २ राजालोगों ने भी उस देवव्रत भीष्मजी के मरनेपर जो २ काम किया उस सबको भी मुझ से वर्णनकरो १२ सञ्जय बोले कि हे राजन्! देवव्रत भीष्मजी के इसरीति से मरनेपर आप के पुत्रों ने जो २ काम किये उस सब वृत्तान्त को तुम अपने चित्त को सावधान करके मुझ से सुनो १३ हे राजन्! तब सत्यपराक्रमी भीष्मजी के मरनेपर आप के पुत्रों ने और पाण्डवों ने पृथक् २ बड़ा शोच किया १४ वह सब लोग क्षत्रियधर्म्म को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर आश्चर्य्य युक्तहुए हे नरोत्तम! फिर उन अपने धर्म्म की निन्दा करनेवाले लोगों ने महात्मा भीष्मजी को दण्डवत्करके १५ गुप्त ग्रन्थिवाले बाणों से उस अमितकर्मी भीष्मजी के अर्थ उपधान समेत शयनकल्पित किया अर्थात् उक्त असङ्ख्य बाणों सेही शरीर को आच्छादित करके तकिये समेत शयन के लिये शरशय्या को बनाया १६ फिर उन गाङ्गेय भीष्मजी की रक्षाकर के परस्पर में वार्तालाप करतेहुए उनकी प्रतिष्ठापूर्वक परिक्रमा करके १७ क्रोध से अत्यन्त रक्त नेत्र काल से प्रेरित क्षत्रियलोग परस्पर में मिलकर फिर युद्ध करने के निमित्त उपस्थित हुए १८ तदनन्तर आप के पुत्रों की और पाण्डवों की सेना तूरी और भेरी आदि बाजों समेत चली १९ हे राजेन्द्र! दिन के अन्त में गङ्गापुत्र के गिरनेपर क्रोध के आधीन काल से व्यथितचित्त २० भरतवंशियों में श्रेष्ठ आप के पुत्र लोग महात्मा भीष्मजी के बड़े शुभ और हितकारी वचनों को तिरस्कार करके शस्त्रों को उठा २ कर बड़ी शीघ्रता से चले २१ आप के पुत्र के मोह से और भीष्मजी के मरण से सब राजाओं समेत बहुत कौरवलोग काल से प्रेरणा

कियेगये २२ जैसे कि हिंस्रजीवों से व्याप्त वन में ग्वालिये से रहित बकरी और भेड़ें व्याकुल होती हैं उसीप्रकार भीष्मजी के विना अरक्षित और निराशायुक्त वह सब लोग भी अत्यन्त व्याकुलचित्त हुए २३ उस भरतर्षभ के गिरजाने पर कौरवलोगों की सेना ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्रों से रहित और वायु से खाली आकाश होजाता है २४ उस शरशय्या के ऊपर राजा भीष्म के शयनकरने पर सेना ऐसे प्रकार की दिखाई पड़ी जैसे कि असुरों की सेना व खेती आदि से रहित पृथ्वी अथवा असंस्कृतवाणी होती है २५ जैसे कि सुन्दररूपवाली स्त्री विधवा होय व जल से रहित नदी होय अथवा जैसे कि वन में व पर्वत की कन्दरा में सिंह से मरेहुए शरभानाम यूथप के विना भेड़ियों से घिराहुआ पृषतीनाम मृगों का यूथ व्याकुल होता है २६ इसीप्रकार भरतवंशियों में श्रेष्ठ गाङ्गेय भीष्म जी के गिरनेपर भरतवंशियों की सेना महाभयभीत होगई २७ महाबली लक्ष-भेदी वीर पाण्डवों से अत्यन्त पीड़ामान सेना ऐसे स्वरूपवाली होगई जैसे कि संसार की वायु से ताड़ित टेढ़ीहुई नौका महासमुद्र में होती है २८ अर्थात् वह सेना जिसके घोड़े, हाथी, रथ व्याकुल थे और असङ्ख्य मनुष्यों का नाश होगया था वह महादुःखी और मन से उदास होरही थी २९ आशय यह है कि देवव्रत भीष्मजी से रहित होकर उस सेना में राजालोग और भिन्न २ प्रकार के सेना के पुरुष भयभीत होकर पाताल में डूबेहुए के समान होगये ३० उससमय कौरवलोगों ने सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ पराक्रम और युद्ध में भीष्म जी के समान राजा कर्ण को ऐसे स्मरण किया जैसे कि चित्त से चाहेहुए अतिथि को ३१ स्मरण करते हैं और उसी में सब का चित्त ऐसा गया जैसे कि आपत्तियों में फँसेहुए पुरुष का मन बन्धु में जाता है और हे भरतवंशिन्! वहां उन राजाओं ने हे कर्ण! हे कर्ण! ३२ हे राधा के और सूत के पुत्र! कहकर पुकारा और कहा कि इस शरीर त्यागनेवाले भीष्म को हमारा प्रिय-कर्त्ता और रक्षक समझकर वह कर्ण अपने भाइयों समेत दश दिनतक निश्चय कर के नहीं लड़ा उस कर्ण को शीघ्रलाओ विलम्ब न करो वह महाबाहु कर्ण क्षत्रियों के देखते बल और पराक्रम से स्तुतिमान् रथियों की गणनाओं में भीष्म से अर्द्धरथी गिनागया परन्तु वह नरोत्तम अर्द्धरथी नहीं है किन्तु भीष्मजी से द्विगुणित है ३३। ३५ जो शूरों का मानाहुआ रथी और

अतिरथियों में श्रेष्ठ है और जो असुरों समेत देवताओं के साथ युद्ध में युद्धाभिलाषी होकर साहसकरे हे राजन् ! उसने उसी क्रोध से गाङ्गेय भीष्मजी से कहा था कि हे कौरव्य ! मैं तेरे जीतेजी कभी नहीं लड़ूंगा ३६ । ३७ और हे कौरवोत्तम ! इस महायुद्ध में आप के हाथ से पाण्डवों के मरनेपर दुर्य्योधन को पूछकर वनको जाऊंगा ३८ अथवा पाण्डवों के हाथ से आप के स्वर्गाभिलाषी होने पर आप जिनको रथी मानते हो उन सब रथियों को एकही रथ से मारनेवालाहूंगा ३९ वह महाबाहु यशस्वी कर्ण इसप्रकार से कहकर आप के पुत्र के मत से नहीं लड़ा ४० हे भरतवंशिन् ! अतुलबल युद्ध में शूरवीर भीष्म ने पाण्डवों के बड़े २ युद्धकर्ताओं को युद्ध में मारा ४१ फिर उस सत्यसङ्कल्प बड़े तेजस्वी शूर भीष्म के मरनेपर आप के पुत्रों ने कर्ण को ऐसे स्मरण किया जैसे नदी के पार उतरने के अभिलाषीलोग नौका को स्मरण करते हैं ४२ आप के सब युद्धवर्त्ती और दुर्य्योधनादिक पुत्र राजाओं समेत यह कहकर पुकारे कि हाय कर्ण ! हाय कर्ण ! यही समय है उस परशुरामजी के आज्ञावर्ती शस्त्रविद्या में अजेय कर्ण के पराक्रम में हमारा चित्त ऐसे गया जैसे कि नाशहोनेवालों का मन बन्धुओं में जाता है ४३ । ४४ हे राजन् ! वह कर्ण हमलोगों को बड़ेभारी भय से ऐसे रक्षा करने को समर्थ है जैसे कि गोविन्दजी बड़े २ भयों से देवताओं की रक्षाकरने को समर्थ हैं ४५ वैशम्पायनजी बोले कि यह सुनकर राजा धृतराष्ट्र सर्प के समान श्वासों को लेकर उस वारंवार कर्ण के बखान करनेवाले सञ्जय से यह वचन बोले ४६ कि जब तुम्हारा चित्त शरीर से कवच त्याग करनेवाले सूर्य्य के पुत्र कर्ण में गया तब उस कवचत्यागी राजा और सूत के पुत्र को देखा भी है ४७ उस सत्य पराक्रमी कर्ण ने उन व्याकुल दुःखी भयभीत और रक्षा के अभिलाषी कौरवों की इस आशा को कहीं निष्फल तो नहीं किया ४८ उस श्रेष्ठधनुषधारी ने युद्ध में उन की आशा को पूर्ण किया या नहीं अर्थात् भीष्मजी के मरने के पीछे अपने बल पराक्रम से उसने उस खण्ड को पूराकरके दूसरों को भयभीत किया या नहीं क्योंकि हे सञ्जय ! इस लोक में वही अकेला कर्ण पुरुषोत्तम कहा जाता है ४९ । ५० युद्ध में अपने प्राणों को त्यागकर अधिकतर रुदनकर वे पीड्यमान बान्धवों की रक्षा के निमित्त उनके कल्याण को

करके मेरे पुत्रों को विजयरूपी आशा को भी सफल किया या नहीं ॥ ५१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिधृतराष्ट्रसञ्जयसंवादेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! तब धनुषधारियों में अत्यन्तश्रेष्ठ शत्रुओंको जीतने वाला वह सूत का पुत्र कर्ण उन पुरुषों के इन्द्र अजेय शन्तनु के पुत्र महारथी अथाह समुद्र में डूबतेहुए कौरवों के नौकारूप भीष्म को गिराया और मराहुआ सुनकर अपने निज सहोदरभाईके समान आपके पुत्र की सेना को कठिन दुःखों से छुटाने का अभिलाषी होकर अकस्मात् समीप आया १ । २ शत्रुओं के हाथ से समुद्र में डूबजानेवाली नौका के समान रथियों में श्रेष्ठ भीष्मके मरनेपर आप के पुत्र की सेना को दुःख समुद्र से तारने की इच्छा करताहुआ शीघ्रतापूर्वक कौरवों के पास ऐसे आया जैसे कि पुत्रों को डूबते देखकर उनके निकालने की अभिलाषा से पिता आता है ३ कौरवों के पास आकर कर्ण यह वचन बोला कि जिस भीष्म में धैर्य्य, बल, बुद्धि, प्रताप, सत्यता, स्मरणता, वीरों के सम्पूर्ण गुण, अशेष दिव्य अस्त्र, सन्नति, लज्जा, प्रियभाषणता और दूसरों के गुणों में दोष न लगाना आदि अनेक गुण हैं उस सदैव कृतज्ञ और ब्राह्मणों के शत्रु-संहारी में यह सब गुण इस रीति से प्राचीन हैं जैसे कि चन्द्रमा में लाञ्छनरूप चिह्न होताहै जो वही शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला शान्त होगया तो मैं अन्य सब वीरों को भी मृतक के ही समान समझता हूं ४ । ५ यहां कोई भी अविनाशी नहीं है इस लोक में कर्म्म के विनाशमान होने से इस महाव्रत भीष्म के मरने पर सूर्य्योदय के समय अपनी वर्तमानता को कौन निस्सन्देह करसक्ता है ६ अष्टवसुनाम देवताओंके अंश और वसुओं कीही शक्तिसे प्रकट होनेवाले राजा भीष्म को वसुओं से एकता होने पर धन पुत्रों समेत पृथ्वी और कौरवों को और इस सेना को सोचो अर्थात् इनकी चिन्ताकरो ७ सञ्जय बोले कि बड़े प्रभाववाले वर के दाता लोकेश्वर शासनकर्ता प्रतापों से पूर्ण भीष्म के गिराने व भरतवंशियों के पराजय होनेपर उद्विग्नचित्त होकर अश्रुपातों को डालतेहुए कर्ण ने अत्यन्त श्वासें लीं ८ हे राजन्! आप के पुत्र और सेना के मनुष्यों ने कर्ण के इस वचन को सुनकर परस्पर में बारंबार मोह से उत्पन्न होनेवाले शब्द किये और सब लोगों ने शब्दों को करतेहुए अश्रुपातों को भी डाला ९ फिर

राजाओं से मँझाईहुई सेना में महायुद्ध के वर्तमान होनेपर वह महारथियों में श्रेष्ठ अतुलपराक्रमी कर्ण उत्तम रथियों की प्रसन्नता का बढ़ानेवाला वचन बोला १० कि सदैव अहर्निश व्यतीत होनेवाले इस विनाशवान् संसार के मध्य में अब अत्यन्त शोचताहुआ मैं किसी को अविनाशी नहीं देखता हूं यहां आप लोगों के नियत होनेपर पर्वत के समान महातेजस्वी कौरवोंमें श्रेष्ठ भीष्मजी युद्ध के मध्य में किसरीतिसे गिरायेगये ११ पृथ्वीतल में वर्तमान सूर्य्यके समान महारथी भीष्मजी के गिरने पर राजालोग अर्जुन के सहने को ऐसे समर्थ नहीं हैं जैसे कि पर्वतपर चलनेवाले वायु के वेग को वृक्ष नहीं सहसके १२ निश्चय करके यह कौरवों की सेना जिसका कि अधिपति मारागया वह शत्रुओं के हाथ से साहस को त्याग महादुःखी होकर अनाथ होरही है वह सब सेना युद्ध के मध्य में मुझसे उसीप्रकार रक्षाके योग्यहै जैसे कि उस महात्मा भीष्मजीसे रक्षित थी १३ जोकि मैंने अपने ऊपर इस प्रकार का भार अच्छे प्रकार से नियत किया है इस हेतु से इस जगत् को भी अविनाशी देखता हूं जो युद्ध में कुशल भीष्मके युद्ध में गिरने से भय उत्पन्न हुआ है वह भय मैं नहीं दिखाऊंगा मैं उन कौरवोंमें श्रेष्ठ पुरुषों को युद्ध के मध्य में सीधे चलनेवाले बाणोंसे ढकता यमलोक में पहुँचता हुआ संसार में बड़े यश को उत्पन्न करके कर्मवर्त्ती हूंगा अथवा शत्रुओं के हाथ से मरकर पृथ्वीपर शयन करूंगा १४।१५ संसार में सत्यसङ्कल्प युधिष्ठिर और दशहज़ार हाथी के समान पराक्रमी भीमसेन और बली तरुण अवस्थावाला अर्जुनभी इन्द्रका पुत्रहै इसलोकमें वह पाण्डवों की सेना देवताओंसमेत इन्द्र से भी सुगमतापूर्व्वक विजय होने के योग्य नहीं है १६ जिस युद्धमें बलमें अश्विनीकुमारों की समानता रखनेवाले नकुल और सहदेव हैं और जिसमें सात्यकी समेत श्रीकृष्णजी हैं उसी सेना के सम्मुख आनेवाला नपुंसक मृत्युके मुख से जीवता नहीं लौटता है १७ बड़ा तपस्याहीसे शान्त और विजय होताहै इसीप्रकार बड़ेसाहसी प्रतापी पुरुषों की सेनासे सेना पीड़ा पातीहै निश्चय करके मेरा चित्त शत्रुओंके पराजय करने और अपनी रक्षामें चलायमान के समान नियत है १८ हे सूत ! अब मैं जाकर उन सबके प्रभावको इस प्रकारसे मथनकरके विजय करता हूं यह मित्र के साथ शत्रुता मुझ से सहनेके योग्य नहीं है क्योंकि सेना के आगे होकर सम्मुखताकरे वही मित्रहै १९ अब मैं सत्पुरुषोंके इस कर्म को करना

चाहता हूं और प्राणों को छोड़कर भीष्मजी केही साथ जाऊंगा मैं युद्ध में शत्रुओं के सब समूहों को मारूंगा अथवा उनके हाथसे मरकर वीरों के लोकोंको पाऊंगा २० दुर्योधन का पराक्रम न्यून और हतहोने वा अतिशय प्रत्युत्तर में और स्त्रीसमेत कुमारों के रोदन करनेपर मुझको युद्धकर्म करना योग्यतापूर्व्वक उचित है हे सूत ! मैं यह जानता हूं इसी हेतु से अब मैं राजा दुर्योधन के शत्रुओं को विजय करूंगा २१ मैं इस महाभयकारी युद्ध में कौरवों की रक्षा करता और पाण्डवों को मारता अपने प्राणों की आशा छोड़ लड़ाई में शत्रुओं के सब समूहों को मारकर दुर्योधन के अर्थ राज्य को दूंगा २२ मेरे उस कवच को बांधो जोकि उज्ज्वल सुवर्णमय महाअपूर्व्व होकर मणि रत्नादिकों से प्रकाशमान है और सूर्य्य के समान प्रकाशित शिरस्त्राण को और अग्नि वा विष के समान धनुष बाणों को २३ सोलह उपासंगों समेत रथपर लगाओ और इसीप्रकार मेरे दिव्य धनुषों को लाओ इसके विशेष खड्ग शक्ति वा भारी २ गदा और सुवर्ण जटित प्रकाशमान शङ्खों को लाओ २४ इस स्वर्णमयी अपूर्व्व नागकक्षा को और कमल के समान शोभायमान ध्वजा को और अच्छी बँधीहुई अद्भुत माला को शुद्ध वस्त्रों से स्वच्छ करके जाल समेत लाओ २५ हे सूतपुत्र ! श्वेत बादल के समान प्रकाशमान हृष्ट पुष्ट शरीरवाले मन्त्रों से पवित्र कियेहुए जलों से स्नान कराये व सन्तप्त कियेहुए सुवर्णपात्रों से युक्त शीघ्रगामी घोड़ों को तुरन्त लाओ २६ स्वर्णमयी मालाओं से अलंकृत सूर्य्य चन्द्रमा के समान प्रकाशमान रत्नों से जटित युद्ध के योग्य घोड़ों से युक्त आलस्य को दूर करनेवाले द्रव्यों सहित उत्तम रथ को शीघ्र वर्तमान करो २७ वेगवान् विचित्र धनुष व अच्छे प्रकार बांधने के योग्य प्रत्यञ्चाओं को और २ बाणों से भरेहुए बड़े २ तूणीरों को व कवचों को पाकर लाओ २८ यात्रा का सब सामान शीघ्र लाओ और हे वीर ! दही से भरेहुए सुवर्ण और कांस्यपात्र लाओ माला को लाकर अङ्ग में बाँधकर शीघ्रता से विजय के निमित्त भेरीको बजाओ २९ हे सूत ! तू वहांपर बड़ी शीघ्रता से चल जहांपर अर्जुन, भीमसेन, युधिष्ठिर और नकुल, सहदेव हैं मैं युद्ध में सम्मुख होकर उनको मारूंगा अथवा शत्रुओं के हाथ से मरकर भीष्म जी के साथ जाऊंगा ३० जिस सेना में सत्य धैर्य्यवाला राजा युधिष्ठिर नियत है और भीमसेन, अर्जुन, सात्यकी, सब सृञ्जय और वासुदेवजी नियत हैं वह सेना

अन्य राजाओं से अजेय है ऐसा मैं मानता हूं २१ यद्यपि युद्ध में सब का मारनेवाला काल बड़ी सावधानी से उस अर्जुन की चारों ओर से रक्षा करता है तो भी मैं संग्राम में सम्मुख होकर मारनेवाला हूं व यमराज के निमित्त भीष्म जी के साथ जाऊंगा २२ मैं उन शूरलोगों के मध्य में नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं कहता हूं कि उसमें मित्र से शत्रुता करना है जो अल्पपराक्रमी और पापात्मा हैं वे मेरे सहायक नहीं हैं २३ सञ्जय बोले कि रत्नादि से जटित दृढ़ स्वर्णमयी शुभकारी कूबर रखनेवाली पताका धारण किये वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त उत्तम रथपर बैठकर विजय के निमित्त चला २४ तब जैसे कि देवताओं के समूहों से इन्द्र पूजित होता है उसीप्रकार कौरवों से अच्छे प्रकार पूजित महात्मा रथियों में श्रेष्ठ भयानक धनुषधारी कर्ण बड़ी सेनासमेत ध्वजाधारी सुवर्ण, मोती और मणि रत्नों की मालाओं से युक्त उत्तम घोड़ोंसहित बादल के समान शब्दायमान अग्नि के समान प्रकाशमान शुभरूप और लक्षणों से शोभित रथ पर नियत होकर उस युद्धभूमि में शोभित हुआ जहां पर कि भरतर्षभ राजा दुर्योधन का निवासस्थान था अर्थात् उस स्थानपर ऐसे शोभित हुआ जैसे कि विमान में नियत होकर सब देवताओं में इन्द्र शोभित होता है ॥ २५ । २७ ॥

इति श्री महाभारतेद्रोणपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, उस बड़े प्रतापी तेजस्वी महात्मा शरशय्यापर सोनेवाले बड़े वायु समूह से शुष्क समुद्र के समान १ सब क्षत्रिय कुलों के नाशकर्त्ता बड़े धनुषधारी अर्जुन के दिव्य अस्त्रों से गिरायेहुए गुरुरूप भीष्म पितामह को देखकर आप के पुत्रों की विजय और सुख वा कल्याण की आशा सब नष्ट होगई २ अतलस्पर्श समुद्र में थाह चाहनेवाले और पार न पहुँचनेवाले द्वीप और यमुना जी के सोत के समान बाणों के समूहों से भरेहुए ३ महेन्द्र के हाथ से गिरायेहुए असह्यता के योग्य मैनाक पर्वतके समान प्रकाशित और आकाश से गिरकर पृथ्वीतल में पड़ेहुए सूर्य्य के समान देदीप्यमान ४ और पूर्वसमय में वृत्रासुर से विजय किये हुए अचिन्त्य इन्द्र के समान भीष्म को जिसका कि युद्ध में गिरनाही सब सेना का मोहित करना है ५ सब सेना के प्रधान और सब धनुषधारियों के ध्वजारूप अथवा अर्जुन के उत्तम बाणों से विदीर्ण शरीर वीर शय्यापर शयन

करनेवाले पुरुषोत्तम वीर उस मेरे और भरतवंशियों के पिता भीष्मको इस बड़े तेजस्वी अधिरथी कर्ण ने देखकर ६ । ७ महापीड़ायुक्त अश्रुपातों समेत गद्गद वाणी से युक्त कर्ण रथ से उतर दण्डवत्कर हाथ जोड़कर प्रशंसा करता हुआ यह वचन बोला ८ हे भरतवंशिन्! मैं कर्ण हूं आप का शुभ होय अब आप पवित्रता और कल्याणसंयुक्त वचनों से मेरे सम्मुख वार्तालाप करिये और नेत्रोंसे देखो ९ निश्चय करके इस लोक में कोई पुरुष उत्तम कर्म के भोग को नहीं भोगता है जिस स्थानपर कि धर्म को उत्तम जाननेवाले आप वृद्ध पृथ्वीपर सोते हैं १० हे कौरवों में श्रेष्ठ! मैं कौरवों की बाण्नागारकी सम्मत की व्यूह को और शस्त्र चलाने की वृद्धि में किसी दूसरे को नहीं देखता हूं ११ अत्यन्त पवित्र बुद्धिसे युक्त जो भीष्म कौरवों को भय से तारनेवाला था वह बहुत से युद्धकर्त्ताओंको मारकर अब पितृलोक को जायगा १२ अबसे लेकर अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव लोग कौरवों के कुल का ऐसे नाश करेंगे हे भरतवंशिन्! जैसे कि व्याघ्र मृगों का नाश करते हैं १३ अब अर्जुन के गाण्डीव धनुष के पराक्रम और सामर्थ्य के जाननेवाले कौरव ऐसे भयभीत होंगे जैसे कि वज्रधारी इन्द्र से असुर भयभीत होते हैं १४ अब गाण्डीव धनुष से छोड़ेहुए वज्र के समान बाणों के शब्द कौरवों को और राजाओं को भयभीत करेंगे १५ हे वीर! जैसे कि बड़ी वृद्धिमान् और अत्यन्त प्रचण्ड अग्नि वृक्षों को भस्म करडालती है उसी प्रकार अर्जुन के बाण भी धृतराष्ट्र के पुत्रों को भस्म करेंगे १६ वन के मध्य में वायु और अग्नि एक साथ जिस २ मार्ग से चलते हैं उस २ गति से बहुतसे गुल्म तृण और वृक्षादिकों को जलाते हैं १७ और जिस प्रकार की अग्नि है उसी प्रकार का अर्जुन भी निस्सन्देह उत्पन्न हुआ है और हे नरोत्तम! जैसा कि वायु होता है उसी प्रकार के निस्सन्देह श्रीकृष्णजी हैं १८ हे भरतवंशिन्! पाञ्चजन्य शङ्खके बजानेपर और गाण्डीव धनुष के शब्दायमान होतेही सब सेनाके लोग उस शब्द को सुनकर भयभीत होंगे १९ हे वीर, भीष्मजी! शत्रुओं के जीतने वाले वानरध्वज अर्जुन के रथके दौड़नेपर आपके सिवाय अन्य राजालोग उस शब्द के सहने को समर्थ नहीं होंगे २० आपके सिवाय दूसरा कौनसा राजा अर्जुन से लड़ने के योग्य है क्योंकि उस अर्जुन को सब बुद्धिमान् लोग दिव्य-कर्मी कहते हैं २१ जिसका अमानुषी युद्ध शिवजी के साथ ऐसा हुआ जोकि

बुद्धि से बाहर था और उन शिवजी से वह वरपाया जोकि अपवित्रात्मा पुरुषों से कठिनता से भी प्राप्त करना असम्भव है २२ उसको युद्ध में कौन पुरुष विजय करने को समर्थ है जिस आपके भुजबल के पराक्रमसे क्षत्रियों के नाशकर्त्ता और देवता दानवों के भी अहङ्कारों के दूर करनेवाले भयकारी परशुराम जी विजय हुए २३ ऐसे महापराक्रमी आपसे भी वह अर्जुन नहीं विजय हुआ अब मैं आपकी आज्ञानुसार युद्ध में महाप्रबल और कुशल बुद्धिमान् पाण्डव अर्जुन को न सहकर अपने अस्त्रों के बल से उस सर्प के समान विषैले दृष्टिके आकर्षण करनेवाले बड़े भयकारी शूरवीर के मारने को समर्थ हूंगा ॥ २४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, कौरवों के वृद्ध पितामह प्रसन्नचित्त भीष्मजी उस विलाप को करतेहुए कर्ण से देश काल के समान वचन बोले १ जैसे कि नदियों के समुद्र प्रकाश करनेवालों के सूर्य सत्यता के सन्तलोग बीजों की पृथ्वी और जीवों का आश्रयस्थान और प्रतिष्ठारूप बादल हैं उसीप्रकार मित्रों में तेरी प्रतिष्ठा है और बान्धवलोग तेरे पास ऐसे जीविकासहित निर्वाह करते हैं जैसे कि देवतालोग इन्द्र के पास अपना निर्वाह करते हैं २ । ३ शत्रुओं के मान का तोड़नेवाला और मित्रों के आनन्द का बढ़ानेवाला होकर कौरवों के वैसी गति रूप हो जैसे कि देवताओं की गति विष्णु भगवान् होते हैं ४ हे दुर्योधन की विजय चाहनेवाले, कर्ण ! तुम ने राजपुर को जाकर अपने भुजबल और पराक्रम से काम्बोजदेशीय विजय किये ५ और गिरिव्रज में वर्तमान होकर नग्नजित आदिक राजा और अम्बष्ठदेशीय, विदेहदेशीय और गान्धारदेशीय राजाओं को भी विजय किया ६ हे कर्ण ! पूर्वसमय में हिमालय पर्वत के दुर्गम स्थानों के रहनेवाले युद्ध में महानिर्दय किरातलोगों को भी तुम्हीं ने दुर्योधन के आज्ञावर्ती किये ७ तुम्हीं ने उत्कलदेशीय, मेकलदेशीय पौण्ड्र, कलिङ्ग, आन्ध्र, निषाद, त्रिगर्त्त और बाह्लीकदेशीय भी युद्ध में विजय किये ८ हे दुर्योधन के प्रिय चाहनेवाले, बड़े तेजस्विन्, कर्ण ! तुमने जहां तहां युद्धमें अन्य २ अनेक वीरों को भी विजय किया ९ हे तात ! जैसे दुर्योधन ज्ञातिकुल और बान्धवों समेत हैं उसी प्रकार तुम भी सब कौरवों

की गति हो १० मैं तुझ को आनन्दपूर्वक कहता हूं कि तुम जाओ और शत्रुओं के साथ युद्धकरो और लड़ाईमें कौरवों के शिक्षक होकर दुर्योधनको विजय दो ११ जिस प्रकार दुर्योधन है उसी प्रकार तुम भी हमारे पौत्र की समान हो और हम जिस प्रकार दुर्योधन के हैं उसी प्रकार से तुम्हारे भी हैं १२ हे नरोत्तम! ज्ञानीलोगों का कथन है कि अच्छे लोगों की मित्रता जो सत्पुरुषों के साथ होती है वह नातेदारी आदि से भी अधिक है १३ सो मेरा यह निश्चय किया हुआ है कि तुम सच्ची प्रीतिकरके कौरवों की सेनापर ऐसी प्रीति करो जैसे कि दुर्योधन करता है १४ सूर्य का पुत्र कर्ण भीष्मजी के वचनों को सुनकर उनके चरणों को दण्डवत्करके सब धनुषधारियों के सम्मुख गया १५ और सेना के समूहवर्ती पुरुषों को अनुपम उत्तम सभा को देखकर नियत हुआ तब उसको देखकर दुर्योधनादिक सब कौरवलोग प्रसन्न हुए १६ उस महात्मा युद्धोत्सुक सेना के अग्रवर्ती महाबाहु कर्ण को समीप आया हुआ देखकर १७ कौरवों ने सिंहनाद व भुजदण्डों के शब्द और अनेक प्रकार के धनुषों के शब्दों के द्वारा उस कर्ण की अच्छीरीति से प्रतिष्ठा करी ॥ १८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! उस पुरुषोत्तम कर्ण को रथ में सवार और नियत देखकर प्रसन्नचित्त दुर्योधन इस वचन को बोले १ कि आप से रक्षित और पोषित सेना को सनाथ जानता हूं यहां आप अपने चित्त से जिस बात को श्रेष्ठ और प्रियकारी जानते हो उसीको करो २ कर्ण बोले कि, हे पुरुषोत्तम, राजन्, दुर्योधन! तुम बड़े बुद्धिमान् हो जैसे कि अर्थपति अर्थात् प्रयोजनवाला पुरुष कहता है उसी प्रकार तुम अपने प्रयोजन की बात को कहो ३ हे राजन्! हम सब लोग आपके वचनों के सुनने के अभिलाषी हैं आप न्याय के विपरीत वचनों को नहीं कहोगे यह मेरा सिद्धान्त है ४ दुर्योधन बोले कि, जैसे आयुर्बल शास्त्र और ज्ञान से पूर्ण सब युद्धकर्ताओं के समूहों से युक्त भीष्मजी सेनापति हुए ५ हे कर्ण! उस वृद्ध और मेरे शत्रुसमूहों के मारनेवाले महात्मा ने अच्छीरीति के युद्धों को करके दशदिनतक हमलोगों की रक्षाकरी ६ उस

कठिनकर्म करनेवाले भीष्म के स्वर्गवासी होने पर अब किस को सेनापति करने के योग्य मानते हो ७ विनास्वामी के सेना एक मुहूर्त्तमात्र भी युद्ध में ऐसे नियत नहीं रहसक्की ८ जैसे कि मल्लाह से रहित नौका जल में नहीं रह सक्की ९ जैसे कि कर्णधार से रहित नौका और जैसे सारथी न रखनेवाला रथ इच्छा के अनुसार अर्थात् स्वेच्छाचारी होकर चलते हैं इसी प्रकार के सेनापति के विना सेना भी स्वतन्त्र होकर स्वेच्छाचारी अपने से छिन्न भिन्न होजाती है १० जैसे कि परदेश को न जानेवाला व्यापारी सब दुःखों को पाता है उसी प्रकार विना सेनापति के सब सेना भी सब प्रकार के दोषों को पाती है सो आप यहां हमारे सब महात्मा शूरवीरों में से किसी महात्मा पुरुष को भीष्मजी के पीछे सेनापति के अधिकार के योग्य देखो ११ आप जिसको युद्ध में सेनापति के योग्य कहोगे उसीको हम साथवाले सेना का स्वामी बनावेंगे १२ कर्ण बोले कि, ये सब महात्मा शूरवीरलोग निस्सन्देह सेनापति के योग्य हैं इसमें किसी प्रकार का भी विचार न करना चाहिये १३ ये सब कुलीन, शरीर, ज्ञान, बल, पराक्रम, बुद्धि और शास्त्रज्ञ होकर युद्ध में मुख को न मोड़नेवाले हैं १४ परन्तु वे सब एकसाथही अधिपति सेनाधीश करने के योग्य नहीं हैं इन सब में से अनेक गुणवाला एकही सेनापति करना उचित है १५ जो इन परस्पर ईर्षा करनेवालों में से किसी एक को स्वामी बनाओगे तो प्रकट है कि बाकीबचेहुए शेष शूरवीर प्रसन्न होकर आप के अभीष्ट को नहीं करेंगे १६ ये सब युद्धकर्ताओं के गुरु वृद्ध द्रोणाचार्यजी सेनापति करने के योग्य हैं १७ इस अजेय शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शुक्र और बृहस्पतिजी के दर्शन के समान द्रोणाचार्यजी के सिवाय दूसरा कौन सेनापति होने के योग्य है १८ हे भरतवंशिन् ! सब राजाओं में ऐसा कोई तेरा शूरवीर भी नहीं है जो युद्धभूमि में लड़ाई के निमित्त जानेवाले द्रोणाचार्य के साथ जाय १९ हे राजन् ! यह आप के गुरु सब सेनापतियों में श्रेष्ठ हैं यही सब शस्त्रधारियों में उत्तम हैं यही बुद्धिमानों में भी अधिक हैं २० हे दुर्योधन ! इस विचार से आचार्यजी को शीघ्रही सेनापति करना चाहिये जैसे कि असुरों के विजय करने के लिये देवताओं ने कार्त्तिकेयजी को सेनापति किया उसी प्रकार तुम इन द्रोणाचार्यजी को सेनापति करो ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, राजा दुर्योधन कर्ण के इस वचन को सुनकर सेना के मध्य में वर्तमान द्रोणाचार्यजी से यह वचन बोले १ वर्णों में उत्तमता, कुल की उत्पत्ति, शास्त्र, अवस्था, बुद्धि, पराक्रम, चतुराई, अजेयता, अर्थज्ञता, बुद्धित्व, तप, उपकारज्ञता, सर्वगुणविशिष्टता इत्यादि गुणों से युक्त आपके समान योग्य और सेना का रक्षक राजाओं में कोई दूसरा वर्तमान नहीं है २।३ सो आप हमको ऐसे रक्षाकरो जैसे कि इन्द्र देवताओं की रक्षा करता है हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! आपकी आज्ञा के अनुसार हमलोग शत्रुओं को विजय करना चाहते हैं ४ जैसे कि रुद्रों का स्वामी कापाली, वसुओं का अग्नि, यक्षों का कुबेर, मरुत नाम देवताओं का इन्द्र ५ ब्राह्मणों का वशिष्ठ, प्रकाशमानों का सूर्य, पितरों का धर्म, देवताओं का इन्द्र, जल के जीवों का वरुण ६ नक्षत्रों का चन्द्रमा और दिति के पुत्रों का स्वामी शुक्र है इसी प्रकार सेनापतियों में श्रेष्ठ आप हमारे सेनापति हूजिये ७ हे पापों से रहित! यह ग्यारह अक्षौहिणी आपकी आज्ञानुवर्ती होंगी इन सब सेनाओं के साथ व्यूह को रचकर शत्रुओं को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र दानवों को मारता है ८ आप हमलोगों के आगे ऐसे चलो जैसे कि देवताओं के आगे अग्निदेवता चलते हैं और हम युद्धभूमि में आपके पीछे ऐसे चलेंगे जैसे कि गौओं के साथ उनके बच्चे बैल चलते हैं ९ अथवा जैसे पिता के साथ पुत्र चलते हैं हे शत्रुओं के भयभीत करनेवाले, बड़े उग्र धनुषधारिन्, गुरु, महाराज! आप दिव्य धनुष को टङ्कोरतेहुए आगे हूजिये आपको देखकर अर्जुन कभी प्रहार न करेगा १० हे पुरुषोत्तम! जो आप सेनापति होंगे तो निश्चय करके युद्ध में उसके बान्धव और सब साथियों समेत युधिष्ठिर को विजय करूंगा ११ सञ्जय बोले कि उसके इस प्रकार कहनेपर राजालोग बड़े सिंहनाद से आपके पुत्र को प्रसन्न करते हुए द्रोणाचार्यजी से यह वचन बोले कि विजय कीजिये १२ और प्रसन्नतासे युक्त बड़े यश की अभिलाषा करते सेना के मनुष्यों ने दुर्योधनके आगे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य की बड़ी प्रशंसा करी इसके पीछे द्रोणाचार्यजी दुर्योधन से बोले ॥ १३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

द्रोणाचार्य बोले कि, मैं छः अङ्ग रखनेवाले वेद को और मनुष्यों के अर्थ विद्या अर्थात् देशप्रबन्धनी विद्याको और पाशुपत बाण अस्त्र और अन्य नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों को जानता हूं १ और विजयाभिलाषी आपलोगों ने भी जो २ गुण मुझमें वर्णन किये हैं उन सब को करने का अभिलाषी होकर मैं पाण्डवों से लडूंगा २ परन्तु हे राजन्! मैं किसी दशा में भी युद्ध के मध्य में धृष्टद्युम्न को नहीं मारसकूंगा क्योंकि वही पुरुषोत्तम मेरे मारने के निमित्त उत्पन्न कियागया है ३ मैं सब सोमकों का नाश करता हुआ सेनाओं से लडूंगा और पाण्डव प्रसन्नतापूर्वक मुझ से नहीं लड़ेंगे ४ सञ्जय बोले कि हे राजन्! इसके अनन्तर इस रीति से उनके आज्ञावर्ती होनेवाले आप के पुत्र ने शास्त्रमें देखेहुए कर्म के द्वारा द्रोणाचार्य को सेनापति बनाया ५ फिर उन सब राजाओं ने जिनमें अग्रगामी दुर्योधन था द्रोणाचार्यजी को सेना के सेनानीपद पर इस रीति से अभिषेक किया जैसे कि पूर्वसमय में इन्द्रादिक देवताओं ने स्कन्द जी को किया था ६ तब द्रोणाचार्य के सेनापति करने पर बड़े २ बाजे और शङ्खों के शब्दों के द्वारा प्रसन्नता प्रकटकरी ७ इसके पीछे पुण्याहवाचन के घोष स्वस्तिवाचन के शब्द सूत मागध वन्दियों के स्तव गीत वाद्य के शब्द उत्तम ब्राह्मणों के जयशब्द विजयशब्द और शुभाङ्गनाओं के नृत्य से बुद्धि के अनुसार द्रोणाचार्यजी का सत्कार करके पाण्डवों को पराजित माना ८ । ९ सञ्जय बोले कि फिर महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्यजी सेना की अधिपता को पाकर युद्धाभिलाषी सेनाओं को अलंकृत करके आपके पुत्रों के साथ चले १० सिन्धु का राजा और कलिङ्गदेश का राजा और आपका पुत्र विकर्ण दाहिने पक्ष में वर्तमान होकर शस्त्रों से अलंकृत अच्छीरीति से नियत हुआ ११ और उन सेनाओं का रक्षक परपक्षवाला राजा शकुनी निर्मल शस्त्रों से लड़नेवाले गान्धारदेशीय और अत्यन्त उत्तम अश्वारूढ़ों समेत चला १२ और कृपाचार्य,कृतवर्मा, चित्रसेन, विविंशति और दुश्शासनादि सावधान लोगोंने वामपक्ष को रक्षित किया १३ उन्होंके परपक्ष काम्बोजदेशीय यवनोंसमेत शकुनी जिनका कि अग्रगामी राजा सुदक्षिण था वह बड़े शीघ्रगामी घोड़ों समेत चले १४ मद्र,

त्रिगर्त्त, अम्बष्ठ, पश्चिमीय उत्तरीय राजा लोग, मालवीय, शिवय, सूरसेन और मलयदों समेत सौवीर १५ कितव सब पूर्वीय और दक्षिणीय राजा आपके पुत्र को आगे करके कर्ण के पीछे १६ अपनी सेनाओं को प्रसन्न करते आप के पुत्रों के साथ चले सब शूरवीरों में शिरोमणि द्रोणाचार्यजी ने सेनाओं में पराक्रम नियत किया १७ और सूर्य के पुत्र कर्ण ने सब धनुषधारियों के आगे होकर बड़ी शीघ्रतापूर्वक अपने शरीर के प्रकाश से सब सेना को प्रसन्न किया १८ हाथी की कक्षा का चिह्न रखनेवाली बड़ी उत्तम ध्वजा धारण करनेवाला सूर्य के समान तेजस्वी कर्ण बड़ा शोभायमान हुआ उस कर्ण को देखकर किसी ने भी भीष्म के दुःख को नहीं माना १९ और कौरवों समेत सब राजालोग शोक से रहित हुए उस समय प्रसन्नचित्त बहुत से शूरवीर बड़ी तीव्रता से और दर्प से बोले कि इस कर्ण को देखकर पाण्डवलोग युद्ध में नियत नहीं होंगे यह कर्ण युद्ध में इन्द्रसमेत सब देवताओं के विजय करने को समर्थ है २० । २१ बल पराक्रम से रहित पाण्डवों को युद्ध में विजयकरना क्या बात है बाहुशाली भीष्म ने पाण्डवों को दयाकरके पोषण किया और रक्षा करके नहीं मारा २२ परन्तु अब यह कर्ण उनको युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से नष्ट करदेगा हे राजन् ! इस रीति से वह सब राजालोग परस्पर में कहते २३ और कर्ण को पूजते उसकी प्रशंसा करतेहुए चलदिये हमारी सेना का यह शकटव्यूह द्रोणाचार्य ने रचा २४ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! दूसरे महात्मा अर्थात् पाण्डवों का क्रौंचव्यूह प्रसन्नचित्त धर्मराज युधिष्ठिरने रचा २५ उनके व्यूह के मुखपर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी और अर्जुन अपनी वानरध्वजा को ऊंची करके नियतहुए २६ उस अर्जुन की जो ध्वजा थी वह सब सेनाओं का राजचिह्न और सब धनुषधारियों की ज्योतिरूप थी बड़े तेजस्वी महात्मा अर्जुन की ध्वजा जोकि सूर्य के मार्ग में वर्त्तमान थी उसने उस सेना को ऐसे प्रकाशमान किया जैसे कि प्रलय के समय बड़ी अग्नि की ज्वाला और सूर्य का तेज पृथ्वी को प्रकाशित करता है २७ । २८ उसी प्रकार से वह अर्जुन की प्रकाश करनेवाली ध्वजा सब स्थानों पर प्रकाश करती हुई दिखाई पड़ी युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ अर्जुन है और धनुषों में महा उत्तम गाण्डीव धनुष है २९ सब जीवधारियों में वासुदेवजी और चक्रों में सर्वोत्तम सुदर्शनचक्र है इन

चारों तेजों का लेचलनेवाला श्वेतघोड़ेवाला रथ ३० कालचक्र के समान उदय होनेवाला शत्रुओं के आगे नियत हुआ इस रीति से वह दोनों महात्मा सेना के आगे चलनेवाले हुए ३१ आपके पुत्रों के आगे कर्ण और पाण्डवों के आगे अर्जुन हुआ तब उसके पीछे विजय के निमित्त क्रोध से भरे परस्पर मारने के अभिलाषी ३२ कर्ण और पाण्डव अर्जुन ने युद्ध में जाकर परस्पर बाट देखी अर्थात् एकने दूसरे का पैंड़ा देखा इसके पीछे अकस्मात महारथी द्रोणाचार्य के चलनेपर ३३ दुःखों से भराहुआ महाशब्द हुआ पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई और बड़ी धूलि ने सूर्य समेत आकाश को ढकदिया ३४ तदनन्तर रेशमी वस्त्रों के समूहों के समान कठिन और असह्य धूलि उठी और विना बादलों के ही आकाश से मांस रुधिर और अस्थियों की वर्षा होनेलगी ३५ और हे राजन् ! उस समय हज़ारों गृध्र, बाज, बगले, कङ्क, काक आदि अशुभद्योतक पक्षी सेना के ऊपर गिरे ३६ और शृगाल बड़े भयकारी अशुभसूचक शब्दों को करनेलगे और बहुत से पक्षियों ने आपकी सेना को दक्षिण किया ३७ वह पक्षी मांस के खाने और रुधिर के पानकरने के अभिलाषी हुए और अग्नि से प्रज्वलित प्रकाशमान उल्काप्रहारों के शब्दोंसमेत कम्पायमान करती पीठ की ओर से सब को घेर कर युद्धभूमि में गिरी हे राजन् ! सेनापति के चलनेपर सूर्य का बड़ा मण्डल बिजली और बादल की गर्जनासमेत बाहर को उदयहुआ यह सब और अन्य २ भी अनेक भयकारी उत्पात प्रकटहुए ३८।४० यह सब उत्पात युद्ध में वीरलोगों के नाश करनेवाले थे इसके पीछे परस्पर मारने के इच्छावान् वीरों के युद्ध ४१ कौरव और पाण्डवों की सेनाओं के शब्दों से संसार को व्याप्त करतेहुए जारीहुए और वह पाण्डव कौरवों के साथ परस्पर क्रोध में भरे विजय के अभिलाषी तीक्ष्ण शस्त्रों से प्रहार करनेलगे फिर वह बड़ा तेजस्वी युद्ध में हज़ारों बाणों से ढकता बड़ी तीव्रता से महापुरुष पाण्डवों के सम्मुख गया हे राजन् ! जब पाण्डवों ने सृञ्जयोंसमेत युद्धमें प्रवृत्तरूप द्रोणाचार्य को देखा ४२ । ४३ तब उनको देखकर पृथक् २ बाणों की वर्षाओं से रोका द्रोणाचार्य के हाथ से अत्यन्त व्याकुल और घायल हुई बड़ी सेना ४४।४५ पाञ्चालोंसमेत ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि हवा से बादल इधर उधर होजाते हैं फिर युद्ध में बहुत से अस्त्रों को प्रकट करतेहुए द्रोणाचार्यजी

ने एक क्षणमात्र मेंही पाण्डव और सृञ्जयों को ऐसे पीड्यमान किया जैसे कि इन्द्र के हाथ से दानव पीड़ित होते हैं इसी प्रकार द्रोणाचार्य के हाथ से घायल वह सब पाञ्चाल ४६ । ४७ जिनका कि अग्रगामी धृष्टद्युम्न था अत्यन्त कम्पायमान हुए इसके पीछे दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले शूर महारथी धृष्टद्युम्न ने ४८ बाणों की वर्षा से द्रोणाचार्य की सेना को अनेक प्रकार से घायल किया अर्थात् उस पर्वत के पौत्र पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने अपने बाणों की वर्षा से द्रोणाचार्य के बाणों की वर्षा को ४६ अच्छीरीति से रोककर सब कौरवों को भी घायल किया तदनन्तर बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्यजी युद्ध में अपनी सेना को इकट्ठाकरके और अच्छे प्रकार से नियत करके धृष्टद्युम्न के सम्मुख गये और वहां जाकर उन्होंने धृष्टद्युम्न के ऊपर ऐसी बड़ीभारी बाणों की वर्षाकरी ५०।५१ जैसे कि अत्यन्त कोपयुक्त इन्द्र अकस्मात दानवों पर करता है द्रोणाचार्य के बाणों से कम्पायमान वह पाण्डव और सृञ्जय ५२ वारंवार भयभीत होकर काँपने लगे जैसे कि सिंह से अन्य मृगादिक कांपते हैं उसीप्रकार वह बलवान् द्रोणाचार्यजी पाण्डवों की सेना में अलातचक्र अर्थात् बनेठी के समान घूमनेलगे यह सब को बड़ा आश्चर्य सा हुआ ५३।५४ आकाश में घूमनेवाला नगर के समान शास्त्र के अनुसार बनाया हुआ अथवा सब शत्रुओं के डरानेवाले उस उत्तम रथपर जोकि आनन्दरूप चलायमान घोड़ेवाला अथवा वायु से चलायमान पताका रखनेवाला था और स्फटिक के समान जिसकी स्वच्छ ध्वजा थी ऐसे रथपर सवार होकर द्रोणाचार्यजी ने शत्रुओं की सेनाको मारा ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इस रीति से घोड़े और सारथियों समेत रथ और हाथियों के मारनेवाले द्रोणाचार्य को देखकर पाण्डवलोग बड़े पीड्यमान हुए और उनको न रोकसके १ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न और अर्जुन से कहा कि सब ओर से उपाय करनेवाले शूरवीरों समेत द्रोणाचार्य को हटाना चाहिये २ वहां अर्जुन और अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्न ने उनको घेरलिया फिर तो सब महारथी चारोंओर से दौड़े ३ पांचो कैकेय, भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, मत्स्यदेशीय और इसी प्रकार राजा द्रुपद के पुत्र ४ अत्यन्त

प्रसन्नचित्त द्रौपदी के पुत्र और सात्यकी समेत धृष्टकेतु और अत्यन्त क्रोधयुक्त चेकितान, महारथी युयुत्सु और हे राजन्! पाण्डवों के पीछे चलनेवाले जो अन्य२ राजा थे उन सबने कुल और पराक्रम के अनुसार कर्मों को बहुत प्रकार से किया५।६ फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य ने युद्ध में पाण्डवों से अच्छीरीति से रक्षित उस सेना को देखकर बड़े क्रोधयुक्त दोनों नेत्रों को निकालकर देखा ७ युद्ध में कठिनता से विजय होनेवाले उन द्रोणाचार्यजी ने बड़े क्रोधयुक्त होकर पाण्डवों की सेना को ऐसे घायल किया जैसे कि वायु बादल को करता है ८ द्रोणाचार्य जहां तहां रथ, घोड़े, मनुष्य और हाथियों के भी सम्मुख दौड़े और वृद्ध होकर भी तरुण और मदोन्मत्त के समान घूमनेलगे ९ हे राजन्! निश्चय करके उसके वह लालरङ्ग केसे घोड़े जोकि रुधिर से लिप्तशरीर वायु के समान शीघ्रगामी आजानेय जातवाले थे वह विना विश्राम लेतेहुए घूमते थे १० उस काल के समान क्रोधयुक्त सावधानव्रत को आताहुआ देखकर पाण्डवों के शूरवीर जहां तहां भागे ११ उन भागते फिर लौटते देखते और नियत होतेहुए युद्धकर्ताओं के शब्द महाभयकारी और कठिन हुए १२ वीरलोगों की प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले भयभीतों के भय बढ़ानेवाले शब्द ने पृथ्वी और आकाश के मध्यभाग को सबओर से भरदिया १३ इसके अनन्तर युद्ध में नाम को सुनातेहुए सैकड़ों बाणों से शत्रुओं को ढकते द्रोणाचार्य ने फिर अपने रूप को रुद्ररूप किया १४ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! वह वृद्ध द्रोणाचार्य तरुण और महाबलवान् के समान पाण्डवों की उन सेनाओं के मध्य में काल के समान भ्रमणकरनेलगे १५ भयकारी शिरों को और भूषणों से अलंकृत भुजाओं को भी काटकर रथ के ऊपर नियत होनेवाले शूरवीर महारथियों को पुकारे १६ हे समर्थ! उसकी प्रसन्नता के शब्दों से और बाणों के वेग से शूरवीरलोग ऐसे अत्यन्त कम्पायमान हुए जैसे कि शरदी से पीड्यमान गौवें कम्पायमान होती हैं १७ द्रोणाचार्य के रथ के व धनुष और प्रत्यञ्चा के खैंचने के शब्दों से आकाश में महाभयकारी शब्द उत्पन्नहुए १८ इन द्रोणाचार्य के धनुष से निकलकर घूमनेवाले हजारोंबाण सब दिशाओं को व्याप्त करके हाथी, घोड़े, रथ और पदातियों के ऊपर गिरे १९ पाण्डवोंसमेत पाञ्चालों ने उन द्रोणाचार्य की सम्मुखताकही जिनके बड़े वेगवान् धनुष और प्रकाशित अग्न्यस्त्र थे २० द्रोणाचार्य ने थोड़ेही समय में उनसबको

हाथी घोड़े और पदातियों समेत यमलोक को भेजा और पृथ्वी को रुधिररूप कीचवाली करदिया २१ उत्तम शस्त्रों को छोड़ते और बराबर बाणों को चलाते द्रोणाचार्य का रचाहुआ बाणों का जाल दिशाओं में दिखाई दिया २२ उसके ध्वजा पदाती और रथ के घोड़े और रथों के मध्य भी सब ओर से ऐसे दृष्ट पड़े जैसे कि बादलों में घूमती हुई बिजली होती हैं २३ वे बड़े साहसी हाथ में धनुषबाण धारण करनेवाले द्रोणाचार्य केकयदेशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ पांचों राजकुमार और राजाद्रुपद को बाणों से मथनकर युधिष्ठिर के सम्मुख गये २४ भीमसेन, अर्जुन और शिनीका पौत्र, द्रुपद का पुत्र, सात्यकी, शैब्यात्मज, काशिपति, शिबि इन सब शूरों ने उन द्रोणाचार्यजी को देखकर बाणों के समूहों से ढकदिया २५ द्रोणाचार्यजी के धनुष से छूटेहुए सुनहरी पुङ्खवाले बाण उन सब वीरों के और हाथी घोड़े और अन्य वीरलोगों के शरीरों को बेधकर रुधिर में भरेहुए पृथ्वी में समागये २६ वह पृथ्वी शूरवीरों के समूह टूटेहुए बाण और गिरेहुए हाथी घोड़ों से ऐसी ढकगई जैसे कि काल के मेघों से आच्छादित आकाश होता है २७ आपके पुत्रों का ऐश्वर्य चाहनेवाले द्रोणाचार्य ने सात्यकी, भीमसेन, अर्जुन, धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु, द्रुपद, काशीनरेश और युद्ध में अलंकृत अन्य बहुत से वीरों को पराजय किया २८ हे कौरवेन्द्र, राजन्, धृतराष्ट्र! महात्मा द्रोणाचार्य भी इन कर्मों को और अन्य २ कर्मों को करके और कालरूप सूर्य के समान लोगों को तपाकर इसलोक से स्वर्ग को गये २६ इसरीति से वह शत्रुओं की सेना को पीड़ा देनेवाले स्वर्णमयी रथपर सवार द्रोणाचार्य महाभारी कर्म को करके और युद्ध में पाण्डवों के लाखों शूरवीरों को मारकर धृष्टद्युम्न के हाथ से गिराये गये ३० युद्ध में मुख न मोड़नेवाले आचार्य ने शूरों के एक अक्षौहिणी से भी अधिक-समूह को मारकर और आप भी घायल होकर परमगति को पाया ३१ हे राजन्! वह स्वर्णमयी रथपर सवार द्रोणाचार्य अत्यन्त कठिन कर्म को करके अशुभ और क्रूरकर्मी पाञ्चालोंसमेत पाण्डवों से मारेगये ३२ तदनन्तर युद्ध में उन आचार्यजी के मरनेपर आकाश में जीवों के और सेना के मनुष्यों के बड़े शब्द प्रकटहुए ३३ स्वर्ग पृथ्वी आकाश, दिशा और विदिशाओं को भी शब्दायमान किया और जीवों के यह उच्चस्वर से शब्द हुए कि क्षत्रियधर्म को धिक्कार है ३४ देवता पितरों ने

और जो उसके पीछे बान्धव थे उन्हों ने वहांपर मरेहुए महारथी द्रोणाचार्य को देखा ३५ फिर पाण्डवों ने विजय को पाकर सिंहनादों को किया और अत्यन्त सिंहनादों के होने से पृथ्वी बड़ी कम्पायमान हुई ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि, पाण्डव और सृञ्जयों ने उन अस्त्रों में कुशल सब शस्त्रधारियों के शिरोमणि द्रोणाचार्य को क्या कर्म करतेहुए मारा १ इनका रथ टूटा अथवा खिंचाहुआ धनुष टूटा या यह द्रोणाचार्य विमोह को प्राप्तहुए जिससे कि उन्होंने मृत्यु को पाया २ हे तात ! राजा द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न ने उन शत्रुओं से भय न करनेवाले और सुनहरी पुङ्खवाले बाणों के समूहों को बहुतप्रकार से फैलानेवाले ३ हस्तलाघवी ब्राह्मणों में श्रेष्ठ साधु अपूर्व युद्धकर्ता दूर २ के स्थानोंपर दौड़नेवाले जितेन्द्रिय शस्त्रों के युद्ध में प्रवीण ४ दिव्य अस्त्रों के धारण करनेवाले अजेय भयकारी कर्मों के करनेवाले महासाहसी और महारथी द्रोणाचार्य को मारा ५ प्रकट है कि उपाय करने से होनहार भावी प्रबल है यह मेरा मत है जिसके कारण से कि महात्मा धृष्टद्युम्न के हाथ से द्रोणाचार्य मारे गये ६ । ७ जिस शूरवीर में चार प्रकार के अस्त्र नियत थे उस बाण और अस्त्रों के धारण करनेवाले मेरे आचार्य को मराहुआ कहता है अब मैं उस व्याघ्रचर्म से मढ़े सुनहरी जातरूप नाम सुवर्ण से चित्रित रथवाले को मृतक सुनकर शोक को करता हूं ८ हे सञ्जय ! निश्चय करके कोई मनुष्य भी दूसरे के दुःख से नहीं मरता है जो मैं निर्बुद्धि उन द्रोणाचार्यजी को मृतक सुनकर जीवता हूं ९ मैं होनहार को अधिकतर मानता हूं और उपाय करना निरर्थक है जो मैं अल्पबुद्धि उन द्रोणाचार्य को मृतक हुआ सुनकर जीवता हूं १० निश्चय करके मेरा हृदय वज्र से भी कठोर है जो द्रोणाचार्यजी को मृतक सुनकर सौ प्रकार से खण्ड २ नहीं होता है ११ गुण के चाहनेवाले ब्राह्मण और राजकुमारों ने ब्रह्मास्त्र और देवताओं के अस्त्र इसीप्रकार बाणविद्या में भी जिसकी उपासना करी वह कैसे मृत्यु से हरागया १२ शुष्क समुद्र वा मेरु की चलायमानता अथवा सूर्य के पतन होने के समान द्रोणाचार्य के गिराने को नहीं सहसक्ता हूं १३ वह पापियों को निषेध करनेवाला और धर्मकरनेवालों का रक्षक हुआ और जिस शत्रु-

सन्तापी ने उस नीच के निमित्त प्राणों को भी त्याग किया १४ और जिसके पराक्रममें मेरे अभागे पुत्रों को विजय की आशा थी और जो बुद्धि में बृहस्पतिजी और शुक्रजी के समान था वह कैसे मारागया ? १५ वह लालरङ्गवाले बड़े घोड़े सुनहरी जालों से ढकेहुए वायु के समान शीघ्रगामी रथ में जुड़े और युद्ध में सब शस्त्रों को उल्लङ्घन करके चलनेवाले १६ पराक्रमी हिंसनशब्द करनेवाले शिक्षा पायेहुए सिन्धुदेशीय श्रेष्ठ लोगों के सवार करवानेवाले युद्ध में भयाकुल होकर भयभीत तो नहीं हुए १७ युद्ध में शङ्ख और दुन्दुभियों के शब्दों से चिङ्घारते हाथियों को प्रत्यञ्चा के आघात को और बाणों समेत शस्त्रों की वर्षा के सहनेवाले १८ शत्रुओं के विजय करने की आशा करनेवाले श्वास और पीड़ा के जीतनेवाले शीघ्रगामी द्रोणाचार्य के रथ के लेचलने वाले घोड़े पराजय हुए १९ हे तात ! स्वर्णमयी रथ में जुड़ेहुए नरवीरों के हाथ से घायल उन घोड़ों ने पाण्डवों की सेना को कैसे नहीं तरा २० सत्यपराक्रमी भारद्वाज द्रोणाचार्यजी ने जातरूप नाम सुवर्ण से अलंकृत और उत्तम रथपर सवार होकर युद्ध के मध्य में क्या किया २१ सब लोक के धनुषधारी जिसकी विद्या से अपनी जीविका और निर्वाह करते हैं उस सत्यसङ्कल्पी पराक्रमी द्रोणाचार्य ने युद्ध में क्या किया २२ जिस प्रकार कि स्वर्ग में इन्द्र उत्तम है उसी प्रकार कौन से रथी युद्ध में उस श्रेष्ठ और धनुषधारियों के वृद्ध भयकारी कर्म करनेवाले के सम्मुख गये २३ पाण्डवलोग उस स्वर्णमय रथवाले दिव्य अस्त्रों के चलानेवाले महाबली को युद्ध में देखकर भागे २४ कहो कि धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने छोटे भाई और सब सेना समेत धृष्टद्युम्न सेनापति के होने में द्रोणाचार्य को सब ओर से घेरलिया २५ निश्चय करके अर्जुन ने सीधे चलनेवाले बाणों से अन्य रथियों को रोकदिया इस हेतु से पापकर्म करनेवाला धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के ऊपर चढ़ाई करके प्रबल होगया २६ मैं उस अर्जुन से रक्षित रुद्र धृष्टद्युम्न के सिवाय द्रोणाचार्य के मारने की सामर्थ्य किसी शूर में नहीं देखता हूं २७ इस हेतु से पाञ्चालदेशियों में नीच और सब ओर से उन कैकेय, चन्देरी, कारुष्य और मत्स्यदेशियों के शूरवीर आदि अन्य राजाओं से घिरेहुए शूर धृष्टद्युम्न ने २८ कठिन कर्मों में प्रवृत्त जैसे कि चेटियों से व्याकुल सर्प होता है उसी प्रकार से महाव्याकुल आचार्यजी को मारा है यह मेरा मत है २९ जो अङ्गों

समेत चारों वेद जिनमें कि पांचवां इतिहास है उनको पढ़कर ब्राह्मणों में ऐसा प्रतिष्ठावान् हुआ जैसे कि नदियों में समुद्र की प्रतिष्ठा होती है ३० जो शत्रुओं का तपानेवाला इस लोक में क्षत्रिय और ब्राह्मण के धर्म में नियत हुआ उस वृद्ध ब्राह्मण ने किस प्रकार से शस्त्रविद्या में लड़कर गति को पाया ३१ सदैव मुझ से अप्रसन्न और कुन्ती के पुत्र से पूजन न पानेवाले अशान्तचित्त में उसको क्षमा किया उसी का यह फल है ३२ लोक के मध्य में सब धनुषधारी जिसके कर्म के अनुसार कर्मों को करते हैं वह सत्यसङ्कल्पी शुभकर्मी किस रीति से धनाभिलाषी पुरुषों के हाथ से मारागया ३३ स्वर्ग में रहनेवाले इन्द्र के समान श्रेष्ठ महाबली और पराक्रमी थे वह पाण्डवों के हाथ से ऐसे क्यों मारेगये? जैसे कि छोटी मछलियों के हाथ से तिमि नाम मत्स्य माराजाता है ३४ वह हस्तलाघवी महाबली बड़े दृढ़ धनुष का रखनेवाला और शत्रुओं का मर्दन करनेवाला था विजयाभिलाषी जिसके देश को पाकर जीवता नहीं रहता है ३५ जिस जीवतेहुए को दो प्रकार के शब्दों ने कभी नहीं त्याग किया वेद चाहनेवालों की वेदध्वनि और धनुषधारियों की प्रत्यञ्चा का शब्द ३६ मैं उस बड़े साहसी पुरुषोत्तम लज्जायुक्त अजेयसिंह और हाथी के समान पराक्रमी द्रोणाचार्य का मरना नहीं कहसक्ता हूं ३७ हे सञ्जय! धृष्टद्युम्न ने युद्ध के मध्य में सब राजाओं के देखतेहुए उस निर्भय अजेय यशी और महापराक्रमी को किस प्रकार से मारा ३८ द्रोणाचार्य को सम्मुख से रक्षा करतेहुए कौन आगे युद्ध करनेवाले हुए और दुःख से मिलनेवाली गति के पानेवाले उसी द्रोणाचार्य के पीछे कौन २ वर्तमान हुए ३९ युद्ध में लड़तेहुए उसी वीर महात्मा के दाहिने और बायें चक्र को किस किसने रक्षित किया? और किन लोगों ने आगे से रक्षा करी ४० और किन किन पुरुषों ने उस युद्ध में शरीरों को त्यागकर विपरीत मृत्यु को पाया? और कौनसे वीरों ने द्रोणाचार्य के युद्ध में परमगति को पाया ४१ निर्बुद्धि रक्षा करनेवाले क्षत्रियों ने भय से युद्ध में उसको त्याग तो नहीं करदिया? जिससे कि एकाकी होकर शत्रुओं के हाथ से मारागया हो ४२ वह महाआपत्ति में भी प्राप्त होकर अपनी वीरता के कारण शत्रुओं के भय से पीठ नहीं दिखला सक्ता था वह किसरीति से शत्रुओं के हाथ से मारागया ४३ हे सञ्जय! दुःख और आपत्तियों के प्राप्त होजानेपर श्रेष्ठलोगों

को यही करने के योग्य है कि सामर्थ्य के अनुसार पराक्रम करे तो वही गुण उसमें नियत है ४४ हे तात ! अब मेरा चित्त मोहित अर्थात् विह्वल हुआ जाता है तबतक कथा बन्द करो जब मुझको सावधानी होगी तब मैं फिर तुम से पूछूंगा ॥ ४५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी बोले कि, सूत के पुत्र सञ्जय से इतना पूछकर हृदय के शोक से अत्यन्त पीड्यमान पुत्रों की विजय में निराशावान् होकर धृतराष्ट्र पृथ्वीपर गिरपड़े १ तब सेवकलोगों ने उस असावधान निश्चेष्ट गिरेहुए सजीव के ऊपर अत्यन्त शीतल और सुगन्धित जल से सींचा २ । ३ हे महाराज ! भरतवंशियों की स्त्रियोंने उस पृथ्वीपर गिरेहुए धृतराष्ट्र को देखकर चारों ओर से घेरकर हाथों से स्पर्श किया अर्थात् पकड़ा अश्रुपातों से पूर्ण सुन्दर मुखवाली स्त्रियों ने बड़े धीरेपने से इस राजा को पृथ्वीपर से उठाकर आसन पर बैठाया ४ तब मूर्च्छा से संयुक्त राजा आसन को पाकर चारोंओर से पङ्खों की वायु का लेनेवाला होकर निश्चेष्ट और निश्चल होकर नियत हुआ ५ उस कम्पायमान राजा ने बड़े धीरेपने से सावधानी को पाकर फिर गोलकर्ण के पुत्र सूत सञ्जय से सत्य २ वृत्तान्त पूछा ६ कि उस सूर्य के समान उदय होनेवाले अपनी ज्योति से अन्धकार को दूर करनेवाले अजातशत्रु युधिष्ठिर को किसने द्रोणाचार्य की ओर से हटाया ७ मद झाड़नेवाले क्रोधयुक्त वेगवान् हाथी के समान प्रसन्नमुख हाथी के सम्मुख जानेवाले को किसने रोका ८ जोकि उस रीति से विजय करने के योग्य न था जैसे कि अपनी हस्तिनी से सङ्ग करते झुण्ड के प्रधानों से हाथी अजेय होता है उस पुरुषोत्तम वीर ने युद्ध में बड़े २ वीरों को मारा ९ जो बड़े बली धैर्यवान् सत्यसङ्कल्पी अकेलाही अपने घोरनेत्रों से दुर्योधन की सब सेना को भस्म करसक्ता था १० उस नेत्र से मारनेवाले विजय में प्रवृत्त धनुषबाणधारी अजेय जितेन्द्रिय और लोक में महामान्य को किन २ शूरों ने रोका ११ वहांपर मेरे कौन २ से शूरोंने उस निर्भय धनुषबाणधारी अविनाशी पुरुषोत्तम राजा युधिष्ठिर से अच्छे प्रकार करके सम्मुखता करी १२ फिर जो तीव्रता से आकर द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा और जो बड़ापराक्रमी शत्रुओं के

युद्ध में बड़े कर्म का करनेवाला है १३ वह बड़े शरीर और उत्साहवाला बल में दशहजार हाथी के समान है उस आतेहुए भीमसेन को किन २ शूरों ने रोका १४ । १५ जब बादल के समान बड़ेरथ में बैठा हुआ महापराक्रमी वीर्यवान् इन्द्र के समान बाणरूप वज्रों को फेंकता तल और नेमियोंके शब्दों से सब दिशाओं को शब्दायमान करता अर्जुन आया धनुषरूप बिजली का प्रकाश रखनेवाला नेमी के शब्दरूप गर्जना का करनेवाला व बाणों के शब्दों से अत्यन्त सुन्दर १६ । १७ क्रोधजन्य जीमूतनाम बादल रखनेवाला चित्त के विचारके समान शीघ्रगामी मर्मों को भेदकर चलनेवाले बाणों का धारण करने वाला रुधिररूप अथाह जल रखनेवाला दिव्य दिशाओं को चलायमान करता मनुष्यों से पृथ्वीको आच्छादित करता भयकारी शब्दवाला जो अर्जुन है १८ उस बुद्धिमान् गाण्डीवधनुषधारी अर्जुन ने युद्ध में दुर्योधनादिकों को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से स्नान कराया तब तुम्हारा मन कैसा हुआ १९ । २० आकाश को बाणों से पूर्ण करता उत्तम वानरी ध्वजा रखनेवाला जब वह अर्जुन आया उस समय तुम्हारा चित्त कैसा हुआ २१ गाण्डीव धनुष के शब्द से सेना का तो नाश नहीं हुआ जब वह अर्जुन महाभयकारी युद्धकर्ता तुम्हारे सम्मुख आया उस समय अर्जुन ने बाणों से तुम्हारे प्राणों को तो शरीर से पृथक् नहीं किया और जैसे वायुवेग से बादलों को घायल करता है उसी प्रकार बाणों के समूहों से राजाओं को घायल किया २२ । २३ कौन मनुष्य युद्ध में गाण्डीव धनुषधारी के सहने के योग्य है तब सेना के पुरुष के समूह जिसको सेना के आगे हुआ सुनकर व्याकुल होकर भागते हैं २४ वह सेना जब अत्यन्त कम्पायमान हुई अथवा वीरों को भय ने स्पर्श किया था उस समय किन २ लोगों ने द्रोणाचार्य को नहीं त्याग किया और कौन से नीचपुरुष भय से व्याकुल होकर भागे २५ वहां किन लोगों ने शरीर को त्यागकरके विपरीत मृत्यु को पाया ? जहां कि युद्ध में देवताओं के भी विजय करनेवाले अर्जुन को अपने सम्मुख पाया २६ मेरे पुत्र अथवा अन्यशूरवीर उस श्वेत घोड़े रखनेवाले अर्जुन के वेग को और वर्षाऋतु के बादलके समान गाण्डीव धनुष के शब्द को सह नहीं सकेंगे २७ जिसके सहायक श्रीकृष्णजीहैं और युद्ध करनेवाला वीर अर्जुन है वह रथी देवता और असुरोंसे भी विजय करना असम्भव है यह मुझे

पूर्ण निश्चय है २८ यह पाण्डव सुकुमार युवा शूरवीर और दर्शनीय होकर मेधावान् निपुण बुद्धिमान् और संग्राम में सत्य पराक्रमी है २९ बड़े शब्द को करते सब सेना के मनुष्यों को पीड्यमान करतेहुए और द्रोणाचार्य के सम्मुख आनेवाले उस नकुल को कौन २ से शूरवीरों ने रोका ३० जब सर्प के समान क्रोधयुक्त युद्ध में अपने तेज से पराजय न होनेवाले सहदेव शत्रुओं के नाश को करता हुआ सम्मुख आया ३१ उस श्रेष्ठ पुरुषों के व्रत रखनेवाले सफल बाणवाले लज्जावान् अजेय युद्ध में आतेहुए सहदेव को किन २ शूरवीरों ने रोका ३२ जिसने राजा सौवीर की सेना को मथन करके शरीर से शोभायमान सुन्दर भोजवंशीय पटरानी को हरणकिया ३३ और उसी पुरुषोत्तम युयुधान में सत्यता धैर्य शूरता और पवित्र ब्रह्मचर्य व्रत इत्यादि सब गुण थे ३४ उस पराक्रमी सत्यकर्मी उदारबुद्धि महासाहसी अजेय युद्ध में वासुदेवजी के समान अथवा वासुदेवजी से अन्तररहित ३५ अर्जुन की शिक्षा से बाण और अस्त्रों के कर्म में श्रेष्ठ अस्त्रविद्या में अर्जुन के समान उस युयुधान को किसने द्रोणाचार्य की ओर से रोका ३६ जोकि वृष्णिवंशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ बड़ा वीर सब धनुषधारियों में प्रबल, शूर, यश, पराक्रम के साथ अस्त्रों में बलदेवजी के समान है ३७ सत्यता, धैर्य, बुद्धि, शूरता, सर्वोत्तम ब्रह्मास्त्र यह सब उसी यादव में इस रीति से नियत हैं जैसे कि तीनों लोक केशवजी में नियत हैं ३८ इस रीति के सब गुणों से युक्त और देवताओं से भी अजेय बड़े धनुषधारी उस यादव को किन शूरों ने रोका ३९ पाञ्चालदेशियों में श्रेष्ठ वीर और उत्तम जीवों के प्यारे सदैव उत्तम कर्मवाले युद्ध में उत्तम पराक्रमवाले ४० अर्जुन के हित करने में प्रवृत्त और मेरे अनर्थ के निमित्त तत्पर और यमराज, कुबेर, सूर्य, महेन्द्र और वरुण नाम देवताओं के समान ४१ महारथी नाम से विख्यात और तुमुलयुद्ध में द्रोणाचार्य के विजय करने के निमित्त उपाय करने वाले प्राणों के त्यागनेवाले धृष्टद्युम्न को किस २ शूरवीर ने रोका ४२ जो अकेलाही चन्देरी देशवासियों से पृथक् होकर पाण्डवों में संयुक्त हुआ उस द्रोणाचार्य के सम्मुख आनेवाले धृष्टकेतु को किसने रोका ४३ जिस ध्वजाधारी वीर ने कठिनता से विजय होनेवाले पर्वत के द्वारपर भागनेवाले राजकुमार को मारा उसको द्रोणाचार्य की ओर से किसने रोका ४४ जो पुरुषोत्तम

स्त्री और पुरुष के गुण अवगुणों का जाननेवालाहै उस युद्धमें प्रसन्न मन और लड़ाई में महात्मा देवव्रत भीष्मजी की मृत्यु के कारण और द्रोणाचार्य के सम्मुख जातेहुए राजा द्रुपद के पुत्र शिखण्डी को किन २ शूरों ने रोका ४५ जिस वीर में सब गुण अर्जुन से अधिक हैं और जिसमें सब अस्त्र, सत्यता, ब्रह्मचर्य, सदैव बल, पराक्रम में वासुदेवजी के समान, बल में अर्जुन के तुल्य, तेज में सूर्य के समान, बुद्धि में बृहस्पतिजी के सदृश ४६ महात्मा व्यात्तानन मृत्यु के समान द्रोणाचार्य के सम्मुख जातेहुए अभिमन्यु को किन शूरों ने रोका ४७ तरुण अवस्था युवा बुद्धि शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु जब द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा तब तुम्हारा चित्त कैसा होगया था ४८ जैसे कि नदियां समुद्र को वेग से जाती हैं उसी प्रकार पुरुषोत्तम द्रौपदी के पुत्र अपने आपही जब द्रोणाचार्य के सम्मुख गये तब उनको किस २ शूर ने रोका ४६ जो वह धृष्टद्युम्न के पुत्र बालक वीर बारह वर्ष की अवस्थावाले और क्रीड़ा कुतूहलों को छोड़कर उत्तम व्रत को धारण करतेहुए अस्त्रों के निमित्त भीष्मजी के पास निवासीहुए ५० जिनके नाम क्षत्रञ्जय, क्षत्रदेव, क्षत्रवर्मा और मानद हैं उनको द्रोणाचार्य की ओर से किस २ शूर वीर ने रोका ५१ वृष्णियों ने जिस बड़े धनुषधारी चेकितान को सौ शूरवीरों से भी उत्तम माना उसको द्रोणाचार्य की ओर से किसने रोका ५२ जिस अनाधृष्टी अदीनात्मा वार्द्धक्षेमी ने युद्ध में कलिङ्गदेशियों की कन्या को हरणकिया उसको किसने द्रोणाचार्य की ओर से रोका ५३ पांचों कैकेय आदि धार्मिक और सत्यविक्रम इन्द्र गोपकनाम जीव के समान रक्तवर्ण कवच शस्त्र और ध्वजाको भी अरुणही रखनेवाले ५४ पाण्डवों की मौसी के पुत्र बड़े वीर पाण्डवों की ही विजय के चाहनेवाले हैं द्रोणाचार्यके मारनेको आनेवाले उन पांचों को द्रोणाचार्य की ओर से कौन २ से वीरों ने रोका ५५ क्रोधयुक्त मारने के अभिलाषी छः महीनेतक लड़ते हुए राजालोगों ने भी जिस शूरवीरों के प्रधान को वारणावत नगर में विजय नहीं किया ५६ उस धनुषधारियों में श्रेष्ठ नरोत्तम शूर सत्यसङ्कल्प महाबली युयुत्सु को किसने द्रोणाचार्य की ओर से रोका ५७ जिसने वाराणसी अर्थात् काशी में काशी के राजा के पुत्र महारथी स्त्रियों में आसक्त होनेवाले को युद्ध में अपने भल्ल के द्वारा रथ से गिराया ५८ उस बड़े धनुषधारी पाण्डवों में मुख्यमन्त्री

दुर्योधन के अनर्थ में प्रवृत्त द्रोणाचार्य के मारने के निमित्त उत्पन्न ५९ युद्ध में शूरवीरोंको जलाते और सब ओर से छिन्न भिन्न करते और द्रोणाचार्य के सम्मुख आते उस धृष्टद्युम्न को कौन २ से शूरवीरों ने रोका ६० द्रुपद की गोदी में पोषण पानेवाले अस्त्रों के उत्तम जाननेवाले शस्त्रोंसे रक्षित शिखण्डी को कौन से युद्धकर्ताओं ने द्रोणाचार्य की ओर से रोका ६१ जो श्रेष्ठ शत्रुओं का मारने वाला महारथी रथ के बड़े शब्द के साथ इस सम्पूर्ण पृथ्वी को चमड़े के समान लपेटलेवे और प्रजाओं को पुत्रों के समान पोषणकरते इस राजा ने अच्छे अन्न ६२ पान और उत्तम दक्षिणावाले दश अश्वमेधों को किया वह सब यज्ञ अर्गल से रहित थे अर्थात् उस यज्ञ में किसी देखनेवाले की रोक न थी ६३ गङ्गानदी में जितने कि बालू के कणहैं उतनीही गौयें यज्ञमें उस वीर उशीनर के पुत्र ने दानकीं ६४ कठिनता से करने के योग्य क्रर्म के करनेपर देवताओं ने बड़े उच्चस्वर से यह वचन कहा कि पहले और दूसरे मनुष्यों में से किसी ने यह नहीं किया ६५ अब तीनोंलोक में जीवधारियों के मध्य सिवाय उशीनर के पुत्र शिबि के राज्य का भार उठानेवाला अन्य किसी वर्तमान को अथवा आगे उत्पन्न होनेवाले को भी नहीं देखते हैं लोकवासी मनुष्य जिसकी गति को नहीं पावेंगे ६६ । ६७ उसके पौत्र धन से अत्यन्त उदार मृत्यु के समान द्रोणाचार्य के सम्मुख आनेवाले शिबि को किस पराक्रमी शूर ने रोका ६८ शत्रुओं को मारनेवाली राजा विराट की रथसेना जोकि युद्ध में द्रोणाचार्य को चाहनेवाली थी उस सेना को किन २ वीरों ने रोका ६९ भीम से भी अधिक बल पराक्रम का रखनेवाला मायावी वीर राक्षस जोकि शीघ्रही उत्पन्न हुआ है उससे मुझको बड़ाही भय उत्पन्न होता है ७० पाण्डवों के विजयकरने के अभिलाषी मेरे पुत्रों के कण्टकरूप उस बड़े साहसी घटोत्कच को द्रोणाचार्य की ओर से किसने रोका ७१ हे सञ्जय ! जिन्हों के निमित्त यह और अन्य बहुत से शूरवीर लोग युद्ध में प्राणों के त्याग करनेवाले हैं युद्ध में जिनका अजेय कोई भी नहीं है ७२ जिन पाण्डवों का रक्षास्थान शार्ङ्गधनुषधारी पुरुषोत्तम है और उनके प्रिय हित का भी चाहनेवाला है उनकी पराजय कैसे होसक्ती है ७३ लोकों के गुरु लोकनाथ और सनातन नारायण दिव्यात्मा दिव्य प्रभु श्रीकृष्णजी युद्ध में जिनके स्वामी हैं ७४ ज्ञानीलोग जिनके जिनकर्मों

को कहते हैं मैं अपने धर्म के निमित्त भक्तिपूर्वक उनको कहूंगा ॥ ७५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥ ११ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! अब वासुदेवजी के दिव्यकर्मों को सुनो जिन२ कर्मों को कि श्रीगोविन्दजी ने किया उन कर्मों को कोई अन्य पुरुष कहीं भी नहीं करसक्ता १ हे सञ्जय! गोपकुल में पोषणपानेवाले महात्मा बालक नेही तीनों लोकों में अपने भुजबल को बहुत प्रकार से अच्छी रीति से विख्यात किया २ और उच्चैःश्रवा के समान बल शीघ्रगामीपने में तीव्र वायु के समान यमुना के वनवासी घोड़ों के राजा केशी को मारा ३ बाल्यावस्था में भयकारी रूप गौवों का कालरूप बैल की सूरत धारण करनेवाला वृषभासुर को अपनी भुजाओं से मारा ४ इसी कमललोचन ने प्रलम्ब, नरकासुर, जम्भपीठ और मृत्यु के स्वरूप मुरनाम दैत्य को भी मारा ५ और इसी प्रकार से जरासन्ध से पोषणपाया हुआ बड़ातेजस्वी कंस अपने सबराक्षसों के समूहों समेत युद्ध में श्रीकृष्णजी से मारागया ६ इसी प्रकार कंस का भाई महाबली युद्ध में पराक्रमी और पूरी अक्षौहिणी सेना का स्वामी बड़ा वेगवान् शूरसेन देश के राजा भोजराज के मध्यवर्ती सुनामा नाम भी इस शत्रुसंहारी बलदेवजी को साथ में रखनेवाले श्रीकृष्णजी के हाथ से युद्ध में अपनी सब सेना समेत मारागया ७।८ इसी प्रकार स्त्रीसमेत श्रीकृष्णजी ने महाक्रोधी दुर्वासा ऋषि को भी सेवन किया उसने उनको अनेक वरदान दिये ९ इसी प्रकार यह कमललोचन वीर श्रीकृष्णजी स्वयंवर में राजाओं को विजय करके गान्धारदेश के राजा की पुत्री को लाये १० सहन न करनेवाले राजालोग एकजाति के घोड़ों के समान जिसके विवाह के रथ में जोते गये और चाबुक से घायलहुए ११ जनार्दनजी ने पूरी अक्षौहिणी के स्वामी महाबाहु जरासन्ध को बड़े उत्तम उपाय से मारा १२ और इसी बलवान् ने चंदेरी के स्वामी महापराक्रमी अर्घपर प्रथम पूजन के विवाह करनेवाले शिशुपाल को पशु के समान मारा १३ इन्हीं माधवजी ने आकाश में नियत राजाशाल्व से रक्षित और अजेय दैत्यों के सौभनामपुर को पराक्रम करके समुद्र की कुक्षि में गिराया १४ और युद्ध में अङ्ग, बङ्ग, कलिङ्ग, मागध, काशी, कौशल, वात्स्य, गार्ग्य, कारूष्य और पौण्ड्र देशियों को भी

विजय किया १५ आवन्त्य और दाक्षिणात्य, पर्वती, पदशेरक, काश्मीर के और सिक, पिशाच, मुद्गल १६ काम्बोज, वाटधान, चोल, पाण्ड्य, सृञ्जय, त्रिगर्त, मालव और बड़े दुर्जय व दरददेशियों को भी विजय किया १७ और नाना दिशाओं से सम्मुख होनेवाले अनुगामियों समेत वश और शकजातवालों को और यवन अर्थात् यूनान के राजा को भी विजय किया १८ पूर्व समय में इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी ने जलचारी जीवसमूहों के निवासस्थान समुद्र में प्रवेश करके जल के मध्यवर्ती वरुण देवता को युद्ध में विजय किया १९ और पातालवासी पञ्चजन दैत्य को मारकर पाञ्चजन्य नाम शङ्ख को बजाया २० इस महाबली नेही अर्जुन को साथ लेकर खाण्डववन में अग्निको प्रसन्न करके अजेय और महाउत्तम अग्न्यस्त्र चक्र को पाया २१ यही वीर गरुड़पर सवार होकर अमरावतीपुरी को भयभीत करके महेन्द्र के भवनमें से कल्पवृक्ष को लाये २२ इन श्रीकृष्णजी के पराक्रम को जानकर इन्द्र ने क्षमाकरी अर्थात् शान्तरहा यहां राजाओं के मध्य में भी श्रीकृष्णजी से अजेय किसी को नहीं सुनते हैं २३ हे सञ्जय! कमललोचन श्रीकृष्णजी ने मेरी सभा में वह महाअपूर्व कर्म किया उसकर्म के करने को इनके सिवाय कौन पुरुष करने को समर्थ है २४ जिस हेतु से कि मैंने भक्ति के साथ प्रसन्नमूर्ति श्रीकृष्ण ईश्वर को देखा इसी कारण से सब इनका कर्म मेरा जानाहुआ है जैसे कि वेद और शास्त्र से निश्चय करने के योग्य है २५ हे सञ्जय! पराक्रम और बुद्धि से युक्त इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी के कर्मों का अन्तपाने के योग्य नहीं है २६ इसी प्रकार गद, साम्ब, प्रद्युम्न, विदूरथ, अङ्गावह, अनिरुद्ध, चारुदेष्ण, सारण २७ उल्मुक, निशठ, झिल्ली, पराक्रमी बभ्रु, पृथु, विपृथु, शमीक, अरिमेजय २८ यह और इनके विशेष अन्य पराक्रमी आघात करनेवाले वीर वृष्णिवंशीय हैं वह वृष्णीवीर महात्मा केशवजी के बुलाये हुए किसी प्रकार से युद्ध में नियत होकर पाण्डवों की सेना में संयुक्त होंगे इनके संयुक्त होनेके पीछे सब संशय से युक्त होंगे यह मेरा विचारपूर्वक मत है २९। ३० दशहज़ार हाथी के समान पराक्रमी और कैलास के शिखर के समान शरीरवाले वन की माला और हल मूसल के धारण करनेवाले वीर बलदेवजी भी उधरही हैं जिधर श्रीकृष्णजी हैं ३१ ब्राह्मणों ने जिन वासुदेव जी को सबका पालन करनेवाला वर्णन किया हे सञ्जय! यह श्रीकृष्णजी भी

पाण्डवों के निमित्त युद्ध करेंगे ३२ हे तात, सञ्जय ! जब वह पाण्डवों के निमित्त युद्ध करने को उपस्थित होयँ तो उनके सम्मुख लड़नेवाला हमारी सेना में कोई न होगा ३३ जो वह अकेलेही सब कौरव और पाण्डवोंको विजयकरें तो उस समय श्रीकृष्णजी उन पाण्डवों के निमित्त उत्तम सलाह को देंगे ३४ तब वह महाबाहु पुरुषोत्तम युद्ध में सब राजाओं और कौरवों को मारकर इस सब पृथ्वी को कुन्ती को देंगे ३५ जिसके सहायक श्रीकृष्णजी और युद्ध करनेवाला अर्जुन है उसके रथ के सम्मुख कौन सारथी शूरता करसक्ता है ३६ किसी प्रकार से भी कौरवों को विजय नहीं दिखाई देती है इस हेतु से वह सब मुझसे कहो जैसे कि युद्ध जारी हुआ ३७ अर्जुन केशवजी की आत्मा है और श्रीकृष्णजी भी अर्जुन की आत्मा हैं अर्जुन में सदैव पूर्ण विजय है और श्रीकृष्णजी में अविनाशी कीर्ति है ३८ सब लोकों में अकेला वही अर्जुन सब से अजेय है और केशवजी में उत्तमता के साथ असंख्य गुण हैं ३९ जो दुर्योधन यहाँ अपने मोह से श्रीकृष्णजी को नहीं जानता है इसी से वह दैवयोग से मोहित होके फांसी के आगे नियत है ४० वह श्रीकृष्णजी को और पाण्डव अर्जुन को नहीं जानता है वह दोनों महात्मा पूर्व के नरनारायण नाम देवता हैं ४१ यह एक आत्मा दो रूपों को धारण कियेहुए पृथ्वीपर मनुष्यों को देखने में आते हैं यह दोनों अजेय यशस्वी इच्छाही से अर्थात् चित्त के संकल्पही से इस सेना का नाश करसक्ते हैं ४२ परन्तु नररूप होने से ऐसा करना नहीं चाहते हैं समय की विपरीतता और लोगों का मोहन है ४३ हे तात ! जो यह महात्मा भीष्मजीका और द्रोणाचार्यजी का मरना है ब्रह्मचर्य वेद का पढ़ना ४४ यज्ञ और अस्त्रों के द्वारा भी कोई मनुष्य मृत्यु से नहीं छूटसक्ता है लोक के प्रधान प्रतिष्ठित और अस्त्र शस्त्रादि के युद्ध में महादुर्मद ४५ शूरवीर भीष्म और द्रोणाचार्य को मृतक हुआ सुनकर मैं क्या जीवता हूं अर्थात् मृतक केही समान हूं हे सञ्जय ! हम पूर्वसमय में जिस लक्ष्मी को युधिष्ठिर के पास देखकर दोष लगाते थे ४६ अब उस लक्ष्मी को भीष्म और द्रोणाचार्य के मरने से अंगीकार करेंगे यह कौरवों का नाश भी मेरेही कारण से वर्तमान हुआ है ४७ हे तात ! पकेफलों के नाश करने में घास आदिक तृण भी अत्यन्त कठोर होजाते हैं लोक में इस अत्यन्त ऐश्वर्यको युधिष्ठिरने पाया ४८ जिसके क्रोध से महात्मा

भीष्म और द्रोणाचार्यजी गिराये गये उसने स्वभाव सेही धर्म को पाया वह धर्म मेरे पुत्रों में नहीं है ४६ यह निर्दय काल सबके नाश के निमित्त पृथक् नहीं होता है हे तात! चित्तवाले मनुष्यों से अन्य प्रकार से शोचेहुए प्रयोजन ५० दैव की इच्छा से अर्थात् होनहार और प्रारब्ध से विपरीत वर्तमान होते हैं यह मेरा मत है इस हेतु से हटाने के अयोग्य असंख्य ध्यानसे भी बाहर बड़े दुःख के वर्तमान होनेपर जैसे प्रकार से हुआ उस सबको ब्यौरे समेत मुझसे कहो ॥ ५१ । ५२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, बहुत अच्छा जिस प्रकार से कि मैंने अपने नेत्रों से देखा है अर्थात् जैसे कि पाण्डव और सृञ्जयों से मारेहुए द्रोणाचार्यजी पृथ्वीपर गिरे उस सब वृत्तान्त को मैं आपसे कहता हूं १ महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्यजी सेना की प्रधानता को पाकर सब सेना के मध्य में आपके पुत्र से यह वचन बोले २ हे राजन्! कौरवों में उत्तम गाङ्गेय भीष्मजी के पीछे जो तुमने अब मुझ को सेना का सेनापति बनाया है ३ हे भरतवंशिन्! उसके कर्म के सदृश फल को पावोगे अब तू क्या चाहता है उसको मांग मैं तेरे कौन से काम को करूं ४ इसके पीछे राजा दुर्योधन, कर्ण और दुश्शासन आदि समेत उस बड़े विजयकर्ताओं में श्रेष्ठ अजेय आचार्यजी से यह वचन बोले ५ कि हे आचार्यजी! जो आप मुझ को वरदेते हो तो रथियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर को जीवता पकड़कर यहां मेरे सम्मुख लावो ६ यह सुनकर कौरवों के आचार्यजी सब सेना को प्रसन्न करते यह वचन बोले ७ हे राजन्! कुन्ती का पुत्र युधिष्ठिर धन्य है अर्थात् प्रशंसनीय अभीष्ट मनोरथवाला और प्रतापी है तुम उसके पकड़नेको चाहतेहो परन्तु उस निर्भय के मारने को नहीं चाहते हो ८ हे नरोत्तम! किस हेतु से उसके मरण को नहीं चाहता है दुर्योधन निश्चय करके इस हेतु से उसके मारने को नहीं कहता है ९ कि उस धर्मराज युधिष्ठिर का शत्रु कोई नहीं है जो तुम उस को जीवता चाहते हो और अपने कुल की रक्षा करते हो १० हे भरतर्षभ! अथवा तुम युद्ध में पाण्डवलोगों को विजय करके व अपनी ओर से राज्य को देकर भाईपने की प्रीति प्रकट किया चाहते हो ११ कुन्ती का पुत्र राजा युधिष्ठिर

धन्य है और इसी से उस बुद्धिमान् की अजातशत्रुता निश्चय होती है क्योंकि जिसपर तुम भी प्रीति करते हो १२ इस रीति के द्रोणाचार्य के वचनों को सुनकर आप के पुत्र के मन की अभिलाषा अर्थात् वह चित्त का भाव अकस्मात् चित्त से बाहर निकला जो सदैव उसके मन में नियत था १३ जिसका वह हृदगतभाव बृहस्पति सरीखे पुरुषों से भी जानने के अयोग्य था हे राजन्! इसी हेतु से आपका पुत्र अत्यन्त प्रसन्नमन होकर यह वचन बोला १४ कि हे आचार्यजी! युद्धभूमि में युधिष्ठिर के मरने से मेरी पूर्ण विजय नहीं है क्योंकि युधिष्ठिर के मरनेपर निश्चय करके पाण्डवलोग हम सबको मारेंगे क्योंकि वह सब देवताओं से भी युद्ध में मारने के योग्य नहीं हैं उनमें से एक भी कोई शेष रहेगा वह भी हम सबको मारसक्का है अर्थात् हमारा मूलसे नाश करसक्का है १५ । १६ उस सत्यसङ्कल्प युधिष्ठिर के पकड़लाने और फिर उसको द्यूत में हराने से उसकी आज्ञा पाकर फिर पाण्डवलोग वन को चलेजायँगे निश्चयकर के वह मेरी विजय बहुतकालतक होगी इस कारण से मैं धर्मराज के मारने को नहीं चाहता हूं १७ । १८ मुख्यप्रयोजन के जाननेवाले बुद्धिमान् चतुर द्रोणाचार्यजीने उसके चित्तकी बड़ी नीच निन्दित और अयोग्य इच्छा को जानकर अपने चित्त में बहुत सा विचारकर वह वर प्रतिज्ञा के साथ उसको दिया १९ द्रोणाचार्यजी बोले कि जो वीर अर्जुन युद्ध में युधिष्ठिर की रक्षा नहीं करता होगा तो पाण्डवोत्तम युधिष्ठिर को पकड़ाहुआही जानो अर्थात् अपने वशीभूतही जानकर लायाहुआही जानो २० अर्जुन युद्ध में इन्द्रसमेत देवताओं से और असुरों से भी जीतने के योग्य नहीं है २१ हे तात! इस हेतु से मैं उसको नहीं सहसक्का हूं यद्यपि वह अस्त्रकर्म में निस्सन्देह मेरा मन वाणी और उत्तम कर्मों से युक्त दृढ़चित्त से २२ शिष्य है इसके विशेष उसने इन्द्र और रुद्रजी से भी अनेक अस्त्र अच्छे प्रकार से पाये हैं और हे राजन्! तुझपर क्रोधयुक्त है इसहेतु से मैं उसको नहीं सहसक्का हूं २३ वह जब किसी उपायसे युद्ध से पृथक् होजाय अर्थात् अर्जुन के अलग होने और युद्ध से दूरलेजानेपर वह धर्मराज तुझसे विजय होसक्का है २४ हे पुरुषोत्तम! उसके पकड़ने मेंही तुम्हारी विजय है इस उपाय से उसको अच्छी रीति से तुम पकड़ोगे २५ हे राजन्! अब मैं धर्म की सत्यता में नियत राजायुधिष्ठिर को पकड़ करके निस्सन्देह तेरी आधीनता में

लेऊंगा २६ जो कुन्ती के पुत्र नरोत्तम अर्जुन के दूर लेजानेपर युद्ध में एक मुहूर्त भी मेरे आगे नियत होगा तो मैं उसको तेरे आधीन करसक्ता हूं २७ नहीं तो हे राजन्! युद्ध में अर्जुन के समक्ष में राजा युधिष्ठिर इन्द्रादिक देवता और असुरों से भी पकड़ने के योग्य नहीं है २८ सञ्जय बोले कि राजा के पकड़ने में द्रोणाचार्यजी के नियमपूर्वक प्रतिज्ञा करने पर आपके अज्ञानी पुत्रों ने उस को पकड़ाही जाना २६ आपका पुत्र द्रोणाचार्य को पाण्डवों से सम्बन्ध रखने वाला जानता है इस कारण प्रतिज्ञा के दृढ़ करने के निमित्त उसने वह अपना गुप्त मन्त्र प्रकट किया ३० हे शत्रुओं के विजय करनेवाले, धृतराष्ट्र! इसके अनन्तर दुर्योधन ने भी युधिष्ठिर के उस पकड़ने को सेना के सब स्थानोंपर प्रसिद्ध करवादिया ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, राजायुधिष्ठिर के पकड़ने के विषय में द्रोणाचार्य को नियमपूर्वक प्रतिज्ञा करनेपर और दुर्योधन के सर्वत्र विख्यात करने से आपकी सेना के मनुष्यों ने युधिष्ठिर के उस पकड़ने को सुनकर सिंहनादपूर्वक शब्दों को किया १ और भुजा अर्थात् तालों को ठोंका हे भरतवंशिन्! धर्मराज युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य की उस कर्म करने की इच्छा को न्यायके अनुसार २ प्रमाणीक दूतोंके द्वारा शीघ्रही जानकर सब भाइयों को और अन्य सब राजाओं को बुलाकर ३ अर्जुन से यह वचन कहा कि, हे पुरुषोत्तम! तुमने भी द्रोणाचार्यजी के कर्म करने की इच्छा को सुना ४ अब जिस रीति से वह उनकी इच्छा सत्य न होय उसी प्रकार का विचार करना चाहिये हे शत्रुओं के पराजय करनेवाले! द्रोणाचार्य ने नियमपूर्वक प्रतिज्ञा करी है ५ हे बड़े धनुषधारिन्! वह नियम उन्हों ने तुममें ही नियत किया है हे महाबाहो! सो तुम अब मेरे पीछे लड़ो ६ जिससे कि दुर्योधन इस अभीष्ट को द्रोणाचार्य से नहीं पावे अर्जुन ने कहा हे राजन्! जिस रीति से मैं आचार्यजी को कभी मारने के योग्य नहीं हूं ७ उसी प्रकार मैं आपके भी त्यागने को नहीं चाहता हे पाण्डव! चाहें युद्ध में मेरे प्राण भी जाते रहें ८ परन्तु मैं किसी दशा में भी आचार्यजी का शत्रु नहीं होसक्ता यह दुर्योधन आपको पकड़कर राज्य को चाहता है ९ सो वह दुर्योधन

इस जीवलोक में उस अभीष्ट को किसी दशा में भी नहीं पावेगा चाहै नक्षत्रों समेत स्वर्ग गिरपड़े अथवा पृथ्वी के खण्ड २ होजायँ १० परन्तु निश्चयकरके मेरे जीवतेहुए द्रोणाचार्य आपको नहीं पकड़सक्के जो युद्ध में आप वज्रधारी इन्द्र भी उनकी सहायता करें ११ अथवा देवताओं समेत विष्णुजी भी सहायक होजायँ तौ भी वह द्रोणाचार्य आपको युद्ध में नहीं पकड़सकेंगे हे राजेन्द्र ! मेरे जीवते रहने पर आप किसी प्रकार कभी भय के करने को योग्य नहीं हो १२ अस्त्रधारियों में और शस्त्रधारियों में भी श्रेष्ठ द्रोणाचार्य से तुम कभी भय मतकरो हे राजेन्द्र ! मैं दूसरी बात और भी कहता हूं कि मेरी प्रतिज्ञा सत्यही है १३ मैं अपने मिथ्या वचन को कभी स्मरण भी नहीं करता हूं और न कभी अपनी पराजय को याद करता हूं और कुछ प्रतिज्ञा करके आजतक कभी मिथ्या होजाने का भी मुझको स्मरण नहीं आता है तात्पर्य यह है कि मैंने मिथ्या न कभी किया और न करूंगा १४ सञ्जय बोले हे महाराज ! इसके अनन्तर पाण्डवों के निवासस्थानों में शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग और ढोलों के बड़े शब्द हुए १५ अर्थात् महात्मा पाण्डवों के शङ्खों के नादों से धनुष प्रत्यञ्चा और तलों के महाभयकारी शब्द आकाश के स्पर्श करनेवाले हुए १६ बड़े तेजस्वी पाण्डवों के शङ्खों के शब्दों को सुनकर आपकी सेना ने भी बाजों को बजाया १७ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे आपकी और पाण्डवों की अलंकृत सन्नद्ध सेना के लोग बड़े धैर्य से युद्ध में लड़तेहुए परस्पर में सम्मुख हुए १८ फिर तो पाण्डव, कौरवों समेत द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का भी युद्ध रोमाञ्च खड़ाकरनेवाला लोमहर्षण नाम महाकठिन युद्ध जारीहुआ १९ युद्ध में बड़े विचारपूर्वक उपाय करनेवाले सृञ्जय उन द्रोणाचार्यजी की सेना के मारने को समर्थ नहीं हुए क्योंकि वह सेना द्रोणाचार्यजी से रक्षित थी २० इसी प्रकार आपके पुत्र के प्रहारकर्ता बड़ेरथी उस अर्जुन से रक्षित पाण्डवीय सेना के भी मारने को समर्थ नहीं हुए २१ परस्पर में रक्षित वह दोनों सेना ऐसी स्तिमित और निष्फल सी होगईं जैसे कि रात्रि के समय संसारीलोगों के शयन करनेपर अच्छी प्रफुल्लित वन की परम्परा अर्थात् पंक्ति निश्चल होजाती है २२ हे राजन् ! इसके पीछे स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य प्रकाशमान सूर्य के समान रथपर सवार होकर सेना को सम्मुख करके सेना के मुखपर भ्रमण करनेलगे २३ रथ की सवारी से उपाय-

पूर्वक परिश्रम करनेवाले युद्ध में शीघ्रकर्ता अकेले उस द्रोणाचार्यही को पाण्डव और सृञ्जयों ने भयभीत होकर बहुतों के समान माना २४ हे महाराज ! उसके हाथ से छोड़ेहुए भयकारी बाण पाण्डवों की सेना को डरातेहुए सब दिशाओं में चलायमानहुए २५ सैकड़ों किरणों से संयुक्त दिवस में वर्तमान ऊष्म किरणों का रखनेवाला सूर्य जैसा दिखाई देता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य भी सबको दिखाई पड़े २६ हे भरतवंशिन् ! पाण्डवों के मध्य में पाण्डवों की सेना में से कोई भी शूरवीर उस युद्ध में क्रोधरूप द्रोणाचार्य के देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुआ जैसे कि दानवलोग महेन्द्र के देखने को समर्थ नहीं हुए थे २७ इसके पीछे प्रतापवान् भारद्वाज द्रोणाचार्य ने सेना को मोहित करके तीक्ष्ण धारवाले बाणों से धृष्टद्युम्न की सेना को शीघ्रही छिन्नभिन्न करदिया २८ अर्थात् उन द्रोणाचार्य ने सब ओर से दिशाओं को रोककर और बाणों से आकाश को व्याप्त करके जहां पर धृष्टद्युम्न था वहां जाकर पाण्डवों की सेना को मर्दन किया ॥२९॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके अनन्तर उन द्रोणाचार्यजी ने पाण्डवों की सेना में बड़े भय को उत्पन्न किया और सेना को भस्मकरतेहुए ऐसे भ्रमण करनेलगे जैसे सूखे वन में अग्नि देवता घूमते हैं १ सृञ्जय नाम क्षत्रिय उस साक्षात् अग्नि के समान प्रकटहोकर सेना को भस्मीभूत करते क्रोध से पूर्ण सुवर्ण के रथपर सवार द्रोणाचार्य को देखकर अत्यन्त कम्पायमानहुए २ वारंवार क्रोधसे युद्धमें शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य के धनुष की प्रत्यञ्चा के शब्द अत्यन्तता से ऐसे सुने गये जैसे वज्र के शब्द सुनाई देते हैं ३ द्रोणाचार्य के छोड़ेहुए भयकारी शायकों ने रथी, सवार, हाथी, घोड़े और पदातियों को अत्यन्त मर्दनकिया ४ जैसे कि ग्रीष्मऋतु के अन्त में बड़ी वृद्धितायुक्त गर्जताहुआ बादल वर्षा करता है उसी प्रकार पाषाणों की सी वर्षा करनेवाले होकर शत्रुओं को भय के उत्पन्न करने वाले हुए ५ हे राजन् ! तब उस भ्रमण करते और सेना को महाव्याकुल करते द्रोणाचार्य ने बुद्धि से बाहर शत्रुओं के भय को बढ़ाया ६ जैसे कि बिजली बादलों में घूमती हुई दिखाई देती है उसी प्रकार सुवर्ण से जटित उनका धनुष उस बादलरूपी रथ के बीच में वारंवार घूमताहुआ देखपड़ा ७ फिर उस पूर्ण

बुद्धिमान् सत्यवक्ता सदैव धर्म के अभ्यासी द्रोणाचार्यजी ने प्रलयकाल के समान जीवों के समूहों से युक्त घोर भयानकरूप नदी को जारीकिया ८ जोकि तीव्रक्रोध से प्रकट होनेवाले गर्दभ आदि जीवसमूहों से व्याप्त और सब ओर से सेना के समूहों से पूर्ण ध्वजारूप वृक्षों को दूर फेंकनेवाली थी ९ रुधिररूप जल, रथरूप आवर्त, हाथी, घोड़ेरूप किनारे रखनेवाली कवचरूपी नौकाओं से व्याप्त मांसरूपी कीच से भरीहुई १० मेद मज्जा और अस्थिरूप सीपी धारण करनेवाली वेष्टनीरूप फेनों से युक्त युद्धरूप बादलों से घिरीहुई प्रासनाम शस्त्ररूपी मछलियों से पूर्ण ११ मनुष्य, घोड़े और हाथियों से प्रकट तीक्ष्ण बाणों के समूहरूप प्रवाहों से बहनेवाली शरीररूपी लकड़ी से परस्पर में घिसावटवाली रथरूपी कछुओं से पूर्ण १२ शिर और खड्गरूप झषनाम मछलियों से भरीहुई रथ, हाथी, सूरतगर्तों से युक्त और नाना प्रकार के भूषणों से शोभायमान १३ महारथरूपी शतावर्त रखनेवाली धूलि पृथ्वीरूप लहरों की पंक्ति रखनेवाली युद्ध में बड़े २ पराक्रमी बलवानों को बड़ी सुगमता से तरने के योग्य और भयभीतों को दुर्गम्य १४ हजारों शरीरों से परस्पर घिसावटवाली गृध्र कङ्कनाम जीवों से सेवित और हजारों महारथियों को यमलोक में पहुँचानेवाली १५ शूलरूप सर्पों से पूर्ण जीवों की पंक्तियों से सेवित टूटे छत्ररूप बड़े हंस रखनेवाली मुकुटरूप पक्षियों से शोभित १६ चक्ररूप कूर्म गदारूप नक्र और बाणरूपी छोटी २ मछलियों से पूर्ण बगले गृध्र और शृगालों के भयकारी समूहों से सेवित १७ और युद्धमें द्रोणाचार्य से मारेहुए सैकरों जीवोंको पितृलोकके निमित्त बहानेवाली १८ सैकड़ों शरीरों से परस्पर घिसावटवाली बालरूप शैवल और शाद्वलोंकी रखनेवाली भयभीतोंके भय की बढ़ानेवाली नदी को जारीकिया १९ फिर जिनका अग्रगण्य युधिष्ठिर है वह सब शूरवीर उन कौरवी सेनाओं को घुड़कतेहुए महारथी द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़े २० उस समय आपके दृढ़पराक्रमी शूरवीरों ने उनके सम्मुख दौड़तेहुए वीरों को सब ओर से घेरा वहां का युद्ध भी रोमांच खड़े करनेवाला हुआ २१ हजारों छलों से भराहुआ शकुनी सहदेव के सम्मुख गया और तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सारथी ध्वजा और रथ को घायल किया २२ माद्री के पुत्र क्रोधयुक्त सहदेव ने उसके उन ध्वजा धनुष और घोड़ों को भी बाणों से काटकर सात बाणों से शकुनीको पीड़ित किया २३ फिर शकुनी

गदा को लेकर उत्तम रथ से कूदा हे राजन्! उसने गदा से उसके सारथी को रथ से गिराया २४ इसके अनन्तर वह दोनों महाबली शूरवीर रथ से रहित होकर गदा हाथों में लिये युद्ध में क्रीड़ाकरनेवाले ऐसे हुए जैसे कि शिखरधारी दो पर्वत होते हैं २५ द्रोणाचार्य ने शीघ्रगामी दशबाणों से राजा द्रुपद को बेध कर, जितने बाणोंसे द्रुपद ने घायल किया था उस से अधिक बाणों से आचार्य ने घायल किया २६ वीर भीमसेन ने तीक्ष्ण धारवाले बीस बाणों से विविंशति को बेधकर कम्पायमान नहीं किया यह महाआश्चर्य सा हुआ २७ हे महाराज! फिर विविंशति ने अकस्मात् भीमसेन को घोड़े ध्वजा और धनुष से रहित कर दिया इस हेतु से सेना के लोगों से उसकी प्रशंसा करी २८ उस वीर ने युद्ध में उस शत्रु के पराक्रम को न सहकर अपनी गदा से उसके सब सिखायेहुए घोड़ों को गिराया २९ हे राजन्! फिर वह महाबली मृतक घोड़ेवाले रथ से ढाल को लेकर भीमसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है ३० फिर हँसते प्यार करते और क्रोधकरते वीर शल्य ने अपने प्यारे भानजे नकुल को बाणों से घायल किया ३१ प्रतापवान् नकुल ने उसके घोड़े, छत्र, ध्वजा, सारथी और धनुष को गिराकर युद्ध में अपने शंख को बजाया ३२ धृष्टकेतु ने कृपाचार्य के चलायेहुए अनेकप्रकार के बाणों को काटकर सत्तरबाणों से कृपाचार्य को घायल किया और उसकी ध्वजा के चिह्न को भी तीन बाणों से तोड़ा ३३ कृपाचार्य ने बाणों की बड़ी वर्षा से उसको ढकदिया और बहुत क्रोधित होकर धृष्टकेतुको घायल किया ३४ सात्यकी ने कृतवर्मा को नाराचनाम बाणों से छाती में बेधकर बड़ी मन्द मुसकान समेत फिर दूसरे सत्तर बाणों से घायल किया ३५ फिर उस भोजवंशीय ने शीघ्रही तीक्ष्ण धारवाले सतहत्तर बाणों से सात्यकी को बेधकर कम्पायमान नहीं किया ३६ सेनापति धृष्टद्युम्न ने सुशर्मा को मर्मस्थलों पर अत्यन्त घायल किया फिर उसने भी उसको तोमरसे जत्रुस्थानपर घायल किया ३७ विराट ने बड़े पराक्रमी मत्स्यदेशियों समेत युद्ध में सूर्य के पुत्र कर्ण को रोका यह भी आश्चर्य सा हुआ ३८ वहां कर्ण ने वह भयकारी वीरता करी कि सब सेना को गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से रोका ३९ और आप राजा द्रुपद भगदत्त के साथ भिड़ा हे महाराज! उन दोनों का युद्ध अपूर्वरूप का हुआ ४० फिर पुरुषोत्तम भगदत्त

ने अपने बाणों से राजा द्रुपद को सारथी ध्वजा और रथसमेत घायल किया ४१ इसके पीछे क्रोधयुक्त द्रुपद ने महारथी भगदत्त को झुकी गांठवाले बाणों से शीघ्रही छातीपर घायल किया ४२ लोक के सब शूरवीरों में श्रेष्ठ अस्त्रविद्या में पण्डित भूरिश्रवा और शिखण्डी ने ऐसा युद्ध किया जोकि जीवमात्रों का भयकारी था ४३ हे राजन् ! पराक्रमी भूरिश्रवा ने युद्ध में महारथी शिखण्डी को शायकों के बड़े समूहों से ढकदिया ४४ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! इस के पीछे क्रोधयुक्त शिखण्डी ने भूरिश्रवा को नब्बे शायकों से कम्पायमान किया ४५ बड़े भयकारी कर्मकर्ता परस्पर में विजयाभिलाषी घटोत्कच और अलम्बुषनाम दोनों राक्षसों ने अत्यन्त अपूर्वयुद्ध किया ४६ सैकड़ों माया के उत्पन्न करनेवाले अहङ्कारी माया से एक दूसरे की विजय करनेवाले आश्चर्यकारी वह दोनों राक्षस अत्यन्त भ्रमण करनेवाले हुए ४७ चेकितान ने अनुबिन्द के साथ महाभयकारी ऐसा युद्ध किया जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में महाबली राजा बलि और इन्द्र का हुआ था ४८ लक्ष्मण ने क्षत्रदेव से ऐसा बड़ा युद्ध किया जैसे कि पूर्वसमय में विष्णु भगवान् ने युद्धभूमि के बीच हिरण्याक्ष के साथ में किया था ४९ हे राजन् ! इसके पीछे राजा पौरव अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ेवाले बुद्धि के अनुसार तैयार किये हुए रथ की सवारी में गर्जना करता हुआ अभिमन्यु के सम्मुख गया ५० फिर वह युद्धाभिलाषी शत्रुओं का विजय करनेवाला महाबली अभिमन्यु भी शीघ्रता से सम्मुख आया और उससे बड़ा भारी युद्ध किया ५१ फिर पौरव ने बाणों के समूहों से अभिमन्यु को ढकदिया अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने उसके ध्वजा छत्र और धनुषको पृथ्वी पर गिराया ५२ अभिमन्यु ने पौरव को दूसरे सात बाणों से बेधकर उस के सारथी समेत घोड़े को पांच शायकों से घायल किया ५३ इसके अनन्तर सेना को महाप्रसन्न करते सिंह के समान वारंवार गर्जते अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने पौरव के नाश करनेवाले बाण को शीघ्रता से हाथ में लिया ५४ फिर पौरव ने उस धनुष पर चढ़ायेहुए महाभयकारी शायक को जानकर दो बाणों से बाण समेत धनुष को काटा ५५ तब शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अभिमन्यु ने उस टूटे धनुष के डालते और दूसरे धनुष के लेते हुए तीक्ष्ण खड्ग को उठाया ५६ वह हस्तलाघव अपने पराक्रम को दिखलाता बहुत से नक्षत्र

चिह्नवाली ढाल को लेकर अनेक मार्गों में घूमा ५७ हे राजन् ! प्रथम तो ढाल और तलवार को घुमाना ऊंचे से उठाना नीचे गिराना और फिर उठाना विना अन्तर दिखाई नहीं पड़ा ५८ अकस्मात् गर्जना करतेहुए उस अभिमन्यु ने पौरव के रथाङ्ग ईशा को चलायमान करके उसी के रथमें नियत होकर पौरव की चोटी को पकड़लिया ५६ और इसके सारथी को पावों से मारकर खड्ग से ध्वजा को गिराया और जिसप्रकार गरुड़ समुद्र को चलायमान करके सर्प को पकड़ लेता है उसीप्रकार से उसको पकड़लिया ६० सब राजालोगोंने सिंह से गिराये हुए बैल के समान उस टूटी चोटीवाले महाव्याकुल अचेत रूपको देखा ६१ जयद्रथ ने अभिमन्यु की आधीनता में वर्तमान अनाथ के समान खैंचे और गिराये हुए पौरव को देखकर नहीं सहा ६२ हे महाराज ! वह सौ क्षुद्रघण्टिकाओं के जाल से युक्त मयूरों के चित्रों से युक्त ढाल तलवार को लेकर गर्जता हुआ रथ से उतरा ६३ इसके पीछे अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु जयद्रथ को देखकर पौरव को छोड़ रथ से उछलकर बाज पक्षी के समान गिरा ६४ और गिरकर उस अर्जुन के पुत्र ने शत्रुओं से चलायमान कियेहुए प्रास और पट्टिश और तलवारोंको अपनी तलवार से काटा और ढालसेही रोका ६५ अपनी हस्तलाघवता अपनी ही सेनाओं को दिखलाकर वह पराक्रमी शूरवीर अभिमन्यु उस बड़े खड्ग और ढाल को उठाकर वृद्धक्षत्र के पुत्र पिता के बड़ेभारीशत्रु जयद्रथ के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि शार्दूलसिंह हाथी के सम्मुख जाता है ६६ । ६७ खड्ग दाँत और नखरूप शस्त्र रखनेवाले वह दोनों परस्परमें सम्मुख होकर प्रसन्नचित्तों के समान होकर ऐसे युद्धक्रीड़ा करनेलगे जैसे कि व्याघ्र और केशरी क्रीड़ा करते हैं ६८ किसी ने भी उन नरोत्तमों का अन्तर वा ढाल तलवार का गिरना परस्पर के आघातों में नहीं देखा ६६ घुड़कना खड्ग का शब्द शस्त्रों की रोक टोक का दिखलाना बाह्याभ्यन्तरीय घात यह सब उनदोनों के विना अन्तर के दृष्टि पड़े ७० वह दोनों महात्मा वीर बाह्याभ्यन्तरीय उत्तम मार्गों में घूमते हुए पक्षधारी पर्वतों के समान दिखाई पड़े ७१ इसके पीछे जयद्रथ ने यशस्वी अभिमन्यु के चलायमान कियेहुए खड्ग को ढाल के किनारे पर रोका ७२ उस सुनहरी पर और प्रकाशमान ढाल के मध्य में लगाहुआ वह खड्ग जयद्रथ के पराक्रम से चलायमान होकर टूटा ७३ खड्ग को टूटा हुआ जानकर और छः चरणहटकर

एक निमेषहीमात्र में अपने रथ पर नियत हुआ देखाईदिया युद्ध से रहित उत्तम रथ पर नियत अभिमन्यु को सब राजाओं ने एकसाथही चारोंओर से घेर लिया ७४ । ७५ तदनन्तर अर्जुन का पुत्र महाबली ढाल तलवार को छोड़कर जयद्रथ को देखता हुआ गर्जा ७६ शत्रु के मारनेवाले अभिमन्युने उस सिन्धु के राजा जयद्रथ को छोड़कर उस सेना को ऐसा तपाया जैसे कि सूर्य भुवन को सन्तप्त करता है ७७ शल्य ने अत्यन्त लोहमयी और सुवर्ण से जटित भयकारी महाप्रकाशमान अग्निज्वाल के समान शक्तिको युद्ध में उसके ऊपर फेंका ७८ अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने उछलकर उसको पकड़लिया और खड्ग को ऐसे मियान से बाहर किया जैसे कि गरुड़ गिरतेहुए सर्प को ७६ उस अमिततेजस्वी अभिमन्यु की हस्तलाघवता और पराक्रम को जानकर सब राजा एकसाथही सिंहनाद को करतेहुए गर्जे ८० शत्रु के वीरों को मारनेवाले अभिमन्यु ने उस वैडूर्यजटित श्वेतवर्णवाली शक्ति को अपनी भुजा के पराक्रम से शल्य के ऊपर छोड़ा ८१ उस सर्पाकार छोड़ीहुई शक्ति ने उस शल्य के रथको पाकर उसके सारथी को मारा और उसको भी रथ से गिराया ८२ इसके पीछे विराट, द्रुपद, धृष्टकेतु, युधिष्ठिर, सात्यकी, पांचों कैकेय, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी ८३ नकुल और सहदेव यह सब धन्य हैं २ ऐसा कहकर पुकारे और नाना प्रकार के बाणों के शब्दों सहित सिंहनाद ८४ उस मुख न मोड़नेवाले अभिमन्यु को प्रसन्न करते प्रकटहुए आपके पुत्रने शत्रुके उस विजय के शब्दरूप चिह्न को नहीं सहा ८५ हे महाराज ! फिर सबने अकस्मात् उसको चारोंओर से तीक्ष्ण धारवाले बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल पहाड़ को ढकदेता है ८६ फिर उन्होंका प्रिय चाहनेवाला शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त आर्तायनि अभिमन्यु के सम्मुख गया ॥ ८७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! मैं तेरे कहेहुए बहुत से विचित्र द्वन्द्वनाम युद्धों को सुनकर नेत्रवाले मनुष्यों की इच्छा करता हूं १ देवासुरों के युद्धों के समान इस कौरव पाण्डवों के युद्ध को लोक में मनुष्यलोग आश्चर्यरूपही वर्णन करेंगे इस उत्तम युद्ध के सुनने से मेरी तृप्ति नहीं होती है इस हेतु से आर्तायनि और अभिमन्यु के युद्ध को मुझसे वर्णन करो २ । ३ सञ्जय बोले

कि राजा शल्य अपने सारथी को नाश हुआ देखकर केवल लोहमयी गदा को उठाकर महाक्रोध से गर्जना करता हुआ उत्तम रथ से कूदा ४ और भीमसेन बड़ी शीघ्रता से अपनी उत्तम गदा को लेकर उस कालाग्नि के समान प्रकाशित दण्डधारी यमराज के समान राजाशल्य के सम्मुख दौड़ा ५ और युक्तिपूर्वक भीमसेन से शल्य को रुका हुआ जानकर अभिमन्यु भी बड़ी गदा को लेकर शल्य से बोला कि आवो आवो ६ फिर प्रतापवान् भीमसेन अभिमन्यु को रोककर युद्धमें शल्यको पाकर पर्वतके समान निश्चल होकर नियत हुआ ७ और मद्रदेश का राजा शल्य भी महाबली भीमसेन को देखकर शीघ्रता से ऐसे सम्मुख गया जैसे कि शार्दूल हाथी के सम्मुख जाता है ८ इसके पीछे हजारों तूरी, बाजे, शङ्ख, भेरी आदि के बड़े २ शब्दों समेत सिंहनाद जारीहुए ९ देखते हुए परस्पर में सम्मुख दौड़ते हुए पाण्डव और कौरवों के सैकड़ों ऐसे शब्द प्रकट हुए कि धन्य है धन्य है १० हे भरतवंशिन्! सब राजाओं में शल्य के सिवाय युद्ध में भीमसेन के वेग के सहने को दूसरा कोई भी राजा सामर्थ्य नहीं रखता था इसी प्रकार इस लोक में भीमसेन के सिवाय महात्मा शल्य को भी गदा के वेग को कौन पुरुष सहने को समर्थ होसक्ता है ११। १२ स्वर्णमयी रेशमी वस्त्रों से मढ़ीहुई वह गदा मनुष्यों को प्रसन्न करनेवाली हुई तब भीमसेन से फेंकीहुई बड़ीगदा अग्निरूप हुई उसी प्रकार सब प्रकार के मण्डलों और मार्गों को घूमतीहुई वह शल्य की गदा भी बड़ी बिजली की सूरत होकर शोभायमान हुई १३। १४ फिर वह बैलों के समान गर्जते हुए शल्य और भीमसेन जिनके गदारूपी सींग चारोंओरको फैलेहुए थे मण्डलोंमें घूमे १५ उन दोनों पुरुषोत्तमों का युद्ध चक्रमण्डलरूप मार्गों और गदा के प्रहारों में समान हुआ अर्थात् किसी प्रकार का उनमें अन्तर नहीं हुआ १६ तब भीमसेन से ताड़ित वह शल्य की गदा जो सबको भयकारी और अग्निरूप थी शीघ्रही टूटी १७ इसी प्रकार भीमसेन की भी गदा शत्रु से ताड़ित होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि वर्षाऋतु के त्रिदोष काल में पटबीजनों से युक्त वृक्ष होता है १८ हे भरतवंशिन्! युद्ध में मद्रदेशीय राजा शल्य की फेंकीहुई आकाश को प्रकाशित करतीहुई उस गदा ने वारंवार अग्नि को उत्पन्नकिया १९ इसी प्रकार शत्रु के ऊपर भीमसेन की भेजीहुई गदा ने भी सेना को ऐसे तपाया जैसे कि गिरती

हुई बड़ी उल्का सन्तप्त करती है २० गदाओं में श्रेष्ठ नागकन्याओं के समान श्वास लेनेवाली उन गदाओं ने परस्पर में मिलकर अग्नि को उत्पन्न किया २१ । २२ जैसे कि बड़े व्याघ्र नखों से और बड़े हाथी दाँतों से आघात करते हैं उसी प्रकार वह गदा की नोकों से घायलहुए दोनों महात्मा एकक्षण मेंही रुधिर से लिप्त ऐसे दिखाई दिये जैसे कि फूलेहुए किंशुक के वृक्ष होते हैं २३ उन दोनों पुरुषोत्तमों की गदाओं के आघातशब्द इन्द्र के वज्र के समान सब दिशाओं में सुनेगये २४ तब मद्रदेश के राजा की गदा से दाहिने और बायें पक्ष में ताड़ित होकर भीमसेन ऐसे कम्पायमान होकर चलायमान नहीं हुआ जैसे कि घायल हुआ पर्वत अचल होता है २५ उसी प्रकार भीमसेन की गदा के वेगों से ताड़ित महाबली शल्य भी धैर्य से ऐसे नियत रहा जैसे कि वज्रों से ताड़ित पर्वत अचल रहता है २६ गदा को उठानेवाले बड़े वेगवान् दोनों वीर दौड़े और फिर अन्तर्मार्ग में नियत होकर दोनों मण्डलों को घूमे २७ फिर आठ चरण जाकर हाथियों के समान गिरकर अकस्मात् लोहदण्डों से परस्पर में घायल किया २८ परस्पर की तीव्रता से और गदाओं से अत्यन्त घायल हुए वह दोनों वीर इन्द्रधनुष के समान एक साथही पृथ्वी पर गिरे २९ इसके पीछे महारथी कृतवर्मा बड़ी शीघ्रता से उस व्याकुल और वारंवार श्वास लेनेवाले शल्य के पास गया ३० हे महाराज! गदा से वारंवार पीड़ित सर्प के समान चेष्टा करनेवाले मूर्च्छा से संयुक्त को देखकर महारथी कृतवर्मा युद्ध में से मद्रदेशियों के राजा शल्य को अपने रथमें बैठाकर युद्धभूमि से दूर लेगया ३१।३२ मतवाले के समान व्याकुल वीर शल्य एक निमिष मेंही फिर उठखड़ा हुआ और बड़ा महाबाहु भीमसेन भी हाथ में गदा लियेहुए दिखाई पड़ा ३३ हे श्रेष्ठ! इसके अनन्तर आपके पुत्र मद्रदेश के राजा को मुख फेरनेवाला देखकर हाथी प्रधान घोड़े और रथों समेत अत्यन्त कम्पायमान हुए ३४ विजय से शोभा पानेवाले पाण्डवों से पीड्यमान वह आपके शूरवीर भयभीत होकर दिशाओं को ऐसे भागे जैसे कि वायु से चलायमान बादल भागते हैं ३५ हे राजन्! महारथी पाण्डव आपके पुत्रों को विजय करके युद्ध में प्रकाशित अग्नियों के समान शोभायमान हुए ३६ और बहुत प्रसन्नमन होकर सिंहनाद करके भेरी मृदङ्ग और ढोलों के बाजों समेत शङ्खों को बजाया ॥ ३७ ॥

सोलहवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! अकेले पराक्रमी वृषसेन ने उस आप की सम्पूर्ण सेना को पराजित देखकर अस्त्रों को माया से धारण किया १ युद्ध में वृषसेन के छोड़ेहुए वह बाण मनुष्य, घोड़े, रथ और हाथियों को घायल करके दशों दिशाओं में घूमे २ उसके हज़ारों प्रकाशित बड़े २ बाण इस प्रकार की चेष्टा करनेवाले हुए जैसे कि उष्णऋतु में सूर्य की किरणें होती हैं ३ हे महाराज! उसके हाथ से पीड्यमान रथी और अश्वसवार अकस्मात् पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायु से ताड़ित वृक्ष टूटकर पृथ्वीपर गिरते हैं उस महारथी ने युद्ध में घोड़े रथ और हाथियों के सैकड़ों हज़ारों समूहों को गिराया ४।५ फिर युद्ध में निर्भय के समान उस अकेले को घूमतेहुए देखकर सब राजाओं ने एक साथ ही चारों ओर से घेर लिया ६ और नकुल का पुत्र शतानीक वृषसेन के सम्मुख गया और मर्मभेदी दश नाराचों से उसको घायल किया ७ कर्ण के पुत्र ने उसके धनुष को काटकर ध्वजा को गिराया तब द्रौपदी के पुत्र अपने भाई को चाहतेहुए उसके सम्मुख गये ८ और शीघ्रही बाणों के समूहों से कर्ण के पुत्र को दृष्टि से गुप्त करदिया फिर अश्वत्थामा आदिक महारथी गर्जतेहुए उनके सम्मुख दौड़े ६ हे महाराज! द्रौपदी के महारथी पुत्रों को बड़ी शीघ्रतापूर्वक नानाप्रकार के बाणों से ढकते हुए ऐसे सम्मुख गये जैसे कि बादल पर्वत को ढकते हुए सम्मुख जाते हैं १० पुत्रों को चाहते शीघ्रता करनेवाले पाण्डव शस्त्रधारी पाञ्चाल, कैकेय, मत्स्य और सृञ्जयों ने उनको घेर लिया ११ वहां आप के शूरवीरों के साथ पाण्डवों का वह युद्ध महाभयकारी रोमहर्षण ऐसा हुआ जैसा कि देवताओं के साथ असुरों का युद्ध महाभयकारी हुआ था १२ परस्पर अपराध करनेवाले और देखनेवाले क्रोध में भरेहुए वीर कौरव और पाण्डव इसरीति से युद्धों के करनेवाले हुए १३ उन असंख्य तेजस्वियों के शरीर क्रोध से ऐसे दिखाई दिये जैसे कि पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड़ से युद्धाभिलाषी सर्पों का रूप आकाश में होता है १४ भीमसेन, कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, धृष्टद्युम्न और सात्यकी से वह युद्धभूमि ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि उदय होनेवाला समय सूर्य से प्रकाशमान होता है १५ परस्पर में युद्धकरनेवाले उन

महाबलियों का युद्ध ऐसा कठिन हुआ जैसे कि पराक्रमी देवताओं के साथ दानवों का युद्ध होता है १६ इसके अनन्तर समुद्र के समान शब्दायमान युधिष्ठिर की सेना ने आपकी उस सेना को मारा जिसके कि महारथी भाग गये थे १७ द्रोणाचार्यजी उस पराजित शत्रुओं से अत्यन्त पीड्यमान सेना को देखकर बोले कि हे शूरवीरलोगो ! तुम मत भागो १८ इसके पीछे लालघोड़े रखनेवाले और चारदाँत रखनेवाले हाथी के समान द्रोणाचार्य क्रोधरूप हो पाण्डवीयसेना में प्रवेश कर युधिष्ठिर के सम्मुख गये १९ युधिष्ठिर ने कङ्कपक्षोंसे युक्त तीक्ष्णधारवाले बाणों से उनको बेधा फिर द्रोणाचार्य भी शीघ्रता से उसके धनुष को काटकर सम्मुख गये २० फिर पाञ्चालों को यश बढ़ानेवाले चक्र के रक्षक कुमारने उन आतेहुए द्रोणाचार्य को ऐसे रोका जैसे कि समुद्र को समुद्रकी मर्यादा वा किनारा रोकता है २१ कुमार से रुकेहुए ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य को देखकर धन्य २ वचनों के साथ सिंहनादों के शब्द हुए २२ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सिंह के समान वारंवार गर्जते कुमार ने उस बड़े युद्ध में द्रोणाचार्य को अपने शायकों से छातीपर घायलकिया २३ फिर महाबली हस्तलाघवी और श्रमसे रहित कुमार ने युद्ध में द्रोणाचार्य को रोका २४ ब्राह्मणवर्य द्रोणाचार्य ने उस शूरवीर श्रेष्ठव्रत रखनेवाले अस्त्रों के मन्त्रों में परिश्रम करनेवाले चक्र की रक्षा करनेवाले कुमार को मर्दनकिया २५ वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ भारद्वाज द्रोणाचार्य सेनाओं के मध्य को पाकर सब दिशाओं में घूमते हुए आपकी सेना के रक्षक हुए २६ शिखण्डी को बारह बाणों से उत्तमौजा को बीस बाण से नकुल को पांच बाण से और सहदेव को सात बाणों से घायल करके २७ युधिष्ठिर को बारह बाणों से द्रौपदी के पुत्रों को तीन २ बाणों से सात्यकी को पांच बाणों से राजा द्रुपद को दश बाणों से घायल करके २८ युद्ध में जाकर बड़े २ शूरवीरों को व्याकुल किया और बड़े २ श्रेष्ठ वीरों के सम्मुख दौड़े और कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को चाहते हुए सम्मुख आकर वर्तमान हुए २९ हे राजन् ! इसके पीछे युगन्धरने वायु से उठाये हुए समुद्र के समान क्रोधयुक्त महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य को रोका ३० उसने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से युधिष्ठिर को घायल करके भल्ल से युगन्धर को रथ के बैठने के स्थान से गिरा दिया ३१ तदनन्तर विराट, द्रुपद, कैकय, सात्यकी, शिबि, व्याघ्रदत्त, पाञ्चालदेशीय और प्रतापी

सिंहसेन ३२ यह सब और अन्य बहुत से शायकों के फैलानेवाले और युधिष्ठिर के चाहनेवाले वीरोंने उन द्रोणाचार्यके मार्गको चारों ओरसे रोका ३३ फिर पाञ्चालदेशीय व्याघ्रदत्त ने द्रोणाचार्य को तीक्ष्ण पचास बाणों से घायल किया हे राजन् ! इस हेतु से सेना के मनुष्यों ने बड़ा उच्च शब्द किया ३४ फिर सिंहसेन शीघ्रता से महारथी द्रोणाचार्य को घायल करके महारथियों को भय-भीत करता हुआ अकस्मात् हँसनेलगा ३५ उसके पीछे द्रोणाचार्य अपने दोनों नेत्रों को खोले धनुष की प्रत्यञ्चा को टङ्कार तल के बड़े शब्द को करके उसके सम्मुख गये ३६ वहां जाकर उस पराक्रमी ने सिंहसेन और व्याघ्रदत्त के शरीर से कुण्डलों समेत कानों को दो भल्लों से काटकर गिराया ३७ और पाण्डवों के इन महारथियों को बाणों के समूहों से मर्दन करके नाश करनेवाले काल के समान उस युधिष्ठिर के रथ के पास नियत हुए ३८ हे राजन् ! इनके पीछे व्रत में सावधान द्रोणाचार्य के सम्मुख नियत होनेपर युधिष्ठिर की सेना के मध्य में युद्धकर्ताओं के बड़े शब्द हुए ३९ वहां सेना के लोग द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर बोले कि निश्चय करके अब राजा दुर्योधन अभीष्ट प्राप्तकरेगा ४० इस मुहूर्त में प्रसन्नचित्त द्रोणाचार्य पाण्डव युधिष्ठिर को पकड़कर दुर्योधन के युद्ध में हमारे सम्मुख आवेंगे ४१ इस प्रकार से आपके शूरवीरों के कहते हुए ही महारथी अर्जुन रथके शब्द से गर्जताहुआ बड़ी तीव्रता से आया ४२ और आतेही अर्जुन ने सेना के मारने में उस रुधिररूप रथरूप भँवरवाली शूरों के अस्थिसमूहों से युक्त मृतकों को किनारे से दूर फेंकनेवाली नदी को जारी करके ४३ उस बाणसमूहरूप बड़े फेन रखनेवाली प्रासशस्त्ररूपी मछलियों से व्याकुल नदी को बड़ी तीव्रता से पार होकर और कौरवों को भगाके ४४ वह मुकुटधारी अर्जुन अकस्मात् बाणों के बड़े जालों से ढकता और मोहित करता द्रोणाचार्य की सेना के सम्मुख गया ४५ बाणों को बराबर चढ़ाते और शीघ्रता से छोड़तेहुए यशस्वी अर्जुन का अन्तर किसीने भी नहीं देखा ४६ हे महाराज! न तो दिशा दीखीं न अन्तरिक्ष (आकाश) और पृथ्वी दिखाई पड़े सब बाणरूपही होगया ४७ उस समय गाण्डीव धनुषधारी से कियेहुए बड़े अन्धकार में किसी को कुछ भी नहीं दिखाई दिया ४८ तब सूर्य के अस्तहोने और अन्धकार में संसार के प्रवृत्त होनेपर मित्र शत्रुआदि कोई भी नहीं जान पड़े ४९

इसके पीछे उन द्रोणाचार्य और दुर्योधनादिक ने विश्राम किया फिर अर्जुन ने उन शत्रुओं को भयभीत और युद्ध से मन हटानेवाला जानकर ५० धीरेपने से अपनी सेनाओं को भी विश्राम दिया इसके पीछे अत्यन्तप्रसन्नचित्त पाण्डव, सृञ्जय और पाञ्चालोंने चित्तरोचक वचनों से अर्जुन की ऐसे प्रशंसापूर्वक स्तुति करी जैसे कि ऋषिलोग सूर्य की प्रशंसापूर्वक स्तुतिकरते हैं इस रीति से अर्जुन शत्रुओं को विजयकरके अपने डेरोंको गया ५१।५२ और केशवजी प्रसन्नचित्त होकर उसकी सेनाओं के पीछे की ओर से गये ५३ पाण्डु का पुत्र अर्जुन इन्द्रनीलमणि और सुवर्ण, रजत, वज्र, स्फटिक आदि उत्तम वस्तुओं से जटित रथ में ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसे कि नक्षत्रों से अलंकृत वा जटित आकाश में चन्द्रमा शोभित होता है ॥ ५४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! वह दोनों सेना डेरों को जाकर यथाभाग, यथान्याय, यथागुल्म सब ओर से विश्राम करनेवाली हुई १ अत्यन्तखेदितमन द्रोणाचार्य सेनाओं का विश्राम करके दुर्योधन को देखकर लज्जायुक्त होकर यह वचन बोले २ कि मैंने पूर्वमेंही कहा था कि अर्जुन के नियत होने पर युद्ध में देवताओं से भी युधिष्ठिर पकड़े जाने के योग्य नहीं हैं ३ अर्जुन ने युद्ध में उपाय करनेवाले तुमलोगों का वह विचार तोड़दिया तुम मेरे वचन पर शङ्का मत करना मैं सत्य २ कहता हूं कि श्रीकृष्णजी और अर्जुन सब से अजेय हैं ४ हे राजन्! किसी हेतु से अर्जुन के दूर लेजाने पर यह युधिष्ठिर तेरी स्वाधीनता में वर्तमान होगा ५ कोई युद्ध में उसको बुलाकर दूसरे स्थानपर लेजाय और अर्जुन उसको न जीतकर किसी दशा में भी लौटकर न आवे ६ तो हे राजन्! मैं उसी अन्तर में धृष्टद्युम्न के देखते हुए सेना को छिन्न भिन्न करके अकेलेपने में धर्मराज को पकड़ूंगा ७ जो अर्जुन से पृथक् वह मुझको समीप आयाहुआ देखकर युद्ध को नहीं त्यागे तो पाण्डव युधिष्ठिर का पकड़ा हुआही जानो हे महाराज! अब मैं इस रीति से धर्म के पुत्र युधिष्ठिर को उसके सब समूहों समेत तेरी आधीनता में वर्तमान करूंगा इसमें किसीप्रकार का सन्देह न समझो ८।९ जो पाण्डव एक मुहूर्त भी युद्ध में नियत होगा तो मैं उसको

युद्धभूमि में से पकड़ लाऊंगा क्योंकि वह अर्जुनही के कारण से प्रबल है १० सञ्जय बोले हे राजन् ! तब त्रिगर्त का राजा अपने भाइयों समेत द्रोणाचार्य के उस वचन को सुनकर बोला ११ कि हम सदैव गाण्डीवधनुषधारी से निरादर कियेगये निश्चयकरके उसीने हम निरपराधीलोगों पर भी बड़ी द्वेषता करी है १२ हम सबलोग उन पृथक् २ प्रकार के अपमानों को स्मरण करते अपनी क्रोधाग्नि से भस्मीभूत होकर कभी रात्रि में नींद भर कर नहीं सोते हैं १३ वह अस्त्रों से युक्त हमारे प्रारब्ध से हमारे नेत्रों केही सम्मुख दीखता हुआ वर्तमान है हम अपने हृदयवर्ती उस कर्म को करनेवाले हैं जिस को कि हम अच्छा समझते हैं १४ वह कर्म आपका प्रियकारी और हमारे यश का करनेवाला है अर्थात् हम उसको युद्धभूमि से बाहर लेजाकर मारेंगे १५ अब च.है पृथ्वी अर्जुन से रहित होय अथवा फिर त्रिगर्तदेशियों से रहित होय परन्तु हम तुमसे सत्य २ प्रतिज्ञा करते हैं हमारी प्रतिज्ञा मिथ्या नहीं होगी १६ हे भरतवंशिन्, महाराज ! दश हजार रथियों समेत वह पांचों भाई इस रीति के वचनों को कहकर १७ युद्ध में शपथ खाकर लौटे सब मालव और तुण्डकेर तीसहजार रथों समेत प्रस्थल का राजा त्रिगर्तदेशीय नरोत्तम राजा सुशर्मा, मावेल्लक, ललित्थ, मद्रक १८ । १९ दशहजार रथ और भाइयों के साथ गया और नाना प्रकार के देशियों से युक्त उत्तमपुरुषों का समूह दशहजार रथों समेत शपथ खाने के निमित्त पास गया इसके पीछे सबने पृथक् २ अग्नि लाकर पूजन करके २० । २१ कुशों के चीर और अलंकृत कवचों को लिया वह कवच धारण करनेवाले घृत से संयुक्त शरीर कुशाओं के चीरधारी २२ मूँज की मेखला धारण करनेवाले लाखों दक्षिणा देनेवाले वीर अथवा यज्ञकरनेवाले सन्तानवान् स्वर्गलोक के योग्य कृतकर्मी शरीर के अभिमानों को दूर करनेवाले २३ यश और विजय के साथ आत्मा को पूजते वेद के मुख और काल दक्षिणावाले यज्ञों से ब्रह्मचर्य को पाकर २४ उत्तम युद्ध से शीघ्रही लोकों को जाने के अभिलाषी सब ब्राह्मणों को सन्तुष्ट और तृप्त करके पृथक् २ निष्कों की दक्षिणा देकर २५ गौ और वस्त्रों का दानकरके परस्पर में वारंवार वार्तालाप करते अग्नि को प्रज्वलित कर युद्धव्रत को धारण करके २६ उन दृढ़व्रत और निश्चयवालों ने उस अग्नि के समक्ष में प्रतिज्ञा

करी और सब जीवों के सुनते हुए उच्चस्वर से वचनों को कहा २७ और सबों ने अर्जुन के मारने की भी प्रतिज्ञा करी कि जो लोक मिथ्यावादियों के हैं और जो ब्राह्मणों के मारनेवालों के हैं २८ । २६ जो मद्यपान और गुरु की स्त्री से संभोग करनेवालों के, ब्राह्मणों का धन चुरानेवालों के, राजपिण्ड चुरानेवालों के, शरणागत के त्यागनेवालों के, प्रार्थना करनेवालों के, मारनेवालों के, घरों में अग्नि लगानेवालों के और गौओं के मारनेवालों के जो लोक हैं ३० अथवा दूसरों के अप्रिय करनेवालों के, ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवालों के, ऋतुकाल में मोह से अपनी स्त्री के पास न जानेवालों के जो लोक हैं ३१ व श्राद्ध में सम्भोग करनेवालों के, आत्मघातियों के, दूसरे की धरोहर मारनेवालों के, शास्त्र के नाशकर्ताओं के, नपुंसक से लड़नेवालों के अथवा नीचों के पीछे चलनेवालों के जो लोक हैं ३२ और नास्तिकलोगों के जो लोक हैं और अग्नि व माता पिता को त्याग करनेवालों के अथवा अन्य प्रकार के भी पाप करनेवालों के जो लोक हैं ३३ उन सब लोकों को हम प्राप्त होयँ जो हम अर्जुन को युद्ध में मारे विना लौटकर आवें ३४ और उन लोगों से पीड्यमान होकर भयसे मुख को मोड़ें जो लोक के मध्य युद्ध में कठिन कर्मों को करते हैं ३५ इसीसे अब हम सब लोग अपने अभीष्ट लोकों को निस्सन्देह पावेंगे हे राजन्! तब वह वीर इस प्रकार से कहकर अर्जुन को दक्षिण दिशा में बुलाते हुए युद्ध में सम्मुख वर्तमान हुए उन नरोत्तमों से बुलाया हुआ शत्रुओं के पुरों को विजय करनेवाला अर्जुन ३६ । ३७ धर्मराज से शीघ्रही यह वचन बोला कि मैं बुलाया हुआ होकर नहीं लौटता हूं यह मेरा व्रत नियत है ३८ हे राजन्! प्रतिज्ञा करनेवाले संसप्तक मुझको बड़े युद्ध में बुलाते हैं और यह सुशर्मा भी भाइयों समेत युद्धाभिलाषी होकर युद्ध में बुला रहा है ३९ सो आप उसके सब साथियों समेत मारने के निमित्त मुझको आज्ञा दीजिये हे पुरुषोत्तम! मैं इस बुलाने के सहने को समर्थ नहीं हूं ४० मैं आप से सत्य २ प्रतिज्ञा करता हूं कि युद्धमें सब शत्रुओं को मरा हुआही जानो ४१ युधिष्ठिर बोले हे तात! जो द्रोणाचार्य के चित्त में कर्म करने की इच्छा है उसको तुमने अच्छीरीति से मुख्यतापूर्वक सुना है उनकी वह प्रतिज्ञा जिस प्रकार से मिथ्या होय वही तुम को सब प्रकार से करना उचित है ४२ निश्चय

करके द्रोणाचार्यजी महापराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ और श्रम से रहित हैं हे महारथिन्! उसने मेरे पकड़ने की प्रतिज्ञा करी है ४३ अर्जुन बोले कि हे राजन्! निश्चय करके यह सत्यजित युद्ध में आपकी रक्षा करेगा और धृष्टद्युम्न के जीवते होने पर द्रोणाचार्य अपने अभीष्ट को नहीं पावेंगे ४४ हे प्रभो! युद्ध में पुरुषोत्तम सत्यजित के मरने पर मिले हुए सबका भी किसी दशा में नियत न होना चाहिये ४५ सञ्जय बोले कि इसके अनन्तर अर्जुन राजा से आज्ञा दिया गया और छाती से मिलायागया और बहुत प्रसन्नचित्त होकर राजा ने अनेक प्रकार के आशीर्वाद दिये ४६ तब वह पराक्रमी अर्जुन इस रीति से कह सुन कर त्रिगर्तदेशियों के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि क्षुधावान् सिंह अपनी क्षुधा दूर करने के निमित्त मृगों के यूथों के सम्मुख जाता है ४७ इसके पीछे दुर्योधन की सेना बड़ी प्रसन्न हुई और अर्जुन के जाने पर धर्मराज के पकड़ने में अत्यन्त क्रोधयुक्त हुए ४८ फिर वह दोनों सेना शीघ्रता से ऐसे परस्पर में भिड़ीं जैसे कि जलवाली वर्षा ऋतु में गङ्गा और सरयू यह दोनों नदी वेगसे मिलती हैं॥४६॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

अठारहवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! इसके पीछे प्रसन्नता से युक्त संसप्तकलोग रथों से सेना को चन्द्रमा के आकार की बनाकर समभूमिवाले स्थानपर नियतहुए १ हे श्रेष्ठ! तब वह नरोत्तम आतेहुए अर्जुन को देखकर प्रसन्न होकर बड़े शब्दों से पुकारे २ उस शब्द ने सब दिशा और विदिशाओं समेत आकाश को व्याप्त कर दिया और शब्दसे लोकके अत्यन्त भरजानेपर वहांपर कोई प्रकारका दूसरा शब्द नहीं हुआ ३ वह अर्जुन उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त क्षत्रियोंको देखकर कुछ मन्द मुसकान करताहुआ श्रीकृष्णजी से यह वचन बोला ४ कि हे देवकीनन्दन! अब तुम युद्ध में इन मरने के अभिलाषी और रोने के योग्यस्थानपर अत्यन्त प्रसन्नचित्त त्रिगर्तदेशीय भाइयों को देखो ५ निस्सन्देह त्रिगर्तदेशियों की प्रसन्नता का यह समय है कि वह उन श्रेष्ठ उत्तमलोकों को पावेंगे जो कि नीच मनुष्यों को कठिनता से प्राप्तहोते हैं ६ इसके पीछे महाबाहु अर्जुन ने इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी को ऐसे प्रकार के वचन कहकर युद्ध में त्रिगर्तदेशियों की अलंकृत सेना को सम्मुख हुआ पाया ७ तब उसने सुवर्ण से जटित देवदत्त

नाम शङ्ख को लेकर बड़ी तीव्रता से बजाया और उसके शब्द से सब दि-शाओं को व्याप्त करदिया ८ उस शब्द से संसप्तकों की सेना महाभयभीत होकर पाषाण की मूर्तियों के समान युद्ध में निश्चल होकर नियतहुई ९ और उनकी सवारियों के वाहनों ने नेत्रों को फाड़कर कानों को खड़ाकर ग्रीवा और शिरोंको स्तब्ध करके अपने चरणों को स्थिर करते मूत्र और रुधिर को गेरा १० इसके पीछे सावधान और सचेत हो सेना को नियत कर एकबारही सब इकट्ठे होकर अर्जुन के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे ११ पराक्रमी अर्जुन ने उन पन्द्रह हज़ार बाणों को शीघ्रही अपने तीव्र बाणों से बीचहीमें काटा १२ इसके पीछे फिर उन लोगों ने अर्जुनको दश २ बाणों से घायल किया फिर अर्जुन ने उनको तीन २ बाणों से घायल किया १३ हे राजन् ! इसके पीछे प्रत्येक ने अर्जुन को पांच २ बाणों से व्यथित किया इस पराक्रमी ने भी उनको दो २ बाणों से घायल किया १४ फिर उन क्रोधयुक्तों ने केशवजीसमेत अर्जुनको तीक्ष्ण बाणोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि वर्षा की बूंदें तालाब को घायल करती हैं १५ तदनन्तर हज़ारों बाण अर्जुनके ऊपर ऐसे गिरे जैसे कि भ्रमरों के गण फूलेहुए वनके वृक्षोंपर गिरते हैं फिर सुबाहु ने तीस लोहमयी बाणों से अर्जुनको मुकुटपर बहुत घायल किया १६ । १७ सुवर्णका मुकुट रखनेवाला अर्जुन उन सुनहरी पुङ्खयुक्त सीधे चलनेवाले मुकुट पर नियत हुए बाणों से उदय हुए सूर्यके समान शोभायमान हुआ १८ अर्जुन ने युद्ध में सुबाहु के हस्तावाय अर्थात् लोहेके हस्तत्राण को काटकर बाणोंके जालोंसे ढकदिया १९ इसके पीछे सुशर्मा, सुरथ, सुधर्मा, सुधनु और सुबाहु ने अर्जुन को दश २ बाणों से घायल किया २० हनुमान्जी की ध्वजा रखनेवाले अर्जुन ने उन सब को पृथक् २ बाणों से बेधा और भल्लों से उन सब की ध्वजा और शायकों को काटा २१ फिर सुधन्वाके धनुषको काट उसके घोड़ों को मार उसके शरीर समेत शिर को पृथक् २ करके गेरदिया २२ उस वीर के गिरानेपर उसके अनुगामी भयभीत होकर महाव्याकुलतासे उधरको भागे जिधर दुर्योधनकी सेना थी २३ तदनन्तर अत्यन्तक्रोधयुक्त इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने अखण्डित बाणजालों से उस बड़ी सेना को ऐसे मारा जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से अन्धकार को नाश करदेता है २४ उस सेना के पराजय और चारोंओर के भागजाने व गुप्त

होजाने पर अथवा अर्जुन के अत्यन्त कोपयुक्त होनेपर त्रिगर्तदेशियों में भय प्रविष्ट हुआ २५ वह सब अर्जुन के गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से घायल जहां तहां मृगों के समूहों के समान भयभीत और अचेत होगये २६ इसके पीछे क्रोधयुक्त त्रिगर्त का राजा उन महारथियों से बोला कि हे शूरलोगो ! तुम मत भागो तुमको भय करना योग्य नहीं है २७ सब सेना के सम्मुख भयकारी शपथों को खाकर यहां आये हो अब दुर्योधन की सेना में शीघ्रता से जाकर क्या कहोगे २८ हम सब एक साथ युद्ध में ऐसे कर्मकरने से इस लोक में क्यों नहीं हास्य के योग्य होंगे अवश्य निन्दित गिने जायँगे इससे तुम सब साथ होकर सेनासमेत युद्धकरो २९ हे राजन् ! ऐसे कहेहुए वे वीर परस्पर में प्रसन्न करते वारंवार पुकारे और शङ्खों को बजाया ३० इसके पीछे वह संसप्तकों के समूह जिनका कि नारायण और गोपाल नाम था मृत्यु को निवृत्त करके फिर लौटे॥३१॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

सञ्जयजी बोले कि, अर्जुन फिर उन लौटेहुए संसप्तकों के समूहों को देखकर अर्जुन महात्मा वासुदेवजी से बोले १ कि हे श्रीकृष्णजी ! घोड़ोंको संसप्तकों के समूहों पर चलायमान करो ये लोग जीवतेहुए युद्ध को त्याग नहीं करेंगे यह मेरा विचार है २ अब आप मेरे भुजबल और धनुष के भयकारी पराक्रम को देखो अब मैं इन सबको ऐसे गिराऊंगा जैसे कि क्रोधयुक्त रुद्रजी पशुओं को गिराते हैं ३ इसके पीछे निर्भय श्रीकृष्णजी ने मन्द मुसकान करके बड़े आनन्द से उसको प्रसन्न करके सेना में जाकर जहां २ अर्जुन ने चाहा वहां २ उसको प्रवेशित किया ४ तब युद्ध में श्वेत घोड़ोंसे खैंचा हुआ वह रथ ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में चलायमान किया हुआ विमान होता है ५ फिर दाहिने और बायें मण्डलोंको भी ऐसा किया जैसे कि पूर्वसमय में इन्द्र के रथ ने देव दानवोंके युद्धमें किया था ६ इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त नाना प्रकारके शस्त्रों को हाथ में रखनेवाले बाणों के समूहों से ढकतेहुए नारायण नाम क्षत्रियों के समूह ने अर्जुन को चारोंओर से घेरलिया ७ हे भरतर्षभ ! फिर उन्होंने युद्ध के मध्यवर्ती श्रीकृष्णजी समेत कुन्ती के पुत्र अर्जुनको एक मुहूर्त मात्रही में दृष्टि से गुप्त करदिया ८ फिर क्रोधभरे युद्ध में पराक्रम को द्विगुणित

करनेवाले अर्जुन ने शीघ्रही युद्ध में अपने गाण्डीव धनुष को हाथ में लिया ६ और क्रोध को सूचन करनेवाली भृकुटी को मुखपर बाँधकर देवदत्त नाम बड़े शङ्ख को बजाया १० और शत्रुसमूहों के मारनेवाले त्वाष्ट्रनाम अस्त्र को चलाया उसके चलतेही हज़ारों रूप पृथक् २ प्रकटहुए ११ अपने रूप के समान अथवा बहुत प्रकार के रूप रखनेवाले उन रूपों से क्षत्रियलोग अत्यन्त मोहित हुए और एक ने दूसरे को अर्जुन मानकर अपने आप अपने को मारा १२ यह अर्जुन है यह गोविन्दजी है यह पाण्डवलोग और यादव हैं ऐसे २ वचनों को बोलतेहुए उन अज्ञानियों ने परस्पर युद्ध में एक ने एक को मारा १३ अर्थात् उन अचेतों ने परम अस्त्र से परस्पर में नाशकिया उस युद्ध में शूर वीर लोग प्रफुल्लित किंशुक वृक्ष के समान शोभायमानहुए १४ इसके पीछे उस अस्त्र ने उनके छोड़ेहुए हज़ारों बाणों को धूलि में मिलाकर उन वीरों को यमलोक में पहुँचाया १५ फिर अर्जुन ने हँसकर ललित्थ, मालव, मावेल्लक और त्रिगर्तदेशीय शूर वीरोंको बाणों से पीड्यमान किया १६ उन काल के प्रेरित और वीर अर्जुन से घायलहुए क्षत्रियों ने अर्जुन के ऊपर नाना प्रकार के बाणजालों को फेंका १७ वहां उस भयकारी बाणों की वर्षा से ढकीहुई न ध्वजा दृष्ट पड़ी न अर्जुन रथ और न केशवजी दिखाई दिये १८ तब तो वह लब्धहुए लक्ष से परस्पर में पुकारे कि दोनों अर्जुन और केशवजी को मारा है ऐसा पुकारकर प्रसन्नता से वस्त्रों को हलाया १९ हे श्रेष्ठ ! वहां हज़ारों वीरों ने भेरी मृदङ्ग और शङ्खों को भी बजाया और महाभयकारी सिंहनादों के शब्दों को किया २० इसके पीछे श्रीकृष्णजी प्रस्वेद से व्याप्त होगये और महादुःखी होकर अर्जुन से बोले हे अर्जुन ! तू कहां है मैं तुझको नहीं देखता हूं हे शत्रुओं के मारनेवाले ! तू जीवता है २१ श्रीकृष्णजी के इस वचन को सुनकर शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने वायु अस्त्र से उनके छोड़ेहुए बाणों के समूहों को दूर किया २२ इसके अनन्तर उस समर्थ वायु ने संसप्तकों के समूहों को घोड़े, रथ, हाथी और शस्त्रोंसमेत ऐसे उड़ाया जैसे कि सूखे पत्तों के समूहों को उड़ाता है २३ हे राजन् ! वह फिर वायु से चलायमान होकर ऐसे बड़े शोभायमान हुए जैसे कि समय पर वृक्ष से उड़नेवाले पक्षी शोभायमान होते हैं २४ फिर शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने उन सब को इस रीतिसे व्याकुल करके तीक्ष्ण बाणों

से हजारों को मारा २५ भल्लों से शिर और शस्त्रों समेत भुजाओं को काटा हाथी की सूंड़के समान उन सबकी जङ्घाओं को बाणों से पृथ्वी पर गिराया २६ अर्जुन ने शत्रुओं को टूटीपीठ और भुजाचरण कमर और नेत्रोंको तोड़कर नाना प्रकार के शरीर के अङ्गों से रहित किया २७ फिर बुद्धिके अनुसार गन्धर्वनगर के समान अलंकृत कियेहुए रथों को बाणों से चूर्ण करके अर्जुन ने उन सब लोगों को रथ, घोड़े और हाथी आदि सवारियों से भी रहित करदिया २८ वहां पर कहीं २ टूटे रथ और ध्वजाओंके समूह स्थान २ पर मुण्डतालवनों के समान प्रकाशमान हुए उत्तरायुध पताका और अंकुशों समेत हाथी भी ऐसे गिरपड़े जैसे कि इन्द्र के वज्र से ताड़ित वृक्षधारी पर्वत गिरते हैं २६। ३० चामर आपीड़ और कवचों के रखनेवाले और इसीप्रकार आँत निकलनेवाले घोड़े अपने सवारों समेत अर्जुन के बाणों से घायल होकर पृथ्वी पर गिरे ३१ जिनके खड्ग और नख कटगये और ढाल, दुधारा, खड्ग, शक्ति और कवच भी टूटगये ऐसे मर्मों से छिन्न महादुःखी पत्तिलोग भी मृतक हुए ३२ उन मृतक घायल पड़े गिरते घूमते और शब्दों को करते शूर वीरों से वह युद्धभूमि शोभायमान हुई ३३ उस पृथ्वी की महाभयानक धूलि रुधिर की वर्षा से दबगई और सैकड़ों बिना शिर के शरीर अर्थात् रुंडों से भी युक्त होकर वह पृथ्वी दुर्गम्य होगई ३४ अर्जुन का वह भयकारी रथ युद्ध में ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलय के समय पशुओं के मारनेवाले रुद्रजी की क्रीड़ा का स्थान होता है ३५ अर्जुन से घायल हुए घोड़े रथ और हाथियोंवाले और अर्जुन के सम्मुख नाशवान् उन क्षत्रियों ने इन्द्र की आतिथ्यता को पाया ३६ हे भरतर्षभ! उन चारों ओर से मृतकरूप महारथियों से आच्छादित वह पृथ्वी महाशोभायमान हुई ३७ इसी अन्तर में अर्जुन के अज्ञात होने पर सेना को अलंकृत करके द्रोणाचार्य युधिष्ठिर के सम्मुख गये ३८ शीघ्रता से युक्त अलंकृत सेनावाले प्रहारकर्ता युधिष्ठिर को चाहनेवालों ने उसको घेरलिया उस समय वहां बड़ा कठिन युद्ध हुआ॥ ३६॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनविंशोऽध्यायः॥ १६॥

बीसवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे राजेन्द्र! महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्यजी उस रात्रि को व्यतीत कर दुर्योधन को बहुतसे वचन कहके १ अर्जुन और संसप्तकों से युद्ध

को नियत करके संसप्तकों के रथों की ओर अर्जुन की यात्रा होनेपर २ अलंकृत सेनावाले द्रोणाचार्य धर्मराज के पकड़ने की इच्छा से पाण्डवों की बड़ी सेना के सम्मुख गये ३ तब युधिष्ठिर ने भारद्वाज के रचे हुए गरुड़व्यूह को देखकर मण्डलार्धनाम व्यूह से अपनी सेना को अलंकृत किया महारथी भारद्वाज तो गरुड़व्यूह के मुखपरहुए ४ राजा दुर्योधन अपने सगे भाइयों समेत पीछे च-लनेवालों से संयुक्त होकर शिर के स्थान पर हुआ धनुषधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य और कृतवर्मा ये दोनों नेत्र हुए ५ भूतशर्मा, क्षेमशर्मा, पराक्रमी करवर्ष, क-लिङ्गदेशीय, सिंहलदेशीय, पूर्वीय राजालोग, शूर, अभीरक, दशेटक ६ शक, यवन, काम्बोजदेशीय इसी प्रकार हंसपथ, शूरसेनदेशीय, दरददेशीय, मद्र-देशीय और जो केकयदेशीय हैं ७ वे ग्रीवा में संयुक्त हुए और हाथी, घोड़े, रथ और पत्तियों के समूह अच्छे अलंकृत होकर नियतहुए भूरिश्रवा, शल्य, सोमदत्त और बाह्लीक ८ ये सब वीर अक्षौहिणी से संयुक्त दक्षिणपक्ष में नियत हुए और बिन्द, अनुबिन्द, अवन्तिदेश के राजालोग, काम्बोज और सुदक्षिण ९ वामपक्ष में आश्रित होकर अश्वत्थामा के आगे नियतहुए और पृष्ठभाग पर कलिङ्ग, अम्बष्ठ, मागध, पौण्ड्र, मद्रक १० गान्धारदेशीय, शकुनदेशीय, पूर्वीय राजा, पर्वतीय राजा और वशातय नियत हुए और पुच्छ पर सूर्य का पुत्र कर्ण अपने सब पुत्र बांधव और ज्ञातिवालों समेत नियतहुआ ११ नाना प्रकारके देशियों से उत्पन्न होनेवाली बड़ी सेना समेत जयद्रथ, भीमरथ, सम्पाति, याजभोज, भूमिञ्जय, वृष, क्रोध १२ और पराक्रमी राजा निषध हे राजन्! युद्ध में सावधान और ब्रह्मलोकके अर्थ संस्कारी बड़ीसेना से युक्त व्यूह की छाती पर नियत हुए द्रोणाचार्य से रचाहुआ व्यूह रथ, घोड़े, हाथी और पदातियों समेत १३ । १४ वायु से उठायेहुए समुद्र के रूप नर्तक के समान दिखाईदिया उसके पक्ष और प्रपक्षों से युद्धाभिलाषी शूरवीर लोग ऐसे निकले १५ जैसे कि ऊष्मऋतु में विद्युत् और गर्जना समेत सब ओर से बादल निकलतेहैं हे राजन्! उस राजा प्राग्ज्योतिष का हाथी सेना के मध्य में विधिके अनुसार अलंकृत १६ और नियत होकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि उदयाचल में सूर्य होता है मालायुक्त श्वेत छत्रधारी हाथी से ऐसी शोभाहुई १७ जैसे कि पूर्णमासी के दिन कृत्तिका नक्षत्र के योग से युक्त चन्द्रमा समेत नीले बादल की शोभा होती

है उस प्रकार उस मद से अन्धे हाथी की शोभा हुई १८ जैसे कि बड़ा पर्वत बड़े बादलों की कठिन वर्षा से युक्त होय उसी प्रकार नाना प्रकार के देशों के वीर राजाओं से व नाना प्रकार के शस्त्र और भूषणों से अलंकृत पर्वतीय राजाओं से ऐसे संयुक्त हुआ १६ जैसे कि देवताओं के समूहों से इन्द्र संयुक्त होता है इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उस दिव्य युद्ध में शत्रुओं से अजेय व्यूह को देखकर धृष्टद्युम्न से यह वचन बोले कि हे समर्थ ! अब मैं जैसी रीति से ब्राह्मण के स्वाधीनता में न आऊं २० । २१ हे कपोतग्रीव वर्ण अश्वों के रखनेवाले ! वही उपाय करना चाहिये धृष्टद्युम्न बोले कि हे उत्तम व्रत धारण करनेवाले ! अब तुम उस उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य के स्वाधीनता में नहीं होगे क्योंकि अब मैं उनके अनुगामियों समेत युद्ध में उनको रोकूंगा २२ हे युधिष्ठिर ! मेरे जीवते हुए आपको व्याकुल कभी न होनायोग्य है द्रोणाचार्य युद्ध में किसी दशा में भी मुझको विजय करने को समर्थ नहीं होसक्के २३ सञ्जय बोले कि कपोतग्रीव वर्ण के घोड़ेवाला पराक्रमी द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न बाणजालों को फैलाता आपही द्रोणाचार्य के सम्मुख गया २४ द्रोणाचार्य उस अप्रियदर्शन धृष्टद्युम्न को नियत देखकर क्षणमात्रही में अप्रसन्न चित्तवाले के समान हुए २५ तब शत्रुओं के विजय करनेवाले आपके दुर्मुख नाम पुत्र नें धृष्टद्युम्न को देखकर द्रोणाचार्य का प्रिय करने की इच्छा से धृष्टद्युम्न को रोका २६ हे भरतवंशिन् ! शूर धृष्टद्युम्न और दुर्मुख का वह साम्हना बड़ा कठिन और भयकारी हुआ २७ धृष्टद्युम्न ने शीघ्रही बाणों के जाल से दुर्मुख को ढककर बाणों के बड़े समूहों से द्रोणाचार्य को रोका २८ द्रोणाचार्य को रुकाहुआ देखकर आपका पुत्र शीघ्रता से आया और नानाप्रकार के चिह्नित बाणसमूहों से धृष्टद्युम्न को मोहित किया २९ युद्ध में उन धृष्टद्युम्न और दुर्योधन के भिड़नेपर द्रोणाचार्य ने बाणों से युधिष्ठिर की सेना को अनेक प्रकार से छिन्न भिन्न करदिया ३० जैसे कि बादल वायु से चारों ओर को उच्छिन्न होजाते हैं उसी प्रकार पाण्डव युधिष्ठिर की सेना भी जहां तहां उच्छिन्न होगई ३१ हे राजन् ! वह युद्ध एक क्षणमात्र तो अपूर्व दर्शनीय हुआ तदनन्तर शूरवीरलोग उन्मत्तों के समान मर्यादा से रहित कर्मों को करने लगे ३२ यहांतक कि परस्पर में अपने और दूसरों को नहीं जाना ध्यान और नामों के द्वारा वह युद्ध वर्तमानहुआ ३३ उन शूरवीरों की सूर्य

वर्णवाली किरणों से युक्त चूड़ामणि निष्क और भूषणों से अलंकृत कवच प्रकाशमान हुए ३४ युद्ध में गिरीहुई पताकावाले रथ हाथी और घोड़ों का वह रूप बगलों के समूहों के समान श्वेत रङ्ग का दिखाई पड़ा ३५ मनुष्यों ने मनुष्यों को ऊंचे घोड़ों ने नीचे घोड़ों को रथियों ने रथियों को और हाथियों ने उत्तम हाथियों को मारा ३६ ऊंची पताकावाले हाथियों का युद्ध उत्तम हाथियोंके साथ एक क्षणमात्र में महाभयकारी और कठिन वर्तमान हुआ ३७ उन छुटे अङ्ग और परस्पर खैंचनेवाले हाथियों के दाँतों के सङ्घात और सङ्घर्षणसे सधूम अग्नि उत्पन्नहुई ३८ जिनकी पताका फैलगईं और दाँतोंसे अग्नि प्रकट हुई वह भिड़कर बिजली रखनेवाले बादलों के समान होगये ३९ दौड़ते गर्जते और गिरते हुए हाथियों से पृथ्वी ऐसी आच्छादित होगई जैसे कि बादलोंसे शरदृऋतु का आकाश होजाता है ४० बाण और तोमरों की वर्षा से घायल उन हाथियों के शब्द ऐसे उत्पन्न हुए जैसे कि बड़ीचल विचलता में बादलों के शब्द होते हैं ४१ कितनेही उत्तम हाथी तोमर और बाणों से घायल होकर भयभीत हुए और कितनेही अन्य हाथियों के शब्दों सेही भाग गये ४२ वहां हाथियों के दाँतों से घायल कितनोही ने पीड़ायुक्त होकर ऐसे भयानक शब्द किये जैसे कि उत्पात के बादल शब्द करते हैं ४३ उत्तम हाथियों से विरुद्ध कियेहुए हाथी हाथियों को मथकर उत्तम अंकुशों से प्रेरित फिर लौटआये ४४ अच्छे अलंकृत बाण और तोमरों से घायलहुए हाथियों के अलंकृत वह सवार हाथियों से पृथ्वी पर गिरे जिनके कि हाथों से अंकुश और शस्त्र छूटगये थे ४५ अपने सवारों से रहित हाथी जहां तहां शब्दों को करतेहुए परस्पर प्रवेश करके टूटे हुए बादलों के समान गिरपड़े ४६ अकेले घूमनेवाले के समान कितनेही बड़े हाथी उन मृतक और गिरेहुए शस्त्रवाले मनुष्यों को लियेहुए दिशाओं को गये ४७ तब उस मारधार में तोमर, दुधारे, खड्ग और परसों से घायल व ताड़ित हाथी कष्टित शब्दों को करतेहुए पृथ्वीपर गिरपड़े ४८ उस पर्वताकार चारोंओर को गिरनेवाले हाथियों के शरीरों से आघातित पृथ्वी अकस्मात् कम्पायमान होकर शब्दायमान हुई ४९ अश्वारूढ़ व पताकाधारी हाथियों के सवार और हाथियों से वह पृथ्वी चारोंओर से ऐसी शोभायमान हुई कि जैसे फैलेहुए पर्वतों से शोभित होती है ५० वह अच्छे अलंकृत हाथियों के सवार जिनके हृदय युद्ध में घायल

हुए फैले अंकुश और तोमर और रथियों के भल्लों से गिरायेगये ५१ और बहुतसे हाथी नाराचों से घायल क्रौञ्च के समान गर्जतेहुए शत्रुओं को और अपनी सेना के भी लोगों को मर्दनकरते हुए दशों दिशाओं को भागे ५२ हे राजन्! पृथ्वी, हाथी, घोड़े, रथ और युद्धकर्ताओं के असङ्ख्य शरीरों से संयुक्त होकर माँस रुधिररूप कीच की रखनेवाली हुई ५३ दाँतों की नोक से मथकर हाथियों से उछाले हुए और पहिये रखने वाले बड़े २ रथों से ही विना पहिये किये हुए ५४ रथ अपने २ रथियों से रहितहुए और घोड़े भी अपने २ अश्वारूढ़ों से खाली होगये और जिनके सवार मारे गये वे भय से दुःखी हाथी भी दिशाओं को भागे ५५ इस युद्धमें पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको भी मारा अर्थात् ऐसा कठिन युद्ध हुआ कि जिसमें किसी ने किसी को नहीं जाना ५६ उस युद्ध में मनुष्य रुधिर की कीचों से डाढ़ी मूछों समेत लिप्त होकर ऐसे दुःखी हुए जैसे कि प्रकाशित अग्नि से संयुक्त बड़े २ वृक्ष होते हैं ५७ रुधिर से लिप्त वस्त्र, कवच, छत्र और पताका ये सब लाल रङ्ग के देख पड़े ५८ गिराये हुए घोड़े रथ और मनुष्यों के समूह पृथ्वी पर पड़ेहुए फिर रथ की नेमियों से दबकर अनेक प्रकार से खण्ड २ हुए ५९ वह सेनारूपी समुद्र हाथियों के समूह से बड़ी तीव्रता से युक्त निर्जीव मनुष्यरूप शैवाल रखनेवाला और रथों के समूहरूप कठिन भँवरवाला होकर महाशोभायमान हुआ ६० विजयरूपी धन के चाहने वाले शूरवीरों ने सवारीरूपी बड़ी २ नौकाओं के द्वारा उस सेनासागर को मझाकर डूबनेवालों ने मोह को नहीं किया ६१ बाणों की वर्षा से अत्यन्त वर्षा युक्त घात चिह्नोंसमेत उन शूरवीरों के मध्य में किसी विना घायल ने भी चित्त की दृढ़ता को नहीं पाया ६२ इसी प्रकार भयकारीरूप मद के उत्पन्न करनेवाले युद्ध के वर्तमान होनेपर द्रोणाचार्यजी शत्रुओं को मोहित और अचेत करके युधिष्ठिर के सम्मुखगये ॥ ६३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिविंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके अनन्तर युधिष्ठिर ने समीप आये हुए द्रोणाचार्य को देखकर निर्भय पुरुष के समान होकर बाणों की वर्षा से उनको ढकादिया १ इस के पीछे युधिष्ठिर की सेना में बिलबिला नाम शब्द उत्पन्न हुआ कि बड़ा सिंह

हाथियों के स्वामी को पकड़ना चाहता है २ फिर बड़ा शूरवीर सत्यपराक्रमी सत्यजित द्रोणाचार्य को देखकर युधिष्ठिर को चाहताहुआ आचार्य के सम्मुख गया ३ तब महाबली द्रोणाचार्य और पाञ्चालदेशीय उस सेना को व्याकुल करते हुए इन्द्र और विरोचन के पुत्र असुराधिप राजाबलि के समान युद्ध करने लगे ४ इसके पीछे बड़े धनुषधारी सत्यपराक्रमी उत्तम शस्त्र को दिखाते हुए सत्यजित ने द्रोणाचार्य को तीक्ष्णधारवाले बाणों से घायल किया ५ उसीप्रकार विषैले सर्प के समान मृत्युरूप पांच बाणों को उनके सारथी पर छोड़ा और उन बाणों के लगने से उनका सारथी अचेत हुआ ६ फिर अकस्मात् दश बाणों से उनके घोड़ों को घायल किया और फिर इसी कोप संयुक्त ने दश २ बाणों से उसके पार्ष्णिसमेत सारथी को बेधा ७ फिर मण्डल को घूमकर सेना के मुख पर घूमनेलगा इन सब बातों के पीछे उस शत्रुओं के मारनेवाले ने क्रोधकरके द्रोणाचार्य की ध्वजा को काटा ८ फिर शत्रुओं के विजय करनेवाले द्रोणाचार्य ने युद्ध में उसके उसकर्म को देखकर अपने मन से मरणप्राय समझा ९ और शीघ्रही बाण समेत उसके धनुष को काटकर मर्मवेधी तीक्ष्ण दशबाणों से सत्यजित को घायल किया १० हे राजन्! फिर उस प्रतापी ने शीघ्रता से दूसरे धनुष को लेकर तीस बाणों से द्रोणाचार्य को व्यथित किया ११ युद्ध में सत्यजित से ग्रसेहुए द्रोणाचार्य को देखकर पाञ्चालदेशीय वृक ने सैकड़ों तीक्ष्ण बाणों से द्रोणाचार्य को पीड्यमान किया १२ तब युद्ध में महारथी द्रोणाचार्य को बाणों से ढकाहुआ देखकर पाण्डव प्रसन्नता से पुकारे और बड़ी प्रसन्नता से वस्त्रों को फिराया १३ हे राजन्! बड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त वृक ने फिर द्रोणाचार्य को साठ बाणों से छातीपर घायल किया और बड़ा आश्चर्य सा हुआ १४ बाणों की वर्षा से ढकेहुए बड़े वेगवान् महारथी द्रोणाचार्य ने क्रोध से दोनों नेत्रों को निकालकर बड़ावेग किया १५ अर्थात् द्रोणाचार्य ने सत्यजित और वृक के धनुषों को काटकर छःबाणों से सारथी और घोड़ों समेत वृक को मारा १६ इसके पीछे सत्यजित ने बड़ेवेगवान् दूसरे धनुष को लेकर विशिखनाम बाणों से घोड़े सारथी और ध्वजा समेत द्रोणाचार्य को घायल किया १७ पाञ्चालदेशीय से युद्ध में पीड्यमान द्रोणाचार्य ने भी उसके प्रहारों को नहीं सहा और उसके नाशकरने के लिये शीघ्रही बाणों को छोड़ा १८ अर्थात् द्रोणाचार्य ने

हज़ारोंबाणों की वर्षा से उसके घोड़े, धनुष, ध्वजा, सारथी और पृष्ठ के रक्षकों को आच्छादित करदिया १९ इसीप्रकार वारंवार धनुष के टूटनेपर उत्तम अस्त्रों के ज्ञाता पाञ्चालदेशीय सत्यजित ने रक्तवर्ण घोड़े रखनेवाले द्रोणाचार्य से बड़ा युद्ध किया २० द्रोणाचार्य ने युद्ध में उस सत्यजित को इस प्रकार का शूरवीर जानकर अपने अर्धचन्द्र नाम बाण से उस महात्मा के शिर को काटा २१ उस पाञ्चालों के महारथी बड़े पराक्रमीके मरनेपर द्रोणाचार्यसे भयभीत राजा युधिष्ठिर शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा हटगया २२ पाञ्चाल, केकय, मत्स्य, चेदि, कारुष्य और कोशल देशियों के शूरवीर युधिष्ठिर को चाहते उस द्रोणाचार्य को देखकर उनके सम्मुख गये २३ इसको पीछे शत्रुसमूहों के मारनेवाले आचार्य ने युधिष्ठिर की चाहनेवाली उनसेनाओं को ऐसे भस्म करदिया जैसे कि तृण समूह को अग्नि भस्मकरदेताहै २४ राजा विराट का छोटा भाई शतानीक उस सब सेना के वारंवार नाश करनेवाले द्रोणाचार्य के सम्मुख वर्तमान हुआ २५ और सूर्य की किरणोंके समान प्रकाशमान कारीगर के स्वच्छ कियेहुए छःबाणों से सारथी और घोड़ों समेत द्रोणाचार्य को अत्यन्त घायलकरके बड़ेवेग से गर्जा २६ निर्दय-कर्म में प्रवृत्त कठिनता से होने के योग्य कर्म को करनाचाहते शतानीक ने महारथी द्रोणाचार्यको सैकड़ोंबाणों से ढकदिया २७ फिर द्रोणाचार्य ने भी शीघ्रता करके क्षुर नाम बाण से उस गर्जतेहुए शतानीकके शरीरसे कुण्डलधारी शिरको काटकर पृथ्वीपर गिराया इसके मत्स्यदेशीयलोग भागगये २८ भारद्वाजने मत्स्य देशियों को विजयकरके चन्देरी, कारुष्य, केकय, पाञ्चाल, सृञ्जय देशीय और पाण्डवों को भी वारंवार विजय किया २९ जैसे कि अग्नि वनको भस्म करता है उसीप्रकार सेनाओं के भस्म करनेवाले क्रोधरूप स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य को देखकर सृञ्जयनाम क्षत्रिय अत्यन्त कम्पायमानहुए ३० इस शीघ्रता करने वाले उत्तम धनुषधारी शत्रुहन्ता द्रोणाचार्य की प्रत्यञ्चा का शब्द सब दिशाओं में सुना गया ३१ हस्तलाघवीय द्रोणाचार्य के छोड़ेहुए भयकारी शायकों ने हाथी, घोड़े, पदाती, रथारूढ़ और गजारूढ़ों को बहुत मथा ३२ जैसे कि हिम ऋतु के पीछे वायु से युक्त गर्जताहुआ बादल वर्षा को करता है उसी प्रकार पाषाणवृष्टि के समान वर्षा करते द्रोणाचार्य ने शत्रुओं के भय को उत्पन्न किया ३३ पराक्रमी शूरवीर बड़े धनुषधारी मित्रों के अभय देनेवाले द्रोणाचार्य सेना को व्याकुल

करते सब दिशाओं में घूमें ३४ हमने उस बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य के स्वर्णमयी धनुष को सब दिशाओं में ऐसे देखा जैसे कि बादलों में बिजली होती है ३५ हे भरतवंशिन्! हमने इस युद्ध में अत्यन्त घूमते द्रोणाचार्य की ध्वजा में शोभायमान हिमाचल के शिखर की समान वेदी को देखा ३६ फिर द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर की सेना के मध्य में ऐसा बड़ा विध्वंसन किया जैसे कि देवता और असुरों से प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले विष्णु भगवान् दैत्यों के समूहों में विध्वंसन करते हैं ३७ उस शूर, वीर, सत्यवक्ता, ज्ञानी, पराक्रमी, सत्य पराक्रमी, महानुभाव, द्रोणाचार्य ने उस नदी को जारी किया ३८ जोकि प्रलयकालीन भयकारी नदी के समान भयभीतों को डरानेवाली कवचरूप तरंग, ध्वजारूप भँवर, मृतकों को किनारे से दूर हटानेवाली हाथी घोड़ेरूपी बड़े ग्राह और खड्गरूपी मछली रखनेवाली कठिनता से स्पर्श करने के योग्य ३९ वीरों के अस्थिरूप कङ्कड़ रखनेवाली भयकारी भेरी मृदङ्गरूपी कछुये रखनेवाली ढाल और कवचरूपी नौका रखनेवाली महाभयानक केशरूप शैवाल और शाद्वल रखने वाली ४० बाण समूहों को रखनेवाली धनुषरूप झिरनों से युक्त भुजारूप पत्तों से व्याप्त युद्धभूमि में बहनेवाली कठिन कौरव और सृञ्जयों से प्राप्त करने वाली ४१ मनुष्यों के शिररूप पाषाण रखनेवाली शक्तिरूप मछली गदारूपमुद्गनाम नौका रखनेवाली पगड़ीरूपी फेनों से आच्छादित निकली हुई आँतरूपी सर्पों से युक्त ४२ वीरोंको मारनेवाली और भयकारी मांस रुधिररूप कीच रखनेवाली हाथीरूप ग्राह ध्वजारूप वृक्षों सहित क्षत्रियों को डुबानेवाली ४३ निर्दय शरीरों से परस्पर घिसावट रखनेवाली अश्वारूढ़रूप नक्रों की रखनेवाली ऐसी दुर्गम नदी को द्रोणाचार्य ने प्रकट किया वह नदी मृत्युरूप काल से मिलीहुई थी ४४ राक्षस और गृद्ध आदि के समूहों से सेवित श्वान, शृगालों के समूहों से युक्त बड़े भयकारी मांसभक्षी जीवों करके चारों ओर से सेवित थी ४५ वह युधिष्ठिरादिक उस कालरूप के समान सेना के नाश करनेवाले बड़े रथी द्रोणाचार्य के सम्मुख गये ४६ वहां उन शूरों ने एकसाथही द्रोणाचार्य को सब ओर से ऐसे रोका जैसे कि किरणों से संसार के तपानेवाले सूर्य रुकते हैं ४७ शस्त्र उठानेवाले आपके बेटे राजालोग और राजकुमारों ने बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य को चारों ओर से घेरलिया ४८ इसके पीछे शिखण्डी ने पांचबाण से,

क्षत्रधर्माने बीस बाणों से, बसुदान ने पांच बाण से, उत्तमौजा ने तीन बाणों से, क्षत्रदेव ने सात बाणों से, सात्यकी ने सौ बाणों से, युधामन्यु ने आठ बाणों से ४६ युधिष्ठिर ने बारह शायकों से द्रोणाचार्य को घायल किया ५० और धृष्टद्युम्न ने भी तीन बाण से व्यथित किया ५१ इसके पीछे सत्यसङ्कल्पी महारथी द्रोणाचार्य ने मतवाले हाथी के समान रथवाली सेना को उल्लङ्घन करके इस दृढसेना को गिराया ५२ फिर निर्भय के समान प्रहार करनेवाले राजा को पाकर नौ बाणों से क्षेम को ऐसा घायल किया कि मृतक रथ से गिरपड़ा ५३ वह रक्षा के योग्य गुरु द्रोणाचार्य सेना के मध्य को पाकर सब दिशाओं में घूमे और किसी दशा में भी अन्य लोगोंके रक्षक नहीं हुए ५४ बारह बाण से शिखण्डी को बीस बाण से उत्तमौजा को घायल करके भल्ल से बसुदान को यमलोक में भेजा ५५ अस्सी बाणों से कृतवर्मा को छब्बीस बाण से सुदक्षिण को घायल करके भल्ल से क्षत्रदेव को रथ के नीड़ स्थान से गेरा ५६ फिर उस स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य ने साठबाण से युधामन्यु को तीस बाण से सात्यकी को घायल करके शीघ्रही युधिष्ठिर के सम्मुख गये ५७ फिर राजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा शीघ्रही गुरुके सम्मुख से हटगये और पाञ्चाल देशीय शूरवीर द्रोणाचार्य के सम्मुख गया ५८ फिर द्रोणाचार्य ने उसको धनुष, घोड़े और सारथी समेत ऐसा मारा कि वह मृतक होकर रथ से पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि आकाश से तारा गिरता है ५९ उस पाञ्चाल देशियों के यश करनेवाले राजकुमार के मरने पर यह बड़ाभारी शब्द हुआ कि द्रोणाचार्य को मारो मारो ६० पराक्रमी द्रोणाचार्यने उन अत्यन्त क्रोधयुक्त पाञ्चाल, मत्स्य और केकय देशियों समेत सृञ्जयों से युक्त पाण्डवों को छिन्न भिन्न करदिया ६१ सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, वार्धक्षेम, चित्रसेन, सेनाबिन्दु, सुवर्चस ६२ इन समेत अन्य २ नाना प्रकार के देशाधिपति अनेक राजाओं को कौरवों से घिरेहुए द्रोणाचार्य ने विजय किया ६३ हे महाराज! आपके शूरवीरोंने महायुद्ध में विजयको पाकर युद्ध में चारोंओर से छिन्न भिन्नहुए पाण्डवों के शूरवीरों को मारा ६४ हे भरतवंशिन्! जैसे कि इन्द्र के हाथ से दानव घायल होते हैं उसी प्रकार महात्मा द्रोणाचार्य के हाथ से घायल हुए वह पाञ्चाल, केकय और मत्स्य देशीय भी अत्यन्त कम्पायमानहुए॥ ६५॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकविंशतितमोऽध्यायः॥ २१॥

बाईसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, उस बड़े युद्ध में द्रोणाचार्य से पाञ्चालों के और पाण्डवों के पराजय होने पर कोई भी दूसरा सम्मुख न रहा १ क्षत्रियों के यश की बढ़ाने वाली उत्तम बुद्धि को जिसपर कि नीच मनुष्य नहीं चलते और उत्तम पुरुष उसपर कर्मकरते हैं उस बुद्धि को युद्ध में करके सम्मुख वर्तमान हुआ २ वही बड़ा पराक्रमी और शूरवीर है जो छिन्न भिन्न होनेवालों में लौटता है बड़ा आश्चर्य है कि कोई मनुष्य भी द्रोणाचार्य को नियत देखकर सम्मुख नहीं हुआ ३ व्याघ्र के समान जंभाई लेनेवाले मतवाले हाथी के समान युद्ध में प्राणों के त्यागनेवाले अलंकृत होकर अपूर्व युद्ध करनेवाले ४ बड़े धनुषधारी नरोत्तम शत्रुओं को भय बढ़ानेवाले उपकार के ज्ञाता सत्यवक्ता दुर्योधन का प्रिय चाहने वाले ५ शूरवीर द्रोणाचार्य को सेना में देखकर कौन २ से शूरवीर लौटे हैं सञ्जय! यह सब मुझसे कहो ६ सञ्जय बोले कि पाञ्चाल, पाण्डव, मत्स्य देशीय, सृञ्जय, चन्देरी देशियों और केकयों को युद्ध में द्रोणाचार्य के शायकों से घायल और छिन्न भिन्न को ७ जैसे कि समुद्र के बड़े समूहसे नौकाहरण की जाती हैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य के धनुष से छोड़ेहुए और शीघ्र मारनेवाले बाणों के समूहों से स्वाधीनता में होनेवालों को देखकर ८ कौरवों ने नाना प्रकार के बाजों के शब्द और सिंहनादों को करते हुए रथ, हाथी और मनुष्यों को सब ओर से घेरलिया ९ सेना के मध्य में नियत अपने मनुष्यों से युक्त राजा दुर्योधन उनको देखता हुआ अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक कर्ण से बोला १० हे कर्ण! द्रोणाचार्य के शायकों से घायल हुए पाञ्चालों को देखो कि जैसे सिंह से वन में मृग भयभीत होते हैं उसी प्रकार दृढ़ धनुषधारी द्रोणाचार्य से भयभीत इन लोगों को भी देखो ११ यह मेरी बुद्धि में आता है कि यह कभी युद्ध को नहीं चाहेंगे क्योंकि द्रोणाचार्य से इसरीतिपर पराजय हुए हैं जैसे कि वायु से बड़े २ वृक्ष ताड़ित होकर गिरतेहैं १२ इन महात्माके सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से पीड्यमान जहां तहां घूमते हुए ये लोग एकमार्ग से नहीं जाते हैं १३ कौरवों से और महात्मा द्रोणाचार्य से रोकेहुए ये और अन्य शूरवीर लोग ऐसे मण्डलरूप घिराव में हुए जैसे कि अग्नि से हाथी होते हैं १४ द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण धार

वाले भ्रमररूपबाणों से युक्त शरीर भागने में प्रवृत्तचित्त होकर परस्पर में भिन्न २ होगये १५ हे कर्ण ! यह बड़ा क्रोधी भीमसेन पाण्डवों और सृञ्जयों से पृथक् होकर मेरे शूरवीरों से घिरा हुआ मुझको प्रसन्न करता १६ प्रकट है अब यह दुर्बुद्धि लोकको द्रोणाचार्यरूप देखता है इससे निश्चय होता है कि यह भीमसेन अब अपने जीवन से और राज्य से निराश होगया है १७ कर्ण बोला यह महाबाहु अपने जीतेजी कभी युद्ध को नहीं त्यागेगा यह पुरुषोत्तम इन सिंहनादों को नहीं सहैगा १८ और पाण्डव भी युद्धमें से कभी पृथक् नहीं होंगे यह मेरा विचार है क्योंकि पराक्रमी शूरवीर अस्त्रज्ञ होकर युद्धमें दुर्मद हैं १९ ये पाण्डवलोग विष, अग्नि, द्यूत और वनवास करने के दुःखों को स्मरण करते युद्धको नहीं त्यागेंगे यह मेरा निश्चय सिद्धान्त है २० बड़ा तेजस्वी महाबाहु कुन्ती का पुत्र भीमसेन लौटता हुआ भी बड़े २ उत्तम रथियों को मारेगा २१ खड्ग, धनुष, शक्ति, घोड़े, हाथी और मनुष्यों के समूहों को रथ और लोहे के दण्ड से मारेगा २२ पाञ्चाल, केकय, मत्स्यदेशीय, शूर सात्यकी आदिक रथी पाण्डव अधिकतर इस भीमसेन के पीछे कर्म करनेवाले होते हैं २३ शूरवीर पराक्रमी और बड़े २ बलवान् महारथी लोग इस अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन की प्रेरणासे मारनेवाले २४ कौरवों में श्रेष्ठ भीमसेनको चाहतेहुए लोग सब ओरसे द्रोणाचार्य के सम्मुख ऐसे वर्तमान हैं जैसे कि बादलों के समूह सूर्य को सब ओर से घिरेहुए होते हैं २५ एक स्थानपर वर्तमान ये लोग इस अरक्षित व्रत में सावधान द्रोणाचार्य को ऐसे पीड़ा देतेहैं जैसे कि मरण के अभिलाषी टीड़ियों के समूह दीपक को कष्ट देते हैं २६ निस्सन्देह ये लोग अस्त्रज्ञ होकर युद्ध में भी पूरे हैं अब मैं भारद्वाज द्रोणाचार्य के ऊपर बड़ाभारी बोझा नियत मानता हूं २७ हम वहां शीघ्रही जायँगे जहां कि द्रोणाचार्यजी नियत हैं ये लोग इस सावधान व्रत द्रोणाचार्य को ऐसे न मारडालें जैसे कि कोकनाम जीव बड़े सर्प को मारडालता है २८ सञ्जय बोले हे राजन् ! इसके पीछे राजा दुर्योधन कर्ण के वचन को सुनकर भाइयों समेत द्रोणाचार्य के रथ के समीप गया २९ वहां पर नाना प्रकारके वर्ण रखनेवाले उत्तम घोड़ोंकी सवारी से लौटेहुए अकेले द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी पाण्डवोंका बड़ाभारी शब्द हुआ ॥ ३० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २२ ॥

तेईसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! सब के रथों के चिह्नों को मुझसे वर्णनकरो जो क्रोधयुक्त शूरवीर जिनमें अग्रणीय भीमसेन था वे सब द्रोणाचार्य के सम्मुख हुए १ सञ्जय बोले कि, सुवर्ण वर्णवाले घोड़ों की सवारी से जातेहुए भीमसेन को देखकर रुक्मवर्णवाले अश्वों की सवारीवाला शूरवीर रथी सात्यकी लौटा २ और निर्भयतापूर्वक क्रोधयुक्त कपूरवर्णवाले घोड़ों को चलाता हुआ युधामन्यु भी द्रोणाचार्य के रथ के समीप वर्तमान हुआ ३ राजा पाञ्चाल का पुत्र धृष्टद्युम्न कपोतग्रीव वर्णवाले बड़े शीघ्रगामी सुवर्ण के आभूषणादिक सामानों से अ-लंकृत घोड़ों की सवारी से लौटा ४ पिता को चाहता और उसकी सिद्धि का अभिलाषी व्रत में सावधान श्वेत घोड़ेवाला क्षत्रधर्मा लौटा ५ शिखण्डी का पुत्र कमलपत्र और मल्लिका के समान नेत्र रखनेवाला क्षत्रदेव अपने सुन्दर अलंकृत घोड़ों को आप चलाताहुआ गया ६ तोते के पर के समान हरितवर्ण-वाले दर्शनीय सामान रखनेवाले काम्बोजदेशीय घोड़ोंपर सवार होकर नकुल भी आपके शूरवीरों के सम्मुखगया ७ हे भरतर्षभ! मेघ के समान श्यामवर्ण क्रोधभरे घोड़े कठिन युद्धकरने के विचार से अपने स्वामी उत्तमौजा को ले चले ८ इसी प्रकार उस तुमुलयुद्ध में तीतर के समान चिह्न रखनेवाले वायु के समान शीघ्रगामी घोड़े उस शस्त्रधारी सहदेव को लेचले ९ श्वेतरङ्ग काली पूंछ महाभयकारी तीव्रता से युक्त वायु के समान शीघ्रगामी घोड़े उस नरोत्तम राजा युधिष्ठिर को ले चले १० सुवर्णनिर्मित सामानों से अलंकृत वायु के सदृश शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से युधिष्ठिर के पास आकर वर्तमानहुए ११ राजा युधिष्ठिर के पीछे पाञ्चाल देश का राजा द्रुपदहुआ वह बड़ा धनुषधारी महानिर्भय युद्ध में सब प्रकार के शब्दों को सहने वाले घोड़े सुवर्ण के छत्र और घोड़ों के सामानों से युक्त राजाओं में सबसे रक्षित होकर सम्मुख वर्तमान हुआ १२। १३ राजा विराट सब महारथियों समेत शीघ्रता से उसके पीछे चला सब केकयदेशीय, शिखण्डी, धृष्टकेतु १४ ये सब अपनी २ सेनाओं से परिवेष्टित राजा विराट के पीछे २ चले उस शत्रुहन्ता राजा विराट के पाटलि पुष्प के समान वर्ण रखनेवाले उत्तम घोड़े उस राजा विराट की सवारी में

महाशोभायमान हुए हलदी के समान पीतरङ्ग तीव्रगामी सुवर्णमालाधारी घोड़े १५। १६ राजा विराट के पुत्र को शीघ्र ले चले पांचोंभाई केकय इन्द्रगोपक जीव अर्थात् बीरबहूटी के समान लालरङ्गवाले घोड़ों की सवारी से चले १७ जातरूप सुवर्ण के समान प्रकाशित रक्त ध्वजा और सुवर्ण की माला रखनेवाले शूरवीर युद्ध में कुशल वह सब भाई १८ शस्त्रों से अलंकृत बादलों के समान बाणों की वर्षा करते दिखाई दिये हरित पत्र के समान रङ्गवाले और तुम्बुर गन्धर्व के दिये हुए दिव्य घोड़े उस बड़े तेजस्वी पाञ्चाल देशीय शिखण्डी को ले चले इसी प्रकार पाञ्चालदेशों के महारथी बारह हज़ार थे १९। २० उनमें छः हज़ार तो वे थे जो शिखण्डी के पीछे चले हे श्रेष्ठ, नरोत्तम, धृतराष्ट्र! प्रतापी शिशुपाल के पुत्र को २१ कपूरी रङ्ग के घोड़े बड़ी क्रीड़ा करतेहुए लेचले फिर चन्देरीदेशियों में श्रेष्ठ दुर्जय रक्तवर्ण की पोशाकवाला धृष्टकेतु २२ नाना प्रकार के रङ्ग रखनेवाले काम्बोजदेशीय घोड़ों की सवारी से सम्मुख वर्तमान हुआ २३ वे फिर केकयदेशीय सुकुमार बृहच्छत्र को भी बड़े २ उत्तम घोड़े लेचले वे घोड़े भी पलाल धूसर वर्ण के सिन्धुदेशीय थे चमेली के समान नेत्र रखनेवाले कमलवर्ण अच्छे अलंकृत बाह्लीकदेशीय घोड़े २४ शिखण्डी के पुत्र शूरवीर क्षत्रदेव को लेचले और स्वर्णमयी सामान से अलंकृत रेशमी वर्णवाले घोड़े २५ उस शत्रुविजयी सेनाबिन्दु को युद्ध में ले चले और क्रौञ्च के समान रङ्गवाले शान्तरूप उत्तम घोड़े राजाकाशी के पुत्र युवा सुकुमार अतिभुत्र को युद्ध में ले चले हे राजन्! उस कुमार प्रतिबिन्दु को श्वेतरङ्ग कालीगर्दन और चित्त के समान शीघ्रगामी २६। २७ सारथी के प्रसन्न करनेवाले घोड़े ले चले फिर जिस पाण्डव ने अपूर्व दर्शनीय सुतसोम नाम पुत्र को उत्पन्नकिया २८ उसको उर्द के फूल के रङ्गवाले घोड़े युद्ध में ले चले कौरवों के उदयेन्दुनाम पुर में हज़ार चन्द्रमा के स्वरूपवाला उत्पन्नहुआ और जोकि वह सोमसंक्रेन्द के मध्यमें उत्पन्नहुआ इस हेतु से उस पुत्र का नाम सोम हुआ २९ नकुल के पुत्र प्रशंसनीय शतानीक नाम को शालपुष्प के वर्णवाले और तरुण सूर्य के समान प्रकाशित घोड़े ले चले ३० सुवर्ण के समान योक्त मोर की ग्रीव के समान रङ्गवाले घोड़े उस द्रौपदी के पुत्र नरोत्तम श्रुतकर्मा को युद्ध में ले चले ३१ नीलकण्ठ के पक्ष के

समान रङ्गवाले उत्तम घोड़ों ने उस द्रौपदी के पुत्र शास्त्रज्ञ युद्ध में अर्जुन के समान श्रुतकीर्ति को सवार किया ३२ जिसको युद्ध में श्रीकृष्णजी और अर्जुन से ज्योढ़ा कहा है उस कुमार अभिमन्यु को पिङ्गलवर्ण घोड़े युद्ध में ले चले ३३ जो अकेलाही धृतराष्ट्र के पुत्रों से पृथक् होकर पाण्डवों के पास शरणागत हुआ उस युयुत्सु को बड़े शरीरवाले बड़े घोड़े लेचले ३४ और बड़े तुमुलयुद्ध में प्रसन्न और अच्छे अलंकृत पलालकाण्ड के वर्णवाले घोड़े वेगवान् वार्द्धकेशी को लेचले ३५ श्वेत वा श्यामचरण सारथी के आज्ञावर्ती घोड़े बड़े सामानवाले सुनहरी रथ के द्वारा उस कुमार सौचित्ति को ले चले ३६ स्वर्णमयी जीनपोशवाले रेशम शरीर सुवर्णनिर्मित मालाधारी शान्तरूप घोड़े श्रेणिमन्त को लेचले ३७ सुनहरी मालाधारी बड़े शूर स्वर्णमयी जीनपोशधारी अच्छे अलंकृत घोड़े उस प्रशंसनीय नरोत्तम काशी के राजा को ले चले ३८ उस अस्त्रज्ञ धनुर्वेदज्ञ ब्रह्मअस्त्र और वेदों में पूर्ण सत्यधृति को लाल घोड़े ले चले ३६ जिस पाञ्चालदेशीय पति ने अपना अंश अर्थात् भाग द्रोणाचार्य को नियत किया उस धृष्टद्युम्न को कपोतवर्णवाले घोड़े ले चले ४० सत्य धैर्य से युक्त युद्ध में दुर्मद सौचित्ति श्रेणिमान वसुदान और बड़ासमर्थ काशी के राजा का पुत्र ये सब उसके पीछे चले ४१ तीव्रगामी सुवर्णमयी मालाधारी काम्बोजदेशीय उत्तमघोड़ेसे संयुक्त रथोंपर सवार यमराज और कुबेरके समान वे सबलोग शत्रु की सेना को डरातेहुए चले ४२ प्रभद्रक और काम्बोजदेशीय शस्त्रों से अलंकृत सुनहरीरथ और ध्वजाओं के रखनेवाले छःहज़ार शूरवीर नाना प्रकार के वर्ण वाले घोड़ों की सवारी से ४३ धनुष खैंचनेवाले बाणों के समूहों से शत्रुओं को कम्पायमान करनेवाले वे सबलोग मृत्यु के समान होकर धृष्टद्युम्न के पीछेचले ४४ लालरेशम के वर्ण उत्तम सुवर्ण के माला रखनेवाले उत्तम घोड़े चेकितान को लेचले ४५ सव्यसाची अर्जुन का मामा पुराजित कुन्तभोज इन्द्रधनुष के वर्ण बड़े श्रेष्ठ घोड़ों की सवारी के द्वारा आया ४६ अन्तरिक्ष वर्ण चित्रित तारागणों के समान घोड़े राजा रोचमान को युद्ध में लेचले ४७ नाना प्रकार के रङ्ग रखनेवाले श्वेत चरण सुवर्ण के जाल आदि सामानों से अलंकृत उत्तम घोड़े उस जरासन्ध के पुत्र सहदेव को लेचले ४८ और जो घोड़े कि कमलनाल के समान वर्ण शीघ्रता में बाजपक्षी के समान महाअपूर्व उत्तम थे वह सुदामा को

ले चले ४६ शश लोहितवर्ण श्वेतरेखा रखनेवाले घोड़े पाञ्चालदेशीय पति के पुत्र सिंहसेन को लेचले ५० जो नरोत्तम जनमेजय नाम पाञ्चालदेशियों का राजा प्रसिद्ध है उसके सरसों के पुष्प वर्णवाले उत्तम घोड़े पीतवर्ण थे ५१ माषवर्ण शीघ्रगामी स्वर्णमयी मालाधारी श्वेतपृष्ठ और चित्रमुखवाले बड़े घोड़े उस पाञ्चालदेशीयको शीघ्रता से लेचले ५२ शूर भद्रकशर कोड के समान किञ्जल्क वर्ण प्रकाशमान घोड़े दण्डधार को लेचले ५३ रासभारुण वर्ण पृष्ठ-भाग में मूषकवर्ण सावधान अपनी चाल चलते हुए घोड़े व्याघ्रदत्त को ले चले ५४ कालक प्रकारवाले अपूर्व मालाओं से अलंकृत घोड़े पाञ्चालदेशीय नरोत्तम सुधर्मा को लेचले इन्द्रवज्र के समान स्पर्शवाले बीरबहूटी के वर्ण शरीरों में नाना प्रकारके चित्रोंसे चित्रित अद्भुत घोड़े चित्रायुध को लेचले ५५। ५६ चक्रवाक के समान उदर रखनेवाले स्वर्णमयी मालाधारी घोड़े राजा कोशल के पुत्र सुक्षत्र को लेचले ५७ हरताल के वर्ण बड़े शिक्षित सुनहरी मालाधारी ऊंचे सुम घोड़े युद्ध में सच्चे धैर्यवाले क्षेमी को लेचले ५८ एकही श्वेत रङ्गवाली ध्वजा कवच धनुष और घोड़ों से युक्त राजा शुक्ल लौटा ५६ शंशाङ्क वर्ण स-मुद्रदेशीय घोड़े समुद्रसेन के पुत्र चन्द्रसेन जो कि रुद्रजी के समान तेजस्वी था उसको लेचले ६० नीले कमल के वर्ण स्वर्णालंकृत अपूर्व मालाधारी घोड़े युद्ध में शिबि के पुत्र चैत्ररथ को ले चले ६१ गुलाब के पुष्प के समान रङ्गवाले श्वेत रक्तपंक्ति रखनेवाले घोड़े उस युद्ध में दुर्मद रथसेन को लेचले ६२ जिस राजा को सब मनुष्यों से उत्तम और शूरवीर कहते हैं उस पटचरथा को तोते के समान वर्णवाले घोड़े लेचले ६३ और किंशुक के पुष्प के समान वर्ण रखनेवाले उत्तम घोड़े उस चित्रायुध को लेचले जोकि अपूर्वमाला, कवच, शस्त्र और ध्वजा का धारण करनेवाला था ६४ राजा नील एक नीले रङ्गवाली ध्वजा कवच धनुष रथ और घोड़ों से युक्त सम्मुख आकर वर्तमानहुआ ६५ नाना प्रकार के रूपवाले रत्नों से चिह्नित कवच, धनुष, अपूर्व घोड़े और ध्वजा पताकाओं से युक्त राजा चित्र सम्मुख आया ६६ जो कमलवर्ण के समान रङ्गवाले उत्तम घोड़े हैं वह रोचिमान् के पुत्र हेमवर्ण को लेचले ६७ युद्धकर्ता शुभ-रूप शरदण्ड, अनुदण्ड, श्वेताण्ड और कुक्कुटाण्ड वर्णवाले घोड़े दण्डकेतु को ले चले ६८ हे राजन्! युद्ध में केशवजी के हाथ से पिता के मरने पर पाण्ड्य

देशियों के द्वार खण्डित होने और बान्धवलोगों के भाग जाने पर ६९ भीष्म द्रोणाचार्य राम और कृपाचार्य से अस्त्रों को पाकर और अस्त्रों के द्वारा रुक्म, कर्ण, अर्जुन और श्रीकृष्णजी के साथ समानता को पाकर ७० द्वारका के नष्ट करने व सब पृथ्वी के विजय करने की अभिलाषा करी इसके अनन्तर बुद्धिमान् मित्रों की ओर से उसी की भलाई के निमित्त निषेध किया गया ७१ जो राजा शत्रुता के हठ को त्यागकर अपने राज्य में शासन करता है वह पराक्रमी सागरध्वज नाम राजा पाण्ड्य चन्द्ररश्मि के समान वर्णवाले ७२ वैदूर्यमणि के जालों से ढके हुए घोड़ों के द्वारा वीर्य द्रविण को धरेहुए अपने दिव्य धनुष को टङ्कारता हुआ द्रोणाचार्य के सम्मुख गया ७३ आटरूशक वर्णवाले एकलाख चालीस हजार घोड़े राजा पाण्ड्य के पीछे चलनेवाले उत्तम रथों को लेचले ७४ नाना प्रकार के रूप और मुखों की आकृति रखनेवाले घोड़े उस शूरवीर घटोत्कच जिसकी ध्वजा में रथ के चक्र का चिह्न था उसको लेचले ७५ जो अकेला मिलेहुए भरतवंशियों के मतों को त्यागकर अपने मन के सब मनोरथों से रहित होकर प्रीति से युधिष्ठिर में आकर संयुक्त हुआ ७६ उस रक्तनेत्र महाबाहु सुवर्ण के रथ में नियत उस बृहन्त को चक्ररूप ध्वजाधारी बड़े पराक्रमी और उन्नत शरीरवाले घोड़े लेचले ७७ सुवर्ण वर्ण सब घोड़ों में श्रेष्ठ घोड़े सब ओर से और मुख्यकर पृष्ठभाग से उस धर्मज्ञ राजाओं में श्रेष्ठ सेना के मध्यवर्ती युधिष्ठिर के साथ चले ७८ देवतारूप बहुत से प्रभद्रक कुमार नाना प्रकार के शरीरवाले अन्य २ उत्तम घोड़ों की सवारी से युद्ध के निमित्त लौटे ७९ हे राजेन्द्र ! वह स्वर्णमयी ध्वजावाले भीमसेन के साथ उपाय करनेवाले ऐसे दिखाई दिये जैसे कि इन्द्र के साथ में देवता होते हैं ८० धृष्टद्युम्न ने उन सब आये हुओं को अत्यन्त अङ्गीकार किया और भारद्वाज द्रोणाचार्यजी सब सेनाओं को उल्लङ्घकर शोभायमान हुए ८१ हे महाराज ! उनकी ध्वजा जोकि काले मृगचर्म से संयुक्त थी और उनके शुभदर्शनीय सुनहरे कुण्डल भी अत्यन्त शोभित होरहे थे ८२ मैंने भीमसेन की उस ध्वजाको जिसमें कि वैडूर्य मणि की आँख रखनेवाला महाप्रकाशित शोभायुक्त बड़ासिंह था अच्छे प्रकारसे देखा और उसीमें ग्रहों के समूहोंसे संयुक्त चन्द्रमा भी प्रकाशमान होरहाथा ८३ मैंने बड़े तेजस्वी कौरवराज पाण्डव युधिष्ठिर की सुनहरी ध्वजा को भी देखा

कि उसमें भी सब ग्रहसमूहों समेत चन्द्रमा देदीप्यमान था ८४ यहां नन्द उपनन्द बजाय दो बड़े मृदङ्ग जो कि सुन्दर शब्दवाले और आनन्द के बढ़ाने वाले थे वह यन्त्रद्वारा बजाये गये ८५ हमने नकुल की बहुत बड़ी ध्वजा जो कि शरभनाम पशु का चिह्न रखनेवाली सुवर्णपृष्ठ रथ में भयानकरूप नियत थी उसको भी देखा ८६ सहदेव की ध्वजा में सुवर्णनिर्मित हंसघण्टा और पताका रखनेवाला महादुर्जय शत्रुओं के दुःख और शोक का बढ़ानेवाला भी देखा ८७ द्रौपदी के पांचोंपुत्रों की ध्वजा धर्म, वायु, इन्द्र और महात्मा अश्विनीकुमार की मूर्तियों से शोभायमान थी ८८ हे राजन्! अभिमन्यु कुमार के रथ में तपाये हुए सुवर्ण के समान अतिउज्ज्वल और श्रेष्ठ ऐसी ध्वजा थी जिसमें सुनहरा सारङ्गनाम पक्षी था ८९ हे राजेन्द्र! घटोत्कच की ध्वजा में गृध्र शोभायमान था और उसके घोड़े ऐसे इच्छा के अनुसार चलनेवाले जैसे कि पूर्व समय में रावण के घोड़े थे ९० हे राजन्! धर्मराज युधिष्ठिर के पास माहेन्द्र नाम दिव्य धनुष और भीमसेन के पास वायव्यनाम उत्तम दिव्य धनुष था ९१ ब्रह्माजी ने तीनोंलोकों की रक्षा के निमित्त जो धनुष उत्पन्न किया वह दिव्य और रूपान्तर दशा से रहित धनुष अर्जुन के लिये व शार्ङ्गनाम विष्णु धनुष नकुल के लिये व अश्विनीकुमार का धनुष सहदेव के लिये और रावण का दिव्य और भय का उत्पन्न करनेवाला धनुष घटोत्कच के निमित्त आकर वर्तमान था ९२ । ९३ हे भरतवंशिन्! द्रौपदी के पांचों पुत्रों के धनुषरूप रत्न यह थे रुद्रजी का धनुष, अग्नि का धनुष, कुबेर का धनुष, यमराज का धनुष और शिवजी का धनुष ९४ बलदेवजी ने जिस धनुषों में श्रेष्ठ महाउत्तम रुद्रधनुष को पाया और प्रसन्न होकर बलदेवजी ने वह धनुष महात्मा अभिमन्यु के निमित्त दिया ९५ शूरलोगों की यह वर्णन कीहुई और अन्य २ सुवर्ण से अलंकृत ध्वजा शत्रुओं के शोभा की वह बढ़ानेवाली वहां देखने में आई ९६ हे महाराज! द्रोणाचार्य की वह उत्तमलोगों की सेना ध्वजाओं से ऐसे व्याप्त हुई जैसे कि वस्त्रपर खैंचाहुआ चित्र शोभित होता है ९७ तब युद्ध में द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़नेवाले वीरों के नाम गोत्र ऐसे सुनेगये जैसे कि स्वयंवर में सुने जाते हैं ॥ ९८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयोविंशतितमोऽध्यायः ॥ २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! यह देवताओं की भी सेना को पीड्यमान करने वाले राजालोग जिनमें मुख्य भीमसेन है युद्ध में लौटे १ निश्चयकरके यह पुरुष प्रारब्ध से अच्छीरीति से संयुक्त होता है उसी में पृथक् २ प्रकार के राज्य धनआदिक अर्थ दिखाई देते हैं २ जटा और मृगचर्मधारी होकर युधिष्ठिर ने बहुत कालतक वन में निवास किया और लोकों से अज्ञात होनेपर क्रीड़ा करनेवाला हुआ ३ उसने युद्ध में बड़ी सेना को प्रवृत्त किया और मेरे पुत्र की भी सेना इकट्ठीहुई दैवसंयोग से दूसरी बात क्या है ४ निश्चय करके प्रारब्ध से संयुक्त मनुष्य चेष्टा करता है और उससे वह उस प्रकार से खैंचा जाता है जिसप्रकार को कि वह आप नहीं चाहता है ५ युधिष्ठिर द्यूतके दुःख को पाकर दुःखित होगया था और फिर उसने प्रारब्ध सेही सहायकों को पाया ६ अब मुझको केकयदेशीय मिले और जो काशीदेशीय, कोशलदेशीय, चन्देरी और बङ्गदेशीय हैं वह मेरे पास आकर वर्तमान हुए ७ हे तात! जैसे यह सम्पूर्ण पृथ्वी मेरी है उस प्रकार पाण्डव युधिष्ठिर की नहीं है हे तात! पूर्व समय में निर्बुद्धि दुर्योधन ने मुझसे कहा था ८ कि उसकी सेना के समूहों में अच्छे प्रकार से रक्षित हुए द्रोणाचार्यजी युद्धभूमि में धृष्टद्युम्न के हाथ से मारेगये इस हेतु से मेरी बुद्धि में प्रारब्ध से अन्य और क्या बात है ९ सदैव युद्ध को अच्छा माननेवाले सब अस्त्रों के पारगामी महाबाहु द्रोणाचार्य को राजाओं के मध्य में किस रीति से मृत्यु ने प्राप्त किया १० बड़ी आपत्तियों के भोगनेवाले मैंने बड़ेभारी मोह को पाया मैं भीष्म और द्रोणाचार्य को मृतक सुनकर जीवते रहने को साहस नहीं करसक्ता हूं ११ हे तात! मुझको बेटे का लोभी देखकर जो २ विदुरजी ने कहा था हे सूत! वह सब मुझ समेत दुर्योधन ने पाया १२ जो दुर्योधन को त्याग करने से मेरी निर्दयता न समझी जाय तो पुत्रों को बाकी रक्खूं अर्थात् सब न मारेजायँ १३ जो मनुष्य धर्म को त्याग करके धनादिक अर्थ को उत्तम माननेवाला होता है वह इस लोक से भी पतित होता है और नीचभाव को पाता है १४ हे सञ्जय! अब मैं छत्रादिक के मर्दित होनेपर इस उत्साह से रहित देश के भी बाकी रहने को नहीं देखता हूं १५ नाश होनेवाले

दोनों राजाओं का शेष कैसे होय हम जिन शान्त क्षमावान् पुरुषों के पास सदैव अपना निर्वाह करते हैं १६ हे सञ्जय! इस बात को प्रकट करके मुझ से कहो जिस प्रकार से कि युद्ध जारी हुआ कौन २ लड़े और कौन २ युद्ध से हटगये और कौन से नीच भय से भागे १७ उस अर्जुन को भी मुझ से कहो कि जिस रथियों में श्रेष्ठ पुरुषोत्तम ने जो २ कर्म किये और मेरे भतीजे भीमसेन से भी मुझको बड़ाभय है १८ हे सञ्जय! पाण्डवों के शूरवीरों के लौटने पर मेरी शेष बाकी बचीहुई सेना की अत्यन्त भयकारी सम्मुखता कैसी रीति से हुई १९ हे तात! पाण्डवों के लौटने पर तुम्हारा चित्त कैसाहुआ और मेरेपुत्रों समेत शूरवीरों में जो बड़े शूर हैं उनमें से किन्होंने किनलोगों को रोका ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, पाण्डवों के लौटने पर जैसे कि बादलों से सूर्य गुप्त होता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य को उनलोगों से ढकाहुआ देखकर बड़ा भयकारी युद्ध हुआ १ उनसे उठीहुई कठिन धूलि ने आपकी सेना को ढकादिया इसके पीछे हमने दृष्टि के मार्ग बन्द होजानेपर द्रोणाचार्य को मृतक माना २ उन शूरवीर बड़े धनुषधारी निर्दय कर्म करने के अभिलाषी लोगों को देखकर दुर्योधन ने शीघ्रही अपनी सेना को चलायमान किया ३ और सबसे यह वचन कहा कि हे राजाओ! पराक्रम बुद्धि बल सामर्थ्य और समय के अनुसार पाण्डवोंकी सेना को हटाओ ४ इसके पीछे आपका पुत्र दुर्मर्षण समीप से भीमसेन को देखकर बाणों को फैलाता उसके मारने की अभिलाषा करताहुआ सम्मुखगया ५ युद्ध में मृत्यु के समान क्रोधयुक्त ने उसको अपने बाणों से ढकदिया और भीमसेन ने भी उसको बाणों से महापीड़ित किया उस समय बड़ाकठिन युद्धहुआ ६ वह ईश्वर की आज्ञा से बड़े ज्ञानी शूरवीर प्रहार करनेवाले राज्य को और मरने के भय को त्यागकरके युद्ध में शत्रुओं के सम्मुख नियत हुए ७ हे राजन्! कृतवर्मा ने युद्धको शोभादेनेवाले द्रोणाचार्य को चाहनेवाले आते हुए शूर सात्यकी को रोका ८ फिर क्रोधयुक्त सात्यकी ने उस क्रोधयुक्त कृतवर्मा को बाणों के समूहों से रोका और कृतवर्मा ने सात्यकी को ऐसे रोका जिस प्रकार मतवाला हाथी मतवाले हाथी को रोकता है ९ फिर भयकारी धनुषवाले बड़े

उपाय में प्रवृत्त सिन्धु के राजा जयद्रथ ने बड़े धनुषधारी आतेहुए छत्रधर्मा को तीक्ष्ण धारवाले बाणों के द्वारा द्रोणाचार्य की ओर से रोका १० छत्रधर्मा ने सिन्धु के राजाकी ध्वजा और धनुष को काटकर बड़े क्रोधपूर्वक दशनाराचों से उसके सब मर्मस्थलों को घायल किया ११ इसके पीछे हस्तलाघवी राजा सिन्धुने दूसरे धनुष को लेकर युद्ध में लोहमयी बाणोंसे छत्रधर्माको घायल किया १२ पाण्डवों के निमित्त उपाय करनेवाले भाई शूरवीर महारथी युयुत्सु को उपायकरनेवाले सुबाहु ने द्रोणाचार्य की ओर से रोका युयुत्सु ने बाण चलानेवाले सुबाहु की दोनों भुजा जोकि सुन्दर धनुष बाण की रखनेवाली और परिघ के समान थीं उनको श्वेत और पीत क्षुरनाम बाणों से काटा १३ । १४ और मद्र के राजा शल्य ने धर्मात्मा पाण्डवों में श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर को ऐसी अच्छीरीति से रोका जैसे कि मर्यादा वा किनारा बड़े व्याकुल समुद्र को रोकते हैं १५ धर्मराज ने मर्मों के भेदी अनेकबाणों से उसको ढकदिया फिर राजा मद्र चौंसठ बाणों से उसको बेधकर बड़े शब्द से गर्जा १६ तब युधिष्ठिर ने क्षुरनाम दो बाणों से उस गर्जनेवाले की ध्वजा और धनुष को काटा और काटतेही सब मनुष्य पुकारे १७ और इसीप्रकार सेनासमेत राजा बाह्लीक ने भी आतेहुए राजा द्रुपद को सेनासमेत बाणों से रोका १८ उन दोनों वृद्धों का युद्ध सेनाओं समेत ऐसा बड़ाभयकारी हुआ जैसे कि बड़े २ समूहों को आदिपति दो हाथियों का युद्ध होता है १९ और अवन्तिदेशों के राजा बिन्द अनुबिन्द ने अपनी सेनाओं समेत मत्स्यदेश के राजा विराट को सेनासमेत ऐसे ग्रासकिया जैसे कि पूर्व समय में इन्द्र और अग्नि दोनों ने राजाबलि को ग्रासकिया था २० केकयों के साथ मत्स्यदेशियों का वह युद्ध महाभयानक देवासुरयुद्ध के समान हुआ जिसमें कि हाथी, घोड़े और रथ भयभीत थे २१ उस राजा भूतकर्मा ने बाणों के जालों को छोड़नेवाले और द्रोणाचार्य की ओर को जातेहुए नकुल के पुत्र शतानीक को रोका २२ इसके पीछे नकुल के पुत्र ने युद्ध में जाकर अत्यन्त तीव्र धारवाले तीनबाणों से भूतकर्मा को भुजा और शिर से रहित किया २३ फिर पराक्रमी बाणसमूहों के रखनेवाले द्रोणाचार्य के सम्मुख जाते पराक्रमी शूरवीर सुतसोम को विविंशति ने रोका २४ तब वह अत्यन्त क्रोधभरा सुतसोम उस पिता के भाई विविंशति को सीधे चलनेवाले बाणों से घायल करके सम्मुख

वर्तमान नहीं रहा २५ इसके पीछे भीमरथ ने शीघ्रगामी तीक्ष्णलोहमयी छः बाणों से शाल्व को घोड़े और सारथीसमेत यमपुर को भेजा २६ हे महाराज ! चित्रसेन ने मोर के समान वर्णवाले घोड़ों की सवारी से आतेहुए आपके पुत्र श्रुतवर्मा को रोका २७ उन आपके दोनों निर्भय और परस्पर मारने के अभिलाषी पौत्रों ने पिताओं के अभीष्ट सिद्धों के लिये बड़ा भारी युद्धकिया २८ पिता की प्रतिष्ठा करते हुए अश्वत्थामा ने युद्ध में सम्मुख वर्तमान उस प्रतिबिन्ध को बाणों के द्वारा अच्छेप्रकार से रोका २९ फिर प्रतिबिन्ध ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उस क्रोधयुक्त सिंह लांगूल के चिह्न रखनेवाले और अपने पिता के हेतु युद्ध में नियत अश्वत्थामा को घायल किया ३० हे भरतवंशिन्, नरोत्तम ! जैसे बीजबोने के समय बीजों को बोते हैं उसी प्रकार बाणों को फैलाते हुए द्रौपदी के पुत्रों ने अश्वत्थामा को बाणों की वर्षा से आच्छादित किया ३१ अर्जुन और द्रौपदी के महारथीपुत्र श्रुतकीर्ति को जोकि द्रोणाचार्य की ओर जाता था उसको दुश्शासन के पुत्र ने रोका ३२ फिर श्रीकृष्णजी के समान श्रुतकीर्ति अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले तीनभल्लों से उसके धनुष ध्वजा और सारथी को काटकर द्रोणाचार्य के पासगया ३३ हे राजन् ! जो दोनों सेनाओं के मध्य में बड़ा शूर गिना जाता था उस पटच्चरहन्ताको लक्ष्मणने रोका ३४ हे भरतवंशिन् ! वह लक्ष्मण के धनुप और ध्वजा को काटकर और उसीके ऊपर बाणजालों को छोड़ता अत्यन्त शोभायमान हुआ ३५ फिर बड़ेज्ञानी और तरुण अवस्थावाले विकर्ण ने राजा द्रुपद के पुत्र युवा शूरवीर युद्ध में आतेहुए शिखण्डी को रोका ३६ इसके अनन्तर राजा द्रुपद के पुत्र ने उसको बाणों के जाल से ढकदिया उस समय आपका पराक्रमी पुत्र उस बाणों के जाल को काटकर महाशोभायमान हुआ ३७ अङ्गद ने द्रोणाचार्य के सम्मुख जातेहुए उत्तमौजा को बाणों के समूहों से रोका ३८ उन दोनों पुरुषोत्तमों का वह बड़ा भारी युद्धहुआ और सब सेना के मनुष्यों का युद्ध भी उनदोनों की प्रसन्नताका बढ़ानेवाला हुआ ३९।४० फिर बड़े धनुषधारी पराक्रमी दुर्मुख ने द्रोणाचार्य के सम्मुख जातेहुए वीरपुरजित् को वत्सदन्तनाम बाणों से रोका ४१ फिर उसने दुर्मुख को नाराच से दोनों भृकुटियों के मध्य में घायल किया उसका वह मुख सनाल कमल के समान शोभायमान हुआ ४२ फिर कर्ण ने लालध्वजा रखनेवाले द्रोणाचार्य के स-

म्मुख जातेहुए केकयदेशीय पांचों भाइयों को बाणों की वर्षा से रोका ४३ उन अत्यन्त पीड्यमानों ने भी उसको बाणों की वृष्टि से ढकदिया उसने उनको फिर बाणों की वर्षा से वारंवार ऐसे ढकदिया कि घोड़े सारथी और ध्वजा समेत दोनों बाणों से ढकेहुए न वह पांचों दिखाईपड़े और न कर्ण दिखाई पड़े ४४ आपके दुर्जय जय और विजय तीनों पुत्रों ने नील, काशी के राजा और जयत्सेन इन तीनों को रोका ४५ वह युद्ध भी महाभयकारी और तमाशा देखनेवालों का ऐसा महा आनन्दकारी हुआ जैसे कि सिंह और व्याघ्रों का युद्ध उत्तम रीछ और भैंसाओं के साथ होता है ४६ क्षेत्रधूर्त और बृहन्त इन दोनों भाइयों ने द्रोणाचार्य के सम्मुख जाते हुए सात्यकी यादव को तीव्र बाणों से घायल किया ४७ उन दोनों का और उसका वह युद्ध ऐसा अत्यन्त अपूर्व हुआ जैसे कि वन के मध्य में सिंह का युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियों से होता है ४८ उसी प्रकार क्रोधयुक्त बाणों को छोड़ते चन्देरी के राजा ने युद्ध को श्रेष्ठ माननेवाले अकेले राजा अम्बष्ठ को द्रोणाचार्य की ओर से रोका ४९ इसके पीछे अम्बष्ठ ने हाड़ों की भेदन करनेवाली शलाका से उसको ऐसा घायलकिया कि वह बाण समेत धनुष को छोंड़कर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५० शारद्वत महासाहसी कृपाचार्य ने क्षुद्रकनाम बाणों से यादव वार्धक्षेमी को रोका ५१ जिन्होंने उन अपूर्व युद्ध करनेवाले कृपाचार्य और वार्धक्षेमी को लड़ते हुए देखा उन युद्ध में चित्त लगानेवालों ने दूसरे कर्म को नहीं जाना ५२ और द्रोणाचार्य के यश को बढ़ाते सोमदत्त ने चैतन्य होकर आते हुए राजा मणिमन्त को रोका ५३ फिर उस शीघ्रता करनेवाले सोमदत्त ने उसको धनुष, ध्वजा, पताका, सारथी और छत्रसमेत रथसे गिराया ५४ इसके पीछे शत्रुओं के मारनेवाले ध्वजा में यूप चिह्न रखनेवाले सोमदत्त ने शीघ्रही रथ से कूदकर घोड़े, सारथी, ध्वजा और रथ समेत उसको उत्तम खड्ग से काटा ५५ हे राजन्! दूसरे रथमें सवार होकर दूसरे धनुष को लिये हुए आपही घोड़ों के हाँकनेवाले ने पाण्डवीय सेना को छिन्न भिन्न करदिया ५६ असुरों के ऊपर इन्द्र के समान आते हुए दुर्जय राजा पाण्ड्य को समर्थ वृषसेन ने बाणों से रोका ५७ गदा, परिघ, खड्ग, पट्टिश, दुधारेखड्ग, भुशुण्डी, प्रास, तोमर, शायक और जो २ युद्ध भूमि के मल्लयुद्ध हैं ५८ मूसल, मुद्गर, चक्र,

भिन्दिपाल, परश्वध, धूली, वायु, अग्नि, जल, भस्म, लोष्ठ, तृण और वृक्षों से ५९ पीड़ा देता और चलायमान करता, तोड़ता, मारता, भगाता, गिराता और सेना को डराता द्रोणाचार्य को चाहता घटोत्कच सम्मुख आया ६० फिर क्रोध युक्त अलम्बुष राक्षस ने नाना प्रकार के शस्त्रों से और बहुत प्रकार के युद्ध री-तियों से उस राक्षस को अच्छी तरह घायल किया ६१ उन दोनों राक्षसोत्तमों का वह युद्ध उस प्रकार का हुआ जैसा कि पूर्वसमय में शम्बर और देवराज इन्द्र का हुआ था ६२ आपका कल्याण होय इस रीति से आपके और उन्हों के कठिन युद्ध में हज़ारों रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों के द्वन्द्वनाम युद्ध हुए ६३ इस प्रकार का युद्ध मैंने कभी सुना भी नहीं था जैसे कि द्रोणाचार्य की वर्तमानता अथवा अवर्तमानता में शूरवीरों ने किया ६४ हे समर्थ ! यह युद्ध बड़ा भयकारी अपूर्व और भयानकरूपवाला हुआ इस प्रकार के फैलेहुए अनेक युद्ध देखने में आये ॥ ६५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चविंशतितमोऽध्यायः ॥ २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, इस प्रकार उनके लौटने और भागियों के सम्मुख जानेपर वेगवान् पाण्डव और मेरे पुत्र किस प्रकार से युद्ध में प्रवृत्त हुए १ हे सञ्जय ! अर्जुन ने भी संसप्तकों की सेना में क्या २ कर्म किये ? अथवा संसप्तकों ने अर्जुन से युद्ध करने में जो २ कर्म किये उन सब को मुझसे कहो २ सञ्जय बोले कि उस प्रकार से उन्होंके लौटने और भागियों के सम्मुख जाने पर आपका पुत्र हाथियों की सेना से युक्त आप भीमसेन के सम्मुख दौड़ा ३ जैसे कि हाथी हाथी को और गोवृष गोवृष को युद्ध में बुलाता है उसी प्रकार आप राजा से बुलायागया वह भीमसेन हाथियों की सेना के सम्मुख गया ४ हे श्रेष्ठ ! उस युद्ध में सावधान और भुजबल से युक्त पराक्रमी भीमसेन ने थोड़ेही समय में हाथियों की सेना को छिन्न भिन्न करदिया ५ वह पर्वताकार हाथी सब ओर से मद को छोड़ते हुए उस भीमसेन के नाराचों से मुख फेर २ कर मदों से र-हित होगये ६ जैसे कि अत्यन्त कठोर और प्रबल वायु बादल के जालों को तिर-बिर करदेता है उसी प्रकार वायु के पुत्र ने भी उन सब सेनाओं को छिन्न भिन्न करदिया ७ वह भीमसेन उन हाथियोंपर बाणों को छोड़ता ऐसा शोभायमान

हुआ जैसे कि उदयमान सूर्य सब संसार पर अपनी किरणों को छोड़ता हुआ शोभित होता है ८ भीमसेन के बाणों से घायल और अच्छे प्रकार से छिदेहुए वह हाथी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाश में सूर्य की किरणों से नाना प्रकार के बादल शोभा पानेवाले होतेहैं ९ क्रोधयुक्त दुर्योधन ने इस प्रकार हाथियों के नाशकरनेवाले वायुपुत्र भीमसेन को देख और सम्मुख जाकर उसको तीक्ष्ण बाणों से घायल किया १० इसके अनन्तर रक्तनेत्र और राजा दुर्योधन के नाश करने की इच्छा करते भीमसेन ने क्षणभर ही में अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से राजाको घायल किया ११ बाणों से छिदे हुए शरीर महाक्रोधित मन्द मुसकान के साथ बड़े आश्चर्य को करते उस दुर्योधनने सूर्यकी किरणके समान प्रकाशित नाराचों से पाण्डव भीमसेन को घायल किया १२ फिर पाण्डव ने दो भल्लों से उसके रत्न जटित ध्वजा में वर्तमान मणियों से जटित नाग को और धनुष को शीघ्रही काटा १३ हे श्रेष्ठ! हाथीपर नियत राजा अङ्ग दुर्योधन को भीमसेन से पीड्यमान देखकर उसके व्याकुल करने की इच्छा से उसके सम्मुख गया १४ भीमसेन ने उस बादल के समान शब्द करते हुए गजेन्द्र को नाराचों से मस्तक के मध्य में अत्यन्त पीड्यमान किया १५ वह बाण उसके शरीर को बेधकर पृथ्वी में प्रवेश करगया उसके पीछे वह हाथी ऐसे पृथ्वी पर गिरपड़ा जैसे कि वज्र से ताड़ित पर्वत पृथ्वीपर गिर पड़ता है १६ फिर शीघ्रता करने वाले भीमसेन ने भल्ल से उस हाथी से रहित नीचे को गिराना चाहते हुए म्लेच्छ का शिर काटा १७ उस वीर के गिरने पर वह सेना जिसके कि घोड़े हाथी और रथ महाव्याकुल थे पदातियों को मर्दनकरते हुए भागे १८ उन सब सेनाओं के पराजय होने और चारों ओर के भागने पर राजा प्राग्ज्योतिष हाथी की सवारी से भीमसेन के सम्मुख आया १९ इन्द्र ने जिस हाथी की सवारी से दैत्य और दानवों को विजय किया उस घराने या जाति के हाथी की सवारी से भीमसेन के सम्मुख गया २० वह हाथियों में बड़ा श्रेष्ठ दोनों पैर और लिपटी हुई सूंड़ से अकस्मात् भीमसेन के सम्मुख गया २१ उस बड़ी आँखवाले क्रोधयुक्त भीमसेन के मथन करने के अभिलाषी हाथी ने भीमसेन के रथ को घोड़ों समेत चूर्णकिया २२ इसके पीछे पांवों से दौड़ता हुआ भीमसेन उसके अङ्गों में चिपट गया और जोकि भीमसेन अञ्जलिका वेध नाम पेंच को जानता था

इसीसे नहीं हटा २३ अङ्गों के मध्य में वर्तमान होकर वारंवार हाथों से घायल करतेहुए भीमसेन ने उस मारनेके अभिलाषी अति दुर्जय हाथीको प्यार किया २४ तब वह हाथी शीघ्रही कुम्हारके चक्र के समान घूमने लगा, दशहज़ार हाथी के समान पराक्रमी श्रीमान् भीमसेन उसको चलायमान करनेवाला हुआ २५ इसके पीछे भीमसेन भी अङ्गों से निकलकर उस सुप्रतीकनाम हाथी के आगे हुआ उसने भीमसेन को सूंड़ से झुकाकर अपनी जङ्घाओं से घायल किया २६ उस हाथी ने उसको गर्दन में लपेटकर मारनाचाहा तब भीमसेन ने घुमावदेकर सूंड़ की लपेटन को छुड़ादिया २७ फिर भीमसेन हाथी के अङ्गों में प्रवेश करगया जबतक अपनी सेना में नियत हाथी के सम्मुख आयेहुए हाथी को देखा २८ तब भीमसेन हाथी के अङ्गों से निकलकर बड़ी तीव्रता से दूर चलागया उसके पीछे सब सेनाका बड़ा शब्दहुआ २९ कि बड़े खेदकी बातहै कि भीमसेन हाथीसे मारागया हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! उस हाथी से पाण्डवों की सेना भयभीत होगई ३० हे राजन्! सब शूरवीर अकस्मात् उस स्थानपर आगये जहांपर कि भीमसेन नियत था उसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने भीमसेन को मृतक जानकर ३१ धृष्टद्युम्न समेत भगदत्त को सबओर से घेरलिया उन शत्रुसन्तापी रथियों में श्रेष्ठों ने उसरथ को घेरकरके ३२ हज़ारों तीक्ष्ण बाणों से ढकदिया पृषत्क नाम बाणों के आघात को अंकुश से निष्फल करते हुए ३३ उस पर्वतीय राजा ने हाथी से पाण्डवों और पाञ्चालों को छिन्न भिन्न करदिया हे राजन् ! युद्ध में उसप्रकार के वृद्ध भगदत्त के उस अपूर्व ३४ कर्म को हाथी के द्वारादेखा इसकेपीछे दशार्णदेशियों का राजा भगदत्त के सम्मुखगया ३५ तिरछे चलनेवाले मतवाले शीघ्रगामी हाथी के द्वारा उन भयानक रूपवाले दोनों हाथियों का ऐसा बड़ाभारी युद्ध हुआ ३६ जिस प्रकार से कि पूर्व समय में पक्षधारी और वृक्षों से संयुक्त दो पर्वतों के हुए राजा प्राग्ज्योतिष के हाथी ने लौटकर और दूरजाकर राजा दशार्ण के हाथी को पार्श्व में घायलकरके गिराया था ३७ फिर भगदत्त ने सूर्य की किरण के समान प्रकाशित सात तोमरों से ३८ उस हाथीपर सवार प्रचलित आसनवाले शत्रु को मारा तब युधिष्ठिर ने राजा भगदत्त को बहुत प्रकार से घायलकरके ३९ रथ की बड़ीभारी सेना से चारों ओर को घेरलिया वह हाथी पर चढ़ाहुआ भगदत्त सब ओर को रथियों से संयुक्त होकर ऐसा शोभायमान

हुआ ४० जैसे कि पर्वत में वन के अन्तर्गतवर्ती अग्नि का पुञ्ज होता है उस हाथी ने उनबाणों की वर्षाओं को फैलाते और भयानक धनुषधारी रथियों के मण्डल जोकि सब ओर से चिपटा था उससे सम्मुखताकरी इसके पीछे राजा प्राग्ज्योतिष ने बड़े हाथी को रोककर ४१ । ४२ अकस्मात् युयुधान के रथपर भेजा फिर उस बड़े हाथी ने शिनी के पौत्र के रथ को पकड़कर ४३ बड़ी तीव्रता से फेंकदिया और युयुधान रथ से कूदगया फिर सिन्धुदेशीय सारथी बड़े घोड़ों को अच्छीरीति से खड़ाकरके ४४ सात्यकी को पाकर नियतहुआ और वह अपने रथपर गया इसके पीछे वह हाथी मौके को पाकर शीघ्रही रथमण्डल से निकलगया ४५ और फिर सब राजाओं को व्याकुलकिया उस शीघ्रगामी हाथी से भयभीत हुए उन नरोत्तमों ने ४६ युद्ध में उस अकेले हाथी को सैकड़ों हाथियों के समान माना व पाण्डव हाथी पर चढ़ेहुए भगदत्त से ऐसे पृथक् २ होते थे ४७ जैसे कि ऐरावत हाथी पर चढ़ेहुए देवराज इन्द्र से दानवलोग पृथक् होते हैं इसके अनन्तर इधर उधर से बोलतेहुए उन पाञ्चालों के भयकारी शब्द ४८ और हाथी घोड़ों के बहुत बड़े शब्द उत्पन्नहुए युद्ध में भगदत्त से पाण्डवों के छिन्न भिन्न होने पर ४९ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन राजा प्राग्ज्योतिषके सम्मुखगया उसके सम्मुख जातेहुए भीमसेन के घोड़ों को हाथी ने सूंड़ से निकालेहुए जलसे ५० तराबोर करके भयभीत किया फिर वह घोड़े भीमसेन को दूरलेगये तब आकृती का पुत्र रुचिपर्वा शीघ्रही उसके सम्मुख गया ५१ वह कालारूप रथपर सवार बारह बाणों से अच्छीरीति से घायल करताहुआ ५२ इसके पीछे उस सुन्दर तेजवाले पहाड़ी राजाने गुप्तग्रन्थीवाले बाण से रुचिपर्वा को यमलोकों में पहुँचाया उस वीर के गिरनेपर उन अभिमन्यु द्रौपदी के पुत्र ५३ चेकितान धृष्टकेतु और युयुत्सु ने उस हाथी को बाणों की वर्षा से ऐसा सींचा जैसे कि जल की धाराओं से बादल सींचता है ५४ और मारने के अभिलाषी होकर बड़े भयानक शब्दों से गर्जनाकरी इसके पीछे योग्य पार्ष्णी के अंकुश और अँगूठे से चलायमान वह हाथी ५५ जिसकी फैलीहुई सूंड़ कान आँख खड़े थे बड़ी शीघ्रता से चला और अपने पैरों से घोड़ों को दाबकर युयुत्सु को पीड्यमान किया ५६ हे राजन् ! शीघ्रता से युक्त युयुत्सु रथ से कूदगया उसके पीछे मारने के अभिलाषी भयकारी शब्दों को गर्जते उन

युधिष्ठिर के शूरवीरों ने बाणों से शीघ्रही हाथी को व्यथितकिया फिर आपका पुत्र भ्रान्ति से युक्त होकर अभिमन्यु के रथपर गया ५७। ५८ वह हाथीपर नियतराजा भगदत्त शत्रुओं के बाणों को छोड़ता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि भुवनों के ऊपर किरणों को डालता सूर्य शोभायमान होता है ५९ उसको अभिमन्यु ने बारह बाणों से युयुत्सु ने दशबाणों से और द्रौपदी के पुत्रों समेत धृष्टद्युम्न ने तीन ३ बाणों से पीड्यमान किया ६० वह हाथी बड़े उपायपूर्वक मारेहुए बाणों से छिन्नशरीर होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य की किरणों से व्याप्त होकर बड़ा बादल शोभित होता है ६१ हाथीवान की शिल्प विद्या के उपायों से चलायमान और शत्रु के बाणों से पीड्यमान उस हाथी ने शत्रुओं को दायें बायें फिरने से कँपाया ६२ जैसे कि ग्वालिया वन में पशुओं के समूहों को दण्ड से घेरता है उसीप्रकार भगदत्त ने भी वारंवार उस सेना को घेरलिया ६३ जैसे कि बाजपक्षी के अपराधी अथवा सम्मुख जानेवाले काक पक्षियों के शीघ्रता से शब्द होते हैं उसी प्रकार भागते अथवा दौड़ते पाण्डवों के शूरवीरों के शीघ्र शब्दहुए ६४ हे राजन्! जैसे कि पूर्व समय में पक्षधारी उत्तम पहाड़ घायल होता है उसीप्रकार के अत्यन्त उत्तम अंकुश से घायलहुए उस गजराज ने शत्रुओं के मध्य में ऐसे बड़े भय को उत्पन्न किया जैसे कि क्षुभित हुआ समुद्र व्यापारीलोगों के भय को बढ़ाता है ६५ इसके पीछे मार्ग में उन हाथी रथ और राजालोग जोकि भय से भागते थे उनसे बड़ा भयकारी शब्द उत्पन्नहुआ हे राजन्! इसीप्रकार उस शब्द से युद्ध में पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग, दिशा और विदिशा व्याप्तहोगईं ६६ उस राजा ने उस अत्यन्त श्रेष्ठ हाथी के द्वारा शत्रुओं की सेना को ऐसे अत्यन्त मझाया जैसे कि पूर्व समय में देवताओं से सुरक्षित देवसेना को युद्ध में विरोचन असुर ने मझाया था ६७ बड़े वेगवाली वायुचली और धूलि ने वारंवार आकाश को और सेना के मनुष्यों को भी ढकदिया फिर मनुष्यों ने चारोंओर से चेष्टा करनेवाले चलायमान उस अकेले हाथी को हाथियों के समूह की समान माना॥ ६८॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषड्विंशतितमोऽध्यायः॥ २६॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे महाबाहो! जो तुम युद्ध में अर्जुन के कर्म को मुझ से

पूछते हो सो तुम उसको सुनो जोकि अर्जुन ने युद्ध में काम किया १ उठीहुई धूलि को देख के और हाथी के शब्दको सुनकर भगदत्त से भय का जाननेवाला अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोला २ कि हे मधुसूदनजी! जैसे राजा प्राग्ज्योतिष सवारी में बैठाहुआ शीघ्रता करताहुआ निकला है निश्चयकरके उसीका यह शब्द है ३ युद्ध में इन्द्र के समान हाथी की सवारीमें अतिकुशल और युद्ध के हाथियों के सवारों में सबसे श्रेष्ठ है वह मेरी राय है ४ उस श्रेष्ठ हाथी के भी समान युद्ध में कोई नहीं है वह युद्ध में सब शस्त्रों को उल्लङ्घन करके चलनेवाला बड़ा कर्म करनेवाला और थकावट से रहित होकर ५ शस्त्रों के प्रहार और अग्नि के स्पर्श का सहनेवाला है हे पापों से पृथक्, श्रीकृष्णजी! अब वह अकेलाही हाथी पाण्डवों की सब सेना को नाश करेगा ६ हम दोनों के सिवाय दूसरा कोई भी पुरुष उसके रोकने को समर्थ नहीं है आप शीघ्रही उधरही को चलो जिधर राजा प्राग्ज्योतिष है ७ मैं युद्ध में इस हाथी के पराक्रम से अहङ्कार में भरेहुए वृद्धावस्था से भी आश्चर्ययुक्त इन्द्र के प्यारे अतिथि को स्वर्ग में भेजूंगा ८ इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी अर्जुन के इस वचन से वहां गये जहां परकि पाण्डवीय सेना भगदत्त से छिन्न भिन्न होरही थी ९ इसके पीछे चौदह हज़ार संसप्तक महारथी उस जातेहुए को पीछे से पुकारते हुए चढ़ाई करनेवाले हुए १० त्रिगर्तदेशियों के दशहज़ार महारथी और चारहज़ार वासुदेव की सेना के मनुष्य भी चढ़ाई करनेवाले हुए ११ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! भगदत्त से छिन्न भिन्न करी हुई सेना को देखकर उन संसप्तकों से बुलाये अर्जुन का हृदय दो प्रकार का हुआ १२ और शोचने लगा कि इन दोनों कामों में से कौन सा काम आनन्द से सुफल करने के योग्य है इस चिन्ता में पड़ा कि यहां लौटूं कि युधिष्ठिर के पास जाऊं १३ तब अपनी बुद्धि से ही विचार कर उस अर्जुन की बड़ी बुद्धि संसप्तकों के ही मारने में नियत हुई वह हनुमान्जी की ध्वजा का धारण करने वाला इन्द्र का पुत्र अर्जुन अकेलाही उन हज़ारों रथियों के मारने को अकस्मात् युद्ध में लौटा १४ दुर्योधन और कर्ण दोनों का भी वही विचार अर्जुन के मारने के उपायमें हुआ अर्थात् उन दोनों ने उसके मारनेकी कल्पना करी १५ वे पाण्डव दो प्रकार के विचार से डोलायमान हुए तब उत्तम पुरुषों के मारने में उसको नहीं छिपाया १६ हे राजन्! इसके पीछे संसप्तक नाम महारथियों

ने गुप्त ग्रन्थीवाले लाखोंबाण अर्जुन के ऊपर छोड़े १७ फिर वह बाणों से ढका हुआ कुन्तीनन्दन अर्जुन दृष्ट नहीं पड़ा न जनार्दन श्रीकृष्णजी घोड़े और रथसमेत दिखाई पड़े १८ उस समय जनार्दनजी ने मोह को पाया अर्थात् पसीने में तर होगये तब अर्जुन ने उनको अक्षर ब्रह्मास्त्र से मारा १९ उस समय शूरवीरों के बाण प्रत्यञ्चा और धनुष समेत सैकड़ों हाथ कटगये ध्वजाओं समेत घोड़े, सारथी, रथ और रथी भी पृथ्वीपर गिर पड़े २० सवृक्ष पर्वत के शिखर और बादल के समान शरीरवाले अच्छे अलंकृत हाथी जिनके कि सवार मारेगये वे सब अर्जुन के बाणों से घायल होकर पृथ्वीपर गिरे २१ टूटी झूल बिखरे हुए भूषणों समेत निर्जीव हाथी सवारों समेत युद्ध में बाणों से अत्यन्त मथन किये हुए गिरपड़े २२ अर्जुन के भल्लों से मरेहुए बहुत से मनुष्य दुधारेखड्ग, पाश, नखर, मुद्गर, परशे आदि शस्त्रों समेत पृथ्वी पर गिरपड़े २३ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! बालसूर्य कमल और चन्द्रमा के समान रूपवान् अर्जुन के बाणों से कटेहुए पृथ्वी पर वर्तमान हुए २४ तब नाना प्रकार की सूरतों से शत्रुओं को क्रोधयुक्त अर्जुन के हाथ से मारे जाने पर वह अलंकृत सेना उन प्राणों के हरने वाले अर्जुन के बाणों से अग्नि के समान होगई २५ जैसे कि हाथी कमलों के समूहों को विध्वंस करता है उसी प्रकार सेना को व्याकुल करनेवाले अर्जुन को जीवों के समूहों ने पूजा अर्थात् धन्य है धन्य है ऐसा कहकर स्तुति करी २६ माधवजी इन्द्र के समान अर्जुन के उस कर्म को देखकर बड़े आश्चर्ययुक्त होकर बड़ी नम्रतापूर्वक उससे बोले २७ हे अर्जुन ! जो युद्ध में तैंने कर्म किया ऐसा कर्म इन्द्र, यमराज और कुबेर से भी होना महाकठिन है यह मेरा मत है २८ मैंने संसप्तकनाम महारथी हजारों एक साथही युद्धभूमि में गिरे हुए देखे २९ इसके पीछे अर्थात् उन सम्मुख वर्तमान असङ्ख्य संसप्तकों को मारकर श्रीकृष्ण जी से कहा कि अब भगदत्त के सम्मुख चलो ॥ ३० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तविंशतितमोऽध्यायः ॥ २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी ने जाने के अभिलाषी अर्जुन के उन घोड़ों को जोकि चित्त के समान शीघ्रगामी स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत होकर शीघ्र चलनेवाले थे द्रोणाचार्य की सेना की ओर चलाया १ युद्धाभिलाषी सुशर्मा

अपनेभाइयों समेत उस कौरव्य अर्जुन के पीछे की ओर से जोकि द्रोणाचार्य से संतप्त कियेहुए अपने भाइयों के पास जाता था पीछे २ चला २ इसके अनन्तर वह महाविजयी अर्जुन उन अजेय श्रीकृष्णजी से बोले हे अविनाशिन्! यह सुशर्मा भाइयों समेत मुझको बुलाता है ३ हे मधुसूदनजी! वह सेना उत्तर दिशा से छिन्न भिन्न होती है अब मेरा चित्त संसप्तकों ने दो प्रकार का किया अब मैं संसप्तकों को मारूं अथवा शत्रुओं से पीड्यमान अपने भाई बन्धु आदि की रक्षा करूं आप मेरे चित्त के ज्ञाता हैं अब मुझको क्या करना योग्य है ४ अर्जुन के इस कहने से श्रीकृष्णजी ने रथ को लौटाया और उसीमार्ग होकर चले जिस मार्ग में त्रिगर्त के राजा ने अर्जुन को बुलाया था ५ फिर अर्जुन ने सात बाणों से सुशर्मा को बेधकर उसके धनुष को क्षुरप्रनाम दो बाणों से काटा ६ । ७ उनको काटकर अर्जुन ने बड़ी शीघ्रतापूर्वक अपने छःबाणों से राजात्रिगर्त के भाई को घोड़े और सारथी समेत यमलोक को पहुँचाया ८ तदनन्तर सुशर्मा ने अर्जुन को लक्षबनाकर सर्पाकार लोहे की शक्ति को वासुदेवजी के ऊपर को फेंका ९ फिर अर्जुन तीन बाण से शक्ति को और तीनही से तोमर को भी काटकर शरों के समूहों से सुशर्मा को अचेतकरके लौटा १० हे राजन्! आपकी सेनाओं में से किसी ने भी उस बाणों की वर्षा करनेवाले भयकारी इन्द्र के समान आतेहुए अर्जुन को नहीं रोका ११ फिर अर्जुन अपने बाणों से उन कौरवी महारथियों को ऐसे मारताहुआ आया जैसे कि सूखे वन को जलाताहुआ अग्नि आता है १२ वह सबलोग भी उस बुद्धिमान् अर्जुन के उस महाअसह्य वेग के सहने को ऐसे समर्थ नहींहुए जैसे कि प्रजा के लोग अग्नि के स्पर्श को नहीं सहसक्के १३ हे राजन्! वह अर्जुन बाणों की वर्षा से सेनाओं को ढकता गरुड़ के झपटने के समान राजा प्राग्ज्योतिष के सम्मुख आया १४ और अर्जुन ने भागनेवाले भरतवंशियों का शुभदायक और युद्ध में शत्रुओं को अश्रुपातों का बढ़ानेवाला अपना धनुष लचाया १५ अर्थात् हे राजन्! अर्जुन ने दुष्टद्यूत करनेवाले आपके पुत्र के कारण से क्षत्रियों के नाश के निमित्त उसी धनुष को खैंचा १६ फिर अर्जुन के हाथ से व्याकुलहुई आप की सब सेना ऐसे भयभीत होकर खण्डमण्ड होगई जैसे कि पर्वत से टकरखाकर नौका खण्डमण्ड होजाती है १७ इसके पीछे धनुषधारी दशहजार शूरवीर

युद्ध में जय पराजय के निमित्त बुद्धि को निर्दय करके लौटे १८ वहां उन निर्भय चित्तवाले महारथियों ने उस अर्जुन को घेरलिया फिर युद्ध में सबभार के सहनेवाले अर्जुन ने बड़े कठिन भार को सहा १९ जैसे कि क्रोधयुक्त मतवाला हाथी वन को मर्दन करता है उसी प्रकार अर्जुन ने भी आपकी सेना को मर्दन किया २० उस सेना के अत्यन्त मथने पर राजा भगदत्त अकस्मात् उस हाथी समेत अर्जुन के सम्मुख गया २१ नरोत्तम अर्जुन ने रथ के द्वारा उसको रोका रथ और हाथी का वह भिड़ना भी अत्यन्त कठिन हुआ २२ वह भगदत्त और अर्जुन दोनों वीर शास्त्र के अनुसार अलंकृत रथ और हाथी की सवारी के द्वारा घूमने लगे २३ इसके पीछे इन्द्रके समान समर्थ भगदत्त ने बादल के समान हाथी पर से अर्जुन के ऊपर बाणों के समूहों की वर्षा करी २४ उस पराक्रमी इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने भी भगदत्त के उस बाणवृष्टि को मार्गही में काटा २५ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! इसके पीछें उस राजा प्राग्ज्योतिष ने उस बाणों की वर्षा को रोककर अपने बाणों से महाबाहु अर्जुन और श्रीकृष्णजी को घायल किया २६ और बाणों के बड़े जाल से उन दोनोंको ढककर उस हाथी को श्रीकृष्ण और अर्जुन के मारने के निमित्त प्रेरित किया २७ जनार्दनजी ने उस काल के समान क्रोधयुक्त आतेहुए हाथी को देखकर रथ के द्वारा दक्षिण किया २८ धर्म को देखते अर्जुन ने उस सम्मुख वर्तमान समीप पहुँचेहुए हाथी को भी उसके सवार समेत मारडालने की इच्छा नहीं की २९ हे श्रेष्ठ! फिर उस हाथी ने हाथी, घोड़े और रथोंको मर्दन करके यमलोक को भेजा इसहेतु से अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ॥ ३०॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टाविंशतितमोऽध्यायः ॥ २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि, इस प्रकार से क्रोधयुक्त अर्जुन ने भगदत्त का क्या किया ? अथवा उस राजा प्राग्ज्योतिष ने अर्जुन का क्या किया ? हे सञ्जय! इसको यथार्थता से वर्णन करो १ सञ्जय बोले कि, सब जीवों ने राजा प्राग्ज्योतिष से भिड़ेहुए पाण्डव अर्जुन और श्रीकृष्णजी को काल के गाल में फँसा हुआ माना २ हे समर्थ, महाराज! वह भगदत्त गजेन्द्र के कन्धे पर से उन रथपर सवार दोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजी पर इस रीति से बाणों की वर्षा करता था ३ फिर उस ने पूरे धनुष से निकलेहुए सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधार और काले

लोहे के बाणों से श्रीकृष्णजी को बेधा ४ अग्नि के स्पर्श से संयुक्त भगदत्त से प्रेरित सुन्दर पक्षवाले बाण श्रीकृष्णजी को घायल करके पृथ्वी में समागये ५ अर्जुन ने उसके धनुष को काटकर रक्षकों को मारकर राजा भगदत्त से लालन करतेहुए के समान युद्ध किया ६ उस अर्जुन ने सूर्य की किरणों के समान तीक्ष्ण चौदह तोमरों को चलाया और उसने प्रत्येक तोमरों के दो दो खण्ड करदिये ७ इसके पीछे इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने हाथी के उसकवच को बाणों के बड़े जाल से टुकड़े २ करदिया और वह पृथ्वीपर गिरपड़ा यहां यह भी प्रसिद्ध है कि राजा भगदत्त ने अपने गिरतेहुए मरे हाथी को अपनी जङ्घाओं से पृथ्वी पर नहीं गिरने दिया ८ फिर वह कवच से रहित बाणों से अत्यन्त पीड़ित हाथी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि जल की धाराओं से संयुक्त बादल से रहित गिरिराज होता है ९ इसके पीछे राजा प्राग्ज्योतिष ने सुनहरी दण्ड रखनेवाली लोहे की शक्ति को वासुदेवजी के ऊपर छोड़ा और अर्जुन ने उसको बीच में से दो खण्ड करदिये १० इसके पीछे मन्द मुसकान करते अर्जुन ने राजा के छत्र ध्वजा को काटकर शीघ्रतापूर्वक दश बाणोंसे उस पर्वतीय राजा को पीड़ितकिया ११ पुङ्खवाले कङ्कपक्ष से युक्त अर्जुन के बाणों से घायल क्रोधयुक्त राजा भगदत्त ने १२ उस श्वेत घोड़ेवाले पाण्डव के मस्तकपर तोमरों को छोड़ा और बड़े उच्चस्वर से गर्जा युद्ध में उन बाणों से अर्जुन का मुकुट लौटगया १३ उस लौटे हुए मुकुट को सँभालते उस अर्जुन ने राजा से कहा कि लोक में देखा हुआ कर्म करना चाहिये १४ इसरीति से कहेहुए अर्जुन के वचन से क्रोधयुक्त भगदत्त ने प्रकाशित धनुष को लेकर बाणों की अर्जुन और गोविन्दजी पर वर्षाकरी १५ फिर वो अर्जुन ने उसके धनुष को काट तूणीरों को तोड़के बड़ी शीघ्रतापूर्वक बहत्तर बाणसे सब मर्मों को विदीर्ण किया १६ इसके पीछे घायल और अत्यन्त पीड्यमान क्रोधयुक्त विष्णु अस्त्र को प्रयोग करतेहुए भगदत्त ने अंकुश को मन्त्र से संयुक्तकरके अर्जुन की छातीपर छोड़ा १७ केशवजी ने अर्जुन को ढककर भगदत्त के छोड़ेहुए सब के मारने वाले उस अस्त्र को अपनी छातीपर रोका १८ वह अस्त्र केशवजी की छातीपर जाकर वैजयन्तीमाला होगया जोकि अपूर्व कमलों के समूहों से संयुक्त सर्वत्र पुष्पों से जटित १९ अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा के समान प्रकाशित और

अग्निही के समान प्रकाशित पत्रों से संयुक्त अतसी के पुष्प के वर्णवाली थी उस माला से श्रीकृष्णजी अत्यन्त शोभायमान हुए वह माला वायु से कम्पायमान कमल के पत्तों के समान था इसके पीछे दुःखीचित्त होकर अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले २० । २१ कि हे निष्पाप, केशवजी ! मैं युद्ध को त्यागकर घोड़ों को हांकूंगा यह कहकर कि अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा नहीं करते हो जो मैं आपत्ति में फँसाहुआ २२ अथवा रोकने में असमर्थ होजाऊं तो तुमको ऐसा करना योग्य है मेरे नियत होनेपर यह आपको न करना चाहिये २३ धनुषबाण को रखने वाला मैं होकर इनलोकों को देवता असुर और मनुष्यों समेत आपकी कृपा से विजय करने को समर्थ हूं यह सब आपको विदित है २४ फिर उस वृत्तान्त के जाननेवाले वासुदेवजी अर्जुन से बोले हे निष्पाप, अर्जुन ! तुम इस प्राचीन और गुप्तवृत्तान्त को सुनो २५ मैं चार मूर्तियों का रखनेवाला संसार की रक्षा के निमित्त सदैव प्रवृत्त होकर रहा अब यहां आपलोगों को विभाग करके लोकों के कल्याण को किया २६ मेरी एकमूर्ति तो पृथ्वीपर नियत होकर तपस्या करती है दूसरी मूर्ति शुभाशुभकर्मों की करनेवाली संसार को देखती है २७ तीसरी मूर्ति नरलोक में नियत होकर कर्म को करती है और चौथी मूर्ति दिव्य हज़ारवर्ष की नींद में सोती है २८ जो यह मेरी मूर्ति हज़ार वर्ष के अन्त पर सोते से उठती है वह उस समय पर वर के योग्य भक्तों के निमित्त उत्तम वरदानों को देती है २९ एक समय मेरी चौथी मूर्ति के उठने के समय पृथ्वी ने समय वर्तमान जानकर अपने नरक नाम पुत्र के अर्थ वर को मांगा उसको सुनो ३० अर्थात् उसने याचनाकरी कि मेरा पुत्र वैष्णवास्त्र से संयुक्त देवता और दानवों से अजेय होय यह वर आप मुझे देने के योग्य हैं ३१ मैंने पूर्व समय में इस प्रकार के वर को सुनकर पृथ्वी के पुत्र को सब से श्रेष्ठ सफल वैष्णवास्त्र को दिया ३२ और यह भी मैंने कहा कि हे पृथ्वी ! निश्चय करके यह अस्त्र नरक की रक्षा के निमित्त सफल होय इसको कोई नहीं काटेगा ३३ इस अस्त्र से रक्षित होकर तेरा पुत्र सदैव सबलोकों के मध्य में शत्रु की सेना को पीड़ा देनेवाला और निर्भय होगा ३४ तब वह चित्त से प्रसन्न देवी पृथ्वी ऐसा होय यह कहकर अभीष्टपानेवाली हुई और वह नरक भी निर्भय होकर शत्रुओं को तपानेवाला हुआ ३५ हे अर्जुन ! इस कारण से वह मेरा अस्त्र राजा

प्राग्ज्योतिष को प्राप्तहुआ हे श्रेष्ठ! इस अस्त्र से इन्द्र रुद्रादि समेत कोई भी लोकोंमें अवध्य नहीं है अर्थात् सबको वध करनेवाला है ३६ इसीनिमित्त इस अस्त्र को मैंने तेरे कारण से विपरीत करदिया हे अर्जुन! इस उत्तम अस्त्र से यह रहित होगया अब इस महाअसुर को मारो ३७ इस निर्भय और देवताओं से शत्रुता करनेवाले अपने शत्रु भगदत्त को ऐसे मारो जैसे कि मैंने पूर्व समय में संसार के कल्याण के लिये नरकासुर को मारा था ३८ तब तो महात्मा केशवजी से इस प्रकार कहेहुए अर्जुन ने भगदत्त को तीक्ष्णबाणों से अकस्मात् ढक दिया ३९ इसके पीछे निर्भय और बड़े साहसी अर्जुन ने हाथी को दोनों कुम्भों के मध्य में नाराच से घायल किया ४० जैसे कि वज्र पर्वत को पाकर उसमें समा जाता है उसी प्रकार वह बाण भी हाथी को पाकर पुङ्ख समेत ऐसे समागया जैसे कि सर्प वामी में समाजाता है ४१ तब भगदत्त से वारंवार प्रेरणा किया हुआ वह हाथी उसके वचन को ऐसे नहीं करता था जैसे कि स्त्रियां दरिद्री के वचन को नहीं करती हैं ४२ वह बड़ा हाथी अपने अङ्गों को रोककर दाँतों के बल पृथ्वी पर गिरपड़ा और महापीड़ा के शब्दों को करता हुआ मृत्यु के वश हुआ ४३ यह राजा नेत्र खोलने के निमित्त पटका बांधने वाला था अर्जुन ने देवता के वचन से उस पटके को अपने बाण से काटा ४४ उस पटके के टूटतेही वह अन्धा होगया इसके अनन्तर सूर्य और चन्द्रमा के मण्डल के समान रूपवाले गुप्तग्रन्थी के बाणों से ४५ अर्जुन ने राजा भगदत्त के हृदय को घायल किया तब वह राजा भगदत्त अर्जुन के बाणों से घायल हृदय हुआ ४६ और निर्जीव होकर धनुष बाण को छोड़ दिया उस समय उसके शिर से उत्तम मुकुट भी ऐसे गिर पड़ा ४७ जैसे कि नाल के छेदन करने से कमल के वृक्ष से गिराहुआ पत्ता होता है ४८ वह सुवर्ण की माला रखनेवाला भगदत्त उस स्वर्णमयी मालावाले पर्वताकार हाथी से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि अच्छा फूलाहुआ और वायु से झुकाया हुआ कर्णिकार का वृक्ष पर्वत के शिखर से गिरता है ४९ इन्द्र के समान पराक्रमी और इन्द्र के मित्र भगदत्त को युद्ध में मारकर फिर उस इन्द्र के पुत्र विजयाभिलाषी ने आपके अन्य लोगों को ऐसे पराजय किया जैसे कि प्रबल वायु वृक्षों को संहार करती है ॥ ५० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, अर्जुन ने सदैव से इन्द्र के प्यारे मित्र बड़ेतेजस्वी राजा प्राग्ज्योतिष को मारकर प्रदक्षिण किया १ इसके पीछे राजा गान्धार के पुत्र उन वृषिक और अचल नाम दोनों भाइयों ने जोकि शत्रुओं के पुर के विजय करनेवाले थे युद्ध में अर्जुन को पीड्यमान किया २ उन दोनों वीर धनुषधारियों ने सम्मुख होकर बड़े वेगवान् शीघ्रगामी तीक्ष्ण धारवाले बाणों के द्वारा अर्जुन को आगे और पीछे से अत्यन्त घायलकिया ३ अर्जुन ने सौबल के पुत्र वृषिक के घोड़े, सूत, धनुष, छत्र, रथ और ध्वजा को अपने तीक्ष्ण बाणों से तिल के समान खण्ड २ करदिया ४ तदनन्तर अर्जुन ने सौबल आदि गान्धारियों को बाणों के समूह और अन्य नाना प्रकार शस्त्रों से भी महाव्याकुल किया ५ इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुन ने बाणों से उन शस्त्र उठानेवाले पचास गान्धारदेशीय वीरों को यमलोक को भेजा ६ वह महाबाहु मृतक घोड़ेवाले रथ से शीघ्रही उतरकर भाई के रथपर तीव्रता से सवार होगया और दूसरे धनुष को जल्दी से हाथ में लिया ७। ८ उन एकरथ में सवार वृषिक और अचल दोनों भाइयों ने बाणों की वर्षा से वारंवार अर्जुन को ऐसे घायल किया जैसे कि वृत्रासुर और बलि ने इन्द्र को किया था ९ फिर उन दोनों लक्षभेदी गान्धारदेशियों ने पाण्डव को इस प्रकार से व्यथित किया जैसे कि लोक में गरमी और बरसात के महीने गरम और ठंढे जलों से पीड़ित करते हैं १० हे राजन्! अर्जुन ने उन अङ्गों से शिथिल रथ में नियत नरोत्तम वृषिक और अचल दोनों भाइयों को एकही बाण से मारा ११ तब वे सिंह के समान लालनेत्र महाबाहु एक लक्षणवाले दोनों शूरवीर और सगेभाई रथ से गिरपड़े १२ उन दोनों के रथ से गिरनेपर उनके पवित्र और बन्धुजनों के प्रियशरीर दशोंदिशाओं में यश को प्रसिद्ध करके नियत होगये १३ हे राजन्! आपके पुत्रों ने युद्ध में भागनेवाले मृतकरूप दोनों मामाओं को देखकर वारंवार अश्रुपातों को छोड़ा १४ इसके पीछे हजारों मायाओं के ज्ञाता शकुनी ने उन दोनों भाइयों को देखकर अर्जुन और श्रीकृष्णजी को मोहित करके माया का करना प्रारम्भकिया १५ लकुट, अयूगद, पाषाण, शतघ्नी, शक्ति, गदा, परिघ, तलवार, शूल, मुद्गर, पट्टिश १६

सकम्पन, दुधारेखड्ग नखर, मुसल, परश्वध, क्षुर, क्षुरप्र, नालीक, वत्सदन्त, अस्थिसन्धि, चक्र, विशिख, प्रास और अन्य २ प्रकार के सैकड़ों शस्त्र दिशाओं से अर्जुन के ऊपरगिरे १७। १८ खर, उष्ट्र, महिष, सिंह, व्याघ्र, समर, चिल्लक, ऋक्ष, शृगाल आदि गर्दभ और बन्दर के रूप १६ और नाना प्रकार के राक्षस और अनेक प्रकार के पक्षी भी बड़े क्रोधयुक्त भूखे होकर अर्जुन की ओर को दौड़े २० इसके पीछे दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले शूरवीर बाणजालों को फेंकते हुए कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने अकस्मातही उनको घायलकिया २१ फिर वह सब शूरवीर अर्जुन के अत्यन्त दृढ़ बाणों से घायल होकर बड़ेभारी शब्दों से गर्जना करते सबओर से मरकर नाश होगये २२ इसके पीछे अर्जुन के रथपर अंधेरा प्रकट हुआ उस अंधेरे में से बड़े २ कठोर वचनों से अर्जुन को घुड़का २३ अर्जुन ने उस बड़े भयानक बड़े युद्ध में भय के उत्पन्न करनेवाले अन्धकार को अपने बड़े उत्तम ज्योतिष नाम अस्त्र से दूरकिया २४ उसके नाश करने पर भयानक जल के समूह प्रकटहुए तब अर्जुन ने उस जल के नष्ट करने के निमित्त आदित्य अस्त्र को प्रयोग किया इसके पीछे उस अस्त्र के द्वारा बहुत प्रकार से जल को २५ नष्टकिया अर्थात् शुष्ककिया इसी प्रकार से शकुनी की उत्पन्न कीहुई अनेक मायाओंको दूरकिया २६ तब हँसते हुए अर्जुन ने शीघ्रही अस्त्रों के प्रभाव से मायाओं को नाशकिया उन मायाओं के दूरहोनेपर अर्जुन के बाणों से घायल कियाहुआ वह भयभीत २७ शकुनी साधारण मनुष्य के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि से हटगया इसके पीछे अस्त्रों का जाननेवाला अर्जुन अपने शत्रुओं में तीव्रता को दिखाता २८ कौरवों की सेनापर बाणों के समूहों से वर्षा करनेलगा हे महाराज! अर्जुन के हाथ से घायल आपके पुत्र की वह सेना २९ ऐसे दो प्रकार की होगई जैसे कि गङ्गाजी समुद्र से मिलकर होती हैं वहांपर कितनेही नरोत्तम तो द्रोणाचार्य की शरण में गये ३० और कितनेही अर्जुन से पीड्यमान होकर दुर्योधन के परिकर में जा मिले उसके पीछे धूलि से सेना के गुप्त होजानेपर हमने उसको नहीं देखा ३१ मैंने गाण्डीव धनुष का शब्द दक्षिण की ओर को सुना कि उस गाण्डीव धनुष के शब्द में शङ्ख दुन्दुभी आदि बाजों के शब्दों को उल्लंघन करके आकाश को स्पर्शकिया ३२ इसके अनन्तर दक्षिण ओर से अपूर्व युद्ध करनेवालों का

युद्ध फिर जारीहुआ ३३ वहां अर्जुन को अच्छा युद्ध हुआ फिर मैं द्रोणाचार्य के पीछे गया युधिष्ठिर की सेना जहां तहां से प्रहार करती थीं ३४ हे भरतवंशिन्! अर्जुन ने समयपर आपके पुत्रों की नाना प्रकार की सेनाओं को ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि आकाश में वायु बादलों को तिरबिर करदेता है ३५ बड़े धनुषधारी नरोत्तमों ने उस इन्द्र के समान आनेवाले बहुत बाणों की वर्षा करने वाले भयानकरूप अर्जुन को नहीं रोका ३६ अर्जुन से घायल उन आपके अत्यन्त पीड्यमान जहां तहां भागतेहुए अनेक शूरवीरों ने अपनेही लोगों को मारा ३७ अर्जुन के छोड़े कङ्कपक्ष से युक्त शरीर के छेदन करनेवाले वे बाण दशोंदिशाओं को ढकतेहुए टीड़ी के समानगिरे ३८ हे श्रेष्ठ! वह अर्जुन के बाण, घोड़े, हाथी, रथी और पदातियों को भी घायल करके पृथ्वी में ऐसे समा-गये जैसे कि बामी में सर्प समाजाता है ३९ उसने हाथी घोड़े और मनुष्योंपर दूसरे बाण को नहीं छोड़ा उसीसे एक बाण से इन सब के सिवाय वह सब ध्वजा भी टूट २ कर गिरपड़ीं ४० तब वह युद्धभूमि मृतक मनुष्य हाथी और सबओर से छोड़ेहुए बाणों के द्वारा गिरायेहुए घोड़ों से अपूर्वरूप होकर श्वान और शृगालों से शब्दायमान होगई ४१ पिता ने पुत्र को मित्र ने उत्तम परम मित्र को त्यागकिया और इसी प्रकार बाणों से दुःखी पुत्र ने पिता को त्याग किया तब अपनी रक्षा में विचार करनेवाले और अर्जुन से पीड्यमान मनुष्यों ने सवारियों को भी त्यागकिया ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि, हे सञ्जय ! अर्जुन से उस सेना के पराजय होनेपर चेष्टाकरते और भागतेहुए तुमलोगों का चित्त कैसाहुआ १ पराजित और आ-श्रय देखनेवाली अर्थात् शरण ढूंढ़नेवाली सेनाओं का सम्मुख करना बड़ा कठिन है हे सञ्जय ! वह सब मुझ से कहो २ सञ्जय बोले हे राजन् ! इसी प्रकार आपके पुत्रके प्रिय चाहनेवाले बड़े २ वीर लोकों के मध्य में अपने २ यश की रक्षाकरते द्रोणाचार्य के पीछे चले ३ अस्त्रों के प्रकट होने और युधिष्ठिर के सम्मुख आने अथवा भयकारी युद्ध के वर्त्तमान होनेपर निर्भय के समान उत्तम २ कर्मों को किया ४ और अमितौजस भीमसेन के ऊपर और वीर सात्यकी व धृष्टद्युम्न

के ऊपर भी चढ़ाई करी ५ निर्दयचित्त पाञ्चालों ने प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य को मारो और आपके पुत्रों ने सब कौरवों को यह प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य का नाश मतकरावो ६ कोई यह बोले कि द्रोणाचार्य को द्रोणाचार्य को और किसी २ ने यह कहा कि द्रोणाचार्य को नहीं किन्तु कौरव और पाण्डवों का द्यूत द्रोणाचार्य से सम्बन्ध रखनेवाला जारी हुआ है ७ द्रोणाचार्य पाञ्चालों के जिन २ रथसमूहों को मथन करते थे वहां २ पाञ्चालदेशीय धृष्टद्युम्नही उनके सम्मुख होता था ८ इसी प्रकार भाग के विपर्य्यय से और भयकारी युद्ध के होनेपर भयानक शब्दों के करनेवाले वीरों ने वीरों को सम्मुख पाया ९ वहांपर पाण्डवलोग शत्रुओं के कम्पायमान करनेवाले हुए और अपने कष्टों को स्मरण करके उन्हों ने सेनाओं को कम्पायमानकिया १० वह क्रोध के वशीभूत होकर लज्जा से युक्त पराक्रम से चेष्टा करनेवाले उस बड़े युद्ध में प्राणों को त्याग करके द्रोणाचार्य को घायल करने में प्रवृत्तहुए ११ तुमुल युद्ध में प्राणोंपर खेलते बड़े तेजस्वी लोगों के लोहे के शस्त्रों का गिरना शिलाओं के समानहुआ १२ हे महाराज ! वृद्धलोग भी ऐसे युद्ध का देखना और सुनना कभी स्मरण नहीं करते हैं १३ उस वीरों के नाश में उस लौटेहुए सेना के बड़े समूह के भार से पीड्यमान पृथ्वी बड़ी कम्पायमानहुई १४ और उस घूमतेहुए सेना के समूह के बड़े भयानक शब्द भी आकाश को पूर्ण करके युधिष्ठिर की सेना में प्रवेशित होगये १५ पाण्डवों की हजारों सेना सम्मुख होकर युद्ध में घूमतेहुए द्रोणाचार्य के तीक्ष्णधार बाणों से पराजित हुई १६ अपूर्वकर्मी द्रोणाचार्य से उस सेनाओं के अत्यन्त मथे जानेपर आप सेनापति ने द्रोणाचार्य को पाकर घेर लिया १७ वहां द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न को वह युद्ध अपूर्व हुआ मेरे चित्त से उसकी किसीसे समानता नहीं होसक्ती है १८ इसके पीछे अग्नि के समान उस राजा नील ने जिसका कि प्रस्फुलिङ्ग अग्निके समान धनुष था कौरवीय सेना को ऐसें भस्मकरदिया जैसे कि सूखे वन को अग्नि भस्म करता है १९ प्रथम वचन कहनेवाले आश्चर्यकारी प्रतापवान् अश्वत्थामाजी उस सेना के भस्म करनेवाले राजा नील से यह शुद्ध वचन बोले २० कि हे नील ! तेरे बाणरूप अग्नि से बहुत से शूरवीरों के भस्म होने से क्या लाभ है ! तू केवल मुझ अकेलाही के साथ युद्धकर और क्रोधित होकर तू बड़ी शीघ्रता से मुझपर प्रहार

कर २१ खिलेहुए कमल के समान प्रकाशमान मुखवाले राजा नील ने उस कमल समूहों के समानरूप और कमल पत्र के समान नेत्रधारी अश्वत्थामा को शायकनाम बाणों से घायलकिया २२ अकस्मात् उससे अत्यन्त घायल अश्वत्थामाजी ने तीन तीक्ष्ण भल्लों से उस शत्रु के धनुष ध्वजा और छत्रको विध्वंसन किया २३ फिर उत्तम ढाल तलवार रखनेवाले राजानील ने पक्षी के समान उस रथ से कूदकर अश्वत्थामा के शरीर से शिर को काटनाचाहा २४ हे निष्पाप, धृतराष्ट्र ! फिर मन्दमुसकान करते अश्वत्थामा ने उसके शरीर से ऊंचे कन्धे सुन्दर नाक और कुण्डलधारी शिर को भल्ल से काटकर गिराया २५ पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख व कमलपत्र के समान नेत्र और अत्यन्त प्रकाशित कमलपत्र के समान प्रकाशमान वह माराहुआ राजा नील पृथ्वीपर गिरा २६ उसके पीछे आचार्य के पुत्र के हाथ से देदीप्य तेजवाले राजा नील के मरनेपर पाण्डवीय सेना अत्यन्त व्याकुल होकर पीड्यमान हुई २७ हे श्रेष्ठ ! उस समय पाण्डवों के उन सब महारथियों ने यह चिन्ताकरी कि इन्द्र का पुत्र अर्जुन शत्रुओं से किस प्रकार करके हमारी रक्षाकरेगा २८ क्योंकि वह बलवान् सेना के दक्षिण भाग में संसप्तकों की शेष बचीहुई नारायण नाम सेना का नाश कररहा है ॥ २९ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, फिर भीमसेन अपनी सेना के घायलपने को नहीं सहसका उसने गुरु को साठ बाणों से और कर्ण को दश बाणों से घायलकिया १ फिर उसके मरण को चाहते द्रोणाचार्य ने तीक्ष्णधार तीव्र सीधे चलनेवाले बाणों से शीघ्रही भीमसेन के मर्मस्थलों को घायलकिया २ । ३ भीमसेन के पराजय को चाहते द्रोणाचार्य ने छब्बीस बाण से कर्ण ने बारह बाणों से और अश्वत्थामा ने सात बाणों से घायलकिया महाबली भीमसेन ने भी उन सब को घायल किया ४ द्रोणाचार्य को पांच सौ बाण से कर्ण को दश बाण से दुर्योधन को बारह बाण से अश्वत्थामा को आठ बाण से घायलकिया ५ और युद्ध में कठिन शब्द को करता उनके सम्मुख वर्त्तमान हुआ उसकी ओर से प्राणों की प्रीति को अत्यन्त त्यागने और मृत्यु के साधारण करनेपर ६ अजातशत्रु युधिष्ठिर ने

उन शूरवीरों को प्रेरणाकरी कि भीमसेन की रक्षाकरो फिर वह बड़े तेजस्वी युयुधानआदि और पाण्डव नकुल, सहदेव ये सब भीमसेन के पास गये वह अत्यन्त क्रोधयुक्त पुरुषोत्तम सब साथ मिलकर ७ । ८ उत्तम धनुषधारियों से रक्षित और द्रोणाचार्य की सेना को पराजय करने के अभिलाषी बड़े पराक्रमी भीमसेन आदिक रथी चढ़ाई करनेवाले हुए ९ रथियों में श्रेष्ठ और सावधान द्रोणाचार्य ने भी उन बड़े पराक्रमी युद्धभूमि के लड़नेवाले वीर महारथियों को रोका १० फिर पाण्डवराज भी मृत्यु के भय को त्यागकरके आपके शूरवीरों के सम्मुखगये अश्वारूढ़ों ने अश्वारूढ़ों को और रथियों ने रथियों को मारा ११ शक्ति खड्गों का गिरना और फरसों से भी युद्धहुआ प्रकृष्ट तलवारों से वह युद्ध बड़ा कठिन और तीव्रता का प्रकट करनेवाला हुआ १२ हाथियों की चढ़ाई में महाभयकारी युद्ध हुआ कोई हाथीसे और कोई घोड़े से औंधेमुख होकर गिरा १३ और हे श्रेष्ठ ! बहुतसे मनुष्य बाणों से घायल होकर रथ से गिरे बड़े गर्द मर्द होनेवाले युद्ध में हाथी ने किसी २ विना कवचवाले गिरेहुए मनुष्य के शिरको छातीपर दबाकर तोड़डाला और किसी हाथी ने अन्य २ बहुतसे गिरेहुए मनुष्यों को मर्दनकिया १४ । १५ और दाँतों से पृथ्वी को पाकर बहुतसे रथियों को भी मर्दन किया कोई २ हाथी भयकारी रुधिर में भरेहुए दाँतों से युक्त १६ युद्ध में सैकड़ों मनुष्यों को मर्दनकरते घूमनेलगे और पड़ेहुए कार्ष्ण लोहे के कवचधारी मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को दूसरे हाथियों ने ऐसा मर्दन किया १७ जैसे कि नरकुल नाम मोटे तृण को करते हैं वहां लज्जायुक्त राजा लोग समय के योग से उन शयनस्थानोंपर सोये जोकि गृध्रपत्ररूप वस्त्रों से आच्छादित बड़े दुःख रूप थे इस युद्ध में पिता ने रथ की सवारी से सम्मुख होकर पुत्र को १८ । १९ और पुत्र ने मोह से पिता को मारा यह बड़ा अमर्यादावाला युद्ध वर्त्तमान हुआ रथ टूटे ध्वजा कटगईं छत्र पृथ्वीपर गिरे २० और घोड़े टूटेहुए आधेजुयें को लियेहुए भागे और कुण्डलधारी शिर के खण्ड २ हुए खड्ग रखनेवाली भुजा भी गिरपड़ी २१ पराक्रमी हाथी ने रथ को पृथ्वीपर दबाकर चूर्णकिया और रथी के नाराच से घायल हुआ हाथी पृथ्वीपर गिरा २२ हाथी से अत्यन्त घायल कियाहुआ घोड़ा अपने सवार समेत गिरा बड़ा भयकारी युद्ध वर्त्तमान हुआ २३ हाय पिता ! हाय पुत्र ! हाय मित्र ! कहां है खड़ा

हो कहां दौड़ता है प्रहारकर और मन्दमुसकान और सिंहनाद समेत इसको मार २४ इस प्रकार की बातों के नाना प्रकार के वचन सुने गये और मनुष्य घोड़े व हाथियों का भय दूरहुआ २५ पृथ्वी की धूलि शान्त होगई और भयभीत लोगों को मूर्च्छाहुई प्रत्येक वीर ने अपने चक्र से दूसरे वीर के चक्र को पाकर२६ अस्त्रमार्ग के बन्द होने के समय गदा से शिर को गिराया बालों का पकड़ना आदि मुष्टिक युद्ध भी बड़ा भयकारी हुआ २७ तब विजयाभिलाषी वीरों का युद्ध दन्त नखके प्रहारोंसे हुआ वहां खड्ग समेत उठीहुई शूरों की भुजा भी कटीं २८ इसी प्रकार किसी २ की भुजा धनुषबाण और अंकुश समेत कटगई इस युद्ध में एकने दूसरे को पुकारा और दूसरा मुख फेरकर भागा २९ एकने दूसरे के शिर को स्वाधीनकरके शरीर से पृथक् किया कोई शब्द के साथही दौड़ा कोई शब्द से अत्यन्त भयभीत हुआ ३० किसी ने सेना के मनुष्यों को और किसी ने अपने शत्रुओं को तीक्ष्ण बाणों से मारा इस युद्ध में पर्वत के शिखर के समान हाथी नाराच बाण से गिराया हुआ ३१ पृथ्वी पर गिरा जैसे कि ऊष्म ऋतु में नदी का रोध होता है उसीप्रकार पर्वताकार हाथी रथी को मारता और पीड़ा देता ३२ घोड़े और सारथीसमेत पृथ्वी पर नियत हुआ शस्त्रज्ञ भयभीत और प्रहार करनेवाले शूरों को देखकर ३३ दूसरे भयभीत और निर्बल चित्तवाले बहुतसे लोगों में मोह पैदाहुआ सब व्याकुल हुए और कुछ नहीं जाना गया ३४ सेना की उठीहुई धूलि से गुप्त मर्यादा से रहित युद्ध वर्त्तमान हुआ इसके पीछे सेनापति शीघ्रता से यह बोलता था कि यही समय है ३५ सदैव शीघ्रता करनेवाले पाण्डवों को प्रेरणा करनेवाला हुआ फिर बाहुशाली पाण्डव उसकी आज्ञा को करते ३६ और मारते हुए द्रोणाचार्य के रथपर ऐसे गिरे जैसे कि सरोवर पर हंस गिरते हैं परस्पर दौड़ो पकड़ो भय मत करो मारो ३७ उस निर्भय द्रोणाचार्य के रथपर यह कठिन शब्द हुए इसके पीछे द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, राजा जयद्रथ ३८ बिन्द, अनुबिन्द, अवन्ती देश के राजालोग और शल्य ने उनको रोका उन उत्तम धर्म से संयुक्त क्रोध भरे कठिनता से हटाने और पकड़ने के योग्य ३९ बाण से पीड्यमान पाञ्चालों ने पाण्डवों समेत द्रोणाचार्य को त्याग नहीं किया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सैकड़ों बाणों को छोड़तेहुए द्रोणाचार्य ने ४० चन्देरीदेशीय, पाञ्चालदेशीय और पाण्डवों का बड़ा मर्दन

और नाशकिया हे श्रेष्ठ ! उसके धनुष की प्रत्यंचा और तलका शब्द दशों दिशाओं में सुना गया ४१ वह शब्द हज़ारों मनुष्यों का भयभीत करनेवाला वज्र के समान था इस अन्तर में विजय का अभ्यासी अर्जुन बहुतसे संसप्तकों को विजय करके ४२ वहां आया जहां पर कि वह द्रोणाचार्यजी पाण्डवों का मर्द्दन कररहे थे संसप्तकों को मारकर उन बड़े भारी भँवर और रुधिररूप जल संयुक्त ह्रद रखनेवाली रुधिर प्रवाह से बहनेवाली नदी से पार उतरा हुआ अर्जुन दृष्टिगोचर हुआ हम ने उस कीर्तिमान् और सूर्य के समान तेजस्वी अर्जुन के चिह्न ४३ । ४४ वानरी ध्वजा को तेज से प्रकाशमान देखा उस संसप्तक नाम समुद्र को अस्त्रों की किरणों से शुष्क करके ४५ प्रलय काल के समान उस पाण्डव अर्जुन ने कौरवों को भी तपाया अर्जुन ने अस्त्रों के सन्ताप से सब कौरवों को ऐसे भस्म करदिया ४६ जैसे कि प्रलयकाल की उठीहुई अग्नि सब जीवों को भस्म करदेती है इसके बाणों के हज़ारों समूहों से घायल हुए हाथी घोड़े और रथोंकी सवारी से लड़नेवाले ४७ शूरवीर पृथ्वीपर गिरे और कितनेही बाल खुले बाणों से पीड़ित मनुष्यों ने महापीड़ा के शब्द किये और कितनेही नाश होगये ४८ और कुछेक मनुष्य अर्जुन के बाणों से पीड़ित और निर्जीव होकर गिरपड़े उन सब में से कितनेही उछल २ कर गिरे और मुख फेरनेवाले शूरवीरों को शूरों के व्रत को स्मरणकरते अर्जुन ने नहीं मारा फिर वह गिरेहुए और अपूर्व रथवाले मुखों को फेर २ कर बहुतसे कौरव पुकारे ४९ । ५० कि हाय कर्ण ! हाय कर्ण ! तब अधिरथी कर्ण उन शरण चाहनेवालों के दीनता के वचनों को सुनकर ५१ भय मत करो यह कहकर अर्जुन के सम्मुख गया हे भरतवंशिन् ! उन रथियों में श्रेष्ठ सब भरतवंशियों के प्रसन्न करनेवाले ५२ और अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ कर्ण ने आग्नेयास्त्र को प्रकटकिया तब अर्जुन ने उस प्रकाशित बाणसमूह और धनुष रखनेवाले कर्ण के ५३ बाणसमूहों को अपने बाणसमूहों से काटा और कर्ण ने भी उस अग्निरूप अर्जुन के भी बाणोंको काटा ५४ और अस्त्र को अस्त्र से अच्छीरीति से रोककर बाणों को छोड़ता हुआ अत्यन्त गर्जा फिर धृष्टद्युम्न, भीमसेन और महारथी सात्यकी ने ५५ कर्ण को पाकर तीन २ बाणों से घायल किया कर्ण ने अर्जुन के अस्त्र को बाण की वर्षा से हटाकर ५६ उन तीनों के धनुषों को तीन विशिखों से काटा वह टूटे धनुष

और निर्विष सर्पों के समान शूरवीर ५७ रथ से अपनी शक्तियों को फेंककर सिंहों के सदृश अत्यन्त गर्जे हाथ से छोड़ी हुई और बड़ी शीघ्रगामी सर्पों के समान ५८ प्रकाशमान महाशक्तियां कर्ण के ऊपर गईं तब बाणों के समूहों से और मुख्य तीन २ बाणों से उन शक्तियों को काटकर ५६ अर्जुन के ऊपर बाणों को छोड़ताहुआ बलवान् कर्ण गर्जा फिर अर्जुन ने भी सात बाणों से कर्ण को घायल करके ६० तीक्ष्ण धारवाले बाण से कर्ण के छोटेभाई को मारा इसके पीछे अर्जुन ने छः बाणों से शत्रुञ्जय को मारकर ६१ शीघ्रही भल्ल से विपाटके शिर को रथ से गिराया धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते हुए अकेले अर्जुन ने ६२ कर्ण के सम्मुखही उसके तीन भाइयों को मारा उसके पीछे भीमसेन ने गरुड़ के समान अपने रथ से उछलकर ६३ उत्तम खड्ग से कर्ण के पन्द्रह पक्षवालों को मारा फिर रथ में नियत हो द्वितीय धनुष को लेकर ६४ दश बाणों से कर्ण को और पांच बाणों से सारथी समेत घोड़ों को घायलकिया धृष्टद्युम्न ने भी उत्तम खड्ग और प्रकाशित ढाल को लेकर ६५ निषध देशीय बृहच्छत्र और चन्द्रवर्मा को मारा इसके पीछे धृष्टद्युम्न ने अपने रथ में नियत होकर दूसरे धनुष को लेकर ६६ युद्ध में गर्जनाकरके तिहत्तर बाणों से कर्ण को घायलकिया फिर चन्द्रमा के समान सात्यकी भी दूसरे धनुष को लेकर ६७ चौंसठ बाणों से कर्ण को बेधकर सिंह के समान गर्जा अच्छे प्रकार से छोड़ेहुए दो भल्लों से कर्ण के धनुष को काटकर ६८ फिर कर्ण को तीन बाणों से भुजा और छाती पर घायलकिया इसके पीछे दुर्योधन, द्रोणाचार्य और राजा जयद्रथ ने ६६ डूबे हुए कर्ण को सात्यकीरूप समुद्र से निकाला फिर आपके अन्य २ सैकड़ों प्रहार करनेवाले शूर, वीर, पत्ति, घोड़े, रथ और हाथियों को ७० दौड़तेहुए कर्ण के समीप दौड़े तब धृष्टद्युम्न, भीमसेन, अभिमन्यु, अर्जुन ७१ नकुल और सहदेव ने युद्ध में जाकर सात्यकी की रक्षाकरी इस रीति से आपके और पाण्डवों के सब धनुषधारियों के नाश के निमित्त प्राणों को त्यागकरके यह बड़ा भारी भयानक युद्ध हुआ पदाती, रथी, हाथी और घोड़े दूसरे रथ हाथी और घोड़ों के अन्य २ पत्तियों के साथ युद्ध करनेवालेहुए ७२ । ७३ रथी हाथी से पत्ती घोड़ों से रथ-पति अन्य घोड़े रथ और हाथियों के साथ घोड़ों से घोड़े हाथियों से हाथी और रथियों से रथी युद्ध करनेवाले हुए ७४ पत्ती भी पत्तियों के साथ भिड़ेहुए दि-

खाई पड़े इस प्रकार मांसाहारियों का प्रसन्न करनेवाला घोर और कठिन युद्ध हुआ ७५ उन महापुरुषों के साथ निर्भय लोगों का युद्ध यमराज के देशों का अत्यन्त वृद्धि करनेवाला हुआ ७६ इसके पीछे बहुतसे हाथी रथपति और घोड़े दूसरे रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों से मारेगये हाथियों से हाथी और रथियों से शस्त्रधारी रथी घोड़ों से घोड़े और पत्तियों के समूहों से पत्ति मारेगये ७७ रथियों से हाथी और उत्तम हाथियों से बड़े घोड़े और घोड़ों से मनुष्य और उत्तम रथियों से वह घोड़े जिनकी जिह्वा दाँत और आँखें निकलपड़ीं और कवचसमेत भूषण टूटे उन सब ने मृत्यु को पाया ७८ इसी प्रकार अन्य बहुतसी क्रियावाले उत्तम शस्त्रों से मरेहुए भयानकरूप होकर पृथ्वीपर गिरपड़े घोड़े और हाथियों के पैरों से घायल और मर्दनकियेहुए अत्यन्त व्याकुल और घोड़ों के खुर और रथ के पहियों से कुचले हुए थे ७९ वहां महाभयानक कुत्ते, शृगाल, पक्षी और राक्षसों के अत्यन्त प्रसन्न करनेवाली पुरुषों की प्रलय वर्त्तमान होने पर वह क्रोधयुक्त बड़ीसेना परस्पर मारती हुई पराक्रम से घूमनेवाली हुई ८० हे भरतवंशिन् ! तदनन्तर सूर्य के अस्ताचल पर नियत होनेपर वह अत्यन्त चलायमान रुधिर से भरीहुई परस्पर में देखनेवाली दोनों सेना डेरों में गईं ॥ ८१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वात्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, प्रथम बड़े तेजस्वी अर्जुन से हमारे शूरवीरों के पराजय होनेपर और द्रोणाचार्य के निष्फल प्रतिज्ञा होने और युधिष्ठिर के रक्षित होने पर १ आपके सब युद्धकर्त्ता टूटे कवच और युद्ध में पराजित धूलि में लिपटे अत्यन्त व्याकुल होकर दशों दिशाओं के देखनेवाले हुए इसके पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य के कहने से विश्राम को करके युद्ध में लक्षभेदी बाणों से घायल और कठिन कर्मों के करने से निश्चेष्ट होगये २ । ३ स्तुतिमान् पुरुषों में अर्जुन के असङ्ख्य गुण और अर्जुन में केशवजी की प्रीति को कहने पर ४ दुष्टकर्मों से अपवाद युक्तों के समान ध्यानरूप मौनता में नियत हुए इसके पीछे प्रातःकाल के समय दुर्योधन द्रोणाचार्यजी से बोला ५ अर्थात् शत्रुओं की वृद्धि से खेदितचित्त महाक्रोधयुक्त वार्त्तालाप में कुशल दुर्योधन नम्रता और अहङ्कार से सब शूरों के समक्ष में यह वचन बोला ६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! निश्चय करके हम

आप के कारण से वध्यपक्ष में हैं अब भी आपने इस प्रकार सम्मुख पाये हुए युधिष्ठिर को नहीं पकड़ा ७ देवताओं समेत पाण्डवों से रक्षित युद्ध में नेत्र के सम्मुख आयेहुए शत्रु को आप पकड़ना चाहैं तो वह किसी प्रकार से भी नहीं छूटसक्ता है ८ आपने प्रसन्नता से मुझको वरदान देकर विपरीत कर्म किया है उत्तम पुरुष किसी दशा में भी अपने भक्त को निराश नहीं करते हैं इसके पीछे बड़े लज्जित होकर भारद्वाजजी दुर्योधन से बोले कि मैं तेरे प्रिय में उपाय करनेवाला हूं तुमको मुझे वैसा न जानना चाहिये ९। १० देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष, सर्प और राक्षसों समेत सब लोक भी इस अर्जुन के रक्षा कियेहुए पुरुष को विजय करने को समर्थ नहीं हैं ११ जहां सब के पति जगत् के स्वामी गोविन्दजी और सेनापति अर्जुन हैं वहां सिवाय प्रभु शिवजी के और किस की सेना जा सक्ती है १२ हे तात! अब मैं सत्य २ कहता हूं यह कभी मिथ्या न होगा कि अब मैं किसी एक अत्यन्त उत्तम महारथी को गिराऊंगा १३ मैं उस व्यूह को रचूंगा जो कि देवताओं से भी नहीं टूटसक्ता है हे राजन्! अब तुम किसी उपाय से अर्जुन को दूर लेजाओ १४ युद्ध में कोई बात भी उससे अविदित और करने के अयोग्य नहीं है उसने सम्पूर्ण प्रकार के ज्ञान विद्या आदि जहां तहां से प्राप्त किये हैं १५ द्रोणाचार्य के इस प्रकार कहने पर संसप्तकों के समूहों ने अर्जुन को दक्षिण दिशा की ओर बुलाया १६ फिर इसके पीछे अर्जुन का युद्ध शत्रुओं से उस प्रकार का हुआ जैसा कभी न देखा था न सुना था १७ हे राजन्! वहां द्रोणाचार्यका रचा हुआ व्यूह ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि मध्याह्न के समय अत्यन्त संतप्तकर्त्ता कठिनता से देखने के योग्य घूमता हुआ सूर्य होता है १८ हे भरतवंशिन्! अभिमन्यु ने अपने ताऊजी के वचन से उस कठिनता से तोड़ने के योग्य व्यूह को युद्ध में अनेक प्रकार से तोड़ा १९ फिर वह उस कठिन कर्मको करके और हज़ारों वीरोंको मारकर छः वीरों से भिड़ाहुआ दुश्शासन के पुत्रके आधीन हुआ २० हे शत्रुसन्तापिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! उस सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु ने प्राणों को छोड़ा उसके सुनने से हम अत्यन्त प्रसन्न और पाण्डव शोकग्रस्त हुए हे राजन्! अभिमन्यु के मरनेपर हमने विश्राम लिया २१ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! उस पुरुषोत्तम के पुत्र को जिसने तरुणता को भी नहीं पाया था युद्ध में मराहुआ सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त

दुर्विघ्न्य होता है २२ धर्म नियत करनेवालों ने यह क्षत्रिय धर्म बड़ा भयकारी नियतकिया है जिस धर्म में राज्य के अभिलाषी शूरवीरों ने बालक के ऊपर शस्त्रों का प्रहार किया २३ हे सञ्जय ! अब तुम यह बताओ कि बड़े भारी अस्त्रज्ञ लोगों ने उस महासुखी और निर्भय के समान घूमनेवाले बालक को कैसे २ मारा २४ हे सञ्जय ! जैसे कि रथ की सेना के तोड़ने के अभिलाषी बड़े तेजस्वी अभिमन्यु ने युद्ध में क्रीड़ाकरी वह सब तुम मुझसे कहो २५ सञ्जय बोले हे राजन् ! जो आप अभिमन्यु का मारना मुझ से पूछते हो वह मैं सम्पूर्णता-पूर्वक तुम से कहता हूं तुम बड़ी सावधानी से सुनो कि जिस प्रकार सेना के तोड़ने के अभिलाषी कुमार ने क्रीड़ाकरी और जैसे आपत्ति में भी पड़कर कठिनता से विजय करने के योग्य वीरों को मारा जैसे कि बहुतसे गुल्म तृण और वृक्षवाले वन में दावानल नाम अग्नि से घिरेहुए वनवासी जीवों को भय होता है उसी प्रकार आपके शूरवीरों को भी भय उत्पन्न हुआ ॥ २६ । २७ । २८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, युद्ध में अत्यन्त भयकारी कर्मवाले और कर्म में शस्त्रों का अभ्यास प्रकट करनेवाले पांचो पाण्डव श्रीकृष्णजी समेत देवताओं से भी विजय करने को कठिन हैं १ बुद्धि का पराक्रम कर्म कुल बुद्धि कीर्त्ति यश और लक्ष्मी से युक्त ऐसे न हैं न होंगे न थे और न वैसे सदैव सर्वगुणसम्पन्नवाले पुरुष हैं २ और निश्चय सच्चे धर्म में प्रीति रखनेवाला जितेन्द्रिय राजा युधिष्ठिर ब्राह्मणादि करके पूजनादि गुणों से सदैव स्वर्ग का प्राप्त करनेवाला है ३ हे राजन् ! प्रलयकाल में मृत्यु व पराक्रमी परशुरामजी और युद्ध में नियत भीम-सेन यह तीनों एक से कहेजाते हैं ४ प्रतिज्ञा और कर्म में कुशल और सावधान गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन के समान दृष्टान्त के अर्थ उपमा के देने को इस पृथ्वीपर युद्ध में लड़नेवाला मैं किसी को नहीं पाता हूं ५ नकुल में गुरुभक्ति, सेवापरायणता, नम्रता, शान्ति, जितेन्द्रियपन, वीरता और अनुपम स्वरूपता यह गुण वर्त्तमान हैं ६ निश्चय करके शास्त्र, गम्भीरता, मधुरता, सत्यता और स्व-रूपसे वीर सहदेव यह दोनों अश्विनीकुमार देवताओं के समान हैं ७ जो वृद्धि-युक्त गुण श्रीकृष्णजी में हैं और जो गुण कि पाण्डव अर्जुन में हैं निश्चयकरके

वह सबगुण अभिमन्यु में वर्त्तमान दीखते थे वह अभिमन्यु पराक्रम में युधिष्ठिर के और कर्म में श्रीकृष्णजी के और भयानक कर्म करने में भीमसेन के समान था ८। ९ और रूप पराक्रम और शास्त्र में अर्जुन के और नम्रता में सहदेव और नकुल के समान था १० धृतराष्ट्र बोले हे सूत! मैं उस अजेय सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु के सब वृत्तान्त को यथार्थ सुनाचाहता हूं वह ऐसा वीर बालक युद्धभूमि में कैसे मारागया ११ सञ्जय बोले हे महाराज! स्थिरचित्त होकर दुस्सह शोक को सहो अब मैं बान्धवों के बड़े नाश को तुम से कहता हूं तुम उसको सावधानी से सुनो १२ हे महाराज! आचार्यजी ने चक्रव्यूह को रचा उसमें इन्द्र के समान सब राजा नियत किये १३ और द्वारोंपर सूर्य के समान तेजस्वी कुमार नियतकिये तब सब राजकुमार इकट्ठेहुए १४ सब नियम करने वाले सुनहरी ध्वजा लालवस्त्र रक्ताभरणधारी १५ लाल पताकावाले सुनहरी माला युक्त अगर चन्दन से लिप्त अङ्ग होकर सूक्ष्म वस्त्रोंकेही धारण करनेवाले थे १६ वह सब मिलकर अभिमन्यु से युद्धाभिलाषी होकर एकसाथही दौड़े उन दृढ़धनुषधारियों की दशहजार संख्या थी १७ वह सब आप के दर्शनीय पौत्र लक्ष्मण को आगे करके समानदुःखी और समानही साहसी १८ परस्पर में ईर्षायुक्त और प्रियकरने में प्रवृत्तचित्त थे हे राजन्! दुर्योधन भी सेना के मध्य में आकर १९ राजाकर्ण, दुश्शासन और कृपाचार्य आदिक महारथियों समेत देवराज इन्द्र के समान शोभायमान श्वेतछत्र से संयुक्त होकर नियतहुआ २० और चमररूप पङ्खों के चलाने से उदय होनेवाले सूर्य के समान था उस सेना के मुखपर सेनापति द्रोणाचार्य के नियत होनेपर २१ श्रीमान् राजा सिन्धु भी मेरुपर्वत के समान निश्चल होकर नियतहुआ और देवताओंके समान आपके वह तीसपुत्र जिनके अग्रगामी अश्वत्थामाजी थे यह सब सिन्धुके राजा के पक्ष में नियतहुए हे महाराज! राजा गान्धार, कितव, शल्य और भूरिश्रवा २२। २३ यह सब महारथी राजासिन्धु के पक्ष में नियतहुए उसके पीछे अपने जीवन से निराश होकर आप के शूरवीर और दूसरों का युद्ध महाकठिन और रोमहर्षण करनेवाला जारीहुआ॥ २४। २५॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः॥ ३४॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, वह पाण्डव जिनका अग्रगण्य भीमसेन है उस भारद्वाजजी से रक्षित और अजेयसेना के सम्मुख वर्त्तमानहुए १ सात्यकी, चेकितान, पुरुषत का पुत्र धृष्टद्युम्न, पराक्रमी कुन्तभोज, महारथी द्रुपद, अभिमन्यु, क्षत्रधर्मा, पराक्रमी बृहच्छत्र, धृष्टकेतु, चन्देरी का राजा, नकुल, सहदेव, घटोत्कच २ । ३ पराक्रमी युधामन्यु, अजेयशिखण्डी, साहसी उत्तमौजा, महारथी विराट ४ द्रौपदी के पुत्र क्रोधमूर्त्ति शिशुपाल का पुत्र पराक्रमी बड़े बली केकय और हजारों सृंजय ५ यह और अन्य २ अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद अपने समूहों समेत द्रोणाचार्य से लड़ने के अभिलाषी एकाएकी सम्मुख दौड़े ६ बड़े पराक्रमी और निर्भय भारद्वाज द्रोणाचार्य ने उन सम्मुख वर्त्तमान शूरवीरों को अपने बाणों के बड़े समूहों से रोका ७ जैसे कि जल का बड़ा समूह दुःख से पराजय होनेवाले पहाड़ को पाकर नियत नहीं रहता है उसी प्रकार यह सब वीर भी द्रोणाचार्य के सम्मुख ऐसे नियत नहीं रहे जैसे कि नदियां मर्यादापर नियत नहीं रहतीं ८ हे राजन् ! भारद्वाज द्रोणाचार्य के धनुष से निकलेहुए बाणों से पीड्यमान पाण्डव उनके सम्मुख खड़े होने को समर्थ नहीं हुए ९ हमने द्रोणाचार्य की दोनों भुजाओं का वह अपूर्व पराक्रम देखा जो सृञ्जयों समेत पाञ्चालदेशीय उनके सम्मुख नियत नहीं रहे युधिष्ठिर ने उस अत्यन्त क्रोधयुक्त आते हुए द्रोणाचार्य को देखकर उनके रोकनेको अनेकप्रकार से विचार किया १० । ११ फिर युधिष्ठिर ने उन द्रोणाचार्य को अन्य से अजेय मानकर बड़े भारी असह्य कठिन भार को अभिमन्यु के ऊपर छोड़कर १२ वासुदेवजी और अर्जुन के समान बड़े तेजस्वी शत्रुओं के वीरों को मारनेवाले अभिमन्यु से यह वचन कहा १३ कि हे तात ! अर्जुन आकर जिस प्रकार से हमारी निन्दा न करे उसी प्रकार को करो हम चक्रव्यूह का तोड़ना किसी प्रकार से भी नहीं जानते हैं १४ उस चक्रव्यूह को अर्जुन श्रीकृष्णजी प्रद्युम्नजी अथवा तुम तोड़सक्ते हो हे महाबाहो ! तुम चारों के सिवाय पांचवां कोई तोड़नेवाला नहीं है १५ हे पुत्र, अभिमन्यु ! तुम पिता आदिक व मामा अथवा सब सेनाओं का माँगा हुआ यह वरदान देने को योग्य हो १६ नहीं तो हे पुत्र ! अर्जुन युद्धभूमि से आकर

हमारी निन्दा करेगा इस हेतु से तुम शीघ्रही अस्त्र को लेकर द्रोणाचार्य की सेना को मारो १७ अभिमन्यु बोला कि मैं पितालोगों की विजय को चाहता हुआ युद्ध में द्रोणाचार्य की अत्यन्त उत्तम दृढ़ और बड़ी भयकारी शीघ्र-गामिनी सेना को मँझाऊंगा १८ मेरे पिता ने सेना के नाश करने में मुझको योग का उपदेश किया है परन्तु मैं किसी आपत्ति में बाहर निकलने को उत्साह नहीं करता हूं १९ युधिष्ठिर बोले कि हे शूरवीरों में श्रेष्ठ! तू सेना को पराजितकरके हमलोगों के द्वार को उत्पन्न कर हे तात! हम सब भी तेरे पीछे उसी मार्ग से जायँगे जिस मार्ग से तुम जावोगे २० हे तात! हम युद्ध में अर्जुन के समान तुम को लड़ाई में आगे कर के सब ओर को मुख किये हुए तेरी रक्षा करते हुए पीछे २ चलेंगे २१ भीमसेन बोले कि मैं तेरे पीछे जाऊंगा और धृष्टद्युम्न, सात्यकी, पाञ्चालदेशीय, कैकय, मत्स्यदेशीय और सब प्रभद्रक भी तेरे पीछे २ चलेंगे २२ हम एकबार तेरे तोड़ेहुए व्यूह को जहां तहां उत्तम २ शूरवीरों को मारते हुए बार २ सब का नाश करेंगे २३ अभिमन्यु बोले कि मैं द्रोणाचार्य के इस दुःख से सम्मुखता के योग्य सेना में ऐसी रीति से प्रवेश करूंगा जैसे कि अत्यन्त क्रोधयुक्त पतङ्ग पक्षी प्रज्वलित अग्नि में जाता है २४ अब मैं उस कर्म को करूंगा जो दोनों कुलों का प्रिय होगा और वह मेरे मामू व पिता की प्रसन्नता है उसी को उत्पन्न करूंगा २५ निश्चय करके सब जीवधारी युद्ध में मुझ बालक से हटाये हुए शत्रुओं की सेनाओं के समूहों को देखेंगे २६ मैं अर्जुन से पैदा नहीं अथवा सुभद्रा से भी उत्पन्न नहीं हूं जो अब मेरे युद्ध में कोई भी जीवता बच सके २७ जो मैं युद्ध में एकरथ से सम्पूर्ण क्षत्रियमण्डल को आठ खण्ड न करूं तो अर्जुन का पुत्र नहीं हूं २८ युधिष्ठिर बोले कि हे अभिमन्यु! तुझ ऐसे वचन कहनेवाले के पराक्रम की वृद्धि होय जो तू द्रोणाचार्य की उस सेना के पराजय करने को उत्साह करता है जो कि कठिनता से सम्मुख होने के योग्य और साध्य, रुद्र, मरुतनाम देवता, वसु, अग्नि और सूर्य के तुल्य पराक्रमी महाबली बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तमों से रक्षित है २९।३० सञ्जय बोले कि युधिष्ठिर ने अभिमन्यु के इस वचन को सुनकर सारथी को प्रेरणा करी ३१ कि हे सुमित्र! युद्ध में घोड़ों को शीघ्रता से द्रोणाचार्य की सेना में चलायमान करो ॥ ३२ ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणिपञ्चत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे भरतवंशिन्! अभिमन्यु ने बुद्धिमान् धर्मराज के उस वचन को सुनकर सारथी को द्रोणाचार्य की सेना में चलने की आज्ञा दी १ चलो २ ऐसी रीति से उसकी आज्ञा को पाकर वह सारथी अभिमन्यु से यह वचन बोला २ हे चिरञ्जीविन्! पाण्डवों ने यह बड़ाभारी बोझा तुझपर नियत किया है एक क्षण भर बुद्धि से विचार कर फिर तुम युद्ध करने को योग्य हो ३ द्रोणाचार्य बड़े अस्त्रादिक कर्मों के ज्ञाता और परिश्रमी हैं और तुम बड़े सुख में पोषण पानेवाले हो अभी युद्ध में अतिकुशल नहीं हो ४ इसके पीछे अभिमन्यु अत्यन्त हँसताहुआ सारथी से यह वचन बोला हे सारथी! यह द्रोणाचार्य अथवा सम्पूर्ण क्षत्रियमण्डलभी क्या पदार्थ हैं ५ मैं युद्ध में देवताओं समेत ऐरावतहाथी पर सवार इन्द्र को अथवा सब जीवधारियों के समूहों से पूजित ईश्वर रुद्रजी से भी युद्ध करसक्ता हूं अब मुझको इस क्षत्रियमण्डल में किसी प्रकार का भय नहीं है ६ यह शत्रुओं की सेना मेरी सोलहवीं कला के भी योग्य नहीं है हे सूत के बेटे! विश्वभर के स्वामी अपने मामा विष्णुजी को पाकर और युद्ध में अर्जुन को भी पाकर मेरे सम्मुख भय नहीं आवेगा इन बातों से अभिमन्यु सारथी के उस वचन को तुच्छ और कदर्थीकरके ७।८ उस से कहने लगा कि द्रोणाचार्य की सेना में चल विलम्ब मतकर उसके पीछे उस सारथीने जो कि मनसे अत्यन्त अप्रसन्न था सुनहरी सामान और तीन वर्ष की अवस्थावाले घोड़ों को शीघ्रही चलायमान किया सुमित्र से द्रोणाचार्य की सेना में भेजेहुए वह घोड़े ९।१० बड़े वेग और पराक्रमवाले द्रोणाचार्य के सम्मुखगये हे राजन्! सब कौरव जिनके अग्रगामी द्रोणाचार्य थे वह सब उस आते हुए अभिमन्यु को देखकर सम्मुख वर्त्तमान हुए और पाण्डवलोग उसके पीछे चले ११ वह श्रेष्ठतम कर्णिकार वृक्ष के चिह्नवाली ध्वजा को ऊंचा करनेवाला अर्जुन के समान पराक्रमी सुवर्ण की ध्वजावाला अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु युद्धाभिलाषी होकर द्रोणाचार्य आदिक महारथियों के सम्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सिंह का बच्चा हाथियों के सम्मुख होय वह सब प्रसन्नता से युक्तहोकर प्रवेशितहुए और ऐसा बड़ाभारी युद्ध एक मुहूर्त्ततक किया जैसे कि गङ्गाजी का आवर्त समुद्र में होता

है १२ । १३ हे राजन् ! परस्पर मारते और लड़तेहुए शूरवीरों का युद्ध कठिन और महाभयकारी वर्त्तमान हुआ १४ उस अत्यन्त भयानक युद्ध के वर्त्तमान होनेपर अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु द्रोणाचार्य के देखते व्यूह को बेधकर प्रवेश करगया १५ हाथी, घोड़े, रथ और पत्तियों के शस्त्र उठानेवाले समूहों ने उस प्रवेश करके शत्रुओं के समूहों को मारते हुए महाबली अभिमन्यु को चारों ओर से घेरलिया १६ नाना प्रकार के बाजे और कठिन गर्ज्जनाओं की ध्वनि टङ्कार सिंहनाद और खड़ा हो खड़ा हो इन शब्दों के १७ और घोर हला हला नाम शब्दों के साथ मतजाओ यहां मेरे सम्मुख खड़ा हो हे शत्रो ! यह मैं हूं इसरीति से अनेक भांति वारंवार वचन कहनेवाले हुए १८ हाथियों की चिंहाड़ गर्ज्जना हँसना खुर और रथ के पहियों के शब्दों से पृथ्वी को शब्दायमान करते अभिमन्यु के सम्मुख गये १९ हे राजन् ! शीघ्रता से युद्धकरनेवाले और अस्त्र चलानेवाले मर्मस्थलों के जाननेवाले महाबली वीर अभिमन्यु ने मर्मभेदी बाणों से उन आनेवाले शूरवीरों को घायल किया २० नाना प्रकार के चिह्नवाले तीक्ष्ण बाणों से घायल अस्वतन्त्र वह बहुतसे शूरवीर उसके सम्मुख ऐसे आये जैसे कि टीड़ीदल अग्नि के सम्मुख आता है २१ इसके पीछे उस अभिमन्यु ने उन शूरों के शरीर और शरीरों के अङ्गों से ऐसे शीघ्र पृथ्वी को आच्छादित किया जैसे कि यज्ञ के मध्य में कुशाओं से वेदी को आच्छादित करते हैं २२ हस्तत्राण के धारण करनेवाले, धनुष, बाण, तलवार, ढाल, अंकुश, लगाम, तोमर, फरसे २३ गदा, आयोगुड़, प्रास, दुधारेखड्ग, तोमर, पट्टिश, भिन्दिपाल, परिघ, शक्ति, बाण, कम्पन २४ चाबुक, महाशङ्ख, भल्ल, कचग्रह, मुद्गर, क्षेपणी, पाश, परिघ और उपल के रखनेवाले २५ केयूर, बाजूबन्द आदि भूषणों से युक्त मनोहर सुगन्धियों से संयुक्त आप के शूरवीरों की हजारों भुजाओं को जो २ कि दृष्टि के सम्मुख आईं उन सब को अभिमन्यु ने काटा २६ हे श्रेष्ठ, महाराज ! उन फड़कती और अत्यन्त रक्तवर्णवाली भुजाओं से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि गरुड़जी के काटे हुए पञ्चमुखी सर्पों से शोभित होती है सुन्दर नाक मुख केशान्तधारी और स्वच्छ कुण्डल रखनेवाले और बहुत रुधिर को छोड़ते क्रोध से दोनों ओठों को काटनेवाले २७।२८ मणिरत्नों से अलंकृत सुन्दर मुकुट और पगड़ी रखनेवाले नाल से रहित कमल के स्वरूप सूर्य चन्द्रमा के समान

प्रकाशमान २९ समयपर प्रियवाणी से शुभवार्त्ता के कहनेवाले बहुत पवित्र सुगन्धियों से युक्त शत्रुओं के शिरों से उस अभिमन्यु ने पृथ्वी को आच्छादित करदिया ३० गन्धर्वनगर के समान विधिपूर्वक अलंकृत ईशारूप मुख और विचित्र त्रूणवाले रथों को जिनके दण्डकबन्धुर गिरपड़े ३१ चक्र उपस्कर और उपस्थों से रहित और सब सामान भी टूटगये थे अथवा जिनके उपस्तरण गिरपड़े और हज़ारों जीवधारी जोकि जांघ, चरण, नाक और दाँतों से भी रहित होगये थे वह सब मरगये उनरथों को खण्ड २ करता सब दिशाओं में दिखाई पड़ा ३२।३३ फिर हाथी और हाथी के सवार वैजयन्ती अंकुश, ध्वजा, तरकस छः कवच, हाथी के बन्धन की रस्सी, गले का भूषण, कम्बल ३४ घण्टा, सूंड़, दाँत की नोक, छत्र, माला, पदानुग शत्रुओं के इन सब सामान आदिकों को तीक्ष्णधारवाले बाणों से नाश किया ३५ वानायुज प्रकार के पहाड़ी काम्बोज देशीय और बाह्लीक देशीय घोड़ों को जिनकी आँख कान और पूँछ नियत थी शीघ्रगामी और अच्छेलोगों के सवार करानेवाले थे ३६ और शक्ति दुधारे खड्ग और पाशों से युद्ध करनेवाले होकर शिक्षित शूरवीरों से युक्त थे जिनके चामरमुख टूटे उनप्रसिद्ध घोड़ों को ३७ जिनकी जिह्वा और आँखें निकल पड़ी थीं कान आँख से रहित जिनके कि सवार मरगये घण्टेटूटगये और गृध्रराक्षसादि के समूहों के प्रसन्न करनेवाले थे ३८ और जिनके चर्म का कवच कट गया वारंवार मूत्र रुधिर से लिप्त थे उन आप के उत्तम घोड़ों को गिराता हुआ शोभायमानहुआ ३९ अकेले विष्णु भगवान् के समान एकाकी नेही ध्यान से अगम्य बड़े दुःख से करने के योग्य कर्म को करके उसने इसरीति से आप की तीन अङ्ग रखनेवाली बड़ी सेना को वारंवार ऐसे मथडाला ४० जैसे कि बड़े तेजस्वी शिवजी असुरों की बड़ी घोर सेना को मथते हैं अर्जुन के पुत्र ने शत्रुओं के साथ असह्य कर्म को करके ४१ आप के सब शूरवीरों को बाणों से घायलकिया जैसे कि देवताओं के सेनापति स्वामिकार्त्तिकजी असुरों की सेना को मारते हैं उसी प्रकार उस अकेले अभिमन्यु के तीक्ष्ण बाणों से उस सेना को अत्यन्त घायल देखकर आप के पुत्र और शूरवीर दशों दिशाओं को देखते ४२।४३ अत्यन्त शुष्कमुख और चलायमान नेत्रपसीने से लिप्तशरीर रोमाञ्चोंसे युक्त भागनेके विचारमें चित्तसे प्रवृत्त शत्रु के विजय करने में साहसों

को त्यागे हुए ४४ जीवन के अभिलाषी सब लोग गोत्र और नामों के द्वारा परस्पर में पुकारे मरेहुए पुत्र, पिता, भाई, बान्धव और नातेदारों को ४५ छोड़कर घोड़े और हाथियों को शीघ्र चलाते सम्मुखगये ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, बड़े तेजस्वी अभिमन्यु से उस अत्यन्त पराजित हुई सेना को देखकर अत्यन्त कोप में भराहुआ दुर्योधन आपही अभिमन्यु के सम्मुख गया १ तदनन्तर युद्ध में अभिमन्यु के सम्मुख लौटे हुए राजा को देखकर द्रोणाचार्यजी शूरवीरों से बोले कि राजा को चारों ओर से रक्षित करो २ पराक्रमी अभिमन्यु हमारे देखतेहुए समीपही लक्षभेदन करता है उसके सम्मुख जाओ भय मतकरो शीघ्रता से इस दुर्योधन की रक्षाकरो ३ इसके पीछे कृतज्ञ पराक्रमी विजय से शोभापानेवाले और भय से भयभीत सुहृदों ने आपके पुत्र वीर दुर्योधन को चारोंओर से घेरकर रक्षित किया ४ द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, कृतवर्मा, शकुनी, बृहद्बल, शल्य, भूरिश्रवा, पौरव, वृषसेन इन सब शूर वीरों ने तीक्ष्ण बाणों की वर्षाकरके अभिमन्यु को ढकदिया ५। ६ फिर उस अभिमन्यु को अचेतकर के दुर्योधन को छुटाया अर्जुन के पुत्र ने मुख से गिरे हुए ग्रास के समान उसको न सहकर ७ वह सुभद्रा का पुत्र बाणों के बड़े समूहोंसे उन महारथियों को घोड़े और सारथियों समेत मुख मोड़नेवाला करके फिर सिंहनाद को गर्जा ८ इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्यादिक रथियों ने उस मांसाभिलाषी सिंह के समान गर्जना करनेवाले अभिमन्यु के शब्द को सुनकर नहीं सहा ९ हे श्रेष्ठ! फिर उनसबों ने रथों के समूहों से उसको घेरकर नाना प्रकार के रूपवाले बाणजालों के समूहों को उत्पन्न किया १० आपके पोते ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उन सब के बाणजालों को अन्तरिक्ष में ही अर्थात् बीच मेंही काटा और उनको भी घायल किया यह बड़ा आश्चर्य सा हुआ ११ इसके पीछे उससे क्रोधरूप किये हुए सर्प के विष के समान बाणों से मारने के अभिलाषी उन लोगों ने अजेय अभिमन्यु को चारों ओर से घेरलिया १२ हे भरतर्षभ! उस अकेले अभिमन्यु ने बाणों से आपके उस सेनारूपी समुद्र को ऐसे धारणकिया जैसे कि किनारा या मर्यादा समुद्र

को धारणकरता है १३ परस्पर मारते और लड़ते हुए अभिमन्यु और शत्रुओं के शूरों में से किसी ने भी मुख नहीं मोड़ा १४ उस घोर और भयकारी युद्ध के वर्तमान होनेपर अन्य शत्रुओं ने नौ बाणों से अभिमन्यु को घायल किया १५ दुश्शासन ने बारहबाणों से सारद्वत कृपाचार्य ने तीन बाण से द्रोणाचार्य ने ऐसे सत्रह बाणों से जोकि सर्प के विष के समान थे १६ विविंशति ने सत्रह बाणों से कृतवर्मा ने सातबाणों से बृहद्बल ने आठबाण से अश्वत्थामा ने सात बाण से भूरिश्रवा ने तीन बाण से राजामद्र ने छः बाण से शकुनी ने दो बाण से और राजा दुर्योधन ने तीन बाण से घायल किया १७। १८ हे महाराज! उस धनुष हाथ में लिये नृत्य करते के समान प्रतापी अभिमन्यु ने तीन २ बाणों से उनको घायलकिया १९ इसके पीछे आपके पुत्रों से व्याकुल अत्यन्त कोपयुक्त और शिक्षित अभ्यास से उत्पन्नबड़ेभारी पराक्रम को दिखलाते अभिमन्यु ने गरुड़ और वायु के समान शीघ्रगामी सारथी के आज्ञावर्ती और शिक्षापाये हुए घोड़ों के द्वारा शीघ्रता करनेवाले अश्मक पुत्र को रोका २० । २१ और दश बाणों से घायलकिया और तिष्ठ २ इस वचन को भी बोला फिर मन्द मुसकान करते अभिमन्यु ने दशबाणों से घोड़े, सारथी, ध्वजा २२ भुजा और धनुष समेत उसके शिर को पृथ्वीपर गिराया अभिमन्यु के हाथ से उस वीर राजा अश्मक के मरने पर २३ सब सेना भागने में प्रवृत्तचित्त होकर अत्यन्त कम्पायमानहुई इसको देखकर कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, राजा गान्धार, शल २४ शल्य, भूरिश्रवा, क्राथ, सोमदत्त, विविंशति, वृषसेन, सुषेण, कुण्डभेदी, प्रतर्दन २५ वृन्दारक, ललित्थ, सुबाहु, दीर्घलोचन और क्रोधयुक्त दुर्योधन ने बाणों की वर्षाओं से ढकदिया २६ बड़े धनुषधारियों के बाणों से अत्यन्त घायल हुए उस अभिमन्यु ने कवच और शरीर के भेदन करनेवाले बाण को कर्ण के मारने के लिये हाथ में लिया २७ वह बाण उसके कवच को काटकर शरीर को घायलकर के ऐसे पृथ्वी में समागया जैसे कि सर्प बामी में प्रवेश कर जाता है उस प्रहार से पीड्यमान महाव्याकुल के समान कर्ण युद्ध में ऐसे अत्यन्त कम्पायमान हुआ जैसे कि भूकम्प होने से पर्वत कम्पायमान होता है २८। २९ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त ने उसीप्रकार दूसरे तीक्ष्ण तीन २ बाणों से सुषेण दीर्घलोचन और कुण्डभेदी को घायलकिया ३० फिर कर्ण ने पचीस

नाराचों से अश्वत्थामा ने बीस बाण से कृतवर्मा ने सातबाणसे घायलकिया ३१ वह इन्द्र का पोता बाणों से युक्त सब शरीर होकर भी पाश को हाथ में लिये सेना के भीतर काल के समान घूमताहुआ दिखाई दिया ३२ और सम्मुख नियतहुए शल्यको बाणों की वर्षा से ढकदिया फिर वह महाबाहु आपकी सेनाओं को भयभीत करताहुआ गर्जा ३३ हे राजन्! इसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अभिमन्यु के मर्मभेदी बाणों से घायल वह शल्य रथ के बैठने के स्थानपर बैठ गया और अचेत होगया ३४ यशस्वी अभिमन्यु से इस प्रकार घायल शल्य को देखकर सब सेना द्रोणाचार्यजी के देखते हुए भागी सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से युक्त उस महाबाहु को देखकर आपके शूरवीर ऐसे भागे जैसे कि सिंह से पीड्यमान होकर मृग भागते हैं ३५। ३६ फिर वह पितर, देवता, चारण, सिद्ध और यक्षों के समूहों से और पृथ्वीतल परवर्ती सम्पूर्ण जीवधारियों के समूहों से युद्ध में कीर्तिमान्, स्तुतिमान्, प्रतिष्ठावान् होकर ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि घृतसे सींचाहुआ अग्नि प्रकाशमान होकर शोभित होता है ॥ ३७॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, इस प्रकार बाणों से बड़े धनुषधारियों को मर्दन करते उस अभिमन्यु को कौनसे शूरवीरों ने रोका १ सञ्जय बोले कि हे राजन्! भारद्वाज द्रोणाचार्य से रक्षित रथ की सेना के तोड़ने को अभिलाषी अभिमन्यु कुमार के युद्धक्रीड़ा को सुनो २ सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु के बाणों से युद्ध में पीड्यमान राजाभद्र को देखकर शल्य का छोटाभाई महाक्रोधित होकर बाणों को फैलाता हुआ सम्मुख आया और आतेही दशबाणों से घोड़े सारथी समेत अभिमन्यु को घायलकरके बड़े शब्द से तिष्ठ २ इस वचन को पुकारा ३। ४ अर्जुन के पुत्र हस्तलाघवी अभिमन्यु ने उसके शिर, ग्रीवा, हाथ, पैर, धनुष, घोड़े, छत्र, ध्वजा, सारथी, त्रिवेणु, कल्प ५ दोनों चक्र, युग धनुष की प्रत्यञ्चा, तूणीर, अनुकर्ष, पताका, चक्र के रक्षक और सब छत्रादिक सामान को बाणों से ६ काटा उसको किसी ने नहीं देखा फिर वह मरा हुआ जिसके कि सब भूषण और वस्त्र टूटगये थे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़े तेजस्वी वायु से टूटाहुआ पर्वत गिरता है इसके अनन्तर उसके सब साथीलोग भी महाभयातुर होकर सब दिशाओं को

भागे ७ । ८ हे भरतवंशिन् ! सब जीवधारी अभिमन्यु के उस कर्म को देखकर धन्य है धन्य है इसशब्द के साथ चारों ओर से शब्द करनेवाले हुए ९ इस शल्य के भाई के मरनेपर बहुतसे सेना के मनुष्य अपना कुल, देश, नाम अर्जुन के पुत्र को सुनाते अत्यन्त क्रोधित नाना प्रकार के शस्त्र हाथमें लिये सम्मुख दौड़े और कोई रथ घोड़े और हाथियों की सवारी से और कितनेही बल से प्रमत्त पदाती भी सम्मुख दौड़े १० । ११ बाणों के रथ की नेमियों के हुङ्कार और हिनहिनाहट गर्जना बड़े सिंहनाद ज्यातलत्रआदि के शब्दों को करते अभिमन्यु के ऊपर गर्जते थे १२ कोई शूरवीर यह बोलते थे जीवता तो रहता परन्तु अब हमारे हाथ से जीवता नहीं बचसकेगा १३ हँसतेहुए अभिमन्यु ने उन उस प्रकार बोलतेहुए शूरवीरों को देखकर जिस २ ने पूर्व में इस पर प्रहार किया उस २ को घायलकिया १४ शूर अभिमन्यु अपूर्व तीक्ष्ण अस्त्रों को अच्छीरीति से दिखलाता युद्ध में मृदुता के साथ युद्ध करनेलगा १५ जो अस्त्र वासुदेवजी से और अर्जुन से लिये थे उनको अभिमन्यु ने प्रकट किया वह दोनों अस्त्र भी श्रीकृष्ण और अर्जुन के ही समान थे १६ वारंवार उस बड़े बोझे को और भय को हटाते सहते बाणों को चढ़ाते और छोड़ते निर्विशेष दिखाई पड़े १७ इसका धनुषमण्डल दिशाओं में चलायमान होकर ऐसा दिखाईदिया जैसे कि शरदऋतु में अत्यन्त प्रकाशमान सूर्य का मण्डल होता है १८ उसकी प्रत्यञ्चा का और तल का शब्द ऐसा भयकारी जान पड़ता था जैसे कि वर्षा के समय बड़ी बिजली छोड़नेवाले बादल का शब्द होता है १९ महानम्रता से युक्त क्रोध से अग्नि रूपमान करनेवाला अपूर्व दर्शनीय अभिमन्यु वीरों की अच्छी रीति से प्रतिष्ठा करता बाणों से और अस्त्रों से युद्ध को करके हे महाराज ! वह नम्र होकर भी फिर ऐसा कठिन वर्तमान हुआ जैसे कि वर्षाऋतु को उल्लङ्घनकर शरदऋतु में भगवान् सूर्यदेवता प्रचण्ड होते हैं २० । २१ उस क्रोधाग्निरूप ने विचित्र तीक्ष्णधार सुनहरी पुङ्खवाले बाणों को ऐसे छोड़ा जैसे कि सूर्य किरणों को छोड़ता है २२ उस बड़े तरुण अवस्थावाले यशस्वी ने क्षुरप्र, वत्सदन्त, विपाट, नाराच, अर्धचन्द्राकार भल्ल और अञ्जलिकों से भी २३ भारद्वाज द्रोणाचार्य के देखतेहुए रथवाली सेना को आच्छादित करदिया उसके पीछे बाणों से पीड्यमान होकर वह सेना मुख फेर २ कर भागी ॥ २४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! मेरा चित्त भय और प्रसन्नता से दो प्रकार का होता है जो अभिमन्यु ने मेरेपुत्र की सेना को अच्छी रीति से रोका १ हे सञ्जय ! फिर उस कुमार की सबक्रीड़ा को ब्योरे समेत मुझ से कहो जोकि असुरों के साथ स्वामिकार्तिकजी की क्रीड़ा के समान थी २ सञ्जय बोले कि बड़े खेद की बात है कि मैं इस भयकारी युद्ध को उसीप्रकार से आपके आगे कहूंगा जैसे कि अकेले एक का और बहुतसे शूरवीरों का युद्ध हुआ ३ रथ में सवार बड़ा साहसी अभिमन्यु उन परस्पर में शत्रुओं के पराजय करनेवाले आपके सब रथियोंपर वर्षा करनेवाला हुआ ४ द्रोणाचार्य,कृपाचार्य, शल्य, अश्वत्थामा, भोज, बृहद्बल, दुर्योधन, सोमदत्त, महाबली शकुनी ५ बहुत राजा और राजकुमार और नानाप्रकार के सेनाओं के मनुष्यों को उस अलातचक्र अर्थात् बनेठी के समान घूमते हुए अभिमन्यु ने घायलकिया ६ हे भरतवंशिन् ! वह प्रतापवान् तेजस्वी अभिमन्यु परम अस्त्रों से शत्रुओं को मारता सब दिशाओं में दिखाई दिया ७ उस बड़े तेजस्वी अभिमन्यु के उस कर्म को देखकर आपकी हज़ारों सेना भयभीत होकर कम्पायमान हुई ८ इसके पीछे प्रसन्नता से प्रफुल्लितनेत्र प्रतापवान् महाज्ञानी भारद्वाज द्रोणाचार्य शीघ्रही कृपाचार्य को सम्बोधनकर के यह वचन बोले ९ अर्थात् हे भरतर्षभ ! आपके पुत्र के मर्मों के कम्पायमान करनेवाले युद्ध में कुशल अभिमन्यु को युद्धभूमि में देखकर यह वचन बोले १० यह सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु व पाण्डवों का प्रसिद्ध युवा सब सुहृदों को और राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, बान्धव, अन्य नातेदार और मध्यम स्नेही लोगों समेत अन्य सब सुहृदों को प्रसन्न करताहुआ जाता है ११ । १२ मैं इसके समान अन्य किसी धनुषधारी को नहीं मानता हूं यह जो चाहै तो इस सेना को भी मारसक्ता है फिर किस निमित्त इच्छा नहीं करता है १३ आपका पुत्र द्रोणाचार्य के प्रीति संयुक्त वचनों को सुनकर और मन्द मुसकान करता हुआ द्रोणाचार्य को देखके अर्जुन के पुत्र पर अत्यन्त क्रोधयुक्त हुआ १४ और कर्ण, राजाबाह्लीक, दुश्शासन और राजा मद्र और अन्य २ भी महारथियों से यह वचन बोला १५ कि यह ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ सब महाराजाओं का

आचार्य अज्ञानी द्रोणाचार्य अर्जुन के पुत्र को नहीं मारना चाहता है १६ हे मित्र ! इस आततायी के युद्ध में काल भी नहीं युद्ध करसक्ता है फिर दूसरा कौन मनुष्य लड़सक्ता है यह मैं तुमसे सत्य २ ही कहता हूं १७ यह अर्जुन के पुत्र की शिष्यता के कारण से रक्षा करते हैं शिष्य और पुत्र बड़े प्यारे होते हैं वह धर्मात्मा पुरुषों की सन्तान हैं १८ वह अहङ्कारी अज्ञानी द्रोणाचार्य से रक्षित अपने को पराक्रमी मानता है इसको मर्दन करो विलम्ब न करो १९ राजा करके इसप्रकार कहेहुए महाक्रोधरूप मारने को अभिलाषी वह सबलोग भारद्वाजजी के देखते अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के सम्मुखगये तब कौरवों में श्रेष्ठ दुश्शासन दुर्योधन के उस वचन को सुनकर दुर्योधन से यह वचन बोला २० । २१ हे महाराज ! मैं तुमसे कहता हूं कि पाण्डवों के और पाञ्चालों के देखते मेंही इस सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु को ऐसे ग्रसूंगा जैसे कि सूर्य को राहु ग्रसलेता है यह बड़ी बातेंकरके दुर्योधन से कहनेलगा २२ । २३ कि वह दोनों मुख्य श्रीकृष्ण और अर्जुन भी सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु को मुझ से ग्रस्तहुआ सुनकर निस्सन्देह जीवलोक से प्रेतलोक को जायँगे २४ प्रत्यक्ष है कि वह दोनों इस अभिमन्यु को मृतक सुनकर प्राणों को त्यागदेंगे और पाण्डु के क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाले पुत्र अर्थात् पाण्डव सुहृदों के समूहों समेत एकही दिन में नपुंसकता से जीवन को त्याग करेंगे इस हेतु से इस शत्रु के मरने से आपके सब शत्रु मारे जायँगे हे राजन् ! कल्याणपूर्वक मुझ को ध्यानकरो कि मैं आपके शत्रुओं को मारूंगा २५ । २६ हे राजन् ! आपका पुत्र दुश्शासन इस प्रकार कहकर गर्जा और महाक्रोधित होकर बाणों की वर्षा से अभिमन्यु को ढकता सम्मुख गया २७ फिर शत्रुविजयी अभिमन्यु ने आपके अत्यन्त क्रोधभरे पुत्र को आताहुआ देखकर छब्बीस तीक्ष्ण बाणों से घायलकिया २८ फिर मतवाले हाथी के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त दुश्शासन युद्ध में अभिमन्यु से युद्ध करनेलगा २९ रथ की शिक्षा में सावधान वह दोनों रथों करके दायें बायें अपूर्वमण्डलों को घूमते युद्ध करनेवाले हुए ३० इसके पीछे मनुष्यों ने पणव, मृदङ्ग, दुन्दुभी, क्रकच, बड़ाखेल, भेरी और झर्झर नाम बाजों के वह शब्द जोकि शङ्खों और सिंहनादों के शब्दों से संयुक्त थे बजाये ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

चालीसवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे बाणों से घायल अङ्ग बुद्धिमान् अभिमन्यु मन्द मुसकान करता उस सम्मुख नियत दुश्शासन शत्रु से बोला १ कि मैं प्रारब्ध से युद्ध में उस आयेहुए मानी शूरवीर को देखता हूं जोकि कठिनप्रकृति धर्म का त्यागनेवाला और केवल असभ्य वार्ताओं का करनेवाला है २ जो तुमने सभा में राजा धृतराष्ट्र के सुनतेहुए कठोर वचनों से धर्मराज युधिष्ठिर को क्रोधित किया ३ और भीमसेन को भी तुझ विजय से मदोन्मत्त ने बहुतसे कठोर और अयोग्य वचन कहे फिर शकुनी के छली पाशे के आश्रयीभूत होकर तुमने अपने पराक्रम को प्रकटकिया इसी हेतुकर के उस महात्मा के क्रोध से तुझको यह फल मिला है ४ दूसरे के धन का लेना क्रोध, विरोधता, लोभ, ज्ञानध्वंस, शत्रुता, अप्रियभाषण ५ अथवा उग्र धनुषधारी मेरे पितालोगों के राज्य का हरना इन सब पापों का फल उन सब महात्माओं के क्रोध से तुझको प्राप्तहुआ है ६ हे दुर्बुद्धे! तू उस अधर्म के महाभयकारी फल को प्राप्तकर अब मैं सब सेना के देखते हुए बाणों से तुझको दण्ड देनेवाला हूं ७ मैं युद्ध में असह्य होकर कृष्ण की व्याकुलता के और अपने पिता के चित्त की व्याकुलता के ऋण से अऋण हुआ चाहता हूं ८ हे कौरव! अब मैं युद्ध में भीमसेन के भी ऋण से अऋण होनेवाला हूं जो तू युद्ध से न भागेगा तो मुझ से युद्ध में जीवता न बचैगा ९ शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले महाबाहु अभिमन्यु ने इस प्रकार से कहकर दुश्शासन के मारनेवाले कालाग्नि और वायु के समान प्रकाशित बाण को धनुषपर चढ़ाया १० वह बाण शीघ्रही उसकी छाती को पाकर जत्रुस्थान को घायलकरके पुङ्खों समेत ऐसे समागया जैसे कि बामी में सर्प समाजाता है ११ इसके पीछे भी अग्नि के स्पर्श के समान कानतक खैंचेहुए पच्चीस बाणों से उसको घायल किया १२ हे महाराज! वह कठिन घायल और पीड्यमान दुश्शासन रथ के बैठने के स्थानपर बड़ा अचेत होकर बैठगया १३ फिर शीघ्रता करनेवाला सारथी उस अभिमन्यु के पीड़ित कियेहुए अचेत दुश्शासन को युद्ध में से दूर लेगया १४ इसके पीछे पाण्डव द्रौपदी के पुत्र राजा विराट पाञ्चाल देशीय और केकयों ने उसको देखकर सिंहनाद किये १५ वहां पाण्डवों की सेना

के अत्यन्त प्रसन्न मनुष्यों ने नानाप्रकारके रूपवाले बाजों को सब ओर से अच्छी रीति से बजाया १६ और आश्चर्य करनेवाले प्रतिपक्षीलोगों ने अभिमन्यु के युद्ध कर्म को देखा और बड़े अहङ्कारी शत्रु को पराजित देखकर ध्वजा के शिरपर धर्म, वायु, इन्द्र और अश्विनीकुमारों के स्वरूप १७ धारण करनेवाले द्रौपदी के पुत्र महारथी सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी १८ केकयदेशीय, धृष्टकेतु, मत्स्यदेशीय, पाञ्चाल, सृञ्जय और प्रसन्नता से युक्त युधिष्ठिर आदि पाण्डव शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य की सेना के तोड़ने के अभिलाषी होकर सम्मुख दौड़े १९ इसके पीछे विजयाभिलाषी मुख न मोड़नेवाले आपके शूरवीरों का बड़ा भारी युद्ध उन शत्रुओंके साथहुआ २० हे महाराज! इस प्रकार उस अत्यन्त भयकारी युद्ध के वर्तमान होनेपर दुर्योधन कर्ण से यह वचन बोला २१ कि इस सूर्य के समान सन्तप्त करनेवाले युद्ध में शत्रुवर्गों के मारनेवाले वीरदुश्शासन को अभिमन्यु के आधीनता में हुआ देखो २२ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त सिंह के समान पराक्रम से मतवाले बड़े सन्नद्ध यह पाण्डव अभिमन्यु की रक्षा करने को सम्मुख दौड़े २३ इसके अनन्तर आपके पुत्र का प्रिय करनेवाला बड़ा क्रोधयुक्त कर्ण अपने तीक्ष्ण बाणों से उस कठिनता से सम्मुख होने के योग्य अभिमन्यु पर वर्षा करनेवाला हुआ २४ शूरवीर कर्ण ने युद्धभूमि में बड़े उत्तम तीक्ष्ण बाणों से उस अभिमन्यु के साथ पीछे चलनेवालों को बड़े अनादरपूर्वक घायल किया २५ हे राजन्! द्रोणाचार्य को चाहते बड़े साहसी अभिमन्यु ने तिहत्तर बाणों से बड़ी शीघ्रतापूर्वक कर्ण को घायलकिया २६ इसीप्रकार रथों के समूहों को पीड्यमान करते उस इन्द्र के पोते रथी अभिमन्यु को द्रोणाचार्य की ओर से कोई शूरवीर रोकने को समर्थ नहीं हुआ २७ तदनन्तर विजयाभिलाषी सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ कर्ण ने उत्तम अस्त्रों को दिखलाकर सैकड़ों प्रकार से अभिमन्यु को घायल किया २८ उस अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ परशुरामजी के शिष्य प्रतापी कर्ण ने युद्ध में अस्त्रोंकरके उस शत्रुओं से निर्भय अभिमन्यु को पीड्यमान किया २९ वह देवता के समान इस प्रकार कर्ण के अस्त्रों की वर्षा से पीड्यमान भी अभिमन्यु व्याकुल नहीं हुआ ३० इसके पीछे अर्जुन के पुत्र ने तीक्ष्ण गुप्तग्रन्थीवाले भल्लों से शूरवीरों के धनुषों को काटकर कर्ण को पीड्यमान किया ३१ और मन्द मुसकान करते अभिमन्यु ने धनुषमण्डल से छोड़े

हुए सर्प के विष की समान बाणों से शीघ्रही छत्र, ध्वजा, सारथी समेत उस कर्ण को घायल किया ३२ कर्ण ने भी गुप्तग्रन्थीवाले बाणों को उसके ऊपर फेंका ३३ अर्जुन के निर्भयपुत्र ने उन सब को सहा इसके पीछे पराक्रमी वीर ने एकबाण से कर्ण के धनुष को ध्वजासमेत काटकर पृथ्वीपर गिराया ३४ इसके पीछे कर्ण का छोटाभाई आपत्ति में पड़ेहुए कर्ण को देखकर दृढ़धनुष को उठाकर शीघ्रही अभिमन्यु के सम्मुख गया ३५ तब पाण्डव समेत उसके पीछे चलनेवाले मनुष्य उच्चस्वर से पुकारे और बाजों को बजाय अभिमन्यु को प्रसन्नकिया ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, वह अत्यन्त गर्जता और वारंवार प्रत्यञ्चा को खैंचता धनुष हाथ में लिये अभिमन्यु बड़ी शीघ्रता से उन दोनों महात्माओं के रथोंपर जाकर गिरा १ कि मन्दमुसकान करतेहुए उस कर्ण के भाई ने बड़ी जल्दी करके दश बाणों से दुःख से सम्मुख होने के योग्य अभिमन्यु को छत्र, ध्वजा, सारथी और घोड़ों समेत घायल किया २ आपके शूरवीर बाप दादों के अमानुषी कर्म के करनेवाले अभिमन्यु को बाणों से पीड्यमान देखकर प्रसन्नहुए ३ फिर मन्द मुसकान करते अभिमन्यु ने एकबाण से उसके शिर को काटकर गिराया तब वह रथ से पृथ्वीपर गिरपड़ा ४ हे राजन् ! कर्ण ने वायु से कम्पित अथवा पराक्रम से गिरे हुए कर्णिकार वृक्ष के समान भाई को मृतक देखकर अत्यन्त को तुम मुझ पाया ५ फिर सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु कर्ण को अपनेबाणोंकोरसे किया है जिसके करके शीघ्रही दूसरे बड़े धनुषधारियों के भी सम्मुखसञ्जय बोले कि जो वह जयद्रथ तेजस्वी महारथी क्रोधभरे अभिमन्यु ने उस बड़ी से वरके चाहनेवाले राजाने पू- रथ और पत्तियों से संयुक्त थी घायल किया ५२ इन्द्रियों को इन्द्रियों के प्यारे वि- पीड्यमान कर्ण शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा इवाले बड़े कृशशरीर केवल अस्थिमात्र भिन्न होगई ८ हे राजन् ! अभिमन्यु के तवजी को स्तुतिकरके जयद्रथ ने पूजा जैसे कि टीड़ियों से व जल की धाराओं भगवान् शिवजी ने उसपर दया की १४ जानाजाता है ९ फिर तीक्ष्णबाणों से । से कहा कि हे जयद्रथ ! मैं प्रसन्न हूं क्या सिवाय कोई नियत नहीं रहा १० हे भजी के इस प्रकार के वचन को सुनकर

अभिमन्यु शङ्खबजाकर भरतवंशियों की सेना के ऊपर जापहुँचा ११ और सूखे वन में प्रज्वलित अग्नि के समान अपने वेग से शत्रुओं को भस्मकरता वह अभिमन्यु सेनाओं के मध्य में भ्रमण करनेलगा १२ रथ, हाथी, घोड़े और मनुष्यों को अपने तीक्ष्णबाणों से भस्मकरते उस अभिमन्यु ने प्रवेश करके विना शिरवाले रुण्डों के समूहों से व्याप्त करदिया १३ अभिमन्यु के धनुष से प्रकटहुए उत्तम बाणों से घायल और जीवन की इच्छा करनेवाले शूरवीर सम्मुखता में वर्तमान अपनीही सेना के मनुष्यों को मारतेहुए भागे १४ वह भयकारी दुःख से सहने के योग्य कर्म करनेवाले विपाठ रथ और घोड़ों को मारतेहुए शीघ्रही पृथ्वी में समागये १५ स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत शस्त्र अंगुलित्राण गदा और बाजूबन्दों की रखनेवाली बहुत भुजा युद्ध में कटीहुई दिखाई देती थीं १६ कुण्डल मालाधारी शिर, शरीर, खड्ग, धनुष और हजारों बाण पृथ्वीपर गिरेहुए दिखाई पड़े १७ छत्र आदि रथ के चक्र, ईशादण्ड, मुकुट, अक्ष और मथेहुए चक्र और बहुत प्रकार से पड़ेयुग १८ शक्ति, धनुष, तलवार और गिरीहुई बड़ी २ ध्वजा, ढाल, धनुषबाण इन सब चारों ओर से फैलीहुई वस्तुओं से १९ और मरेहुए क्षत्रिय घोड़े और हाथियों से पृथ्वी एक क्षणही में कठिन दुर्गम्यरूप और भयकारी हुई २० परस्पर पुकारते और घायल होतेहुए राजपुत्रों के बड़े शब्द भयभीतों को भय बढ़ानेवाले प्रकट हुए २१ हे [illegible]र्षभ! उस शब्द ने सब दिशाओं को भी शब्दायमान करदिया और अ-हत्तर बाण[illegible] घोड़े रथ और हाथियों को मारता सेना की ओर दौड़ा २२ हे समूहों को पीड्यमा[illegible] वन में छोड़ेहुए अग्नि के समान वेग से शत्रुओं को भस्म ओर से कोई शूरवीर रोक[illegible]नाओं के भीतर दिखाईपड़ा २३ उससमय धूलिसे सेना सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ क[illegible]ने सब दिशा विदिशाओं में भी घूमतेहुए अभि-अभिमन्यु को घायल किया २[illegible]न्! फिर हमने एक क्षण में ही हाथी घोड़े और प्रतापी कर्ण ने युद्ध में अस्त्रोंकर[illegible]ण करनेवाले उस अभिमन्यु को ऐसे देखा पीड्यमान किया २६ वह देवता के स[illegible] है २५ हे महाराज! इसरीति से शत्रुओं पीड्यमान भी अभिमन्यु व्याकुल नहीं [illegible] अभिमन्यु को देखा वह इन्द्र का पोता तीक्ष्ण गुप्तग्रन्थीवाले भल्लों से शूरवीरों [illegible] अत्यन्त शोभायमान हुआ ॥ २६ ॥ मा[illegible]न किया ३१ और मन्द मुसकान [illegible]कचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४१॥

बयालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, युधिष्ठिर की सेना से कोई बलवान् उस बालक अत्यन्त सुखिया भुजबल से अहङ्कारी युद्ध में कुशल वीरकुल का पुत्र शरीर की प्रीति से रहित और तीनवर्ष की अवस्थावाले उत्तम घोड़ों के द्वारा सेनाओं के मँझानेवाले अभिमन्यु के पीछे आया १ । २ सञ्जय बोले युधिष्ठिर, भीमसेन, शिखण्डी, सात्यकी, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, केकय ३ धृष्टकेतु, क्रोधभरे मत्स्यदेशीय युद्ध में समीप आये उसी मार्ग से उसके पिता मामाओं के साथ चले ४ वह अलंकृत सेना और घायल करनेवाले अभिमन्यु को चाहने वाले सम्मुख दौड़े उन चढ़ाई करनेवाले शूरवीरों को देखकर आपके शूरवीर मुख फेरगये ५ इसके पीछे आपका तेजस्वी जमाई आपके पुत्र की उस बड़ी सेना को मुखफेरनेवाली देखकर नियत कराने की इच्छा से दौड़ा ६ हे महाराज ! सिन्धु के राजा के पुत्र उस राजा जयद्रथ ने अपने पुत्र को चाहनेवाले पाण्डवों को सेनाओं समेत रोका ७ वह वार्धक्षत्र का पुत्र उग्र धनुषधारी और वज्रबाणप्रहारी दिव्य अस्त्रों को प्रकट करता ऐसे सम्मुख नियतहुआ जैसे कि चौराहे में हाथी नियत होता है ८ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! मैं सिन्धु के राजा पर बड़ाभार नियत मानता हूं कि जिस अकेले ने उन क्रोधयुक्त और पुत्र को चाहनेवाले पाण्डवोंको रोका ९ मैं सिन्धु के राजा में अत्यन्त अपूर्व पराक्रम और शूरता को मानता हूं उस महात्मा के पराक्रम और उत्तमकर्म को तुम मुझ से कहो १० इसने ऐसा क्या होम दान और तप अच्छे प्रकारसे किया है जिसके द्वारा अकेले राजा सिन्धु ने पाण्डवों को रोका ११ सञ्जय बोले कि जो वह जयद्रथ द्रौपदीहरण में भीमसेन से विजय कियागया उस वरके चाहनेवाले राजाने पूजन करके बड़े तपको अच्छे प्रकार से तपा १२ इन्द्रियों को इन्द्रियों के प्यारे विषयोंसे रोककर क्षुधा तृषा और तप के सहनेवाले बड़े कृशशरीर केवल अस्थिमात्र शरीर १३ उस सनातन ब्रह्म देवता शिवजी को स्तुतिकरके जयद्रथ ने पूजा था उसके पीछे भक्तोंपर कृपा करनेवाले भगवान् शिवजी ने उसपर दया की १४ और शयन के समयपर सिन्धु के पुत्र से कहा कि हे जयद्रथ ! मैं प्रसन्न हूं क्या वर चाहता है उसको माँग १५ शिवजी के इस प्रकार के वचन को सुनकर

सावधानचित्त और नम्रता से हाथजोड़ सिन्धु के राजा जयद्रथ ने कहा १६ कि मैं अकेलाही एकरथ के द्वारा युद्ध में भयकारी बल पराक्रमवाले पाण्डवों को रोकूं यह वरदान चाहता हूं १७ इसके इस वचन को सुनकर देवताओं के ईश्वर शिवजी जयद्रथ से बोले कि हे सौम्य! मैं तुझको वर देता हूं कि सिवाय पाण्डव अर्जुन के १८ चारों पाण्डवों को युद्ध में रोकेगा फिर राजा जयद्रथ 'तथास्तु' कहकर निद्रा से जागपड़ा १६ उस अकेले ने उस वरदान और दिव्य अस्त्र के प्रभाव से पाण्डवों की सेना को अच्छी रीति से रोका २० उसके धनुष की प्रत्यञ्चा और तल के शब्द से शत्रु क्षत्रियों में भय प्रवृत्त हुआ और आपकी सेना को बड़ा आनन्दहुआ २१ हे राजन्! फिर क्षत्रियलोग राजासिन्धुपर नियतहुए सब भार को देखकर बड़ा साहस करके उधर को दौड़े जिधर की ओर राजा युधिष्ठिर की सेना थी॥ २२॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४२॥

तेंतालीसवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे राजेन्द्र! जो तुम सिन्धु के राजा के पराक्रम को पूछतेहो और जैसे वह पाण्डवों से युद्ध करनेवाला हुआ उस सबको मैं कहता हूं तुम सुनो १ आज्ञाकारी और अच्छे लोगों को सवार करानेवाले वायु के समान वेगवान् प्रसन्नता से प्रफुल्लित मुख और शिरपर के बाल सिन्धुदेशीय बड़े २ घोड़े उसको लेचले २ जिसका विधिपूर्वक गन्धर्वनगर के समान रथ अलंकृत किया गया वराह का चिह्न रखनेवाली महाप्रकाशित उसकी ध्वजा शोभायमान हुई ३ वह जयद्रथ श्वेतछत्र पताका और चमर व्यजनादिक राजचिह्नों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में ताराओं का स्वामी चन्द्रमा शोभित होता है ४ उसका वह लोहमयी कवच मोती, हीरा, मणि और सुवर्ण से जटित होकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि नक्षत्रादिकों से संयुक्त आकाश शोभित होता है ५ बड़े धनुष को चलायमान करके बाणों के बहुत समूहों को फैलाते उसने उस २ खण्ड को पूर्णकिया जिस २ को अभिमन्यु ने हटाया था ६ उसने सात्यकी को तीन बाण से भीमसेन को आठबाण से धृष्टद्युम्न को साठिबाणों से विराट को दशबाणों से ७ द्रुपद को तीक्ष्ण पांचबाणों से शिखण्डी को सातबाणों से केकयों को पचीसबाणों से द्रौपदी के पुत्रों को तीन २ बाणों से ८ और

युधिष्ठिर को सत्तरिबाणों से घायल किया उसके पीछे शेष बचेहुए शूरवीरों को बाणों के बड़ेजालों से जो पीड्यमान किया यह भी बड़ा आश्चर्य सा हुआ ९ फिर हँसतेहुए धर्मपुत्र प्रतापवान् राजा युधिष्ठिर ने श्वेत और पीतता युक्त भल्ल से उसके धनुष को लक्ष्य बनाकर काटा १० उसने एक निमिषही में दूसरे धनुष को लेकर दशबाणों से पाण्डवों को और तीन २ बाणों से उन अन्यमनुष्यों को घायलकिया ११ भीमसेन ने उसकी हस्तलाघवता को जानकर तीन २ भल्लों से उसके धनुष ध्वजा और छत्र को शीघ्रता से पृथ्वीपर गिराया १२ हे श्रेष्ठ! उस बलवान् ने दूसरे धनुष को तैयारकरके भीमसेन की ध्वजा धनुष और घोड़ों को गिराया १३ वह धनुष टूटा भीमसेन मृतक घोड़ेवाले उत्तम रथ से कूद कर सात्यकी के रथ पर ऐसे सवार होगया जैसे कि केशरीसिंह पहाड़ की चोटीपर चढ़जाता है १४ इसके पीछे आपके शूरवीर राजासिन्धु के उस श्रद्धा के योग्य अपूर्व कर्म को देखकर बहुत श्रेष्ठ है इस वचन को कहते अत्यन्त प्रसन्नहुए १५ जिस अकेले ने अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डवों को अपने अस्त्रों के तेज से रोका उसके उस कर्म की प्रशंसा सब जीवमात्रों ने करी १६ फिर अभिमन्यु से मारे हुए मार्ग में मरेहुए हाथियों से दिखलाया हुआ पाण्डव का मार्ग राजासिन्धु ने रोका १७ और उपाय करनेवाले वह मत्स्य, पाञ्चाल, केकय और वीर पाण्डव सम्मुखहुए परन्तु सिन्धु के राजा को पराजय नहीं करसके १८ जो जो आप का शत्रु द्रोणाचार्य की सेना के तोड़ने का उपाय करता था उस २ को वरं पानेवाले राजा सिन्धु ने रोका ॥ १९ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, राजासिन्धु से विजयाभिलाषी पाण्डवों के रुकजानेपर आप के शूरवीरों का और शत्रुओं का महाघोर और भयकारी युद्ध हुआ १ फिर सत्यसङ्कल्प कठिनता से सम्मुख होने के योग्य तेजस्वी अभिमन्यु ने प्रवेशकरके सेना को ऐसे व्याकुल किया जैसे कि समुद्र को मगर भयभीत और व्याकुल करता है २ इस प्रकार बाणों की वर्षा से व्याकुल करनेवाले शत्रुओं के विजयी उस अभिमन्यु के सम्मुख वह उत्तम रथी हुए जोकि प्रधान गिनेजाते थे ३ बाणों की वर्षा के उत्पन्न करनेवाले बड़े तेजस्वी उनलोगों का और अभिमन्यु का वह

युद्ध बड़ा भयकारी और कठिन जारीहुआ ४ उन शत्रुओं के रथों से इस प्रकार रुके हुए अभिमन्यु ने वृषसेन के सारथी को मारकर धनुष को काटा ५ और इसी बलवान् ने सीधे चलनेवाले बाणों से उसके घोड़ों को भी अत्यन्त घायल किया फिर वह उन भागनेवाले घोड़ों के द्वारा युद्ध से दूर हटायागया अर्थात् अभिमन्युके उस अन्तर से सारथी रथ को दूरलेगया इसके पीछे रथ के समूह प्रसन्न होकर पुकारे कि बहुत अच्छा बहुत अच्छा ६। ७ फिर विशातप उस सिंह के समान क्रोधी बाणों से शत्रुओं को मथनेवाले सम्मुख से आतेहुए अभिमन्यु के समीप आकर शीघ्रही सम्मुखगया ८ उसने सुनहरी पुङ्खवाले साठि बाणों से अभिमन्यु को ढकदिया और यह वचन बोला कि मेरे जीवते तू इस युद्ध में बचकर जीवता नहीं छूटेगा ९ अभिमन्यु ने उस लोहे के कवचधारी विशातप को दूर गिरनेवाले बाण से हृदयपर घायलकिया तब वह निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा १० हे राजन्! तब मारने के अभिलाषी अत्यन्त क्रोधभरे उत्तम क्षत्रियों ने उस मरेहुए विशातप को देखकर आपके पोते को चारों ओर से घेरलिया ११ वह क्षत्रिय नाना रूपवाले धनुषों को अनेक प्रकार से चलानेवाले थे वह अभिमन्यु का युद्ध शत्रुओं से महाभयकारीहुआ १२ फिर क्रोधयुक्त अभिमन्यु ने उनके बाण, धनुष, शरीर और कुण्डल समेत मालाधारी शिरों को काटा १३ तब खड्ग पट्टिश अंगुलित्राण और फरसों समेत कटीहुई सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत भुजा दिखाई पड़ीं १४ माला, भूषण, वस्त्र और पड़ीहुई बड़ी २ भुजा, कवच, ढाल, हार, मुकुट, छत्र, चामर १५ उपस्कर, अधिष्ठान, ईशादण्ड, कबन्ध, अक्ष, टूटेहुएचक्र, अनेक प्रकार के टूटेहुए जुए, अनुकर्ष, पताका, सारथी, घोड़े, टूटेरथ और मृतक हाथियों से पृथ्वी व्याप्तहुई १६। १७ नाना प्रकार के विजयाभिलाषी देशाधिपति मरेहुए शूरवीर क्षत्रियों से संयुक्त पृथ्वी बड़ीभयानक वर्तमान होगई १८ उस क्रोधयुक्त युद्ध की सब दिशा विदिशाओं में घूमतेहुए अभिमन्यु का रूप दृष्टि से गुप्त होगया १९ इसके कवच भूषण धनुष और बाणों का जो २ अङ्ग सुनहरी था हमने उन सबों में से केवल उसी को देखा २० तब कोई पुरुष भी उसबाणों के द्वारा शूरवीरों को आधीन करनेवाले अभिमन्यु के देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुआ जैसे कि मध्याह्नवर्ती सूर्य को कोई देखने को समर्थ नहीं होता है ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, अर्जुन का पुत्र शूरवीरों की आयुर्दाओं का ऐसे हरनेवाला हुआ जैसे कि समय आनेपर काल सब जीवों के प्राणों को हरलेता है १ तब वह इन्द्र के समान पराक्रमी इन्द्र का पोता बलवान् अभिमन्यु सेनाको व्याकुल करता हुआ दिखाईदिया २ हे राजेन्द्र ! फिर राजाओं के कालरूप अभिमन्यु ने सेना में प्रवेशकरके सत्यश्रवस को ऐसे मारा जैसे कि गर्जताहुआ व्याघ्र मृग को मारता है ३ सत्यश्रवस के मारनेपर शीघ्रता करनेवाले महारथी बड़े शस्त्रोंको लेकर अभिमन्यु के सम्मुखगये ४ ईर्षा करनेवाले उत्तम क्षत्रिय पहिले मैं पहिले मैं इस वचन के कहनेवाले अर्जुन के पुत्र को मारने के अभिलाषी होकर सम्मुख गये ५ अभिमन्यु ने उन चलती और सम्मुख दौड़ती हुई क्षत्रियों की सेना को ऐसे अपने स्वाधीन किया जैसे कि समुद्रके मध्यमें तिमि नाम जलजन्तु छोटी २ मछलियों को पाकर अपने स्वाधीन करता है ६ जो कोई मुख न मोड़नेवाले क्षत्रिय उसके सम्मुखगये वह फिरकर अर्थात् लौटकर ऐसे नहीं आये जैसे कि सिन्धु नदी समुद्र से लौटकर नहीं आती ७ समुद्र में बड़े ग्राह से पकड़े और वायु के वेग से पीड्यमान डूबेहुए जहाज के समान वह सेना कम्पायमानहुई ८ इस के पीछे रुक्मरथ नाम मद्रदेश के राजा के पुत्र ने उस भयातुर सेना को विश्वास कराया और यह वचन बोला ९ हे शूरवीरो ! तुम भय मतकरो मेरे विद्यमान और नियत होनेपर यह कुछ नहीं है मैं इसको निस्सन्देह जीवता हुआ ही प-कडूंगा १० वह पराक्रमी इस प्रकार कहकर बड़े सुन्दर अलंकृत शोभित रथपर सवार अभिमन्यु के सम्मुखगया ११ और अभिमन्यु को तीन बाणों से छाती पर और तीन २ बाणों से दाहिनी और बाईं भुजा घायलकरके बड़े शब्द से गर्जा १२ उस अर्जुन के पुत्र ने उसके धनुष को काटकर दाहिनी बाईं भुजाओं को और सुन्दर नेत्र और भृकुटी रखनेवाले शिर को शीघ्रही पृथ्वीपर गि-राया १३ अभिमन्यु को जीवताहुआ पकड़ने के अभिलाषी शल्य के प्यारे रुक्म-रथ पुत्र को यशस्वी अभिमन्यु के हाथ से मराहुआ देखकर १४ युद्धदुर्मद प्रहार करनेवाले रुक्मरथ के समान अवस्था सुनहरी ध्वजा रखनेवाले १५ महाबली तालवृक्ष के समान वारंवार धनुषों को खैंचते राजकुमारों ने बाणों की वर्षा से अर्जुन

के पुत्र को चारोंओर से रोका १६ पराक्रम और शिक्षा से युक्त तरुण अवस्था वाले अत्यन्त क्रोधयुक्त शूरों से युद्ध में उस अकेले शूर अजेय अभिमन्यु को १७ बाणों के समूहों से ढकाहुआ देखकर दुर्योधन बड़ा प्रसन्नहुआ और उसको यमराज के भवन में गयाहुआ माना १८ उन राजकुमारों ने एकनिमिष में ही अर्जुन के पुत्र को सुनहरी पुङ्खवाले अनेक चिह्नधारी सुन्दर बेतरखनेवाले बाणों के द्वारा दृष्टि से अगोचर करदिया १९ हे श्रेष्ठ! हमने उसके उसरथ को सारथी घोड़े और ध्वजासमेत छिपाहुआ टीड़ियों से व्याप्त के समान देखा २० जैसे कि चाबुकों से पीड्यमान हाथी होता है उसी प्रकार अत्यन्त घायल और पीड्यमान महाक्रोधयुक्त उस अभिमन्यु ने गन्धर्व अस्त्रों समेत बहुत सी मायाओं को प्रकटकिया २१ अर्जुन ने तपस्याओं को करके तुम्बुरु आदिक गन्धर्वों से जो अस्त्रलिये उन्हीं में से एक अस्त्र करके उन शत्रुओं को इसने भी अचेत करदिया २२ हे राजन्! वह युद्ध में शीघ्रही अस्त्रों को दिखलाताहुआ बनेठी के समान एकप्रकार दो प्रकार और अनेकों प्रकारों से दिखाईदिया २३ फिर उस शत्रुसन्तापी ने रथ और अस्त्रों के भ्रमण चक्र की माया से सबको अचेत करके उन राजाओं के शरीरों को सौ २ प्रकार से काटा २४ हे राजन्! युद्ध में तीक्ष्ण धारवाले बाणों से भेजेहुए राजाओं के प्राणों ने परलोक को पाया और मृतकशरीर पृथ्वीपर गिरपड़े २५ अर्जुन के पुत्र ने तीक्ष्ण शरों से उन सब के धनुष, घोड़े, सारथी, ध्वजा और बाजूबन्दों समेत भुजाओं समेत शिरों को काटा २६ जैसे कि पांचवर्ष का लगायाहुआ आँबों का फलवान् बाग काटा जाता है इसी प्रकार अभिमन्यु के हाथ से राजकुमारों का एकसौ मनुष्यों का समूह गिरायागया २७ क्रोधयुक्त सर्पों के समान सुकुमार सुख के योग्य राजकुमारों को अकेले अभिमन्यु के हाथ से मराहुआ देखकर दुर्योधन बड़ा भयभीत हुआ २८ और अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर दुर्योधन रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों के मर्दन करनेवाले उस अभिमन्यु को देखकर शीघ्रही सम्मुख आया २९ एक क्षणभर तक तो उन दोनों का बड़ा कठिन युद्ध हुआ उसके पीछे सैकड़ों बाणों से घायल आपका पुत्र मुखफेर गया ॥ ३० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

———:o:———

छियालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सूत! तू जिस प्रकार एक का बहुतों के साथ कठिन और भयकारी युद्ध को और उसी महात्मा की विजय को जैसे मुझसे कहता है १ अभिमन्यु का पराक्रम श्रद्धा के अयोग्य अद्भुत है फिर क्या उन्हों का पराक्रम अत्यन्त अपूर्व नहीं है जिन्हों का कि रक्षाश्रयधर्म है २ और दुर्योधन के मुख फेरने और राजकुमारों का सैकड़ा मरने पर मेरे शूरवीरों ने अभिमन्यु के विषय में किस कर्म के ज्ञान को पाया ३ सञ्जय बोले कि अत्यन्त शुष्कमुख चलायमान अर्थात् भैचकनेत्र प्रस्वेदों से युक्त रोमाञ्च खड़े भागने में प्रवृत्तचित्त शत्रु की विजय में असाहसी वह आप के शूरवीर ४ मरेहुए पिता, भाई, बेटे, मित्र, नातेदार और बान्धवों को छोड़ २ अपने २ घोड़े हाथी आदि को शीघ्रता से चलातेहुए हटगये ५ उन सबको उस प्रकार से अलग २ हुआ देखकर द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, बृहद्बल, कृपाचार्य, दुर्योधन, कर्ण, कृतवर्मा, शकुनी ६ यह सब अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उस अजेय अभिमन्यु के सम्मुख दौड़े हे राजन्! फिर वह भी आपके पौत्र से मुखों को मोड़गये ७ सुख से पोषण किया हुआ बालकपने में अहङ्कार से निर्भय बाण अस्त्रों का ज्ञाता बड़ा तेजस्वी लक्ष्मण अकेलाही अभिमन्यु के सम्मुख गया ८ और उसका पिता पुत्र को चाहता हुआ उसके पीछे चलनेवाला होकर फिर लौटा और दुर्योधन के पीछे दूसरे महारथी भी लौटे ९ उन्हों ने उसको बाणों से ऐसे सींचा जैसे कि जल की धाराओं से बादल पर्वत को सिंचन करता है फिर उस अकेले ने उनको ऐसे अत्यन्त मर्दनकिया जैसे कि वायु संसारी बादलों को मर्दन करता है १० अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने उस निर्भय प्रियदर्शनीय पिता के सम्मुख वर्तमान शूरवीर ऊंचा धनुष करनेवाले बड़े सुखपूर्वक लालन किये हुए कुबेर के पुत्र की समान आपके पौत्र लक्ष्मण को युद्ध में सम्मुख पाया ११। १२ शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अभिमन्यु ने लक्ष्मण से भिड़कर अत्यन्त तीक्ष्ण धार वाले तीव्र बाणों से छाती और भुजाओं पर घायलकिया १३ हे महाराज! अत्यन्त घायल सर्प के समान क्रोधयुक्त आपका पोता आपके दूसरे पोते से बोला १४ कि लोक का दर्शन अच्छी रीति से करो परलोक को जावोगे मैं

तुमको सब बांधवों के देखतेहुए यमलोक में पहुँचाता हूं १५ शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले महाबाहु अभिमन्यु ने इस प्रकार कहकर काँचली से रहित सर्प के समान भल्ल को हाथ में लिया १६ उसकी भुजा से छूटे हुए उस भल्ल ने उस लक्ष्मण के शिर को जोकि सुन्दर नाक केशान्त और कुण्डलों से शोभित था काटकर गिराया १७ सेना के लोग लक्ष्मण को माराहुआ देखकर हाय २ पुकारे इसके पीछे पुत्र के मरनेसे क्रोधयुक्त क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ दुर्योधन १८ क्षत्रियों को पुकारा कि इसको मारो इसके पीछे द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, बृहद्बल १९ हार्दिक्य का पुत्र कृतवर्मा इन छः रथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिया अर्जुन का पुत्र उनको भी अपने तीक्ष्ण बाणों से मुख के फेरनेवाला करके २० क्रोधयुक्त होकर सिन्धु के राजा की सेनापर दौड़ा कलिङ्ग निषाद और क्राथ के पराक्रमी पुत्र हाथियों की सेना से अलंकृत इन सब ने उस अभिमन्यु के मार्ग को रोका हे राजन्! वह युद्ध भी बड़ा कठिन हुआ २१।२२ इसके पीछे क्राथने बाणोंके समूहों से अभिमन्यु को बहुत अच्छा ढका उसके पीछे द्रोणाचार्य आदिक अन्य सब रथी भी फिर लौटे २३।२४ और परम अस्त्रों को चलातेहुए अभिमन्यु के सम्मुखगये अभिमन्यु ने बाण से उनको हटाकर फिर क्राथ के पुत्र को पीड्यमान किया २५ शीघ्रता करनेवाले अभिमन्यु ने मारने की इच्छा से धनुष बाण और केयूरनाम भूषणों समेत उस की दोनों भुजा और मुकुट समेत शिर को २६ और छत्र, ध्वजा और सारथी समेत रथ को और घोड़ों को गिराया कुलवान् प्रियभाषी वेदज्ञ पराक्रमी कीर्ति और अस्त्र बल से संयुक्त उस वीर के मरनेपर दूसरे बहुधा शूरवीर लोग मुखों को फेरगये॥ २७॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्चत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि इस प्रकार सेना में प्रविष्ट तरुण अवस्थावाले अजेय सुभद्रा के पुत्र नकुल के समान कर्मकरनेवाले कभी युद्धों में पराजय न होनेवाले १ अच्छे पराक्रमी छःवर्ष के अवस्थावाले आजानेयजाति के घोड़ों से संयुक्त और आकाश में चेष्टा करनेवाले के समान अभिमन्यु को किन शूरों ने रोका २ सञ्जय बोले कि पाण्डवनन्दन अभिमन्यु ने सेना में प्रवेशकरके इन आप के

सब शूरवीर राजाओं के मुखों को फेरदिया ३ फिर द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, बृहद्बल, हार्दिक्य का पुत्र कृतवर्मा इन छवों रथियों ने उसको चारोंओर से घेरलिया ४ हे महाराज! फिर आपकी सेना के लोग राजासिन्धु के ऊपर बड़ेभारी बोझ को देखकर युधिष्ठिर के सम्मुख दौड़े ५ और दूसरे महाबली शूरवीर तालवृक्ष के समान बड़े २ धनुषों को खैंचतेहुए बाणरूपी जालों से अभिमन्यु के ऊपर वर्षा करनेलगे ६ शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अभिमन्यु ने युद्ध में बाणों से इन सब बड़े २ धनुषधारी और सब विद्याओं में पूर्ण लोगों को रोका ७ द्रोणाचार्य को पचास बाणों से बृहद्बल को बीस बाणों से कृतवर्मा को अस्सी बाणों से और कृपाचार्य को साठबाणों से घायल किया ८ अर्जुन के पुत्र ने सुनहरी पुङ्खवाले बड़े वेगवान् कानतक खिंचेहुए दशबाणों से अश्वत्थामा को घायल किया ९ और पीतरङ्ग के तीक्ष्ण उत्तम बाणों से शत्रुओं के मध्य में कर्ण को कान के ऊपर घायलकिया १० फिर कृपाचार्य के घोड़ों को और दोनों ओर के रक्षकों समेत सारथी को गिराकर उनकोभी दश बाणों करके छातीपर घायल किया ११ इसके अनन्तर उस बलवान् ने आप के शूरवीर पुत्रों के देखतेहुए कौरवों के कीर्तिबढ़ानेवाले वीर वृन्दारक को मारा १२ अश्वत्थामा ने उस निर्भय के समान उत्तम २ शत्रुओं के पीड़ा देनेवाले अभिमन्यु को क्षुद्रकनाम पचीस बाणों से घायल किया १३ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! फिर उस अभिमन्यु ने आप के पुत्रों के समक्ष में अश्वत्थामा को शीघ्रही तीक्ष्ण बाणों से घायलकिया १४ अश्वत्थामा ने तीक्ष्णधार और उत्तम वेतरखनेवाले साठिबाणों से उसको घायलकरके ऐसे कम्पित नहीं किया जैसे कि मैनाक पर्वत को कम्पित नहीं करसक्ने १५ उस बड़े तेजस्वी बलवान् ने सुनहरी पुङ्ख और सीधे चलनेवाले तिहत्तरि बाणों से अप्रिय करनेवाले अश्वत्थामा को घायल किया १६ फिर पुत्र को चाहनेवाले द्रोणाचार्य ने उसपर सौ बाण गिराये इसी प्रकार पिता के चाहनेवाले अश्वत्थामा ने युद्ध में आठबाण मारे कर्ण ने बाईस भल्लों को कृतवर्माने बीसबाणों को बृहद्बलने पचास बाणों को और शारद्वत कृपाचार्य ने दश बाणों को मारा १७।१८ सब ओर से उनके तीक्ष्ण बाणों से पीड्यमान अभिमन्यु ने उन सब को दश २ बाणों से घायल किया १९ कौशिलदेशियों के राजा ने उसको करणी नाम बाण से हृदय में

घायल किया उसने उसके घोड़े, ध्वजा, धनुष और सारथी को पृथ्वीपर गिराया २० फिर रथ से रहित ढाल तलवार रखनेवाले राजा कौशिल ने अभिमन्यु के शरीर से कुण्डलधारी शिर को काटना चाहा २१ उसने कौशिल देशियों के स्वामी राजपुत्र बृहद्बल को बाणोंसे हृदयपर घायलकिया और हृदय में घायल होकर पृथ्वी में गिरपड़ा २२ अयोग्य और अशुभ वचनों को बोलते महात्मा ने खड्ग धनुषधारी राजाओं के दशहज़ार यूथ को छिन्न भिन्न किया २३ इस रीति से बृहद्बल को मारकर सुभद्रा का पुत्र युद्ध में घूमनेलगा और उसी दशा में बड़े धनुष से आपके शूरवीरों को बाणरूप जालों की वर्षा से रोका ॥ २४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

अड़तालिसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, उस अर्जुन के पुत्र ने कर्णीनाम बाणसे कर्णको फिर घायल किया और अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसने पचासबाण से फिर घायलकिया १ तब कर्णने भी उतनेही बाणों से उसको घायलकिया हे भरतवंशिन्! उन बाणों से संयुक्त सबशरीर के अङ्गों समेत वह अभिमन्यु बहुतही शोभायमान हुआ २ फिर उस क्रोधयुक्त अभिमन्यु ने कर्ण को भी रुधिर की वेदनाओं से युक्त कर दिया ३ और बाणों से जटित और रुधिर से लिप्त वह दोनों महात्मा फूलेहुए किंशुक वृक्ष के समान शोभायमान हुए ४ इसके पीछे अभिमन्यु ने कर्ण के छः मन्त्रियों को जोकि बड़े शूर और उत्तम युद्ध के करनेवाले थे घोड़े, सारथी, रथ और ध्वजा के समेत मारा ५ इसी प्रकार निर्भय अभिमन्युने दश२बाणों से अन्य २ धनुषधारियों को घायल किया वह आश्चर्य सा हुआ ६ इसीप्रकार छः बाणों से राजा मगध के तरुणपुत्र अश्वकेतु को घोड़े और सारथी समेत मारकर गिराया ७ इसके पीछे ध्वजा में हाथी का चिह्न रखनेवाले राजामार्तिकावर्तिक भोजनाम को क्षुरप्र से मथकर बाणों को छोड़ता हुआ गर्जा ८ दुश्शासन के पुत्रने चारबाणों से उसके चारों घोड़ोंको घायल करके एक बाण से सारथी और दशबाणों से अभिमन्यु को घायल किया ९ इसके पीछे अभिमन्यु सातबाणों से दुश्शासन के पुत्रको घायलकरके क्रोध से रक्तनेत्र उच्चस्वर से इस वचन को बोला १० तेरा पिता नपुंसक के समान युद्धको त्यागकरके गया तूभी प्रारब्धसे युद्धकरना जानताहै अब नहीं बचसक्ता है ११ इतना वचन कहकर कारीगरके

साफ किये हुए नाराच को उसपर छोड़ा तब अश्वत्थामा ने उसको तीन बाणों से काटा १२ अभिमन्यु ने उसकी ध्वजा को काटकर तीनबाणों से शल्य को घायल किया शल्य ने नव बाणों से उसको घायल किया १३ अर्थात् निर्भय के समान हृदयपर घायल किया हे राजन्! यह भी आश्चर्य सा हुआ अर्जुन के पुत्र ने उसकी ध्वजा को काट दोनों ओर के रक्षकों को संहारकर १४ उसको छः लोहे के बाणों से घायल किया वह दूसरे रथ में सवार हुआ शत्रुञ्जय, चन्द्रकेतु, मेघवेग, सुवर्चस १५ सूर्यभास इन पांचों को मारकर शकुनी को घायल किया शकुनी भी तीनबाणों से घायलकरके दुर्योधन से बोला १६ हम सब मिलकर इसको मथन करैं क्योंकि यह हम एक एकको मारताहै फिर सूर्यका पुत्र कर्ण युद्ध में द्रोणाचार्य से बोला १७ कि यह पहलेही से हम सब को मथन करता है इस के मारने को शीघ्र हमसे कहो इसके पीछे बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य जी उन सबसे बोले कि १८ इस कुमार का कुछ छिद्रही देखो अब सब दिशाओं में घूमते हुए इसका छोटाही सा छिद्र है १९ इस नरोत्तम पाण्डव के पुत्र के उस छिद्र को शीघ्रता से देखो इसका धनुष मण्डलही रथके मार्गों में दिखाई पड़ता है २० जोकि विशेष नाम बाणों को धनुषपर चढ़ा २ कर शीघ्रता से छोड़नेवाला है फिर यह शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु शायकोंसे मेरे प्राणों को पीड़ित और मोहित करता हुआ मुझको अत्यन्त प्रसन्नकरता है अर्थात् यह शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु मुझ को अत्यन्त प्रसन्न करता है २१।२२ क्रोधयुक्त महारथी इस हस्तलाघव और बड़े तीक्ष्ण बाणों से सब दिशाओं को चलायमान करते हुए भी अभिमन्यु के अन्तर अर्थात् छिद्र को नहीं देखते हैं २३ मैं युद्ध में गाण्डीव धनुषधारी की भी ऐसी मुख्यता को नहीं देखता हूं अर्थात् अर्जुन और अभिमन्युमें कुछ अन्तर नहीं है इसके पीछे अभिमन्युके बाणों से घायल हुआ कर्ण फिर द्रोणाचार्य से बोला २४ नियतहोना योग्यही है इसीहेतु से कि अभिमन्यु से पीडयमान होकर भी मैं युद्ध में नियत हूं इस कुमार के बाण बड़े भयकारी हैं २५ अब अग्नि की समान प्रकाशित भयकारी उसके बाण मेरे हृदय को पीड़ादेते हैं यह सुनकर हँसतेहुए आचार्यजी उस कर्ण से बोले कि २६ इसका कवच अभेद्य है अर्थात् टूट नहीं सक्ता है और युवा पुरुष शीघ्रता से पराक्रम करनेवाला है मैंने इसके

पिता को कवच का धारण करना सिखलाया है २७ यह शत्रु के पुर का विजय करनेवाला अभिमन्यु निश्चय करके उस सबको जानता है इसका धनुष और प्रत्यञ्चा अच्छी रीति से चलायेहुए बाणों से काटना सम्भव है २८ इसी प्रकार लगाम घोड़े पृष्ठरक्षक और सारथी का भी मारना सम्भव है हे बड़े धनुषधारिन्, कर्ण ! तुम जो समर्थ हो तो यहीकरो २९ इसके पीछे उसको मुख फिरवाके प्रहारकरो धनुष का रखनेवाला यह देवता और असुरों से भी विजय करना सम्भव नहीं है ३० जो तुम चाहते हो तो इसको रथ और धनुषसे रहित करो सूर्य के पुत्र कर्ण ने आचार्यजी के उस वचन को सुनकर शीघ्रतासे ३१ उस हस्तलाघव और धनुष खैंचनेवाले के धनुष को प्रस्तक बाणों से काटा भोज ने उसके घोड़ों को मारा और कृपाचार्य ने पृष्ठरक्षक समेत सारथी को मारा ३२ फिर शीघ्रता करनेवाले बाकी छः महारथियों ने उस टूटे धनुष और विरथ को बाणों की वर्षाओं से ढकदिया ३३ उन निर्दय लोगों ने बाणों की वर्षा से अकेले बालक को ढकदिया वह टूटे धनुष रथ से विहीन ढाल तलवार का रखनेवाला श्रीमान् अभिमन्यु अपने धर्म को पालनकर्ता आकाश से गिरा और कौशिक आदिक मार्गों से और हस्तलाघवतापूर्वक पराक्रम से ३४ । ३५ ऐसे अत्यन्त घूमनेलगा जैसे कि पक्षियों का राजा गरुड़ भ्रमण करताहै आकाश में खड्ग हाथ में लिये प्रत्येक को ऐसा विदित हुआ कि यह मेरेही ऊपर गिरता है इस हेतु से ऊपर को दृष्टि रखनेवाले ३६ युद्ध में छिद्र देखनेवाले शूरवीरों ने उस बड़े धनुषधारीको पीड्यमान किया द्रोणाचार्यने उसकी मुष्टिका समेत मणिजटित खड्ग को काटा ३७ अर्थात् शत्रु के विजय करनेवाले और शीघ्रता करनेवाले बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य ने उसकी खड्गसंयुक्त मुष्टिका को क्षुरप्र से काटा कर्ण ने उसकी उत्तम ढाल को तीक्ष्णधारवाले बाणों से तोड़ा तलवार और ढाल के टूटनेपर बाणों से भराहुआ शरीर वह अभिमन्यु फिर अन्तरिक्ष से पृथ्वीपर नियतहुआ और क्रोध से भराहुआ रथ के चक्र को उठाकर द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा ३८।३९ अत्यन्त उज्ज्वल चक्र को हाथ में रखनेवाला भ्रमणसे उत्पन्न उज्ज्वल धूलिसे शोभायमान शरीरवाला वह अभिमन्यु प्रकाशमानहुआ और वासुदेवजी के समान कर्मको करता युद्ध में एक क्षणभर को तो रुद्ररूप हुआ ४० गिरेहुए रुधिर से रँगेहुए सब वस्त्र और भृकुटीपुटों से

अत्यन्त व्याकुल बड़े सिंहनादोंका करनेवाला समर्थ अतुल पराक्रमी अभिमन्यु युद्धमें उत्तम राजाओंके मध्यमें वर्तमान होकर अत्यन्त शोभायमान हुआ॥४१॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, विष्णु की भगिनी की प्रसन्नता का उत्पन्न करनेवाला विष्णुजी केही शस्त्रों से अलंकृत दूसरे श्रीकृष्ण के समान अतिरथी अभिमन्यु युद्ध में शोभायमान हुआ १ उस वायु से गिरेहुए के शान्त उत्तम शस्त्रों के उठानेवाले देवताओं से भी दुःख से देखने के योग्य शरीर को देखकर २ व्याकुल चित्तवाले राजाओं ने उस चक्र को अनेक प्रकार से काटा इसके पीछे उस महारथी अभिमन्यु ने बड़ी भारी गदा को लिया ३ उन शत्रुओं से धनुष, रथ, खड्ग और चक्र से रहित कियेहुए गदा हाथ में लिये अभिमन्यु ने अश्वत्थामा को पीड्यमान किया ४ वह नरोत्तम अश्वत्थामाजी वज्र के समान प्रकाशित उठायेहुए गदा को देखकर रथ के बैठने के स्थान से तीन चरण हटगये ५ अभिमन्यु गदा से उसके घोड़ों को मारकर उसके पृष्ठरक्षक समेत सारथी को मारताहुआ बाणों से भराहुआ घायल शरीरवाला दिखाई पड़ा ६ उसके पीछे सौबल के पुत्र कालिकेय को मारा और उसके अनुगामी सतत्तरि गान्धारदेशियों को भी मारा ७ फिर दशरथी विशातप लोगों को मारा और केकयों के सातरथ और दश हाथियों को मारकर ८ गदा से दुश्शासन के पुत्र के रथ को घोड़ोंसमेत मारा हे श्रेष्ठ! इसके पीछे क्रोधयुक्त दुश्शासन का पुत्र गदा को उठाकर ९ अभिमन्यु के सम्मुख जाकर तिष्ठ २ इस वचन को बोला वह गदाधारी वीर परस्पर में मारने के अभिलाषी दोनों शत्रु ऐसे प्रहारकर्ताहुए जैसे कि पूर्वसमय में त्र्यम्बक और अन्धक युद्ध करनेवाले हुए थे वह दोनों पुरुषोत्तम गदाओं से परस्पर में प्रहार करके पृथ्वीपर गिरपड़े १०। ११ शत्रुओं के तपानेवाले वह दोनों युद्ध के बीच में पड़ेहुए इन्द्रध्वजा के समान दिखाई दिये इसके पीछे कौरवों की कीर्ति के बढ़ानेवाले दुश्शासन के पुत्र ने उठकर १२ उठतेहुए अभिमन्यु को गदा से मस्तकपर घायलकिया गदा के बड़े वेग और परिश्रम से अचेत १३ शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु निश्चेष्ट होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजन्! इस प्रकार वह अकेलाही बहुत से शूरवीरों

से युद्ध में मारागया १४ जैसे कि हाथी नलनी को छिन्न भिन्न करते हैं उसी प्रकार सब सेना को व्याकुल करके वह माराहुआ वीर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि व्याधाओं करके माराहुआ जङ्गली हाथी होता है १५ उस प्रकार गिरे हुए उस शूरवीर को आपके वीरों ने चारों ओर से ऐसे घेरलिया जैसे कि शिशिरऋतु में अर्थात् माघ फाल्गुन के अन्त में वन को भस्म करके शान्त हुई अग्नि को घेरलेते हैं १६ वृक्षकी शाखाओं को मर्दन करके लौटेहुए वायु के समान भरतवंशियों की सेना को तपाकर अस्तहुए सूर्य के समान अथवा ग्रसे हुए चन्द्रमा के सदृश सूखे समुद्र के तुल्य पूर्णचन्द्रमा के समान मुखवाले बालों से संयुक्तनेत्र १७। १८ उस अभिमन्यु को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर वह आपके महारथी बड़े आनन्द में भरेहुए सिंह के समान वारंवार गर्जे १९ हे राजन्! आपके पुत्रों को बड़ा आनन्द हुआ और दूसरे शत्रुओं के नेत्रों से अश्रुपात गिरे २० हे राजन्! आकाश से गिरेहुए चन्द्रमा के समान पड़ेहुए वीर अभिमन्यु को देखकर पृथ्वी और आकाश के मध्य में सब जीव पुकारे २१ कि द्रोण कर्ण आदिक छः रथियों के साथ धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों से मारा हुआ यह अकेला अभिमन्यु सोता है हमने इसके मारने में धर्म नहीं माना किन्तु इन सबों ने इसको अधर्म से मारा है २२ इस वीर के मारने पर पृथ्वी ऐसी अत्यन्त शोभायमान हुई जिस प्रकार नक्षत्रमण्डल का रखनेवाला आकाश सूर्य और चन्द्रमा से शोभायमान होता है २३ सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से पूर्ण अत्यन्त रुधिर से भरेहुए और शूरवीरों के शोभादेनेवाले कुण्डलधारी शिरों से पृथ्वी शोभायमान हुई २४ विचित्र प्रस्तों में और पताकाओं से संयुक्त चामर झूलें और खण्डित उत्तम चमर २५ घोड़े मनुष्य और हाथियों को अच्छे प्रकाशित भूषणों से और काँचली से निकलेहुए सर्पों के समान विषसे बुझाये हुए तीक्ष्णधार खड्ग कटेहुए नाना प्रकारके धनुष, शक्ति, दुधारे, खड्ग, प्रास, कम्पन और अन्य२ प्रकारके नानाशस्त्रों से संयुक्तहोकर पृथ्वी शोभायमानहुई २६।२७ अभिमन्यु से गिरायेहुए श्वासोंको लेते रुधिरसे भरेहुए सवारों से रहित निर्जीव घोड़ों से भी पृथ्वी दुर्गम्य होगई २८ बहुमूल्य अंकुश, कवच, शस्त्र, ध्वजा और विशिखनाम बाणों से मथेहुए पर्वताकार हाथियों से २९ घोड़े सारथियों समेत पृथ्वी पर गिरेहुए शूरवीरों से व ह्रदों के समान क्षुभित्त मरेहुए उत्तम हाथियों

से ३० नाना प्रकार के शस्त्रों से अलंकृत मरे पदातियों के समूहों से पृथ्वी भयभीतों के भयों की उत्पन्न करनेवाली भयानकरूप की होगई ३१ चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान उस अभिमन्यु को देखकर आपके शूरवीरों को बड़ा आनन्द और पाण्डवोंको बड़ा खेद हुआ ३२ हे राजन्! उस बालक और तरुणता न पानेवाले अभिमन्यु के मरने पर सब सेना धर्मराज के देखते हुए भागी ३३ अजातशत्रु युधिष्ठिर उस अभिमन्यु के गिरानेपर सेना को छिन्न भिन्न देखकर उन वीरों से यह वचन बोले ३४ कि यह शूर स्वर्ग को गया जोकि मुख फेरकर नहीं मारागया नियत होजाओ भय मत करो हम युद्ध में शत्रुओं को विजय करेंगे ३५ इस प्रकार शोकयुक्तों से वार्तालाप करते बड़े तेजस्वी और प्रकाशमान शूरवीरों में श्रेष्ठ धर्मराज ने दुःख को सहा ३६ वह अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु पहले युद्धमें सर्प के विष के रूप शत्रुहुए राजकुमारों को मारकर पीछे से युद्ध में सम्मुख गया ३७ श्रीकृष्ण और अर्जुन के समान अभिमन्यु दश हज़ार शूरवीर और महारथी कौशिली को मारकर निश्चय इन्द्रलोक को गया ३८ वह पवित्रकर्मी हज़ारों रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों को मारकर युद्ध से तृप्त न होनेवाला शोचने के योग्य नहीं है उसने पवित्र कर्मों से विजय किये हुए उन उत्तमलोकों को पाया जोकि पवित्रकर्मी जीवों के लोक हैं ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, फिर हम उन्हीं के उत्तम रथी को मारकर उनके बाणों से पीड्यमान रुधिर भरेहुए शरीरों से सायंकाल के समय अपने डेरोंको गये १ हे राजन्! हम और दूसरे लोग धैर्य से युद्धभूमि को देखते ग्लानि को प्राप्तहोकर महाव्याकुलतापूर्वक हटगये २ इसके पीछे दिवस के अन्त में शृगालों के शब्दों समेत अशुभरूप संध्या वर्तमान हुई अस्ताचल पर्वत को पाकर कमल और आपीड़ के समान सूर्य के वर्तमान होनेपर ३ श्रेष्ठ खड्ग शक्ति कवच ढाल और भूषणों के प्रकाशों को आकर्षण करते स्वर्ग और पृथ्वी को एक सा करने सूर्य ने अपने प्यारे शरीररूप अग्नि को प्राप्तकिया ४ बड़े बादलों के समूह के समान वज्र से गिराये हुए पर्वत के शिखर के तुल्य वैजयन्तीमाला अंकुश कवच और हाथीवानों समेत गिराये हुए अनेक हाथियों से युक्त पृथ्वी बड़ी दुर्गम्य

हुई ५ जिनके स्वामी मारेगये वह सब सामान चूर्णहुई घोड़े और सारथी मारे गये पताका और ध्वजा टूटीं उन विध्वंस कियेहुए रथों से पृथ्वी ऐसे शोभित होगई ६ हे राजन् ! जैसे कि शत्रुओं से नाश कियेहुए पुरों से शोभित होती है सवारों के साथ मरेहुए रथ और घोड़ों के समूहों से और पृथक् २ प्रकार के टूटेहुए सामान और भूषणों से और निकलीहुई जिह्वा, दाँत, नेत्र और आँतों से पृथ्वी भयानक और अशुभरूप देखने में आई ७ जिनके कवच भूषण वस्त्र और शस्त्र टूटे और हाथी घोड़े रथ और आगे पीछे के मनुष्यों का नाश हुआ वह बहुमूल्य शय्या और उपारिधान समेत परिधानों के योग्य मरेहुए वीर अनाथों के समान पृथ्वी पर सोते हैं ८ युद्ध में कुत्ते, शृगाल, काक, बक, गरुड़, भेड़िये, तरक्षु और रुधिर पीनेवाले पक्षी और महाभयानक राक्षस और पिशाचों के समूह अत्यन्त प्रसन्न हुए ९ खाल को फाड़कर बसाओं के रुधिर को पीते और बसामांस को खाते बहुत से मृतकों को खैंचते बसा को काट २ कर हँसते और गाते हैं १० शरीरों के समूहों की बहानेवाली रुधिररूप जल रथरूप नौका हाथीरूपी पर्वतों से दुर्गम्य मनुष्यों के शिररूप पाषाण मांसरूप कीच और नाना प्रकार के टूटे अस्त्रों की माला रखनेवाली ११ भयकारी वैतरणी के समान दुर्गम उत्तम शूरवीरों से उत्पन्न कीहुई नदी युद्धभूमि में जारीहुई जोकि अत्यन्त भय को उत्पन्न करनेवाली और मृतक जीवों की बहानेवाली थी १२ जिस नदीमें भयानकरूप पिशाचों के समूह खाते पीते और शब्दों को करते हैं और जीवों के नाश करनेवाले समान भोजनवाले अत्यन्त प्रसन्न कुत्ते शृगाल और पक्षी भी १३ जिसमें वर्तमान थे फिर सायङ्काल के समय धैर्य से देखते हुए मनुष्यों ने उस भयानक दर्शन यमलोक की वृद्धि करनेवाले उठे हुए और नृत्य करते हुए धड़ों से व्याकुल युद्धभूमि को त्याग किया १४ तब मनुष्यों ने बड़े लोगों के योग्य और टूटेहुए भूषणों से रहित इन्द्र के समान बड़ेपराक्रमी गिराये अभिमन्यु को ऐसे युद्ध में देखा जैसे कि हव्य से रहित अग्नि को अग्निहोत्रवाली शाला में देखते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, उस बड़े पराक्रमी और महारथी अभिमन्यु के मरने पर रथ

और कवच से रहित धनुष को त्यागनेवाले सब शूरवीर १ अभिमन्यु में प्रवृत्त चित्त उसी युद्ध को ध्यान करतेहुए धर्मराज युधिष्ठिर को घेर करके समीप बैठ गये २ इसके पीछे अपने भतीजे महारथी अभिमन्यु के मरनेपर बड़े शोकग्रस्त होकर राजा युधिष्ठिर ने विलाप किया ३ यह अभिमन्यु मेरे प्रिय करने की इच्छा से द्रोणाचार्य की महाअजेय सेना को पराजय करके व्यूह में ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि बैलों के मध्य में केसरीसिंह प्रवेश करजाता है ४ बड़े धनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद शूरवीर जिसकी सेना के सम्मुख गयेहुए पराजय होकर लौटे ५ जिसने युद्ध में हमारे बड़े शत्रु सम्मुख आयेहुए दुश्शासन को शीघ्रही बाणों से मुख फेरनेवाला करके अचेतकिया ६ उस अर्जुन के पुत्र ने कठिनता से वृद्धि के योग्य द्रोणाचार्य की सेनारूपी समुद्र को तरकर दुश्शासन के पुत्र को पाकर सूर्य के पुत्र यमराज के लोक को पाया ७ सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु के मरनेपर पाण्डव अर्जुन को अथवा प्यारे पुत्र को न देखनेवाली महाभागा सुभद्रा को कैसे देखूंगा ८ और हम उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन से प्रयोजन से रहित युक्ति के विना इस अप्रिय वचन को कैसे कहेंगे ९ प्रिय चाहनेवाले विजयाभिलाषी मैंनेही सुभद्रा केशवजी और अर्जुन का भी यह महाअप्रिय किया १० अर्थी दोषों को नहीं जानता है क्योंकि वह लोभ और मोहमें फँसाहुआ होता है मुझ शहद के चाहनेवाले ने इस प्रकार की भावी को नहीं देखा ११ जो बालक भोजन सवारी शयन और भूषणों में आगे करने के योग्य था उसको मैंने युद्ध के सम्मुख किया १२ युद्ध में अकुशल युवा बालक उत्तम घोड़े के सदृश किस प्रकार से परस्पर के मर्दन और कठिन स्थानों पर कल्याण के योग्य है १३ दुःख की बात है कि अब क्रोध से ज्वलित अर्जुन के दुःखी नेत्रों से हमलोग भी भस्म होकर इस पृथ्वी पर सोवेंगे १४ जोकि लोभ से रहित, ज्ञानी, लज्जावान्, क्षमावान्, रूपवान्, महाबली, तेजस्वी, मान का करनेवाला, वीर, प्रिय और सत्य पराक्रमी है १५ जिस बड़े कर्मी के कर्मों को देवतालोग भी बड़ा और अच्छा कहते हैं और जिस पराक्रमी ने निवातकवच और पराक्रमी कालिकेय नाम असुरों को मारा १६ और जिसने कि नेत्रों के एक पलक मारने से महेन्द्र के शत्रु हिरण्यपुर के वासी पौलोमों को उनके सब समूहों समेत मारा १७ जो समर्थ कि निर्भयता चाहनेवाले शत्रुओं को भी

निर्भयता देता है उसका पराक्रमी पुत्र हमलोगों से रक्षित नहीं होसका १८ फिर उस महाबली से धृतराष्ट्र के पुत्रों को बड़ाभय प्राप्तहुआ पुत्र के मारडालने से क्रोधयुक्त अर्जुन कौरवों को भस्मकरेगा १९ प्रकट है कि नीचलोगों को सहायक रखनेवाला अपने पक्ष का नाशक नीच दुर्योधन देखकर शोच करताहुआ अपने जीवन को त्याग करेगा २० इस अतुल पराक्रमी महेन्द्र के पौत्र अभिमन्यु को गिराहुआ देखकर विजय का होना भी मेरी प्रसन्नता का करनेवाला नहीं है और यह राज्य व देवतारूप होना और देवताओं के साथ सालोक्यता का होना भी मेरी प्रसन्नता का देनेवाला नहीं है॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे कृष्ण द्वैपायन महर्षिव्यासजी वहां इस विलाप को करते कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर के पास आये १ भतीजे के मरने से शोकयुक्त युधिष्ठिर समीप आकर बैठेहुए ऋषि को न्याय के अनुसार पूजन करके बोले २ कि युद्ध में लड़ताहुआ अभिमन्यु बड़े धनुषधारी अधर्मवाले अनेक महारथियों से घेरकर मारागया ३ वह बालक वृद्धों की सी बुद्धि रखनेवाला शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला सुभद्रा का पुत्र अधिकतर युद्ध में बिना युक्ति और विचार के लड़नेवाला हुआ ४ उससे मैंनेही कहा था कि युद्ध में हमारे द्वार को उत्पन्न कर सेना के मध्य में उसके पहुँचनेपर हमलोग राजा सिन्धु से रोकेगये ५ प्रकट है कि युद्ध की जीविका करनेवालों को सत्य २ युद्ध करना चाहिये यह इस प्रकार का युद्ध विपरीत है जिसको कि शत्रुलोगों ने किया ६ इस हेतु से मैं अत्यन्त दुःखी और शोक के अश्रुपातों से महाव्याकुल हूं और वारंवार चिन्ता करताहुआ शान्ति को नहीं पाता हूं ७ सञ्जय बोले कि भगवान् व्यास जी इस प्रकार विलाप करते शोक से उद्विग्नचित्त होकर युधिष्ठिर से यह वचन बोले ८ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, बड़े ज्ञानिन्, सर्वशास्त्रज्ञ, पण्डित, युधिष्ठिर! तेरे समान के क्षत्रिय दुःखों में मोह को नहीं पाते हैं ९ निश्चय करके यह शूरवीर पुरुषोत्तम वृद्धों के समान कर्म को करके युद्ध में असंख्य शत्रुओं को मारकर स्वर्ग को गया १० हे भरतवंशिन्, युधिष्ठिर! निश्चय करके शुभाशुभकर्म उल्लङ्घन के योग्य नहीं है क्योंकि वही कर्म मृत्युरूप होकर देवता दानव और गन्धर्वों को

भी मारता है ११ युधिष्ठिर बोले कि निश्चय करके यह महाबली राजालोग सेना के मध्य में मरे और मृतकनाम होकर पृथ्वीपर सोते हैं १२ इसी प्रकार जो दूसरे दशहज़ार हाथियों के समान पराक्रमी और वायु के वेग के समान बलवाले हैं वे भी वारंवार समान रूपवाले मनुष्यों के हाथ से युद्धमें मारेगये १३ मैं युद्ध में इन जीवों के मारनेवाले को कहीं नहीं देखता हूं क्योंकि वे सब पराक्रम से संयुक्त और तपस्या के बल से भी युक्त हैं १४ सदैव जिनके चित्त में विजय करने की अभिलाषा नियत रहती है वह बड़े २ पूर्ण बुद्धिमान् मृतक होकर निर्जीव सोते हैं १५ इस अर्थ का वाची शब्द वर्तमान होजाता है कि ये मरगये इसहेतु से पुरुष को दूसरा कौन मारता है यह भयकारी पराक्रम करने वाले राजालोग बहुधा मरगये १६ अर्थात् अस्वतन्त्र प्रसन्नतारहित निश्चेष्ट होकर वे सब शूर शत्रु के आधीनहुए और बहुत से क्रोधयुक्त राजकुमार वैश्वानर अग्नि के मुख में गये १७ अब मुझ को इस स्थानपर यह सन्देह उत्पन्नहुआ है कि मृतक यह नाम कैसे और कहां से है और मृत्यु किसकी होती है और मृत्यु कहां से है और किस प्रकार करके संसार को मारती है हे देवता के समान, पितामह ! जिस प्रकार से वह सब संसार को मारती है उसको आप मुझ से कहिये १८ सञ्जय बोले कि भगवान्ऋषि इस कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर के इस बातके पूछनेपर युधिष्ठिर से यह विश्वास करानेवाला वचन बोले १९ हे राजन् ! इस स्थानपर राजा अकम्पन के उस प्राचीन इतिहास को कहता हूं जोकि पूर्व समय में नारदजी ने कहा है २० हे राजन् ! उस राजा ने भी लोक में असह्यता के योग्य बड़ेभारी पुत्र शोक को पाया है मैं मृत्यु की उस प्रथम उत्पत्ति को कहता हूं २१ इसके सुनने से तू पुत्र के स्नेहबन्धन और शोक से निवृत्त होगा २२ उसको चित्त लगाकर सुनो जोकि सब पापों के ओघों का नाश करनेवाला धन आयु की पूर्णता का देनेवाला शोक का शान्त करनेवाला और नीरोग्यता का बढ़ानेवाला है २३ पवित्रात्मा शत्रुओं के समूहों का मारनेवाला और मङ्गलों का भी मङ्गल है जैसे कि वेद का पढ़ना है उसी प्रकार यह उपाख्यान भी है २४ हे महाराज ! यह आख्यान पुत्र, धन, आयु और राज्य के चाहने वाले उत्तम राजाओं को सदैव प्रातःकाल के समय सुनने के योग्य है २५ हे तात ! पूर्व समय में सतयुग के मध्य में राजा अकम्पन हुआ वह युद्धभूमि में

दैवयोग से शत्रु के आधीनहुआ २६ उसका पुत्र हरिनाम था जोकि बल में नारायण के समान श्रीमान् अस्त्रज्ञ शास्त्र रखनेवाली बुद्धि का स्वामी पराक्रमी युद्ध में इन्द्र के समान था २७ वह युद्धभूमि में शत्रुओं से बहुत घिरा हुआ शूरवीर और हाथियों पर हज़ारों बाणों को चलाता २८ युद्ध में शत्रुसन्तापी कठिन कर्म को करके सेना के मध्य शत्रुओं के हाथ से मारागया २९ शोक से युक्त उस राजाने उसके प्रेतकर्मोंको करके अहर्निश शोचग्रस्त होकर कभी सुख को नहीं पाया ३० इसके पीछे देवर्षि नारदजी पुत्र के दुःख से जनित इसके शोक को जानकर उसके सम्मुख आये ३१ तब उस महाभाग राजा ने देवर्षियों में श्रेष्ठ नारदजी को देखकर न्याय के अनुसार पूजन करके सब वृत्तान्त कहा ३२ राजा ने जैसा कि वृत्तान्त युद्ध में पराजय और पुत्र के मरने का था सब ज्यों का त्यों वर्णन किया ३३ बड़ा पराक्रमी इन्द्र और विष्णु के समान तेजस्वी बड़ा बली मेरा पुत्र युद्ध में पराक्रम करके बहुत से शत्रुओं के हाथ से मारागया ३४ हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, समर्थ, ऋषे! यह मृत्यु क्या है और किस बल पराक्रम और वीरता की रखनेवाली है इसको मैं ब्यौरे समेत सुनना चाहता हूं ३५ वरदाता समर्थ ऋषियों में श्रेष्ठ नारदजी ने उसके उस वचन को सुनकर पुत्र के शोक का दूर करनेवाला यह बड़ा आख्यान वर्णन किया ३६ अर्थात् नारदजी ने कहा कि हे महाबाहो, राजन्, अकम्पन! इस बड़े विस्तारवाले आख्यान को सुनो कि वह जैसे हुआ और मैंने सुना ३७ जब सबके प्रथम प्रपितामह ब्रह्माजी ने सृष्टि को उत्पन्न किया फिर उसी बड़े तेजस्वी प्रभु ने इस संसार को मरणधर्मा देखकर ३८ उसके नाश करने की चिन्ता करी हे राजन्! चिन्ता करतेहुए ब्रह्माजी ने इस संसार के नाश को नहीं जाना ३९ फिर उनके क्रोधद्वारा आकाश से अर्थात् उनके कर्णादि विवर से अग्नि उत्पन्नहुई अन्तर्दिशों समेत सबदिशों के भस्म करने के अभिलाषी उस अग्नि से सब दिशा व्याप्तहुईं ४० उसके पीछे प्रभु भगवान् अग्नि ने स्वर्ग पृथ्वी और ज्वाला की मालाओं से व्याकुल सब स्थावर जङ्गम जड़ चैतन्य संसार को भस्म करदिया ४१ जब सब जड़ चैतन्य जीव नाशहुए अर्थात् पराक्रमी अग्नि ने क्रोध के बड़े वेग से भय को उत्पन्न करके सबको भस्म किया ४२ इसके पीछे जटाधारी निशाचरों के स्वामी रुद्र हर शिवजी उस देवता परमेष्ठी ब्रह्माजी

की शरण में गये ४३ सृष्टि के प्रियकरने की इच्छासे उन शिवजीके परम देवता महामुनि ब्रह्माजी ज्वलित अग्नि के समान वचन बोले ४४ हे मनोरथों के योग्य! मैं तुम्हारे किस मनोरथ को करूं हे पुत्र! तू इच्छा से उत्पन्न हुआहै इससे तेरी सब इच्छाओं को पूर्ण करूंगा हे रुद्र! जो तुम्हारी इच्छाहोय सो कहो॥ ४५॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५२॥

तिरपनवां अध्याय॥

रुद्रजी बोले कि, हे समर्थ! तुमने संसार की उत्पत्ति के निमित्त उपाय किया और भिन्न २ प्रकार के जीवसमूह तुमसे उत्पन्न होकर पोषण पानेवाले हुए १ वह सब सृष्टि अब यहां आपके क्रोधसे फिर भस्मीभूत होते हैं उनको देखकर मुझको दयाआई है सो हे प्रभो, भगवन्! प्रसन्न हो २ ब्रह्माजी बोले कि मारने में मेरी इच्छा नहीं है यह ऐसाही होय मुझ को पृथ्वी के प्रियकरने की इच्छाथी इस हेतु से मुझ में क्रोध होगया ३ हे महादेवजी! इस संसार के भार से पीड़ित और घायल पतिव्रता देवी पृथ्वी में संसार के नाश के निमित्त वारंवार मुझको प्रेरणा करी ४ तब उसके पीछे मैंने उस रीति के असंख्य संसार के नाश को नहीं पाया इस कारण मुझमें क्रोधआया ५ रुद्रजी बोले कि हे पृथ्वी के स्वामी! संसार के नाश के लिये क्रोध मत करो प्रसन्न हूजिये और सब जड़ चैतन्य संसार को नाश मत करो ६ हे भगवन्! आपकी कृपा से यह तीन प्रकार का जगत् अर्थात् जो प्रकट नहीं हुआ और जो भूतकाल में हुआ और जो अब वर्तमान है वह सब प्रकट होय ७ हे भगवन्! क्रोध से ज्वलितरूप आपने अपने क्रोधरूप अग्नि को उत्पन्न किया ८ वह पर्वत के शिखर नदी और रत्नों को भस्म करता है पल्वलनाम तड़ाग और सब वनों समेत स्थावर जङ्गम संसार का नाशकरता है ९ हे भगवन्! आप प्रसन्न हूजिये आप में क्रोध न होय यह मेरा वर है हे देव! आपके सब सृष्टि के जीव किसप्रकार से नाश को पाते हैं १० इस हेतु यह तेज लौटजाय और आपमें ही लय होजाय हे देव! सृष्टि के उपकार की इच्छा से उसको आप अच्छी रीतिसे विचारकरो ११ जैसी रीति से ये सब जीव प्रकट होयँ वही रीति आपको करना योग्य है यहां अपने बालबच्चों समेत सब सृष्टि के जीव नाश न होयँ १२ हे संसार के स्वामी! मैं तुम्हारी ओर से लोकों के मध्य में संसार की वृद्धि के लिये प्रवृत्त कियागया

हूं हे जगत्पते ! यह स्थावर जङ्गमरूप जगत् नाश को न पावे १३ इस हेतु से मैं कृपालु देवता से प्रार्थना करता हूं नारदजी बोले कि देवता ने उस वचन को सुनकर प्रजाओं के हित की इच्छा से तेज को फिर अन्तरात्मा में धारण किया १४ इसके पीछे लोक के प्रतिष्ठित प्रभु भगवान् ब्रह्माजी ने अग्नि को अपने में लयकरके संसार की उत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाले कर्म को और मोक्ष सम्बन्धी कर्मों को भी वर्णन किया १५ इस प्रकार से क्रोध से उत्पन्न अग्नि को अपने में लयकरते उस महात्मा की सब इन्द्रियों से एक ऐसी स्त्री प्रकटहुई १६ जोकि कृष्ण रक्त और पिङ्गल वर्ण और रक्तजिह्वा और नेत्रों से युक्त निर्मल कुण्डलों समेत पवित्र आभूषणों की धारण करनेवाली थी १७ इस प्रकार वह इन इन्द्रियों से निकलकर मन्द मुसकान करतीहुई विश्व के ईश्वर दोनों देवताओंको देखकर दक्षिण दिशामें नियतहुई १८ हे राजन्! तब संसारके उत्पत्ति प्रलय के कर्ता देवता ब्रह्माजी उसको बुलाकर बोले कि हे मृत्यु ! इन सृष्टियों का नाशकर १६ तू संसारके नाश से सम्बन्ध रखनेवाली बुद्धि के कारण मेरे क्रोध से प्रकट हुई है इस हेतु से तू इस सब जड़ चैतन्य को नाशकर २० तू मेरी आज्ञा से इस कर्म को कर सब प्रकार कल्याण को पावेगी फिर उनके इस प्रकार के वचनों को सुनकर उस कमललोचनी अबला मृत्यु ने २१ बड़ा ध्यान किया और बड़े स्वरों से रोनेलगी पितामह ने उसके अश्रुपातों को हाथों में लिया २२ तब सब जीवों की वृद्धि के लिये उसको भी विश्वास कराया ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, वह लता के समान एकही आश्रय रखनेवाली मृत्युरूप अबला दुःख को आत्मा में लय करके हाथ जोड़कर ब्रह्माजी से बोली १ कि हे वक्ताओं में श्रेष्ठ ! विचारकरने का स्थान है कि तुम से इस प्रकार की उत्पन्न कीहुई मैं स्त्री जानबूझकर किसरीति से निर्दय और अप्रिय कर्म को करूं २ मैं अधर्म से डरती हूं हे भगवन्, प्रभो ! प्रसन्न हूजिये हे देव ! प्रियपुत्र समान वय, भाई, माता, पिता और भर्ताओं की मुझ मारनेवाली को ३ मृतकों के पास बैठी हुई स्त्रियां खोटे वचन कहकर २ शाप देंगी मैं उनसे डरती हूं निश्चयकरके दुःखी और रोतेहुए जीवों के जो अश्रुपातों के बुन्द गिरते हैं ४ हे भगवन् ! मैं उनसे

भयभीत होकर आपकी शरण में आई हूं हे देवताओं में श्रेष्ठ, देव ! मैं यमराज के भवन को नहीं जाऊं ५ हे संसार के पितामह ! मस्तक अञ्जली और शरीर के द्वार बड़ी नम्रतापूर्वक मैं आपसे इस अभीष्ट को चाहती हूं ६ हे संसार के ईश्वर ! मैं आपकी कृपा से तप करना चाहती हूं हे भगवन्, प्रभो, देव ! तुम यह वर मुझको दो ७ तुम्हारी आज्ञानुसार मैं धेनुकनाम उत्तम आश्रम को जाऊंगी आपके पूजनमें बड़ी प्रीति करनेवाली मैं कठिन तपस्या को करूंगी ८ हे देवताओं के ईश्वर ! मैं विलाप करतीहुई जीवों के प्यारे प्राणों के हरने में समर्थ नहीं हूं ९ मुझको अधर्मसे रक्षाकरो ब्रह्माजी बोले कि हे मृत्यु ! तू संसार के नाशही के हेतु से उत्पन्न कीगई है तुम सब सृष्टि को जाकर मारो और तू किसी बात का शोच मतकर १० यह मेरी इच्छा है ऐसेही होगा इसमें किसी प्रकार विपरीत न होगा तू लोक में निन्दित हो और मेरे वचन को कर ११ नारदजी बोले कि इस प्रकार के ब्रह्माजी से वचनों को सुनकर वह स्त्री भगवान् की ओर हाथ जोड़कर प्रसन्नहुई और संसार के उपकार की इच्छा से संसार के नाश में बुद्धि को नहीं प्रवृत्त किया १२ तब प्रजाओं के ईश्वरों के भी ईश्वर ब्रह्माजी मौनहुए आपही शीघ्र प्रसन्न हुए १३ वह देवदेव ब्रह्माजी सब लोकों को देखकर मन्द मुसकान करनेवाले हुए उन क्रोधरहित ब्रह्माजी के देखने से वह लोग प्रथम के समान प्रकटहुए १४ उस अजेय भगवान् को क्रोध से रहित होजाने पर वह कन्या भी उस बुद्धिमान् के सम्मुख से चलीगई १५ हे राजेन्द्र ! तब वह मृत्यु सृष्टि के नाश को स्वीकार न करके वहां से शीघ्रही चलकर धेनुकाश्रम में गई १६ उसने वहां जाकर बड़े कठिन और उत्तम व्रत को किया तब सृष्टि के प्रिय की चाहनेवाली मृत्यु दया करके इकीस पद्म वर्षतक एक पैर से खड़ी रही वह इन्द्रियों के प्यारे विषयों को अच्छे प्रकार रोककर तपस्या करनेलगी १७। १८ इसके पीछे सात पवित्र वनों में चौदह पद्म वर्षतक एक चरण से खड़ी रही १९ इसके पीछे वह दशहजार पद्म वर्षतक मृगों के साथ भ्रमण करनेवाली हुई फिर पवित्र शीतल और स्वच्छ जलवाले नन्दातीर्थ पर जाकर २० उस निष्पापाने नन्दानदी पर नियम को धारण करके जलके मध्य में आठहजार वर्ष व्यतीतकिये २१ वह नियम से बुद्धिमान् प्रथम पवित्र नदी कौशिकी पर गई वहां वायु जल का आहारकरके फिर नियम किया २२ फिर

उस पवित्र कन्याने पांचों गङ्गा और वेतसकों में बहुत प्रकारकी तपस्याओं से अपने शरीरको जीर्ण करदिया २३ इसके पीछे वह आकाशगङ्गा और महामेरु पर जाकर प्राणायाम करनेवाली प्रकाशित पत्थरपर केवल निश्चेष्ट होकर नियत हुई २४ फिर वह शुभ और श्रेष्ठ स्त्री उस हिमाचलके मस्तकपर जहां देवताओं ने पूर्वसमय में यज्ञ किया वहां एक निखर्व वर्षतक नियत हुई २५ फिर पुष्कर में गोकर्ण नैमिष और मलयाचल में बड़ी प्रीति से चित्त के नियमों से अपने शरीर को कृशकिया ब्रह्माजी की दृढ़ भक्ति रखनेवाली और सदैव ब्रह्माजी को सर्वरूप मानकर दूसरे देवता को न रखनेवाली अनन्यभक्ति में नियत हुई २६ और धर्म से पितामह को प्रसन्नकिया २७ हे राजन्! तब उसके पीछे लोकों के स्वामी अविनाशी प्रसन्नचित्त प्रीतिमान् ब्रह्माजी बड़े हित प्रिय वचन उस से बोले २८ कि हे मृत्यो! यह क्या बात है तब बड़े तपों के करने के पीछे वह मृत्यु उन भगवान् पितामह से फिर यह वचन बोली कि हे देव! इष्ट मित्र नातेदार आदि के मध्य में नियत पुकारतेहुए सृष्टि के लोगोंको मैं नहीं मारूं २९ हे सब के ईश्वर, प्रभो! मैं इस वर को तुमसे चाहती हूं ३० मैं धर्मके भय से भयभीत हूं इसी हेतु से तप में नियतहुई हूं हे महाभाग, अविनाशिन्! मुझ भयभीत को निर्भय करो ३१ मैं पीड़ावान् निरपराधिनी स्त्री आपसे प्रार्थना करती हूं तुम मेरी गति अर्थात् आश्रयस्थान हूजिये इसके पीछे भूत भविष्य वर्तमानके ज्ञाता देवताओं के देवता ब्रह्माजी उससे बोले ३२ हे मृत्यो! इनसब सृष्टियों के नाश करनेमें तुझको अधर्म नहीं है हे कल्याणिनि! मेरा कहाहुआ किसी दशा में भी मिथ्या नहीं है और न होगा ३३ इस हेतु से तुम चारों प्रकार की सब सृष्टि को मारो तुझको सनातन धर्म सब प्रकारसे याचना करेगा ३४ लोकपाल यमराज और सम्पूर्ण रोगादिकभी तेरे सहायक होंगे और मैं और सब देवता मिलकर तुझको वह वर देते हैं ३५ कि जैसे तू पापों से रहित होकर विरजानाम से विख्यात होगी हे महाराज! ब्रह्माजी के इस वचनको सुनकर वह मृत्यु शिर से ब्रह्माजी को प्रसन्न करती हुई हाथ जोड़कर यह वचन बोली कि जो यह इसी प्रकार करने के योग्य है तो हे प्रभो! वह मेरे विना नहीं होय ३६।३७ मैंने आपकी आज्ञा को मस्तक पर धारणकिया अब जो मैं आपसे कहती हूं उसको आप सुनिये क्रोध लोभ दूसरे के गुण में दोष लगाना ईर्षा शत्रुता देह में मोह

करना ३८ निर्लज्जता और परस्पर कठोर वचन यह सब भी पृथक् २ प्रकार से शरीर को व्यथित करें ब्रह्माजी बोले कि हे मृत्यो ! इसी प्रकार से होगा बहुत श्रेष्ठ है तुम सृष्टि को मारो तुझको कभी अधर्म न होगा हे शुभ स्त्री ! मैं तुझको शाप नहीं दूंगा ३९ मैंने जिन अश्रुपातों को हाथ में लिया वह जीवों के शरीरों से उत्पन्न होनेवाले रोग हैं वह निर्जीव मनुष्योंको मारेंगे तुझको अधर्म नहीं होगा भय मत कर ४० प्राणियों को मारकर तुझको अधर्म नहीं होगा निश्चय करके तूही धर्म है और तूही धर्म की स्वामिनी है तूही धर्मरूप होकर सदैव धर्म में नियत होके सबको धारणकरनेवाली है इस हेतु से इन सृष्टियों के प्राणों को सब प्रकार करके अपने स्वाधीनकर ४१ तू क्रोध और इच्छा को अच्छी रीति से त्याग करके इस लोक में सब प्राणियों के जीवों को भी आधीनकर इस प्रकार से तुझको अत्यन्त धर्म होगा अधर्म दुराचारी लोगों को मारेगा ४२ इस कारण तुम आत्मा के द्वारा आत्मा को पवित्र करो और सतोगुण से रहित लोग अपने पाप सेही अपने को नाश करेंगे इसहेतु से तुम अपने सम्मुख आयेहुए इच्छा और क्रोध को श्रेष्ठ रीति से त्याग करके अवस्था के अन्त होने पर जीवों को मारो ४३ नारदजी बोले कि निश्चयकरके वह मृत्यु नाम के उपदेश से और शाप से भयभीत होकर उन ब्रह्माजी से बोली कि बहुत अच्छा ऐसा कहकर इच्छा और क्रोध को त्याग करके वह मृत्यु मारने के कर्म में प्रवृत्त होकर समय के अन्त होनेपर जीवों के प्राणों को हरती है ४४ मृत्यु और उस मृत्यु सेही उत्पन्न होनेवाले इन सब जीवों के रोग और मारनेवाले रोग जिनसे कि जीव पीड़ा पाता है यह सब सम्पूर्ण जीवों के शरीर त्यागने के समय आते हैं इस हेतु से तुम निरर्थक शोक मत करो ४५ सब इन्द्रियरूप देवता शरीर के त्यागने के समय जीवात्माओं के साथ मृतक के समान जैसे परलोक में जाते हैं उसी प्रकार वहां लौटकर भी आते हैं अपने कर्म से देवतारूप होनेवाले कर्मदेव भी लौटकर आते हैं और सच्चे परमात्मा से प्रकाशितरूप होनेवाले ज्ञानदेव फिर लौटकर नहीं आते हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ ! इस प्रकार जीवधारियों के प्रथम देवता शीघ्रता से मृतक के समान जाकर फिर प्रकटहुए ४६ यह सर्वत्र वर्तमान भयकारी और भयानक शब्द बड़ा वेगवान् प्राणवायु जीवों के शरीरों को मारनेवाला है अत्यन्त प्रकाशित उग्र वायुरूप शिव और अपूर्व प्राण जन्म

मरण को नहीं पाता है अर्थात् जीवन्मुक्त है ४७ सब देवता मृतक नाम के योग्य हैं हे राजेन्द्र ! इस हेतु से तुम पुत्र का शोक मत करो तेरा पुत्र रमणीक वीर लोकों को पाकर स्वर्ग में वर्तमान होकर सदैव आनन्द करता है ४८ दुःख को त्यागकर पवित्रकर्मी पुरुषों के साथ में बैठो यह सृष्टिभर की मृत्यु देवता की आज्ञा से समय आनेपर विधि के अनुसार मारनेवाली है यह सृष्टि के शरीरों के प्राणों की हरण करनेवाली आप अपनेही से उत्पन्न कीगई है ४९ निश्चय करके सब जीवधारी अपना आपही अपघात करते हैं दण्डधारी मृत्यु उनको नहीं मारती है इस हेतु से पण्डितलोग वास्तव में मृत्यु को ब्रह्माजी से उत्पन्न जानकर मृतकों को नहीं शोचते हैं इस सृष्टिभर को देवता की सृष्टि जानकर मृतक पुत्रों के शोकों को शीघ्र त्यागो ५० व्यासजी बोले कि राजा अकम्पन नारदजी के कहेहुए इस सार्थक वचन को सुनकर अपने मित्र नारद जी से बोला ५१ हे भगवन्, ऋषियों में श्रेष्ठ ! मैं आपके मुख से इस इतिहास को सुनकर शोक से रहित और प्रसन्न होकर अब मैं कृतार्थ हूं और आपको दण्डवत् करता हूं ५२ नारदजी शीघ्रही नन्दनवन को गये ५३ इसी प्रकार सदैव इस इतिहास का सुनना और सुनाना पुण्य कीर्ति स्वर्ग धन और पूर्णायु का देनेवाला है ५४ सञ्जय बोले कि तब राजा युधिष्ठिर इस प्रयोजनवाले पद को सुनकर क्षत्रियधर्म और शूरों की परमगति को जानकर शान्तहुआ और जाना ५५ कि यह महापराक्रमी महारथी अभिमन्यु सब धनुषधारियों के सम्मुख शत्रुओंको मारकर स्वर्गलोक को अच्छी रीतिसे प्राप्तहुआ ५६ वह बड़ा धनुषधारी महारथी युद्ध में सम्मुख होकर खड्ग, गदा, शक्ति और धनुष से लड़ताहुआ मारागया ५७ और वह चन्द्रमा का पुत्र रजोगुण से रहित फिर अपनेही तेज में लय होता है इस हेतु से पाण्डव युधिष्ठिर अपने भाइयों समेत बड़े धैर्य को करके सावधानता से अच्छा अलंकृत होकर शीघ्रही लड़ने को सम्मुखगया ॥ ५८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, धर्मराज युधिष्ठिर मृत्यु की उत्पत्ति समेत अद्भुत कर्मोंको सुनकर और व्यासजी को प्रसन्नकरके फिर यह वचन बोले १ अर्थात् युधिष्ठिर ने कहा कि हे निष्पाप ! पवित्रात्मा सत्यवक्ता गुरु और इन्द्र के समान पराक्रमी

राजर्षि सत्यलोकादिक स्थानों में निवास करते हैं २ तुम फिर भी मुझ को सत्यवचनों से सन्तुष्टकरो और प्राचीन राजऋषियों के कर्मों से भी मुझ को विश्वास कराओ ३ किन २ पवित्रात्मा राजऋषियों ने कितनी २ दक्षिणा दीं वह सब आप मुझसे वर्णन कीजिये ४ व्यासजी बोले कि राजा शैब्य का पुत्र सञ्जय नाम था उसके परम मित्र नारद और पर्वतऋषि थे ५ वह दोनों ऋषि एक समय उस राजा के देखने की इच्छा से उसके घर में गये वहां राजा से विधि के अनुसार पूजित होकर बड़ी प्रसन्नता से निवासी हुए ६ फिर दैवयोग से एक समय पवित्र मुसकान और सुन्दर वर्णवाली उसकी कन्या उन दोनों ऋषि के समीप आनन्दपूर्वक बैठेहुए राजा सञ्जय के पास आई ७ उसने राजा को प्रणाम किया फिर उसकी प्रणाम लेनेवाले राजा ने उस समीप में बैठीहुई कन्या को विधि के अनुसार उसके योग्य और चित्त के अभीष्ट आशीर्वादों से प्रसन्न किया ८ तब पर्वतऋषि उसको अच्छी रीति से देखकर हँसते हुए इस वचन को बोले कि यह चञ्चलाक्षी सब लक्षणों से युक्त महासुन्दर किसकी कन्या है ९ आश्चर्य है कि यह सूर्य का प्रकाश है व अग्नि की ज्वाला है व लक्ष्मी, हरिकीर्ति, धृति, पुष्टि, सिद्धि नाम देवी है अथवा चन्द्रमा का प्रकाश है १० इस प्रकार से कहनेवाले देवर्षि पर्वत से राजा सञ्जय बोले हे भगवन्! यह मेरी कन्या है और मुझसे अपने वर को चाहती है ११ फिर नारदजी उससे बोले कि, हे राजन्! जो तुम अपना बड़ा कल्याण चाहते हो तो इस कन्या को भार्या करने के अर्थ मुझको दो १२ यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होकर राजा सञ्जय ने नारदजी से कहा कि दूंगा फिर अत्यन्त क्रोधित होकर पर्वतऋषि नारदजी से यह वचन बोले १३ कि निश्चय प्रथम मेरे हृदय से वरीहुई इस कन्या को तुम ने मांगा है हे ब्राह्मण! जो आपने मेरे चित्त से वरीहुई कन्या को तुमने वरा है इस हेतु से तुम अपनी इच्छा के अनुसार स्वर्गको न जाओगे १४ इस प्रकार से शापित होकर नारदजी उत्तमरूप वचन उससे बोले कि मन, वचन, बुद्धि और वाणी से जलसंयुक्त दीहुई अथवा कन्या और वर का हाथ मिलना और मन्त्र यह सातों कन्याके वरहोने के चिह्न प्रसिद्ध हैं १५ परन्तु यह निष्ठा निश्चयात्मक नहीं है सत्पुरुषों की निष्ठा सप्तपदी है १६ तुमने विना विवाह होनेकेही मुझको शापदिया है इस हेतु से तुम भी मेरे विना

कभी स्वर्ग को न जाओगे १७ तब वह दोनों परस्पर में शाप देकर वहां निवास करनेलगे फिर पुत्र के आकांक्षी पवित्रात्मा उस राजा ने भी बड़ी सामर्थ्य और उपाय से खाने पीने की वस्तुओं समेत वस्त्रों के आस्तरणों से ब्राह्मणों की सेवाकरी १८ एक समय तपस्या से युक्त वेद पढ़ने में प्रवृत्त वेदवेदाङ्गपारगामी ब्राह्मणों में श्रेष्ठ और उस पुत्राभिलाषी राजापर प्रसन्न होकर सब ब्राह्मणलोग मिलकर नारदजी से बोले कि, इस राजाको चित्त के अनुसार पुत्र दो १९।२० ब्राह्मणों से यह वचन सुनकर नारदजी तथाऽस्तु कहकर राजा सञ्जय से बोले कि हे राजर्षे ! ये सब ब्राह्मण प्रसन्न होकर तेरे पुत्र होने के निमित्त याचना करते हैं २१ तेरे कल्याण होय तू जैसा पुत्र चाहता है उसको मांग इस प्रकार के नारदजी से वचन सुनकर राजा ने हाथ जोड़कर ऐसा सर्वगुणसम्पन्न पुत्र नारदजी से मांगा २२ जोकि यशस्वी कीर्तिमान् तेजस्वी शत्रुओं को विजय करनेवाला हो और जिसका मूत्र, विष्ठा, थूक और प्रस्वेद ये सब सुवर्ण हो-जायँ २३ उनकी कृपा से वैसाही पुत्र हुआ इस रीति से उसका नाम सुवर्णष्ठीव इस पृथ्वी पर विख्यात हुआ वरप्रदान से उस राजा के पास असंख्य धन बढ़ता था २४ तब उस सुवर्णष्ठीव राजा ने गृह, प्राकार, दुर्ग ब्राह्मणोंके स्थान और सब सामान सुवर्ण के अपनी रुचि के समान बनवाये २५ शय्या, आसन, सवारियां, थाली, हण्डे आदि पात्र और उस राजा के जो महलआदि बाहरी सामान थे २६ वे स्वर्णमय और समय के अनुसार बड़े वृद्धिमान्हुए इसके पीछे चोरों के समूह सुनकर और इसको इस प्रकार का देखकर २७ उस राजा का निरादर करके बुराइयां करने के लिये दुष्टकर्म करनेलगे कितनेही चोरों ने कहा कि हम आप जाकर इस राजा के पुत्र कोही पकड़ें २८ क्योंकि वही इसको सुवर्ण की खानि है उसका उपायकरें इसके पीछे उन लोभी चोरों ने राजा के घर में प्रवेश करके २९ पराक्रम से सुवर्णष्ठीव नाम राजकुमार को हरण करलिया उपाय के न जाननेवाले बड़े निर्बुद्धि उन चोरों ने उसको पकड़कर वन में लेजाके ३० मारकर खण्ड२ करके लोभियों ने कुछ भी धन को नहीं देखा प्राणों से रहित उस बालक का वह धन जोकि वरप्रदान से प्राप्तहुआ था ३१ वह सब नाश होगया तब मूर्ख और अचेत चोरों ने परस्पर में अपना २ भी अपघात किया और उस कुमार को मारकर इस पृथ्वी से आप नष्ट होगये ३२ वे दुष्टकर्मी चोर

कठिन और भयानक नरक को गये फिर उस बड़े तपस्वी और दयावान् राजा ने उस वर से प्राप्तहुए पुत्र को मराहुआ देखकर ३३ महादुःखी और पीड़ा से व्याकुल होकर विलाप किया पुत्र के शोक से घायल और विलाप करते राजा को सुनकर देवऋषि नारदजी ने उसके सम्मुख आकर दर्शन दिया ३४ उन नारदजी ने उसके पास आकर उस दुःख से पीड़ित और अचेतता से विलाप करनेवाले राजा से जो कहा ३५ हे युधिष्ठिर! उसको समझो अर्थात् नारदजी ने कहा कि यहां अभीष्टों से तृप्त होनेवाला होकर तू मरजायगा ३६ हम ब्रह्मवादी जिसके घर में नियत होकर ठहरे हे सञ्जय! हम उस राजा मरुत और आवीक्षित को मृतक सुनते हैं ३७ जिस मरुत ने प्रसन्नतापूर्वक बृहस्पतिजी से संवर्तक को पूजन कराया उस भगवान् प्रभु ने नाना प्रकार के यज्ञों से पूजन करने के अभिलाषी जिस राजर्षि को धन और हिमालय पर्वत के स्वर्णमयी चौथे भाग को दिया ३८ जिसके यज्ञ के पास उस देवताओं के समूह जिनमें मुख्य इन्द्रसमेत बृहस्पतिजी हैं ३९ और संसार के उत्पन्न करनेवाले सब देवता वर्तमान हुए और यज्ञशाला के सब सामान स्वर्णमयी हुए ४० तब वेदपाठी भोजनों के अभिलाषी सब ब्राह्मणों ने उसके उस अन्न को जो इच्छा के अनुसार पवित्र विचार किया था यथेच्छ भोजन किया ४१ जिसके सब यज्ञों में दूध, दही, घृत, शहद और भक्ष्य, भोज्य की वस्तु और वस्त्र भूषणादि भी उत्तम सुडौल मनोहर और चित्तरोचक थे ४२ उस यज्ञ में वेदवेदाङ्गपारग अत्यन्त प्रसन्नमूर्ति ब्राह्मण लोग जिस २ वस्तु को चाहते थे वह सब वर्तमान होती थी उस राजा मरुत के गृह में मरुत देवता को परोसनेवाले हुए ४३ और राजर्षि आवीक्षित के सभासद विश्वेदेवानाम देवताहुए जिस पराक्रमी राजा की धनरूप खेती अच्छी वर्षा से थी ४४ जिसने अच्छे प्रकार से तैयारकिये हुए हव्य से ऋषि पितर और सुखपूर्वक जीवन करनेवाले देवताओं के स्वर्गवासी प्रकाशों को ४५ सदैव ब्रह्मचर्य वेदोक्त यज्ञ और सब प्रकार के दानों के द्वारा तृप्तकिया शय्या, आसन, खान पानकी वस्तु और दुःख से त्यागकरने के योग्य सुवर्ण के चय ४६ और सब प्रकार का असंख्यधन अपनी इच्छा से ब्राह्मणों को दिया वह श्रद्धावान् राजा प्रजा को प्रसन्न करके इन्द्र के बुलाने से प्रजा राज्य मन्त्री स्त्री सन्तान और बान्धवों समेत विजय कियेहुए कर्मफल के देनेवाले अविनाशी लोकों को

गया ४७ । ४८ राजा मरुत ने तरुणता से हज़ार वर्षतक राज्य किया हे सञ्जय ! जो वह धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य अथवा धर्म, अर्थ, काम, बल इन सब कल्याणों को तुझसे भी अधिक रखनेवाला है ४९ और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा मरगया तब तुम यज्ञों से रहित दक्षिणाओं के न देनेवाले होकर पुत्र का शोच मत करो यह नारदजी ने कहा ॥ ५० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! हम उस राजा सुहोत्र को भी मराहुआ सुनते हैं जोकि एकबार देवताओं से भी अजेय हुआ देखागया १ जिसने राज्य को धर्म से पाकर ऋत्विज् ब्राह्मण और पुरोहितों से अपना कल्याण पूछा और पूछकर उनकी आज्ञा में नियतहुआ २ सुहोत्र ने प्रजा के पोषण, धर्म, दान, यज्ञ और शत्रुओं की विजय इन सब बातों को जानकर धर्म के अनुसार धन की प्राप्ति को चाहा ३ धर्म से देवताओं को पूजा और बाणों से शत्रुओं को विजयकिया और अपने गुणों से सब जीवों को प्रसन्न करके विदित किया ४ जिसने म्लेच्छ और आटविक देशों के सिवाय इस सब पृथ्वी को भोगा और जिसके निमित्त इन्द्र ने वर्षोंतक सुवर्ण को बरसाया ५ वहां पूर्वसमय में इच्छा के अनुसार जारी होनेवाली सुवर्ण की उत्पत्ति स्थान नदियों ने ग्राह कर्कट और अनेक प्रकार के असंख्य मत्स्यों को धारण किया ६ और इन्द्रदेवता अभीष्टपदार्थ और नानाप्रकार की स्वर्णमयी अनुपम मूर्तियों को बरसाता था और बावड़ी एक २ कोस की लम्बी थीं ७ तब स्वर्णमयी सैकड़ों बौने, कुबड़े, नक्र, मकर और कच्छपों को देखकर आश्चर्य किया ८ यज्ञ करनेवाले राजर्षि ने कुरुजाङ्गल देश के मध्य विस्तृत यज्ञ में उस असंख्य सुवर्ण को ब्राह्मणों के अर्थ सङ्कल्प किया ९ उसने हज़ार अश्वमेध और सौ राजसूय और अन्य बहुत दक्षिणावाले पवित्र यज्ञों से १० और सदैव नैमित्तिक कर्मों के करने से चित्त की अभीष्ट गति को पाया हे सौत्य के पुत्र, सञ्जय ! जो वह राजा सौहोत्रादि व धर्म्मादि चारों कल्याणोंको तुझ से अधिक रखनेवाला और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा मरगया तो तुम यज्ञ न करने व दक्षिणा केभी न देनेवाले होकर पुत्र का शोच मत करो यह नारदजी ने कहा ॥ ११।१२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! हम वीर राजा पौरव को मृतक हुआ सुनते हैं जिसने दशलाख श्वेत घोड़ों को यज्ञ के निमित्त छोड़ा १ उस राजर्षि के यज्ञ में देश २ के आनेवाले पण्डितों की गणना नहीं होसकी जोकि शिक्षा अक्षर और विधि के जाननेवाले अर्थात् वेद के पढ़ने की रीति से सूत्र व्याकरणादि के जाननेवाले २ वेदविद्या और व्रत से स्नान किये हुए दान के अभ्यासी अपूर्व प्रियदर्शन और संन्यासीआदि के भोजन भिक्षाके देनेवाले वस्त्र, गृह, शय्या, आसन और सवारीवाले थे ३ वे वहां सदैव उपाय और क्रीड़ा करनेवाले नटनर्तक गन्धर्व पूर्णक और वर्धमानकों के द्वारा प्रसन्न कियेगये ४ उसने प्रतियज्ञ में समय के अनुसार श्रेष्ठ दक्षिणा बांटी दशहज़ार ऐसे हाथी जो सुवर्णभूषणों से अलंकृत होकर प्रकाशमान और अत्यन्त मतवाले थे ५ उसीप्रकार ध्वजा पताका समेत सुवर्ण के रथ दान किये और जिसने स्वर्णभूषणों से अलंकृत दशलाख कन्या ६ अच्छी जातिवाले घोड़े और हाथियों पर सवार और सुन्दर घर और खेत रखनेवाले सैकड़ों बैल और एकलाख सुवर्ण की मालाओं समेत गौवें और हज़ार दास इस प्रकार की दक्षिणा जिसने दीं ७ सुवर्ण शृङ्ग, चांदी के खुर, कांस्यदोहनी रखनेवाली सवत्सा गौवें ८ दासी, दास, खच्चर, ऊंट और बहुतसे कम्बल आदि को दान किया ९ उस यज्ञके विस्तार होने पर दक्षिणा बहुत सी बांटी उसमें पुराण के ज्ञातालोग इसकी गाथा को गाते हैं १० उस उपाय करनेवाले राजा अङ्ग के निज धर्म से प्राप्त गुणों में श्रेष्ठ सब अभीष्ट वस्तुओंसे युक्त वह शुभ यज्ञ था ११ हे सौत्यके पुत्र सञ्जय ! जो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा मरगया तब तुम यज्ञ न करनेवाले और दक्षिणाके न देनेवाले होकर पुत्रका शोक मत करो ॥ १२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! हम औसीनर के पुत्र शिवि को भी मृतक सुनते हैं जिसने इस सम्पूर्ण पृथ्वी को चमड़े के समान लपेटा अर्थात् अपने स्वाधीन किया १ उस शत्रुओं के विजय करनेवाले रथ के शब्द से पर्वत, द्वीप,

समुद्र और वनसमेत पृथ्वी भर को शब्दायमान करते शिबि ने सदैव उत्तम शत्रुओं को मारा २ उसने पूर्ण दक्षिणावाले बहुत प्रकारके यज्ञोंसे पूजन किया वह पराक्रमी बुद्धिमान् राजा बहुत धन को पाकर ३ युद्ध में सब महाराजों का अङ्गीकृत हुआ जिसने इस सब संसार की पृथ्वी को विजयकरके उन अश्वमेधों से पूजन किया ४ जोकि अर्गल न रखनेवाले बहुत फलों से युक्त थे उस हज़ारों कोटि निष्कों के दान करनेवाले ने हाथी घोड़े आदि पशु, धान, मृग, गौ और भेड़ बकरियों समेत ५ इस नानाप्रकारवाली पवित्र पृथ्वीको ब्राह्मणों के अर्थ भेंट किया बादल की जितनी धारा होती हैं और आकाश में जितने नक्षत्र हैं ६ और जितने कि गङ्गा की बालूके कण हैं और मेरु पर्वतके जितने पाषाण हैं और समुद्र में जितने रत्न और जलजीव हैं औसीनर के पुत्र शिबि ने उतनी ही गौवें यज्ञ में दानकरीं ७ संसार के स्वामी ने उसके कर्म के बोझे को उठाने वाला कोई पुरुष तीनों काल में नहीं पाया ८ उसके नाना प्रकार के यज्ञ सब अभीष्ट वस्तुओं से युक्तहुए ९ जिनमें सुनहरी यूप, आसन, गृह, भित्ति, परिधि और बाह्यद्वार और खाने पीने की पवित्र वस्तु और प्रयुतसंख्यावाले ब्राह्मण थे १० उसके यज्ञ के बाड़ोंमें नानाप्रकार की भोजनादिक की वस्तुओं के साथ दूध दही के ह्रद नदी और उज्ज्वल अन्नके पर्वत और चित्तरोचक कथा हुईं ११ स्नान भोजन पान इनमें से जो जिसको प्रिय होय वह करो ऐसी आज्ञा सब लोगों को दे रक्खी थी इस पवित्रकर्म से प्रसन्न होकर रुद्रजी ने जिस राजाको वरदिया १२ कि हे राजन्! तेरे धनकांक्षा कीर्ति और जो तू करे वह सब कर्म अविनाशी होयँ और जीवों की प्रीतिसमेत उत्तम स्वर्ग को पाओगे १३ शिबि इन अभीष्ट वरदानों को पाकर समय पर स्वर्ग को गया हे सञ्जय! जो वह चारों कल्याणों में तुझसे अधिक हैं १४ और तेरे पुत्र से भी अधिक महात्मा पुरुष मरगया तब तुम यज्ञ और दक्षिणा से रहित अपने पुत्र का शोच मत करो यह नारदजी ने कहा॥ १५॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे सञ्जय! हम दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी को भी शरीर त्यागनेवाला सुनते हैं जिसके साथ प्रजालोग ऐसे प्रसन्नहुए जैसे कि

औरस पुत्र को देखकर पिता प्रसन्न होता है १ जिस बड़ेभारी तेजस्वी में असंख्यों गुण भरेहुए थे और जो अविनाशी लक्ष्मणजी के ज्येष्ठभ्राता अपने पिताकी आज्ञा से स्त्रीसमेत चौदह वर्षतक वन में नियतहुए उस नरोत्तम ने जो तपस्वियों की रक्षा के निमित्त जनलोक में चौदह हज़ार राक्षसों को मारा और रावणनाम महा प्रबल प्रतापी अतुलबल राक्षस ने वहां पर निवास करने वाले २ । ४ रामचन्द्रजी की भार्या सीताजी को हरणकिया उस राक्षसको अपने छोटेभाई समेत जाकर महाहितकर युद्ध में अत्यन्त कोपकरके श्रीरामचन्द्रजी ने उस अपराधी अन्य से अजेय पुलस्त्यवंशीय रावण को ऐसे मारा ५ जैसे कि पूर्व समय में शिवजी ने अन्धक को मारा था उस देवता असुरों से भी न मरनेवाले देवता और ब्राह्मणों के दुःखदायी कण्टकरूप ६ पुलस्त्यवंशीय रावण को उस महाबाहु रामचन्द्रजी ने युद्ध में उसके सब राक्षसों के समूहों समेत मारा वह रामचन्द्रजी प्रजाओं पर अनुग्रह करके देवताओं से भी पूजन कियेगये ७ देवता और ऋषियों के समूहों से पूजित और सेवित सब जीवोंपर दया करनेवाले उन रामचन्द्रजी ने संपूर्ण संसार को अपनी कीर्ति से व्याप्त करके नाना प्रकार के राज्य को पाकर फिर धर्म से प्रजापालन करनेवाले समर्थ दशरथात्मज ने अनर्गल बड़े राजसूय और अश्वमेध को किया और हविष से देवताओं के ईश्वर इन्द्र को प्रसन्नकिया फिर उस राजाधिराज ने बहुत गुणवाले नाना प्रकार के अन्य २ यज्ञों से भी पूजन किया ८ । १० सदैव अपने गुणों से संयुक्त अपने तेज से प्रकाशित रामचन्द्रजी शरीरवर्ती सम्पूर्ण रोगरूप क्षुधा पिपासा आदि को भी विजय किया अर्थात् निवृत्त किया ११ दशरथ के पुत्र रामचन्द्रजी सब जीवमात्रों को उल्लङ्घन करके शोभायमानहुए राज्य में श्रीरामचन्द्र के समान करनेपर पृथ्वी के ऊपर ऋषि देवता और मनुष्यों का निवास हुआ १२ उस समय राज्य में रामचन्द्रजी के राजशासन करनेपर जीवधारियों के प्राण नाश को प्राप्त नहींहुए और प्राण अपान समान किसी के विपरीत नहींहुए अर्थात् किसी प्रकार का अनर्थ नहीं हुआ १३ और किसी की अपमृत्यु आदि कभी नहींहुई चारों ओर से तेजों की वृद्धिहुई सब प्रजा पूर्णायुवाली हुई उस समय तरुण अवस्थावाला नहीं मरता था और चारों वेदों के मन्त्रों से प्रसन्न देवता अनेक प्रकार के हव्य कव्य और तड़ागादिक केही

पूजन और यज्ञ कोही पाते थे और सब देश मच्छर डांस और विषवाले सर्पादिकों से रहित थे १४ । १६ जल में जीवों की मृत्यु नहीं हुई और विना समय के अग्नि ने किसी को न जलाया उनके राज्य में मनुष्य लोभी मूर्ख और अधर्म करनेवाले नहीं हुए १७ तब सब वर्ण अच्छे लोगों के प्रियकारी ज्ञानियों के कर्मों को करनेवाले हुए उस ईश्वरने जनस्थानपर राक्षसों से नाशकरीहुई स्वधा और पूजा को उन राक्षसों को मारकर पितृ और देवताओं के अर्थ दिया उस समय मनुष्य हज़ार २ पुत्रवाले और हज़ारों वर्षों की अवस्थावाले उत्पन्न हुए थे उसकाल में बड़े भाइयों ने छोटे भाइयों से श्राद्धों को नहीं करवाया उस श्याम तरुण अरुणाक्ष मतवाले हाथी के समान पराक्रमी, आजानुबाहु, सुन्दर भुजा, सिंहस्कन्ध, महाबली, सब जीवों के आनन्ददायक, श्रीरामचन्द्रजी ने ग्यारह हज़ार वर्षतक राज्यकिया (राम रामेति रामेति) यही सब प्रजाकी रटना रहती थी १८ । २२ राज्यपर रामचन्द्रजी के राज्यशासन करनेपर संसार रामचन्द्रजी से मनोहर और शोभायमान हुआ वह रामचन्द्रजी चारप्रकार की सृष्टि को स्वर्ग में पहुँचाकर आप भी स्वर्ग को गये २३ वह रामचन्द्रजी इसलोक में अपने राजवंश को आठ प्रकार से नियत करके शरीर के त्यागनेवाले हुए हे सञ्जय ! वह भी सुधर्मादि चारों कल्याणों में तुझसे २४ और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा थे तब तुम यज्ञ और दक्षिणा देने से रहित होकर अपने पुत्रका शोक क्यों करते हो ? यह नारदजी का कथन है ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! हम राजा भगीरथ को भी मृतकहुआ सुनतेहैं जिसने श्रीभागीरथी गङ्गा के दोनोंकिनारे सुवर्णके चयों से संयुक्तकिये १ उसने राजा और राजकुमारों को उल्लङ्घनकर स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत दशलाख कन्या ब्राह्मणों को दीं कि वह सब कन्या ऐसे रथोंपर सवार थीं कि चार २ घोड़ों से संयुक्त प्रत्येक रथके साथ सौ २ हाथी सुवर्ण की मालाओंसे शोभित थे २ । ३ और हर एक हाथी के पीछे हज़ार २ घोड़े और घोड़े २ के पीछे सौ २ गौवें और गौवों के पीछे भेड़ बकरियां भी थीं ४ और जो कि गङ्गा के सम्मुख बहुत सी दक्षिणा देनेवाला राजा वर्तमान था उस कारण से स्थान की सङ्कोचता से

जल की आधिक्यता के भार से आक्रान्त और पीड्यमान होकर गङ्गा उस राजा की गोद में बैठगई ५ इसके अनन्तर पूर्वकाल में जब भागीरथी गङ्गा जङ्घापर विराजमान हुई तब गङ्गाजी ने राजा की पुत्री होने के भाव को पाया और नरक से रक्षाकरने के कारण पुत्रभाव को भी पाया ६ सूर्यके समान प्रकाशमान मनोहर वचनवाले गन्धर्वों ने पितृदेवता और मनुष्यों के सुनते हुए उस गाथा को गाया ७ समुद्र में मिलनेवाली गङ्गादेवी ने बड़ी दक्षिणा से यज्ञों के करनेवाले इक्ष्वाकुवंशीय भगीरथ को अपना पिता वर्णन किया ८ उसका यज्ञ इन्द्र समेत देवताओं के समूहों से सुन्दर अलंकृत और श्रेष्ठरीति से रक्षित विघ्न रोग और उपाधियों से रहित हुआ ९ निश्चय करके जिस २ वेदपाठी दैवज्ञ ब्राह्मण ने जहां २ पर अपने अभीष्ट को चाहा उसी २ स्थानपर भगीरथ ने अत्यन्त प्रसन्न होकर दिया १० उस राजा के यहां ब्राह्मण को अदेय कोई भी वस्तु नहीं हुई जो जिसको अभीष्ट धन था वही उसने उसको दिया वह राजा भी ब्राह्मणों की कृपा से ब्रह्मलोक को गया ११ जिस हेतु से बालखिल्य आदि का ऋषि कर्मयज्ञ और ज्ञानयज्ञ के प्राप्तहोने के द्वारा रूप सूर्य और उस के भीतर नियत ज्योतिःस्वरूप ब्रह्मके सम्मुख होना चाहतेहैं वह उसी प्रयोजन के लिये उस भगीरथ के सम्मुख होना चाहते हैं क्योंकि वह मोक्ष से प्रकाशमान ईश्वर है अर्थात् सूर्यके दर्शनसे जो पाप नष्ट होतेहैं वही उसके भी दर्शन से पाप का नाश होता है और जो सूर्य के अन्तर्यामी की उपासना से सत्य सङ्कल्पादिक फल प्राप्त होते हैं वह उसकी भी उपासना से प्राप्तहोते हैं तात्पर्य यह है कि ब्रह्मभाव प्राप्त करने से यह राजा भी उन ऋषियों की उपासना और देखने के योग्यहुआ १२ हे सञ्जय ! जो वह भगीरथ भी अर्थ धर्मादि चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी धर्मात्मा शरीर का त्यागनेवाला हुआ तब यज्ञ और दक्षिणा से रहित तुम अपने पुत्र का शोक मतकरो यह नारदजी का कहा हुआ है ॥ १३ । १४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! हम अलोल के पुत्र दिलीप को मृतक हुआ सुनते हैं जिसके शतयज्ञ में प्रयुत अयुत संख्यक ऐसे ब्राह्मण वर्तमान थे १

जोकि ब्रह्मज्ञान और अर्थशास्त्रज्ञाता याज्ञिक और पुत्र पौत्रादि से सम्पन्न थे जिस यज्ञ करनेवाले राजा ने इस धन से भरीहुई पृथ्वी को २ विस्तृतहुए यज्ञ में ब्राह्मणों के अर्थ दान किया उस दिलीप के यज्ञों में स्वर्णमय मार्ग बनायेगये उसके धर्मरूप करनेवाले देवता अपने ईश्वर इन्द्र के समेत आये ३ जिसमें पर्वताकार हज़ार हाथी सामग्री पहुँचाने को जाते थे वह सब सभा सुनहरी और अत्यन्त प्रकाशित हुई ४ जिसमें रसों के तड़ाग और भोजन की वस्तुओं के पहाड़ वर्तमान थे हे राजन्! सुनहरी यज्ञस्तम्भ जिसमें हज़ार व्याायाम के लम्बे थे ५ इन्द्रसमेत देवता और अन्य जीवधारी उसको धर्मरूप करनेवालेहुए जिसके सुनहरी यज्ञस्तम्भ में चषाल और प्रचषाल थे ६ उसके यज्ञमें छःहज़ार अप्सरा सात प्रकार से नृत्य करती थीं और विश्वावसु गन्धर्व भी जहांपर अपनी प्रीति से आपही वीणा को बजाता था और सब जीवों ने राजा को सत्य स्वभावयुक्त माना ७ मीठे २ भोजनों से मतवाले मार्गों में सोते थे उसके उस कर्म को मैं अपूर्व मानता हूं उसके समान दूसरा कोई राजा नहीं है ८ जो जल के मध्य में युद्ध करनेवाले राजा के दोनों रथ के पहिये जल में नहीं डूबे जिन मनुष्यों ने उस दृढ़ धनुषधारी सत्यवक्ता ६ बड़ी दक्षिणा देनेवाले राजा दिलीप को देखा था वह भी स्वर्ग के विजय करनेबाले हुए उस खट्वाङ्ग नाम दिलीप के घर में यह पांच प्रकार के शब्द कभी बन्द नहीं होते थे वेदध्वनि, धनुष और प्रत्यञ्चा का शब्द और खाओ पीओ भोगो यह शब्द हे सञ्जय! जो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा मृत्युवश होगया तो तुम यज्ञ और दक्षिणा से रहित होकर अपने पुत्र का शोक मतकरो यह नारदजी ने कहा॥ १०।१२॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय! हम युवनाश्व के पुत्र राजा मान्धाता कोभी मृतक सुनते हैं जोकि देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनों लोकों का विजयकरने वाला था १ अश्विनीकुमार नाम देवताओं ने जिसको पूर्व पिता के गर्भ से आकर्षण किया वह राजा आखेट में घूमताहुआ घोड़ों के थकित होने और परिश्रम से तृषितहुआ और कहीं धुएं को देखकर यज्ञशालामें गया और दही मिले हुए घृत को पाया वैद्यों में श्रेष्ठ अश्विनीकुमार देवताओं ने युवनाश्व के उदर

में पुत्र रूप प्राप्तकरनेवाला उसको देखकर गर्भ से खैंचलिया पिता के पास सोने वाले देवता के समान तेजस्वी उसको देखकर २ । ४ देवता लोग परस्पर में बोले कि इसका पोषण कौन करेगा इन्द्र ने कहा कि यह प्रथम मुझी को धारणकरे अर्थात् मैं ही इसका पोषण करूं ५ इसके पीछे इन्द्र की उंगलियों से दूधरूप अमृत प्रकट हुआ इन्द्र ने जोकि उसपर कृपाकरी कि यह मुझी को धारण करेगा ६ इस हेतु से उसका अपूर्व नाम मान्धाता कियागया इसके अनन्तर महात्मा इन्द्र के हाथ ने उस मान्धाता के मुख में दूध और घृत की धारा गिराई उसने इन्द्र के हाथ को पिया और एकही दिन में बड़ा होगया ७ । ८ फिर वह पराक्रमी बारह दिन में बारह वर्ष की अवस्था के समान हुआ उसने इस सम्पूर्ण पृथ्वी को एकही दिन में विजय किया ९ उस धैर्ययुक्त धर्मात्मा सत्यसंकल्प जितेन्द्रिय मन के जीतनेवाले वीर मान्धाता ने जनमेजय, सुधन्वा, गय, पुरु, बृहद्बल १० असित और नृग को विजय किया सूर्य के उदय से अस्तपर्यन्त जितनी पृथ्वी है ११ वह सब युवनाश्व के पुत्र मान्धाता का क्षेत्र कहा जाता है हे राजन्! उसने सैकड़ों अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञों से पूजनकरके १२ ब्राह्मणों के अर्थ ऐसी सुवर्ण वर्ण की रोहित मछलियां दान करीं जो कि एक योजन ऊंची और सौ योजन लम्बी थीं १३ उन यज्ञों में ब्राह्मणों से शेष बचे हुए भोजनों को मनुष्य खाते थे और आदर करते थे उन अनेक प्रकार के भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य आदि सुस्वादु पदार्थों के और अन्नके पर्वत लगे थे १४ खाने पीने की वस्तुओं के ढेर और अन्न के पहाड़ महाशोभायमान हुए घृतरूप ह्रद और सूपरूप आदिक कीच दधिरूप फेन और रसरूप जल १५ शहद दूध से बहनेवाली शुभ नदियों ने उन अन्न के पहाड़ों को घेर लिया वहां पर देवता, असुर, मनुष्य, यक्ष, गन्धर्व, सर्प, पक्षी १६ और वेद वेदाङ्ग पारगामी वेदपाठी ब्राह्मण और ऋषिलोग भी आकर नियत हुए वहां आनेवालों में कोई भी अपण्डित नहीं था १७ तब वह राजा अपने यशों से सब दिशाओं को व्याप्त करके पवित्रकर्मी पुरुषों के लोकों को गया हे सञ्जय! वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा पुरुष मृत्युवश हुआ उस दशा में यज्ञ और दक्षिणा से रहित तू अपने पुत्रका शोक मतकर यह नारदजी ने कहा॥ १८।२०॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणि द्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! हम नहुष के पुत्र ययाति को मृतक सुनते हैं उसने सैकड़ों राजसूय अश्वमेधोंसे पूजनकरके १ हज़ार पुण्डरीक यज्ञ सैकड़ों वाजपेय यज्ञ हज़ार अतिरात्र यज्ञ अपनी इच्छा से चातुर्मास यज्ञ अग्निष्टोम आदि नाना प्रकार के दक्षिणावाले यज्ञों से पूजन करके २ पृथ्वी पर ब्राह्मणों के शत्रु म्लेच्छों का जो कुछ धन था वह सब छीनकर ब्राह्मणों के अर्थ भेट किया ३ देव दानवों के अलंकृत युद्ध में देवताओं की सहायता करके इस सम्पूर्ण पृथ्वी भर को चार ऋषियों को चार भाग करके बांट दी और नानाप्रकारके यज्ञों से पूजनकर उत्तम सन्तान को उत्पन्नकरके ४ वह देवता के समान शुक्रजी की पुत्री देवयानी में और धर्म से शर्मिष्ठा में सन्तति को उत्पन्न करके सब देववनों में विहार करनेवाला हुआ ५ अपने स्वेच्छाचारी कर्म से दूसरे इन्द्र के समान सब वेदों के ज्ञाता ने जब इच्छाओं की पूर्णता को नहीं पाया ६ तब इस गाथा को गाकर स्त्री समेत वन को चलागया पृथ्वी पर जितने धान्य, जव, सुवर्ण, पशु और स्त्री हैं ७ वह सब मिलकर भी एक की तृप्ति नहीं करसक्ते हैं ऐसा मानकर जितेन्द्रिय होना चाहिये इस प्रकार राजा ययाति अपनी इच्छादिकों को त्यागकर धैर्य को पाकर ८ अपने पुत्र पुरु को राज्यपर नियतकरके वनको गया हे सञ्जय ! जो वह भी चारों कल्याणों में तुझसे ९ और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा प्रतापी होकर देह को त्याग गया तो तू यज्ञ और दक्षिणाओं से रहित अपने पुत्र के शोक को मतकर यह नारदजी ने कहा ॥ १० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! जो हम नाभाग के पुत्र अम्बरीष को मृतक हुआ सुनते हैं कि जिस अकेले ने ही लाखों राजाओं से युद्ध किया १ विजयाभिलाषी और अस्त्रयुद्ध के ज्ञाता और अशुभ अयोग्य वचनों के कहनेवाले घोर रूप शत्रु युद्ध में उसके चारों ओर से सम्मुखगये २ तब वह राजा बल हस्त लाघवता शिक्षित अस्त्रों के पराक्रम से उन्हों के छत्र ध्वजा और शस्त्रों को काट कर प्राणों को पीड़ा देनेवाला हुआ ३ वह कवच के त्यागनेवाले जीवन के

अभिलाषी शरणागत शब्द के कहनेवाले प्रार्थना को करते हुए उस शरण्य राजा की शरण में गये ४ हे निष्पाप ! फिर उस राजा ने उन राजाओं को आज्ञावर्ती कर और इस पृथ्वी को विजय करके शास्त्र की रीति से सैकड़ों यज्ञों से पूजन किया ५ उस यज्ञ में वेदपढ़नेवाले उत्तम ब्राह्मण बड़े पूजित होकर तृप्त हुए और दूसरे मनुष्यों ने सदैव सब वस्तुओं से संयुक्त अन्न को भोजन किया ६ वहांपर ब्राह्मणलोग मोदक, पूरिक, पूप, स्वादिष्ठ शष्कुली, करम्भ पृथक् और अच्छे प्रकार बनेहुए रुचिदायक अन्न सूप मैरिक पूप रागखाण्डव पानक और अच्छीरीति से बनायेहुए मृदु सुगन्धित मिष्टान्न ७। ८ घृत, शहद, दूध, जल, दही यह सब और रसों से युक्त अत्यन्त चित्तरोचक फल और मूलों को भोजन करते थे ९ मद की उत्पन्न करनेवाली पाप की मूल मद्यादिकों को अपना आनन्ददायक जानकर मद्यपीनेवालों ने गीतवाद्यों समेत अपनी २ इच्छानुसार सबने पानकिया १० वहांपर प्रसन्न और मदोंसे उन्मत्तों ने नाभाग की प्रशंसाओं से भरीहुई गाथाओं को गान कर २ के पढ़ा और हजारों नृत्य करनेलगे ११ राजा अम्बरीष ने उन यज्ञों में दक्षिणाओं को दिया उस यज्ञ में एकलाख दशप्रयुत १२ राजाओं की संख्या थी उन सब सुनहरी कवच श्वेत छत्र और चामर रखनेवाले सुनहरे रथ पर चढ़ेहुए राजाओं को उनके वस्तु ले चलनेवाले अनुगामियों समेत १३ और मूर्धाभिषिक्त राजाओं को और सैकड़ों राजकुमारों को उस विस्तृत यज्ञ में पूजन करनेवाले राजा ने दक्षिणादिया १४ हे सञ्जय ! जो वह चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा कालवश होगया तो तू यज्ञ और दक्षिणाओं से रहित पुत्र के शोचने को नहीं योग्य है यह नारदजी ने कहा ॥ १५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुष्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! हम राजा शशिबिन्दु को मृतक सुनते हैं उस श्रीमान् सत्य पराक्रमी ने नाना प्रकार के यज्ञों से पूजनकिया १ उस महात्मा की एक लाख स्त्रियां थीं प्रत्येक भार्या के हजार २ पुत्रहुए २ वह सब बड़े पराक्रमी नियुत यज्ञों के कर्ता वेद वेदाङ्गों के पारगामी उत्तम याज्ञिक राजा नाम ३ उत्तम सुनहरी कवच और श्रेष्ठ धनुषधारी अश्वमेधी शशिबिन्दु के कुमार थे ४

हे महाराज ! उनके पिता ने अश्वमेध यज्ञ में उन कुमारों को ब्राह्मणों की भेंट किया तब प्रत्येक राजपुत्र के पीछे सौ २ रथ और हाथी गये तब सुवर्ण भूषणों से अलंकृत कन्याओं का दानकिया हरएक कन्या के साथ सौ हाथी और हर हाथी के साथ सौ २ रथ दिये ५ । ६ और हरएक रथ के साथ पराक्रमी और सुनहरी माला रखनेवाले सौ २ घोड़े और घोड़े २ के साथ हज़ार २ गौ और प्रत्येक गौ के साथ पचास कम्बल ७ महाभाग शशिबिन्दु ने बड़े अश्वमेध यज्ञ में यह असंख्य धन ब्राह्मणों को दानकिया ८ बड़े अश्वमेध यज्ञ में जितने यज्ञस्तम्भ और चैत्य थे वह उसी प्रकार बनेरहे फिर उतनेही दूसरे स्वर्णमयी हुए ९ उस राजा के अश्वमेध यज्ञ के समाप्त होने पर एककोस ऊंचे खाने पीने के पर्वताकार ढेर तेरह बाकी रहगये राजा शशिबिन्दु प्रसन्न और नीरोग शरीर मनुष्यों से पूर्ण रोगादि विघ्नों से रहित इसपृथ्वी को बहुतकाल तक भोगकर स्वर्ग को गये १० । ११ हे सञ्जय ! जो वह चारों अर्थ धर्मादिक चारों कल्याणों में तुझ से और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा इस देह को त्यागगये तो तुम दक्षिणा सहित यज्ञ के न करनेवाले होकर अपने पुत्र को शोकमत करो यह नारदजी ने कहा है ॥ १२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

छाछठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! हम अमूर्तरयस को भी मृतक हुआ सुनते हैं निश्चयकरके यह राजा सौ वर्षतक यज्ञ के शेषबचेहुए हव्य का भोजन करनेवाला हुआ १ अग्नि ने उसको वरदिया फिर गय ने उससे वरमांगा कि तप, ब्रह्मचर्य, व्रत, नियम और गुरुओंकी प्रसन्नता समेत वेदोंको जानना चाहता हूं और अपने धर्म से दूसरों को न मारकर अविनाशी धन को चाहता हूं २ । ३ ब्राह्मणों में दान देने की सदैव मुझको श्रद्धा होय और दूसरे में चित्त न लगानेवाली सजातीय स्त्रियों में मेरे पुत्रों का जन्म होय ४ अन्नदान करने में मेरी श्रद्धा होय धर्म में मेरा मन रमे और हे अग्ने ! मेरे धर्मकार्यों में कभी विघ्न न होय तथास्तु अर्थात् ऐसाही होगा ऐसे कहकर अग्नि उसी स्थान में गुप्त होगये गय ने भी उन सब वरदानों को पाकर धर्म से शत्रुओं को विजय किया ५ । ६ उस राजा ने दर्श, पूर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास्य और पूर्ण दक्षिणावाले नाना प्र-

कार के यज्ञों से पूरे सौ वर्षतक श्रद्धा समेत पूजन किया एकलाख गौ दश हज़ार घोड़े ७। ८ एकलाख निष्क प्रातःकाल के समय प्रतिदिन उठ २ कर ब्राह्मणों को दान की ९ नक्षत्रों के समान दक्षिणा देनेवाले सब नक्षत्रों में दान किया और अन्य २ बहुत प्रकार के यज्ञों से ऐसे पूजन किया जैसे सोम और अङ्गिरा ने किया था १० जिस राजा ने बड़े भारी अश्वमेध यज्ञ में पृथ्वी को स्वर्णमयी और मणिरूप कङ्कड़ रखनेवाली बनवाकर वेदपाठी ब्राह्मणों के अर्थ दानकरी ११ राजा गय के सब सुवर्ण के यज्ञस्तम्भ रत्नोंसे जटित बड़े धनवाले होकर सब जीवों के चित्तरोचक हुए १२ तब गय ने सब अभीष्ट वस्तुओं से युक्त अन्न को अत्यन्त ब्राह्मण आदि सब जीवों के निमित्त दानकिया समुद्र समेत वन, द्वीप, नदी, नद, नगर, देश और स्वर्ग आकाशादि में १३। १४ जो नाना प्रकार के जीवों के समूह हैं वह सब यज्ञ के धन धान्य से अच्छे प्रकार तृप्त हुए और तृप्त होकर कहने लगे कि राजा गय के समान दूसरा किसी का यज्ञ नहींहै १५ छब्बीस योजन चौड़ी और तीस योजन लम्बी और आगे पीछे से चौबीस योजन सुनहरी वेदी उस यजमानरूप राजा गय की थी उसने मोती, हीरे, मणि, अश्व, वस्त्र और भूषणादिक ब्राह्मणों के निमित्त दान किये १६।१७ और बड़ी दक्षिणा देनेवाले ने शास्त्र की आज्ञानुसार दूसरी दक्षिणा ब्राह्मणों के लिये दान कीं यहां पर यज्ञ से शेष बचे हुए भोजनों के पचीस पर्वत थे १८ तब रसों के तड़ागों से पृथ्वीपर चेष्टा करनेवाली नदियां बहीं और वस्त्र भूषण और सुगन्धित वस्तुओं के ढेर पृथक् प्रकार के थे १९ और जिसके प्रभाव से राजा गय तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ वह अविनाशी अङ्गवाला पवित्र वट ब्रह्मसर नाम है २० हे सञ्जय! जो वह अर्थ धर्मादिक चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा होकर मरगया तो यज्ञ और दक्षिणाओं से रहित पुत्र का शोक मतकर यह नारदजी ने कहा ॥ २१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

सड़सठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय! हम सांकृति रन्तिदेव को मृतक हुआ सुनते हैं जिस महात्मा के भोजन बनानेवाले सूपशास्त्रज्ञ दो लाख थे १ जोकि घर में आयेहुए अतिथि ब्राह्मणों को अमृत के समान उत्तम पक्के और कच्चे अन्न को

अहर्निश परोसा करते थे २ न्याय से प्राप्तहुए धन को ब्राह्मणों के अर्थ दान किया और धर्म से वेदों को पढ़कर शत्रुओं को अपने आधीन किया ३ स्वर्ग के चाहनेवाले बहुत से पशु विधि के अनुसार जिस यज्ञ से पूजन करनेवाले स्तुतिमान राजा के पास आप आ आकर नियत हुए ४ जिसके रसोई के घर के चर्म समूहों से नदी वर्तमान हुई उसी हेतुसे पूर्व समय में अग्निहोत्र के मध्य में चर्मण्वती नाम नदी विख्यातहुई ५ वह तेजस्वी ब्राह्मणों के अर्थ सुवर्ण के निष्कों को देता हुआ बड़ी प्रसन्नतासे बोला कि तेरे अर्थ निष्क तेरे अर्थ निष्क तेरे अर्थ २ ऐसी रीति से कहकर हज़ारों निष्कों को दानकिया ६ फिर उसके पीछे विश्वास कराके निष्कों को देता था ७ अब मैंने थोड़ादिया यह कहता हुआ एकही दिन में हज़ारों कोटि निष्क देता था कि फिर दूसरा इसको कौन देगा ८ ब्राह्मण का हाथ खाली होने से निस्सन्देह मुझको बड़ा दुःख होगा इस प्रकार से राजा ने धन को दानकिया ९ सैकड़ों गौ के पीछे चलनेवाले सुनहरे हज़ारों बैल और इसी प्रकार वह निष्कधन जोकि एक सौ आठ सुवर्ण का कहा जाता है हर एक पक्ष में सौ वर्ष तक ब्राह्मणों को दानकिया अग्निहोत्र की सामग्रियां यज्ञ के उपकारी औज़ार हैं अर्थात् कमण्डलु, घट, स्थाली, पीठर, शयन, आसन, सवारियां, महल, गृह १० । ११ नाना प्रकार के वृक्ष और अनेक प्रकार के अन्न व धनों को ऋषियों के अर्थ दिया इस बुद्धिमान् रन्तिदेव का सब पुर सुवर्ण का था १२ वहां पर जो २ पुराण के ज्ञाता पुरुष थे वे सब उस बुद्धिमान् से परे रन्तिदेव की लक्ष्मी को देखकर उसकी गाथा को गानेलगे १४ ऐसा पूर्णधन जो इसके यहां था वह पहले कभी कुबेर के यहां भी नहीं देखा था तो मनुष्यों में क्या होगा १५ वहां मनुष्यों ने आश्चर्यित होकर यह कहा कि प्रकट है कि उस रन्तिदेव के घर में जो अतिथि एकरात्रि निवासकरे वह उत्तम धनों को पाता है यह जानकर उसके घर में अतिथि आये १६ तब उन अतिथियों ने इक्कीस हज़ार गौवों को पाया और वहांपर अत्यन्त स्वच्छमणि कुण्डलधारी रसोइये पुकारे १७ कि बहुत से शाकादिकों को और तरकारियों को खाओ अब पूर्व के समान मांस नहीं है तब रन्तिदेव का जो कुछ रसोई आदि का सामान था वह सब सुनहरी होगया १८ विस्तृत यज्ञ में वह सब ब्राह्मणों के अर्थ दानकिया देवताओं ने उसके समक्ष में हव्यों को लिया १९ समय

पर पितरों ने कव्यों को लिया और श्रेष्ठब्राह्मणों ने सब अभीष्टों को प्राप्त किया हे सञ्जय ! जो वह चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा मृत्यु वश हुए तब यज्ञ और दक्षिणा से रहित तुम अपने पुत्र के शोक को क्यों करते हो यह नारदजी ने कहा ॥ २०। २१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे सञ्जय ! हम दुष्यन्त के पुत्र भरत को भी मराहुआ सुनते हैं जिस बालक ने वन के मध्य में अन्य से कठिनता से होने के योग्य कर्म को किया १ अर्थात् उस पराक्रमी ने हिमावट प्रकार के नख डाढ़रूप शस्त्रधारी सिंहों को अपनी तीव्रता से निर्बलकरके खैंचा और बांधा २ और जिसने निर्दयी भयकारी रक्त पीत रङ्गवाले व्याघ्रों को पराजयकरके अपने स्वाधीन किया ३ फिर बड़े पराक्रमी ने व्याल और सुप्रतीकवंशीय हाथी जोकि मुख फिरे हुए सूखे मुखवाले थे उनके दांतों को पकड़कर अपने वशीभूत किया ४ उस बड़े बली ने बलवान् भैंसों को भी खैंचा और सैकड़ों अत्यन्त दृप्त सिंहों को अपने बल से खैंचा बड़े बली समर गैंड़े आदि अनेक प्रकार के जीवों को भी प्राणों के कष्टसमेत वन में बांधकर और अपने स्वाधीनकर करके फिर छोड़ दिया ५। ६ ब्राह्मणों ने उसके उस कर्म से उसका सर्वदमन नाम रक्खा माता ने उसको निषेध किया कि तू जीवों को मत मार ७ उस पराक्रमी ने यमुनाजी के समीप सौ अश्वमेध से पूजनकरके सरस्वती के तटपर तीन सौ घोड़ों को और गङ्गाजी के समीप चार सौ घोड़ों को छोड़ा ८ फिर उसने उत्तम पूर्ण दक्षिणावाले बड़े २ हजार यज्ञ सौ अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञोंसे पूजन किया ९ अग्निष्टोम और अतिरात्र नाम यज्ञों से पूजनकर विश्वजित यज्ञ से पूजनकरके अच्छी रक्षा से युक्त लाखों वाजपेय नाम यज्ञों से भी पूजन किया १० जिन यज्ञों में शकुन्तला के पुत्र राजाभरत ने ब्राह्मणों को देखकर धनों से तृप्तकरके कण्वऋषि के अर्थ हजार पद्ममुद्रा दिये ११ बड़े यशस्वी ने जाम्बूनद नाम शुद्ध सुवर्ण को दिया और उसका सुनहरी यज्ञस्तम्भ दो सौ गज लम्बा था १२ जिस प्रतापी ने ब्राह्मण और इन्द्र समेत सब देवताओं से मिलकर सब प्रकारके चित्तरोचक रत्नों से अलंकृत और प्रकाशमान १३ स्वर्णालंकृत घोड़े, हाथी, रथ,

ऊंट, भेड़, बकरी, दास, दासी, धन, धान्य और दूध देनेवाली सवत्सा गौ १४ ग्राम, गृह, क्षेत्र और अनेकप्रकारके किरोड़ों सामानों को ब्राह्मणों के अर्थ दानकिया १५ निश्चय करके वह चक्रवर्ती प्रतापवान् शत्रुओं को पराजय करनेवाला और शत्रुओं से सदैव अजेय था हे सञ्जय ! जो वे चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक १६ धर्मात्मा काल के वशीभूतहुए तो तू यज्ञ और दक्षिणा से रहित अपने पुत्र का शोक क्यों करता है यह नारदजी ने कहा ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, हे सञ्जय ! वेणु के पुत्र राजा पृथु को भी हम मृतक हुआ सुनते हैं जिसको राजसूय यज्ञ में महर्षियों ने सम्पूर्ण संसार के राज्य पर अभिषेक कराया १ सब के ऊपर अपना आतङ्क प्रबल करतेहुए राजा ने उपाय करके इस धरा को पृथ्वी प्रसिद्ध किया इसी हेतु से इस राजा को पृथु कहते हैं और वह हम सब घायलों की रक्षा करता है इस कारण से वह क्षत्रिय हुआ २ और जिस निमित्त से प्रजा के लोग पृथु को देखकर यह वचन बोले कि हम सब प्रीति से युक्त अत्यन्त प्रसन्न हैं इस हेतु के द्वारा उसकी प्रीतिसे इसका नाम राजाहुआ ३ जिस पृथु की पृथ्वी कामधेनु अर्थात् अभीष्टों को प्राप्त करनेवाली और अकृष्टपच्या अर्थात् जोतने आदि के भी विना अनाजों की उत्पन्न करनेवाली हुई और सब गौयें कामनाओं की दाता पुट २ में मधुकी रूप होगईं ४ दर्भ सुखसे स्पर्श करने के योग्य महासुखदायी सुनहरी रङ्ग की हुई उन्हों के वस्त्रों को प्रजालोगों ने अपने शरीर का आच्छादन बनाया और उन्हीं पर शयन भी किया ५ फल अमृत के समान स्वादुयुक्त और मधुरता से युक्तहुए वहीं उन सब का आहार हुआ निराहार कोई नहीं हुए ६ सब मनुष्य रोगों से रहित अभीष्ट काम निर्भय होकर वृक्षों के नीचे अथवा पर्वतों की गुफाओं में निवासी हुए उस समयतक देश और पुरों का विभाग नहीं हुआ था इसी प्रकार से यह सब प्रजा सुखपूर्वक अपनी इच्छानुसार प्रसन्न हुई ७ । ८ उस समुद्र में जानेवाले राजा के जल अच्छी रीति से नियत हुए और पर्वतों ने मार्ग दिया उसकी ध्वजा भी कभी नहीं टूटी ९ वनस्पति, पर्वत, देवता, असुर, मनुष्य, सर्प, सप्तऋषि, पवित्र देहधारी गन्धर्व, अप्सरा और पितृदेवता, उस सुखपूर्वक बैठे हुए

राजा के पास जाकर यह वचन बोले कि आप सब संसार के राजा हो क्षत्रिय हो और हमारे राजा और रक्षक होने से पितारूप हो १० । ११ हे महाराज ! आप समर्थ हो इस निमित्त से हम सबको वह अभीष्ट वरदान दो जिन बरप्रदानों के द्वारा हम सब सुखपूर्वक सदैव तृप्ति को प्राप्तकरें १२ राजापृथु तथास्तु अर्थात् ऐसाही होय यह कहकर अजगव नाम धनुष को और अनुपम भयकारी बाणों को लेकर बड़ी चिन्ताकरता हुआ पृथ्वी से बोला १३ कि हे पृथ्वि ! तेरा कल्याण होय आओ २ और शीघ्रता से इन प्रजाओं के निमित्त अभीष्ट दुग्ध को दो इसके पीछे मैं उस अन्न को दूंगा जो जिसको अभीष्ट है १४ पृथ्वी बोली कि हे वीर ! तुम मुझको अपनी पुत्री करके सङ्कल्प करने के योग्य हो फिर उस योगी राजापृथु ने ऐसाही होय यह वचन कहकर सब विधान को किया १५ तब उसके पीछे उस जीवों की निवासस्थान पृथ्वी को दोहन किया प्रथम उसके दोहने की अभिलाषा वाली वनस्पति उठीं १६ वह प्रीति से संयुक्त पृथ्वी बछड़े को दूध निकालने वाले को और पात्रों को चाहती हुई नियत हुई तब फूलों से संयुक्त शाल का वृक्ष तो बछड़ा हुआ और दुहनेवाला प्लक्ष का वृक्ष हुआ १७ काटने से अंकुर का निकलना दूध हुआ और औदुम्बरपात्र हुआ और उदयाचल पर्वत बछड़ा और सब से बड़ा मेरु पर्वत दुहनेवाला १८ रत्न औषधी आदिक दूध और पाषाणरूपपात्र हुआ फिर सब देवताओं का समूह तो बछड़ा हुआ और इन्द्र सुनहरी पात्र हुआ और सविता देवता दूध के निकालने वाले हुए और दूध पराक्रम उत्पन्न करनेवाला अथवा जीवदान देनेवाला सब का प्रियकारी हुआ १९ । २० असुरों ने आमपात्र में मद्य को दुहा वहां पर निकालनेवाला द्विमूर्धा हुआ और बछड़ा वैरोचननाम असुर हुआ इसी प्रकार पृथ्वी पर मनुष्यों ने खेती के अनाजों को दुहा वहां स्वायम्भू मनु बछड़ा और उन्हों का दूध निकालनेवाला राजा पृथु हुआ २१ इसी प्रकार तांबे के पात्र में पृथ्वी के विष को दुहा वहां धृतराष्ट्र सर्प तो दूध को दुहनेवाला और बछड़ा तक्षक हुआ २२ इसी प्रकार सुगमकर्मी सप्तऋषियों के द्वारा वेद को भी दुहा वहां दुहनेवाले बृहस्पतिजी छन्दपात्र और बछड़ा सोमराट हुआ २३ विराट ने धर्मात्मा पुरुषों के साथ आमपात्र में अन्तर्धान शक्ति को दुहा उन्हों का दुहने वाला वैश्रवण अर्थात् कुबेरदेवता और शिवजी बछड़े हुए २४ गन्धर्व और

अप्सराओं ने कमलपात्र में पवित्र सुगन्धियों को दुहा उनका बछड़ा चित्ररथ गन्धर्व और दुहनेवाले विश्वरुचि प्रभु हुए २५ पितरों ने चांदी के पात्र में स्वधारूप पितरों के अन्न को दुहा तब उन्हों का बछड़ा वैवस्वत और दुहनेवाले यमराज हुए २६ इस प्रकार करके उस विराट् ने उन समान धर्मवालों जीव-समूहों समेत अभीष्ट दुग्धों को दुहा निश्चयकरके अब जिन पात्र और बछड़ों के द्वारा सदैव निर्वाह करते हैं २७ वेणु के पुत्र प्रतापवान् राजापृथु ने नाना प्रकार के यज्ञों से पूजनकर और चित्त के प्यारे सब अभीष्टों से जीवधारियों को अत्यन्त तृप्तकरके २८ धनवान् करदिया और जो कोई राजा पृथ्वीपर थे उन सबको राजा ने बड़े अश्वमेध नाम यज्ञ में ब्राह्मणों के अर्थ दान किया २९।३०। राजा ने इस मणि रत्नों से अलंकृत सब पृथ्वी को स्वर्णमयी किया और सुवर्ण-मयकरके सब ब्राह्मणों को दान करदी ३१ हे सञ्जय ! जो वह चारों क-ल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा पुरुष इस संसार को त्यागगया तब यज्ञ और दक्षिणा देने से रहित अपने पुत्रका शोक मतकर यह नारदजी ने कहा ॥ ३२ । ३३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणयेकोनसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि, बड़े तेजस्वी पराक्रमी लोक में कीर्तिमान् बड़े यशस्वी जमदग्निजी के पुत्र परशुरामजी संसार से तृप्ति न पानेवाले भी अपने शरीर को समयपर त्याग करेंगे १ जिस हेतुसे इस संसार को सुखी करतेहुए परशुराम जी ने इस पृथ्वी में भ्रमण किया और अतुल्य धन को पाकर भी जिनकी रूपा-न्तरदशा नहीं हुई २ जिन्हों ने वन में क्षत्रियों के हाथ से पिता के घायल करने और मारनेपर युद्ध में अन्यों से विजय न होनेवाले कार्तवीर्य को मारा ३ तब अकेलेनेही मृत्यु के पञ्जे में दबेहुए चौंसठ अयुत हजार क्षत्रियों को एकही धनुष से विजय किया ४ ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवाले उन क्षत्रियों के विध्वंस करने में चौदह हजार को मारा और बहुतों को पकड़कर दन्तकूर को मारा ५ हजारों को मूसल से हजारों को खड्ग से हजारों को फांसी से और हजारों को जल में डुबो २ कर मारडाला ६ हजारों के दाँतों को तोड़कर नाक कानों को काटा इसके पीछे सात हजार को कटु धूमवाली अग्नि में गिराया ७ शेष बचे हुओं

को बांधकर मृतककर उनके मस्तकों को विदीर्णकरके गुणावती के उत्तर खाण्डीववनके दक्षिणओर को युद्ध में मारेहुए लाखोंही क्षत्रिय पृथ्वी में समागये ८ पिता के मरने से महाक्रोध भरे बुद्धिमान् परशुरामजी के हाथ से रथ घोड़े और हाथियों समेत मारेहुए बड़े २ वीर उस स्थान में शयन करनेवाले हुए ९ तब परशुरामजी ने अपने फरसे से दश हज़ार क्षत्रियों को मारा और उन वचनोंको नहीं सहा जोकि उन ब्राह्मणोंसे वारंवार कहेगयेथे १० जब उत्तम ब्राह्मण पुकारे कि हे भृगुवंशिन्, परशुरामजी! दौड़ो उसके पीछे प्रतापवान् परशुरामजी ने काश्मीर, दरद, कुन्ति, क्षुद्रक, ११ अङ्ग, बङ्ग, कलिङ्ग, विदेह, ताम्र, लिप्तक, रक्षोवाह, वीतिहोत्र, त्रिगर्त, मार्तिकावत, शिबि और देश २ के दूसरे हज़ारों राजाओं को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से मारा १२ । १३ क्षत्रियों के लाखों कोटि संहार किये इन्द्र गोपक अर्थात् बीरबहूटी के रङ्गवाले अथवा बन्धुजीव वृक्ष के समान १४ रुधिरों के समूहों से नदियों को पूर्णकरके उन भार्गवजी ने अष्टादश द्वीपों को अपने स्वाधीनकरके १५ उत्तम पूर्ण दक्षिणावाले हज़ारों पवित्र यज्ञों से पूजन किया और आठ ताल वृक्षों के समान ऊंची ब्रह्माजी की बनाई हुई स्वर्णमयी वेदी को सब प्रकार के हज़ारों रत्नों से जटित सैकड़ों पताकारूप माला रखनेवाली ग्रामीण और वन के बसनेवाले पशुओं के समूहों से पूरित उस पृथ्वी को १६ । १७ फिर स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत लाखों गजेन्द्रों को जमदग्निजी के पुत्र परशुरामजी के दियेहुयों को कश्यपजी ने लिया १८ परशुरामजी ने पृथ्वी को चोरों से रहित करके उत्तम अभीष्ट पदार्थों से पूर्ण धरादेवी को बड़े अश्वमेध यज्ञ में कश्यपजी के अर्थ दानकरदिया १९ उस प्रभु पराक्रमी वीर ने इक्कीसबार इस पृथ्वी को क्षत्रियों से रहितकरके और सैकड़ों यज्ञों से पूजन करके ब्राह्मणों के निमित्त दानकिया २० मरीचि के पुत्र कश्यप ब्राह्मण ने सप्तद्वीपा पृथ्वी को दान में लेकर परशुरामजी से कहा कि अब मेरी आज्ञा से आप इस पृथ्वी से बाहर निकलजाओ २१ ब्राह्मण की आज्ञा पालन करनेवाले उस श्रेष्ठ शूरवीर प्रतापी ने कश्यपजी के वचन से बाणों के गिरने के स्थानतक समुद्र को हटाकर २२ पहाड़ों में श्रेष्ठ वायु के समान महेन्द्र पर्वतपर निवासस्थान किया इस रीति से हज़ारों गुणों से सम्पन्न भृगुवंशियों की कीर्ति के बढ़ानेवाले २३ बड़े यशस्वी तेजस्वी परशुरामजी भी

अपने शरीर को त्यागकरेंगे जोकि चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा हैं २४ फिर तू यज्ञ न करनेवाले दक्षिणा देने से रहित अपने पुत्र को मत शोच हे नरोत्तम, सञ्जय! यह सब तुझसे चारों कल्याणों में अधिक किन्तु सैकड़ों कल्याण अधिक रखनेवाले वशहुए ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि, वह राजा सञ्जय सोलह राजाओं के इस आख्यान को जो कि धर्म उत्पन्न करनेवाला और पूर्णायु का करनेवाला है सुनकर बोलता हुआ मौनहुआ १ भगवान् नारदऋषि उस मौन होनेवाले राजा से बोले कि हे बड़े तेजस्विन्! तुमने मेरे कहेहुए इतिहासों को सुनकर अङ्गीकार किया २ अब कहो कि इन इतिहासों के सुनने से यह तेरा शोक ऐसा दूरहुआ जैसा कि शूद्रा स्त्री की पति में श्रद्धा नाशहोती है इस वचन को सुनकर राजा सञ्जय हाथ जोड़कर बोले ३ हे महाबाहो! प्राचीन यज्ञ करनेवाले और दक्षिणा देनेवाले राज ऋषियों के इस धन धान्यादि को देनेवाले उत्तम इतिहास को सुनकर ४ जैसे कि सूर्य के प्रकाश से अन्धकार दूरहोता है उसी रीति से आश्चर्य समेत शोक के दूरहोनेपर पापों से रहित और पीड़ा से विगत हूं अब आप आज्ञाकरें कि मैं क्याकरूं ५ नारदजी बोले कि तुम प्रारब्ध से निःशोक होकर जो चाहते हो सो माँगो वह सब तुमको मिलैगा हम मिथ्यावादी नहीं हैं ६ सञ्जय बोले कि अब जो आप मुझपर प्रसन्न हैं मैं इसीसे बहुत आनन्दित हूं जिसपर आप प्रसन्न हैं उसको कोई वस्तु दुष्प्राप्य नहीं है ७ नारदजी बोले कि यज्ञ के निमित्त संस्कार कियेहुए पशुके समान नरकरूप दुःख से उठाकर तेरे उस पुत्र को फिर देता हूं जोकि चोरोंसे निरर्थक मारागया है ८ व्यासजी बोले कि इसके पीछे प्रसन्नहुए ऋषि का दियाहुआ पुत्र फिर प्रकटहुआ वह पुत्र अपूर्व प्रकाशमान कुबेरके पुत्र के समान था ९ इसके पीछे राजा अपने पुत्रसे मिलकर प्रसन्न हुआ और धर्म उत्पन्न करनेवाले पूर्ण दक्षिणा के यज्ञों से पूजन किया १० वह अभीष्टों को न प्राप्त करनेवाला भयभीत यज्ञों से रहित असन्तान बालक युद्ध में नहीं मारा गया इसी हेतु से वह फिर सजीव हुआ ११ शूरवीर अभीष्टों को प्राप्त करनेवाला अभिमन्यु हज़ारों शत्रुओं को सन्तप्त करके सेना के सम्मुख

माराहुआ होकर गया १२ ब्रह्मचर्य ज्ञानशास्त्र और इष्टिनाम यज्ञोंसे जिन लोकों को जाते हैं तेरा पुत्र उन्हीं अविनाशी लोकों को गया १३ ज्ञानीलोक सदैव धर्म उत्पन्न करनेवाले कर्मों के द्वारा स्वर्ग को चाहते हैं परन्तु इस संसारी पृथ्वी को स्वर्गवासी लोग स्वर्ग से श्रेष्ठ न समझकर नहीं चाहते हैं १४ इस हेतु से युद्ध में माराहुआ स्वर्गवासी अर्जुन का पुत्र यहां लाने के योग्य नहीं है और कोई पदार्थ उसको अपेक्षित नहीं हैं क्योंकि सब उत्तम पदार्थ उसको प्राप्त हैं १५ ध्यान से एकान्त में ब्रह्म का दर्शन करनेवाले योगी जिसको पाते हैं और यज्ञ करनेवाले उत्तम पुरुष जिसको पाते हैं और वृद्धि पानेवाले जिसको तपों के द्वारा पाते हैं उस अविनाशी गति को तेरे पुत्र ने पाया है १६ फिर वह भगवद्भक्त वीर चन्द्रमा की किरणों से राजा के समान समीप वर्तमान है वह अभिमन्यु ब्राह्मणों से वृद्धिपाने के कारण चन्द्रमा के शरीर को प्राप्त हुआ वह शोक के योग्य नहीं है १७ इस प्रकार से जानकर दृढ़चित्तता से शत्रुओं को मार धैर्य को प्राप्तकरो हे निष्पाप ! हम जीवतेही शोचने के योग्य हैं और स्वर्ग में पहुँचे हुए जीवधारी तो कभी भी शोचने के योग्य नहीं हैं १८ हे महाराज ! शोच करने से पाप ही बढ़ता है इस हेतु से मनुष्य अपने शोक को त्यागकरके अपने कल्याण के निमित्त उपायकरे १९ बड़ी प्रसन्नता ज्ञान और सुख की प्राप्ति का विचारकरे बुद्धिमानों ने इसको जानकर कल्याण को कहा है शोक कल्याण नहीं कहा जाता है २० हे ज्ञानिन्! तुम इसप्रकार से उठो और नियम के धारण करनेवाले होकर शोच को त्यागकरो तुमने मृत्यु के प्रतापों को अनुपम उपमाओं से युक्त दृष्टान्त समेत सुना २१ और सब ऐश्वर्य विनाशवान् हैं यह भी सुना और मराहुआ और फिर सजीवहुए सञ्जय के पुत्र को भी सुना २२ हे ज्ञानिन्, महाराज ! तुम इस प्रकार से शोच मतकरो मैं अब जाता हूं इतना कहकर भगवान् व्यासऋषि उसी स्थान पर गुप्त होगये २३ युधिष्ठिर को इसरीति से समाश्वासन करके उन वक्ताओं में श्रेष्ठ भगवान् बुद्धिमानों में श्रेष्ठ स्वच्छ अभ्र के समान प्रकाशित व्यासजी के चले जानेपर २४ महेन्द्र के समान तेजस्वी न्याय से धन उपार्जन करनेवाले प्रथम महाराजाओं के यज्ञों के धनोंको सुनकर २५ चित्त से प्रशंसा करताहुआ वह ज्ञानी युधिष्ठिर शोक से रहित हुआ परन्तु फिर भी उसके दुःखी मनने चिन्ताकरी कि मैं अर्जुनसे क्या कहूंगा ॥२६॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र! उस भयकारी जीवों के नाश करने वाले दिन के समाप्त होने और श्रीमान् सूर्य के अस्त होने संध्याकाल वर्तमान १ होने और निवास के लिये सबके चले जाने पर हनुमान्जी की ध्वजा रखने वाला अर्जुन दिव्य अस्त्रों से संसप्तकों के समूहों को मारकर २ अपने विजयी रथपर सवार होकर अपने डेरों को आया अश्रुपातों से पूर्ण गद्गदकण्ठ अर्जुन चलता हुआ गोविन्दजी से बोला कि हे केशवजी! मेरा हृदय क्यों भयभीत होता है ३ और वचन रुकता है और अप्रिय अशुभ शकुन दिखाई देते हैं और शरीर में क्लेश प्राप्तहोता है ४ और मेरा अप्रियदुःख हृदयसे दूर नहीं होता है पृथ्वी और दिशाओं में जो अत्यन्त भयकारी उत्पात हैं वह मुझको भयभीत करते हैं ५ वे सब उत्पात अनेकप्रकार के दुःखों के सूचक दिखाई पड़ते हैं मन्त्रियों समेत मेरे गुरुरूप राजायुधिष्ठिर की कुशल होय ६ वासुदेवजी बोले कि प्रकट है कि मन्त्रियोंसमेत तेरे भाई का कल्याण होगा शोच मतकर वहां औरही कुछ अशुभ और अप्रिय होगा ७ सञ्जय बोला कि इसके पीछे दोनों वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन वीरों का मरणभूमि में सन्ध्या की उपासनाकरके रथ में नियत होकर युद्ध के वृत्तान्तों को कहते हुए चले ८ इसके अनन्तर वासुदेवजी और अर्जुन अत्यन्त कठिन कर्म को करके अपने उन डेरों में पहुँचे जोकि आनन्द से रहित अप्रकाशमान थे ९ उसके पीछे शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला हृदय से व्याकुल अर्जुन डेरे को नाशवान्रूप देखकर श्रीकृष्णजी से बोला १० कि हे जनार्दनजी! अब दुन्दुभियों के शब्दसे संयुक्त प्रसन्नता के बाजे और आनन्द के शब्दों समेत शङ्ख भी नहीं बजते हैं ११ अब शम्याताल के शब्दों समेत वीणा नहीं बजती हैं और आनन्द के गीतों को भी कोई नहीं गाते हैं १२ और मेरी सेनाओं में वन्दीजन प्रशंसा से युक्त चित्तरोचक स्तुतियों को नहीं पढ़तेहैं और शूरवीर भी मुझको देखकर नीचाशिर किये हुए लौटे जाते हैं १३ और पूर्व के समान कर्मों को करके मुझ आयेहुए को प्रतिष्ठा नहीं करते हैं अर्थात् अभ्युत्थान नहीं देते हैं हे माधवजी! अब मेरे भाइयों की भी कुशल होय १४ अपने मनुष्यों को व्याकुल देखकर मेरे चित्त की व्याकुलता दूर नहीं

होती है हे बड़ाई देनेवाले ! राजा पाञ्चाल और विराट के सब शूरवीरों की भी सामग्रता अर्थात् मुलाकात मुझसे होय हे अविनाशिन् ! अब भाइयों समेत अत्यन्त प्रसन्न अभिमन्यु १५ मुझ युद्ध से आये हुए प्रसन्नचित्त के सम्मुख हँसता हुआ नहीं आता है १६ सञ्जय बोले कि इस प्रकार से कहतेहुए और अपने डेरे में प्रवेश करनेवाले उन दोनोंने महाव्याकुल और अचेत सब पाण्डवों को देखा १७ हनुमान्जी की ध्वजा रखनेवाला अर्जुन भाइयों को उदास-चित्त देख और अभिमन्यु को न देखकर यह वचन बोला १८ कि तुम सबोंके मुख का वर्ण अप्रसन्न दिखाई देता है और अभिमन्यु को नहीं देखता हूं और तुम मुझको प्रसन्न नहीं करते हो १९ मैंने सुना है कि द्रोणाचार्यने चक्रव्यूह बनाया २० और उस बालक अभिमन्यु के विना तुम सबमें उस व्यूह को तोड़नेवाला कोई नहीं था परन्तु मैंने सेना से बाहर निकलना उसको नहीं सिखलाया था क्या तुमलोगों ने उस बालक को शत्रुओं की सेनामें प्रवेशित तो नहीं किया २१ वह बड़ा धनुषधारी शत्रुओंके वीरों का मारनेवाला अभिमन्यु युद्ध में शत्रुओं की बहुत सी सेना को पराजय करके युद्ध में मारा तो नहीं गया २२ वह लालनेत्र बड़ी भुजावाला पर्वतों में उत्पन्न हुए सिंह के समान विष्णु के समान कहो कि किस प्रकार से युद्धभूमि में मारागया २३ उस सुकुमार बड़े धनुषधारी इन्द्र के पौत्र सदैव मेरे प्यारे का वर्णन करो कि वह कैसे २ युद्ध में मारागया २४ मृत्यु से अचेत होकर किस पुरुष ने उस सुभद्रा के प्यारे पुत्र और सदैव द्रौपदी व केशवजी अथवा अम्बा माता के प्यारे को मारा २५ पराक्रम शास्त्र बुद्धि की प्रबलता से वृष्णियों के वीर महात्मा केशवजी क स-मान अभिमन्यु कैसे २ युद्धभूमि में मारागया २६ यादवी सुभद्रा के प्यारे और आप से सदैव पोषण पायेहुए शूरवीर पुत्र को जो नहीं देखता हूं तो यमलोक को जाऊंगा २७ मृदु और घूंघरवाले बालों से युक्त मृगशावक के समान नेत्रवाले मतवाले हाथी के समान पराक्रमी सिंहके बच्चे के समान उन्नत २८ बालक मन्द मुसकान के साथ बोलनेवाले जितेन्द्रिय सदैव गुरुपरायण बाल्यावस्था में भी बड़े कर्मवाले ईर्षा से रहित प्रियभाषी २९ महोत्साह महाबाहु दीर्घनेत्र भक्तोंपर दया करनेवाले शिक्षित नीचों के सङ्ग से रहित ३० कृतज्ञ ज्ञानी अस्त्रज्ञ वृद्धों के आज्ञाकारी सदैव युद्धाभिनन्दन शत्रुओं के भय के बढ़ानेवाले ३१ । ३२

इष्ट, मित्र, जाति, कुटुम्ब, नातेदार आदि के प्रिय बातों की वृद्धि में प्रवृत्त पि-
ताओं की विजयों का अभिलाषी प्रथम न मारनेवाले युद्ध में निर्भय ३३।३४
ऐसे पुत्र को जो नहीं देखता हूं तो मैं यमलोक को जाऊंगा सुन्दर नासिका,
उत्तम ललाट, कन्ध, नेत्र, भृकुटी, दाँतों की सुन्दर पंक्तिवाले ३५ उस मुख को
न देखतेहुए मेरे हृदय की क्या शान्ति होसक्ती है ३६ और उस वीर की उस
अनुपम शोभा को जोकि देवताओं को भी कठिनता से प्राप्त होसक्ती है ३७ न
देखते हुए मेरे हृदय की कैसे शान्ति होसक्ती है प्रणाम करने में सावधान और
पिताओं के वचन में प्रीति करनेवाले उस अभिमन्यु को जो मैं अब नहीं दे-
खता हूं ३८ तो मेरे हृदय की क्या शान्ति है वह सुकुमार वीर बड़े मूल्य के
शयनस्थान के योग्य ३९ सनाथों में श्रेष्ठ अनाथ के समान निश्चय करके
पृथ्वीपर सोता है पूर्वसमय में उत्तम स्त्रियां जिस शयन करनेवाले की उपासना
करती थीं ४० अब उस अत्यन्त घायल शरीरवाले के शरीर की अशुभ शृगाल
उपासना करते हैं प्रथम जो सोया हुआ सूत मागध और वन्दीजनों से जगाया
जाता था ४१ अब निश्चय करके उसको कुत्ते और शृगाल अपने अशुभ
शब्दों से जगाते हैं उसका वह शुभ मुख छत्र की छाया के योग्य था ४२ अब
युद्धभूमि की धूलि उसको भस्म से मिश्रित करेगी ४३ हा पुत्र, प्रियदर्शनीय,
सदैव मेरे देखने के उत्सुक ! हे अभागे के पुत्र ! तू काल के पराक्रम से खैंचा
जाताहै निश्चय करके सदैव शुभकर्म करनेवालों की गति वह यमपुरी ४४
जोकि अपने प्रकाशों से प्रसन्नतापूर्वक सुन्दरहै तुझसे अत्यन्त शोभा पाती है
निश्चय तुझ निर्भय प्यारे अतिथि पाये हुए को यमराज वरुण ४५ इन्द्र और
कुबेर पूजन करते हैं जैसे कि वह व्यापारी जिसका जहाज टूटगया हो हाय २
कर पुकारे उसी प्रकार अनेक प्रकार का विलापकरके ४६ बड़े दुःख से भरेहुए
अर्जुन ने युधिष्ठिर से पूछा कि हे कुरुनन्दन ! वह अभिमन्यु शत्रुओं का नाश
करके ४७ युद्ध में सम्मुखहुए नरोत्तमों से युद्ध करताहुआ स्वर्ग को गया
निश्चयकरके उपाय करनेवाले बहुत नरोत्तमों से लड़ते ४८ उस असहाय
और सहायता चाहनेवाले ने मुझको स्मरण किया मेरा पुत्र अभिमन्यु कर्ण,
द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि बड़े २ वीरों के तीक्ष्ण बाणों से पीड्यमान ४९
नाना प्रकार के रूपयुक्त अत्यन्त साफ नोकवाले बाणों से अचेत हो इस स्थान

पर मेरा पिता रक्षक होय ५० इस प्रकार वारंवार विलाप करता हुआ निर्दय लोगों के हाथ से गिराया गया मैं यह मानता हूं कि मेरा पुत्र अथवा माधवजी का भानजा ५१ सुभद्रा में जन्म लेनेवाला इसरीति से कहने के योग्य नहीं है निश्चयकरके मेरा वज्र के समान हृदय अत्यन्त कठोर है ५२ जो लम्बी भुजा और रक्तनेत्रवाले अभिमन्यु को विना देखते हुए नहीं फटता है ५३ उन बड़े धनुषधारी मर्मस्थलों के भेदन करनेवाले निर्दयलोगों ने किस प्रकार उस बालक पर जोकि वासुदेवजी का भानजा और मेरा पुत्र था बाणों को छोड़ा जो साहसी सदैव शत्रुओं को मारकर समीप आयेहुए मुझको देखकर अभिवादनकरके प्रतिष्ठा करता था ५४ वह अब मुझको क्यों नहीं देखता है निश्चय वह गिराया हुआ रुधिर में भरा पृथ्वी पर सोता है ५५ और सूर्य के समान पृथ्वी को शोभित करता हुआ सोता है मैं उस सुभद्रा को शोचता हूं जो युद्ध में मुख न फेरनेवाले पुत्र को ५६ युद्ध में मरा हुआ सुनकर शोक से नाश को पावेगी सुभद्रा और द्रौपदी अभिमन्यु को न देखकर मुझको क्या कहेंगी और मैं उन दुःख से पीड्यमान उसकी माताओं से क्या कहूंगा ५७ । ५८ निश्चय मेरा हृदय वज्र है जो शोक से पूर्ण रोतीहुई बधू को देखकर हजारों टुकड़े नहीं होता है मैंने धृतराष्ट्र के अहङ्कारी पुत्रों के सिंहनाद सुने ५९ और श्रीकृष्णजी ने वीरों को कठोर वचन कहता हुआ युयुत्सु को सुना हे महारथियो ! अर्जुन को न सहकर तुम बालक को मारकर ६० क्या प्रसन्न होते हो हे धर्म के न जाननेवाले ! तुम पाण्डव अर्जुन के पराक्रम को देखो युद्ध में उन केशवजी और अर्जुन के अप्रिय को करके ६१ शोक का समय वर्तमान होनेपर प्रसन्न हो होकर तुम सिंह के समान क्या गर्जते हो इस बुरे कर्म का फल तुमको शीघ्रही मिलैगा ६२ निश्चयकरके तुमलोगों ने बड़ा कठिन अधर्म किया वह कैसे विलम्बतक निष्फल होसक्ता है निश्चयकरके बड़ा बुद्धिमान् क्रोध और शोक से युक्त वेश्या का पुत्र उनसे कहता हुआ शस्त्रों को छोड़कर हटगया हे श्रीकृष्णजी ! आपने युद्ध में किस कारण यह मुझको नहीं कहा ६३ । ६४ मैं उसी समय उन निर्दयी महारथियों को भस्मकरता सञ्जय बोले कि वासुदेव श्रीकृष्णजी उस पुत्र के शोक से पीड्यमान अश्रुपातों से पूर्णनेत्र पुत्र के दुःखों से भरे शोक से संयुक्त ध्यान करनेवाले उस अर्जुन

को पकड़कर ६५ यह बोले कि तुम इस रीति से शोक मतकरो मुख न मोड़ने वाले शूरों का यही मार्ग है ६६ मुख्य करके युद्ध से जीविका रखनेवाले मुख न फेरनेवाले शूरवीर क्षत्रियों की शास्त्रज्ञलोगों ने यही गति वर्णन की है ६७ और ऐसे मुख न मोड़कर लड़नेवाले शूरों का मरना युद्ध ही में होता है ६८ निश्चय अभिमन्यु पवित्रकर्मी पुरुषों के लोकों को गया हे भरतर्षभ! सब वीरों की यही चित्त की इच्छा है ६६ कि युद्ध में सम्मुख होकर मृत्यु को पावें हे प्रतिष्ठा के देनेवाले! वह अभिमन्यु वीरों समेत बड़े २ राजकुमारों को मारकर ७० युद्ध में सम्मुख होनेवाले वीरों की चाही हुई मृत्यु को प्राप्त करनेवाला हुआ हे पुरुषोत्तम! शोच मतकर युद्धमें क्षत्रियों को नाशरूप यह सनातन पूर्व के धर्म करनेवालों से नियत किया गया है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! ये तेरे सब भाई महादुःखी हैं ७१ । ७२ और तेरे शोकयुक्त होने पर राजालोग और तेरे मित्रवर्ग आदिक शोकसे युक्त हैं हे प्रतिष्ठा करनेवाले! तुम उनको अपने विश्वस्त वचनों से आश्वासन करो ७३ जो जानने के योग्य है वह तेरा जाना हुआ है शोक करने के योग्य नहीं है उन अपूर्वकर्मी श्रीकृष्णजी से ऐसा विश्वासित और आश्वासन कियाहुआ अर्जुन ७४ उन गद्गद कण्ठवाले सब भाइयों से बोला कि वह लम्बी भुजा बड़े स्कन्ध कमललोचनवाला अभिमन्यु ७५ जैसे वृत्तान्तवाला है मैं उसको वैसाही यथार्थ सुना चाहता हूं मेरे पुत्रके उन शत्रुओं को इष्ट मित्र, भाई, बन्धु, नातेदार आदिक समेत घोड़े हाथी और रथों समेत युद्ध में मेरे हाथ से मरेहुए देखोगे अस्त्रज्ञ और अस्त्रधारी तुमलोगों के समक्ष में ७६।७७ किसरीति से इन्द्र से घायल भी अभिमन्यु नाश को पावे जो मैं इस प्रकार अपने पुत्र की रक्षा में पाण्डव और पाञ्चालों को असमर्थ जानता तो वह मुझसे रक्षित होता बाणों की वर्षा करते रथ में सवार तुमलोगों का किस प्रकार ७८।७६ अनादर करके शत्रुओं के हाथ से अभिमन्यु मारागया आश्चर्य है कि तुम्हारा उद्योग और उपाय नहीं है न तुम्हारा पराक्रमहै ८० जिस स्थानपर युद्ध में तुम्हारे देखतेहुए युद्ध में अभिमन्यु गिराया गया मैं अपनी निन्दा करूं कि जो अत्यन्त निर्बल ८१ भयभीत और निश्चय न करनेवाले तुम लोगों को जतलाकर चलागया ॥ दुःख की बात है कि तुम्हारे कवच और शस्त्रादि शोभाही के दिखानेवाले हैं ८२ मेरे पुत्र की रक्षा न करनेवालों

के वचन अच्छेलोगों के मध्य में कहने के योग्य हैं इस प्रकार वचन को कहकर धनुष और उत्तम खड्गको धारण करनेवाला नियत ८३ अर्जुन किसी के देखने को समर्थ नहीं हुआ सुहृदजन लोग उस मृत्यु के समान क्रोध से पूर्ण वारंवार श्वासलेनेवाले ८४ पुत्र के शोकसे दुःखी अश्रुपातों से व्याप्त मुखवाले अर्जुन के उत्तर देने को अथवा देखने को ८५ वासुदेवजी और बड़े पाण्डुनन्दन युधिष्ठिर के सिवाय कोई समर्थ नहीं हुआ वह दोनों सब दशा में प्रिय करनेवाले और अर्जुन के मन के अनुसार थे ८६ वही दोनों बड़े मान और प्रीति से इससे बोलने को समर्थ हैं इसके पीछे पुत्र के शोकसे अत्यन्त दुःखीमन ८७ कमललोचन क्रोध से भरेहुए उस अर्जुनसे राजा युधिष्ठिर वचन को बोले ॥ ८८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि, हे महाबाहो ! संसप्तकों की सेना में तेरे जानेपर आचार्य ने मेरे पकड़ने में बड़ाभारी कठिन उपाय किया १ हम सबों ने भी रथ की सेना को अलंकृत करके उसप्रकार के उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य को युद्ध में रोका २ मेरे रक्षित होनेपर रथियों से रुकेहुए वह द्रोणाचार्य तीक्ष्ण बाणों से पीड्यमान करतेहुए शीघ्रही हमारे सम्मुख आये ३ द्रोणाचार्य से पीड्यमान वह सब वीर युद्धभूमि में द्रोणाचार्य की सेना के देखने को भी समर्थ नहीं हुए तो उसके पराजय करने को कहां से समर्थ होते ४ हे समर्थभाई ! फिर हम सब ने उस पराक्रम में असादृश्य अभिमन्यु से कहा कि इस सेना को पराजयकर ५ उस पराक्रमी उत्तम घोड़े के समान और हम से उस प्रकार आज्ञा पायेहुए ने सहने के अयोग्य उस भार को भी उठाना प्रारम्भ किया ६ तेरे अस्त्रों की शिक्षा और पराक्रम से संयुक्त वह बालक उस सेना में ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि समुद्र में गरुड़जी प्रवेश करजाते हैं ७ हम युद्ध के मध्य सेना में प्रवेश करने के अभिलाषी उस यादवी के पुत्र वीर अभिमन्यु के पीछे उसी मार्ग से चले जिस मार्ग से कि वह सेना में गया था ८ हे तात ! इसके अनन्तर सिन्धु के राजा नीच जयद्रथने रुद्रजी के वरदान से हम सब को रोका ९ उसके पीछे द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, कौशिली, कृतवर्मा इन छः रथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से रोका १० वह बड़े पराक्रमसे उपायकरने ल य

सब महारथियों से घिरकर विरथ कियागया ११ इसके पीछे उन महारथियों से विरथ कियेहुए अभिमन्यु को दुश्शासनके पुत्रने बड़े संशयको पाकर मारा१२ वह अभिमन्यु मनुष्य, घोड़े, रथ और हजारों हाथियों को मारकर अर्थात् आठ हजार रथ नौसै हाथी १३ दो हजार राजकुमार और दृष्टि में न आनेवाले बहुत से वीरों को और राजा बृहद्बल को युद्धभूमि से स्वर्ग में भेजकर १४ फिर बड़े धर्मात्मा ने मृत्यु को पाया हमारे शोक का बढ़ानेवाला यही वृत्तान्त है १५ हे पुरुषोत्तम ! उसने इस प्रकार से स्वर्गलोक को पाया इसके पीछे अर्जुन धर्मराज के कहेहुए वचन को सुनकर १६ हाय पुत्र ! इस प्रकार वह बड़ी२श्वासों को लेताहुआ महापीड़ित होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा फिर व्याकुलचित्त होकर वह सब भाई बन्धुआदिक वीर अर्जुन को चारों ओर से घेरकर १७ महादुःखी मन पलक न मारनेवाले नेत्रों से परस्पर देखनेलगे इसके पीछे क्रोधसे मूर्च्छावान् इन्द्र का पुत्र अर्जुन चैतन्यता को पाकर ज्वर से कम्पायमान के समान वारंवार श्वासों को लेताहुआ हाथ को हाथ में पीसकर श्वास लेता अश्रुपातों से पूर्णनेत्र १८।१९ उन्मत्त के समान देखकर इस वचन को बोला कि मैं तुम से सत्य २ प्रतिज्ञा करता हूं कि कलही जयद्रथ को मारूंगा जो वह मरने के भय से डराहुआ होकर धृतराष्ट्र के पुत्रों को त्याग नहीं करेगा २० हे महाराज ! जो वह हमारी अथवा पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी की व आपकी शरण में नहीं आवे तो कल उस जयद्रथ को अवश्य मारूंगा २१ मैं उस दुर्योधन के प्रिय करने वाले और मेरी प्रीति को भूलजानेवाले और बालक के मारने के मुख्य कारणरूप जयद्रथ को कल मारूंगा २२ हे राजन् ! जो कोई युद्ध में उसकी रक्षाकरने वाले और द्रोणाचार्य कृपाचार्यजी भी जो मुझ से युद्ध करेंगे तो मैं उनको भी बाणों से ढकूंगा २३ हे पुरुषोत्तमो ! जो मैं युद्ध में इस प्रकार कियेहुए प्रण को नहीं करूं तो धर्म उत्पन्न करनेवाले कर्म से प्रकट शूरों के लोकों को नहीं पाऊं २४ माता पिता के मारनेवालों के जो लोक हैं अथवा गुरु की स्त्री से सम्भोग करनेवालों के जो लोक हैं सदैव दुःख देनेवालों के जो लोक हैं २५ साधुओं के गुणों में दोष लगानेवालों के जो लोक हैं परोक्ष निन्दा करनेवालों के जो लोक हैं किसी की धरोहर मारनेवालों के जो लोक हैं विश्वासघातियों के जो लोक हैं २६ ब्राह्मण मारनेवालों के जो लोक हैं और गोवध करनेवालों

के भी जो लोक हैं २७ खीर यव आदि के भोजन शाक, कृसर, संयाव, पूप, मांस और निरर्थक मांस खानेवालों के जो लोक हैं २८ मैं एकही दिन में उन लोकों को जाऊं जो जयद्रथ को नहीं मारूं वेद के बहुत पढ़नेवाले तेज व्रत वाले उत्तम ब्राह्मण २९ वृद्ध साधु और गुरुलोगों का अपमान करनेवाले जिन लोकों को जाते हैं और चरण से अग्नि गौ और ब्राह्मण के छूनेवालों की जो गति होय ३० और जल में थूक मूत्र और विष्ठा छोड़नेवालों की जो गति है उस दुःखरूप गति को पाऊं जो जयद्रथ को न मारूं ३१ नंगे स्नान करनेवाले की और बन्ध्या के अतिथि की जो गति है उत्कोची अर्थात् घूस लेनेवाले मिथ्यावादी और छलीलोगों की जो गति है ३२ आत्मघात करनेवालों की जो गति है मिथ्याभाषण करनेवालों की जो गति है नौकर पुत्र स्त्री और शरणागतलोगों के साथ विवाद करनेवालों की जो गति है ३३ और मिष्टान्न को विना विभाग करके खानेवालों की जो गति है इन सब भयकारी गतियों को पाऊं जो मैं जयद्रथ को न मारूं ३४ जो निर्दयचित्तवाला अपने आज्ञाकारी साधु और शरणागत को भी त्यागकरके पोषण नहीं करता है और उपकार करनेवालों की निन्दा करता है ३५ जो प्रातःकाल का समय वेश्या के निमित्त देता है और श्राद्ध को नहीं करता है और जो अयोग्य ब्राह्मणों के निमित्त दे और वृषलीपति के अर्थ दे ३६ और जो मद्यपीनेवाला बेमर्याद और उपकार को भूलनेवाला और स्वामी की निन्दा करनेवाला है मैं उन सबकी गतियों को शीघ्रही पाऊं जो जयद्रथ को नहीं मारूं ३७ वामहाथ से भोजन करनेवाले और गोदी में रखकर खानेवालों की भी जो गति है और पलाश का आसन और तिन्दुक की दातून को ३८ त्यागन करनेवालों के जो लोक हैं और प्रातःकाल सायङ्काल के समय सोनेवालों के जो लोक हैं जो ब्राह्मण शीत से भयभीत और क्षत्रिय युद्ध से भयभीत हैं उनके ३९ और वेदध्वनि से रहित और एकही कूप के जल से निर्वाह करनेवाले गांव में छः महीने निवास करनेवालों के जो लोक हैं उसी प्रकार शास्त्र की अधिक निन्दा करनेवालों के जो लोक हैं ४० जो लोक कि दिनमें स्त्री सङ्ग करनेवालों के हैं और जो दिनमें सोते हैं उनके और घरों में अग्नि लगानेवालों के और विष देनेवालों के जो लोक मानेगये हैं ४१ अग्नि के पूजने से रहित गौ के जलपान करने में विघ्न करने

वाले रजस्वला से भोग करनेवाले मूल्य लेकर कन्यादान करनेवाले ४२ और धर्म से विरुद्ध जो अन्य २ लोग यहां नहीं कहेगये और जो कहेगये उन सबों की गति को मैं जल्दी से पाऊं ४३ जो रात्रि व्यतीत होने पर कल के दिन जयद्रथ को नहीं मारूं इसके विशेष मेरी इस दूसरी प्रतिज्ञा को भी जानो ४४ बहुत से मनुष्यों को यज्ञ करानेवाले श्वानिवृत्ति रखनेवाले ब्राह्मणों की जो गति है और मुख से सम्भोग करनेवालों की जो गति है और जो दिन के सम्भोग करने में प्रवृत्तचित्त हैं जो ब्राह्मण से प्रतिज्ञा करके लोभ से फिर नहीं देते हैं उनकी गति को पाऊं जो कल जयद्रथ को न मारूं ४५। ४६ जो इस पापी के मरने पर सूर्य अस्त होजायगा तो मैं इसी स्थानपर प्रकाशित अग्नि में प्रवेश करजाऊंगा ४७ असुर, देवता, मनुष्य, पक्षी, सर्प, पितृ, राक्षस, ब्रह्मऋषि, देवऋषि और यह जड़ चैतन्य जीव भी और इनसे भी परे हैं वह भी मेरे शत्रु की रक्षा करने को समर्थ नहीं हैं ४८ जो वह रसातल, अग्नि, आकाश, देवताओं के पुर और असुरों के पुर में प्रवेश करजाय तौ भी मैं प्रातःकाल बाणों के समूहों से उस अभिमन्यु के शत्रु का शिर काटूंगा ऐसे कहकर अपने गाण्डीव धनुष को दाहें बायें फिराया तब धनुष के शब्द ने उसके शब्द को उल्लङ्घन करके आकाश को स्पर्श किया ४९। ५० अर्जुन के इस प्रतिज्ञा के करनेपर श्रीकृष्णजी ने अपने पाञ्चजन्य शङ्ख को बजाया और अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने अपने देवदत्त शङ्ख को बजाया ५१ श्रीकृष्णजी के मुख की वायु से अत्यन्तपूरितउदर और ध्वनि उत्पन्न करनेवाले पाञ्चजन्य शङ्ख ने जगत् को पाताल आकाश और दिगीश्वरों समेत ऐसे कम्पायमान किया जैसे कि प्रलय के समय संसार कम्पित होता है ५२ इसके पीछे उस महात्मा के प्रतिज्ञा करनेपर पाण्डवों के सिंहनाद और हजारों बाजोंके शब्द प्रकट हुए॥ ५३॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७३॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, वहां जयद्रथ दूतों के मुख से इस वृत्तान्त को जानकर और विजयाभिलाषी पाण्डवों के उस बड़े शब्द को सुनकर १ अपने स्थान से उठके शोक से अज्ञानरूप दुःख से भराहुआ अथाह शोकसमुद्र में डूबाहुआ २ बहुत शोच को करता सिन्धुका राजा जयद्रथ राजाओं की सभा में गया और वहां

जाकर उसने उन राजाओं के सम्मुख विलाप किया ३ अभिमन्यु के पिता से भयभीत और लज्जायुक्त होकर इस वचन को बोला निश्चयकरके जो यह अर्जुन पाण्डु के क्षेत्रमें कामी इन्द्रसे उत्पन्न हुआ ४ वह निर्बुद्धि मुझ अकेले को निश्चय यमलोक में पहुँचाया चाहता है इस हेतु से मैं प्रणाम करता हूं आप का कल्याण होय मैं अपने जीवन की अभिलाषा से अपने घर को जाऊंगा हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ ! अस्त्रों के बल रखनेवाले अर्जुन से चाहेहुए मुझको तुम सब मिलकर मेरी रक्षा करो हे वीरलोगो ! तुम मुझको अभयदान दो ५।६ द्रोणाचार्य, दुर्योधन, कृपाचार्य, कर्ण, शल्य, बाह्लीक और दुश्शासनादिक मुझ मृत्यु से पीड्यमान की रक्षा करने को समर्थ हैं ७ हे मित्रो ! आप सब पृथ्वी के स्वामी इस मारने के अभिलाषी अकेले अर्जुन से क्या मेरी रक्षा नहीं करसके हो ८ पाण्डवों की बड़ी प्रसन्नता को सुनकर मुझको बड़ा भय है, हे राजाओ ! मरने के अभिलाषी मनुष्य के समान मेरे अङ्ग शिथिल होते हैं ९ निश्चय करके गाण्डीवधनुषधारी ने मेरे मारने का प्रण किया है और इसी प्रकार दुःख के समय प्रसन्न होकर पाण्डवों ने शब्द किये १० वहां देवता, गन्धर्व, असुर, सर्प और राक्षस भी उसकी प्रतिज्ञा मिथ्या करने को समर्थ नहीं होसक्ते हैं फिर राजालोग कैसे करसक्ते हैं ११ इस निमित्त हे राजालोगो ! आपका भला हो आप सब मुझको आज्ञा दो कि मैं भागकर ऐसा गुप्त होजाऊंगा जहां पाण्डव मुझ को न देखसकेंगे राजा दुर्योधन अपने कार्य की महत्त्वता से उस महाव्याकुल विलाप करनेवाले भयसे पीड़ित चित्तवाले जयद्रथ से बोले १२।१३ कि हे नरोत्तम ! तुमको भय न करना चाहिये हे पुरुषोत्तम ! कौन सा वीर युद्ध में क्षत्रियों के मध्य में नियत हुए तुझको अपने आधीन करसक्ता है १४ मैं और सूर्य का पुत्र कर्ण, चित्रसेन, विविंशति, भूरिश्रवा, शल्य और दुःख से सम्मुखता के योग्य वृषसेन १५ पुरु, मित्रोजय, भोज, काम्बोज, सुदक्षिण, सत्यव्रत, महाबाहुविकर्ण, दुर्मुख, दुश्शासन, सुबाहु और शस्त्रधारी राजा कालिङ्ग, विन्द, अनुविन्द, अवन्ती देश के राजालोग, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, शकुनी १६ । १७ यह सबलोग और दूसरे नानादेशों के राजा और हे राजा सिन्धु ! आप भी रथियों में श्रेष्ठ शूरवीर हो सो तुम किस प्रकार पाण्डवों करके भय को करते हो १८।१९ मेरी ग्यारह अक्षौहिणी सेना तेरी रक्षा में कुशल होकर

युद्ध करेगी हे सिन्धु के राजन् ! तुम भय मत करो तुम्हारा भय दूरहोय २० सञ्जय बोले कि हे राजन्! आपके पुत्र से इस रीति पर विश्वासित कियाहुआ सिन्धु का राजा जयद्रथ दुर्योधन समेत रात्रि के समय द्रोणाचार्य के समीप गया २१ वहां जाकर उसने द्रोणाचार्य के चरणों में दण्डवत् करके बड़ी नम्रता से समीप बैठकर इस बात को पूछा २२ कि हे भगवन्! लक्ष्यभेदन करना दूर गिराना हस्तलाघवता और दृढ़ घायल करने में अर्जुन का अधिक गुण मुझसे कहो २३ हे आचार्यजी! मैं मूल समेत उस अर्जुन की और आपकी सब विद्याओं को जानना चाहता हूं आप अपनी और अर्जुन की ठीक २ सम्पूर्ण विद्या को वर्णन करो २४ द्रोणाचार्य बोले कि हे तात! तेरी और अर्जुन की शिक्षा समानहै परन्तु योग और दुःख के सहने में अर्जुन तुझसे अधिक है २५ तुझको किसी दशा में भी अर्जुन से भय न करना चाहिये हे तात! मैं तुझको निस्सन्देह भयसे रक्षा करूंगा २६ देवता भी मेरे भुजों से रक्षित पर प्रबल नहीं होसक्ते हैं मैं उस व्यूह को तैयार करूंगा जिसको कि अर्जुन नहीं तरसकेगा२७ इस हेतु से तुम युद्ध करो भय मत करो अपने धर्मका पालन करो हे महारथिन्! तुम बाप दादे के मार्ग पर चलो २८ तुम ने बुद्धि के अनुसार वेदों को पढ़कर अग्नियों में अच्छी रीति से हवन किया है और बहुत से यज्ञों से भी पूजन किया है तेरी मृत्यु भय की उत्पन्न करनेवाली नहीं है २९ नीच मनुष्यों से दुष्प्राप्य बड़े प्रारब्धको पाकर भुजबल से विजय होकर उत्तम लोकों को पावेगा ३० कौरव पाण्डव और यादव और जो दूसरे मनुष्य हैं और मैं भी अपने पुत्र समेत सब विनाशवान् हैं यह विचार करो ३१ हम सब क्रमपूर्वक पराक्रमी काल से घायल हुए पड़े हैं अपने २ कर्म से संयुक्त होकर परलोक को जायँगे ३२ तपस्वी तपस्याओं को करके जिन लोकों को पाते हैं उन लोकों को क्षत्रियलोग क्षत्रियधर्म में प्रवृत्त होकर प्राप्त करते हैं ३३ भारद्वाज द्रोणाचार्य के इस प्रकार के समझाने और दृढ़ता करने के कारण से राजा जयद्रथ ने अर्जुन से भय को दूरकिया और युद्ध में चित्त को लगाया ३४ हे राजन्! इसके पीछे आपकी सेनाओं को भी बड़ी प्रसन्नता हुई और सिंहनादों के शब्दों समेत बाजों की कठिन ध्वनि हुई ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, तब सिन्धु के राजा के मारने में अर्जुन की प्रतिज्ञा होने पर महाबाहु वासुदेवजी अर्जुन से बोले १ कि तुमने भाइयों के मतको न जान कर अपने वचनों से प्रतिज्ञाकरी कि मैं जयद्रथ को मारूंगा यह तुमने विना विचार के कर्म किया २ और मुझ से सलाह न करके कठिन बोझे को उठाया हम किस प्रकार से सब लोक के योग्य पढ़ेहुए न होवें ३ मैंने दुर्योधन के डेरों में दूत नियत किये वह दूत बड़ी शीघ्रतासे आकर इस वृत्तान्त को कहते हैं ४ कि हे समर्थ ! सिन्धु के राजा के मारने की तेरी प्रतिज्ञा करने पर उन लोगों से कियेहुए बड़े सिंहनाद बाजों समेत सुने गये ५ धृतराष्ट्र के पुत्र जयद्रथ समेत उस शब्द को सुनकर भयभीत हुए कि यह सिंहनाद निहेतुक नहीं है यह मान कर नियतहुए ६ हे महाबाहो ! कौरवों के बड़े शब्द का भी प्रादुर्भाव हुआ और हाथी, घोड़े, पत्ति और रथों के शब्द बड़े भयकारी हुए ७ अर्जुन निश्चय करके अभिमन्यु के मरण को सुनकर पीड़ावान् होकर रात्रिही में क्रोधयुक्त होकर सम्मुख आवेगा यह समझकर सब नियत हुए ८ हे कमलवत् नेत्रवाले, अर्जुन ! उन उपाय करनेवालों नें सिन्धु के राजा के मारने में तुझ सत्यवक्ता की सत्यप्रतिज्ञा सुनी ९ इसके पीछे दुर्योधन के मन्त्री और वह राजा जयद्रथ यह सब चित्त से दुःखित नीच मृगों के समान भयभीत हुए १० इसके पीछे सौवीर और सिन्धुदेशों का स्वामी अत्यन्त दुःखी जयद्रथ मन्त्रियों समेत वहां से उठकर अपने डेरे को आया ११ वह सलाह करने के समय परिणाम में कुशल करनेवाले कर्म की सलाहकरके राजसभा के मध्य सुयोधनसे जाकर यह वचन बोला कि १२ अर्जुन अपने पुत्र का मारनेवाला मुझको समझकर कल के दिन मेरे सम्मुख आवेगा और सब सेना के मध्य में उसने मेरे मारने की प्रतिज्ञा करी है १३ अर्जुन की प्रतिज्ञा को देवता, गन्धर्व, राक्षस, असुर और सर्पादिक कोई भी मिथ्या करने को समर्थ नहीं होसक्ते हैं १४ सो तुम मुझको युद्ध में रक्षाकरो अर्जुन तुम्हारे मस्तकों को उल्लङ्घनकरके लक्ष्य को न पावे इस हेतुसे इस स्थानपर रक्षाकरने का उपाय करो हे कुरुनन्दन ! जो युद्ध में मेरी रक्षा नहीं करसक्ते हो तो मुझको आज्ञा दो कि मैं अपने घर को जाऊंगा १५।१६

इस प्रकार कहेहुए उस शिर झुकाये हुए और बेमन सुयोधन ने उस प्रतिज्ञा को सुनकर विचार किया १७ कि निश्चयकरके उस राजा जयद्रथ ने उस पीड़ावान् दुर्योधन को देखकर मृदु और अपनी वृद्धि का करनेवाला प्रतिज्ञापूर्वक यह वचन कहा १८ कि यहां आप लोगों के मध्य में उस प्रकार का प्रबल धनुषधारी नहीं देखता हूं जो बड़े युद्ध में अर्जुन के अस्त्र को अपने अस्त्र से निवारणकरे १९ वासुदेवजी की सहायता रखनेवाले और गाण्डीव धनुषके चलायमान करनेवाले अर्जुन के आगे कौन नियत होसक्ता है जो साक्षात् इन्द्र भी होय वह भी नियत नहीं होसक्ता है २० सुना जाता है कि पूर्वसमय में बड़े पराक्रमी प्रभु महेश्वरजी भी हिमालय पर्वत पर पदाती अर्जुन के साथ युद्ध करनेवाले हुए २१ और उसी देवराज की आज्ञापायेहुए ने एकही रथ के द्वारा हिरण्यपुरवासी हजारों दानवों को मारा २२ बुद्धिमान् वासुदेवजी से संयुक्त अर्जुन देवताओं समेत तीनों लोकों को भी मारसक्ता है यह मेरा मत है २३ सो मैं आज्ञादेने को अथवा पुत्रसमेत महात्मा वीर द्रोणाचार्य से रक्षित होने की अभिलाषा करता हूं जो तुम मानते हो २४ हे अर्जुन ! वहां आप राजा ने जाकर द्रोणाचार्य से प्रार्थनाकरी और यह आगे लिखेहुए लोग रक्षित नियत कियेगये और निश्चयकरके रथ तैयार कियेगये २५ कर्ण, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, वृषसेन, दुर्जय कृपाचार्य और शल्य यह छःरथी अग्रगामी हैं द्रोणाचार्य ने शकट पद्मक अर्धव्यूह सेना के आगे बनाया और पद्मकर्णिक नाम व्यूह मध्य में नियतहुआ और व्यूह के एकपक्ष में शूची रचागया २६ । २७ वीरों से रक्षित अत्यन्त दुर्मद वह सिन्धु का राजा जयद्रथ नियतहोगा धनुषविद्या अस्त्रविद्या पराक्रम और स्वाभाविक बल में २८ यह छः रथी सहने के अयोग्य कियेगये हैं इन छओं रथियों को विना विजय कियेहुए यह जयद्रथ आधीन होने के योग्य नहीं है २९ तुम छओं रथियों में प्रत्येक के पराक्रम को विचारकरो हे नरोत्तम ! यह सब मिलेहुए शीघ्रता से विजय करने के योग्य नहीं हैं ३० मैं फिर कार्य की सिद्धि के अर्थ और अपनी वृद्धि के निमित्त सलाह के और मन्त्र विचार के जाननेवाले मन्त्री और मित्रों के साथ नीतिको निर्णय करूंगा ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

अर्जुन बोले कि, आप दुर्योधन के जिन छओं रथियों को पराक्रमी मानते हो उन सब का पराक्रम मेरे आधे पराक्रम के भी समान नहीं है यह मेरा मत है १ हे मधुसूदनजी ! मुझ जयद्रथ के मारने के अभिलाषी के अस्त्र से इनसबों के अस्त्रों को आप कटाहुआ देखोगे २ मैं द्रोणाचार्य के देखतेहुए अपने समूह के साथ विलाप करते राजासिन्धु के मस्तक को पृथ्वी पर गिराऊंगा ३ जो साध्य, रुद्र, वसु, अश्विनीकुमार, इन्द्र समेत मरुत, ईश्वरों समेत विश्वेदेवा ४ पितृ,गन्धर्व,गरुड़,समुद्रादिक, स्वर्ग, आकाश और यह पृथ्वी दिगीश्वरों समेत सब दिशा ५ गांव और वन के जीव और सैकड़ों स्थावर जङ्गम जीव भी राजासिन्धु के रक्षक होजायँ ६ हे मधुसूदनजी ! तौ भी प्रातःकाल के समय मेरे बाणों से युद्ध में उसको मरा हुआही देखोगे हे श्रीकृष्णजी ! मैं सत्यतापूर्वक शपथ खाता हूं और उसी प्रकार शस्त्र को उठाता हूं ७ हे केशवजी ! जिस पापी दुर्बुद्धि का रक्षक वह बड़ा धनुषधारी द्रोणाचार्य है प्रथम उसी द्रोणाचार्य के सम्मुख मैं जाऊंगा ८ वह दुर्योधन उस द्रोणाचार्य में इस जुआ को बँधा हुआ मानता है इस हेतु से उसकी सेना के मुख को तोड़कर जयद्रथ को आधीन करूंगा ९ तुम प्रातःकाल के समय मेरे अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से बड़े धनुषधारियों को युद्ध में ऐसे छिन्न भिन्न और व्याकुल हुआ देखोगे जैसे कि वज्रों से फटेहुए पर्वतों के शिखर होते हैं १० गिरते व गिरेहुए अथवा तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त घायल मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरों से रुधिर को जारी करूंगा ११ गाण्डीव धनुष के छोड़े हुए शीघ्रगामिता में मन और वायु के समान असंख्य बाण हजारों हाथी घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को प्राणों से पृथक् करेंगे १२ मैंने यम, कुबेर, वरुण, इन्द्र और रुद्रजी से जो घोर अस्त्रलिये हैं उनको मनुष्य इस युद्ध में देखेंगे १३ राजासिन्धु के सम्पूर्ण रक्षकों के अस्त्रों को युद्ध में मेरे ब्रह्मास्त्र से दूर कियेहुए देखोगे १४ हे केशवजी ! प्रातःकाल युद्ध में मेरे बाणों के वेगों से कटेहुए राजालोगों के शिरों से इस पृथ्वी को आच्छादित हुआ देखोगे १५ मैं मांसभक्षी जीवों को तृप्त करूंगा शत्रुलोगों को भगाऊंगा मित्रों को प्रसन्न करूंगा और राजासिन्धु को मथूंगा १६ बड़ा अपराधी दुष्ट नातेदार

पापदेश में उत्पन्न हुआ राजासिन्धु मेरे हाथसे मरकर अपने इष्ट मित्र नातेदार आदि को शोचेगा १७ सब क्षीरों के पीनेवाले पापाचारी जयद्रथ को रणभूमि में मेरे हाथ से मराहुआ देखोगे १८ हे श्रीकृष्णजी ! मैं प्रातःकाल वह कर्म करूंगा कि जिसको देखकर कोई भी लोक में युद्ध के बीच मेरे समान दूसरे धनुषधारी को नहीं मानेगा १९ हे नरोत्तम ! मेरा दिव्य धनुष गाण्डीव है और मैं युद्ध करनेवाला हूं और हे इन्द्रियों के स्वामी ! आप सारथी हो फिर मुझ से अजेय कौन होसक्ता है २० हे भगवन् ! आपकी कृपा से युद्धमें मुझको अप्राप्त पदार्थ क्या है ? हे हृषीकेशजी ! मुझ को असहिष्णुशील जानतेहुए आप क्या निन्दा करते हो २१ जिस प्रकार चन्द्रमा में चिह्न नियत है और जैसे कि समुद्र में जल नियत है हे जनार्दनजी ! उसी प्रकार मेरी इस सत्यप्रतिज्ञा को भी जानो २२ मेरे अस्त्रों का अपमान मतकरो और मेरे दृढ़ धनुष का भी अपमान मतकरो और दोनों भुजाओं के पराक्रम का भी अपमान मतकरो और मुझ संसार के धन के विजय करनेवाले का भी अपमान मतकरो २३ मैं युद्ध में जाकर विजय करूंगा नहीं तो जीवता नहीं रहूंगा इस सत्यता से युद्धमें जयद्रथ को मृतक हुआही जानो २४ ब्राह्मणों में सत्यता अचल है साधुओं में नम्रता अचल है यज्ञों में लक्ष्मी अचल है श्रीनारायणजी में विजय अचल है २५ सञ्जय बोले कि इन्द्र के पुत्र गर्जते हुए अर्जुन ने इन्द्रियों के स्वामी को इस प्रकार कहकर भी फिर केशवजी से कहा २६ हे श्रीकृष्णजी ! जिस प्रकार से कि मेरा रथ प्रातःकालही अलंकृत होजाय वही प्रकार आप को करना योग्य है निश्चय करके बड़ाभारी कार्य वर्त्तमान हुआ है ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, दुःख शोक से पीड्यमान सर्प के समान श्वास लेनेवाले वासुदेवजी और अर्जुनने उस रात्रिको निद्रा नहीं ली १ नरनारायण को क्रोध युक्त जानकर इन्द्रसमेत देवताओं ने भी पीड्यमान होकर चिन्ताकरी कि यह क्या होगा २ उस समय सूक्ष्म भय की सूचन करनेवाली दारुण वायु चली और सूर्य में कबन्ध समेत परिघ दृष्टिगोचर हुआ ३ परस्पर आघात करतीहुई वायु और विद्युत् समेत सूखे वज्र गिरे और वन पर्वतों समेत पृथ्वी भी कम्पा-

यमान हुई ४ हे महाराज ! मकरादिक जीवों के आश्रय स्थान समुद्र उमँगने वालेहुए और झरने नदी आदिक भी चलने को उद्यत हुए ५ रथ, घोड़े, हाथी और मनुष्यों के नाश का समय मांसभक्षियों को प्रसन्नता यह सब यमराज के देश की वृद्धि के निमित्त वर्त्तमान हुए ६ सवारियों ने मूत्र विष्ठा को करके रुदन किया उन भयकारी रोमाञ्च खड़े करनेवाले सब उत्पातों को देखकर ७ और बड़े पराक्रमी अर्जुन की भयकारी प्रतिज्ञा को सुनकर आपकी सब सेना पीड्यमान हुई ८ इसके पीछे इन्द्र का पुत्र महाबाहु अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले कि तुम अपनी बहिन सुभद्रा को पुत्रवधू समेत विश्वास कराके ढाढस बँधाओ ९ हे माधवजी ! इसकी वधू और समान वयवालों को शोक से रहित करो हे प्रभो ! मीठे और सत्यता से युक्त वचनों से उसको आश्वासन करो १० इसके पीछे अत्यन्त दुःखितचित्त वासुदेवजी ने अर्जुन के घर जाकर पुत्र के शोक से पीड्यमान और दुःखी होनेवाली अपनी बहिन को ढाढस बँधाया ११ वासुदेवजी बोले कि हे यादवी ! वधू समेत तू अभिमन्यु के विषय में शोच मत कर सब जीवधारियों की यह निष्ठा कालदेवता से नियत कीगई है १२ यह तेरे पुत्र का मरना सुख्यकर कुल में उत्पन्न पण्डित क्षत्रिय के समान है शोच मतकर १३ महारथी वीर पिता के समान पराक्रमी अभिमन्यु ने प्रारब्ध से क्षत्रियों की विधि से वीरों की अभीष्ट गति को पाया १४ बहुत से शत्रुओं को विजय करताहुआ उनको मृत्यु के पास भेजकर पवित्र कर्म से प्रकट और सब कामनाओं के देनेवाले अविनाशी लोकों को पाया १५ सन्तलोग तप ब्रह्मचर्य शास्त्र और बुद्धि के द्वारा भी जिस गति को चाहते हैं उस गति को तेरे पुत्र ने पाया १६ तू वीर पुत्र को उत्पन्न करनेवाली वीर पुरुष की स्त्री वीर की पुत्री और वीरही बांधव रखनेवाली है हे कल्याणिनि ! पुत्र को मत शोच क्योंकि उसने परमगति को पाया है १७ यह पापी और बालक का मारनेवाला राजासिन्धु मित्र भाइयों के समूहों समेत इस पाप के फल को पावेगा १८ रात्रि के व्यतीत होने पर यह पापकर्म करनेवाला अमरावतीपुरी में भी प्रवेश करता हुआ अर्जुन के हाथ से विनामरे नहीं छूटसक्ता १९ कल्ह उस राजा सिन्धु का शिर युद्ध में स्यमन्तपञ्चक से बाहर डाला हुआ लोग सुनैंगे शोक से रहित होजा रोदन मत कर २० उस शूर ने क्षत्रिय धर्म को आगे करके सत्पुरुषों

की गति को पाया जिसको हम और अन्यलोग जो यहां शस्त्रों से निर्वाह करनेवाले हैं अन्त में पावेंगे २१ बड़ा वक्षस्स्थल और बड़े भुजावाला मुख न फेरनेवाला रथियों को मारनेवाला तेरा पुत्र स्वर्ग को गया अब तू मन के ताप को दूर कर २२ वह पराक्रमी माता और पिता के पक्ष का अनुयायी हुआ वह शूर महारथी हजारों शत्रुओं को मारकर मरगया २३ हे रानी ! तू अपनी पुत्र-बधू को विश्वासित कर क्षत्रिय के विषय में बड़े शोच को मतकर हे नन्दनी ! कल्ह बड़ी प्रिय बात को सुनकर शोक से रहित हो २४ अर्जुन ने जो प्रतिज्ञा करी है वह यथार्थ है मिथ्या नहीं होसक्ती तेरे पति के कर्मकी इच्छा भी निष्फल नहीं होती २५ जो प्रातःकाल मनुष्य, सर्प, पिशाच, राक्षस, पशु, देवता और असुर भी युद्ध में वर्त्तमान होकर जयद्रथ के साथ में होंगे तौ भी वह नहीं बच सकैगा अर्थात् नाश को पावेगा ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, उन महात्मा केशवजी के इस वचन को सुनकर पुत्र के शोक से पीड्यमान और अत्यन्त दुःखी सुभद्रा ने विलाप किया १ हाय पुत्र ! मुझ अभागिनी के बेटे और पिता के समान पराक्रमी तुम ने युद्ध को पाकर कैसे अपने जीव को गँवाया २ हे पुत्र ! उत्तम कमल के समान श्यामसुन्दर डाढ़ और नेत्रवाला तेरा मुख कैसा युद्ध की धूलि से लिपटाहुआ दिखाई देता है ३ निश्चय करके तुझ मुख न फेरनेवाले सुन्दर शिर ग्रीवा भुजा स्कन्ध आयत (चौड़ा) वक्षस्स्थल पतले उदरवाले शूरवीर को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर ४ जङ्गल के सब जीव तेरे सुन्दर नेत्र युक्त अलंकृत और शस्त्रों से युक्त घायल शरीर को उदयहुए चन्द्रमा के समान देखते हैं ५ जिसके शयन के स्थान पूर्व समय में बहु मूल्यवाले बिस्तरों से युक्त थे उस सुख के योग्य तू अब कैसे घायल होकर पृथ्वीपर सोरहा है ६ पूर्व काल में जो बड़ी भुजावाला उत्तम वीर स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करता था अब वह युद्धभूमि में पड़ाहुआ किस प्रकार शृगालों के साथ अनुरक्त है ७ पूर्व काल में जो प्रसन्नचित्त वीर सूत मागध और वन्दीजनोंसे स्तूयमान हुआ अब वह अधिक शब्द करनेवाले भयकारी मांस-भक्षी गृध्र आदि के समूहों से उपासना किया जाता है ८ हे समर्थ ! अपने

स्वामी पाण्डव वीर वृष्णी और वीर पाञ्चालों के मध्य में किस कारण से अनाथ के समान मारागया है ९ हे पापों से रहित, बेटा! प्रकट होता है कि तेरे देखने से तृप्त न होनेवाली मैं अभागिनी यमलोक को जाऊंगी १० हे पुत्र! बड़े नेत्र सुन्दर केशान्त मृदुभाषी सुगन्धित और स्वच्छ तेरे मुख को फिर देखूंगी ११ भीमसेन के बल को धिक्कार अर्जुन के धनुष रखने को धिक्कार वृष्णी वीरों के पराक्रम को धिक्कार और पाञ्चालों के बल पुरुषार्थ को धिक्कार है १२ केकयदेशीय, चन्देरीदेशीय, मत्स्यदेशीय और सृञ्जयदेशियों को भी धिक्कार है जो कि तुझ युद्ध में वर्त्तमान शूरवीर की रक्षाकरने को समर्थ नहीं हुए १३ अब शोक से व्याकुल नेत्र और अभिमन्यु को न देखने से मैं पृथ्वी को शून्य देखती हूं १४ अब मैं वासुदेवजी के भानजे गाण्डीव धनुषधारी के पुत्र गिराये हुए अतिरथी को कैसे देखूंगी १५ हे पुत्र! आओ २ मुझ अभागिनी और पुत्र के देखने से तृप्त न होनेवाली की बगल में चढ़कर तू दूध से भरीहुई छातियों को शीघ्रता से पानकर १६ हाय वीर नाश पाया हुआ तू मेरे स्वप्न के धन के समान दिखाई दिया है आश्चर्य है कि यह नरलोक विनाशवान् पानी के बुलबुले के समान चञ्चल है १७ इस तेरी तरुण भार्या को तेरे दुःख से पूर्ण बछड़े से जुदीहुई गौ के समान को मैं किस प्रकार से रक्खूंगी १८ हे पुत्र! बड़े खेद की बात है कि तुम ने मुझ अत्यन्त पुत्र के दर्शनाभिलाषिणी को फल के उदय होने के समय त्यागकरके विना समय के यात्राकरी है १९ निश्चयकरके बलवान् काल की गति श्रेष्ठलोगों से भी जाननी कठिन है जिस युद्ध में केशवजी के नाथ होनेपर अनाथ के समान मारा गया २० यज्ञ करनेवाले और दान की प्रकृति रखनेवाले शुद्ध अन्तःकरण और ब्रह्मचर्य करनेवाले पवित्र तीर्थों के स्नान करनेवाले २१ ब्राह्मण के और उपकार के ज्ञाता अति दानी गुरुभक्तिपरायण और हज़ारों दक्षिणा देनेवालों की जो गति है उसको तुम पाओ २२ युद्ध करनेवाले मुख के न फेरनेवाले और युद्ध में शत्रुओं को मार कर मरनेवाले शूरों की जो गति है उसको पाओ २३ हज़ारों गौ दान करनेवाले और यज्ञ में दान देनेवालों की जो गति है उसको पाओ और प्रिय स्थानों के दान करनेवालों की जो शुभ गति है २४ शरण के योग्य ब्राह्मणों को रक्षा करनेवालों की और अपराधों के क्षमा करनेवालों की जो

गति है हे पुत्र ! उसको पाओ २५ तेज प्रशंसा और व्रतों के धारण करनेवाले मुनि ब्रह्मचर्य के द्वारा जिस गति को पाते हैं और एक स्त्री रखनेवाले जिस गति को पाते हैं हे पुत्र ! तुम उस गति को पाओ २६ राजाओं के सुन्दर आचरणों से जो सनातन गति होती है और पवित्र शरीरवाले चारों आश्रमियों के पवित्र कर्मों से जो गति होती है २७ दीनों पर दया करनेवालों के समान भाग करने वालों के और परोक्ष में निन्दा करके रहित मनुष्यों की जो गति होती है हे पुत्र ! तुम उस गति को पाओ २८ व्रत करनेवाले धर्म के अभ्यासी गुरुभक्ति से गुरु की सेवा करने और आतिथ्य करनेवालों की जो सफल गति होती है हे पुत्र ! तुम उसको पाओ २९ सङ्कट और दुःख में जीवन करनेवाले और शोक की अग्नि से जलनेवालों की जो गति है उस गतिको पाओ ३० जो इस लोक में माता पिता की सेवा को करते हैं उनकी और जो पुरुष अपनीही स्त्री में प्रीति रखनेवाले हैं उनकी जो गति है उसको पाओ ३१ ऋतुकाल में अपनी स्त्री के पास जानेवाले और अन्य की स्त्रियों से बचनेवाले बुद्धिमानों की जो गति है हे पुत्र ! उनकी गति को पाओ ३२ जो ईर्षा से रहित मनुष्य सब जीवधारियों को क्रोध से रहित प्रीति के साथ देखते हैं और मर्मों को पीड़ा न देनेवालों की जो गतियां हैं हे पुत्र ! उनको पाओ ३३ मद्य, मांस, अहङ्कार, छल और मिथ्या से रहित होनेवाले अथवा दूसरे के दुःखों के दूरकरनेवाले मनुष्यों की जो गति है हे पुत्र ! तुम उसको पाओ ३४ लज्जायुक्त सर्वशास्त्रज्ञ परमार्थ से तृप्त और जितेन्द्रिय साधु पुरुष जिस गतिको पाते हैं हे पुत्र ! तुम उस गतिको पाओ ३५ तब द्रौपदी उत्तरासमेत उस सुभद्रा को इस रीति से विलाप करती और दुःखी देखकर उसके पास आई ३६ हे राजन् ! वह सब अत्यन्त दुःखीचित्त वारंवार रोदनों को करके उन्मत्त के समान अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ीं ३७ फिर विश्वसित वचनों के द्वारा पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णजी उस महादुःखी सुभद्रा को जल से सिंचनकर उन २ प्रिय वचनों को कहके ३८ बहुत सा ढाढस बँधाकर उस अचेतरूपा मर्मस्थलों से भिदीहुई अत्यन्त कम्पायमान बहिन से यह वचन बोले कि ३९ हे सुभद्रे ! पुत्र का मत शोचकर हे द्रौपदि ! उत्तरा को विश्वास करा क्षत्रियों में श्रेष्ठ अभिमन्यु ने परमगति को पाया है ४० हे सुन्दरमुखि ! जो अन्यपुरुष भी हमारे वंश में हैं वह सब भी उस यशस्वी अभिमन्युकी गति

पाओ ४१ हम और हमारे सब मित्रादिक उस कर्म को करें जिस कर्म को कि तेरे अकेले महारथी पुत्र ने किया ४२ शत्रुओं के विजय करनेवाले महाबाहु श्रीकृष्णजी अपनी बहिन सुभद्रा द्रौपदी और उत्तरा को इस प्रकार से विश्वासित करके फिर अर्जुन केही पास गये ४३ हे राजन्! इसके पीछे श्रीकृष्णजी राजाओं को बन्धुजनों को और अर्जुन को आज्ञा देकर अन्तःपुरमें गये और वे सबलोगभी अपने २ डेरोंको गये॥ ४४॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७८॥

उनासीवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे समर्थ कमललोचन श्रीकृष्णजी ने अर्जुन के अति उत्तम महल में प्रवेश करके आचमनादिक कर शुभ लक्षण और समान भूमि पर १ वैडूर्य के समान कुशाओं से शुभशय्या को बिछाया उसके पीछे माला धान आदिक बड़े मङ्गलीक सुगन्धादिकों से २ उस शय्या को अलंकृत करके उत्तम अस्त्रों सों घेर दिया इसके पीछे अर्जुन के स्नान और आचमन करने पर अच्छे शिक्षित विनीत परिचारकों ने ३ समीपही देखतेहुए शिवजी के रात्रि सम्बन्धी बलिप्रदान को तैयार किया इसके पीछे प्रसन्नचित्त अर्जुन ने चन्दन और पुष्पमाला आदि से माधवजी को ४ अलंकृत करके उस रात्रिके बलिदान को उनके अर्पण किया फिर मन्द मुसकान करते हुए गोविन्दजी अर्जुन से बोले ५ हे अर्जुन! तेरा कल्याण होय तुम अपनी वृद्धि के निमित्त शयन करो मैं जाता हूं इसके पीछे श्रीमान् कृष्णजी द्वारपाल और अस्त्र उठानेवाले रक्षक मनुष्यों को नियत करके ६ अपने डेरे में गये उनके पीछे दारुक सारथी था उस समय बहुत कर्मों में विचार करते हुए उज्ज्वल शय्या पर शयन करनेवाले हुए ७ भगवान् श्रीकृष्णजी ने शोकदुःखों को दूर करनेवाला तेज प्रताप को बढ़ानेवाली सब विधियां अर्जुन के निमित्त करीं ८ सब के महेश्वर जगदात्मा बड़े यशस्वी अर्जुन का प्रिय करनेवाले कल्याण चाहनेवाले विष्णु जी ने योग में नियत होकर उस विधि को किया ९ उस रात्रि को पाण्डवों के डेरों में कोई भी न सोया हे राजन्! सब मनुष्यों की नींदें जातीरहीं १० पुत्र के शोक से दुःखी महात्मा गाण्डीव धनुषधारी के हाथ से एकाएक सिन्धु के राजा का मारना प्रतिज्ञा किया गया ११ शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला

महाबाहु इन्द्र का पुत्र अर्जुन किस रीतिसे उस अपनी प्रतिज्ञा को सफल करेगा इस विषय में, उन्होंने बड़ी चिन्ताकरी १२ महात्मा पाण्डव ने यह कठिन कर्म निश्चय किया और वह राजा बड़ा पराक्रमी है ईश्वर की कृपा से वह अर्जुन अपनी उस प्रतिज्ञाको पूरा करे १३ पुत्र के शोक से महादुःखी अर्जुनने बड़ी प्रतिज्ञा की और पराक्रमी भाइयों समेत बहुत सी सेनाओं को धृतराष्ट्र के पुत्र ने उसके सम्मुख किया १४ वह अर्जुन युद्ध में सिन्धु के राजा को मारकर फिर मिलो १५ अर्जुन शत्रुओं के समूहों को विजय करके व्रत को पूरा करता हुआ कलह सिन्धु के राजा को न मारकर निश्चय अग्नि में प्रवेश करेगा १६ यह अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा को मिथ्या करने को समर्थ नहीं है अर्जुन के मरने पर धर्म का पुत्र राजा युधिष्ठिर कैसा होजायगा १७ क्योंकि उस धर्मपुत्र पाण्डव ने उसी अर्जुन में सम्पूर्ण विजय नियत करी है जो हमारा कर्म है दान किया है और जो हवन किया है १८ उस सब के फल से अर्जुन शत्रु को विजय करो हे समर्थ, राजन्, धृतराष्ट्र! इस प्रकार से उन जय के आशीर्वाद देनेवाले शूरवीरों के कहते हुए १९ बड़े दुःखों से रात्रि व्यतीत हुई फिर उस रात्रि के मध्य में जागेहुए श्रीकृष्णजी २० अर्जुन की प्रतिज्ञा को स्मरण करके बोले कि उस पीड्यमान अर्जुन ने जिसका कि पुत्र मारागया यह प्रतिज्ञाकरी है २१ कि कलह जयद्रथ को मारूंगा हे दारुक! उस बात को सुनकर दुर्योधन अपने मन्त्रियों के साथ मिलकर सलाह करेगा २२ कि जिससे अर्जुन युद्ध में जयद्रथ को न मारसके और वह उसकी सब अक्षौहिणी सेना जयद्रथकी रक्षा करेगी २३ और द्रोणाचार्य अपने पुत्र समेत सब अस्त्रों के चलाने में अत्यन्त कुशल हैं और अकेला इन्द्र भी दैत्य और दानवों के अभिमानों का दूर करने वाला है २४ वह भी युद्धमें द्रोणाचार्यजी से रक्षित मनुष्यके मारने को साहस नहीं करसक्ता अब मैं प्रातःकाल वही करूंगा जिस प्रकार से कि कुन्ती का पुत्र अर्जुन २५ सूर्यास्त होने से पूर्वही जयद्रथ को मारेगा क्योंकि कुन्तीनन्दन अर्जुन से अधिक मेरा कोई प्यारा नहीं है जैसा वह मुझ को प्यारा है वैसा भाई, बन्धु, स्त्री, नातेदार आदि भी मुझ को नहीं प्यारे हैं हे दारुक! मैं एक मुहूर्त्त भी अर्जुन से रहित होकर इस लोक के २६।२७ देखने को समर्थ नहीं हूं और वह वैसा नहीं होगा मैं अकस्मात् उन सब को घोड़े हाथियों समेत विजय

करके कर्ण और दुर्योधन समेत सब को अर्जुन के निमित्त मारूंगा प्रातःकाल तीनों लोक मेरे पराक्रम को देखो २८।२९ हे दारुक! युद्ध में अर्जुनके निमित्त मुझ पराक्रम करनेवाले का बल देखो हे दारुक! प्रातःकाल हजारों राजा और राजकुमारों को ३० घोड़े हाथी और रथों समेत युद्धभूमि में से भगाऊंगा प्रातःकाल उन राजाओं की सेनाओं को चक्र से मथाहुआ देखेगा ३१ युद्ध में अर्जुन के निमित्त मुझ क्रोधयुक्त से गिराई हुई सेना को देखेगा प्रातःकाल देवता और गन्धर्वों समेत पिशाच सर्प और राक्षस ३२ और सब लोक मुझको अर्जुन का मित्र जानेंगे जो अर्जुन से शत्रुता करता है वह मुझी से शत्रुता करता है और जो उसका साथी है वह मेरा साथी है ३३ अर्थात् श्रीकृष्णजी नारायण हैं और अर्जुन नर हैं इस हेतु से यह दोनों परमात्मा और जीवात्मारूप से शरीर में साथही रहते हैं ३४ उसको बुद्धि से सङ्कल्प करके अर्जुन मेरा आधा शरीर है तुम इस रात्रि के व्यतीत होनेपर मेरे उत्तम रथ को शास्त्र के अनुसार अलंकृत करके हाँकते हुए सावधानी से मेरे साथ चलो कौमोदकी नाम गदा दिव्य शक्ति, चक्र, धनुष, बाण ३५ और सब सामग्री को रथपर रखकर और रथ के बैठने के स्थानपर मेरी ध्वजा के स्थान को विचार करके ३६ युद्ध में रथ को शोभा देनेवाले वीर गरुड़ के स्थान को विचार करके सूर्य्याग्नि के समान प्रकाशित सुवर्ण जालोंसे युक्त उस छत्र को ३७ जिसके जाल विश्वकर्मा के बनाये हुए दिव्य हैं और अलंकृत बलाहक मेघ पुष्प शैव्य और सुग्रीव नाम घोड़ों में श्रेष्ठ जुड़ेहुए घोड़ों को अपने स्वाधीन करके सावधानी से कवच धारण करके नियत होजाओ हे दारुक! वृषभ के शब्द के समान पाञ्चजन्य शङ्ख के भयकारी शब्द को ३८।३९ सुनकर बड़ी शीघ्रता से मेरे पास आओ हे दारुक! मैं एकही दिन में फूफी के पुत्र भाई अर्जुन के क्रोध और सब दुःखों को दूर करूंगा जैसे कि अर्जुन युद्ध में ४०। ४१ धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते हुए जयद्रथ को मारेगा अथवा अर्जुन जिस २ के मारने में उपाय करेगा हे सारथिन्! मैं कहता हूं कि वहां २ उसकी विजय होगी ४२ दारुक बोला कि उसकी विजय तो अवश्य है पराजय कैसे होसक्ती है हे पुरुषोत्तम! जिसकी रथवानी को आपने पाया है ४३ में इस रात्रि के व्यतीत होनेपर अर्जुन की विजय के निमित्त यह सब बातें इसी प्रकार करूंगा जैसी कि आप मुझ को आज्ञा दे रहे हैं॥ ४४॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनाशीतितमोऽध्यायः॥ ७९॥

अस्सीवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, ध्यान और बुद्धि से परे पराक्रमी कुन्ती का पुत्र अर्जुन उस सलाह को स्मरण करता और अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करता हुआ अचेत होगया १ फिर बड़े तेजस्वी गरुड़ध्वज ने उस शोक से दुःखी ध्यान करते वा-नरध्वज अर्जुन को स्वप्न में दर्शन दिया २ धर्मात्मा अर्जुन सदैव भक्ति और प्रेम के साथ सब दिशा में श्रीकृष्णजी की प्रतिष्ठा को बन्द नहीं करता था ३ उसने उठकर उन गोविन्दजी के निमित्त आसन दिया तब अर्जुन ने आसन में अपनी बुद्धिमानी नहीं की ४ इसके पीछे अर्जुन के निश्चय को जानते बड़े तेजस्वी विराजमान श्रीकृष्णजी उस नियत हुए अर्जुन से यह वचन बोले ५ हे अर्जुन! अपने चित्त को व्याकुल मतकरो निश्चय करके काल बड़ी कठिनता से विजय होनेवाला है वह काल सब जीवमात्र को परमेश्वर में लय करता है ६ हे द्विपादों में श्रेष्ठ! तेरी व्याकुलता किस हेतु से है उसको कहो हे ज्ञानियों में श्रेष्ठ! शोक न करना चाहिये शोकही नाशकारक कर्म है ७ जो कार्य करने के योग्य होय उसको कर्म से करो कर्म से पृथक् जो मनुष्य का शोक है हे अ-र्जुन! वही शत्रु है ८ शोच करताहुआ मनुष्य अपने शत्रुओं को प्रसन्न करता है और बान्धवों को दुःख देता है उससे मनुष्य नाश को पाता है इस हेतु से तुम शोच करने के योग्य नहीं हो ९ वासुदेवजी के इस प्रकार के वचनों को सुन-कर विद्यावान् और अजेय अर्जुन इस सार्थक वचन को बोला १० हे केशवजी! मैंने जयद्रथ के मारने में बड़ी प्रतिज्ञाकरी कि प्रातःकाल इस दुष्टात्मा पुत्रघाती जयद्रथ को मारूंगा ११ हे अविनाशिन्! निश्चयकरके सब महारथियों से रक्षित राजा सिन्धु मेरी प्रतिज्ञा के मिथ्या करने के अर्थ धृतराष्ट्र के पुत्रों से यह पीछे की ओर करने के योग्य है १२ हे श्रीकृष्ण, माधवजी! दुःख की बात है कि वहां वह मरने से शेष बची हुई ग्यारह अक्षौहिणी सेना बड़ी कठिनता से विजय होनेवाली है १३ हे माधवजी! युद्ध में उन सेनाओं से और सब महारथियों से घिराहुआ वह दुष्टात्मा जयद्रथ कैसे देखने को सम्भव है १४ हे केशवजी! जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी तो प्रतिज्ञाके निष्फल होनेपर मुझसा क्षत्रिय कैसे जीवता रहैगा १५ हे वीर! मुझको दुःख के दूर करने के उपाय की बड़ी अभिलाषा है और सूर्य बड़ी

शीघ्रता से आता है इस हेतु से मैं यह कहता हूं १६ तदनन्तर गरुड़ध्वज श्रीकृष्णजी अर्जुन के उस शोक स्थान को सुनकर अपने आचमनादिक को करके पूर्वाभिमुख नियत हुए १७ जयद्रथ के मारने में कर्म करनेवाले बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी पाण्डवों की वृद्धि के अर्थ यह वचन बोले १८ हे अर्जुन! पाशुपत नाम सनातन परम अस्त्र है श्रीमहेश्वर देवता ने जिस अस्त्र के द्वारा युद्धमें सब दैत्यों को मारा १९ जो अब वह अस्त्र तुझको याद है तो प्रातःकाल अवश्य जयद्रथ को मारेगा और विस्मरण होगया है तो प्राप्तकर और मन से शिवजी को ध्यानकर २० हे अर्जुन! उस देवता को मन से ध्यान करके प्रसन्न हो फिर तुम उनके भक्त हो उसी देवता की कृपा से उस बड़े अस्त्र को पावोगे २१ इसके अनन्तर अर्जुन ने श्रीकृष्णजी के वचन को सुनकर आचमनपूर्वक सावधान होकर पृथ्वी पर विराजमान श्रीशङ्करजी को मन से ध्यान किया २२ फिर शुभ लक्षण ब्राह्मयमुहूर्त के वर्तमान होनेपर अर्जुनने केशवजी समेत अपनेको आकाशमें देखा २३ हिमालय के पवित्र भाग प्रकाशोंसे संयुक्त सिद्ध चारणों से सेवित मणिमन्त पर्वत को चला २४ वायु के वेग के समान चलनेवाला अर्जुन केशवजी के साथ आकाश को गया और दहिनी भुजापर वह अर्जुन समर्थ केशवजी से पकड़ाहुआ था २५ और अपूर्व दर्शनीय बहुत से चमत्कारों को देखतागया उस धर्मात्मा ने उत्तरदिशा में श्वेत पर्वत को देखा २६ कुबेरजी के विहार में कमलों से शोभायमान कमलिनी को और नदियों में श्रेष्ठ अत्यन्त जल की रखनेवाली उस श्रीगङ्गाजी को भी देखता चला जोकि सदैव फूल फल रखनेवाले वृक्षों से कीर्ण युक्त स्फटिक पाषाणोंसे युक्त सिंह व्याघ्रों से व्याप्त नाना प्रकार के मृगों से व्याकुल २७। २८ पवित्र आश्रमों समेत सुन्दर चित्तरोचक पक्षियों का आश्रय स्थान था और मन्दराचल के स्थानों को जोकि किन्नरों के उद्गीतों से शब्दायमान स्वर्णमयी और रजतमयी शिखरों से युक्त अपूर्व नाना प्रकार की ओषधियों से अत्यन्त प्रकाशित औरउसी प्रकार फूले हुए मन्दार वृक्षों से भी महाशोभायमान थीं २९। ३० और स्वच्छ स्निग्ध प्रकाश के समूहरूप कालपर्वत ब्रह्म तुङ्गआदि बहुतसी नदी और देशों को भी देखा ३१ और तुङ्ग शतशृङ्गपर्वत समेत शर्याति के वन को और पुण्यकारी अश्वशिरनाम पवित्र स्थान और अथर्वण ऋषि के आश्रम को देखा ३२ और

वृषदेश और अप्सराओं के आश्रयस्थान किन्नरों से शोभित पर्वतों के इन्द्र म-
हामन्दर को देखा ३३ उस पर्वत पर श्रीकृष्णजी के साथ चलतेहुए अर्जुन ने
उस पृथ्वी को भी देखा जोकि शुभ निर्भरों से शोभित सुवर्ण धातुमयी चन्द्रमा
की किरणों के समान प्रकाशित अङ्गवाली मालिनियों से व्याप्त थी और बहुत
से आकारवाले अपूर्वरूप अनेक खानों से युक्त समुद्रों को देखा ३४।३५
श्रीकृष्णजी के साथ में आश्चर्ययुक्त अर्जुन आकाश स्वर्ग और पृथ्वीपर चलता
हुआ छोड़े हुए बाण के समान आकाश को गया ३६ तब अर्जुन ने ग्रह न-
क्षत्र चन्द्रमा सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशमान अतिज्वलितरूप पर्वत को
देखा ३७ फिर पर्वत के शिखरपर नियत उस ज्योतिरूप पर्वत को पाकर सदैव
तप करनेवाले उन महात्मा वृषभध्वज शिवजीको देखा ३८ जोकि अपने तेज
से हजार सूर्य के समान प्रकाशित गौरवर्ण शूल जटाधारी केवल मृगचर्म के
धारण करनेवाले ३९ हजारों नेत्रों से अद्भुत शरीर बड़े तेजस्वी देवता प्रका-
शित जीवों से व्याप्त श्रीपार्वतीजीके साथ विराजमान थे ४० गीतवाद्यों के
शब्द और हास्य नृत्य करती हुई अप्सराओं के घूमने के उत्तम शब्दों से मनो-
हर पवित्र सुगन्धियों से शोभायमान ४१ ब्रह्मवादी ऋषियों के दिव्य स्तोत्रों
से स्तूयमान होकर सब जीवधारियों के रक्षक धनुष को धारण किये अविनाशी
वर्तमान थे ४२ फिर सनातन ब्रह्मकी स्तुति करते हुए अर्जुन समेत धर्मात्मा
वासुदेवजीने उन शिवजीको देखकर शिरसे पृथ्वीपर साष्टाङ्ग प्रणाम किया ४३
जोकि सृष्टि के आदि विश्वकर्मा अजन्मा अविनाशी चित्तवृत्ति की निवृत्ति
के हेतु उत्पत्तिस्थान ईशानरूप आकाशादि पञ्चभूतों के और तेजों के निवास
स्थान ४४ जलकी धाराओंके उत्पन्न करनेवाले महत्तत्त्व और प्रकृति से परे देवता
दानव यक्ष और मनुष्यों के साधनरूप ४५ योगियों के आश्रयस्थान अपने
स्वरूप में मग्न ब्रह्मज्ञानियों के आवागवन के स्थान जड़ चैतन्य जीवों के
स्वामी प्रलयकर्ता ४६ काल के समान क्रोध रखनेवाले होकर महात्मा हैं और
उन्हीं से इन्द्र और सूर्य के गुणों का उदय है तब श्रीकृष्णजी ने मन वाणी
और बुद्धि के कर्मों से उन शिवजी को प्रणाम किया ४७ सूक्ष्म अध्यात्मपद
के चाहनेवाले ज्ञानीलोग जिसको प्राप्त होते हैं उस अजन्मा कारणात्मा
शिवजी की शरण में प्राप्तहुए ४८ अर्जुन ने भी उस देवता को सब जीवधा-

रियों का आदि तीनों लोकों का भी उत्पत्ति स्थान जानकर वारंवार प्रणाम किया ४६ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्नचित्त और हँसतेहुए शिवजी उन आये हुए दोनों नर नारायणजी से बोले ५० हे नरोत्तमो! तुम्हारा आना सफल होय तुम आनन्दसे उठो हे वीरो! तुम्हारे चित्तकी क्या अभिलाषा है शीघ्र कहो ५१ तुम जिस प्रयोजन से मेरे पास आये हो उसको कहो मैं उसको करूंगा तुम अपने कल्याण को माँगो मैं सब तुमको दूंगा इसके पीछे बड़े बुद्धिमान् महात्मा प्रशंसनीय वासुदेवजी और अर्जुन ने उनके उस वचन को सुनकर और उठकर भक्तिपूर्वक हाथ जोड़कर शिवजी की दिव्य स्तोत्रोंसे स्तुतिकरी ५२।५३।५४ अर्जुन और श्रीकृष्णजी बोले कि ॥

स्तुति ॥

नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च। पशूनां पतये नित्यमुग्राय च कपर्दिने ५५ महादेवाय भीमाय त्र्यम्बकाय च शान्तये। ईशानाय मखघ्नाय नमोस्त्वन्धकघातिने ५६ कुमारगुरवे तुभ्यं नीलग्रीवाय वेधसे। पिनाकिने हविष्याय सत्याय विभवे सदा ५७ विलोहिताय धूम्राय व्याधायानपराजिते। नित्यं नीलशिखण्डाय शूलिने दिव्यचक्षुषे ५८ होत्रे होत्रे त्रिनेत्राय व्याधाय वसुरेतसे। अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुताय च ५९ वृषध्वजाय मुण्डाय जटिने ब्रह्मचारिणे। तप्यमानाय सलिले ब्रह्मण्यायाजिताय च ६० विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते। नमो नमस्ते सेव्याय भूतानां प्रभवे सदा ६१ ब्रह्मवक्त्राय सर्वाय शंकराय शिवाय च। नमोस्तु वाचां पतये प्रजानां पतये नमः ६२ नमो विश्वस्य पतये महतां पतये नमः। नमःसहस्रशिरसे सहस्रभुजमन्यवे ६३ सहस्रनेत्रपादाय नमोऽसंख्येयकर्मणे। नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचाय च। भक्तानुकम्पिने नित्यं सिध्यतां नो वरः प्रभो ॥ ६४ ॥

इति ॥

सञ्जय बोले कि, अर्जुन समेत वासुदेवजी ने अस्त्र मिलने के निमित्त उन महादेवजी को इस प्रकार से स्तुति करके प्रसन्न किया ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

इसके पीछे प्रसन्नचित्त प्रफुल्लित नेत्र हाथजोड़े हुए अर्जुन ने उन तेजों के

भण्डार शिवजी के सम्पूर्ण रूप को देखा १ और उस अच्छी रीति से दृष्टिगोचर की हुई अपनी भेंट को जोकि रात्रि के समय सदैव अर्पण कीजाती थी उसको शिवजी के पास वर्तमान देखा अर्थात् जिसको कि वासुदेवजी के अर्थ निवेदन किया था २ इसके पीछे पाण्डव अर्जुन चित्त से श्रीकृष्णजी को और शिवजी को पूज कर शङ्करजी से बोले कि हे कृपासिन्धो, भक्तवत्सल ! मैं दिव्य अस्त्र को चाहता हूं फिर वर के निमित्त अर्जुन के उस वचन को जान कर मन्दमुसकान करते देवता शिवजी वासुदेवजी और अर्जुन से बोले ३ । ४ कि हे नरोत्तम, पुरुषो ! तुम्हारा आना श्रेष्ठ हुआ तुम्हारे चित्त का मनोरथ विदित हुआ तुम दोनों जिस अभिलाषा के लिये यहां आये हो उस मनोरथको मैं तुम्हारे अर्थ देता हूं हे शत्रुओंके मारनेवालो ! समीपही अमृतसे भराहुआ दिव्य सरोवर है उसमें मैंने पूर्वकाल के समय से वह दिव्य धनुष और बाण रक्खा है ५ । ६ जिसके द्वारा मैंने युद्ध में देवताओं के शत्रु सब दैत्यों को मारा था हे श्रीकृष्ण ! हे अर्जुन ! तुम दोनों उस उत्तम धनुष और बाण को लाओ ७ यह सुनकर उनके वचन को अङ्गीकार करके वह दोनों शिवजी के सब पार्षदों समेत उस दिव्य सरोवर को चले जोकि सैकड़ों दिव्य ऐश्वर्यों से भराहुआ पवित्र दिव्य अभिलाषाओं का देनेवाला शिवजी का बतलाया हुआ था वह दोनों नर नारायण ऋषि निर्भय उस सरोवरपर गये ८ । ९ तदनन्तर उन दोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजी ने सूर्यमण्डल के समान उस सरोवरपर जाकर जल के भीतर भयकारी सर्प को देखा १० और हजार शिर रखनेवाले अग्नि के समान प्रकाशमान बड़ी ज्वालाओं के उगलनेवाले एक दूसरे उत्तम सर्प को देखा ११ इसके पीछे श्रीकृष्णजी और अर्जुन आचमनादिक करके शिवजीको नमस्कार कर हाथजोड़ करके उनदोनों सर्पों के सम्मुख खड़ेहुए वेदों के जाननेवाले वह दोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजी सर्वात्मभाव से शिवजीको प्राप्त होकर उस अतुल्य प्रभाववाले ईश्वरको प्रणामकरके ब्रह्मरूप शतरुद्री का पाठ करने लगे १२ । १३ फिर वह दोनों सर्प रुद्रजी के माहात्म्य से सर्परूप को छोड़कर धनुषबाणरूप हो गये वही शत्रुओं का मारनेवाला जोड़ा प्राप्तहुआ १४ उन प्रसन्नचित्त दोनों महात्माओं ने उस अच्छे प्रकाशमान धनुष बाण को उठालिया और वहां से लाकर महात्मा शिवजी को दिया १५ इसके पीछे शिवजी के बगल से उन

का दूसरा रूप ब्रह्मचारी और पिङ्गलवर्ण नेत्र तपका स्थान पराक्रमी आरक्त नीलारङ्ग रखनेवाला प्रकटहुआ १६ फिर वह सावधान उस उत्तम धनुषको लेकर खड़ाहुआ और बाण समेत उस उत्तम धनुष को बुद्धि के अनुसार खैंचा १७ निस्सन्देह पराक्रमी अर्जुन ने उसकी मौर्वी अर्थात् प्रत्यञ्चा और मूठ के स्थान को देखकर और शिवजी के कहेहुए मन्त्र को सुनकर अस्त्र को लेलिया फिर उस बड़े पराक्रमी प्रभु ने उस बाण को सरोवरही में छोड़ा अर्थात् उस वीर ने उस धनुष को फिर सरोवरही में नियत किया १८। १९ तब उसके पीछे स्मरण करनेवाले अर्जुन ने शिवजी को प्रसन्न जानकर वन में दिये हुए वर को और शङ्करजी के दर्शन को २० अपने मन से याद किया और कहा कि वह अस्त्र मुझ को प्राप्त होय तब प्रसन्नमन होकर शिवजी ने उसकी उस अभिलाषा को जानकर २१ उस श्रेष्ठ और भयकारी उसकी प्रतिज्ञा के पूरे करनेवाले पाशुपत अस्त्र को दिया उसके पीछे ईश्वर से उस पाशुपत नाम दिव्य अस्त्रको पाकर २२ रोम २ से प्रसन्नचित्त निर्भय अर्जुन ने अपने कार्य को किया हुआ माना और अत्यन्त प्रसन्नमन दोनों ने शिरों से महेश्वर शिवजी को दण्डवत् की २३ उस समय शिवजी से आज्ञा लेकर वीर अर्जुन और श्रीकृष्णजी बड़े आनन्द से युक्तहोकर अपने डेरे में पहुँचे २४ असुरसंहारे शिवजी से ऐसे आज्ञा लेने वाले हुए जैसे कि पूर्व समय में जम्भ के मारने के अभिलाषी प्रसन्नचित्त इन्द्र और विष्णुहुए थे ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! इस प्रकार से उन दोनों श्रीकृष्ण और दारुक सारथी के वार्तालाप करते हुए वह रात्रि व्यतीत हुई और राजा युधिष्ठिर भी जगे १ उस समय पाणिस्वनिक, (अर्थात् हाथ की चुटकी बजानेवाले) मागध, मधुपर्किक, वैतालिक और सूत इन सब लोगों ने उस पुरुषोत्तम युधिष्ठिर की प्रशंसा करी २ नर्तकलोग नृत्य करनेलगे और चित्तरोचक स्वरवाले गायकों ने यह गान किया कि आपका वंश तुम्हारे अभीष्टोंको प्राप्तकरे ३ मृदङ्ग, झर्झर, भेरी, पणव, आनक, गोमुख, आडम्बर, शङ्ख और बड़े शब्दवाली दुन्दुभी ४ इनके सिवाय अन्य २ बाजों को भी उन सबलोगों ने बजाया जो

कि अत्यन्त प्रसन्न सर्वगुणसम्पन्न अपने काम में कुशल बड़े २ प्रवीणों के शिक्षित शिष्य थे ५ उन बादल के शब्दों के समान बड़े भारी शब्दों में स्वर्ग को स्पर्श करके उस सोयेहुए राजशिरोमणि युधिष्ठिर को जगाया ६ वह बड़ों के योग्य उत्तम शयन परसे सोकर जागाहुआ राजा शय्यासे उठकर आवश्यक कार्य के निमित्त स्नानालय को गया ७ फिर वहां स्नान करने के पीछे श्वेत वस्त्रों की पोशाकों से अलंकृत स्नान करानेवाले एकसौ आठ तरुण पुरुष सुनहरी जल से पूर्ण कलशों समेत आनकर सम्मुख नियत हुए ८ तब वह लघु अम्बरों को धारण करके शुभ आसन पर विराजमान हुआ और चन्दन से युक्त अभिमन्त्रित जलों से राजा ने स्नान किया ९ फिर पराक्रमी सुशिक्षित मनुष्यों के द्वारा सर्वौषधि के उबटनों से उबटन कियेहुए सुगन्धियों से युक्त जल से स्नान करके अग्नि की दीहुई राजहंस के समान वर्णवाली पगड़ी को मस्तक के जल के सुखाने के लिये शिरपर बांधा १० । ११ वह महाबाहु श्वेतचन्दन से शरीर को लेपन करके मालाधारी और पवित्र वस्त्रों का धारण करनेवाला हाथ जोड़कर पूर्वाभिमुख नियत हुआ १२ सत्पुरुषों के मार्ग में नियत युधिष्ठिर ने जयकरने के योग्य मन्त्र को जपा फिर नम्रतापूर्वक वह युधिष्ठिर ज्वलित अग्नि की शाला में पहुँचा १३ वहां पवित्रासन समेत समिध आहुति और मन्त्रों से संयुक्त अग्नि को पूजकर उस घर से निकला १४ फिर उस पुरुषोत्तम राजा ने दूसरे महल में जाकर वेदज्ञ और बड़े श्रेष्ठ वृद्ध ब्राह्मणों का दर्शन किया १५ उन जितेन्द्रिय वेदव्रतमें स्नान कियेहुए अनृतनामस्नान से स्नान कियेहुए हज़ारों शिष्योंसमेत सूर्य के उपासक अन्य ब्राह्मणों को भी देखा १६ फिर उस महाबाहु ने उन सब ब्राह्मणों को अक्षत पुष्पों से स्वस्तिवाचन कराके प्रत्येक ब्राह्मण को शहद घृत फल और उत्तम मङ्गली अनेक वस्तुओं से युक्त १७ एक २ निष्क सुवर्ण का दान दिया फिर अलंकृत सौ घोड़े अच्छे २ वस्त्र और यथाभिलाष दक्षिणा दीं १८ इसी प्रकार उस पाण्डुनन्दन ने दूध की देनेवाली सुवर्णशृङ्गी चांदी के खुर रखनेवाली सवत्सा कपिला गौवों को दान करके परिक्रमाकरी १९ स्वस्तिक अर्थात् शुभ वस्तु सम्पुट सुवर्ण के अर्घपात्र माला जल पूरित घट और प्रकाशित अग्नि २० अक्षत पूर्णपात्र मङ्गलीरूप गोरोचन अच्छी अलंकृत शुभकन्या दही, घृत, शहद, जल २१ मङ्गलीरूप

पक्षी और अन्य २ भी जो मङ्गलवस्तु हैं उन सब को युधिष्ठिर देखकर और स्पर्श करके बाहर के द्वारपर गया २२ उसके पीछे उस द्वारपर महाबाहु युधिष्ठिर के नियत होने पर सेवक लोगों ने विश्वकर्माजी के बनाये हुए उस दिव्य उत्तम आसन को प्राप्त किया जोकि स्वर्णमय सब ओर से कल्याणरूप मुक्ता और वैडूर्यमणियों से शोभायमान बहुमूल्य वस्त्रादिकों से अलंकृत और रत्नों से जटित था २३ । २४ उस आसनपर विराजमान हुए युधिष्ठिर के उन वृद्धों के योग्य बड़े उत्तम आभूषणों को सेवकलोगों ने लाकर उपस्थित किया २५ हे महाराज ! माला मणि मुक्ताओं के भूषण और पोशाकधारी महात्मा युधिष्ठिर का रूप शत्रुओं के शोकों का बढ़ानेवाला हुआ २६ सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित शोभायमान सुनहरी दण्डवाले चलायमान चामरों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजलियों से बादल शोभायमान होता है २७ फिर वह कौरवनन्दन सूतलोगों से स्तूयमान वन्दीजनों से वन्द्यमान गन्धर्वों से गीयमान होताहुआ २८ फिर एक मुहूर्त मेंही वन्दियों के बड़ेशब्दहुए रथों की नेमियों के और घोड़ों के खुरों के शब्द प्रकटहुए २९ हाथियों के घण्टों के शब्द शङ्खों की ध्वनि और मनुष्यों के चरणों के आघात से पृथ्वी कम्पायमान के समान हुई ३० इसके पीछे कुण्डलधारी खड्गयुक्त कवचधारी तरुणपुरुष द्वारपालक ने द्वार के भीतर जाकर जङ्घाओं से पृथ्वीपर नियत होकर प्रणाम के योग्य राजा को शिर से दण्डवत् और प्रणाम करके धर्मपुत्र ३१ । ३२ महात्मा युधिष्ठिर से समीप आयेहुए श्रीकृष्णजी के आने का समाचार निवेदन किया वह पुरुषोत्तम आगमन के धन्यवाद के साथ श्रीकृष्णजी से बोला ३३ और कहनेलगा कि परमपूजित अर्घ आसनादिक इन श्रीकृष्णजी को दो इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी को बैठाकर और आपभी उत्तम आसन पर बैठकर उनका विधि के अनुसार पूजन किया ॥ ३४ । ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न कुन्तीनन्दन राजा युधिष्ठिर जनार्दनजी को प्रसन्न करके उन देवकीनन्दनजी से बोले १ हे मधुसूदनजी ! क्या आपकी रात्रि सुखपूर्वक व्यतीतहुई और हे अविनाशिन् ! आप के सब

ज्ञान निर्मल हैं २ फिर वासुदेवजी ने भी युधिष्ठिर को उनके योग्य सत्कार किया इसके अनन्तर सूतने आयेहुए सेवक नौकर आदि के आने का निवेदन किया ३ फिर राजा की आज्ञा से उस सूत ने उन मनुष्यों को सभा में बुलाकर बैठाया विराट, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकी ४ धृष्टकेतु, चन्देरी का राजा महारथी द्रुपद, शिखण्डी, नकुल, सहदेव, चेकितान, केकय, युयुत्सु, पाञ्चालदेशीय, उत्तमौजा, युधामन्यु, सुबाहु और द्रौपदी के सब पुत्रों को राजसभा में लाकर बैठाया ५ यह सब लोग और अन्य क्षत्रिय उन क्षत्रियों में श्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिर के पास आये और सब शुभ आसनोंपर बैठगये ६। ७ महाबली महात्मा बड़े तेजस्वी दोनों वीर श्रीकृष्ण और युयुधान एक आसनपर बैठे ८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उन महात्माओं के समक्ष में मधुदैत्यसंहारी कमललोचन श्रीकृष्णजी से बड़ी नम्रता और मधुरवाणी से यह वचन बोले कि जिस प्रकार से देवतालोग इन्द्र की रक्षा में हैं उसी प्रकार हम सबलोग आप अकेले की शरण में होकर युद्ध में विजयपूर्वक अविनाशी सुखों को चाहते हैं ६। १० हे श्रीकृष्णजी! आप उस हमारे राज्य के नाश को व शत्रुओं से अप्रतिष्ठा आदि नाना प्रकार के कष्टों को भी जानते हैं ११ हे सब के ईश्वर! हे भक्तों के प्यारे! हे मधुदैत्य के मारनेवाले, श्रीकृष्णजी! हम सब के बड़े सुख और यात्रा तुम्हीं में नियत हैं १२ हे श्रीकृष्णजी! सो तुम सब प्रकार से वही करने को योग्य हो जिसको कि मेरा चित्त आप में अभिलाषा करता है अर्थात् वह अर्जुन की प्रतिज्ञा जिसको कि उसने करनाचाहा है वह सत्य होय १३ सो आप इस दुःख और क्रोधरूप अथाह समुद्र से पार उतारो हे माधवजी! अब पार उतरने के अभिलाषी हम सबलोगों की आपही नौका हूजिये १४ शत्रुके मारने को उद्युक्त रथी युद्धमें वह बात नहीं करताहै जैसे कि हे माधवजी! उपाय करने में प्रवृत्त सारथी करता है १५ हे महाबाहो, जनार्दनजी! जिस प्रकार से कि आप बड़ी २ आपत्तियों से यादवलोगों की रक्षा करते हो उसी प्रकार हमलोगों की भी दुःखों से रक्षा करने को योग्य हो १६ हे शङ्ख, चक्र, गदाधारिन्! आप नौकारूप होकर नौका से रहित महागम्भीर कौरवरूपी समुद्र में डूबे हुए पाण्डवों को बाहर निकालो १७ हे देवताओं के ईश्वर, देवता, आदि अन्त से रहित, संसार के संहारकर्ता, संसार के सब लघु दीर्घों से व्याप्त, विजय के अभ्यासी, पापों के

नाश करनेवाले, वैकुण्ठ, परमात्मन्, श्रीकृष्णजी ! आप को नमस्कार है १८ नारदजी ने आप को प्राचीन ऋषियों में श्रेष्ठ वरदाता शार्ङ्गधनुषधारी और सब से परे कहा है हे माधवजी ! उसको सत्यकरो १६ सभा के मध्य में इस रीति से धर्मराज युधिष्ठिर के कहनेपर सजल बादल के समान शब्दवाले पीताम्बर कमललोचन श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर से यह वचन बोले २० देवताओं समेत सब लोकों में भी उस प्रकार का धनुषधारी कोई नहीं है जैसा कि संसार के सब धनों का विजय करनेवाला २१ महाबली अस्त्रों का ज्ञाता अतुल पराक्रमी युद्ध में कुशल सदैव क्रोधयुक्त और तेजधारियों में श्रेष्ठ यह पाण्डव अर्जुन है २२ वह तरुण अवस्थावाला उन्नतस्कन्ध दीर्घबाहु महाबली उत्तम सिंह के समान चलनेवाला श्रीमान् अर्जुन तेरे सब शत्रुओं को मारेगा २३ और मैं वह करूंगा जिस प्रकार कुन्ती का पुत्र अर्जुन उठीहुई अग्नि के समान दुर्योधन की सेनाओं को भस्मकरेगा २४ अब अर्जुन उस दुर्बुद्धि नीच अभिमन्यु के मारनेवाले दुष्टात्मा जयद्रथ को अपने बाणों से उस मार्ग में डालेगा जिसमें कि फिर उसका दर्शन न होगा अब गृध्र, बाज, कठिन शृगाल आदि अनेक जीव जो मनुष्यों के खानेवाले हैं वह सब उसके मांस को खायेंगे २५ । २६ जो कदाचित् इन्द्रसमेत देवता भी उसके रक्षक होयँ तो भी यह जयद्रथ अब युद्ध में माराहुआ होकर यमराज की राजधानी को पावेगा २७ अब अर्जुन जयद्रथ को मारकर आपके पास आवेगा हे ऐश्वर्य के आगे रखनेवाले, राजन्, युधिष्ठिर तुम निस्सन्देह होकर शोच से रहित होजाओ ॥ २८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्र्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इस प्रकार से उनलोगों के वार्तालाप करने की दशा में भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर के देखने के लिये अपने मित्रवर्गों समेत अर्जुन भी आकर प्रकटहुआ १ फिर पाण्डवों में श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिर अपने आसन से उठकर उस मङ्गलकारी सभा में नमस्कारपूर्वक आगे नियतहुए अर्जुन को बड़े प्रेम से छाती से मिलाकर मिले २ और उसके मस्तक को सूंघकर भुजा से अपनी बगल में लेकर उत्तम २ आशीर्वादों को देकर मन्द मुसकान के साथ यह वचन बोले ३ हे अर्जुन ! प्रकट है कि युद्ध में निश्चय करके तेरे चित्त के अनुसार

तेरी बड़ी विजय है क्योंकि श्रीकृष्णजी प्रसन्न हैं ४ फिर अर्जुन युधिष्ठिर से बोले कि आप का भला होय मैंने केशवजीकी ही कृपा से दृष्टिगोचर होनेवाले एक बड़े आश्चर्य को देखा ५ तदनन्तर अर्जुन ने अपने शुभचिन्तकों की प्रसन्नता और विश्वास के निमित्त जिस प्रकार से कि उन महात्मा योगेश्वर शिवजी से मुलाक़ात हुई उस सब वृत्तान्त को वर्णन किया ६ तदनन्तर वह सबलोग आश्चर्यित होकर शिरों से पृथ्वी को स्पर्शपूर्वक शिवजी को नमस्कार करके धन्य है धन्य है यह शब्द बोले ७ तदनन्तर सब इष्टमित्र व भाई बन्धु धर्मपुत्र युधिष्ठिर से आज्ञा लेकर शस्त्रों को धारणकियेहुए प्रसन्नचित्त होकर बड़ी शीघ्रता से युद्ध के निमित्त निकले ८ और वह सात्यकी अर्जुन और श्रीकृष्णजी भी बड़े प्रसन्नचित्त राजा को नमस्कार करके युधिष्ठिर के डेरे से बाहर निकले ९ फिर वह सात्यकी और श्रीकृष्णजी दोनों वीर एक रथ की सवारी में साथ बैठकर अर्जुन के डेरे में गये और श्रीकृष्णजी ने वहां जाकर सारथी के समान युद्ध में रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन के उस रथ को जिसपर कि हनुमान्‌जी का स्वरूप था अलंकृत किया वह बादल के समान शब्दायमान सन्तप्त कियेहुए सुवर्ण के समान प्रकाशित १० । ११ अलंकृत कियाहुआ उत्तम रथ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बालसूर्य से प्रकाशित होकर शोभित होता है इसके पीछे सब सामान से अलंकृत पुरुषोत्तम ने उस अलङ्कार कियेहुए रथ को नित्यकर्म जपादिक से निवृत्त होनेवाले अर्जुनसे वर्णन किया फिर पुरुषों में मुकुट के समान श्रेष्ठ सुवर्ण की माला रखनेवाले १२ । १३ । १४ धनुषबाणधारी अर्जुन ने उस रथ को दाहिना किया और तप, विद्या और अवस्था में बड़े क्रियावान् जितेन्द्रिय पुरुषों के विजयकारी आशीर्वादों से स्तूयमान अर्जुन उस बड़े रथ में सवार हुआ तदनन्तर युद्ध की विजय से सम्बन्ध रखने वाले मन्त्रों से वह श्रेष्ठ और प्रकाशित रथ १५ ऐसे अभिमन्त्रित कियागया जैसे कि उदय होनेवाला सूर्य अभिमन्त्रित होता है फिर वह सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत रथियों में श्रेष्ठ १६ अर्जुन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मेरु पर्वत पर स्वच्छ और प्रकाशमान सूर्य होता है फिर सात्यकी और श्रीकृष्णजी भी अर्जुन के सम्मुख ऐसे सवार हुए १७ जैसे कि राजा शर्याति के यज्ञ में जाते हुए इन्द्रदेवता के आगे दोनों अश्विनीकुमार होते हैं फिर सारथियों में

श्रेष्ठ गोविन्दजी ने बागडोरों को ऐसे पकड़ा १८ जैसे कि वृत्रासुर के मारने को जाते हुए इन्द्र के रथ की रस्सियों को इन्द्र के सारथी मातलि ने पकड़ा था उन दोनों के साथ अत्यन्त उत्तम रथ में बैठाहुआ अर्जुन १६ जयद्रथ के मारने का और शत्रुओं के समूहों के नाशकरने का अभिलाषी होकर ऐसे चला जैसे कि बुध और शुक्र के साथ अन्धकार को दूर करताहुआ चन्द्रमा चलता २० अथवा जैसे कि वरुण और मित्र देवताओं के साथ तारकसम्बन्धी युद्ध में इन्द्र गये थे इसके पीछे मागधों ने मङ्गलीरूप शुभस्तोत्र और बाजों के शब्दों के साथ २१ जातेहुए उस वीर अर्जुन की स्तुति को किया वह विजय के आशीर्वाद पुण्याहवाचन घोष सूत मागधों के शब्द २२ बाजों के शब्दों से संयुक्त उन्हों की प्रसन्नता उत्पन्नकरनेवाले हुए इसके पीछे चलनेवाली सुगन्धियों से युक्त पवित्र वायु भी २३ अर्जुन को प्रसन्न करती और शत्रुओं को सुखाती हुई चली और हे राजन्! उसीक्षण में नाना प्रकार के मङ्गलों के सूचक २४ बहुत से शकुन पाण्डवों की विजय के निमित्त प्रकट हुए और हे श्रेष्ठ! वही उनके शकुन तुम्हारे पुत्रों के अशकुनरूप हुए २५ अर्जुन विजय के निमित्त उन दाहिने शकुनों को देखकर बड़े धनुषधारी सात्यकी से यह वचन बोले कि २६ हे सात्यकी! अब युद्ध में मेरी विजय अवश्य दिखाई देती है हे शिनिवंश में पुङ्गव! जोकि शकुन दिखाई देते हैं २७ इस हेतु से मैं अवश्य वहां जाऊंगा जिस स्थानपर यमलोक में जाने का अभिलाषी राजासिन्धु मेरे पराक्रम की बाट देखरहा है २८ जैसे कि जयद्रथ का मारना मेरा उत्तम कर्म है उसी प्रकार धर्मराज की रक्षाकरना भी मेरा बहुत बड़ा परमकर्म है २६ हे महाबाहो! सो तुम अब राजा को चारों ओरसे ऐसे रक्षितकरो जैसे कि मैं रक्षाकरूं उसी प्रकार तुम से भी रक्षित कियाजाय ३० मैं लोक में ऐसा किसी को नहीं देखता हूं जो युद्ध में तुझ वासुदेवजी के समान को विजयकरे चाहै आप देवताओं का इन्द्र भी होय उसको भी तेरे सम्मुख होनेको समर्थ नहीं देखता हूं ३१ हे नरोत्तम! मैं तुझ में और महारथी प्रद्युम्न में विश्वास करनेवाला होकर विना रुकाहुआ जयद्रथ के मारने को समर्थ हूं ३२ हे यादव! किसी दशा में भी मुझ में रुकावट न करनाचाहिये तुझ को सर्वात्मभाव से राजा की रक्षाकरनी योग्य है ३३ जहांपर महाबाहु वासुदेवजी वर्तमान हैं और मैं भी जहां नियत

हूं निश्चय करके वहां किसीप्रकार की आपत्ति नहीं पड़ती है २४ शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला सात्यकी अर्जुन के इसप्रकार के वचन सुनकर बहुत अच्छा कहकर वहां गया जहांपर कि राजा युधिष्ठिर वर्तमान थे ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुरशीतितमोऽध्यायः ॥८४ ॥

पचासीवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, अभिमन्यु के मरने और प्रातःकाल होनेपर उन दुःख शोक से युक्त पाण्डवों ने क्या किया ? और वहां मेरे कौन २ शूरवीरों ने युद्ध किया १ मेरे पुत्र कौरव इस पापको करके उस अर्जुन के कर्मों को जानतेहुए किसप्रकार से निर्भय हुए उसको मुझ से कहो २ पुत्र के शोक से दुःखी व नाश करनेवाले काल के समान क्रोधयुक्त आते हुए पुरुषोत्तम अर्जुन को किस प्रकार से युद्ध में देखा ३ मेरे पुत्रों ने उस हनुमान्‌जी की ध्वजा रखनेवाले बड़े धनुष को चलायमान करनेवाले पुत्र के मरने से दुःखी अर्जुन को युद्ध में देखकर क्या किया ४ हे सञ्जय ! युद्ध में दुर्योधन की क्या दशाहुई ? अब मैंने बड़ा विलाप सुना है प्रसन्नता नहीं सुनी ५ जो शब्द कि चित्तरोचक और कानोंको सुख देनेवाले थे वह सब अब जयद्रथ के डेरे में नहीं सुनेजाते हैं ६ अब मेरे बेटों के डेरे में प्रशंसा और स्तुति करनेवाले सूत मागध और नर्तकों के समूहों के शब्द सब रीति से नहीं सुने जाते हैं ७ जहांपर मेरे कान शब्दों से सदैव शब्दायमान होते थे उन दोनों के शब्दों को अब नहीं सुनता हूं ८ हे तात, सञ्जय ! पूर्व समय में सत्य और धृतवाले सोमदत्त के महल में मैंने बैठकर उत्तम शब्द को सुना ९ सो मैं पापात्मा पुण्य से रहित अपने पुत्रों के डेरे को शोक के शब्दों से शब्दायमान और उत्साह के विना देखता हूं १० विविंशति, दुर्मुख, चित्रसेन, विकर्ण और दूसरे मेरे पुत्रों के शब्द भी पूर्व के समान नहीं सुने जाते हैं ११ जिस द्रोणाचार्य के पुत्र और मेरे पुत्रों के रक्षास्थान बड़े धनुष-धारी अश्वत्थामा को ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य जाति के शिष्यलोग उपासना करते थे १२ और वितण्डावाद वर्णन वार्तालाप शीघ्रता करनेवाले और बजाये हुए नानाप्रकार के चित्तरोचक बाजे और गानों से दिन रात्रि रमण करताहुआ हास विलास करता था १३ और बहुत से कौरव पाण्डव और यादवों से उपासना कियाहुआ था हे सूत ! उस अश्वत्थामा के घर में अब पूर्व के समान

शब्द नहीं है १४ जो नर्तक और गानेवाले उस बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा के पास सदैव नियत होते थे उनकी भी ध्वनि नहीं सुनी जाती है १५ रात्रि के समय बिन्द अनुबिन्द राजाओं के डेरे में जो बड़ी भारी ध्वनि १६ सुनीजाती थी अब उस प्रकार की नहीं सुनने में आती है और प्रसन्न रहनेवाले केकयलोगों के डेरे में ताल समेत गीतों के बड़े २ शब्द सुनेजाते थे १७ और हे तात! नर्तकलोगों के जो शब्द सुनेजाते थे वह अब नहीं सुनेजाते जो सात तारवाले तमूरों के फैलानेवाले शास्त्रज्ञ याजकलोग सोमदत्त की उपासना करते थे १८ उनके भी शब्द नहीं सुने जाते हैं धनुष प्रत्यञ्चा के शब्द वेदध्वनि तोमर खड्ग और रथ के जो शब्द १९ द्रोणाचार्य के घर में होते थे मैं उनको भी नहीं सुनता हूं नाना प्रकार के देशजन्य गीतों के जो शब्द और बाजों के जो शब्द आधिक्यता से होते थे वह भी अब नहीं सुनेजाते हैं जब अविनाशी श्रीकृष्णजी सब जीवों की दया के लिये शान्ति की इच्छा से उपप्लवी स्थान से आये तब उसके पीछे मैंने उस निर्बुद्धि दुर्योधन से कहा था २० । २१ । २२ कि हे पुत्र! वासुदेवरूप तीर्थ के द्वारा पाण्डवों से सन्धि कर लो मैं इस बातको समय के अनुसार उचित और योग्य जानता हूं हे दुर्योधन! तुम विपरीत कर्म मतकरो २३ जो तुम सन्धि चाहनेवाले और परिणाम में कुशल चाहनेवाले केशवजी को उत्तरदोगे तो युद्ध में तेरी विजय नहीं है २४ उसने उस सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ और पूर्वकर्मों के कहनेवाले श्रीकृष्णजी को उत्तर दिया और अन्याय से उनकी बात को अङ्गीकार नहीं किया २५ इसके पीछे वह दुर्बुद्धि काल का खैंचाहुआ दुर्योधन मुझ को त्याग करके उन दोनों दुश्शासन और कर्ण के मतपर कर्म करनेवालाहुआ २६ मैं द्यूतकर्म को नहीं चाहता हूं और विदुरजी उसको निषेध करते हैं और जयद्रथ भी उस द्यूतकर्म को नहीं चाहता है और भीष्मजी भी बारंबार निषेध करते हैं २७ हे सञ्जय! शल्य, भूरिश्रवा, पुरु, मित्रोजय, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य यह सब भी द्यूतकर्म को नहीं चाहते हैं २८ जो मेरा पुत्र इन सब के मत को अङ्गीकार करके कर्म करेगा तो ज्ञाति, मित्र और अपने शुभचिन्तकों समेत वेदना से रहित नीरोग होकर जीवता रहैगा २९ और शुद्ध मधुर भाषण करनेवाले ज्ञाति बान्धवों से प्रीति-पूर्वक बोलनेवाले कुलीन सम्मती और प्राज्ञ अर्थात् ज्ञानी पाण्डवलोग सुख

को पावेंगे ३० धर्म से सम्बन्ध रखनेवाला मनुष्य सदैव और सब स्थानों में सुख को पाता है और मरनेपर शुद्ध मोक्ष को भी प्राप्तकरता है ३१ वह पराक्रम से विजय करनेवाले पाण्डव आधे राज्य को भोगने के योग्य हैं यह समुद्रान्त पृथ्वी उन्हों के भी बाप दादों की है ३२ पाण्डवलोग धर्ममार्ग में प्रवृत्त होकर धर्म मेंही नियत होते हैं हे तात! वह पाण्डवलोग जिनलोगों के वचनों को मानते हैं वह मेरी ज्ञातिवाले हैं ३३ शल्य, सोमदत्त, महात्माभीष्म, द्रोणाचार्य, विकर्ण, बाह्लीक, कृपाचार्य ३४ और अन्य सब महात्मा भरतवंशी वृद्ध लोग तेरे निमित्त वार्तालाप करेंगे उन महात्मा लोगों के वचन को वह पाण्डव करेंगे ३५ क्या तुम उनके मध्य में किसी को ऐसा मानते हो कि वह तुम्हारे विपरीत कहेगा श्रीकृष्णजी कभी धर्म को नहीं त्यागेंगे और वह सब उनकी आज्ञानुसार चलनेवाले हैं ३६ वह वीर मुझ से भी धर्मरूप उपदेशों के द्वारा समझाये गये हैं इससे वह पाण्डवलोग धर्म के विपरीत कभी नहीं करेंगे क्योंकि वह धर्मात्मा हैं ३७ हे सूत! इस प्रकार विलाप करतेहुए मैंने अनेक प्रकार से पुत्र को समझाया परन्तु उस अज्ञानी ने मेरे वचनों को नहीं सुना इसमें मैं काल की विपरीत गति मानता हूं जिस स्थान पर भीमसेन अर्जुन वृष्णियों में वीर सात्यकी पाञ्चाल देशीय, उत्तमौजा, दुर्जय युधामन्यु ३८।३९ निर्भय धृष्टद्युम्नआदि करके सहित दुर्जय शिखण्डी, अश्मक, केकयदेशीय, क्षत्रधर्मा, सोमकि ४० चन्देरी का राजा, चेकितान, काशी के राजा का पुत्र, समर्थ द्रौपदी के पुत्र, राजा विराट, महारथी द्रुपद ४१ पुरुषोत्तम नकुल और सहदेव और मन्त्री श्रीकृष्णजी हैं वहां इस लोक का जीवन चाहनेवाला कौन सा शूरवीर इन बड़े शूरवीरों से युद्ध करसक्ता है ४२ सिवाय दुर्योधन कर्ण सौबल के पुत्र शकुनि और दुश्शासन के मेरा कौनसा शूरवीर इन दिव्य अस्त्र चलानेवाले शत्रुओं को सहसक्ता है मैं इन चारों के सिवाय किसी पांचवें शूरवीर को इनके सम्मुख जानेवाला नहीं देखता हूं बागडोरों को हाथ में रखनेवाले श्रीकृष्णजी जिसके रथपर नियतहोयँ ४३।४४ और अलङ्कारयुक्त शस्त्रों का धारणकरनेवाला अर्जुन युद्धकर्ता हो उस दशा में उनकी पराजय किसी प्रकार से नहीं होसक्ती हैं फिर यह दुर्योधन उन विलापों को स्मरण न करे कि ४५ पुरुषोत्तम भीष्म और द्रोणाचार्य मारेगये सञ्जय ने कहा निश्चयकरके

यह बात तुमने मुझ से कही थी फिर धृतराष्ट्रने कहा कि भविष्यत् वृत्तान्तों के ज्ञाता विदुरजी के कहेहुए उन वचनों के ४६ इस प्रत्यक्ष प्रकट होनेवाले फल को देखकर मेरे पुत्र शोच को करते हैं इससे मैं यह मानता हूं कि सात्यकी समेत अर्जुन से पराजित हुई मेरी सेना को देखकर ४७ और रथ के बैठकों को खाली देखकर मेरे पुत्र शोच करते हैं मैं यह मानता हूं कि जिस प्रकार वायु से चलायमान बड़ी अग्नि समूह हिमऋतु के अन्त में सूखेहुए वनको ४८ भस्म करदेता है उसी प्रकार अर्जुन भी मेरी सेना को भस्म करता है वह सब तुम मुझसे कहो क्योंकि हे सञ्जय ! तुम वृत्तान्त के वर्णन करने में बड़े कुशल हो ४९ जब अर्जुन के अपराध को करके सायङ्काल के समय अपने डेरे को आये हे तात ! तब अभिमन्यु के मरनेपर तुम्हारा चित्त किस प्रकार का हुआ ५० हे सञ्जय ! मेरे पुत्र बड़े भारी अपराध को करके युद्ध में गाण्डीव धनुषधारी के उन कर्मों के सहने को समर्थ नहीं होंगे ५१ ऐसी दशावाले उनलोगों के मध्य में दुर्योधन ने क्या करने के योग्य कहा और कर्ण दुश्शासन और शकुनी ने भी क्या करने के योग्य कहा ५२ अभागे लोभी दुर्बुद्धि क्रोध से दुष्टचित्त राज्य के अभिलाषी अज्ञानी और रोगी चित्त दुर्योधन के अन्यायों से युद्ध में इकट्ठे होनेवाले मेरे सब पुत्रों का जो वृत्तान्त है वह चाहे न्यायके अनुसार अथवा न्याय के विपरीत होय उस सब को मुझ से वर्णनकरो ॥ ५३।५४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, मैंने सब वृत्तान्त अपने नेत्रों से देखा है उसको यथार्थता से कहता हूं तुम चित्त लगाकर सुनो उसमें सब आपका ही बड़ा अन्याय है १ हे राजन् ! जैसे कि विना जलवाली नदी में सेतु अर्थात् पुल का बांधना है उसी प्रकार यह आपका विलाप करना भी निरर्थक है हे भरतर्षभ ! शोच मत करो २ यह काल की मर्यादा उल्लङ्घन करने के योग्य नहीं है इस कारण आप शोच को मतकरो यह होनहार बड़ी प्राचीन है ३ जो तुम द्यूतहोने से प्रथमही कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को और अपने पुत्रों को खेलने से हटादेते तो तुमको दुःख कभी नहीं होता ४ फिर युद्ध के वर्तमान होने के समय पर भी जो आप उन क्रोधयुक्तों को निषेध कर देते तब भी आपको कष्ट न होता ५ जो तुम सब

कौरवलोगों को यह आज्ञा करते कि इस अनाज्ञाकारी दुर्योधन को पकड़कर बंधन में डालो तो भी आपको दुःख न होता ६ वह पाण्डव, पाञ्चालदेशीय, यादव और अन्य २ देशीय राजालोग हैं वे भी विपरीत बुद्धि को नहीं चाहेंगे ७ जो तुम पितृकर्म को करके और अपने पुत्र को शुभमार्ग में नियतकरके धर्म से कर्म करो तो तुमको दुःख प्राप्त न होगा ८ इस लोक में तुम ऐसे बड़े ज्ञानी होकर अपने सनातन धर्म को छोड़कर दुर्योधन कर्ण और शकुनी के मतोंपर काम करनेवालेहुए ९ हे राजन्! तुझ स्वार्थी और अपने प्रयोजन में प्रवृत्त चित्त वाले का वह सब विलाप मैंने सुना जोकि विष मिलेहुए शहद के समान है १० पूर्वकाल में श्रीकृष्णजी राजा युधिष्ठिर भीष्म और द्रोणाचार्य को भी ऐसा नहीं मानते थे जैसा कि वह अविनाशी तुमको मानते थे ११ जब से उन्हों ने तुमको राजधर्म से हीन और अन्याय में प्रवृत्त जाना तभी से श्रीकृष्णजी तुमको वैसा नहीं मानते हैं १२ हे पुत्रों के राज्य के चाहनेवाले, धृतराष्ट्र! जैसे तुमने कठोर वचन कहकर पाण्डवों को नहीं ध्यान किया उसी का फल तुमको प्राप्त हुआ है १३ हे पापों से रहित! प्रथम तो बाप दादों का राज्य सन्देहयुक्त हुआ फिर तुमने पाण्डवों से विजय की हुई सम्पूर्ण पृथ्वी को पाया १४ जैसे कि पाण्डु ने कौरवों का राज्य लेकर अपने यश को बढ़ाया उसी प्रकार उससे भी अधिक धर्मात्मा पाण्डवों ने प्राप्तकिया १५ उनका वह उस प्रकार का कर्म तुमको प्राप्तहोकर निष्फल हुआ जो पिता के राज्य से तुमने उनको निकालकर भ्रष्ट करदिया १६ हे राजन्! जो तुम युद्ध के समय में अब भी अपने पुत्रों के दोषों का विचारकरके उनको बुरासमझो तो अब वह दुःख प्राप्त नहीं होगा १७ युद्ध में लड़नेवाले राजालोग जीवन की रक्षा नहीं करते हैं और वह क्षत्रियों में श्रेष्ठ पाण्डवों के सेना को मँझाकर युद्धकरते हैं १८ जिस सेना को श्रीकृष्णजी, अर्जुन, सात्यकी, भीमसेन ये चारों रक्षित करते हैं उस सेना के सम्मुखता कौरवों के सिवाय कौनकरसक्ता है १९ जिन्हों में लड़नेवाला अर्जुन और मन्त्री श्रीकृष्णजी हैं और जिन्हों के शूरवीर भीमसेन और सात्यकी हैं २० उनके सम्मुख कौरवलोग अथवा उनके अनुगामी लोगों के सिवाय कौन सा धनुषधारी लड़ने को समर्थ है २१ हे राजन्! जबतक मित्रलोग क्षत्रियधर्म में प्रीति रखनेवाले शूरों से युद्ध करना सम्भव है तबतक कौरव भी करते हैं २२ अब

जिसप्रकार पुरुषोत्तम पाण्डवों के साथ कौरवों का कठिन युद्धहुआ उस सब को मूल समेत सुनो ॥ २३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषडशीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, उस रात्रि के व्यतीत होनेपर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य जी ने व्यूह बनाने के निमित्त अपनी सब सेना को समझाया १ हे राजन्! परस्पर मारने के अभिलाषी क्रोधयुक्त अमर्षी और गर्जनेवाले शूरों के अपूर्व वार्तालाप सुनीगई २ कोई तो धनुष को टङ्कारकर और कोई प्रत्यञ्चा को चढ़ाकर श्वास लेतेहुए पुकारे कि अब अर्जुन कहां है ३ किसी ने उत्तम मूठ तीक्ष्णधार वाली प्रकाशित आकाश के समान अच्छी रीति से उठाई हुई मियान से जुदी तलवारों को चलायमान किया ४ कोई युद्ध में प्रवृत्तचित्त हज़ारों शूरवीर अपनी सुशिक्षिताओं के प्रभाव और बल से तलवार और धनुषों के मार्गों को घुमातेहुए दिखाई पड़े ५ किसी २ ने उन गदाओं को जोकि घण्टा रखनेवाले चन्दन से लिप्त सुवर्ण और वज्ररूप लोहे से अलंकृत थीं उनको उठा २ कर पाण्डव अर्जुन को पूछा ६ बल के मद से मदोन्मत्त भुजा से शोभित किसी २ ने इन्द्र की ध्वजा के समान परिघनाम शस्त्रों से आकाश को रोक दिया ७ और कोई २ शूर विचित्र मालाओं से अलंकृत युद्ध में प्रवृत्तचित्त नाना प्रकार के शस्त्रों समेत जहां तहां वर्तमान होकर नियत हुए और युद्धभूमि में आकर पुकारने लगे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजी कहां हैं और प्रतिष्ठावान् भीमसेन कहां है ८ और इनके सब मित्र लोग कहां हैं ९ उसके पीछे घोड़ों को शीघ्रता से चलाते आप द्रोणाचार्य शङ्ख को बजाकर उन घोड़ों को इधर उधर से दौड़ाते हुए बड़ी तीव्रता से भ्रमण करनेलगे १० हे महाराज! उन युद्ध में प्रसन्न होनेवाले सब सेनाओं के नियत होने पर भारद्वाज द्रोणाचार्यजी राजा जयद्रथ से बोले ११ कि तुम सोमदत्त, महारथी कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन, कृपाचार्य १२ और एक लाख घोड़े साठ हज़ार रथ चौदह हज़ार मतवाले हाथी १३ और इकीस हज़ार शस्त्रधारी पदाती छः कोस पर मुझ से पृथक् होकर नियत होजाओ १४ इन्द्र समेत देवता भी तुझे वहां नियत होनेवाले के सम्मुखता करने को समर्थ नहीं हैं १५ फिर सब पाण्डव क्या होसक्ते हैं १६

राजा इस प्रकार के वचनोंसे विश्वासित किया हुआ वह सिन्धु का राजा जयद्रथ उन महारथियों से वेष्टित होकर गान्धारदेशियों के साथ चला १७ जोकि कवचधारी युद्ध में सावधान भास हाथों में रखनेवाले सेनाओं में नियत होकर सवारों से व्याप्त थे हे महाराज! जयद्रथ के सब घोड़े चामर आपीड़ रखनेवाले सुवर्ण से अलंकृत १८ अच्छे २ लोगों के सवार करनेवाले थे उनकी संख्या सातहज़ार थी और तीन हज़ार सिन्धुदेशीय थे १९ आपका पुत्र दुर्मर्षण उन डेढ़ हज़ार हाथियों समेत जोकि मतवाले और सावधान हाथीवानों से युक्त होकर भयकारी कर्म करनेवाले थे सब सेना के आगे लड़ता हुआ आगे नियत हुआ २०।२१ उसके पीछे आपके दोनों पुत्र दुश्शासन और विकर्ण जयद्रथ के अभीष्ट के प्राप्ति के लिये सेना के आगे नियत हुए २२ द्रोणाचार्य से वह चक्र शकट नाम व्यूह चौबीस कोस लम्बा और पिछले भाग में दशकोस विस्तृत बनायागया २३ आप द्रोणाचार्य ने जहां तहां हज़ारों शूरवीर राजा रथ घोड़े और पत्तियों से वह व्यूह अलंकृत किया २४ उसके पीछे के भाग में कठिनता से तोड़ने के योग्य पद्मगर्भ नाम व्यूह अलंकृत किया फिर पद्मव्यूह के भीतर शूचीनाम गुप्तव्यूह बनाया २५ इस प्रकारसे द्रोणाचार्य इस बड़े व्यूह को अलंकृत करके नियत हुए और बड़ा धनुषधारी कृतवर्मा शूची के मुखपर नियत हुआ २६ हे श्रेष्ठ! उसके पीछे राजा काम्बोज और जलसन्ध नियतहुए उन दोनों के पीछे दुर्योधन और कर्ण नियत हुए २७ फिर शकट के मुख के रक्षक मुखों के न फेरनेवाले लाखों शूरवीरलोग नियत हुए २८ उनके पीछे बड़ी सेनासे व्याप्त राजा जयद्रथ हुआ अर्थात् वह राजा शूचीके पार्श्व में नियत हुआ २९ हे महाराज! शकट के मुखपर द्रोणाचार्यजी नियत हुए उनके पीछे राजा भोज हुआ और आपही उसकी रक्षाकरी ३० श्वेत कवच, वस्त्र, पगड़ी, रखनेवाले बड़े वक्षस्स्थलवाले काल के समान क्रोधरूप महाबाहु द्रोणाचार्यजी धनुषको टङ्कोरते हुए नियत हुए ३१ कौरव द्रोणाचार्य के उस रथ को जोकि पताका समेत रक्तवर्ण के घोड़ों से युक्त था और जिसकी ध्वजा में वेदी और काले मृगचर्म का चिह्न था उसको देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए ३२ व्याकुल समुद्र के समान द्रोणाचार्य के रचेहुए व्यूह को देखकर सिद्धचारणों के समूहों को आश्चर्य हुआ ३३ जीवधारियों ने यह माना कि यह व्यूह अनेक देश

पर्वत और समुद्रों समेत पृथ्वी को निगलजाय तो कुछ आश्चर्य नहीं ३४ उस असंख्य रथ, मनुष्य, घोड़े, हाथी और पत्तियों समेत भयकारी शब्दवाले अपूर्व रूप शत्रुओं के हृदय के तोड़नेवाले बनाये हुए बड़े शकटव्यूहको देखकर राजा दुर्योधन बड़ा प्रसन्नहुआ ॥३५॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, सेनाओं के अलंकृत होने और बड़े उच्च शब्द से परस्पर एक २ के बुलाने भेरी मृदङ्गों के बजने १ सेनाओं समेत बाजों के शब्द होने शङ्खों के बजने और शरीर के रोमाञ्च खड़े करनेवाले शब्दों के होने धीरे-पने से युद्धाभिलाषी भरतवंशियों के अलंकृत होने और भयकारी मुहूर्त के वर्तमान होनेपर अर्जुन दिखाई दिया २।३ हे भरतवंशिन्! वहां अर्जुन के आगे हज़ारों काकों के बच्चे क्रीड़ा करने लगे ४ और इसी प्रकार चलनेवाले हम लोगों के दाहिने भयकारी शब्दवाले मृग और अशुभ दर्शन शृगाल शब्दों को करनेलगे ५ और हज़ारों प्रकाशित उल्का वायु के साथ परस्पर के आघात शब्दों समेत पृथ्वी पर गिरे और महाकठिन भय के वर्तमान होने पर सम्पूर्ण पृथ्वी कम्पायमान हुई ६ अर्जुन के आने और युद्ध में सम्मुख नियत होनेपर महारूखी कङ्कड़ों की वर्षा करनेवाली संसार की वायु उनके परस्परीय आघातीय शब्दों के साथ चलने लगी ७ तब बड़े ज्ञानी नकुल के पुत्र शतानीक पर्षत का पौत्र धृष्टद्युम्न इनदोनों ने पाण्डवों की सेनाओं को अलंकृत किया ८ इसके पीछे आपका पुत्र दुर्मर्षण हज़ाररथ सौ हाथी तीनहज़ार घोड़े और दशहज़ार पदातियों के साथ डेढ़हज़ार धनुष के अन्तरपर सब सेनाओं के आगे नियत यह वचन बोला ९।१० कि अब मैं इस युद्ध में युधिष्ठिर को और सन्तप्त करनेवाले गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन को ऐसे रोकूंगा जैसे कि समुद्र को मर्यादा रोकती है ११ अब क्रोधयुक्त और निर्भय अर्जुन को युद्ध में मुझसे भिड़ाहुआ ऐसे देखो जैसे कि पाषाण से भिड़ाहुआ पाषाण होता है १२ युद्ध के ज्ञाता तुम सब रथी लोग नियत होजाओ और मैं यश और मान को बढ़ाताहुआ इन सब मिलेहुओं से युद्ध करूंगा १३ हे महाराज! वह महात्मा अति बुद्धिमान् बड़े धनुषधारियों से संयुक्त बड़ा धनुषधारी इस प्रकार के वचनों

को कहताहुआ नियतहुआ १४ इसके पीछे काल के समान क्रोधयुक्त वज्रधारी इन्द्र के तुल्य दण्डधारी काल के समान सहने के अयोग्य काल से प्रेरित शूलधारी रुद्र व पाशधारी वरुण के समान व्याकुलता से रहित प्रलयकाल में फिर संसार को भस्मकरतेहुए प्रकाशित अग्नि के समान १५। १६ क्रोध और अधैर्य से चलायमान शरीर निवात कवचों का मारनेवाला महाविजयी अर्जुन बड़े भारी व्रत को धैर्य और सत्य से पूराकरना चाहता आकरके नियतहुआ १७ कवच खड्ग समेत सुवर्ण का मुकुट धारण करनेवाला श्वेतमाला पोशाक और सुन्दर बाजूबन्दों समेत कुण्डलों से शोभित १८ नररूप अर्जुन नारायण श्रीकृष्णजी के साथ अत्यन्त उत्तम रथ में बैठकर युद्ध में गाण्डीव धनुष को चलायमान करते उदयहुए सूर्यके समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुआ १६ उस प्रतापवान् अर्जुन ने बड़ी सेना के आगे एकतीर के अन्तरपर रथ को नियत करके धनञ्जय शङ्ख को बजाया २० हे श्रेष्ठ! फिर उन निर्भय श्रीकृष्णजी ने भी अर्जुन के साथ ही अपने पाञ्चजन्य शङ्ख को बड़े वेग से बजाया २१ हे राजन्! उन दोनों शङ्खों के शब्दों से आपकी सेना में सब कम्पायमान और अचेत होकर रोमाञ्चों के खड़े होनेवाले हुए २२ जैसे कि वज्र के शब्द से सब जीवधारी भयभीत होते हैं उसी प्रकार आपकी सेनाओं के लोग शङ्खों के शब्दों से भयभीत होगये २३ और सब सवारियों में भी मूत्र और विष्ठा को छोड़ा इस रीति से सवारियों समेत सब सेना व्याकुल हुई २४ हे नरोत्तम, राजन्, धृतराष्ट्र! शङ्खों के शब्दों से कितनेही तो सुस्त हुए और कितनेही अचेतहुए और कितनेही डरगये २५ इसके अनन्तर मुख को चौड़ा किये आपकी सेनाओं को भयभीत करते हनुमान्जी ने ध्वजा में रहनेवाले जीवों समेत बड़ाभारी शब्द किया २६ आपकी सेना के प्रसन्न करनेवाले शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग और ढोल भी फिर बजायेगये २७ नाना प्रकार के बाजों के शब्द सिंहनादों समेत तालों का ठोकना इत्यादि बाजों से युक्त महारथियों से २८ उस भयभीतों के भय के बढ़ानेवाले बड़े कठोर शब्द के होनेपर अत्यन्त प्रसन्न इन्द्र का पुत्र अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोला ॥२६॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टाशीतितमोऽध्यायः॥ ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

अर्जुन बोले कि हे श्रीकृष्णजी! आप घोड़ों को चलायमान करिये मैं जहां दुर्मर्षण नियत है उस हाथियों की सेना को छिन्न भिन्न करके शत्रुओं की सेनामें प्रवेशकरूंगा १ सञ्जय बोले कि अर्जुन के इस वचन को सुनकर महाबाहु श्रीकृष्णजी ने घोड़ों को वहांही चलायमान किया जहांपर कि दुर्मर्षण नियत था २ वह अत्यन्त भय का उत्पन्न करनेवाला कठिन युद्ध उन एकरूप मिलेहुए वीरों के साथहुआ जोकि रथ हाथी और मनुष्यों को नाश करनेवाला था ३ इसके पीछे बादल की वर्षा के समान बाणों की वर्षा करनेवाले अर्जुन ने शत्रुओं को ऐसे ढकदिया जैसे कि पर्वत को बादल ढकदेता है ४ उन शीघ्रता करनेवाले रथियों ने भी हस्तलाघवता के समान बाणों के जालोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुनको आच्छादित करदिया ५ तदनन्तर युद्ध में शत्रुओं से रुकेहुए क्रोधयुक्त महाबाहु अर्जुन ने बाणों से रथियों के शिरों को शरीरों से पृथक् किया ६ ऊपर की ओर घूमनेवाले नेत्रों से युक्त दोनों ओठों को चाबनेवाले कुण्डल पगड़ियों के धारण करनेवाले उत्तम मुखों से वह पृथ्वी आच्छादित होगई ७ जैसे कि चारों ओर से कमलों के वन टूटते हैं उसी प्रकार शूरवीरों के फैलेहुए मुख शोभायमानहुए ८ सुवर्ण के कवचों से अलंकृत रुधिर में लिप्तशरीर ऐसे भिड़ेहुए दृष्टिपड़े जैसे कि बादलों के समूह बिजली से भिड़ेहुए होते हैं हे राजन्! पृथ्वीपर गिरतेहुए उन शिरों के ऐसे शब्दहुए जैसे कि समय पर पककर ताल के फलों के शब्द होते हैं ९।१० इसके पीछे कितनेही धड़ धनुष को पकड़कर नियतहुए कितनेही खड्ग को पकड़कर ध्वजा से उठाकर नियतहुए ११ और कितनेही युद्ध में अर्जुन को न सहनेवाले विजयाभिलाषी पुरुषोत्तम अपने गिरेहुए शिरों को भी नहीं जानते थे १२ घोड़ोंके शिर हाथियों की सूंड़ वीरों की भुजा और शिरोंसे पृथ्वी आच्छादित हुई १३ यह अर्जुन है यह अर्जुनहै हे प्रभो! इसप्रकार आपकी सेनाओं में शूरवीरों के शब्द अर्जुन से सम्बन्ध रखनेवाले हुए १४ एकने दूसरे को मारा और दूसरे ने अपने को भी मारा समय से अचेतहोकर उन लोगों ने संसारभर को अर्जुनरूपही माना १५ पुकारते रुधिर में लिप्त अचेत कठिन पीड़ाओं से युक्त वारंवार अपने बान्धवों को पुकारते हुए पृथ्वीपर गिरपड़े अर्थात् मरकर

पृथ्वीपर सोये १६ भिन्दिपाल, प्रास, शक्ति, दुधारा खड्ग, फरसे, यूपक, खड्ग, धनुष और तोमरों को रखनेवाले १७ बाण, कवच, भूषण, गदा और बाजूबन्दधारी परिघ के समान बड़े सर्प के समान भुजायें १८ पकड़ती थीं और चेष्टा करती हुई सब ओर से आघात करती थीं और उत्तम बाणों से कटी हुई क्रोधयुक्त होकर वेग को करती थीं १९ जो २ मनुष्य युद्ध में अर्जुन के सम्मुख जाता था उस २ के शरीर को उसका नाशकारी बाण आघात करता था २० वहां रथ के मार्गों में नाचते और धनुष को खैंचते हुए उस अर्जुन का छोटा सा भी अन्तर किसी ने नहीं देखा २१ उपायपूर्वक विचार करनेवाले और शीघ्रता से बाणों के खैंचनेवाले अर्जुन की हस्तलाघवता से दूसरे मनुष्य आश्चर्ययुक्त हुए २२ अर्जुन ने बाणों से हाथी व हाथी के सवार घोड़े व घोड़ों के सवार और सारथियों समेत रथियों को बाणों से घायल किया २३ वह पाण्डव अर्जुन घूमनेवाले लौटनेवाले युद्ध करनेवाले और सम्मुख युद्धमें नियत शूरवीरों को मारता था २४ जैसे कि आकाश में उदय होताहुआ सूर्य बड़े अन्धकार को दूर करताहै उसी प्रकार अर्जुन ने बाणोंसे हाथियोंकी सेनाकोमारा २५ मारेहुए और गिरेहुए हाथियों से आपकी सेना ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि प्रलय के समय पर्वतों से आच्छादित पृथ्वी होती है २६ जैसे कि सूर्य मध्याह्न के समय सदैव जीवधारियों से दुःख से देखने के योग्य होता है उसी प्रकार युद्ध में क्रोधयुक्त अर्जुन भी शत्रुओं से कठिनतापूर्वक देखने के योग्यहुआ २७ हे शत्रुसन्तापिन् ! इस प्रकार से आपके पुत्र की वह सेना युद्ध में भागीहुई भयभीत और छिन्न भिन्न होकर बाणों से अत्यन्त पीड्यमान २८ ऐसे व्याकुल हुई जिस प्रकार बड़ी वायु से बादलों की सेना होती है फिर वह छिन्न भिन्न होनेवाली सेना सम्मुख देखने को समर्थ नहीं हुई २९ चाबुक धनुष की कोटि व अच्छे प्रकार कियेहुए हुङ्कार कोड़े बड़े २ आघात और भयकारी शब्दों से ३० आपके अश्वसवार रथसवार और पत्तिलोग उस अर्जुन के हाथ से पीड्यमान होकर बड़ी शीघ्रता से अपने २ घोड़ों को चलायमान करके भागे ३१ कोई २ शूरवीर हाथियों को एड़ी अंगुष्ठ और अंकुश आदि से चलायमान करके भागे और बहुत से बाणों से अचेत होकर फिर उसी के सम्मुख गये ३२ तब आपके शूरवीर उत्साहों से रहित होकर महाव्याकुलचित्त हुए ॥ ३३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोननवतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

नब्बे का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, उस सेना के मुख के टूटने और अर्जुन के हाथ से वहां घायल होनेपर वहां कौन २ शूरवीर अर्जुन के सम्मुख हुए १ खेद की बात है कि सकल निश्चयवाले द्रोणाचार्य की शरण में नियत होनेवाले हम सब उस शकटव्यूह में ऐसे घुसे हुए हैं जैसे कि गढ़ अर्थात् किले में निर्भय होते हैं २ सञ्जय बोले कि हे निष्पाप, धृतराष्ट्र! उस प्रकार अर्जुन के हाथ से उस आप की सेना को पराजित साहस से रहित भागने में प्रवृत्तचित्त नाशवान् वीरों से रहित होजाने पर ३ और इन्द्र के पुत्र के उत्तम बाणों से हज़ारों के वारंवार मरने पर वहां पर कोई भी युद्ध में अर्जुन के सम्मुख देखने को समर्थ नहीं हुआ ४ हे राजन्! उसके पीछे आपका पुत्र दुश्शासन उस दशावाली सेना को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्ध के लिये अर्जुन के सम्मुख गया ५ हे महाराज! उस सुवर्ण के कवच से अलंकृत सुनहरी मुकुटधारी तेज पराक्रमी शूरवीर ६ और हाथियों की बड़ी सेना से पृथ्वी को निगलने वाले के समान दुश्शासन ने अर्जुन को घेरलिया ७ हाथियों के घण्टों के शब्द शङ्खों की ध्वनि धनुषों की टङ्कार और हाथियों की चिंहाड़ों से ८ पृथ्वी दिशा विदिशा और आकाश शब्दों से पूर्ण होगये वह भयकारी महायुद्ध एक मुहूर्त तक वर्तमान रहा ९ अंकुशों से प्रेरित पेचदार सूंड़वाले क्रोधयुक्त पक्षधारी पर्वत के समान शीघ्रता से आतेहुए उन हाथियों को देखकर उस नरोत्तम अर्जुन ने बड़े भारी सिंहनाद के साथ शत्रुओं के हाथियों की सेना को चारों ओर से अपने बाणों के जालों से छिन्न भिन्न करदिया १०।११ जैसे कि बड़े वेगवान् वायु से उठायेहुए बड़े समुद्र में मगर प्रवेश करता है उसी प्रकार से वह अर्जुन भी उस हाथियों की सेना में प्रवेश करगया १२ शत्रुओं के पुरों का विजय करनेवाला अर्जुन सब दिशाओं में ऐसे दिखाईदिया जैसे कि मर्याद को उल्लङ्घन करनेवाला सूर्य अत्यन्त सन्तप्त करताहुआ प्रलयकाल में होता है १३ घोड़ों के खुरों के शब्द रथ के पहियों की नेमियों के शब्द प्रत्यञ्चा का शब्द १४ नाना प्रकार के बाजों के शब्द पाञ्चजन्य और देवदत्त नाम शङ्खों की ध्वनि और गाण्डीव धनुषके शब्दसे १५ वह सब मनुष्य और हाथियों के समूह मन्दवेग होकर अचेत होगये अर्जुन के

बाणों से जिनका स्पर्शपूर्वक लगना विषधर सर्प के समान था इसी से सब मरगये १६ वह हाथी युद्ध में अर्जुन के चलाये हुए तीक्ष्ण लाखों बाणों से सब अङ्गों में घायलहुए १७ अर्जुन से घायल होकर बड़े व्याकुलता के शब्द करते सब पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि पृथ्वीपर टूटेहुए पर्वत गिरते हैं १८ और कितने ही हाथी दाँतों की जड़ मुख मस्तक और कमरोंपर बाणों से छिदेहुए क्रौञ्च पक्षी के समान वारंवार शब्दों को करनेलगे १९ अर्जुन के चलायेहुए गुप्तग्रन्थीवाले भल्लों से हाथी के सवार और अन्य मनुष्यों के शिर खण्ड २ होगये २० अर्जुन के बाणों से कुण्डलधारी कमलों के समान गिरेहुए शिरों के समूहों से पृथ्वीपर भेट कियेहुए २१ जन्त्रों से बँधेहुए प्रत्यञ्चा से रहित घावों से पीड़ित रुधिर से लिप्त मनुष्य उन युद्ध में घूमते हुए हाथियों के ऊपर चिपटगये २२ कितनेही मनुष्य अच्छी रीति से चलायेहुए एकही बाण से मरकर पृथ्वीपर गिरपड़े २३ नाराचों से अत्यन्त घायल मुखों से रुधिर को डालते हाथी सवारों समेत पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वृक्ष रखनेवाले पर्वत गिरते हैं २४ अर्जुन ने गुप्तग्रन्थीवाले भल्लों से रथ के सवारों की प्रत्यञ्चा, ध्वजा, धनुष, युग और ईषादण्ड को चूर्ण २ करदिया २५ वह अर्जुन अपने धनुषमण्डल से नाचतेहुए के समान नतो बाणों को धनुषपर चढ़ाता दिखाई दिया न खैंचता छोड़ता और उठाता दिखाई दिया २६ और बहुत से हाथी नाराचों से अत्यन्त घायल मुखों से रुधिर को गेरते एक मुहूर्त में ही पृथ्वीपर गिरपड़े २७ हे महाराज! उस कठिन युद्ध में चारों ओर से उठेहुए असंख्यों धड़ देखने में आये २८ धनुष, हस्तत्राण, खड्ग, बाजूबन्द रखनेवाली स्वर्णमयी भूषणों से अलंकृत भुजा युद्ध में कटीहुई दिखाईपड़ी २९ उपस्करों के साथ अधिष्ठान, ईषादण्ड, कवन्धर, चक्र, मथेहुए अक्ष और नानाप्रकार के टूटे हुए शस्त्र ३० जहां तहां फैली हुई ढालें धनुषधारियों की माला आभूषण वस्त्र गिरीहुई बड़ी २ ध्वजा मारेहुए हाथी घोड़े और गिरायेहुए क्षत्रियों से वह पृथ्वी महाभयानक देखने में आई ३१ । ३२ हे महाराज ! इस प्रकार अर्जुन के हाथ से मरीहुई महाव्यथित होकर पीड्यमान दुश्शासन की सेना भागी ३३ इसके पीछे सेनासमेत बाणों से पीड्यमान भयभीत और द्रोणाचार्य की शरण को चाहता हुआ दुश्शासन उस शकटव्यूह में चलागया ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

इक्यानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, महारथी अर्जुन दुश्शासन की सेना को मारकर जयद्रथ का खोजता द्रोणाचार्य की सेना के सम्मुख गया १ फिर वह अर्जुन व्यूहके मुखपर नियत द्रोणाचार्य को पाकर श्रीकृष्णजी की अनुमति से हाथ जोड़कर यह वचन बोला २ कि हे ब्राह्मण ! आप मुझको कल्याण के साथ ध्यानकरो और मेरे कल्याण को कहो आपकी कृपा से मैं इस कठिनता से पराजय होनेवाली सेना में प्रवेश किया चाहता हूं ३ आप मेरे और धर्मराज के पिता के समान हैं और जैसे हमारे हैं उसी प्रकार श्रीकृष्णजी के भी सदैव से हैं यह आपसे मैं सत्य २ कहता हूं ४ हे निष्पाप, ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! जैसे कि अश्वत्थामाजी आपसे रक्षा के योग्य हैं उसी प्रकार मैं भी रक्षा के योग्य हूं ५ हे द्विपदों में श्रेष्ठ, प्रभो ! मैं युद्ध में आपकी कृपा से सिन्धु के राजा को मारना चाहता हूं आप मेरी प्रतिज्ञा की रक्षा करो ६ सञ्जय बोले कि अर्जुन के ऐसे २ वचनों को सुनकर मन्दमुसकान करते द्रोणाचार्यजी बोले कि हे अर्जुन ! मुझे जीते विना जयद्रथ का विजय करना तुझको योग्य नहीं है ७ इतना कहकर हँसतेहुए द्रोणाचार्य ने तीक्ष्णबाणों के समूहोंसे अर्जुन को रथ घोड़े सारथी और ध्वजा समेत बाणों से ढकदिया ८ फिर अर्जुन अपने शायकों से द्रोणाचार्य के बाणसमूहों को रोककर भयकारी रूपवाले बड़े बाणोंसमेत द्रोणाचार्य के सम्मुख गया ९ हे राजन् ! अर्जुनने क्षत्रियधर्म में नियत होकर भक्तिपूर्वक उनकी गौरवता की प्रतिष्ठा करके द्रोणाचार्य को नव शायकों से घायल किया १० द्रोणाचार्य ने उसके बाणों को अपने बाणों से काटकर उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन को विष और प्रकाशित अग्नि के समान बाणों से घायलकिया ११ तब अर्जुन ने उनके धनुष को काटना चाहा उस महात्मा अर्जुन के इस प्रकार चिन्ताकरने पर सावधान और पराक्रमी द्रोणाचार्य ने बाणों से बड़ी शीघ्रतापूर्वक उसकी प्रत्यञ्चा को काटा और उसके घोड़े ध्वजा और सारथी को भी घायलकिया १२ । १३ मन्द मुसकान करते वीर द्रोणाचार्य ने फिर बाणों से अर्जुन को ढकदिया इसी अन्तर में अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ आचार्यजी को नाश करने की अभिलाषा करनेवाले अर्जुन ने बड़े धनुष को तैयारकरके जैसे एक बाण को लेते हैं उसी प्रकार छःसौ बाणों को एकबारही

लेकर बड़ी शीघ्रता से छोड़ा १४ । १५ फिर दूसरे प्रकार के सात सौ बाणों को और विना लक्ष्य भेदेहुए न लौटनेवाले हज़ार बाणों को और नाना प्रकार के हज़ारों बाणों को फेंका फिर अर्जुन ने द्रोणाचार्य की उस सेना को मारा १६ उस पराक्रमी महाकर्मी अपूर्व युद्ध करनेवाले अर्जुन के अच्छी रीति से चलाये हुए बाणों से घायल मरेहुए निर्जीव मनुष्य घोड़े और हाथी गिरपड़े १७ सूत घोड़े और ध्वजा से रहित टूटे शस्त्र जीवनवाले बाणों से पीड़ित रथों के सवार अकस्मात् रथों से गिरपड़े १८ पर्वत के शिखर व जल में निवास करनेवाले वज्र वायु और अग्नि से चूर्ण उखड़ेहुए भस्मीभूत पर्वतों के रूप हाथी पृथ्वी पर गिरपड़े १९ अर्जुन के बाणों से घायल हज़ारों घोड़े ऐसे गिरपड़े जैसे कि हिमाचल की पृष्ठपर पानी की वर्षा से घायलहुए हंस गिरते हैं २० जल के समूह के समान अपूर्व रथ हाथी घोड़े और पत्तियों के समूह अर्जुन के उन अस्त्र और बाणों से जोकि प्रलयकाल के सूर्य की किरणों के समान थे मारे गये २१ उस बादलरूप द्रोणाचार्य ने बाणरूपी वर्षा की तीव्रता से उस पाण्डव रूप सूर्य के बाणरूप किरणों के समूहों को जोकि युद्ध में कौरवों के उत्तम वीरों के तपानेवाले थे ऐसा ढकदिया जैसे कि सूर्य की किरणों को बादल ढकदेता है २२ फिर द्रोणाचार्य ने शत्रुओं के प्राणों के भोजन करनेवाले बल से छोड़े हुए नाराचनाम बाण से अर्जुन की छातीपर घायल किया २३ जैसे कि पृथ्वी के कम्पायमान होनेपर पर्वत कम्पायमान होता है उसी प्रकार सब अङ्गों से व्याकुल उस अर्जुन ने स्वस्थतापूर्वक दृढ़ता को धारणकरके बाणोंसे द्रोणाचार्य को घायल किया २४ फिर द्रोणाचार्य ने पांचबाणों से वासुदेवजी को और तिहत्तर बाणों से अर्जुन को घायल किया और तीन बाण से उसकी ध्वजा को काटा २५ हे राजन् ! अपने शिष्य को मारना चाहते पराक्रमी द्रोणाचार्य ने पलमात्र में ही बाणों की वर्षा से अर्जुन को दृष्टि से गुप्तकरदिया २६ हमने द्रोणाचार्य के शायकनाम बाणों को मिलकर गिराहुआ देखा और उनका धनुष भी अपूर्व मण्डलाकार दिखाई पड़ा २७ हे राजन् ! द्रोणाचार्यके छोड़ेहुए कङ्कपक्षों से युक्त वह बहुत से बाण युद्ध में वासुदेवजी के और अर्जुन के सम्मुख गये २८ तब बड़े बुद्धिमान् वासुदेवजी ने द्रोणाचार्य और अर्जुन के उस प्रकार के युद्ध को देखकर कार्यवत्ता को चिन्तवन किया २९ तदनन्तर वासुदेवजी

अर्जुन से यह वचनबोले हे महाबाहो, अर्जुन! हमारा समय हाथ से न जाने पावे ३० हम द्रोणाचार्य को छोड़कर चलें यह बहुत बड़ा काम करने के योग्य है फिर अर्जुन ने भी श्रीकृष्णजी से कहा कि जैसी आपकी इच्छा होय सोई करिये ३१ इसके पीछे अर्जुन महाबाहु द्रोणाचार्य को परिक्रमा करके चला और परिक्रमा करनेवाला अर्जुन बाणों को छोड़ताहुआ चलागया ३२ इसके पीछे आय द्रोणाचार्यजी यह वचन बोले कि हे पाण्डव! कहां जाता है निश्चय करके प्रकट है कि तू युद्ध में शत्रुओं की विना विजय किये हुए कभी नहीं लौटता है ३३ अर्जुन बोले कि आप मेरे गुरु हैं शत्रु नहीं हैं और मैं शिष्य आपके पुत्र के समान हूं ऐसा मनुष्य कौन है जो आपको युद्ध में विजय करसके ३४ सञ्जय बोले कि जयद्रथ के मारने में उपाय करनेवाला शीघ्रता से युक्त महाबाहु अर्जुन इस प्रकार से कहताहुआ उस सेना के सम्मुख दौड़ा ३५ चक्र के रक्षक पाञ्चालदेशीय, महात्मा युधामन्यु, उत्तमौजा उस आपकी सेना में जानेवाले अर्जुन के पीछेचले ३६ हे महाराज! उसकेपीछे जय, यादव कृतवर्मा, काम्बोजका राजा और श्रुतायुने अर्जुनको रोका ३७ उन्हों के पीछे चलनेवाले दशहज़ार हाथी थे उनके यह आगे लिखेहुए नाम हैं अभीषाह, शूरसेन, शिवय, वशात, मावेल्लिक, ललित्थ, केकय, मद्रक, नारायण, गोपाल और जितने कि काम्बोजदेशियों के समूह हैं ३८। ३९ और वह शूरों के अङ्गीकृत जिनको कि पूर्वसमय में युद्ध के बीच कर्ण ने विजय किया था वह सब प्रसन्नमन द्रोणाचार्यको आगे करके अर्जुन के सम्मुख गये ४० और पुत्र के शोक से दुःखी नाशकरनेवाले काल के समान क्रोधयुक्त कठिन युद्ध में प्राणों के त्याग करनेवाले कवचादि से अलंकृत अपूर्व युद्ध के करनेवाले गजेन्द्र के समान सेनाओंके मझानेवाले बड़े धनुषधारी पराक्रमी नरोत्तम अर्जुन को रोका ४१।४२ उन परस्पर बुलानेवाले शूरवीरों से अर्जुन का महाकठिन रोमहर्षण करनेवाला युद्ध जारी हुआ ४३ सब ने एक साथही उस जयद्रथ के मारने के अभिलाषी आतेहुए पुरुषोत्तम अर्जुन को ऐसा रोका जैसे कि उठे रोग को औषधियां रोकती हैं॥४४॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकनवतितमोऽध्यायः॥ ९१॥

बानबे का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, उन शूरवीरों से रुका हुआ बड़े पराक्रमवाला रथियों में श्रेष्ठ

अर्जुन शीघ्रही द्रोणाचार्य के सम्मुख गया १ जैसेकि सूर्य अपनी किरणों को फैलाता है उसीप्रकार तीक्ष्ण बाणों के समूहों को फैलातेहुए उस अर्जुन ने उस सेना को ऐसे तपाया जैसे कि रोगों के समूह शरीर को सन्तप्त करते हैं २ घोड़ा मारागया रथ टूटा हाथी अपने सवार समेत गिरायागया छत्र टूटे रथ अपने चक्रों से जुदेहुए ३ और बाणों से पीड्यमान सेना चारों ओर से भागी वह युद्ध ऐसा कठिन हुआ कि कुछ नहीं जानागया ४ सीधे चलनेवाले बाणों से युद्ध में उनलोगों के परस्पर प्रहार करनेपर अर्जुन ने सेना को वारंवार कम्पायमान किया ५ सत्यसङ्कल्पी श्वेतघोड़े रखनेवाला अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना चाहता रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य के सम्मुख गया ६ द्रोणाचार्य ने मर्मभेदी पचीस बाणों से सम्मुख नियतहुए बड़े धनुषधारी अर्जुन को घायलकिया ७ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन बाणों के वेगों के नाश करनेवाले उत्तम बाणों को छोड़ताहुआ शीघ्रही उन द्रोणाचार्य के सम्मुखदौड़ा ८ बड़े बुद्धिमान् ब्रह्मअस्त्र को प्रकट करते हुए उस अर्जुन ने शीघ्रता से गुप्तग्रन्थीवाले भल्लों से उनके चलायेहुए भल्लों को काटा ९ हमने युद्ध में द्रोणाचार्य के उस अद्भुतकर्म को देखा जो उपाय करनेवाला वीर अर्जुन उनको घायल न करसका १० द्रोणाचार्य रूपी बादल अपने बाणरूपी वर्षा से अर्जुनरूपी पर्वत के ऊपर ऐसे वर्षा करने लगा जैसे कि हजारों जल की धाराओं को छोड़ता बड़ा बादल होता है ११ हे श्रेष्ठ! बाणों से बाणों को काटतेहुए तेजस्वी अर्जुन ने उस बाणों की वर्षा को ब्रह्मअस्त्र से नाश करदिया १२ फिर द्रोणाचार्य ने शीघ्र चलनेवाले पचीस बाणों से अर्जुन को और सत्तर बाणों से वासुदेवजी को भुजा और छातियों पर पीड़ावान् किया १३ फिर हँसतेहुए बुद्धिमान् अर्जुन ने उस बाणसमूहों के धारण करनेवाले तीक्ष्णबाणों के छोड़नेवाले आचार्य को युद्ध में रोका १४ फिर द्रोणाचार्य के हाथ से घायल उन रथियों में श्रेष्ठ दोनों ने उस प्रलयकाल के उठेहुए प्रज्वलित अग्नि के समान दुर्विजय द्रोणाचार्य को हटाया १५ द्रोणाचार्य के धनुष से निकलेहुए तीक्ष्ण बाणों को हटातेहुए अर्जुन ने कृतवर्मा की सेना का अत्यन्त नाशकिया १६ वह अर्जुन मैनाक नाम पर्वत के समान द्रोणाचार्य को रोकता हुआ मध्य में कृतवर्मा काम्बोज और सुदक्षिण के सम्मुख गया १७ इसके पीछे स्थिरचित्त नरोत्तम कृतवर्मा ने शीघ्रही दशबाणों से उस

कौरवों में श्रेष्ठ अजय अर्जुन को घायल किया १८ हे राजन्! अर्जुन ने युद्ध-भूमि में उसको सौ बाणों से घायल किया फिर दूसरे तीन बाणों से अचेत करते हुए कृतवर्मा को घायल किया १९ फिर हँसतेहुए कृतवर्मा ने माधव वासुदेवजी और अर्जुन को पचीस २ शायकों से घायलकिया २० तब अर्जुन ने उसके धनुष को काटकर अग्निज्वाल के समानरूप क्रोध में सर्प के समान होकर सात बाणों से उसको घायल किया २१ हे भरतवंशिन्! फिर महारथी कृतवर्मा ने दूसरे धनुष को लेकर बड़ी शीघ्रतापूर्वक पांच शायकों से छातीपर घायल करके २२ फिर भी पांच तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को घायल किया अर्जुन ने भी उसको नव बाणों से छातियोंपर घायल किया २३ श्रीकृष्णजी ने कृतवर्मा के रथ पर भिड़ेहुए अर्जुन को देखकर चिन्ता करी कि हमारा समय नाशहुआ जाता है २४ यह विचारकर श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले कि कृतवर्मा पर दया न करो नातेदारी को छोड़कर उसको मथनकरके मारो २५ इसके पीछे वह अर्जुन बाणों से कृतवर्मा को अचेत करके शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा काम्बोजदेशियों की सेना के सम्मुख गया २६ अर्जुन के सेना में प्रवेशित होनेपर क्रोधयुक्त कृतवर्मा बाणों को लिये धनुप को चलायमान करता दोनों पाञ्चालदेशियोंपरदौड़ा २७ अर्जुन के पीछे चलनेवाले चक्र के रक्षक आतेहुए पाञ्चालदेशियों को कृतवर्मा ने समीप प्रहार करनेवाले बाणों से रोका २८ इसके पीछे भोजवंशीय कृतवर्मा ने उन दोनों को अपने तीक्ष्ण बाणों से घायल किया अर्थात् तीन बाणों से युधामन्यु को और चार बाणों से उत्तमौजा को २९ उन दोनों ने भी उसको दश२ बाणों से घायल किया और तीन २ बाणों से उसकी ध्वजा और धनुष को भी काटा फिर क्रोध से मूर्च्छामान कृतवर्मा ने दूसरे धनुष को लेकर ३० । ३१ दोनों वीरों को धनुषों से रहित करके बाणों की वर्षा से ढकदिया तदनन्तर फिर उन दोनों ने दूसरे धनुषों को तैयार करके भोजवंशीय कृतवर्मा को घायल किया ३२ उसी मौके से अर्जुन शत्रु की सेना में प्रवेश करगया कृतवर्मासे रुकेहुए उन दोनों वीरों ने द्वार को नहीं पाया ३३ यद्यपि वह दोनों नरोत्तम दुर्योधन की सेनाओं के मध्य में उपाय करनेवाले थे तौ भी वह द्वार न पासके फिर शीघ्रता करनेवाले शत्रुओं के नाश करनेवाले युद्ध में सेनाओं को पीड़ा देते हुए अर्जुन ने ३४ वशीभूत कृतवर्मा को भी नहीं मारा उस प्रकार से

जातेहुए उस अर्जुन को देखकर शूरवीर राजा श्रुतायुध ३५ बड़े क्रोधपूर्वक बड़ेभारी धनुष को चलायमान करताहुआ सम्मुख गया और उसने तीन बाणों से अर्जुन को और सत्तर बाणों से श्रीकृष्णजी को मोहित किया ३६ और अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रनाम बाण से अर्जुन की ध्वजा को घायल किया उसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने झुकी हुई गांठवाले नब्बे बाणों से ३७ ऐसे घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं हे राजन्! उसने अर्जुन के उस पराक्रम को नहीं सहा ३८ और उसको सत्तर नाराचों से घायल किया फिर अर्जुन ने उसके धनुष को काट शराबाप को तोड़कर ३९ बड़े क्रोधपूर्वक छातीपर घायल किया तब क्रोध से मूर्च्छामान उस राजा ने दूसरे धनुषको लेकर ४० इन्द्र के पुत्र अर्जुन को नौ बाणों से भुजा और छाती के ऊपर घायल किया उसके पीछे शत्रु को पराजय करनेवाले मन्दमुसकान करते अर्जुन श्रुतायुध को ४१ हज़ारों बाणों से पीड़ित किया हे भरतवंशिन्! फिर महारथी अर्जुन ने शीघ्रही उसके घोड़ों को सारथी समेत मारा ४२ और सत्तर नाराचों से उसको भी घायलकिया फिर वह पराक्रमी राजा श्रुतायुध मृतक घोड़ेवाले रथ को छोड़कर ४३ गदा को हाथ में लेकर युद्ध में अर्जुन के सम्मुखगया वह वीर राजा श्रुतायुध वरुण देवता का पुत्र था ४४ जिसकी माता शीतल जल रखनेवाली पर्णाशा नाम थी हे राजन्! पूर्व समय में उसकी माता पुत्र के कारण वरुण से बोली ४५ कि यह मेरा पुत्र शत्रुओं से अजेय होय फिर प्रसन्न मन से वरुण देवता ने कहा कि इसको इसका प्रियकारी वरदेता हूं ४६ अर्थात् इसको मैं वह अस्त्रदेता हूं जिसके द्वारा यह अजेय होगा और मनुष्य की अविनाशता तो किसी दशा में भी नहीं होसक्की ४७ हे नदियों में श्रेष्ठ! सब सृष्टिमात्र को अवश्य मरना है यह तेरा पुत्र सदैव युद्ध में शत्रुओं से अजेय होगा ४८ निश्चयकरके इस अस्त्र के प्रभाव से तेरे चित्त का सन्ताप दूर होगा ऐसा कहकर वरुण देवता ने मन्त्र समेत आगे कीहुई गदा को दिया ४९ जिस गदा को पाकर श्रुतायुध सब लोक में अजेय होगया जल के स्वामी भगवान् वरुणदेवता फिर इससे बोले ५० कि इस गदा को विना लड़नेवाले के ऊपर न छोड़ियो जो छोड़ेगा तो तुझीपरही गिरेगी और हे समर्थ! यह गदा विपरीत प्रकार से छोड़नेवाले को भी मारेगी ५१ काल के वर्तमान होने पर श्रुतायुध

ने उस वचन को नहीं किया और उस वीरों की मारनेवाली गदा से उसने श्रीकृष्णजी को घायलकिया ५२ पराक्रमी श्रीकृष्णजी ने उस गदा को अपने मोटे कन्धेपर लिया उसने श्रीकृष्णजी को ऐसे नहीं कँपाया जैसे कि वायु मन्दराचल पर्वत को नहीं हिलासक्ती ५३ कृत्या के समान कठिनता से नियत होनेवाली और उसीके सम्मुखजातीहुई उसगदा ने युद्ध में नियत क्रोधयुक्त वीर श्रुतायुध कोही मारा ५४ और उसको मारकर पृथ्वी में गिरपड़ी फिर टूटी हुई गदा को और मरेहुए श्रुतायुध को देखकर ५५ वहां सेनाओं का बड़ा हाहाकार उत्पन्न हुआ अर्थात् शत्रुओं के मारनेवाले श्रुतायुध को अपनेही अस्त्र से मराहुआ देखकर बड़ा हाहाकार हुआ ५६ हे राजन्! जोकि श्रुतायुध ने युद्ध न करनेवाले केशवजी के ऊपर गदा को छोड़ा उस कारण से गदा ने उसीको मारा ५७ जैसे कि वरुणदेवता ने कहा था उसीप्रकार से उसने युद्ध में नाश को पाया और सब धनुषधारियों के देखते वह राजा मृतक होकर पृथ्वीपर गिरा ५८ वह पर्णाशा नदी का प्यारा पुत्र गिराहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वायु से टूटाहुआ बहुत सी शाखाओंवाला वृक्ष होता है ५९ इसके पीछे सब सेना और सेनाओं के अधिपति शत्रुओं के मारनेवाले श्रुतायुध को मरा हुआ देखकर भागनिकले ६० उससमय राजा काम्बोज का पुत्र शूर सुदक्षिण नाम शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा शत्रु के मारनेवाले अर्जुन के सम्मुख गया ६१ हे भरतवंशिन्! अर्जुन ने सात बाणों को उसपर फेंका वह बाण उस शूर को घायलकरके पृथ्वी में प्रवेश करगये ६२ युद्ध में गाण्डीव धनुष से भेजेहुए तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त घायल होकर उसने भी अर्जुन को दशबाणों से घायल किया ६३ और वासुदेवजी को तीन बाणों से घायल करके अर्जुन को फिर पांचबाणों से व्यथित किया तब अर्जुन ने उसके धनुष को काटकर ध्वजा को काटा ६४ और बड़ी तीव्रतापूर्वक अर्जुन ने दो भल्लों से फिर घायलकिया वह अर्जुन को तीनबाणों से घायलकरके सिंहनाद से गर्जा ६५ उस क्रोधयुक्त शूर सुदक्षिण ने सब लोहे के घण्टे रखनेवाली भयकारी शक्ति को गाण्डीव धनुषधारी के ऊपर फेंका ६६ वह बड़ी उल्का के समान ज्वलितरूप पतङ्ग रखनेवाली महारथी अर्जुन को पाकर उसको घायलकरके पृथ्वीपर गिरपड़ी ६७ शक्ति से अत्यन्त घायल मूर्च्छा से युक्त बड़े तेजस्वी बुद्धि से परे पराक्रम

रखनेवाले होठों को चाबतेहुए अर्जुन ने अपने को सँभालकर कङ्कपक्षों से युक्त चौदह नाराचों से उसको घोड़े, रथ, ध्वजा और सूत समेत घायलकिया ६८।६६ और दूसरे बहुत बाणों से रथ को खण्ड २ करदिया फिर उस निष्फल सङ्कल्प और पराक्रमवाले सुदक्षिण काम्बोज को ७० अर्जुन ने तीक्ष्णधारवाले बाण से हृदयपर घायल किया वह टूटेकवच और ढीले अङ्गवाला शूर जिसके मुकुट और बाजू बन्द गिरपड़े थे ७१ यन्त्र से पृथक् होनेवाली ध्वजा के समान ऐसे सम्मुख गिरपड़ा जैसे कि हिमऋतु के अन्त में पर्वत के शिखरपर उत्पन्न शोभायमान सुन्दर डालीवाला अच्छी रीति से नियत कर्णिकार का वृक्ष होता है वायु से टूटकर गिरपड़े वह सुन्दर वस्त्रोंपर सोने के योग्य काम्बोजदेशीय मराहुआ पृथ्वीपर शयन करनेवाला हुआ ७२। ७३ बहुमूल्य भूषणों से युक्त शिखरधारी पर्वतके समान अपूर्वदर्शनीय रूपवाला सुदक्षिण कर्णनाम बाण से ७४ अर्जुन के हाथ से गिराया हुआ महाबाहु राजा काम्बोज का पुत्र गलेमें अग्निरूप सुवर्ण की माला रखनेवाला ७५ निर्जीव पृथ्वीपर गिरायाहुआ शोभायमान हुआ इसके पीछे आपके पुत्रकी सब सेना श्रुतायुध और काम्बोज सुदक्षिण को मृतक देखकर भाग गई ॥ ७६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विनवतितमोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

तिरानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! सुदक्षिण और वीर श्रुतायुध के मारेजानेपर आप की सेना के मनुष्य क्रोधयुक्त होकर बड़ीतीव्रता से अर्जुन के सम्मुखगये १ और अभिषाह, शूरसेन, शिवय, वशातय यह सब भी अर्जुन के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे २ अर्जुन ने बाणों के द्वारा उनके दूसरे छःसौ शूरवीरों को मथडाला वह भयभीत होकर ऐसे भागे जैसे कि व्याघ्र से नीच मृग भागते हैं ३ उन लौटे हुओं ने फिर उस अर्जुन को सब ओर से घेरलिया जोकि युद्ध में शत्रुओं को मारनेवाला और शत्रुओं की विजय का अभिलाषी था ४ अर्जुन ने गाण्डीव के छोड़े हुए बाणों से शीघ्रही उन सम्मुखता करनेवालों के भुजाओं समेत शिरों को भी गिराया ५ वहां गिरायेहुए शिरों से पृथ्वी वारंवार आच्छादित हुई और युद्ध में काक और गृद्धों के समूहों से बादलों की सी छाया हो गई ६ उनके नाश होनेपर क्रोध और अमर्षसे युक्त श्रुतायु और अच्युतायु यह

दोनों अर्जुनसे युद्ध करनेलगे ७ उन पराक्रमी ईर्षासे भरे कुलीन दोनों सुन्दर भुजावालों ने उसके ऊपर दाहें बायें होकर बाणों की वर्षाकरी ८ हे महाराज ! वह शीघ्रतासे युक्त दोनों धनुषधारी आपके पुत्रके अर्थ अर्जुन के मारने के अभिलाषी होकर बड़े यश की इच्छा करनेवाले थे ६ उन दोनों क्रोधयुक्तों ने झुकी गांठवाले हजारबाणों से अर्जुन को ऐसे पूर्ण करदिया जैसे कि बादल तालाब को पूर्ण करदेते हैं १० उसके पीछे क्रोधयुक्त नरोत्तम श्रुतायु ने पीतरङ्ग के तीक्ष्ण तोमरसे अर्जुनको घायलकिया ११ वह शत्रुओंका पीड़ा देनेवाला अर्जुन युद्ध में पराक्रमी शत्रुसे अत्यन्त घायल केशवजीको मोहित करता बड़ेभारी मोहको प्राप्त हुआ १२ और उसी समयपर अच्युतायु ने अत्यन्त तीक्ष्ण शूल से अर्जुन को घायल किया १३ उसने महात्मा पाण्डव अर्जुन के घाव में नोन लगाया उस समय वह महात्मा अर्जुन भी अत्यन्त घायल होकर ध्वजा के दण्ड के आश्रय से रक्षित हुआ १४ हे राजन् ! इसके पीछे अर्जुन को मृतक मानकर आप की सेना के बड़े सिंहनादहुए १५ वहां अत्यन्त दुःखीचित्त श्रीकृष्णजी ने अर्जुन को अचेत देखकर चित्त के प्रियकारी वचनों से अर्जुन को ढाढ़स बँधाई १६ फिर उन रथियों में श्रेष्ठ दोनों लक्षभेदियों ने अर्जुन को और वासुदेवजी को बाणों की वर्षा करके चारों ओर से १७ युद्ध में चक्र, कूवर, रथ, घोड़े, ध्वजा और पताका समेत दृष्टिसे गुप्त करदिया वह आश्चर्य सा हुआ १८ हे भरतवंशिन् ! बड़े धैर्य से विश्वासयुक्त और मर कट जियेहुए के समान उस महारथी अर्जुनने १६ केशवजी समेत अपने रथ को बाणों के जालों से ढका हुआ देखकर और अग्नि के समान प्रकाशमान दोनों शत्रुओं को सम्मुख वर्तमान देखकर इन्द्रास्त्र को प्रकट किया उस अस्त्र से झुकी गांठवाले हजारों बाण उत्पन्नहुए २० । २१ उन्हों ने उन दोनों बड़े धनुषधारियों को मारा उन दोनोंके छोड़ेहुए बाण आकाश में वर्तमान अर्जुन के बाण से कट २ कर घूमनेलगे २२ फिर अर्जुन बाणों की तीव्रता से शीघ्र बाणों को काटकर महारथियों से लड़ता हुआ जहां तहां गया २३ अर्जुन के बाणों के समूहों से हाथ और शिरों से रहित वह दोनों पृथ्वीपर ऐसे गिर पड़े जैसे कि हवा से उखाड़ेहुए दो वृक्ष होते हैं २४ इन श्रुतायु और अच्युतायु दोनों शूरवीरों का मरना लोक का ऐसा महाआश्चर्यकारी हुआ जैसे कि समुद्र का सूखजाना असम्भव और आश्चर्यकारी होता है २५ फिर अर्जुन

उन दोनों के और पास और पीछे चलनेवाले पचास रथियों को मारकर उत्तम २ शूरलोगों को मारताहुआ भरतवंशियों की सेना में गया २६ हे भरतश्रेष्ठ! श्रुतायु और अच्युतायु को मराहुआ देखकर क्रोध से भरे नियतायु और दीर्घायु २७ उन दोनों के पुत्र नरों में श्रेष्ठ पिताओं के शोक से दुःखी नाना प्रकार के बाणों को फैलातेहुए अर्जुन के सम्मुख गये २८ तब अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने एक मुहूर्त मेंही गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उन दोनों को भी यमलोक में भेजा २६ जैसे कि हाथी कमल के सरोवर को उथल पुथल करता है उसी प्रकार सेनाओं के छिन्न भिन्न और मथन करनेवाले अर्जुन को वह सब श्रेष्ठ क्षत्रिय रोकने को समर्थ नहीं हुए ३० हे राजन्! उन क्रोधयुक्त शिक्षा पायेहुए हजारों अङ्गदेशीय हाथियों के सवारों ने गजेन्द्रों के द्वारा पाण्डव अर्जुन को रोका ३१ दुर्योधन के आज्ञावर्ती पूर्वीय और दक्षिणीय राजा जिनमें कलिङ्ग का राजा मुख्य और अग्रगामी था उन्होंने पर्वताकार हाथियों की सवारियों से सम्मुखता करी ३२ भयकारीरूप अर्जुन ने उन आनेवाले राजाओं के शिर और अच्छी अलंकृत भुजाओं को भी गाण्डीव धनुष से छोड़ेहुए बाणों के द्वारा बहुतही शीघ्रता से काटडाला ३३ उन शिरों और बाजूबन्द रखनेवाली भुजाओं से आच्छादित पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि सुवर्ण के पाषाण और सर्पों से संयुक्त होती है ३४ विशिख नाम बाणों से टूटीहुई भुजा और मथेहुए शिर पृथ्वीपर पड़ेहुए ऐसे दृष्टिपड़े जैसे कि वृक्षों से गिरेहुए पक्षी होते हैं ३५ बाणों से घायल हजारों हाथी ऐसे दिखाई पड़े जिनके शरीर से इस प्रकार रुधिर जारी था जैसे कि गेरू धातु रखनेवाले झिरनाओं से संयुक्त पर्वत होते हैं ३६ हाथी की पीठपर सवार विकृत दर्शनवाले म्लेच्छ उस अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से मरे हुए अस्त्रों से ताड़ितहुए ३७ हे राजन्! नाना प्रकार की पोशाकों से शोभित बहुत भांति के शस्त्रों के समूहों से संयुक्त रुधिर में लिप्तशरीर बड़े अपूर्वरूप के बाणों से मरेहुए दिखाई पड़े ३८ अर्जुन के बाणों से घायल हाथियों ने रुधिरों की वमनकरी और पीछे वाले अन्य हजारों सवारों समेत टूटेहुए शरीरवाले हुए ३६ कितनेही हाथी पुकार २ कर पृथ्वीपर गिरपड़े और दिशाओं में घूमनेलगे और बहुत से अत्यन्त भयभीत हाथियों ने अपनेही मनुष्यों को मर्दनकिया ४० जोकि तीव्र विष के समान समीपही युद्ध करनेवाले हाथी थे और जो असुर

माया के जाननेवाले भयकारी रूप और नेत्रों से संयुक्त ४१ काकवर्ण दुराचारी स्त्रियों के लोभी उपद्रवी बारदशक और बाह्लीक युद्ध करनेवाले थे ४२ और मतवाले हाथी के समान पराक्रमी द्राविड़लोग भी युद्धकर्ता थे और काल के समान प्रहार करनेवाले वह म्लेच्छ जोकि वशिष्ठजी की गौ की योनि से उत्पन्नहुए थे ४३ दास, अतिसार, दरद, हज़ारों पुन्द्र, पौर, लाखों व्रात ज्ञाति वाले जिनकी संख्या करनी असम्भव है ४४ वह सब तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन के ऊपर वर्षा करनेवाले हुए नाना प्रकार के युद्ध में कुशल उन म्लेच्छों ने अर्जुन को बाणों से ढकदिया ४५ अर्जुन ने भी उनके ऊपर शीघ्रही बाणों की वर्षा करी उस युद्ध में बाणों की ऐसी शोभाहुई जैसे कि शलभपक्षियों के समूहों की होती है ४६ अर्जुन ने बाणों से सेना के ऊपर बादल के समान छाया करके उन मुण्ड अर्धमुण्ड जटाधारी अपवित्र और जटिलमुखी ४७ भागेहुए सब म्लेच्छों को अस्त्र के प्रताप से नाश करदिया वह पहाड़ियों के हजारों समूह बाणों से घायल युद्ध में भयभीत होकर भागे जो पर्वत के दुर्गमस्थानों में रहने वाले थे ४८ और तीक्ष्ण बाणों से गिरेहुए हाथी घोड़े सवार और म्लेच्छों के रुधिर को पृथ्वीपर बगले कङ्क और भेड़ियों ने बड़ी प्रसन्नता से पिया पत्ती घोड़े रथ और हाथियों से प्रच्छन्नरूप सेतु बाणों की वर्षारूप नौका रखनेवाली भयकारी बालरूप शैवल और शाद्वल रखनेवाली महाभयानक रुधिर के समूहों से तरङ्गवाली नदी को जारीकिया ४९।५० टूटीहुई उंगली सूरत छोटी २ मछली रखनेवाली प्रलय के समय कालरूप हाथियों से दुर्गम्य अत्यन्त रुधिर से पूर्ण नदी को ५१ राजकुमार हाथी घोड़े और रथ सवारों के शरीरों से जारी किया जैसे कि इन्द्र के वर्षा करनेपर स्थल और गर्त नहीं रहते हैं ५२ उसी प्रकार सब पृथ्वी रुधिर से भरीहुई होगई उन क्षत्रियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने छः हजार अश्वसवार शूरवीरों को और एक हज़ार उत्तम क्षत्रियों को ५३ मृत्यु के लोक में भेजा और विधि के अनुसार अलंकृत हज़ारों हाथी बाणों से घायल ५४ पृथ्वी को पाकर ऐसे सोगये जैसे कि वज्र से प्रहार कियेहुए पर्वत पृथ्वीपर गिर पड़ते हैं वह अर्जुन घोड़े रथ और हाथियों को मारताहुआ ऐसे घूमनेवाला हुआ ५५ जैसे कि मतवाला हाथी कमल के वन को मर्दन करताहुआ घूमता है और जैसे कि बहुत से वृक्ष लता गुल्म सूखे ईंधन घास और कोमल तृण रखनेवाले ५६

वन को वायु से प्रेरित अग्नि भस्म करता है उसी प्रकार श्रीकृष्णरूपी वायु से प्रेरित अर्जुनरूपी अग्नि नें आपकी सेनारूपी वन को भस्म करदिया ५७ बाणरूपी ज्वाला रखनेवाले पाण्डव अर्जुनरूप क्रोधभरे अग्नि ने भस्म कर दिया रथ के आश्रयस्थानों को खाली करता और मनुष्योंसे पृथ्वी को आच्छादित करता ५८ वज्र के समान बाणों से पृथ्वी को रुधिर से पूर्ण करता धनुषधारी अर्जुन युद्ध में घूमनेलगा ५९ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन भरतवंशियों की सेना में प्रविष्ट हुआ उस जातेहुए को श्रुतायु और अम्बष्ठ ने रोका हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! अर्जुन ने शीघ्रही उस उपाय करनेवाले के घोड़ों को कङ्कपक्ष से जटित तीक्ष्ण बाणों से गिराया ६० । ६१ और दूसरे बाणों से उसके धनुष को काटकर अर्जुन घूमनेलगा फिर क्रोध से व्याकुलनेत्र अम्बष्ठ ने गदा को लेकर ६२ युद्ध में महारथी अर्जुन और केशवजी को सम्मुख पाया हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे गदा को उठाकर प्रहार करतेहुए वीर ने ६३ रथ को गदा से रोककर केशवजी को घायल किया फिर गदा से पीड़ित केशवजी को देखकर शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला ६४ अर्जुन अम्बष्ठ के ऊपर अत्यन्त क्रोधितहुआ उसके पीछे सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से उस रथियों में श्रेष्ठ को गदासमेत ६५ युद्ध में ऐसे ढकदिया जैसे कि उदय होनेवाले सूर्य को बादल ढकदेता है तब अर्जुन ने दूसरे बाणों से उस महात्मा की गदा को भी ६६ टुकड़े २ किया वह आश्चर्य सा हुआ फिर उसने उस गिरीहुई गदा को देखकर दूसरी बड़ी गदा को लेकरके ६७ अर्जुन और वासुदेवजी को वारंवार घायल किया अर्जुन ने गदा समेत उठीहुई उसकी उन दोनों भुजाओं को क्षुरप्रनाम दो बाणों से काटा ६८ जो कि इन्द्र की ध्वजा के समान थीं और दूसरे बाण से शिर को भी काटा हे राजन् ! वह मृतक हुआ राजा पृथ्वी को शब्दायमान करता ऐसे गिरपड़ा ६९ जैसे कि यन्त्र से पृथक् इन्द्र की छोड़ीहुई ध्वजा गिरती है तब रथ की सेना से घिरा सैकड़ों हाथी और घोड़ों से युक्त अर्जुन ऐसे दिखाई दिया जैसे कि बादलों से घिराहुआ सूर्य होता है ॥ ७० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

चौरानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले इसके अनन्तर दुःख से पार होने के योग्य द्रोणाचार्य और कृत-

वर्मा की सेनाओं को छिन्न भिन्नकरके जयद्रथ के मारने की इच्छा से अर्जुन के प्रवेशित होनेपर १ और अर्जुन के हाथ से काम्बोज के पुत्र सुदक्षिण के मारे जाने और पराक्रमी श्रुतायुध के मरनेपर २ चारों ओर से सेनाओं के भागने और नाश होनेपर आपका पुत्र अपनी सेना को छिन्न भिन्न देखकर द्रोणाचार्य के पास गया ३ अर्थात् एक रथ के द्वारा शीघ्रता से चलकर द्रोणाचार्य से बोला कि वह पुरुषोत्तम अर्जुन इस सेना को गर्द मर्दकरके गया ४ बुद्धि से विचारिये कि इन मनुष्यों के नाश करनेवाले कठिन युद्ध में अर्जुन के नाश के अर्थ शीघ्रतापूर्वक क्या करना चाहिये ५ जैसी रीति से वह पुरुषोत्तम अर्जुन जयद्रथ को न मारसके उसीप्रकार को करिये आपका भला होगा आपही हमारे परम गतिरूप रक्षा के आश्रय हो ६ क्रोधरूप वायु से प्रेरित यह अर्जुनरूप अग्नि मेरी सेनारूपी वन को ऐसे भस्म करदेता है जैसे कि उठाहुआ अग्नि सूखे वन को जलाता है ७ हे शत्रुओं के तपानेवाले! सेना को पृथक् २ करके अर्जुन के प्रवेश करनेपर जयद्रथ के रक्षकों ने बड़े संशय को पाया है ८ हे ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ! राजाओं का यह पक्का विचार और सम्मत था कि जीवता हुआ अर्जुन द्रोणाचार्य को उल्लङ्घन नहीं करेगा ९ हे बड़े तेजस्विन्! जो यह अर्जुन आपके देखतेहुए दूर चलागया तो अब सब को मैं व्याकुलही मानता हूं और यह सेना मेरी नहीं है १० हे महाभाग! मैं तुमको पाण्डवों के हित में प्रवृत्तचित्त मानता हूं और हे ब्रह्मन्! इसी प्रकार करने के योग्य कर्म को विचारता हुआ अचेत होता हूं मैं सामर्थ्य के अनुसार आपमें उत्तमवृत्ति को वर्तता हूं ११ और सामर्थ्य के ही अनुसार चाहता हूं आप उसको नहीं ध्यान करते हो १२ हे बड़े पराक्रमिन्! तुम सदैव भक्ति करनेवाले हमलोगों को नहीं चाहते हो और हमारे अप्रिय करने में चित्त से प्रवृत्त पाण्डवों को सदैव चाहते हो १३ तुम हमारे पास अपनी जीविका करते और हमारे अप्रिय में प्रीति रखनेवाले हो शहद से डूबी हुई छूरी के समान आपको मैं नहीं जानता हूं १४ जो आप पाण्डव अर्जुन के रोकने में मुझको वर नहीं देते तो मैं घर जातेहुए जयद्रथ को नहीं रोकता १५ आपसे रक्षा को न जाननेवाले और मुझसे समझाया हुआ सिन्धु का राजा जयद्रथ आश्वासित कियागया और मोह से मृत्यु के अर्थ दियागया १६ यमराज की भी डाढ़ में वर्तमान हुआ मनुष्य चाहे

बचजाय परन्तु युद्धभूमि में अर्जुन के आधीन हुआ जयद्रथ कभी नहीं बचसक्ता है १७ हे रक्त घोड़े रखनेवाले ! आप वही कीजिये जिससे कि जयद्रथ आपत्ति से बचे आप मुझ दुःखी के वचनोंपर क्रोध न करिये किसी प्रकारसे जयद्रथ को बचाओ १८ द्रोणाचार्य बोले कि मैं तेरे वचनों में दोष नहीं लगाता हूं तू मेरे पुत्र अश्वत्थामा के समान है तुझसे सत्य २ कहता हूं हे राजन् ! तू उसको अङ्गीकार कर श्रीकृष्णजी बड़ेही उत्तम उसके सारथी हैं और उसके उत्तम घोड़े भी शीघ्रगामी हैं अर्जुन छोटा सा भी विवर करके शीघ्र चलाजाता है १९ । २० शीघ्र चलेजानेवाले अर्जुन के एक कोस पर फेंके हुए और रथ के पीछे पड़े हुए बाणों के समूहों को क्या तू नहीं देखता है २१ अब मैं वृद्ध होकर शीघ्र चलने में समर्थ नहीं हूं और हमारी सेना के मुखपर पाण्डवों की यह सेना सम्मुख नियत है २२ सब धनुषधारियों के देखतेहुए भी मैं युधिष्ठिर के पकड़ने को समर्थ हूं हे महाबाहो ! मैंने उस प्रकार क्षत्रियों के मध्य में प्रतिज्ञा करी है २३ हे राजन् ! वह युधिष्ठिर अर्जुन से पृथक् होकर मेरे सम्मुख वर्तमान है इस हेतु से मैं व्यूह के मुख को छोड़कर अर्जुन से नहीं लडूंगा २४ शूर मनुष्यों का रखनेवाला समान कुल और कर्म रखनेवाले अकेले शत्रु से भय को त्यागकर तूही क्यों नहीं लड़ता तूही तो इस पृथ्वी भर का स्वामी है २५ राजा शूरवीर कर्म का करनेवाला विजय करने में सावधान शत्रुओं के पुर के विजय करने वाले और पराक्रमी होकर तुम आपही वहां जाओ जहां कि पाण्डव अर्जुन है २६ दुर्योधन बोला कि हे आचार्यजी ! सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ आपको भी उल्लङ्घन करनेवाला अर्जुन कैसे मुझसे पराजय होने को योग्य है २७ वज्रधारी इन्द्र भी युद्ध में चाहे विजय कियाजाय परन्तु शत्रुओं के पुरों का विजय करनेवाला अर्जुन युद्ध में विजय करने के योग्य नहीं होसक्ता २८ जिसने भोजवंशीय कृतवर्मा और देवता के समान आपको भी अस्त्रों के प्रताप से विजय किया और राजा श्रुतायु को मारकर २९ सुदक्षिण श्रुतायुध और श्रुतायु अच्युतायु को भी मारकर लाखों म्लेच्छों को मारा ३० युद्ध में अग्नि के समान भस्म करनेवाले अजेय अस्त्रविद्या में कुशल पाण्डव अर्जुन से मैं कैसे लड़सकूंगा ३१ अब आप युद्धभूमि में उसके साथ मेरे युद्ध को योग्य और उचित समझते हो मैं दास के समान आपकी स्वाधीनता में हूं आप मेरे

यश की रक्षाकरो ३२ द्रोणाचार्य बोले हे कौरव! तू सत्य कहताहै वास्तवमें अर्जुन दुर्जय है अब वही करूंगा जिससे तू उसको सहैगा ३३ अब लोक में धनुषधारी वासुदेवजी के देखतेहुए तुझ से भिड़ेहुए अर्जुन को और अपूर्व युद्ध को देखेंगे ३४ हे राजन्! यह स्वर्णमयी कवच तेरे शरीरपर उस प्रकार का बाँधता हूं जिससे कि बाणयुद्ध में व अस्त्रयुद्ध में तुझपर कोई प्रहार नहीं करसके ३५ जो असुर यक्ष सर्प राक्षस देवता और मनुष्य समेत तीनों लोक भी तुझ से युद्धकरें तौ भी तुझ को किसी प्रकार का भय नहीं होसक्ता ३६ श्रीकृष्ण अर्जुन अथवा दूसरा कोई भी शस्त्रधारी युद्ध में तेरे कवच में बाण के प्रवेश करने को समर्थ नहीं होगा ३७ सो अब तू शीघ्रता से उस कवच को शरीर में धारणकरके आपही युद्ध में क्रोधयुक्त अर्जुन के सम्मुख हो वह तुझको न सहसकेगा ३८ सञ्जय बोले कि शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य ने इस प्रकार से कहकर आचमन कर विधिपूर्वक मन्त्र को जपतेहुए अत्यन्त अपूर्व प्रकाशमान कवच को बाँधा ३९ अपनी विद्या से लोकों को आश्चर्ययुक्त करने के अभिलाषी ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने आपके पुत्र के और अर्जुन के उस बड़े युद्ध में यह वचन कहा ४० ब्रह्म ब्रह्मा और ब्राह्मण लोग भी तेरे कल्याण को करें और हे भरतवंशिन्! जो २ उत्तम सर्प हैं वह भी तेरे कल्याण को करें ४१ ययाति, नहुष, धुन्धुमार, भगीरथ, सब राजऋषि यह सब भी सदैव तेरे कल्याण को करें ४२ सदैव बड़े युद्ध में एक चरण रखनेवालों से भी तेरा कल्याण हो ४३ स्वाहा स्वधा और शची भी तेरा सदैव कल्याण करें हे निष्पाप! लक्ष्मी, अरुन्धती भी तेरा कल्याण करें ४४ हे राजन्! असित, देवल, विश्वामित्र, अङ्गिरा, वशिष्ठ, कश्यप यह भी तेरा कल्याणकरें ४५ धाता, विधाता, लोकेश्वर, दिगीश्वरों समेत सब दिशा और षडानन कार्त्तिकेयजी भी अब तुझको कल्याण करें ४६ भगवान् सूर्य सब प्रकार से तेरी रक्षाकरें चारो दिग्गज अर्थात् ऐरावत, वामन, अञ्जन, सार्वभौम, पृथ्वी, आकाश और ग्रह तेरे कल्याण को करें ४७ हे राजन्! जो यह सर्पों में श्रेष्ठ शेषनाग नीचे से पृथ्वी को सदैव धारण करनेवाले से तेरा कल्याण हो ४८ हे गान्धारी के पुत्र! पूर्व समय में वृत्रासुर ने युद्ध में पराक्रम करके उत्तम देवताओं को विजयकिया और हजारों मारडाले ४९ तब महाअसुर वृत्रासुर से भयभीत तेजबल से रहित इन्द्र समेत सब देवता ब्रह्माजी

की शरण में गये ५० और उनसे देवताओं ने कहा कि हे देवताओं में श्रेष्ठ! वृत्रासुर से मर्दन कियेहुए देवताओं की आप रक्षाकरिये हे सुरों में शिरोमणे! हमको भय से निर्भयकरो ५१ फिर ब्रह्माजी एक पक्ष में नियत विष्णु को और देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्रादिक देवताओं से यह सत्य २ वचन बोले ५२ कि इन्द्र और ब्राह्मणों समेत सब देवता सदैव मुझसे रक्षाकरने के योग्य हैं त्वष्टा देवता का तेज बड़ी कठिनता से सहने के योग्य है जिससे कि यह वृत्रासुर उत्पन्न हुआ है ५३ हे देवताओ! पूर्व समय में त्वष्टा ने महादेवजी से वर को पाकर दशलाख वर्षतक तपस्या करके वृत्रासुर को उत्पन्नकिया ५४ वह महाबली देवताओं का शत्रु उन शिवजी की कृपा से तुमको मारता है शिवजी के स्थान को विना गयेहुए वह भगवान् शिव दिखाई नहीं देते ५५ उन शिवजी को देखकर उस वृत्रासुर को विजय करोगे इसहेतु से तुम शीघ्रही उस मन्दराचल पर्वतपर जाओ जिसपर कि वह तपों के उत्पत्तिस्थान दक्ष के यज्ञ के नाशक पिनाक धनुषधारी सब जीवधारियों के ईश्वर भगनेत्र को मारनेवाले निवास करते हैं फिर उन देवताओं ने ब्रह्माजी समेत मन्दराचलपर जाकर ५६ । ५७ उस तेजपुञ्ज कोटिसूर्य के समान प्रकाशित शिवजी को देखा तब शिवजी ने कहा कि हे देवताओ! तुम्हारा आना कल्याणकारी हो कहो मैं तुम्हारा कौन सा प्रयोजन करूं ५८ मेरा दर्शन सफल है इसहेतु से तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होय यह वचन शिवजी के सुनकर सब देवताओं ने उन शङ्करजी को उत्तरदिया५९ कि हे स्वामिन्! वृत्रासुर ने हम सब का तेज हरणकिया आप देवताओं के रक्षास्थान हो हे देवदेव! उसके प्रहारों से घायलहुए देवताओं को देखो ६० हम सब आपकी शरण में आये हैं हे महेश्वरजी! आप हमारे रक्षाश्रय हूजिये शिवजी बोले कि हे देवताओ! तुमको विदित है जैसे कि त्वष्टा देवता के तेज से सृष्टि और भयकारी ज्ञानियों से भी कठिनतापूर्वक हटाने के योग्य बड़ी पराक्रमी यह कृत्या है ६१ मुझको सब देवताओं की सहायता अवश्य करनी उचित है हे इन्द्र! मेरे शरीर से उत्पन्न बड़े प्रकाशमान इस कवच को ले हे देवेन्द्र! चित्त से कहेहुए इस मन्त्र के साथ शरीर में धारणकरके जाओ ६२ द्रोणाचार्य बोले कि वरदाता शिवजी ने यह कहकर उस कवच और मन्त्र को दिया उस कवच से रक्षित वह इन्द्र वृत्रासुर की सेनापर आया ६३ बड़े युद्ध में छोड़ेहुए नाना

प्रकार के शस्त्रों के समूहों से उस कवच का तोड़ना असम्भव था ६४ इसके पीछे इन्द्र ने आपही युद्ध में वृत्रासुर को मारा और मन्त्ररूप जोड़ बन्द वाले उस कवच को अङ्गिराऋषि को दिया ६५ और अङ्गिरा ने बड़े मन्त्रज्ञ अपने पुत्र बृहस्पतिजी को सिखाया और बृहस्पतिजी ने महात्मा अग्निवेश्य ऋषि को शिक्षाकरी ६६ हे राजाओं में श्रेष्ठ। फिर अग्निवेश्य ने मुझको दिया अब उस मन्त्र से तेरे कवच को तेरे शरीर की रक्षा के निमित्त बाँधता हूं ६७ सञ्जय बोले आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने इस प्रकार कहकर आपके बड़े तेजस्वी पुत्र से बड़े धीरेपने से फिर यह वचन कहा ६८ कि हे भरतवंशिन्! तेरे कवच को मैं ब्रह्मसूत्र से ऐसे बाँधता हूं जैसे कि पूर्व समय में ब्रह्माजी ने युद्ध में विष्णु के शरीर में बाँधा था ६९ और जिस प्रकार तारा से सम्बन्ध रखनेवाले युद्ध में ब्रह्माजी ने इन्द्र के दिव्य कवच को बाँधा था उसी प्रकार मैं इस कवच को तेरे बाँधता हूं ७० द्रोणाचार्य ब्राह्मण ने मन्त्र के द्वारा विधिपूर्वक उस कवच को बाँधकर राजा को बड़े युद्ध में लड़ने के निमित्त भेजा ७१ महात्मा आचार्य से कवच धारण कियेहुए वह महाबाहु प्रहार करनेवाले त्रिगर्तदेशियों के हजार रथ ७२ व बल से मतवाले हजार हाथी और नियुत संख्यावाले घोड़े और अन्य २ महारथियों समेत महाबाहु दुर्योधन अनेक प्रकार के बाजों के शब्दों समेत अर्जुन के रथ के पास ऐसे गया जैसे कि विरोचन का पुत्र बलि इन्द्र के पास गया था ७३। ७४ हे भरतवंशिन्! इसके पीछे बड़े गम्भीर समुद्र में जातेहुए कौरव को देखकर आपकी सेनाओं के बड़े शब्द हुए ॥ ७५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्णवतितमोऽध्यायः ॥ ९४ ॥

पञ्चानवे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! युद्ध में अर्जुन और श्रीकृष्णजी के प्रवेश करनेपर और पीछे की ओर से पुरुषोत्तम दुर्योधन के जानेपर १ पाण्डवलोग सोमकों समेत तीव्रता पूर्वक बड़े शब्द को करतेहुए द्रोणाचार्य के सम्मुख गये और युद्धजारी हुआ २ व्यूह के आगे पाण्डवों और कौरवों का वह युद्ध अपूर्व कठिन और रोमहर्षण करनेवाला हुआ ३ वैसा युद्ध हमने कभी न देखा था न सुना था जैसा कि वह मध्याह्न के समय हुआ ४ प्रहार करनेवाली अलंकृत सेनावाले उन सब पाण्डवों ने जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था बाणों की वर्षा से

द्रोणाचार्य की सेना को ढकदिया ५ हम सबलोग शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य को आगे करके बाणों से उन पाण्डवों के ऊपर जिनमें कि प्रधान धृष्टद्युम्न था वर्षा करने लगे ६ जैसे कि हिमऋतु के अन्त में वायु से युक्त बड़े बादलों की शोभा होती है उसी प्रकार सुन्दर रथों से अलंकृत दोनों सेना शोभायमान हुई ७ फिर उन दोनों बड़ीसेनाओं ने भिड़कर ऐसा बड़ा वेगकिया जैसे कि वर्षाऋतु में बहुत जल रखनेवाली गङ्गा और यमुना दोनों नदी परस्पर करती हैं ८ नाना प्रकारों के शस्त्ररूप वायु आगे रखनेवाला हाथी घोड़े और रथसे संयुक्त गदारूपी बिजली से महाभयानक युद्धरूपी बड़ा बादल ९ द्रोणाचार्यरूपी वायु से उठाया हुआ बाणरूपी हजारों धारावों का रखनेवाला पाण्डवीय सेनारूपी अग्नि से घायल बड़ी सेना रूपी बादल वर्षा करनेलगा १० जैसे कि वर्षाऋतु में भयकारी प्रवेश करनेवाला बड़ा वायु का वेग समुद्र को व्याकुल करता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य ने पाण्डवों की सेना को छिन्न भिन्न करदिया ११ और वह सब भी उपायों को करते हुए द्रोणाचार्य के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि अत्यन्त पराक्रमी जल का समूह बड़े पुल के तोड़ने की इच्छा से जाता है १२ द्रोणाचार्य ने उन युद्ध में क्रोधरूप पाण्डव और पाञ्चालों को केकयों समेत ऐसे रोका जैसे कि जल के समूहों को पर्वत रोकता है १३ उसके पीछे बड़े पराक्रमी शूर वीर अन्य राजाओं ने घेरकर पाञ्चाल को रोका १४ तब सेना के पराजय करने के अभिलाषी नरोत्तम धृष्टद्युम्न ने पाण्डवों के साथ होकर युद्ध में द्रोणाचार्य को घायल किया १५ जैसे कि धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य ने बाणों की वर्षा को किया उसको सुनो कि १६ खड्गरूपी वायु आगे करनेवाले शक्ति, प्रास, दुधारे खड्गों से युक्त प्रत्यञ्चारूप विद्युत् शब्द करनेवाला धृष्टद्युम्नरूप बादल १७ सब दिशाओं से बाण धारारूप पाषाणों की वृष्टि को उत्पन्न करता उत्तम रथ घोड़ों के समूहों को मारता सेना को छिन्न भिन्न करनेवाला हुआ १८ द्रोणाचार्य ने पाण्डवों के जिस २ रथों के समूहों को बाणों से घायल किया उसी २ ओर से धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य को बाणों से हटाया १९ हे भरतवंशिन् ! इस रीति से उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य की सेना धृष्टद्युम्न को पाकर तीन ओर से छिन्न भिन्न होकर पृथक् २ होगई २० कोई तो कृतवर्मा के पास चलेगये कोई राजा जलसन्ध के समीप जाकर शरण हुए और बहुत से पाण्डवों से घायल होकर

द्रोणाचार्य ही के शरण में गये २१ रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य सेनाओं को पृथक् २ करते थे और महारथी धृष्टद्युम्न भी उनकी उन सेनाओं को छिन्न भिन्न करता था २२ उस दशावाले आपके पुत्र पाण्डवों और सृञ्जयों से ऐसे घायल होते थे जैसे कि रक्षकों से जुदा हुआ पशुओं का समूह वन में बहुत से मांसाहारी जीवों से व्याकुल होता है २३ उस कठिन युद्ध में मनुष्यों ने धृष्टद्युम्न के हाथ से अचेतहुए शूरवीरों को काल का निगला हुआ माना २४ जैसे कि अन्यायी राजा का देश दुर्भिक्ष व रोगोपद्रव में अथवा चोरों से दुःखी होकर भागता है उसी प्रकार आपकी सेना पाण्डवों के हाथसे आपत्ति में फँसीहुई व्याकुल हुई २५ सूर्य की किरणों से युक्त शस्त्र और कवचों में और उसीप्रकार सेना की धूलि से घायलहुए नेत्रों में २६ सेनाओं के शिरों के खण्ड २ होनेवाले पाण्डवों के हाथ से मारेजाने पर क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने बाणों से पाञ्चालों को पृथक् २ कर दिया २७ उन सेनाओं के मर्दन करते बाणों से भी मारतेहुए द्रोणाचार्य का रूप कालाग्नि के समान प्रकाशमान हुआ २८ हे राजन्! उस महारथी ने युद्ध में एक २ बाण से रथ, हाथी, घोड़े और पत्तियों को भी घायलकिया २९ हे भरतवंशिन्, प्रभो, धृतराष्ट्र! पाण्डवों की सेनाओं में कोई ऐसा नहीं था जिस ने युद्ध में द्रोणाचार्य के धनुष से गिरेहुए बाणों को सहलिया हो ३० हे राजन्! द्रोणाचार्य के बाणों से व्याकुल सूर्य से सन्तप्तहुए के समान धृष्टद्युम्न की वह सेना जहां तहां घूमी ३१ उसी प्रकार धृष्टद्युम्न के हाथ से छिन्न भिन्न आपकी भी सेना सब ओर से ऐसी अग्नि के समान प्रज्वलितहुई जैसे कि अग्नि से सूखाहुआ वन ज्वलित होता है ३२ द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न के बाणों से सेनाओं के पीड्यमान होनेपर सब ओर को मुख रखनेवाले सम्पूर्ण वीर प्राणों को त्यागकरके बड़े पराक्रम से लड़ते थे ३३ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! आपके और पाण्डवों के शूरवीरों में ऐसा कोई नहीं हुआ जिसने भय से युद्ध को त्याग किया हो ३४ विविंशति चित्रसेन और महारथी विकर्ण सगे भाइयों ने कुन्ती के पुत्र भीमसेन को चारों ओर से घेरा ३५ आपके पुत्रों के पीछे चलने वाले यह आगे लिखेहुए वीर थे बिन्द, अनुबिन्द, अवन्तिदेश का राजा और पराक्रमी क्षमधूर्ति ३६ महारथी तेजस्वी कुलवान् राजा बाह्लीक ने सेना और मन्त्रियों के साथ द्रौपदी के पुत्रों को रोककर ३७ हज़ारों शूरवीरों के सहित

राजा शैव्य गोवासन काशी के राजा के पुत्र पराक्रमी अभिभुव को रोका ३८ मद्रदेशाधिपति राजा शल्य ने अग्नि के समान प्रकाशमान अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर को घेरलिया ३९ क्रोधयुक्त असहनशील शूर दुश्शासन अपनी सेना को नियतकरके युद्ध के बीच रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी के सम्मुख गया ४० अपनी सेना से अलंकृत इसने कवचधारी अपने चार सौ बड़े धनुषधारियों समेत चेकितान को रोका ४१ फिर शकुनी ने धनुष शक्ति और खड्ग हाथ में रखने वाले सात सौ गान्धारदेशीय सेना के साथ जाकर माद्री के पुत्र को रोका ४२ मित्र के अर्थ शस्त्रों के उठानेवाले बड़े धनुषधारी अवन्तिदेशों के राजा बिन्द अनुबिन्द प्राणों को त्यागकरके मत्स्यदेश के राजा विराट के सम्मुख गये ४३ सावधान बाह्लीक ने द्रुपद के पुत्र अजेय पराक्रमी और रोकनेवाले शिखण्डी को रोका ४४ फिर युद्ध में निर्दय प्रभद्रक और सौवीर के साथ राजा अवन्ती ने राजा द्रुपद के पुत्र क्रोधरूप धृष्टद्युम्न को रोका ४५ अलायुध नाम राक्षस युद्ध में आते हुए क्रोध से निर्दयकर्मी शूरघटोत्कच राक्षस के सम्मुख शीघ्रता से गया ४६ बड़ी सेना से युक्त महारथी कुन्तभोज ने राक्षसों के राजा क्रोधरूप अलम्बुष को रोका ४७ हे भरतवंशिन्! बड़े धनुषधारी कृपाचार्य आदिक रथियों से रक्षित जयद्रथ सब सेना के पीछे था ४८ उस जयद्रथ के चक्र के रक्षक दो बड़े वीरहुए दाहिनीओर अश्वत्थामा और बाईं ओर कर्ण था ४९ और उसके पृष्ठ-रक्षक कृपाचार्य, वृषसेन, शल, शल्य और दुर्जय हुए जिनका कि अग्रगामी सोमदत्त था ५० नीतिज्ञ बड़े धनुषधारी युद्ध में कुशल वह सब इसरीति से जयद्रथ की रक्षाकरके उसके पीछे युद्ध करनेवाले हुए ॥ ५१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चनवतितमोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

छियानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! जैसे कि कौरव और पाण्डवों का वह अपूर्व युद्ध जारी हुआ उसको सुनो कि पाण्डव लोग १ द्रोणाचार्य की सेना को पराजय करने के अभिलाषी युद्ध में व्यूह के मुखपर नियतहोकर द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे २ तब बड़े यश को चाहते और अपने व्यूह को रक्षित करतेहुए द्रोणाचार्य ने भी सेना के मनुष्यों को साथ लेकर पाण्डवों से युद्धकिया ३ आपके पुत्र का हित चाहनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त अवन्तिदेशों के राजा बिन्द अनुबिन्द ने दश

बाणों से विराट राजा को घायलकिया ४ हे महाराज ! विराट ने पराक्रमकरके उन युद्ध में नियत पराक्रमी दोनों राजाओं से उनके साथियों समेत युद्ध किया ५ उन्हों की लड़ाई भी महाकठिन रुधिररूप जल रखनेवाली ऐसीहुई जैसे कि वन के मध्य में सिंह का युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियों से होता है ६ बड़े पराक्रमी राजा द्रुपद ने मर्म और अस्थियों के छेदनेवाले भयकारी तीक्ष्ण विशिख नाम बाणों से उस युद्ध में वेगवान् बाह्लीक को घायलकिया ७ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त बाह्लीक ने सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधार झुकी गांठवाले नौ बाणों से द्रुपद को घायलकिया ८ वह युद्ध भयकारी बाण शक्तियों से व्याकुल भयभीतों के भय को उत्पन्न करनेवाला और शूरवीरों की प्रसन्नता का बढ़ानेवाला हुआ ९ वहां उन्होंके छोड़ेहुए बाणों से पृथ्वी और आकाश का मध्य और सब दिशा व्याप्त होगई कुछ भी नहीं जानागया १० सेना समेत शैव्य गोवासन ने युद्ध में काशी के राजा के पुत्र महारथी से ऐसा युद्धकिया जैसे कि हाथी हाथी के साथ युद्ध करता है ११ अत्यन्त क्रोधयुक्त राजा बाह्लीक युद्ध में द्रौपदी के पुत्र महारथियों से लड़ताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन पांचों ज्ञानेन्द्रियों के साथ लड़ता है १२ हे देहधारियों में श्रेष्ठ ! वह चारों ओर से बाणों के समूहों से ऐसे अत्यन्त युद्ध करतेहुए जैसे कि इन्द्रियों के विषय सदैव शरीर से युद्ध को करते हैं १३ आपके पुत्र दुश्शासन ने युद्ध में तीक्ष्ण और झुकी गांठवाले नौ शायकों से वृष्णिवंशीय सात्यकी को घायलकिया १४ पराक्रमी बड़े बाणप्रहारी धनुषधारी से अत्यन्त घायल उस सत्य पराक्रमी सात्यकी ने शीघ्रही कुछ मूर्च्छा को पाया १५ फिर चैतन्य हुए सात्यकी ने शीघ्रही कङ्कपक्ष से जटित दश शायकों से आपके महारथी पुत्र को पीड्यमान किया १६ हे राजन् ! वह दोनों परस्पर कठिन घायल और बाणों से पीड्यमान युद्ध में ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि फूले हुए किंशुक के वृक्ष होते हैं १७ कुन्तभोज के बाणोंसे पीड्यमान अत्यन्त अलम्बुष बड़ी शोभा से ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूलों से लदाहुआ किंशुक का वृक्ष होता है १८ इसके पीछे आपकी सेना के मुखपर नियत अलम्बुष राक्षस बहुत से लोहमयी बाणों से कुन्तभोज को घायल करके भयकारी शब्द से गर्जा १९ उस समय परस्पर युद्ध में लड़तेहुए वह दोनों शूर सब सेनाओं को ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि

पूर्व समय में इन्द्र और जम्भ वर्तमान थे २० हे भरतवंशिन्! माद्री के दोनों क्रोधयुक्त पुत्रों ने बाणों से युद्ध में क्रोधयुक्त शत्रुता करनेवाले शकुनी को अत्यन्त पीड्यमान किया २१ हे राजन्! तुझसे अधिकता उत्पन्न और कर्ण से अच्छी वृद्धिपाया हुआ मनुष्योंका नाश करनेवाला कठिन युद्ध जारीहुआ २२ अर्थात् यह क्रोध से उत्पन्न अग्नि आपके पुत्रों से रक्षित होकर इस सब पृथ्वी के भस्म करने को तैयार हुआ है २३ वह शकुनी पाण्डव नकुल और सहदेव के बाणोंसे मुख को फेरगया और ऐसा व्याकुल हुआ कि उसने युद्ध में करने के योग्य कर्म और कुछ भी पराक्रम को नहीं करना जाना २४ माद्री के महारथी दोनों पुत्र इसको मुख फिराहुआ देखकर फिर ऐसे बाणों की वर्षा करनेलगे जैसे कि दो बादल बड़े पहाड़पर वर्षा करते हैं २५ वह गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से अत्यन्त घायल शकुनी शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा द्रोणाचार्यकी सेना में चलागया २६ इसी प्रकार घटोत्कच साधारण तीव्रता से युक्त होकर उस युद्ध में वेगवान् शूरवीर अलायुध राक्षस के सम्मुख गया २७ हे महाराज! उन दोनों का युद्ध ऐसा अपूर्व रूप का हुआ जैसे कि पूर्व समय में राम रावण का युद्ध हुआ था २८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने युद्ध में राजा शल्य को पचास बाणों से बेधकर फिर सात बाणों से बेधा २९ उन दोनों का युद्ध भी ऐसा अपूर्व जारी हुआ जैसे कि पूर्वसमय में इन्द्र और शम्बर दैत्य का भयकारी और अपूर्व हुआ था ३० बड़ी सेना से युक्त आपके पुत्र विविंशति चित्रसेन से और विकर्ण ने भीमसेन से युद्ध किया ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषण्णवतितमोऽध्यायः ॥ ९६ ॥

सत्तानवे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इस प्रकार से उस रोमहर्षण युद्ध के जारी होने पर पाण्डव लोग उस तीन खण्ड होनेवाले कौरवों के सम्मुख गये १ भीमसेन उस महाबाहु जलसन्ध के सम्मुख वर्तमान हुआ और सेना से युक्त राजा युधिष्ठिर युद्ध में कृतवर्मा के सम्मुखहुआ २ हे महाराज! सूर्य के समान शोभायमान बाणों की वर्षाकरता हुआ धृष्टद्युम्न युद्ध में द्रोणाचार्य के सम्मुखगया ३ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले परस्पर क्रोधयुक्त कौरव पाण्डव और अन्य सब धनुषधारियों का युद्ध जारी हुआ ४ फिर बड़े भयकारक उस प्रकार के नाश वर्तमान होने और

सेनाओं में निर्भयता के समान दो २ के द्वन्द्व युद्ध होनेपर ५ जो पराक्रमी द्रोणाचार्यने पराक्रमी धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध करने में बाणों के समूहों को छोड़ा वह आश्चर्य सा हुआ ६ कमलवनों के समान चारों ओर से नाशहोनेलगा द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न ने मनुष्यों के शिरों को बहुत चूर्णकिया ७ सेनाओं के मध्य में चारों ओर से शूरवीरों के वस्त्र भूषण शस्त्र ध्वजा कवच और धनुष आदिक फैलगये ८ रुधिर से लिप्त सुवर्ण के कवच ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि भिड़ेहुए बादलों के समूह बिजली समेत होते हैं ९ फिर तालवृक्ष के समान धनुषों को खैंचते दूसरे महारथियों ने हाथी घोड़े और मनुष्यों को गिराया १० उस युद्ध में महात्मा शूरों की तलवार, ढाल, धनुष, शिर, कवच पृथ्वीपर फैल गये ११ और चारों ओर से उठेहुए अगणित धड़ भी युद्ध में दिखाई पड़े १२ हे श्रेष्ठ! उस युद्ध में मांसभक्षी गृध्र कङ्क बगले बाज काक और शृगाल भी बहुत से देखने में आये १३ मांसों को खाते रुधिर को पीते और बहुत प्रकार से बालों समेत शिरों को उखाड़ते थे १४ इसी प्रकार जहां तहां मनुष्य घोड़े और हाथियों के भी शिरों को शरीरों के अवयवों समेत खैंचते दिखाई दिये १५ तब वह लोग युद्ध में विजय को चाहते वारंवार युद्धों को करने लगे जोकि अस्त्रों के ज्ञाता युद्ध की दीक्षा से दीक्षित होकर युद्ध करने में प्रशंसनीय थे १६ सेना के बहुत से मनुष्य युद्ध में तलवारों के अनेक पैतड़ों से मार्गों में घूमे और बहुत से मनुष्य दुधारे, खड्ग, शक्ति, प्रास, शूल, तोमर, पट्टिश, गदा, परिघ आदि अनेक प्रकार के शस्त्र और भुजाओं से भी परस्पर प्रहार करतेहुए क्रोध में भरे युद्धभूमि में वर्तमान थे १७। १८ रथी रथियों के साथ और पदाती पदातियों के साथ युद्ध करनेवाले हुए १९ मदोन्मत्तों के समान मतवाले युद्धभूमि में वर्तमान बहुत से हाथी परस्पर पुकारे और एक ने दूसरे को मारा २० हे राजन्! उस प्रकार के बे मर्याद युद्ध के वर्तमान होनेपर धृष्टद्युम्न ने अपने घोड़ों को द्रोणाचार्य के घोड़ों से मिलादिया २१ वह वायु के समान शीघ्रगामी श्वेत कपोतवर्ण युद्ध में मिलेहुए घोड़े अत्यन्त शोभायमान हुए २२ अर्थात् वह मिलेहुए कपोतवर्ण लालरङ्ग घोड़े ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बिजली समेत बादल शोभायमान होते हैं २३ हे भरतवंशिन्! वीर, धृष्टद्युम्न ने समीप में वर्तमान द्रोणाचार्य को देखकर धनुष को छोड़ ढाल तलवार को लिया २४

कठिन कर्म को करना चाहता शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला धृष्टद्युम्न ईर्षा से दौड़कर द्रोणाचार्य के रथपर पहुँचा २५ और युग के मध्य युग के बन्धनों में जाकर बड़ी धृष्टता से घोड़ों के मध्य में प्रहारकिया फिर सेना के मनुष्यों ने उस के उस कर्म की प्रशंसा करी २६ द्रोणाचार्य ने लाल घोड़ों के समीप वर्तमान खड्ग समेत घूमतेहुए उस धृष्टद्युम्न का कोई छिद्र नहीं देखा वह आश्चर्य सा हुआ २७ जैसे कि वन के बीच में मांस के अभिलाषी बाज का गिरना होता है उसी प्रकार उस द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी धृष्टद्युम्न का उनके पास जाना हुआ २८ इसके पीछे द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न की उस ढाल को जोकि सौ चन्द्रमा रखनेवाली थी अपने सौ बाणों से गिराया और दशबाणों से उसके खड्ग को तोड़ा २९ इसी प्रकार पराक्रमी ने चौंसठ बाणों से घोड़ों को मारा और भल्लों से ध्वजा छत्र और पीछे बैठेहुए सारथी को भी गिराया ३० फिर शीघ्रता करनेवाले ने जीवन के नाश करनेवाले कानतक खैंचे हुए दूसरे बाण को ऐसे छोड़ा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र अपने वज्र को छोड़ता है ३१ तब सात्यकी ने उसको चौदह तीक्ष्ण बाणों से काटा और आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य की आधीनता में वर्तमान होजानेवाले धृष्टद्युम्न को छुड़ाया ३२ हे श्रेष्ठ! जैसे कि सिंह से निगलाहुआ मृग होता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य से आधीन कियेहुए धृष्टद्युम्न को शिनी के पौत्रों में श्रेष्ठ सात्यकी ने छुटाया ३३ शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य ने रक्षाकरनेवाले सात्यकी को और धृष्टद्युम्न को देखकर बड़े युद्धमें छब्बीस बाणों से घायल किया ३४ उसके पीछे शिनी के पौत्र ने सृञ्जयों के निगलने वाले द्रोणाचार्य को छब्बीसही बाणों से छाती के मध्य में घायल किया ३५ फिर धृष्टद्युम्न की विजय चाहनेवाले पाञ्चालदेशीय सब रथी भी उसीसमय जब कि द्रोणाचार्य सात्यकी के सम्मुख गये धृष्टद्युम्न को दूर लेगये ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तनवतितमोऽध्यायः ॥ ९७ ॥

अट्ठानवेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! उस वृष्णियों में बड़ेवीर सात्यकी के हाथ से उस बाण के टूटजाने और धृष्टद्युम्न के छूटजाने पर १ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने युद्ध में नरोत्तम सात्यकी के ऊपर क्या किया सञ्जय बोले कि अत्यन्त शीघ्रगामी क्रोधरूप विषरखनेवाले धनुष-

रूप अत्यन्न भोजन करनेवाले मुख तीक्ष्णधार बाणरूप दाँत चांदी के नाराचरूप डाढ़ रखनेवाले २। ३ क्रोध और अशान्ति से लालनेत्र बड़े सर्प के समान श्वासा लेनेवाले नरों में वीर अत्यन्त प्रसन्न द्रोणाचार्य उन बड़े शीघ्रगामी लाल घोड़ों की सवारी से ४ जोकि आकाश को उछलते और पहाड़ों को उल्लङ्घन करते विदित होते थे सुनहरी पुङ्खवाले बाणों को चलाते सात्यकी के सम्मुख गये ५ गिरतेहुए बाणरूप वर्षावाले रथ के शब्दरूप बादल रखनेवाले धनुष के आकर्षणरूप चेष्टा करनेवाले बहुत नाराचरूप बिजलीवाले ६ शक्ति और खड्ग रूप बिजली रखनेवाले, क्रोध की तीव्रता से उठेहुए घोड़ेरूप वायु से चलायमान हटाने के अयोग्य उस द्रोणाचार्यरूप सम्मुख आनेवाले बादल को ७ देखकर शूरवीर शत्रुपुरञ्जय युद्धदुर्मद सात्यकी हँसकर सारथी से बोला ८ हे सूत ! अत्यन्त प्रसन्नचित्त के समान तू बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा इस राजकुमारों के आचार्य सदैव शूरों के प्रधान राजा दुर्योधन के आश्रयस्थान उसके दुःख शोकों के दूर करनेवाले अपने कर्म में अद्वितीय शूरवीर ब्राह्मण के सम्मुख चल ९। १० उसके पीछे चांदी के समान श्वेतरङ्ग वायु के समान शीघ्रगामी सात्यकी के उत्तम घोड़े शीघ्रही द्रोणाचार्य के सम्मुख गये ११ तदनन्तर उन दोनों शत्रुओं के सन्तापी द्रोणाचार्य और सात्यकी ने युद्धकिया और हज़ारों बाणों से परस्पर में घायल किया १२ दोनों पुरुषोत्तम वीरों ने आकाश बाणों के जालों से पूर्ण करदिया और दशों दिशाओंको भी बाणोंसे भरदिया १३ जैसे कि वर्षाऋतु में दो बादल अपनी जलधाराओं से वर्षा करते हैं उसी प्रकार उन दोनों ने परस्पर वर्षाकरी उस समय न सूर्य दिखाई पड़े न वायु चली १४ तब बाणों के जाल से ढकाहुआ महाभयकारी अन्धकार दूसरे शूरों का पराजय करनेवाला चारोंओर से हुआ १५ उस समय शीघ्रतापूर्वक अस्त्र चलाने में उन दोनों द्रोणाचार्य और सात्यकी के बाणों से लोक के अप्रकाशित होने पर उन दोनों १६ नरोत्तमों के बाणों की वर्षाओं का अन्तर नहीं देखने में आया बाणों के गिरने से ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि जलधाराओं के आघात से उत्पन्न शब्दों के होते हैं १७ अथवा जैसे इन्द्र के छोड़ेहुए वज्रों के शब्द होते हैं नाराचों से अत्यन्त छिदेहुए उन दोनों शूरों का रूप ऐसा शोभायमान हुआ १८ हे भरतवंशिन् ! जिस प्रकार बड़े विषैले सर्पों का रूप होजाता है युद्ध

में उन दोनों मतवालों की प्रत्यञ्चाओं के ऐसे शब्द सुनेगये १९ जैसे कि वारं-वार वज्र से घात कियेहुए पर्वतों के शिखरों के शब्द होते हैं हे राजन्! उन दोनों के वह दोनों रथ घोड़े और सारथी २० सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से ताड़ित अपूर्वरूप के प्रकाशमान हुए और स्वच्छ सीधे चलनेवाले २१ कांचली से छुटे हुए सर्पों के समान नाराचों का गिरना भी बड़ा भयकारी हुआ उन दोनों के छत्रों समेत ध्वजा भी गिरपड़ीं २२ दोनों के शरीर रुधिर में लिप्तहुए और अङ्गों से रुधिर को डालते दो मतवाले हाथियों के समान २३ जीवन के नाशकारक बाणों से परस्पर घायलहुए हे महाराज! गर्जने पुकारने और शङ्ख दुन्दुभी आदि के बाजे बन्दहुए किसी ने वार्तालाप भी नहीं की सब सेना चुपहोगई शूरों ने युद्ध करना बन्दकिया २४। २५ जिन मनुष्यों को अपूर्वता के देखने का उत्साह उत्पन्नहुआ उन रथसवार हाथी के सवार अश्वसवार और पदातियों ने उन दोनों के द्वैरथ युद्ध को देखा २६ दोनों नरोत्तमों को घेरकरके अचल नेत्रों से सब देखने लगे हाथियों की सेना नियत होगई और घोड़ों की भी सेना ठहरगई मोती मूंगों से जटित मणि सुवर्णादि से अलंकृत २७। २८ ध्वजा भूषण और अपूर्व स्वर्णमयी कवच अपूर्व पताका परस्तोम सूक्ष्म कम्बल २९ स्वच्छ तीक्ष्ण शस्त्र घोड़ों के मस्तकपर शोभायमान सुवर्ण भूषण मूर्धा और हाथियों के कुम्भ और दाँतों में लिपटीहुई मालाओं से वह सेना बादलों की पंक्ति के समान ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि वर्षा ऋतु में बलाक पटबीजने इन्द्र-धनुष और बिजली समेत बादल होयँ हमारे शूरवीर और पाण्डवों के वह शूर-वीर तमाशा देखने को नियतहुए ३०। ३२ महात्मा द्रोणाचार्य और सात्यकी के उस युद्ध को विमानों में बैठे देवताओं ने जिनमें मुख्य अग्रगामी ब्रह्माजी और सोम देवता थे देखा ३३ सिद्ध चारणों के समूह और विद्याधर गन्धर्व और बड़े २ सर्पों ने उन दोनों पुरुषोत्तमों की नाना प्रकार की गतियां अथवा लौट २ कर प्रहारों का करना और अस्त्रों के अपूर्व घातों से आश्चर्य को पाया अस्त्रों में अपनी २ हस्तलाघवता को दिखलाते उन दोनों महाबली ३४। ३५ द्रोणा-चार्य और सात्यकी ने बाणों से परस्पर में घायल किया इसके अनन्तर सात्यकी ने बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य के बाणों को युद्ध में काटा ३६ और अत्यन्त दृढ़ बाणों से शीघ्रही धनुष को भी काटा भारद्वाज द्रोणाचार्य ने पलमात्र मेंही दूसरे

धनुष को ३७ तैयार किया सात्यकी ने उनके उस धनुष को भी काटा इसके पीछे जल्दी करनेवाले हाथ में धनुष लेकर नियत हुए ३८ इसी प्रकार जो २ धनुष तैयार करते थे उस २ को वह काटता हुआ सौ धनुषों का काटनेवाला हुआ धनुष चढ़ाने और काटने में भी उन दोनों का अन्तर नहीं देखा ३९ हे महाराज! इसके पीछे द्रोणाचार्य ने प्रत्येक युद्ध में इस सात्यकी के बुद्धि से बाहर कर्म को देखकर चित्त से यह चिन्ताकरी कि जो यह अस्त्रबल परशुरामजी कार्तवीर्य अर्जुन और पुरुषोत्तम भीष्म में है वही अस्त्रबल यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी में है द्रोणाचार्यने उसके उस पराक्रम को चित्त से स्तूयमान किया अर्थात् प्रशंसाकरी ४०।४१ अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ ब्राह्मणों में उत्तम द्रोणाचार्यजी इन्द्र के समान उसकी हस्तलाघवता को देखकर प्रसन्नहुए और इसीप्रकार इन्द्रसमेत सब देवता भी प्रसन्नहुए ४२ हे राजन्! देवता और गन्धर्वों ने उस शीघ्रकर्मी युद्ध के करनेवाले सात्यकी की उस हस्तलाघवता को नहीं देखा ४३ सिद्ध चारणों के समूहों ने द्रोणाचार्य के उस कर्म को नहीं जाना इसके पीछे क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले महाअस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य ने दूसरे धनुष को लेकर ४४ अस्त्रों से युद्ध किया हे भरतवंशिन्! सात्यकी ने उनके अस्त्रों को अपने अस्त्रों की मायाओं से दूर करके ४५ तीक्ष्ण बाणों से घायल किया वह भी आश्चर्य सा हुआ युद्ध में असादृश्य बुद्धि से बाहर उसके कर्म को देखकर ४६ योग अर्थात् भिड़जाने के ज्ञाता आप शूरवीरों ने योग से संयुक्त होनेवाले उस कर्म की प्रशंसाकरी द्रोणाचार्यजी जिस २ अस्त्र को चलाते थे उसी २ को सात्यकी भी चलाता था ४७ फिर शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले निर्भय आचार्य ने उससे युद्ध किया हे महाराज! धनुर्वेद में पूर्ण क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने ४८ सात्यकी के मारने के लिये दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया उस बड़े धनुषधारी ने उस शत्रु के मारनेवाले बड़े भयकारी आग्नेय अस्त्र को देखकर ४९ दिव्य वारुणास्त्र का प्रयोग किया उन दिव्य अस्त्रधारियों को देखकर बड़ा हाहाकार हुआ ५० तब आकाश में रहनेवाले जीवधारी भी आकाश के मध्य में नहीं चले उन दोनों करके बाणपर नियत किये हुए वारुणास्त्र और अग्न्यस्त्र जबतक परस्पर नहीं भिड़े थे कि सूर्य मध्याह्न से आगे को बढ़े उसके पीछे पाण्डव और युधिष्ठिर भीमसेन ५१। ५२ नकुल सहदेव और विराट ने धृष्टद्युम्न आदिक केकयों

समेत सात्यकी को चारोंओर से रक्षित किया ५३ मत्स्य और शाल्वेय नाम सेना शीघ्रता से द्रोणाचार्य के पास आई और हज़ारों राजकुमार दुश्शासन को आगे करके ५४ शत्रुओं से घिरेहुए द्रोणाचार्य के पास वर्तमान हुए हे राजन्! इसके पीछे उन्हों के और आपके धनुषधारियों के युद्धहुए ५५ धूलि के गुब्बारों से संसार के गुप्त होने और बाणों के जालों से ढकजाने पर सारा संसार महाव्याकुल हुआ कुछ नहीं जानागया दोनों सेना धूलि से गुप्त होगईं और अमर्यादगी वर्तमान हुई॥ ५६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणयष्टनवतितमोऽध्यायः॥ ६८ ॥

निन्नानबे का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, वहां अस्ताचल के शिखरपर सूर्य के अधिक वर्तमान होने और धूलि से संयुक्त होकर सूर्य के न्यून प्रकाश होनेपर १ युद्ध करने में नियत शूरवीर फिर लौटनेवाले अथवा पृथक् होनेवाले और विजय करनेवालों का वह दिन धीरेपने से गया २ इस प्रकार उन विजयाभिलाषी सेनाओं के भिड़ने पर अर्जुन और वासुदेवजी जयद्रथ के मारने के निमित्त चले ३ वहां अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से रथ के जाने के योग्य मार्ग को किया उसी मार्गसे श्रीकृष्णजी चले ४ हे राजन्! जहां २ महात्मा पाण्डव अर्जुन का रथ जाता था वहां २ से आपकी सेना छिन्न भिन्न होकर पृथक् हुई ५ फिर उत्तम, मध्यम, निकृष्ट मण्डलों को दिखलाते पराक्रमी श्रीकृष्णजी ने रथ की सुशिक्षितता को दिखलाया ६ फिर जिन पर नाम मुद्रित था और नोक पर सूक्ष्म चर्म लगाहुआ था वह पीतरङ्ग कालाग्नि के स्वरूप सुन्दर पर्ववाले बड़ी दूर पहुँचनेवाले ७ भयकारी लोहे के नाना प्रकार के बाण शत्रुओं के शरीरों में लगते युद्ध में पक्षियों समेत जीवों के रुधिर पीनेवाले हुए ८ रथ में बैठाहुआ अर्जुन आगे से जिन बाणों को एक क्रोस परसे चलाता था उसके वह बाण उस समय पर शत्रुओं को मारते थे जब कि उसका रथ एक कोस भर मार्ग को उल्लङ्घन कर जाता था ९ तब श्रीकृष्णजी सम्पूर्ण जगत् को आश्चर्ययुक्त करते गरुड़ और वायु के समान शीघ्रगामी उत्तम पुरुषों के सवार करनेवाले घोड़ों के द्वारा चल दिये १० हे राजन्! उस प्रकार का न सूर्य का न इन्द्र का न रुद्र का न कुबेर का ११ और पर्वसमय में भी किसी का रथ नहीं चला जैसा कि चित्त के अनुसार

शीघ्रता से अर्जुन का रथ गया १२ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! फिर शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले केशवजी ने युद्ध में प्रवेशकरके सेना के मध्य में शीघ्रता से घोड़ों को चलायमान किया १३ उसके पीछे उस रथसमूहों के मध्य को पाकर क्षुधा तृषा से युक्त उत्तम घोड़ों ने उस रथ को बड़े दुःख से खैंचा १४ क्योंकि वह घोड़े बड़े युद्धकुशल शस्त्रविद्या के ज्ञाता शूरवीरों के नाना प्रकार के बहुत से शस्त्रों से घायल होकर वारंवार अनेक मण्डलों को घूमे थे १५ और मनुष्यों समेत मृतक घोड़े हाथी रथियों के ऊपर से ऐसे उल्लङ्घन करनेवाले हुए जैसे कि शलभाओं के हज़ारों समूह सब को उल्लङ्घन करते हैं १६ हे राजन् ! इसी अन्तर में दोनों भाई अवन्ती के राजाओं ने सेनासमेत थके घोड़ेवाले पाण्डव अर्जुन से आकर सम्मुखता करी १७ उन दोनों प्रसन्नचित्तों ने चौंसठ बाणों से अर्जुन को सत्तर बाणों से श्रीकृष्णजी को और सैकड़ों बाणों से घोड़ों को घायल किया १८ हे महाराज ! क्रोधयुक्त और मर्मस्थलों के जाननेवाले अर्जुन ने झुकी गांठवाले मर्मभेदी नौ बाणों से उन दोनों को युद्ध में घायल किया १९ उसके पीछे उन दोनों क्रोधयुक्तों ने केशवजी समेत अर्जुन को बाणों के समूहों से ढकदिया और सिंहनाद किये २० श्वेत घोड़े रखनेवाले अर्जुन ने युद्ध में दो भल्लों से उन दोनों के जड़ाऊ धनुषों को काटा और शीघ्रही सुवर्ण के समान प्रकाशित दोनों ध्वजाओं को भी काटा २१ हे राजन् ! तब अत्यन्त क्रोधयुक्त उन दोनों ने दूसरे धनुषोंको लेकर युद्धमें बाणों से अर्जुन को पीड्यमान किया २२ फिर उन दोनों के बाणों से अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डुनन्दन अर्जुन ने फिर उनके दोनों धनुषों को काटा २३ और सुनहरी तीक्ष्णधार दूसरे विशिखों से शीघ्रही पदातियों समेत घोड़ों को मारा और दोनों के सारथियों समेत पृष्ठरक्षकों को भी मारगिराया २४ और क्षुरप्रनाम बाण से बड़े भाई के शिरको शरीर से काटा वह मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वायु से उखाड़ा हुआ वृक्ष गिरता है २५ फिर प्रतापवान् महाबली अनुविन्द को मराहुआ देखकर और उस रथ को जिसके कि घोड़े मरगये थे छोड़कर गदा को हाथ में लेकर २६ भाई के मारने को स्मरण करता और रथियों में श्रेष्ठ महारथी गदा से संयुक्त नर्तक के समान युद्ध में सम्मुख वर्तमान हुआ २७ फिर क्रोधयुक्त बिन्द ने गदा से मधुसूदनजी को ललाटपर घायल करके ऐसे कम्पित नहीं किया जैसे

कि मैनाक पर्वत को २८ अर्जुन ने छः बाणों से उसकी ग्रीवा चरण भुजा और शिर को काटा वह फिर ऐसे खण्ड २ होकर गिरा जैसे कि पर्वतों का समूह गिरता है २९ हे राजन्! फिर उनके पीछे चलनेवाले शूरवीर उन दोनों को माराहुआ देखकर अत्यन्त कोपयुक्त सैकड़ों बाणों को मारतेहुए सम्मुख दौड़े ३० हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! वह अर्जुन शीघ्रही बाणों से उनको मारकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि हिमऋतु के अन्त में वन को भस्म करके अग्नि शोभायमान होता है ३१ अर्जुन बड़ी कठिनता से उन दोनों की सेना को उल्लङ्घन करके ऐसा शोभित हुआ जैसे कि बादल से पृथक् होकर उदयहुआ सूर्य होता है ३२ सब कौरवलोग उसको देखकर भयभीत होगये परन्तु फिर अत्यन्त प्रसन्नहुए और चारों ओर से अर्जुन के सम्मुखहुए ३३ उसको थकाहुआ देखकर और जयद्रथ को दूर जानकर बड़े सिंहनादपूर्वक सब ओर से घेरलिया ३४ उनको अत्यन्त क्रोधयुक्त देखकर मन्द मुसकान करताहुआ पुरुषोत्तम अर्जुन बड़े धीरेपने से श्रीकृष्णजी से यह वचन बोला ३५ कि घोड़े बाणों से पीड्यमान और बल से रहित हैं और जयद्रथ दूर है यहां शीघ्रता से कौनसा उत्तम कर्म तुम को स्वीकार है हे श्रीकृष्णजी! आप मूल वृत्तान्त कहो आपही सदैव बड़े ज्ञानी हो यहांपर आप के आज्ञाकारी पाण्डव शत्रुओं को विजयकरेंगे ३६।३७ मेरा जो काम शीघ्रता से करने के योग्य है आप उसको मुझसे सुनिये हे माधवजी! सुखपूर्वक घोड़ों को छोड़ो और भल्लों को शरीर से निकालो ३८ अर्जुन के इस वचन को सुनकर श्रीकृष्णजी ने उत्तरदिया कि हे अर्जुन! मेरी भी यही राय है जो तुमने कही ३९ अर्जुन बोले हे केशवजी! मैं सब सेनाओं को रोकूंगा आपही यहां शीघ्रतापूर्वक न्याय के अनुसार कर्मकरो ४० सञ्जय बोले कि वह निर्भय स्थिरचित्त अर्जुन रथ के बैठने के स्थान से उतरकर गाण्डीव धनुष को लेकर पर्वत के समान निश्चल होकर नियत हुआ ४१ विजयाभिलाषी पुकारतेहुए क्षत्रिय यही समय है ऐसा जानकर उस पृथ्वीपर नियत हुए अर्जुन के सम्मुख दौड़े ४२ धनुषों को खैंचते शायकों को छोड़ते बहुत से रथसमूहों समेत उन क्षत्रियों ने उस अकेले को घेरलिया ४३ जैसे कि बादल सूर्यको ढकदेता है उसीप्रकार बाणों से अर्जुन को ढकते क्रोधयुक्त क्षत्रियों ने वहां अपने अपूर्व शस्त्रों को दिखाया ४४ बड़े रथी क्षत्रिय वेग से उस क्षत्रियों में श्रेष्ठ

अर्जुन के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि मतवाले हाथी सिंहके सम्मुख होते हैं ४५ वहां पर अर्जुन की भुजाओं का बड़ा पराक्रम देखने में आया कि उस क्रोधयुक्त ने बहुत सी सेनाओं को सब ओर से रोका ४६ अर्थात् उस समर्थ ने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रों को सब ओर से रोककर शीघ्रही बहुत बाणों से सब को ढकदिया ४७ हे राजन्! वहांपर पृथ्वी और आकाश में बहुत बाणों की घिसावट से बड़ी ज्व-लितरूप अग्नि उत्पन्नहुई ४८ और जहां तहां रुधिर से भरेहुए श्वासाओं को लेते बड़े धनुषधारी घायल और गर्जतेहुए शत्रुओं से दुःखी हुए घोड़े हाथी ४९ और युद्ध में विजय चाहनेवाले क्रोधयुक्त एकस्थान में नियत बहुत से शत्रुओं के वीरों से गर्मी उत्पन्न हुई ५० तब मर्यादरूप अर्जुन ने उस बाणरूपी तरङ्ग ध्वजारूपी भँवर हाथीरूप ग्राह रखनेवाली महादुस्तर पदातीरूप मछलियों से व्याप्त शङ्ख दुन्दुभियों से शब्दायमान ५१ असङ्ख्य रथरूपी बड़ी लहरें रखने-वाली और पगड़ी, मुख, छत्र, पताकारूपी फेनों की माला रखनेवाली ५२ हाथियों के अङ्गरूप शिलाओं से संयुक्त निश्चल रथरूपी समुद्र को रोका ५३ धृतराष्ट्र बोले कि अर्जुन के पृथ्वीपर वर्तमान होने और घोड़ों को हाथ से पक-ड़नेवाले केशवजी के होनेपर ऐसे समय को पाकर भी अर्जुन कैसे नहीं मारा गया ५४ सञ्जय बोले हे राजन्! पृथ्वीपर नियत अर्जुन से शीघ्रही सब राजा लोग जोकि रथपर नियत थे ऐसे रोके गये जैसे कि वेद के न जाननेवालों के वचन रोके जाते हैं ५५ उस अकेले पृथ्वीपर नियत अर्जुन ने रथपर चढ़ेहुए सब राजाओं को ऐसे हटाया जैसे कि लोभ सब गुणों को हटादेता है ५६ उस के पीछे निर्भय महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्ध में उस अपने प्यारे पुरुषोत्तम अर्जुन से यह वचन बोले ५७ हे अर्जुन! यहां युद्ध में घोड़ों के जल पीने का ज-लाशय पूर्ण नहीं है और यह घोड़े पीने के योग्य जल को चाहते हैं स्नान को नहीं चाहते हैं ५८ इस बात के कहतेही अर्जुन ने अस्त्र के द्वारा पृथ्वी को फाड़कर घोड़ों के जल पीने का ऐसा उत्तम शुभदायक जल का सरोवर उत्पन्न किया ५९ जोकि मन्त्र के प्रभाव से हंस कारण्डवों से युक्त चक्रवाकों से शोभित बहुत विस्तृत फूलेहुए उत्तम कमल और स्वच्छ जल का रखनेवाला ६० कूर्म मछलियों आदि से पूर्ण अथाह बड़े २ ऋषियों से सेवित था उस एकही क्षण में उत्पन्न हुए सरोवर के देखने को नारदमुनि भी आ पहुँचे ६१ त्वष्टा देवता

के समान अपूर्व कर्म करनेवाले अर्जुन ने वह बाणों का स्थान बनाया जिसमें बाण केही बांस खम्भ और बाणों काही अद्भुत पटाव था ६२ इसके पीछे महात्मा अर्जुन से उस बाणों के महल बनाये जानेपर गोविन्दजी अत्यन्त हँस कर बोले कि साधु है साधु है ॥ ६३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनशततमोऽध्यायः ॥ ९९ ॥

सौ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, महात्मा अर्जुन से उस जलाशय के उत्पन्न होने शत्रुओं की सेना हटाने और बाणमहल के बनानेपर बड़े तेजस्वी वासुदेवजी ने १ शीघ्रही रथ से उतरकर बाणों से घायल घोड़ों को छोड़दिया २ उस अपूर्वदर्शन कर्म को देखकर सिद्ध चारणों के समूहों में और सब सेनाओं में बहुत से प्रशंसाओं के वचन प्रकटहुए ३ महारथी लोग उस पदाती युद्ध करनेवाले महारथी अर्जुन के रोकने को समर्थ नहीं हुए यह आश्चर्य सा हुआ ४ तब अर्जुन बहुत हाथी घोड़े रखनेवाले रथसमूहों के सम्मुख आजानेपर भी भयभीत नहीं हुआ वह इसका कर्म सब मनुष्यों से अधिक और अपूर्व था ५ उन राजाओं ने अर्जुन के ऊपर बाणों के समूहों को छोड़ा शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला धर्मात्मा इन्द्र का पुत्र अर्जुन पीड़ावान् नहीं हुआ ६ उस पराक्रमी अर्जुनने उन बाणों के जाल गदा और प्रासों को बीचही में ऐसे निगला अर्थात् ऐसे काटा जैसे कि नदियों को समुद्र काटता है ७ अर्जुन ने अस्त्रों के बड़े वेग और ध्वजा के पराक्रम से सब महाराजाओं के उन उत्तम बाणों को निगला ८ हे महाराज! कौरवों ने अर्जुन और वासुदेवजी इन दोनों के उस अपूर्व और बड़े पराक्रम की स्तुतिकरी अर्थात् प्रशंसाकरी ९ लोक में ऐसा अपूर्व कर्म न हुआ न होगा जैसे कि अर्जुन और गोविन्दजी ने युद्ध में घोड़ों को छोड़कर किया है १० उन दोनों नरोत्तमों ने हमलोगों में बड़ा भय उत्पन्न किया और युद्ध के मस्तक पर दोनों ने महाभयकारी अपने पराक्रम को दिखाया ११ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! तब युद्ध में अर्जुन के हाथ से बाणमहल के तैयार होनेपर स्त्रियों के मध्यवर्तियों के समान मन्द मुसकान करते कमललोचन सावधान श्रीकृष्णजी ने आपकी सब सेनाओं के देखते हुए उन घोड़ों को जल से तृप्तकरके थकावट से भी रहित करदिया १२ । १३

शालिहोत्रादि शास्त्रों के कर्मों में कुशल श्रीकृष्णजी ने उन घोड़ों के शरीरों की वेदना निर्बलता झागों का वमन करना और बड़े घाव इन सब को दूर किया १४ हाथों से भल्लों को उखाड़कर और उन घोड़ों को मलकर रीति के अनुसार स्नान कराकर जल को पिलाया १५ उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त श्रीकृष्णजी ने उन स्नान और जलपान करचुकनेवाले दानेआदि से तृप्त दुःख और थकावट से रहित घोड़ों को फिर उस उत्तम रथ में जोड़ा १६ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी अर्जुनसमेत उस श्रेष्ठ रथपर सवार होकर शीघ्र चले १७ कौरवीय सेना में श्रेष्ठ शूरवीर युद्धभूमि में उस रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन के रथ को जलपान कियेहुए घोड़ों से संयुक्त देखकर बेमन अर्थात् चित्त से उदास होगये १८ हे राजन्! टूटीहुई डाढ़वाले सर्प की समान श्वासालेनेवाले लोग पृथक् २ होकर बोले कि बड़ी धिक्कार है कि वह अर्जुन और श्रीकृष्णजी निकल गये १९ वह दोनों कवचधारी बालकों के खेलही के समान हमारे बल को निरादरकरके सब क्षत्रियों के देखते एकरथ के द्वाराही निकलगये २० उन शत्रुओं के तपानेवाले पुकारते उपाय करते शूरवीरों में चित्त न लगानेवाले वह दोनों सब राजाओं के मध्य में अपने बल पराक्रम को दिखलाकर चल दिये २१ तब दूसरे सेना के मनुष्य उन जानेवाले दोनों को देखकर फिर बोले कि सब कौरवलोग श्रीकृष्ण और अर्जुन के मारने में शीघ्रता करो २२ यह रथ सवार श्रीकृष्णजी युद्ध में सब धनुषधारियों के देखतेहुए हमलोगों को तुच्छ और निरादर करके जयद्रथ की ओर को जाते हैं २३ वहां पर कुछ राजालोग युद्ध में पूर्व कभी न देखे हुए उस अद्भुत बड़े कर्म को देखकर परस्पर में यह बोले २४ कि दुर्योधन के अपराध से सब सेना समेत राजा धृतराष्ट्र और क्षत्रियों के कुलों ने नाश को पाया और सम्पूर्ण पृथ्वी ने २५ बड़ीभारी बरबादी को पाया उसको राजा नहीं जानता है हे भरतवंशिन्! वहांपर क्षत्रिय और दूसरे लोग इस रीति से वार्तालाप करते थे २६ कि यमलोक में पहुँचेहुए जयद्रथ का जो कर्म है उसको निष्फल दोषनेवाला उपाय का न जाननेवाला दुर्योधन करो २७ उसके पीछे सूर्य के तीक्ष्ण किरणों को अस्ताचल की ओर जानेपर पाण्डव अर्जुन अत्यन्त प्रसन्न जलपानादि करनेवाले तृप्त घोड़ों की सवारी से बड़ी शीघ्रतापूर्वक जयद्रथ के ऊपर गया २८ शूरवीर लोग उस सब शस्त्रधारियों

में श्रेष्ठ काल के समान क्रोधयुक्त जातेहुए महाबाहु अर्जुन के रोकने को समर्थ नहीं हुए २९ इसके अनन्तर शत्रुओं के तपानेवाले अर्जुन ने सेना को उच्छिन्न करके जयद्रथ के निमित्त ऐसा छिन्न भिन्न किया जैसे कि मृगों के समूहों को सिंह छिन्न भिन्न करदेता है ३० सेनाओं को मँझातेहुए श्रीकृष्णजी ने शीघ्रही घोड़ों को चलायमान किया और बलाका के समान श्वेतरङ्गवाले पाञ्चजन्य शङ्ख को बजाया ३१ आगे से अर्जुन के छोड़ेहुए बाण उसके पीछे गिरे और वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों ने उस मार्ग को बड़ी शीघ्रता से व्यतीत किया ३२ इसके पीछे क्रोधयुक्त राजाओं ने और अनेक क्षत्रियों ने जयद्रथ के मारने के अभिलाषी अर्जुन को चारों ओर से घेरलिया ३३ सेनाओं के भागने पर शीघ्रता करनेवाला दुर्योधन उस बड़े युद्ध में नियतहोनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुन के सम्मुखहुआ ३४ सब रथी उस वायु से खड़ी पताकावाले बादल के समान शब्दायमान भयकारी हनुमान्‌जी की ध्वजा रखनेवाले रथ को देखकर महाव्याकुल हुए ३५ फिर धूलि से सूर्य के सब ओर से ढकजानेपर युद्ध में बाणों से पीड्यमान शूरवीर लोग उन श्रीकृष्ण और अर्जुन के देखने को भी समर्थ नहीं हुए ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिशततमोऽध्यायः ॥ १०० ॥

एकसौएक का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! आपकी सेना के राजालोग उन उल्लङ्घन करके पहुँचेहुए अर्जुन और वासुदेवजी को देखकर भय से पृथ्वीपर गिरपड़े १ फिर वह सब क्रोधयुक्त लज्जावान् बल से चलायमान महात्मा नियत होकर अर्जुन के सम्मुख गये २ जो क्रोध और अधैर्य से युक्त युद्ध में अर्जुन के सम्मुख गये वह अबतक भी ऐसे लौटकर नहीं आये जैसे कि समुद्र से फिर लौटकर नदियां नहीं आतीं ३ परन्तु असन्तलोग ऐसे मुख फेरनेवाले हुए जैसे कि वेदों से नास्तिकलोग मुख को फेरलेते हैं उन नरक के चाहनेवालों ने पाप कोही प्राप्त किया ४ वह दोनों पुरुषोत्तम रथ की सेना को उल्लङ्घनकर सबसे छुटेहुए ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि राहु के मुख से छुटेहुए दो सूर्यहोयँ ५ जैसे कि बड़े जाल को तोड़कर दुःख शोक से रहित दो मछली दिखाई पड़ें उसी प्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुन उस सेना के जाल को फाड़कर दृष्टिगोचरहुए ६ बड़े दुःख से तोड़ने के

योग्य बाणों के कष्ट रखनेवाले द्रोणाचार्य की सेना से छुटेहुए दोनों महात्मा ऐसे दिखाईपड़े जैसे कि उदय हुए दो कालरूप सूर्य होते हैं ७ अस्त्रों की पीड़ा और बाणों के दुःखों से छुटेहुए वह दोनों महात्मा जोकि शत्रुओं के पीड़ा उत्पन्न करनेवाले थे दिखाईपड़े ८ अथवा जैसे अग्नि के समान स्पर्शवाले समुद्र से पृथक् होनेवाली झषनाम दो मछलियां होती हैं फिर उन दोनों ने उस सेना को ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि समुद्रको दो बड़े मगर उथल पुथल कर देते हैं ९ प्रथम आप के शूरवीरों ने और पुत्रों ने द्रोणाचार्य की सेना में उन दोनों के नियत होनेपर यह बात पक्की चित्त से जानली थी कि यह द्रोणाचार्य को नहीं तरेंगे १० हे महाराज ! फिर द्रोणाचार्य की सेना को उल्लङ्घन करनेवाले उन दोनों बड़े तेजस्वियों को देखकर जयद्रथ के जीवन की आशा को त्यागदिया ११ हे समर्थ, राजन्, धृतराष्ट्र ! जयद्रथ के जीवन में द्रोणाचार्य और कृतवर्मा की बड़ी बलिष्ठ आशा थी कि श्रीकृष्णजी और अर्जुन इस व्यूह के पार नहीं हो सकेंगे १२ हे महाराज ! शत्रु के तपानेवाले वह दोनों उस आशा को निष्फल करके कठिनता से तरने के योग्य द्रोणाचार्य और कृतवर्मा की सेना को अच्छी रीति से तरगये १३ फिर अग्नि के समान प्रकाशित सेना के उल्लङ्घन करनेवाले उन दोनों को देखकर आशा से रहित शूरवीरों ने जयद्रथ के जीवन की आशा नहीं की १४ उन निर्भय दूसरे के भय के बढ़ानेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुन ने जयद्रथ के मारने में उन २ वचनों को वारंवार कहा १५ कि यह जयद्रथ दुर्योधन के छः महारथियों ने बीच में किया है यह मेरे नेत्रों के सम्मुख आया हुआ वच नहीं सक्ता १६ जो युद्ध में देवताओं के समूहों समेत इन्द्र भी इसकी रक्षाकरें तो भी उसको मारेंगे यह वचन श्रीकृष्ण और अर्जुन ने कहा है १७ तब परस्पर में महाबाहु श्रीकृष्ण के इस प्रकार कहनेपर जयद्रथ को देखतेहुए आप के पुत्र बहुत पुकारे १८ रेत के स्थान को उल्लङ्घनकर जातेहुए तृषा से पीड़ित दो हाथी जैसे जल को पीकर तृप्तहोयँ उसी प्रकार शत्रुओं के पराजय करनेवाले यह दोनों हैं १९ व्याघ्र सिंह और हाथियों से व्याप्त पहाड़ों को उल्लङ्घनकरके हानि मृत्यु और वृद्धावस्था से छूटेहुए दो व्यापारी जैसे दिखाई पड़ें २० उसी प्रकार इन दोनों के मुख का वर्ण दिखाई देता है आप के शूरवीर उन दोनों को पारहुए देखकर सब प्रकार से पुकारे २१ कि सर्प के

रूप अग्नि के समान प्रकाशित द्रोणाचार्य आदिक अन्य राजाओं से भी मुक्त वह दोनों दो सूर्यों के समान प्रकाशमानहुए २२ द्रोणाचार्य की समुद्ररूप सेना से पार उतरनेवाले शत्रुविजयी दोनों आनन्दयुक्त ऐसे दिखाई पड़े जैसे समुद्र के पारगामी पुरुष दीखते हैं २३ अस्त्रों के बड़े समूहों से छुटे द्रोणाचार्य कृतवर्मा की रक्षित सेना से मुक्त वह दोनों युद्ध में इन्द्र और अग्नि के समान शोभित होकर दृष्टिगोचर हुए २४ रुधिर से लिप्त और द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण शायकों से संयुक्त दोनों कृष्णवर्ण ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि कर्णिकार के वृक्षों से युक्त दो पर्वत होते हैं २५ द्रोणाचार्यरूप ग्राहरखनेवाली शक्तिरूप मार से दुःखवाली लोहे के बाणरूप नौकारूपी मगरवाली क्षत्रियरूपी जल से भरी ह्रद से निकलीहुई २६ कवच और प्रत्यञ्चा के शब्द से शब्दायमान गदा खड्गरूप बिजली रखनेवाले द्रोणाचार्य के अस्त्ररूप बादलों से युक्त दोनों ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि अँधेरे में से निकलेहुए सूर्य और चन्द्रमा २७ मानों वर्षा ऋतु में जल से पूर्ण बड़े ग्राहों से व्याकुल उन नदियों को जिनका छठवां सिन्धु है अपने भुजबल से पारहुए २८ सब जीवधारियों ने द्रोणाचार्य के अस्त्रबल के आश्चर्य से उन यशकरके लोक में प्रसिद्ध बड़े धनुषधारी दोनों कृष्ण और अर्जुन को इस प्रकार से माना २९ मारने की इच्छा से सम्मुख वर्तमान हुए जयद्रथ को देखते हुए वह दोनों नियत हुए जैसे कि चढ़ाई में रुरुनाम मृग के अभिलाषी दो व्याघ्र होते हैं ३० उसी प्रकार इन दोनों के मुख का वर्ण था हे महाराज! आपके शूरवीरों ने जयद्रथ को मृतक हुआ माना ३१ लालनेत्र महाबाहु युद्ध में प्रवृत्त श्रीकृष्ण और अर्जुन उस सिन्धु के राजा को सम्मुख देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर वारंवार गर्जे ३२ उस समय बागडोर हाथ में रखनेवाले श्रीकृष्णजी का और उस धनुषधारी अर्जुन के शरीर का प्रकाश उस प्रकार का हुआ जैसे कि सूर्य और अग्नि का होता है ३३ द्रोणाचार्य की सेना से मुक्त उन दोनों की प्रसन्नता जयद्रथ को सम्मुख देखकर ऐसी उत्पन्न हुई जैसे कि मांस को देखकर दो बाज पक्षियों की होती है ३४ फिर वह दोनों सम्मुख वर्तमान जयद्रथ को देखकर क्रोधरूप होकर अकस्मात् ऐसे दौड़े जैसे कि मांस को देखकर दो बाज दौड़ते हैं ३५ उल्लङ्घनकरके पहुँचनेवाले अर्जुन और केशवजी को देखकर आपका पुत्र राजा सिन्धु की

रक्षा के निमित्त चला ३६ हे प्रभो, धृतराष्ट्र ! इसके अनन्तर घोड़ों के संस्कार का जाननेवाला राजा दुर्योधन जिसके शरीर पर द्रोणाचार्य ने कवच बाँधा था एकही रथ से युद्धभूमि में गया ३७ अर्थात् आपका बेटा बड़ेधनुषधारी श्रीकृष्ण और अर्जुन को उल्लङ्घन करके पुण्डरीकाक्ष वासुदेवजी के आगे गया ३८ इसके पीछे अर्जुन को आपके बेटे के उल्लङ्घन करनेपर सब सेना में बड़े आनन्द के समान बाजे बजे ३९ वहांपर दोनों कृष्ण के आगे नियत दुर्योधन को देखकर शङ्खों के शब्दों से संयुक्त सिंहनादें जारी हुईं ४० हे प्रभो ! अग्नि के समान जो शूरवीर राजा सिन्धु के रक्षक थे वह आपके पुत्र को युद्ध में देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुए ४१ तब श्रीकृष्णजी पीछे चलनेवालों समेत उल्लङ्घन करनेवाले दुर्योधन को देखकर समय के अनुसार यह वचन अर्जुन से बोले ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥

एकसौदो का अध्याय ॥

वासुदेवजी बोले कि, हे अर्जुन ! इस उल्लङ्घन करनेवाले दुर्योधन को देखो मैं इसको अत्यन्त अपूर्व मानता हूं इसके समान कोई रथी नहीं है १ यह धृतराष्ट्र का बेटा बड़ा पराक्रमी दूर पहुँचनेवाला धनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्मद दृढ़ अस्त्रवाला अपूर्व युद्ध करनेवाला २ बड़े सुखपूर्वक पोषण कियाहुआ महारथियों से प्रतिष्ठित सदैव कर्म करता है हे अर्जुन ! वह सदैव बान्धवों से शत्रुता करता है ३ हे निष्पाप ! मैं समय आने पर तेरा युद्ध उसके साथ में उचित जानता हूं यहां तुम्हारा द्यूत विजय अथवा पराजय के लिये जारी हुआ ४ हे अर्जुन ! बहुत दिनों के रोकेहुए क्रोधरूप विष को इसपर छोड़ यह महारथी पाण्डवों के अनर्थों का मूल है ५ वही अब आकर तेरे बाणों के सम्मुख वर्तमान हुआ है अपनी सफलता को देखो कि किस प्रकार से राज्य का चाहनेवाला राजा युद्ध को पावे अब यह प्रारब्ध से तेरे बाणों के लक्ष्य में वर्तमान हुआ है यह जिस प्रकार से जीवन को त्यागे हे अर्जुन ! उसी प्रकार से काम करो ६ । ७ राज्य के भोगने से मदोन्मत्त होकर इसने कभी दुःख को नहीं पाया हे पुरुषोत्तम ! यह युद्ध में तेरे पराक्रम को नहीं जानता है ८ और हे अर्जुन ! देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनों लोक भी युद्ध में तेरे विजय करने को साहस नहीं करसक्ते हैं फिर अकेला दुर्योधन क्या करेगा ९ यह प्रारब्ध से तेरे रथ के पास

वर्तमान हुआ है हे महाबाहो ! उसको इस प्रकार से मारो जैसे कि इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा था १० हे निष्पाप ! यह तेरे अनर्थ में सदैव उपाय करनेवाला रहा है इसने द्यूत में छल करके धर्मराज को ठगा ११ हे प्रतिष्ठा देनेवाले ! इस पापबुद्धि ने तुम निष्पाप लोगों को सदैव दुःख दिये हैं १२ हे अर्जुन ! युद्ध में उत्तमकर्म को करके विचार को न करके उस नीच सदैव क्रोधयुक्त कामरूप पुरुष को मारो १३ हे पाण्डव ! छल से राज्य हरणकरना वनवास और द्रौपदी के दुःखों को हृदय में धारणकरके पराक्रम करो १४ यह प्रारब्ध से तेरे बाणों के लक्ष्यपर वर्तमान है और प्रारब्धही से अपने कर्म के नाश के अर्थ तेरे आगे उपाय करता है १५ और भाग्य से युद्ध में तेरे साथ लड़ना चाहता है हे अर्जुन ! विना चाहे हुए सब मनोरथ सिद्ध और सफल हैं १६ इस हेतु से इस कुल में महानीच दुर्योधन को युद्ध में ऐसे मारो जैसे कि पूर्व समय में देवासुरों के युद्ध में जम्भनाम असुर को इन्द्र ने मारा था १७ तेरे हाथ से उस दुर्योधन के मरनेपर यह विना स्वामी की सेना सब पृथक् २ होजायगी इस शत्रु का अष्टभृत स्नान हो अर्थात् अन्त हो दुरात्माओं के मूल को काट दे १८ सञ्जय बोले कि यह सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से कहा कि यह मेरा कर्मरूप है दूसरे सब कार्यों का निरादर करके चलो जहां दुर्योधन है १९ जिसने हमारा यह निष्कण्टक राज्य बहुत कालतक भोगा है उसके मस्तक को पराक्रम करके युद्ध में काटूं २० हे केशवजी ! उस दुःख के अयोग्य द्रौपदी के केश खींचने में उसके कष्टों का बदला लेने को समर्थ हूं २१ इस प्रकार वार्तालाप करते प्रसन्नचित्त उस राजा को चाहते दोनों कृष्ण और अर्जुन ने अपने श्वेत उत्तम घोड़ों को युद्ध में हाँका २२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! आप के बेटे ने उन दोनों के सम्मुख जाकर बड़े भय के वर्तमान होने पर भी भय को नहीं किया २३ वहां सब क्षत्रियों ने उसके उस साहस की बड़ी प्रशंसाकरी जो सम्मुख आतेहुए अर्जुन और श्रीकृष्णजी को रोका २४ हे राजन् ! वहां राजा को युद्ध में देखकर आपकी सब सेना के बड़े शब्दहुए २५ मनुष्यों के उस भयकारी शब्द के वर्तमान होनेपर आप के पुत्र ने शत्रु को निरादर और तुच्छ करके रोका २६ आप के धनुषधारी पुत्र से रोकेहुए शत्रु के तपानेवाले अर्जुन ने फिर उसपर क्रोध को प्रकट किया २७ भयकारी सूरत

उन क्रोधयुक्त अर्जुन और वासुदेवजी को देखकर युद्धाभिलाषी हँसतेहुए आप के पुत्र ने अर्जुन को बुलाया २८ । २६ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न श्रीकृष्णजी और पाण्डव अर्जुन ने बड़ाभारी शब्द किया और अपने २ उत्तम शङ्खों को भी बजाया ३० फिर कौरवलोग उन प्रसन्नरूप दोनों को देखकर आपके पुत्र के जीवन में सब प्रकार करके निराशायुक्त हुए ३१ उन सब कौरवों ने बड़े शोक से युक्त होकर आपके पुत्र को अग्नि के मुख में होमाहुआ माना ३२ भय से पीड्यमान आपके सब शूरवीर उस प्रकार से प्रसन्नमन श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर बोले कि राजा मारा राजा मारा ३३ फिर दुर्योधन मनुष्यों के शब्दों को सुनकर बोला तुम अपने भयों को दूर करो मैं इन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन को मृत्यु के निकट भेजूंगा ३४ विजयाभिलाषी राजा दुर्योधन सेना के सब मनुष्यों से यह वचन कहकर अर्जुन को सम्मुखकरके क्रोध से यह वचन बोला ३५ हे अर्जुन ! तुम ने स्वर्ग और पृथ्वीसम्बन्धी जो अस्त्र शस्त्र सीखे उनको मुझे शीघ्र दिखलाओ जो असल पाण्डु से उत्पन्न हुआ है तो अवश्य दिखा ३६ तेरा और केशवजी का जो बल पराक्रम है उसको शीघ्रता से मुझपर करो आज तेरी वीरता को देखेंगे ३७ मेरे नेत्रों के परोक्ष में तेरे किये हुए कर्मों को जो लोग कहाकरते हैं कि बड़े २ गुरुओं की शिक्षाओं से युक्त हैं उनको यहां दिखाओ ॥ ३८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्व्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०२ ॥

एकसौतीन का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, राजा ने अर्जुन से इसप्रकार कहकर मर्मों को उल्लङ्घन कर चलनेवाले बड़े तीक्ष्ण तीन बाणों से अर्जुन को और चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल किया १ और वासुदेवजी को दश बाणों से छाती के मध्य में घायल किया और एक भल्ल से उसके चाबुक को काटकर पृथ्वीपर गिराया २ फिर सावधान अर्जुन ने सुनहरी पुङ्ख तेजधारवाले चौदह बाणों से उसको घायल किया वह अर्जुन के बाण उसके कवच से लगकर टूटपड़े ३ अर्जुन ने उन बाणों की निष्फलता को देखकर फिर चौदह तीक्ष्णबाणों को चलाया वह भी कवचपर लगकर टूटे ४ उन चलायेहुए अट्ठाईस बाणों को निष्फल देखकर शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले श्रीकृष्णजी अर्जुन से यह वचन बोले ५ कि पूर्व

में जो कभी नहीं देखा है उन शिलाओं के समान बाणों के गिरने को निष्फल देखता हूं हे अर्जुन ! तेरे भेजेहुए बाण प्रयोजन को नहीं करते हैं ६ हे भरत-वंशियों में श्रेष्ठ ! गाण्डीव का पराक्रम उसी प्रकार का है और तेरी मुष्टि और हस्तलाघवता भी पूर्व केही समान है ७ अब तेरा और इस तेरे शत्रु का यह पहला समय वर्तमान नहीं है इसका क्या हेतु है उसको मुझसे कहो ८ हे अर्जुन ! दुर्योधन के रथपर तेरे बाणों को निष्फल देखकर मुझको बड़ा आश्चर्य होता है ९ वज्र और बिजली के समान भयकारी शत्रुओं के शरीरों के भेदन करनेवाले तेरे बाण अभीष्ट को नहीं करते हैं हे अर्जुन ! अब उनका क्या तिरस्कार है १० अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी ! द्रोणाचार्य ने यह मति दुर्योधन को दी है कि यह मेरा बनायाहुआ और धारणकराया हुआ कवच अस्त्रों से नहीं टूटनेवाला है ११ हे श्रीकृष्णजी ! इसकवच में तीनोंलोक भी गुप्त हैं इसको केवल अकेले द्रोणाचार्यही जानते हैं और उसी श्रेष्ठ पुरुष से मैंने भी सीखा है १२ हे गोविन्दजी ! युद्ध में आप वज्रधारी इन्द्र के बाणों से भी यह कवच किसी दशा में टूटने के लायक नहीं है १३ हे श्रीकृष्णजी ! तुम जानतेहुए भी मुझको कैसे भुलाते हो हे केशवजी ! तीनोंलोक में जो हुआ है और हो रहा है १४ और जो होगा उस सब को आप जाननेवाले हैं हे मधुसूदनजी ! जैसे आप जानते हो वैसे दूसरा कोई नहीं जानसक्ता है १५ हे श्रीकृष्णजी ! द्रोणाचार्य की दी हुई इस कवचधारणा को शरीरपर शोभित करनेवाला यह दुर्योधन युद्ध में निर्भय के समान नियत वर्तमान है १६ हे माधवजी ! अब जो कर्म यहां करने के योग्य उसको यह नहीं जानता है स्त्री के समान यह दूसरे की धारणकराई हुई इस कवचधारणा को धारण करता है १७ हे जनार्दनजी ! मेरी भुजाओं के और धनुष के पराक्रम को भी देखो मैं इस कवच से रक्षित हुए भी कौरव को विजय करूंगा १८ देवताओं के ईश्वर ने यह प्रकाशित कवच अङ्गिराऋषि को दिया उनसे बृहस्पतिजी ने पाया उन बृहस्पतिजी से इन्द्र ने पाया १९ फिर इन्द्रने यह देवताओं का बनायाहुआ कवच उपदेशपूर्वक मुझको दिया जोकि इसका कवच आप ब्रह्माजी का बनाया हुआ है अब यह कवच मेरे बाणों से घायल होकर इस दुर्बुद्धि की रक्षा नहीं करेगा २० सञ्जय बोले कि स्तुति के योग्य अर्जुन ने इस प्रकार कहकर कवच के काटने

वाले तीक्ष्ण मानव अस्त्र से बाणों को अभिमन्त्रित करके खींचा २१ उसके खींचेहुए और उसके धनुप के मध्यवर्ती उन बाणों को अश्वत्थामा ने सब अस्त्रों के दूर करनेवाले अपने अस्त्र से काटा दूर से ब्रह्मवादी अश्वत्थामा के काटेहुए उन बाणों को २२ देखकर आश्चर्ययुक्त अर्जुन ने केशवजी से वर्णन किया कि हे जनार्दनजी ! यह अस्त्र मुझको दुबारा चलाना योग्य नहीं है २३ क्योंकि दुबारा चलायाहुआ अस्त्र मुझी को मारेगा और मेरी सेना को भी मारेगा हे धृतराष्ट्र ! इसके पीछे दुर्योधन ने दोनों कृष्णार्जुन को ऐसे नौ नौ बाणों से २४ जो कि सर्पों के समान थे युद्ध में घायल किया और फिर भी इन दोनों के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगा २५ बाणों की बड़ी वर्षा से आपके शूरवीर लोग प्रसन्न हुए और बाजों के शब्दों समेत सिंहनाद किये २६ इसके पीछे युद्ध में दोनों होठों को चाटताहुआ अर्जुन बड़ा क्रोधयुक्त हुआ फिर उसके उस अङ्ग को नहीं देखा जोकि धर्म से रक्षित न होय २७ इसकेपीछे मृत्यु के समान अच्छेप्रकार से छोड़ेहुए तीक्ष्णबाणों से उसके घोड़ों को और दोनों आगे पीछेवालों समेत सारथी को शरीरसे रहित किया २८ और पराक्रमी अर्जुनने उसके धनुष हस्तावाप को काटा और रथ को खण्ड २ करना प्रारम्भ किया २९ इसी प्रकार अर्जुन विरथ कियेहुए दुर्योधन को दो तीक्ष्ण बाणों से दोनों हाथों की हथेलियों पर घायल किया ३० फिर बड़े उपायों के ज्ञाता अर्जुन ने बाणों से मांस और नखों के मध्य में घायल किया वह पीड़ा से महाव्याकुल होकर भागने को प्रवृत्तहुआ ३१ अर्जुन के बाणों से पीड्यमान उस दुर्योधन को चाहते बड़े २ धनुषधारी उस राजा को आपत्ति में फँसाहुआ देखकर दौड़े ३२ उन लोगों ने हज़ारों रथों के समूह हाथी घोड़े और क्रोधयुक्त पदातियों समेत आनकर उस अर्जुन को चारों ओर से घेर लिया ३३ इसके पीछे अस्त्रों की बड़ी वर्षाओं समेत मनुष्यों के समूहों से घिरेहुए अर्जुन और गोविन्दजी दिखाई नहीं पड़े और उनका रथभी दिखाई नहीं पड़ा ३४ फिर अर्जुनने अपने अस्त्रों के बल सेउस सब सेनाको मारा वहांपर अङ्गों से रहित सैकड़ों हाथी पृथ्वीपर गिरपड़े ३५ फिर उन मृतक और घायलों ने उस उत्तम रथ को घेरलिया वह रथ चारों ओर से एककोशतक रुकाहुआ नियत हुआ ३६ इसके पीछे वृष्णियों में वीर श्रीकृष्णजी अर्जुन से यह वचन बोले कि धनुप को अत्यन्त टङ्कारकरो और मैं शङ्खको बजाऊंगा ३७ इसके

पीछे अर्जुन नें गाण्डीव धनुष को बड़ेबल से टङ्कारकर बाणों की बड़ी वर्षा और प्रत्यञ्चाके शब्दों से शत्रुओं को मारा ३८ धूलि से भरे पलक पसीनों से अत्यन्त तरबतरमुख पराक्रमी केशवजी ने बड़े शब्द से पाञ्चजन्य शङ्ख को बजाया ३९ तब उस शङ्ख और धनुष के शब्द से पराक्रमी और विना पराक्रमी सब मनुष्य पृथ्वीपर गिरपड़े ४० उन रथियों से रहित होकर रथ ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि वायु से चलायमान बादल होते हैं इसके अनन्तर जयद्रथ के रक्षक लोग पीछे चलनेवालों समेत तेहे में आये ४१ फिर पृथ्वी को कम्पायमान करते जयद्रथ के बड़े धनुषधारी रक्षकों ने अकस्मात् अर्जुन को देखकर शब्द किये ४२ उन महात्माओं ने शङ्खों के शब्दों से संयुक्त भयकारी शब्दों समेत सिंहनादों को प्रकटकिया ४३ आपके शूरवीरों के उठेहुए इस भयकारी शब्द को सुनकर अर्जुन और वासुदेवजी ने अपने २ उत्तम शङ्खों को बजाया ४४ हे राजन् ! उस बड़े शब्द से यह पृथ्वी पर्वत समुद्र द्वीप और पाताल समेत भरगई ४५ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! वह शब्द दशों दिशाओं को व्याप्त करके उस कौरवीय और पाण्डवीय सेना में शब्दों के करनेवाले हुए ४६ वहां आपके रथी और शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने अर्जुन और श्रीकृष्णजी को देखकर बड़े भय से उत्पन्न होनेवाली बड़ी व्याकुलता को पाया ४७ इसके पीछे आपके शूरवीर अत्यन्त क्रोधयुक्त उन महाभाग कवचधारी दोनों कृष्ण और अर्जुन को देखकर सम्मुख गये वह आश्चर्य सा हुआ ॥ ४८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्र्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०३ ॥

एकसौचार का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, आप के शूरवीर वृष्णी अन्धक और कौरवों में श्रेष्ठ श्री कृष्ण और अर्जुन को प्रथम सम्मुख देखकर मारने के इच्छावान् शीघ्रता करने वाले हुए उसी प्रकार अर्जुन ने भी दूसरों को १ हे राजन् ! सुवर्ण से जटित व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुए शब्दायमान अग्निकान्ति के समान बड़े २ रथों से सब दिशाओं को प्रकाशित करते २ सुनहरी पुङ्ख दुःख से देखने के योग्य बाण क्रोधरूप सर्पों के समान बड़े शब्दों को करनेवाले धनुषों समेत ३ वह रथियों में श्रेष्ठ भूरिश्रवा, शल्य, कर्ण, वृषसेन, जयद्रथ, कृपाचार्य, अश्वत्थामा यह सब महारथी सुवर्णमयी चन्द्रमावाले व्याघ्रचर्म की झूलों से संयुक्त घोड़ों के

द्वारा आकाश को स्पर्श करते दशों दिशाओं को प्रकाशों से शोभायमान करनेवाले हुए ४ । ५ उन कवचधारी अत्यन्त क्रोधयुक्त वीरों ने बादलों के समूहों के समान शब्दायमान रथों के साथ तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन की दशों दिशाओं को ढकदिया ६ तब कौलूतदेशीय शीघ्रगामी अपूर्व घोड़े उन महारथियों को सवार करते दशों दिशाओं को प्रकाशित करते अत्यन्त शोभायमान हुए ७ हे राजन् ! आजानेय प्रकारवाले बड़े वेगवान् नाना प्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले पहाड़ी नदीज और सिन्धुदेशीय उत्तम घोड़ों की सवारी से ८ आपके पुत्र को चाहतेहुए उत्तम शूरवीर लोग शीघ्रही अर्जुन के रथके सम्मुख गये ९ और वहां उन पुरुषोत्तमों ने बड़े शङ्खों को लेकर बजाया उनके शब्दों ने समुद्रों समेत पृथ्वी और आकाश को व्याप्त करदिया १० उसी प्रकार सब देवताओं में बड़े श्रेष्ठ वासुदेवजी और अर्जुन ने भी अपने शङ्खों को बजाया ११ अर्जुन ने देवदत्त को केशवजी ने पाञ्चजन्य को बजाया अर्जुन के बजायेहुए देवदत्त शङ्ख के शब्द ने १२ पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओं को व्याप्त करदिया उसी प्रकार वासुदेवजी के बजाये हुए पाञ्चजन्य शङ्ख ने भी १३ सब शब्दों को उल्लङ्घनकर पृथ्वी और आकाश को पूर्ण किया हे महाराज ! भयभीतों के भय के उत्पन्न करनेवाले शूरों की प्रसन्नता के बढ़ानेवाले भयकारी कठोर शब्द के वर्तमान होने व भेरी झर्झर समेत ढोलों के बजने १४ । १५ और बहुत प्रकार से मृदङ्गों के बजने पर दुर्योधन का अभीष्ट चाहनेवाले बुलायेहुए १६ उस शब्द के न सहनेवाले क्रोधयुक्त बड़ेधनुषधारी अपनी सेना से रक्षित नाना देशों के राजा १७ उन क्रोधयुक्त महारथी राजाओं ने बड़े शङ्खों को बजाया जोकि केशवजी और अर्जुन के कर्मपर अपना कर्म करने के अभिलाषी थे १८ हे समर्थ ! आपकी वह सेना शङ्ख से चलायमान होकर व्याकुल हुई जिसके कि रथ हाथी और घोड़े व्याकुलता से पूर्ण थे १९ वह सेना शूरवीरों से घायल शङ्ख से शब्दायमान ऐसे महाव्याकुल हुई जैसे कि परस्पर वायुके टकरों से शब्दायमान बादलों से आकाश शब्दायमान होता है २० हे राजन् ! उस बड़े शब्द ने सब दिशाओं को शब्दायमान करके उस सेना को ऐसे भयभीत किया जैसे कि प्रलयकाल का वायु भयभीत करताहै २१ उसके पीछे दुर्योधन और उन आठों महारथियों ने जयद्रथ की रक्षा के निमित्त अर्जुन को चारोंओर से घेरलिया २२

तदनन्तर अश्वत्थामा ने तिहत्तर बाणों से वासुदेवजी को तीन भल्ल से अर्जुन को और पांच बाणों से ध्वजा समेत घोड़ों को ताड़ित किया २३ श्रीकृष्णजी के घायल होने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने पृषत्क नाम छःसौ बाणों से उन अश्वत्थामाजी को घायल किया २४ फिर पराक्रमी ने दश बाणों से कर्ण को तीन बाणों से वृषसेन को घायलकरके शल्य की मुष्टि को बाण और धनुष समेत काटा २५ फिर शल्य ने दूसरे धनुष को लेकर अर्जुन को घायल किया भूरिश्रवा ने सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धारवाले तीन बाणों से २६ कर्ण ने बत्तीस बाणों से वृषसेन ने सात बाणों से जयद्रथ ने तिहत्तर बाणों से कृपाचार्य ने दश बाणों से २७ शल्य ने दश बाणों से युद्ध में अर्जुन को घायल किया उसके पीछे अश्वत्थामा ने साठि बाणों से अर्जुन को आच्छादित कर दिया २८ वासुदेवजी को बीस बाण से फिर अर्जुन को पांच बाण से घायल किया तब अपनी हस्तलाघवता को दिखाते हँसते हुए श्वेत घोड़े और श्री कृष्णजी को सारथी रखनेवाले नरोत्तम अर्जुन ने २९ उन सब को इस प्रकार से घायल किया कि कर्ण को बारह बाण से घायल करके वृषसेन को तीन बाण से घायल किया और शल्य के धनुष समेत मुष्टि के स्थान को बाण समेत काटा भूरिश्रवा को तीन बाणों से घायल कर शल्य को दश बाणों से घायल किया ३० । ३१ अग्नि की ज्वाला के समानरूप तीक्ष्ण आठ बाणों से अश्वत्थामा को घायल किया कृपाचार्य को पचीस बाण से जयद्रथ को सौ बाणों से ३२ फिर उसने अश्वत्थामा को सत्तर बाणों से घायल किया तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त भूरिश्रवा ने श्रीकृष्णजी के चाबुक को काटा ३३ और अर्जुन को भी तिहत्तर बाणों से घायलकिया इसके पीछे अर्जुन ने सैकड़ों तीक्ष्ण बाणों से उनसब शत्रुओंको ३४ शीघ्रतासे ऐसे हटाया जैसे कि क्रोधयुक्त वायु बड़े २ बादलों को हटाता है ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुरधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०४ ॥

एकसौपांच का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! मेरे पुत्रों की और पाण्डवों की अनेक रूपों की शोभायमान ध्वजाओं को मुझ से वर्णन करो १ सञ्जय बोले कि उन महात्माओं की बहुत से रूपों की ध्वजाओं को सुनो मैं उनको रूप रङ्ग समेत वर्णन

करता हूं २ हे महाराज ! उन उत्तम रथियों के रथोंपर नाना प्रकार की अग्नि के समान प्रकाशित ध्वजा दिखाई दीं ३ वह ध्वजा सुवर्णमयी सुवर्णही के पीड़ और स्वर्णनिर्मित मालाओं से ऐसे अलंकृत थीं जैसे कि सुवर्ण के बड़े पर्वत के बड़े २ स्वर्णमयी शिखर होते हैं ४ अनेक रङ्ग रखनेवाली अत्यन्त शोभायमान बहुत से रूपों की ध्वजायें थीं उन्हों की वह ध्वजा चारों ओर पताकाओं से संयुक्त थीं ५ वह नाना प्रकार की ध्वजा श्वेत पताकाओं से सब ओर को संयुक्त होकर अत्यन्त शोभायमान हुईं उसके पीछे वायु से चलायमान वह पताका ६ युद्धभूमि में प्रकाशित और नृत्य करनेवाली दिखाई पड़ीं हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! इन्द्रवज्र के समान रङ्ग रूप से युक्त कम्पायमान उन पताकाओं ने ७ रथियों के बड़े २ रथों को शोभायमान किया भयकारी ध्वनि से युक्त हनुमान्‌जी का चिह्न रखनेवाली सिंह लांगूलनाम भयकारी अर्जुन की ध्वजा ८ युद्ध में दिखाई पड़ी हे राजन् ! हनुमान्‌जी से युक्त पताकाओं से अलंकृत ९ अर्जुन की उस ध्वजा ने उस सब सेना को भयभीत किया हे भरतवंशिन् ! उसी प्रकार अश्वत्थामा की सिंहलांगूल १० नाम ध्वजा की नोक को हमने देखा वह ध्वजा भी बाल सूर्य के समान प्रकाशित सुनहरी वायु से कम्पायमान इन्द्र की ध्वजा के समान प्रकाशित थी ११ और कौरवीय राजाओं का प्रसन्न करनेवाला अश्वत्थामा का ऊंचा चिह्न था और कर्ण की स्वर्णमयी ध्वजा हाथी की कक्षा का चिह्न रखनेवाली थीं १२ हे महाराज ! युद्ध में वह ध्वजा आकाश को पूर्ण करती हुई दिखाई पड़ी और कर्ण की ध्वजा पर माला रखनेवाली स्वर्णमयी पताका १३ वायु से चलायमान रथ के ऊपर नाचती हुई सी दिखाई पड़ी फिर पाण्डवों के आचार्य तपस्वी ब्राह्मण १४ गौतम कृपाचार्य की अच्छी अलंकृत ध्वजा गोवृष का चिह्न रखनेवाली थी हे राजन् ! वह ज्ञानी उस ध्वजा से ऐसा शोभायमान हुआ १५ जैसे कि त्रिपुर के मारनेवाले शिवजी का अत्यन्त प्रकाशित रथ नन्दीगण से शोभायमान होता है और वृषसेन का सुनहरी मोर मणि और रत्नों से जटित १६ सेना के आगे शोभा करता और बोलता हुआ सा नियत हुआ उस महात्मा का रथ उस मोर से ऐसा प्रकाशमान हुआ १७ हे महाराज ! जैसे कि अत्यन्ततम प्रकाशमान मोर से स्वामिकार्तिकजी का रथ शोभित होता है मद्रदेश के राजा शल्य की

ध्वजा के ऊपर प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित १८ स्वर्णमयी अनुपम मङ्गलरूप सीता को देखा हे श्रेष्ठ ! वह सीता उसके रथपर नियत होकर ऐसी प्रकाशमान हुई १९ जैसे कि सब बीजों से संयुक्त शोभा से भरीहुई लक्ष्मी समेत सीता प्रकाशित होती है सिन्धु के राजा की ध्वजापर वराह प्रकाशमान था २० और अरुण सूर्य के समान प्रकाशित होकर सुनहरी जालों से अलंकृत जयद्रथ की ध्वजा थी वह जयद्रथ उस ध्वजा से ऐसा शोभायमान हुआ २१ जैसे कि पूर्व समय में देवासुरों के युद्ध में पूषा शोभायमान हुआ था और यज्ञ के अभ्यासी बुद्धिमान् सोमदत्त की ध्वजा में यज्ञस्तम्भ का चिह्न था २२ वह ध्वजा सूर्यके समान प्रकाशमान होकर जिसमें चन्द्रमारूप दिखाई देता है हे राजन् ! वह सोमदत्त का स्वर्णमयी यज्ञस्तम्भ ऐसा प्रकाशमान था २३ जैसे कि राज-सूय यज्ञ में बहुत ऊंचा यूप होता है हे महाराज ! उस शल्य की ध्वजा में बड़ा हाथी भी प्रकाशमान था २४ वह ध्वजा स्वर्ण से जटित अङ्गवाले मोरों से शोभायमान थी हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! उस ध्वजा ने आपकी सेना को ऐसे शोभायुक्त किया २५ जैसे कि देवराज इन्द्र की सेना को बड़ा श्वेत ऐरावत हाथी शोभित करता है आपके पुत्र राजा की ध्वजा का हाथी मणियों से जटित सुवर्ण से खचित २६ सैकड़ों क्षुद्रघण्टिकाओं से शब्दायमान अपूर्व उत्तम रथपर शोभायमान था वह ध्वजा भी अत्यन्त शोभायमानहुई तब कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्योधन उस अपनी ध्वजाओं समेत युद्ध करनेलगा २७ आपकी सेना की उन उत्तम ऊंची प्रलयकाल के सूर्य के समान प्रकाशित नव ध्वजाओं ने आपकी सेना को अत्यन्त प्रकाशित किया और हनुमान्जी से युक्त दशवीं ध्वजा एक अर्जुन की थी २८। २९ उसी ध्वजा से अर्जुन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि अग्नि से हिमालय पर्वत शोभित होता है उसके पीछे शत्रु-सन्तापी महारथियों ने अपूर्व उज्ज्वल बड़े बड़े ३० धनुषों को अर्जुन के लिये हाथों में लिया हे राजन् ! उसी प्रकार आपकी दुर्मतिता में दिव्यकर्मा शत्रु-हन्ता अर्जुन ने गाण्डीवधनुष को लिया फिर आपकेही अपराध से अनेक राजा मारेगये ३१। ३२ और जिन राजाओं को हाथी घोड़े और रथों समेत नानादेशों से बुलवाया था उन परस्पर गर्जनेवाले लोगों की बड़ी चढ़ाई हुई ३३ दुर्योधनादिक धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ पाण्डवों में श्रेष्ठ अर्जुन का

बड़ा कठिन युद्ध हुआ श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले अर्जुन ने वहां बड़ा अपूर्व कर्म किया ३४ कि जो अकेलाही निर्भय के समान बहुत से बड़े २ शूरवीरों के सम्मुख युद्ध करनेवाला हुआ वह महाबाहु गाण्डीव धनुष को चलायमान करता शोभायमान हुआ ३५ और जयद्रथ के मारने का अभिलाषीहुआ शत्रु के तपानेवाले नरोत्तम अर्जुन ने वहांपर छोड़ेहुए हज़ारों बाणों से ३६ आपके शूरवीरों को दृष्टि से अलक्ष्य करदिया इसके पीछे उन सब नरोत्तम महारथियों ने भी ३७ युद्ध में बाणों के समूहों से अर्जुन को चारों ओर से ढकदिया उन नरोत्तमों से कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन के ढकजाने पर उनकी सेनाओं के बड़े शब्द प्रकट हुए॥ ३८॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १०५॥

एकसौछः का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! जयद्रथ से अर्जुन के सम्मुख होने पर द्रोणाचार्य के सम्मुख वर्तमान पाञ्चालों ने कौरवों के साथ क्या किया १ सञ्जय बोले हे महाराज! तीसरे पहर को रोमहर्षण करनेवाले युद्ध में पाञ्चाल और कौरवों के द्यूतरूप द्रोणाचार्यजी वर्तमान हुए २ हे श्रेष्ठ! अत्यन्तप्रसन्नमन द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी और गर्जतेहुए पाञ्चालों ने बाणों की वर्षा को छोड़ा ३ इसके पीछे उन पाञ्चाल और कौरवों का युद्ध अत्यन्त कठिन अपूर्व भयकारी देवासुरों के युद्ध के समान हुआ ४ उस सेना के छिन्न भिन्न करने के अभिलाषी पाण्डवों समेत पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य के रथ को पाकर बड़े अस्त्रों को दिखलाया ५ रथ में नियत रथी सामान्य तीव्रता से युक्त होकर पृथ्वी को कम्पित करतेहुए द्रोणाचार्य के रथ के समीप वर्तमान हुए ६ केकयदेशियों का महारथी बृहच्छत्र इन्द्रवज्र के समान तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करताहुआ उसके सम्मुख गया ७ फिर बड़ा यशस्वी क्षेमधूर्त हज़ारों तीक्ष्ण बाणों को छोड़ता शीघ्रही उसके सम्मुख गया ८ बड़े बल से उदय होनेवाले चन्देरीदेशियों में श्रेष्ठ धृष्टकेतु भी ऐसे शीघ्रता से सम्मुख गया जैसे कि देवेन्द्र शम्बर दैत्य के पास गया था ९ अत्यन्त खुलाहुआ मुख काल के समान अकस्मात् आतेहुए उस धृष्टकेतु के सम्मुख बड़ा धनुषधारी शूरधन्वा शीघ्रता से गया १० इसके पीछे पराक्रमी द्रोणाचार्य ने विजयाभिलाषी सम्मुखता में नियत हुए महाराज युधिष्ठिर को सेना समेत रोका ११ हे प्रभो! आपका पुत्र पराक्रमी विकर्ण उस युद्ध-

कुशल बड़े पराक्रमी आतेहुए नकुल के सम्मुख हुआ १२ शत्रुविजयी दुर्मुख ने तीक्ष्ण चलनेवाले हज़ारों बाणों से उसी प्रकार आते हुए सहदेव को ढक दिया १३ अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले बाणों से वारंवार कम्पायमान करते व्याघ्रदत्त ने नरोत्तम सात्यकीको रोका १४ सोमदत्त ने उत्तम बाणों को छोड़ते अत्यन्त क्रोधयुक्त नरोत्तम उत्तम रथी द्रौपदी के पुत्रों को रोका १५ तब भयकारीरूप बड़े उत्कट महारथी आर्षशृङ्गी ने उस क्रोधयुक्त आतेहुए भीमसेन को रोका १६ हे राजन् ! युद्धभूमि में उन दोनों नर और राक्षस का ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसा कि पूर्वसमय में राम और रावण का हुआ था १७ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे भरतवंशियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ने झुकी गांठवाले नब्बेबाणों से द्रोणाचार्य को सब मर्मोंपर घायल किया १८ तब यशस्वी युधिष्ठिर से घायल क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने पचीस बाणों से उसको छातीपर घायल करके १९ सब धनुषधारियों के देखते उसको घोड़े ध्वजा और सारथी समेत बीसबाणों से बेधा २० फिर हस्तलाघवता दिखलाते धर्मात्मा पाण्डव ने द्रोणाचार्य के उन छोड़ेहुए बाणों को अपने बाणों की वर्षा से हटाया २१ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने युद्धभूमि के बीच उस धर्मात्मा धर्मराज के धनुष को काटा २२ और बड़ी शीघ्रता से हज़ारों बाणों के द्वारा इस टूटेधनुषवाले राजा युधिष्ठिर को सब ओर से आच्छादित किया २३ सब जीवधारियों ने भारद्वाज द्रोणाचार्य के बाणों से ढकेहुए राजा युधिष्ठिर को देखकर मृतकरूप माना २४ हे महाराज ! इसीप्रकार बहुत से मनुष्यों ने इस मुख फेरनेवाले राजा को देखकर माना कि यह राजा इस महात्मा ब्राह्मण के हाथ से मारागया २५ फिर बड़ी आपत्ति में पड़ेहुए उस धर्मराज युधिष्ठिर ने युद्ध में द्रोणाचार्य के काटेहुए उस धनुष को छोड़कर २६ दूसरे प्रकाशमान अत्यन्त दिव्य तीव्र धनुष को लेकर उस वीर ने द्रोणाचार्य के उन चलायमान हज़ारों बाणों को २७ युद्ध में काटा यह आश्चर्य सा हुआ और क्रोध से रक्तनेत्रवाले युधिष्ठिर ने उन बाणों को काटकर २८ युद्धमें पहाड़ोंको भी विदीर्ण करनेवाली सुवर्णदण्ड युक्त आठघण्टे रखनेवाली महाभयकारी भयानक शक्ति को हाथ में लिया २९ हे भरतवंशिन् ! वह पराक्रमी प्रसन्नमुख उस शक्ति को फेंककर सब जीवधारियोंको भयभीत करताहुआ बड़े बल से गर्जा ३० युद्ध में धर्मराज की उठाई शक्ति को देखकर सब जीवधारी

अकस्मात् बोले कि द्रोणाचार्य का कल्याण हो ३१ राजा की भुजा से छोड़ी हुई कांचली से निकलेहुए सर्प की समान वह शक्ति आकाश दिशा विदिशाओं को प्रकाशमान करती प्रकाशितमुखवाले सर्प की समान द्रोणाचार्य के पास पहुँची ३२ हे राजन् ! इसके पीछे अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने उस अकस्मात् गिरतीहुई शक्ति को देखकर ब्रह्मास्त्र को प्रकटकिया वह अस्त्र उस भयकारी दर्शनवाली शक्ति को अत्यन्त भस्मकरके ३३। ३४ शीघ्रतासे यशस्वी धर्मराज के रथपर गया हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! इसके पीछे बड़ेज्ञानी राजा युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य के चलायेहुए उस अस्त्र को ३५ ब्रह्मअस्त्र सेही शान्त किया फिर युद्ध में द्रोणाचार्य को पांच बाणोंसे घायलकरके ३६ क्षुरप्रनाम अत्यन्त तीक्ष्ण बाण से उनके बड़े धनुष को काटा तब क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य ने उस टूटेहुए धनुष को डालकर ३७ युधिष्ठिर के ऊपर अकस्मात् गदा को फेंका युधिष्ठिर ने उस अकस्मात् गिरतीहुई गदा को देखकर ३८ बड़े क्रोधयुक्त होकर गदा कोही लिया और लेकर फेंका हे शत्रुसन्तापिन् ! वह अकस्मात् छोड़ीहुई दोनों की दोनों गदा परस्पर मिलकर ३९ घिसावट से अग्नियों को छोड़कर पृथ्वीपर गिरपड़ीं हे श्रेष्ठ ! उसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने धर्मराज के चारों घोड़ों को बड़े तीव्र चार उत्तम बाणों से मारा ४० और इन्द्र की ध्वजा के समान धनुष को एक भल्ल से काटा ४१ एक बाणसे ध्वजा को काटकर तीन बाणों से युधिष्ठिर को पीड्यमान किया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! फिर ऊपर को भुजा रखनेवाला अशस्त्र राजा युधिष्ठिर मृतक घोड़ेवाले रथ से शीघ्र ही कूदकर खड़ाहुआ उसको विरथ और अधिकतर निरशस्त्र देखकर ४२। ४३ द्रोणाचार्य ने शत्रुओं को और सब सेनाओं को अत्यन्त मोहित किया और इसके पीछे फिर तीव्रव्रती द्रोणाचार्य तीक्ष्ण बाणों के समूहों को छोड़ते ४४ राजा के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि गर्जताहुआ सिंह मृगके सम्मुख जाता है शत्रुओं के मारनेवाले द्रोणाचार्य से पराजित हुए उस युधिष्ठिर को देखकर ४५ अकस्मात् पाण्डवों के हाय २ शब्द प्रकट हुए हे श्रेष्ठ ! फिर पाण्डवोंकी ओरसे ऐसा शब्द भी हुआ कि भारद्वाज के हाथ से राजा मारागया ४६ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे कुन्ती का पुत्र राजा युधिष्ठिर शीघ्रही सहदेव के रथपर चढ़कर शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा दूर हटगया ॥ ४७ ॥

एकसौसात का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! क्षेमधूर्त्ती ने उस दृढ़ पराक्रमी केकयदेशीय आते हुए बृहच्छत्र को बाणों से छातीपर घायल किया १ और द्रोणाचार्य की सेना को छिन्न भिन्न करने के अभिलाषी शीघ्रता करनेवाले राजा बृहच्छत्र ने उसको नब्बे बाणों से व्यथित किया २ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्ती ने महात्मा बृहच्छत्र के धनुष को तीक्ष्ण पीतवर्ण के भल्ल से काटा ३ फिर सब धनुषधारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ इस बृहच्छत्र को जिसका कि धनुष टूटगया था गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से शीघ्रही युद्ध में घायलकिया ४ फिर हँसतेहुए बृहच्छत्र ने दूसरे धनुष को लेकर महारथी क्षेमधूर्त्ती को घोड़े सारथी और रथ से रहित करदिया ५ इसके पीछे तीक्ष्णधार पीतरङ्गवाले दूसरे भल्ल से प्रकाशमान कुण्डल रखनेवाले राजा के शिर को शरीर से अलग किया ६ वह घूंघुरवाले बालों वाला अकस्मात् कटाहुआ उसका कुण्डल समेत शिर पृथ्वी को पाकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश से गिराहुआ तारा होता है ७ फिर प्रसन्नचित्त महारथी बृहच्छत्र युद्ध में उसको मारकर अर्जुन के कारण से आपकी सेनापर अकस्मात् दौड़ा ८ हे भरतवंशिन्! पराक्रमी बड़े धनुषधारी वीरधन्वा ने द्रोणाचार्य के निमित्त इस प्रकार जातेहुए धृष्टकेतु को रोका ९ बाणरूप डाढ़ रखनेवाले वेगवान् उन दोनों ने परस्पर सम्मुख होकर हजारों बाणों से एक ने दूसरे को घायल किया १० वह दोनों नरोत्तम परस्पर में ऐसे युद्ध करनेवाले हुए जैसे कि महावन में बड़े मतवाले गजराज लड़ते हैं ११ अर्थात् वह दोनों बड़े पराक्रमी परस्पर मारने की अभिलाषा से ऐसे युद्ध करते हुए जैसे कि क्रोधयुक्त दो शार्दूल पहाड़ की कन्दरा को पाकर लड़ते हैं १२ हे राजन्! वह कठिन युद्ध देखने के योग्य सिद्ध चारणों के समूहों के आश्चर्यों से अपूर्वही देखने के योग्य हुआ १३ इसके पीछे क्रोधयुक्त हँसते हुए वीरधन्वा ने धृष्टकेतु के धनुष को भल्ल से दो खण्ड करदिया १४ महारथी राजा चन्देरी ने उस टूटे धनुष को छोड़कर सुनहरी दण्डवाली लोहे की बड़ी शक्ति को हाथ में लिया १५ हे राजन्! फिर उस सावधान ने उस बड़ी पराक्रमवाली शक्ति को दोनों हाथों से अकस्मात् वीरधन्वा के रथपर फेंका १६ तब उस वीरों की मारनेवाली शक्ति से

अत्यन्त घायल और टूटे हृदयवाला वीरधन्वा शीघ्रही रथ से पृथ्वीपर गिरा १७ हे समर्थ ! त्रिगर्तदेशियों के उस महारथी वीर के मरनेपर आपकी सेना पाण्डवों की चढ़ाई से चारों ओर को छिन्न भिन्न हुई १८ उसके पीछे दुर्मुख ने साठ बाणों को सहदेवपर छोड़ा और युद्ध में पाण्डव सहदेव को घुड़कताहुआ बड़ेशब्द से गर्जा १९ इसके पीछे हँसतेहुए क्रोधयुक्त भाई सहदेव ने तीक्ष्ण बाणों से उस आतेहुए भाई दुर्मुख को घायल किया २० फिर दुर्मुख ने युद्ध में उस वेगवान् महाबली सहदेव को देखकर नवबाणों से घायल किया २१ महाबली सहदेव ने भल्ल से दुर्मुख की ध्वजा को काटकर तीक्ष्णधारवाले चारबाणों से चारों घोड़ों को मारा २२ फिर पीतरङ्ग दूसरे तीक्ष्ण भल्ल से सारथी के शरीर से प्रकाशित कुण्डल रखनेवाले शिर को काटा २३ इसके पीछे सहदेव ने क्षुरप्रनाम तीक्ष्णबाण से युद्ध में उसके बड़े धनुष को काटकर पांचबाणों से उस को भी घायल किया २४ हे भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र ! तब विमन दुःखी दुर्मुख उस मृतक घोड़ेवाले रथ को त्यागकरके निरमित्र के रथपर सवार हुआ २५ इसके पीछे शत्रुओं के सन्तापी क्रोधयुक्त सहदेव ने बड़े युद्ध में सेना के भीतर भल्ल से निरमित्र को घायल किया २६ वह त्रिगर्त के राजा का पुत्र निरमित्र अपनी सेना को दुःखयुक्त करता रथ के बैठने के स्थान से पृथ्वीपर गिरपड़ा २७ महाबाहु सहदेव उसको मारकर ऐसे अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि दशरथात्मज श्रीरामचन्द्रजी बड़े पराक्रमी खर राक्षस को मारकर शोभितहुए थे २८ हे राजन् ! उस महारथी राजकुमार निरमित्र को मृतक देखकर त्रिगर्तदेशियों में बड़ा हाहाकार हुआ २९ फिर नकुल ने आपके पुत्र बड़े नेत्रवाले विकर्ण को भी एक मुहूर्तमात्र में विजय किया वह भी सब को आश्चर्य सा हुआ ३० तब व्याघ्रदत्त ने सेना के मध्य में गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से सात्यकी को घोड़े सारथी और ध्वजा समेत दृष्टि से गुप्त करदिया ३१ शूर सात्यकी ने हस्तलाघवता के समान उन बाणों को रोककर अपने बाणों से व्याघ्रदत्त को घोड़े ध्वजा और सारथी समेत रथ से गिराया ३२ हे प्रभो ! उस मगध के राजकुमार के मरने पर युद्ध में कुशल मगधदेशीय उस सात्यकी के सम्मुख गये ३३ बाणों को छोड़ते हजारों तोमर भिन्दिपाल प्रास मुद्गर और मूशलों को छोड़ते हुए शूरों ने युद्ध में दुर्मद यादव सात्यकी से युद्धकिया हँसतेहुए

पुरुषोत्तम पराक्रमी युद्धदुर्मद सात्यकी ने उन सब को ३४ । ३५ बड़ी सुगमता से विजय किया हे समर्थ! मरने से बाकी बचेहुए चारोंओर से भागते हुए मगधदेशियों को देखकर ३६ सात्यकी के बाणों से पीड्यमान आपकी सेना छिन्न भिन्न होगई मधुदेशियों में श्रेष्ठ सात्यकी युद्ध में आपकी सेना को मारकर ३७ बड़ा यशस्वी उत्तम धनुष को चलायमान करता अत्यन्त शोभायमान हुआ हे राजन्! महात्मा सात्यकी के हाथ से छिन्न भिन्न ३८ उस लम्बी भुजावाले से भयभीत वह सेना युद्ध के निमित्त सम्मुखता में वर्तमान नहीं रही इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य अकस्मात् दोनों नेत्रों को उघाड़कर आपही उस सत्यकर्मी सात्यकी के सम्मुख गये ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तोपरिशततमोऽध्यायः ॥ १०७ ॥

एकसौआठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, बड़े यशवान् सोमदत्त ने बड़े धनुषधारी द्रौपदी के पुत्रों को पांच २ बाणों से घायल करके फिर प्रत्येक को सात २ बाणों से छेदा १ हे समर्थ! उस भयकारी सोमदत्त से अकस्मात् अत्यन्त पीड्यमान और अचेत द्रौपदी के पुत्रों ने युद्ध में करने के योग्य किसी कर्म को भी नहीं जाना २ शत्रु का पराजय करनेवाला नकुल का पुत्र शतानीक नरोत्तम सोमदत्त को दो बाणों से घायल करके बड़ी प्रसन्नता से गर्जा ३ इसी प्रकार युद्ध में कुशल अन्यलोगों ने भी युद्ध में तीन २ बाणों से शीघ्रही उस क्रोधयुक्त सोमदत्त को घायल किया ४ हे महाराज! उस बड़े यशस्वी सोमदत्त ने उनके ऊपर पांच बाणों को फेंका और प्रत्येक को एक २ बाण से हृदय पर घायल किया ५ इसके पीछे उस महात्मा के बाणों से बहुत घायल उन पांचों भाइयों ने युद्ध में उसको घेरकर शायकों से अत्यन्त घायल किया ६ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन के पुत्र ने तीक्ष्णधारवाले चार बाणों से उसके घोड़ों को यमलोक में पहुँचाया ७ भीमसेन का पुत्र उस महात्मा सोमदत्त के धनुष को काटकर बड़े वेगवाले शब्द को गर्जा और तीक्ष्ण बाणों से घायल किया ८ युधिष्ठिर के पुत्र ने उसकी ध्वजा को काटकर पृथ्वीपर गिराया फिर नकुल के पुत्र ने सारथी को रथके बैठने के स्थान से गिराया ९ और सहदेव के पुत्र ने अपने भाइयों से मुख फेरनेवाला जानकर क्षुरप्रनाम बाण से महात्मा के शिर को काटा १० उसका शिर सुवर्ण से अलंकृत

बालार्क के समान प्रकाशित युद्धभूमि को सुशोभित करता पृथ्वीपर गिरपड़ा ११ हे राजन्! महात्मा सोमदत्त के कटेहुए उस शिर को देखकर आपकी सेना के लोग भयभीत होकर अनेक प्रकार से भागे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अलम्बुष महाबली भीमसेन से युद्ध में ऐसे युद्ध करनेवाला हुआ जैसे कि रावण का पुत्र मेघनाद लक्ष्मणजी के साथ करनेवाला हुआ था १२। १३ उन दोनों नर और राक्षस को युद्ध में कठिन युद्ध करनेवाला देखकर सब जीवों को आश्चर्यपूर्वक बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई १४ हे राजन्! इसके पीछे हँसतेहुए भीमसेन ने तीक्ष्णधारवाले नवबाणोंसे उस क्रोधयुक्त राक्षसाधिप अलम्बुष राक्षसको घायल किया १५ इसके अनन्तर युद्ध में घायल हुआ वह राक्षस भयकारी शब्द को करके भीमसेन के सम्मुख दौड़ा और जो उसके आगे पीछे रहनेवाले थे वे भी दौड़े १६ उस राक्षस ने युद्ध में गुप्तग्रन्थीवाले पांचबाणोंसे भीमसेन को घायल करके शीघ्रही भीमसेन के तीस रथों को मारा १७ फिर चारसौ शूरवीरों को मारकर बाण से भीमसेन को घायलकिया इस प्रकार उस राक्षस के हाथ से अत्यन्त घायल वह महाबली भीमसेन १८ मूर्च्छा से युक्त होकर रथ के बैठने के स्थानपर बैठगया इसके पीछे महाक्रोधभरे वायुपुत्र भीमसेन ने १९ बोझे के साधने वाले भयकारी उत्तम धनुष को खैंचकर तीक्ष्णबाणों से अलम्बुष को सब ओर से पीड्यमान किया २० हे राजन्! नीले बादलों के समान वह राक्षस बहुत बाणों से घायल होकर फूलेहुए किंशुक के समान शोभायमान हुआ २१ युद्ध में भीमसेन के धनुष से गिरेहुए बाणों से घायलहुआ राक्षस महात्मा पाण्डव के हाथ से भाई के मरने को स्मरण करता २२ भयानकरूप बनाकर भीमसेन से बोला हे कुन्ती के पुत्र! अब युद्ध में नियत होकर मेरे पराक्रम को देख २३ हे दुर्बुद्धे! वह युद्ध मेरे पीछे जारी हुआ था जिसमें राक्षसोंमें श्रेष्ठ बड़ा पराक्रमी बकनाम मेरा भाई तेरे हाथ से मारागया २४ इसके पीछे अन्तर्धान होजानेवाले राक्षस ने बाणों की बड़ी वर्षा से उस भीमसेन को अत्यन्त घायल किया २५ तब राक्षस के गुप्तहोनेपर भीमसेन ने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से आकाश को पूर्ण करदिया २६ भीमसेन के हाथ से घायल वह नीच राक्षस क्षणभरही में रथपर चढ़कर पृथ्वी पर आया और अकस्मात् आकाश को गया २७ बादल के समान शब्द करते हुए उस राक्षस ने छोटे और बड़े नाना प्रकार के अनेक रूपों को धारण किया

अर्थात् कभी छोटा कभी लम्बा और कभी मोटा होजाता था २८ इसी प्रकार नाना प्रकार के वचनों को भी चारोंओर से बोला और आकाश से बाणों की हज़ारों धारा गिरीं २९ शक्ति, क्षणिप, प्रास, शूल, पट्टिश, तोमर, शतघ्नी, परिघा, भिन्दिपाल, फरसा ३० शिलाखड्ग, अगुड़, दुधारा खड्ग, वज्र यह सब आकाश से गिरे राक्षस की छोड़ीहुई अत्यन्त भयकारी शस्त्रों की वर्षा ने ३१ युद्ध में जाकर पाण्डव की सेना के मनुष्यों को मारा उस युद्ध में पाण्डवीय सेनाओं के हाथी नाश हुए ३२ हे राजन्! इसी प्रकार अनेक घोड़े और बहुत से पत्तिलोग भी नाश को प्राप्तहुए और उसके बाणों से घायल रथसवार रथों से गिरपड़े ३३ रुधिररूपी जल रथरूपी भँवर छत्ररूप हंस रखनेवाली हाथीरूप ग्राह और भुजारूप सर्पों से व्याकुल ३४ राक्षसों के समूहों से व्याकुल चन्देरी सृञ्जय और पाञ्चालदेशियों की बहुधा बहानेवाली नदी जारी होगई ३५ तब अत्यन्त व्याकुल पाण्डवों ने उस प्रकार निर्भय के समान घूमनेवाले राक्षस को और उसके पराक्रम को देखा ३६ फिर आपकी सेना में बड़ी प्रसन्नता हुई और बाजों के बड़े भारी भयकारी रोमहर्षण करनेवाले शब्द जारी हुए ३७ पाण्डव ने आपके भयकारी शब्दों को सुनकर ऐसे नहीं सहा जैसे कि हथेली से किये हुए शब्द को सर्प नहीं सहसक्ता ३८ इसके पीछे क्रोध से रक्तनेत्र ज्वलित अग्नि के समान वायुपुत्र भीमसेन ने आपही त्वष्टा देवता के समान त्वाष्ट्र अस्त्र को धनुषपर चढ़ाया ३९ उस अस्त्र से हज़ारों बाण चारोंओर को प्रकटहुए उन बाणों से आपकी सेना के अत्यन्त भागने पर ४० युद्ध में भीमसेन से चलायेहुए उस अस्त्र ने राक्षस की बड़ी माया को नाशकरके पीड्यमान किया ४१ भीमसेन के हाथ से बहुत घायल हुआ वह राक्षस युद्ध में भीमसेन को त्यागकरके द्रोणाचार्य की सेना में चलागया ४२ हे राजन्! महात्मा भीमसेन के हाथ से उस राक्षसाधिप के विजय होनेपर पाण्डवों ने अपने सिंहनादों से सब दिशाओं को शब्दायमान किया ४३ उन अत्यन्त प्रसन्न मनवालों ने वायु के पुत्र महाबली भीमसेन की ऐसी प्रशंसा करी जैसे कि मरुद्गण नाम देवता ने युद्ध में प्रह्लाद को विजयकरके इन्द्र की स्तुति करी थी ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०८ ॥

एकसौनव का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इस प्रकार युद्ध में निर्भयके समान घूमनेवाले अलम्बुष के सम्मुख घटोत्कच गया और शीघ्रही तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसको घायल किया १ नाना प्रकार की माया को प्रकट करनेवाले उन दोनों राक्षसोत्तमों का युद्ध ऐसा भयकारी हुआ जैसा कि इन्द्र और शम्बर दैत्य का हुआ था २ अत्यन्त क्रोधयुक्त अलम्बुष ने घटोत्कच को घायल किया फिर उन दोनों प्रबल राक्षसों का ऐसा युद्ध हुआ ३ जैसे कि पूर्व समय में रामचन्द्रजी और रावण का युद्ध हुआ था हे प्रभो ! फिर घटोत्कच ने बीस नाराचों से छाती के मध्य में ४ अलम्बुष को घायल करके वारंवार सिंहनाद किया हे राजन् ! इसी प्रकार अलम्बुष भी उस युद्धदुर्मद घटोत्कच को बेधकर ५ प्रसन्न मन चारों ओर से आकाश को व्याप्त करता हुआ गर्जा उसी प्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी दोनों राक्षसाधिप ६ मायाओं के द्वारा परस्पर समान बल करनेवाले हुए सदैव सैकड़ों माया के करनेवाले परस्पर एक २ को मोहयुक्त करनेवाले ७ माया के युद्धों में सावधान मायाही के युद्ध करनेवाले हुए घटोत्कच ने जिस २ माया को प्रकट किया ८ हे राजन् ! अलम्बुष ने उस २ माया को मायाही से नाश किया उस मायायुद्ध में कुशल और युद्ध करनेवाले उस राक्षसाधिप अलम्बुष को देखकर पाण्डवलोग क्रोधरूप हुए अत्यन्त व्याकुल क्रोधयुक्त वह भीमसेनादिक पाण्डव रथों के द्वारा सबओर से उसके सम्मुख गये हे श्रेष्ठ ! उन्हों ने अपने बहुत से रथों से उसको घेरकर ६ । ११ सबओर को बाणों से ऐसा ढकदिया जैसे कि उल्काओं से हाथी को ढकते हैं वह माया के अस्त्रों से उन्होंके वेगों को दूरकरके १२ उन रथसमूहों से ऐसे निकलगया जैसे कि वन की अग्नि से हाथी निकलजाता है वह इन्द्रवज्र के समान शब्दायमान भयकारी धनुष को टङ्कार कर १३ वायु के पुत्र भीमसेन को तीस बाण से युधिष्ठिर को तीन बाणों से सहदेव को सात बाण से नकुल को बहत्तर बाणों से और द्रौपदी के पुत्रों को पांच २ बाणों से छेदकर बड़े भयकारी शब्द से गर्जा १४ । १५ भीमसेन ने उस राक्षस को नव बाणों से सहदेव ने पांच बाण से युधिष्ठिर ने सौ बाणों से घायल किया १६ फिर नकुल ने चौंसठ बाण से द्रौपदी के पुत्रों ने

तीन २ बाणों से घटोत्कच ने पचास बाणों से उसको घायलकरके १७ फिर सत्तर बाण से घायल करताहुआ बड़े वेग से गर्जा हे राजन् ! उसके बड़े शब्द से यह पृथ्वी १८ पर्वत वृक्ष और नदियों समेत कम्पायमान हुई सबओर से उन बड़े धनुषधारी महारथियों से अत्यन्त घायल उस राक्षस ने १९ उन सब को पांच २ बाणों से घायल किया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! फिर युद्ध में क्रोधयुक्त घटोत्कच राक्षस ने उस क्रोधभरे राक्षस को २० सात बाणों से घायल किया तब उस बलवान् के हाथ से अत्यन्त घायल उस बड़े पराक्रमी राक्षसाधिप ने २१ शीघ्रही सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण बाणों को छोड़ा वह झुकीहुई गांठवाले बाण राक्षस के शरीर में ऐसे प्रविष्ट होगये २२ जैसे कि बड़े बलवान् प्रसन्न सर्प पर्वत के शिखर में प्रविष्ट करते हैं हे राजन् ! उसके पीछे उन व्याकुल पाण्डवों ने चारोंओर से तीक्ष्ण धारवाले बाणों को वर्षाया २३ और हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच ने युद्ध में विजय से शोभा पानेवाले पाण्डवों से घायल २४ मरण धर्म को पानेवाले उस राक्षस ने करने के योग्य कर्म को नहीं जाना इसके पीछे युद्ध में भीमसेन के पुत्र घटोत्कच ने २५ ऐसी दशावाले उस राक्षस को देख कर उसके मारने के निमित्त मन से विचार किया और उस राक्षसाधिप के रथ पर बड़ावेग किया २६ क्रोधयुक्त घटोत्कच ने रथ के द्वारा सम्मुख जाकर भस्म हुए पर्वत के शिखर के समान टूटेहुए बादलों के समूह के सदृश रथ को पकड़ लिया २७ जैसे कि गरुड़जी सर्प को पकड़लेते हैं उसीप्रकार उस राक्षस को भी रथ से उठालिया और भुजाओं से दबाकर वारंवार घायलकरके २८ शीघ्र ही पृथ्वीपर ऐसा घिसा जैसे कि पूर्णघट को पत्थरपर घिसते हैं बल पराक्रम की तीव्रता से युक्त २९ क्रोधयुक्त घटोत्कच ने युद्ध में सब सेनाओं को डराया सब अङ्गों से रहित चूर्णीभूत अस्थि भयकारी सूरतवाला राक्षस ३० उस वीर घटोत्कच के हाथ से मारागया फिर उसराक्षस के मरनेपर प्रसन्नचित्त पाण्डव ३१ सिंहनाद से गर्जना करनेलगे और वस्त्रों को भी फिराया और आप के शूरवीर और सेना के लोगों ने उसबड़े पराक्रमी राक्षसों के राजा ३२ अलम्बुष को अत्यन्त फटेहुए पर्वत के समान देखकर हाहाकारों को किया उस अपूर्व दर्शनीय के देखने के इच्छावान् मनुष्यों ने दैव इच्छा से मङ्गल नक्षत्र के समान पृथ्वीपर पड़ेहुए उस राक्षस को देखा ३३ । ३४ फिर घटोत्कच ने उस बड़े

पराक्रमी राक्षस को मारकर बड़े बल को प्रकटकरके ऐसा शब्द किया जैसे कि राजाबलि को मारकरके इन्द्र ने किया था ३५ तब उस कठिन कर्म के करने पर बान्धव और पिताओं से स्तूयमान वह घटोत्कच पकेहुए लजालूवृक्ष के समान अलम्बुष शत्रु को मारकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ ३६ इसके पीछे शङ्खों के और नाना प्रकार के बाणों के शब्दों समेत बहुत बड़े शब्द हुए जिसको सुनकर पाण्डवलोग गर्जे फिर इतना बड़ा शब्द हुआ कि स्वर्गलोक को भी स्पर्श करगया ॥ ३७ । ३८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिनवोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०९ ॥

एकसौदश का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! द्रोणाचार्य ने युद्ध में कैसे सात्यकी को रोका इसको मूल समेत मुझसे कहो इसके सुनने का मुझको बड़ा उत्साह है १ सञ्जय बोले हे बड़े ज्ञानिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! जिनका अग्रगामी सात्यकी है उन पाण्डवों के साथ उस रोमाञ्च खड़े होनेवाले द्रोणाचार्य के युद्ध को मुझसे सुनो २ हे राजन् ! सात्यकी से घायलहुई सेना को देखकर आप द्रोणाचार्यजी उस सत्य पराक्रमी सात्यकी के सम्मुखगये ३ सात्यकी ने उस अकस्मात् आते हुए महारथी द्रोणाचार्य को पचीस बाणों से घायलकिया ४ युद्ध में पराक्रमी और सावधान द्रोणाचार्य ने भी सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण पांच बाणों से सात्यकी को घायलकिया ५ हे राजन् ! शत्रु के मांस के भोजन करनेवाले वह बाण अत्यन्त दृढ़ कवच को काटकर सर्पों के समान श्वासा लेतेहुए पृथ्वीपर गिर पड़े ६ उस लम्बी भुजावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त चाबुक से सन्तप्त किये हाथी के समान सात्यकी ने अग्नि के समान नाराच नाम पचास बाणों से द्रोणाचार्य को छेदा ७ युद्ध में सात्यकी के हाथ से घायल द्रोणाचार्य ने उपाय करनेवाले सात्यकी को बहुत से बाणों से छेदा ८ इसके पीछे क्रोधयुक्त बड़े धनुषधारी महापराक्रमी द्रोणाचार्य ने गुप्तग्रन्थीवाले बाण से फिर यादव सात्यकी को पीड़ित किया ९ हे राजन् ! युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से घायल सात्यकी ने करने के योग्य किसी कर्म को नहीं पाया १० युद्ध में तीक्ष्ण बाणों के छोड़ने वाले द्रोणाचार्य को देखकर सात्यकी भी व्याकुलमुख हुआ ११ आपके पुत्र और सेना के लोग उसको देखकर अत्यन्त प्रसन्नमन से सिंह के समान वारंवार

गर्जे १२ हे भरतवंशिन् ! वह राजा युधिष्ठिर उस भयकारी शब्द को और माधव सात्यकी को पीड्यमान सुनकर सब सेना के लोगों से बोला १३ कि वृष्णियों में श्रेष्ठ सत्यपराक्रमी वह सात्यकी युद्धमें वीर द्रोणाचार्य से ऐसे ग्रसा जाता है जैसे कि सूर्य राहुसे १४ चलो वहां जावो जहांपर कि सात्यकी लड़ता है यह बात राजा ने पाञ्चालदेशीय धृष्टद्युम्न से कहा १५ हे पुरुषत के पौत्र ! क्यों खड़े हो तुम द्रोणाचार्य के सम्मुख जावो तुम द्रोणाचार्य से हमारे समक्ष में नियत कठिन भय को नहीं देखते हो १६ यह बड़ा धनुषधारी द्रोणाचार्य युद्ध में सात्यकी के साथ ऐसे क्रीड़ा करता है जैसे कि बालक सूत में बँधेहुए पक्षी के साथ करता है १७ भीमसेन जिनमें अग्रगणनीय है वह सब उसके पास जावो और सब तुम्हारे साथ में होकर सात्यकी के रथ के समीप पहुँचे १८ मैं सेना समेत तुम्हारे पीछे चलूंगा अब तुम सब यमराजके मुख फँसे हुए सात्यकी को छुड़ावो १९ हे भरतवंशिन्, राजन् ! इस प्रकार सबसे कहकर सब सेना के लोगों समेत सात्यकी के कारण से युद्ध में द्रोणाचार्य के सम्मुख गया २० आपका कल्याण हो वहां अकेले द्रोणाचार्य से लड़ने के अभिलाषी पाण्डव और सृञ्जयों के बड़े शब्द सब ओर से प्रकट हुए २१ वह नरोत्तम महारथी द्रोणाचार्य के सम्मुख होकर कङ्कपक्ष और मयूरपक्षों से युक्त तीक्ष्ण बाणों से वर्षा करनेवाले हुए २२ फिर मन्द मुसकान करते द्रोणाचार्य ने आपही उन वीरों को ऐसे लिया जैसे कि आयेहुए अतिथियों को जल और आसन से लेते हैं २३ वह धनुषधारी लोग उन द्रोणाचार्य के बाणों से ऐसे तृप्तहुए जैसे कि अतिथिलोग राजा की अतिथिशाला को पाकर तृप्त होते हैं हे प्रभो ! वह सब लोग द्रोणाचार्य की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य के देखने को समर्थ नहीं होते हैं २४ । २५ फिर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने उन सब बड़े धनुषधारियों को बाणों के समूहों से ऐसे सन्तप्त किया जैसे कि अपनी किरणों से सूर्य सब को तप्त करता है २६ हे महाराज ! इस प्रकार घायलहुए पाण्डव सृञ्जयों ने अपना रक्षक ऐसे नहीं पाया जैसे कि कीच में फंसा हुआ हाथी २७ द्रोणाचार्य के बड़े बाण अच्छे प्रकार से चलायमान होकर ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि चारों ओर से तप्त करनेवाले सूर्य की किरणें होती हैं २८ उस युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से वह पचीस पाञ्चालदेशीय

मारेगये जोकि धृष्टद्युम्न के अङ्गीकृत महारथी प्रसिद्ध थे २६ सब सेनाओं के मध्य में पाञ्चाल और पाण्डवों के उत्तम २ शूरवीरों के मारनेवाले शूरवीर द्रोणाचार्य को देखा ३० हे महाराज! वह द्रोणाचार्य केकयलोगों के सौ शूरवीरों को मारकर चारों ओर से छिन्नभिन्न करके मुख फैलाकर मृत्यु के समान नियत हुए ३१ महाबाहु द्रोणाचार्य ने सैकड़ों हज़ारों पाञ्चाल, सृञ्जय, मत्स्य और केकय लोगों को विजयकिया ३२ द्रोणाचार्य के शायकों से घायल उन लोगों के शब्द ऐसे प्रकटहुए जैसे कि वन के मध्य में अग्नि से व्याप्त वनवासियों के होते हैं ३३ हे राजन्! वहांपर देवतालोग गन्धर्व पितरों समेत बोले कि यह पाञ्चाल और पाण्डव लोग सेना के सब मनुष्यों समेत जाते हैं ३४ युद्ध में इसी प्रकार सोमकों के मारनेवाले उस द्रोणाचार्य के सम्मुख भी नहीं गये कितनेही लोग घायल भी नहीं हुए ३५ इस रीतिपर उन उत्तम वीरों के उस महाभयकारी नाश के होनेपर युधिष्ठिर ने अकस्मात पाञ्चजन्य शङ्ख के शब्द को सुना ३६ जयद्रथ के सहायक वीरों के लड़नेपर वासुदेवजी का पूर्ण किया हुआ वह शङ्खों का राजा पाञ्चजन्य अत्यन्त शब्द करता है ३७ अर्जुन के रथ के पास धृतराष्ट्र के पुत्रों के गर्जने और चारों ओर से गाण्डीव धनुष के शब्द न सुनाई देने से ३८ मूर्च्छा से घायल राजा युधिष्ठिर ने चिन्ता करी कि निश्चय करके अर्जुन का कल्याण नहीं मालूम होता है क्योंकि ऐसे शङ्ख शब्द करता है और कौरव लोग प्रसन्न होकर वारंवार गर्जते हैं इस प्रकार विचार करते वारंवार अचेत होते हुए अजातशत्रु युधिष्ठिर जयद्रथ के मारने में निर्विघ्नता चाहनेवाला अन्तःकरण से व्याकुल अश्रुपातों से गद्गद वचनों समेत शिनीवंशियों में श्रेष्ठ यादव सात्यकी से बोला ३६। ४१ हे सात्यकिन्! आपत्ति काल में मित्रों के काम में जो वह सनातन धर्म पूर्व समय में अच्छे लोगों से देखागया है वही समय अब वर्तमान हुआ है ४२ हे शिनियोंमें श्रेष्ठ, सात्यकिन्! मैं सब वीरलोगों में सब को शोचता हुआ तुमसे अधिकतर किसी अपने शुभचिन्तक को नहीं देखता हूं ४३ कि जो सदैव प्रसन्नमन और सदैव अनुकूल है आपत्तिकाल में प्रवृत्त होकर भी वह कर्म करनेके योग्य है ४४ जैसे कि केशवजी सदैव पाण्डवों के रक्षक हैं हे सात्यकिन्! उसी प्रकार तुम भी श्रीकृष्णजी केही समान पराक्रमी हो ४५ मैं तुम्हारे ऊपर भार को रक्खूंगा तुम उसके

उठाने के योग्य हो तुम मेरे विचार को कभी व्यर्थ करने के योग्य नहीं हो ४६ हे नरोत्तम ! सो तुम युद्ध में भाई के समान अवस्था और गुरुरूप अर्जुन की आपत्तिकाल में सहायता करो ४७ तुम सत्यसङ्कल्पी होकर मित्रों के निर्भय करनेवाले प्रसिद्ध हो ४८ हे सात्यकिन् ! मित्र के निमित्त जो युद्ध करनेवाला पुरुष शरीर को त्यागकरे और जो ब्राह्मणोंके अर्थ पृथ्वी को दानकरे वह दोनों समान हैं ४९ जो राजा इस सब पृथ्वी को विधि के अनुसार ब्राह्मणों के लिये दान करके स्वर्ग को गये उन सब को हमने बहुत सुना है ५० हे धर्मात्मन् ! अब मैं यहां हाथ जोड़कर तुझसे भी प्रार्थना करता हूं हे समर्थ ! पृथ्वीदान के समान अथवा इससे भी अधिक फल होगा ५१ हे सात्यकिन् ! मित्रों के निर्भय करनेवाले एक श्रीकृष्णजी सदैव युद्ध में प्राणों की प्रीति को त्याग करते हैं और दूसरे तुम ५२ युद्ध में यश के चाहनेवाले और पराक्रम करनेवाले वीर का सहायक वीर पुरुषही होसक्ता है दूसरा सामान्य पुरुष नहीं होसक्ता है ५३ हे माधव ! इस प्रकार के युद्ध में वर्तमान अर्जुन का रक्षक युद्ध में तेरे सिवाय कोई दूसरा वर्तमान नहीं है ५४ तेरे सैकड़ों कर्मों की प्रशंसा करते और मेरी प्रसन्नता को उत्पन्न करतेहुए पाण्डव अर्जुन ने तेरे कर्मोंको वारंवार कहा है ५५ कि हस्तलाघवीय अपूर्व युद्धकर्ता तीव्रपराक्रमी और सब अस्त्रज्ञों में बुद्धिमान् शूर सात्यकी युद्ध में अचेत नहीं होता है ५६ वह महात्मा महारथी महास्कन्ध बड़ा वक्षस्स्थल महाबाहु महाहनु महाबली और महावीर्यवान् है ५७ और मेरा शिष्य होकर और मित्र है मैं उसका प्यारा हूं और वह मेरा प्यारा है मेरा सहायक सात्यकी कौरवों को छिन्न भिन्न करके मर्दन करेगा ५८ हे महाराज ! जो हमारे निमित्त केशवजी युद्ध में प्रवृत्त होयँ व बलदेवजी व अनिरुद्ध व महारथी प्रद्युम्न ५९ गद और दशार्ण और शाम्ब भी वृष्णियों समेत युद्धके मुखपर ६० सन्नद्ध होकर सहायता के लिये आकर नियत होयँ हे महाराज ! तौ भी मैं इस सत्यपराक्रमी नरोत्तम सात्यकी को अपनी सहायता में संयुक्त करूंगा उसके समान दूसरा कोई नहीं है ६१ हे तात ! द्वैतवन के मध्य अच्छे लोगों की सभामें तेरे परोक्ष में तेरे सत्य गुणों को कहतेहुए अर्जुन ने मुझसे कहा है ६२ हे वृष्णिवंशिन् ! तुम उस अर्जुन के इस सङ्कल्प और मेरे और भीमसेन के सङ्कल्प को निरर्थक और मिथ्या करने को योग्य नहीं हो ६३ जो मैं तीर्थों में घूमता द्वारकापुरी

को गया वहां भी मैंने तेरी भक्ति को अर्जुन में देखा ६४ हे सात्यकिन्! मैंने तेरीसी प्रीति दूसरों में नहीं देखी जैसे तुम युद्ध में वर्तमान हमलोगों को चाहते हो ६५ हे महाबाहो, बड़े धनुषधारिन्, माधव, सात्यकिन्! तुम कुलीनता से, भक्ति से, मित्रता से, शिष्यता से, प्रीति से, पराक्रम से, कुल के गुणों से ६६ और सत्यता के अनुसार अर्जुन पर दया करने के लिये कर्म करने को योग्य हो भीमसेन और हम सब सेना समेत युद्ध में प्रवृत्त होकर उन द्रोणाचार्य को रोकेंगे जो तेरे सम्मुख जायँगे हे सात्यकिन्! युद्ध में चलायमान सेनाओं को और भरतवंशियों की छिन्न भिन्न सेनाओं को देखो और युद्ध में होनेवाले बड़े शब्द को भी सुनो ६७।७१ जिस प्रकार से पर्वों में कठिन वायु की तीव्रता से समुद्र व्याकुल होता है उसी प्रकार अर्जुन के हाथ से दुर्योधन की सेना उच्छिन्न होगई ७२ चारों ओर से दौड़तेहुए रथ घोड़े और मनुष्यों से उठी हुई यह धूलि भी चारों ओर से वर्तमान है ७३ शत्रु के वीरों का मारनेवाला अर्जुन अत्यन्त समीपी वर्तमान नखर प्रासों से लड़नेवाले सिन्धु सौवीरनाम शूरवीरों से घिराहुआ है ७४ यह सेना हटाने के योग्य है और जयद्रथ का विजय करना सम्भव है यह सब लोग जयद्रथ के अर्थ अपने २ जीवन को त्यागे हुए हैं ७५ धृतराष्ट्र के पुत्रों की उस सेना को देखो जोकि उत्तम बाण शक्ति ध्वजा की रखनेवाली घोड़े हाथियों से व्याकुल होकर कठिनता से सम्मुखता के योग्य है ७६ दुन्दुभी और शङ्खों के बड़े शब्द सिंहनाद व रथ की नेमियों के शब्दों को सुनो ७७ हज़ारों हाथी पत्ति और चेष्टा करते व पृथ्वी को कम्पायमान करते सवारों के शब्दों को सुनो ७८ प्रथम जयद्रथ की सेना है उसके पीछे द्रोणाचार्य की सेना है हे नरोत्तम! वह इतनी अधिक है कि देवराज को भी पीड़ित करसके ७९ उस असंख्य सेना में डूबाहुआ अर्जुन भी जीवन को त्यागेहुए है जो युद्ध में वह जीवन को त्यागदेगा तो उसके मरनेपर मुझसा सजा कैसे जीसक्ता है ८० तेरे जीवतेहुए मैंने सब रीति से बड़े कष्ट को पाया हे तात! वह श्याम तरुण दर्शनीय शीघ्रता से अस्त्रों का चलानेवाला अपूर्व युद्धकर्ता महाबाहु पाण्डव अर्जुन सूर्य के उदय होने के समयपर भरतवंशियों की सेना में प्रवेशित हुआ है और अब दिन ढलावपर है ८१।८२ हे यादव! मैं उसको नहीं जानता हूं कि वह जीवता है अथवा नहीं जीवता है और कौरवों

की वह सेना भी समुद्र के समान बड़ी है ८३ हे तात ! वह अकेला महाबाहु अर्जुन बड़े युद्ध में देवताओं से भी असह्य भरतवंशियों की सेना में प्रविष्ट हुआ है ८४ अब मेरी बुद्धि किसी दशा में भी युद्ध में नहीं नियत होती और युद्ध में वेगवान् द्रोणाचार्य भी मेरी सेनाको पीड़ा देते हैं ८५ हे महाबाहो ! जिस प्रकार यह ब्राह्मण घूमरहा है वह तेरे नेत्रों के समक्ष है तुम साथही आगे आजाने वाले कार्योंमें सावधान और कुशल हो ८६ हे प्रतिष्ठा देनेवाले, सात्यकिन् ! शीघ्र करने के योग्य बड़े कर्म के करने को योग्य हो इस काम को मैंने सब कामों से बड़ा माना है ८७ कि युद्ध में अर्जुन की रक्षा और सहायता करनी योग्य है मैं उस जगत् के स्वामी रक्षक श्रीकृष्णचन्द्रजी को नहीं शोचता हूं ८८ हे तात ! वह पुरुषोत्तम युद्ध में सम्मुख होनेवाले तीनोंलोकों को भी विजय करने को समर्थ है यह तुझसे सत्य २ कहता हूं ८९ फिर दुर्योधन की यह अत्यन्त निर्बल सेना क्या पदार्थ है हे यादव ! युद्ध में बहुत वीरों से पीड्यमान वह अर्जुन ९० युद्ध मेंही कहीं प्राणों को न त्यागदे इस हेतु से मैं मूर्च्छित हुआ जाता हूं तुम उसकेही मार्ग पर जाओ जैसे कि तुम सरीखे वीर जाते हैं ९१ उस प्रकारवाले समयपर मुझ सरीखे राजा से प्रेरणा कियेहुए तुम जावो वृष्णियों के बड़े वीरों में युद्ध के करनेवाले दोही अतिरथी कहे हैं ९२ एक महाबाहु प्रद्युम्न और दूसरे यादवों में प्रसिद्ध तुम हो हे नरोत्तम ! तुम अस्त्रों में नारायण के समान बल पराक्रम में बलदेवजी के समान ९३ और वीरता में अर्जुन के तुल्य हो लोक में सन्तलोग भीष्म और द्रोणाचार्य को उल्लङ्घनकर तुझ पुरुषो-त्तम को सब युद्धों में कुशल और सावधान कहते हैं और हे माधव ! यह भी वर्णन करते हैं कि लोक में ऐसा कोई कर्म नहीं है जिसको सात्यकी नहीं कर सके ९४ । ९५ इस हेतु से हे बलवन्, पराक्रमिन् ! जो मैं तुम से कहूं उसके करने को तुम योग्य हो हे महाबाहो ! तुम मेरे अर्जुन के और लोक के विश्वास-पात्र हो ९६ अन्यथा करने के योग्य नहीं हो प्यारे प्राणों को त्याग करके युद्ध में वीरों के समान भ्रमण करो ९७ हे सात्यकिन् ! युद्ध में यादवलोग अपने जीवन और प्राणों की रक्षा नहीं करते हैं युद्ध न करना युद्ध में नियत न होना और भागना ९८ यह मार्ग भयभीत और नीचलोगों का है यादवलोगों का किसी दशा में भी नहीं है हे शिनियों में श्रेष्ठ, तात, सात्यकिन् ! धर्मात्मा अर्जुन तेरा

गुरु है ९९ और वासुदेवजी भी तेरे और बुद्धिमान् अर्जुन के गुरु हैं इन दो कारणों को मैं जानता हूं इसी से मैंने तुझसे कहाहै १०० मेरे वचन का अपमान मत कर मैं तेरे गुरु का भी गुरु हूं वासुदेवजी का अर्जुन का और मेरा वह मत है १०१ मैंने तुझ से यह सत्य २ ही कहा है अब तुम मेरे कहने से शीघ्र वहां जावो जहां कि अर्जुन वर्तमान है हे सत्यपराक्रमिन् ! इस मेरे वचन को जान कर १०२ दुर्बुद्धि दुर्योधन की इस सेना में प्रविष्ट होकर न्याय के अनुसार महारथियों से भिड़कर जैसा उचित है वैसाही युद्ध में अपना कर्म दिखलावो॥१०३॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिदशोपरिशततमोऽध्यायः ॥ ११० ॥

एकसौग्यारह का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे भरतर्षभ ! प्रीति से संयुक्त वृद्ध मधुराक्षरों से, जिस समय के अनुसार अद्भुत और न्याय के अनुसार भी जो २ कहा १ उस धर्मराज के वचनों को सुनकर शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने युधिष्ठिर को उत्तर दिया २ हे अधिकार से च्युत न होनेवाले ! आपके कहेहुए इन सब वचनों को मैंने सुना यह आपके वचन न्याय से युक्त अपूर्व और अर्जुन के प्रयोजन में यश के करनेवाले हैं ३ हे महाराज ! इस प्रकार के समयपर मुझ सरीखे शुभचिन्तक को देखकर आपको उसी प्रकार की आज्ञा करनी उचित है जैसे कि अर्जुन को करते हो ४ किसी दशा में भी अर्जुन के प्रयोजन में मेरे प्राणरक्षा के योग्य नहीं हैं फिर मैं युद्ध में आपकी आज्ञा से कौन सा कर्म नहीं करसक्ता अर्थात् जो आप कहेंगे उसी को करूंगा ५ हे महाराज ! आपकी आज्ञा को पाकर मैं देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनोंलोकों से भी युद्ध करसक्ता हूं यहां यह अत्यन्त अल्प पराक्रमी सेना कौन वस्तु है ६ हे राजन् ! अब मैं युद्ध में चारोंओर से दुर्योधन की सेना से युद्ध करूंगा और युद्ध में सब को विजय करूंगा ७ हे राजन् ! आप सावधान रहिये मैं बुद्धिमान् अर्जुन को पाकर जयद्रथ के मरनेपर आपके पास आऊंगा ८ हे राजन् ! वासुदेवजी का और बुद्धिमान् अर्जुन का जो वचन है वह सब भी मुझको आपसे कहना अत्यन्त योग्य है ९ सब सेना के मध्य में वासुदेवजी के समक्ष में अर्जुन मुझको वारंवार यह समझा गया है १० कि हे माधव ! अब तुम युद्ध में उत्तम बुद्धि को करके बड़ी सावधानी से सचेत होकर जबतक कि मैं जयद्रथ को मारकर आऊं

तबतक श्रेष्ठरीति से राजा की रक्षाकरो ११ हे महाबाहो! मैं तुझपर अथवा महा-
रथी प्रद्युम्नपर राजा को धरोहड़ के समान सुपुर्द करके निरपेक्ष होकर जयद्रथ
के सम्मुख होऊंगा १२ तुम दुर्योधन के विश्वासपात्र और शुभचिन्तक द्रोणा-
चार्य को युद्ध में जानते हो हे समर्थ! उस देखनेवाले ने दुर्योधन से यह प्रतिज्ञा
की है कि मैं देखतेही युधिष्ठिर को पकड़कर तेरे सुपुर्द करूंगा इस कारण भार-
द्वाज द्रोणाचार्य भी युधिष्ठिर के पकड़ने की अभिलाषा करता है यह द्रोणाचार्य
जी युद्ध में युधिष्ठिर के पकड़ने को समर्थ हैं १३। १४ अब मैं इस रीति से
नरोत्तम धर्मराज युधिष्ठिर को तेरे सुपुर्द करके जयद्रथ के मारने को जाऊंगा १५
हे माधव! मैं जयद्रथ को मारके शीघ्र आऊंगा ऐसा न होय कि युद्ध में
द्रोणाचार्य बल करके युधिष्ठिर को पकड़ें १६ हे सात्यकिन्! भारद्वाज
द्रोणाचार्य के हाथ से धर्मराज युधिष्ठिर के पकड़नेपर वैसीही मेरी अप्रसन्नता
होगी १७ अर्थात् सत्यवक्ता नरोत्तम युधिष्ठिर के पकड़े जानेपर फिर हमलोगों
को वन में जाना होगा १८ और यह सब मेरी विजय कीहुई अत्यन्त व्यर्थ
और निरर्थक होजायगी जो क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य युधिष्ठिर को पकड़ेंगे हे
माधव! सो तुम युद्ध में मेरे प्रिय के निमित्त और विजयरूपी यश के अर्थ राजा
की रक्षाकरो १९। २० हे समर्थ! सदैव द्रोणाचार्य से भय को माननेवाले
अर्जुन की ओर से आप मुझ को धरोहड़रूप सुपुर्द कियेगये हो २१ हे समर्थ,
महाबाहो! मैं सदैव युद्ध में प्रद्युम्न के सिवाय किसी दूसरे को उससे सम्मुखता
करने को नहीं देखता हूं २२ वह मुझको बुद्धिमान् द्रोणाचार्य के युद्ध में योग्य
समझता है सो मैं इस विश्वास और गुरु के उस वचन को २३ अथवा तुम्हारे
त्याग करने को साहस नहीं करता हूं अजेय कवचधारी द्रोणाचार्य २४ तुम
को युद्ध में सम्मुख पाकर अपनी हस्तलाघवता से इस प्रकार क्रीड़ा न करें
जैसे कि बालक पक्षी के साथ करता है जो धनुष हाथ में लेनेवाला मकरध्वज
प्रद्युम्न यहां होवे तो मैं तुमको उसके पास छोड़ूं क्योंकि वह अर्जुन के समान
तुम्हारी रक्षा करेगा और तुम भी अपनी रक्षाकरो मेरे जानेपर आपका ऐसा
रक्षक कौन है २५। २६ जोकि युद्ध में तबतक द्रोणाचार्य की सम्मुखता करे
जबतक कि मैं जयद्रथ को मारकर युधिष्ठिर के पास न आजाऊं हे राजन्! अब
तुम अर्जुन की ओर का कभी भय मत करो २७ वह महाबाहु अपने ऊपर भार

को उठाकर कभी पीड्यमान नहीं होता है जो सौवीरक सिन्धुवासी पौरव उत्तरीय दक्षिणीय शूरवीर आदिक महारथी हैं और जो कर्णसुखनाम बड़े रथी विख्यात हैं २८ यह सब क्रोधयुक्त अर्जुन के सोलहवीं कला के भी समान नहीं हैं हे राजन् ! देवता, असुर, मनुष्य, राक्षसों के समूह, किन्नर और बड़े २ सर्पों समेत उपाय करनेवाले जड़ चैतन्य जीवों समेत सब पृथ्वी युद्ध में अर्जुन के साथ लड़ने को समर्थ नहीं हैं २६ । ३१ हे महाराज ! इस प्रकार जानकर आप अर्जुन के विषय में उत्पन्न भय को कभी मन में भी न लाओ जहांपर सत्य-पराक्रमी धनुषधारी वीर अर्जुन और श्रीकृष्णजी हैं ३२ वहां किसी प्रकार का भी आपत्ति कर्म नहीं व्याप्त होता है तुम युद्ध में भाई अर्जुन के दिव्य अस्त्रों के योग क्रोध ३३ यादव कृष्ण को उपकार और दया को विचारकरो और मेरे दूरजाने अर्थात् अर्जुन के पास चलेजानेपर ३४ तुम युद्ध में द्रोणाचार्य की अपूर्व अस्त्रविद्या को विचारो हे राजन् ! आचार्यजी आपके पकड़ने की अत्यन्त इच्छा कररहे हैं ३५ हे भरतवंशिन् ! वह गुरुजी अपनी प्रतिज्ञा के सत्य करने को तुम्हारे पकड़ने के अभिलाषी हैं अब अपनी रक्षा करिये मेरे जानेपर आप का रक्षक कौन है ३६ जिसपर भरोसा करके और उसके सुपुर्दगी में आपको करके मैं अर्जुन के पास चलाजाऊं हे महाराज ! मैं इस महायुद्ध में आपको सुपुर्द न करके ३७ कहीं नहीं जाऊंगा हे कौरव ! मैं यह आपसे सत्य २ कहता हूं हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ ! तुम अनेक प्रकार की बुद्धि से इसको विचार करिये ३८ और बुद्धि से ही अपने बड़े कल्याण को देखलो तब मुझको आज्ञा करो ३६ युधिष्ठिर बोले हे महाबाहो, माधव, सात्यकिन् ! यह इसी प्रकार है जैसा कि तुम कहते हो हे श्रेष्ठ ! परन्तु मेरे चित्त का वृत्तान्त अर्जुन के विषय में स्पष्ट नहीं होता है ४० मैं अपनी रक्षा में बड़े उपायों को करूंगा मेरी आज्ञानुसार तुम वहां जाओ जहां अर्जुन गया है ४१ युद्ध में अपनी रक्षा को और अर्जुन के पास जाने को मैंने अपनी बुद्धि से विचारकर दोनों कार्यों में से वहां का तुम्हारा जानाही मैं ठीक विचार करता हूं ४२ सो तुम जहां अर्जुन है वहीं जाओ मेरी रक्षा को बड़ा बली और पराक्रमी भीमसेन करेगा ४३ हे तात ! सगे भाइयों समेत धृष्टद्युम्न आदिक बड़े २ पराक्रमी राजालोग और द्रौपदी के पुत्र मेरी निस्सन्देह रक्षा करेंगे ४४ हे श्रेष्ठ ! पांचो भाई केकय

घटोत्कच राक्षस राजा विराट द्रुपद महारथी शिखण्डी ४५ महाबली धृष्टकेतु, कुन्तभोज, नकुल, सहदेव सब पाञ्चालदेशीय और सृञ्जयदेशीय ४६ यह सब सावधानी से निस्सन्देह मेरी रक्षा करेंगे युद्ध में सेना समेत द्रोणाचार्य और कृतवर्मा मेरे पकड़ने को समर्थ नहीं हैं और न मुझ को पराजय करसकेंगे जहां शत्रुओं का तपानेवाला धृष्टद्युम्न नियत होगा ४७।४८ वहांपर द्रोणाचार्य जी किसी प्रकार से भी सेना को उल्लङ्घन नहीं करसके क्योंकि यह धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के ही नाश के निमित्त कवच, बाण, धनुष, खड्ग और उत्तम आभूषणों समेत अग्नि से उत्पन्नहुआ है ५० हे सात्यकिन् ! तुम विश्वास करो और मेरे विषय में व्याकुलता को मत करो युद्ध में क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य को धृष्टद्युम्न रोकेगा ॥ ५१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकादशोपरिशततमोऽध्यायः ॥ १११ ॥

एकसौबारह का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, वह शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी धर्मराज के वचन को सुनकर राजा युधिष्ठिर के त्याग से अर्जुन से भयभीतता को कहता १ और मुख्यकर संसार की ओर से अपनी इस अपकीर्ति को देखकर कि सबलोग मुझको अर्जुन की ओर न जाने से भयभीत न कहैं २ ऐसे अनेक बातों का निश्चय करके वह युद्ध में दुर्मद पुरुषोत्तम सात्यकी धर्मराज से यह वचन बोला ३ हे राजन् ! जो आप अपनी रक्षा को कीहुई मानते हो तो आपका कल्याण होय मैं अर्जुन के पास जाऊंगा और आपकी आज्ञा को करूंगा ४ हे राजन् ! तीनोंलोक में अर्जुन से प्यारा मुझको कोई नहीं है यह मैं सत्य २ आपसे कहता हूं ५ हे प्रतिष्ठा के देनेवाले ! मैं आप की आज्ञा से उसके मार्ग को जाऊंगा आपके अर्थ किसी दशा में भी मेरा कोई काम न करने के योग्य नहीं है ६ हे द्विपादों में श्रेष्ठ ! जैसे कि गुरु का वचन मुझको माननीय और श्रेष्ठ है उसी प्रकार आपका भी वचन मुझको श्रेष्ठ समझकर मानना योग्य है ७ दोनों भाई श्रीकृष्ण और अर्जुन आप के हित में प्रवृत्त होकर कर्म कररहे हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ ! आप मुझको उन दोनों पुरुषोत्तमों के मनोरथों में प्रवृत्त और नियत जानो ८ हे समर्थ, नरोत्तम, युधिष्ठिर ! मैं आपकी आज्ञा को शिर से अङ्गीकार करके अर्जुन के निमित्त उस कठिनता से पृथक् होनेवाली सेना को छिन्न

भिन्न करके जाऊंगा ६ हे राजन्! अब मैं द्रोणाचार्य की सेना में ऐसे प्रविष्ट होता हूं जैसे कि क्रोधयुक्त झषनाम जलजीव समुद्र में प्रवेश करता है मैं वहां पर जाऊंगा जहांपर कि राजा जयद्रथ है १० जहांपर पाण्डव अर्जुन से भयभीत होकर अश्वत्थामा कर्ण और कृपाचार्य आदिक उत्तम रथियों से रक्षित जयद्रथ सेना में शरणागत होकर नियत है ११ हे राजन्! यहां से मैं उस मार्ग को तीन योजन मानता हूं जहांपर कि जयद्रथ के मारने में प्रवृत्त अर्जुन नियत है १२ मैं जयद्रथ के मरने से पूर्वही बड़े दृढ़ अन्तरात्मा के द्वारा तीनयोजनपर वर्तमान उस अर्जुन के चरण को पाऊंगा १३ गुरु से आज्ञा पाये विना कौन मनुष्य युद्ध करसक्ता है हे राजन्! गुरु की आज्ञा को पाकर मुझ सा कौन मनुष्य युद्ध को नहीं करे १४ हे प्रभो! मैं उस स्थान को जानता हूं जहांपर कि जाऊंगा और शूल, शक्ति, गदा, प्रास, ढाल, खड्ग, दुधारखड्ग, तोमर १५ और उत्तम बाण अस्त्रों से भी दुर्गम्य सेनारूपी समुद्र को उथल पुथल करूंगा जो इस हज़ारों सेनाओं के समान हाथियों की सेना को देखते हो १६ जिनका कुल आंजनक नाम है जिस सेना में यह प्रहारकरनेवाले युद्ध में कुशल शूर वीर लोग बहुत से म्लेच्छों के साथ नियत हैं १७ हे राजन्! वर्षा करनेवाले बादलों के समान मदझाड़नेवाले बादल केही रूपवाले यह हाथी हैं यह हाथी अपने हाथीवानों के प्रेरणा कियेहुए होकर कभी मुखों को नहीं फेरते १८ सो हे राजन्! इन हाथियों को मारने के सिवाय किसी प्रकार से पराजय नहीं है और हज़ारों रथियों के समान जिन रथियों को सम्मुख देखते हो १९ हे श्रेष्ठ! यह सुवर्ण के रथवाले राजकुमार महारथी रथ बाण अस्त्र और हाथी की सवारी में सावधान हैं २० धनुर्वेद में पूर्ण मुष्टिकयुद्ध में कुशल गदा युद्ध के विशेष ज्ञाता भुजाओं के युद्धों में प्रवीण २१ खड्ग चलाने में योग्य ढाल तलवार के उठाने चलाने में प्रशंसनीय शूर विद्यावान् परस्पर में ईर्षा करनेवाले हैं २२ हे राजन्! कर्ण करके नियत कियेहुए दुश्शासन के आज्ञावर्ती यह सबलोग सदैव युद्ध में मनुष्यों को विजय करना चाहते हैं २३ वासुदेवजी भी इन बड़े रथियों की प्रशंसा करते हैं यह सबलोग सदैव हितकरने के अभिलाषी कर्ण के आधीन वर्तमान हैं २४ उसी के वचन से अर्जुन से हटाये गये वह दृढ़ धनुष और कवचवाले थकावट और दुःख से रहित हैं २५ निश्चय

करके यह लोग दुर्योधन की आज्ञा से मेरे निमित्त नियत हैं हे कौरव्य ! आप के प्रिय के अर्थ इन्हीं को युद्ध में मथकर २६ अर्जुन के मार्ग को जाऊंगा हे राजन् ! और जो दूसरे तरुण कवचधारी किरात पुरुषों की सवारी में नियत उन सात सौ हाथियों को देखते हो जिन हाथियों को कि राजाकिरात ने अर्जुन को दिया २७। २८ और उसीप्रकार फिर अपने जीवन को चाहतेहुए उस राजा किरात ने अच्छे अलंकृत करके नौकरों को दिया हे राजन् ! पूर्वसमय में यह सबलोग आपही के दृढ़ कार्यकर्ता थे २९ अब यह आपही से लड़ते हैं इस समय की विपरीतता को देखो यह सब किरात बड़े धनवान् युद्ध में दुर्मद ३० हाथियों की शिक्षा के ज्ञाता अग्नि से उत्पन्न होनेवाले हैं इनको युद्धभूमि में अर्जुन ने विजय किया था ३१ दुर्योधन के आज्ञावर्ती होकर अब यह लोग मेरे निमित्त उद्युक्त हैं हे राजन् ! इन युद्धदुर्मद किरातों को युद्ध में बाणों से मारकर ३२ जयद्रथ के मारने में प्रवृत्त अर्जुन के पीछे जाऊंगा फिर आंजनकुल में उत्पन्न होने वाले यह बड़े हाथी ३३ महाकर्कश विनीत और गण्डस्थलों से मद झाड़नेवाले स्वर्णमयी कवचों से अलंकृत ३४ युद्ध में लक्षभेदी ऐरावतके समान युद्धकरने वाले हैं यह हाथी उत्तरीय पर्वतों के बड़ेउग्र चोरों के साथ नियत हैं ३५ यहां पर गौ से उत्पन्न होनेवाले और बन्दर से उत्पन्न होनेवाले शूरवीर अत्यन्त श्रेष्ठ लोहे के कवच आदि धारणकरनेवाले वीरोंसमेत वर्तमान हैं ३६ और बहुत से अनेक प्रकार के उत्पत्ति स्थानवाले और मनुष्यों से भी उत्पन्न होनेवाले हैं जिन को धूम्रवर्ण कहते हैं वह हिमाचल पर्वतके दुर्गमस्थानोंके रहनेवाले और पाप-कर्ता होकर महाम्लेच्छ हैं दुर्योधनने इस सम्पूर्ण राजमण्डलको पाकर ३७। ३८ रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, सौमदत्त, जयद्रथ और कर्ण को पाकर पाण्डवों का अपमान किया ३९ फिर काल के चक्र में फँसाहुआ दुर्योधन अपने को कृतार्थ मानता है अब वह सब मेरे बाणों के गोचरता में वर्तमान हुए हैं ४० हे युधिष्ठिर ! जो मैं चित्त के अनुसार तीव्रगामी हूं तो यह किसी प्रकार से छूट कर नहीं जासके दुर्योधन ने सदैव से दूसरे के बल से अपना निर्वाह किया है ४१ हे राजन् ! जो यह सुनहरी ध्वजावाले रथी दृष्टपड़ते हैं वह मेरे बाणोंसे पीड़ावान् होकर नाश को पावेंगे ४२ यह काम्बोजदेशीय शूर विद्यावान् और धनुर्वेद में पूर्ण आपने सुने हैं वह दुर्वारणनाम हैं ४३ यह परस्पर अभीष्ट चा-

हनेवाले अत्यन्त दृढ़शरीर हैं हे भरतवंशिन्! दुर्योधन की ग्यारह अक्षौहिणी सेना क्रोधयुक्त है ४४ और चारों ओर से रक्षित कुरुवीर मेरे निमित्त बड़ी साव-धानी से नियत हैं हे महाराज! वह सब चैतन्य होकर अभ्रान्तचित्त मेरेही सम्मुख वर्तमान हैं ४५ मैं उनको ऐसे मथूंगा जैसे कि तृणों को अग्नि मथता है इस कारण से सब तूणीरादि उपासङ्ग और सब सामान ४६ को रथ के तैयार करनेवाले मनुष्य विधि के अनुसार मेरे रथ पर नियतकरें निश्चय करके इस बड़े भारी युद्ध में नाना प्रकार के शस्त्र हाथ में लेने के योग्य हैं ४७ जैसे कि गुरुओं से सिखलाये गये हैं उस प्रकार से रथों को पँचगुने करने चाहिये फिर तीक्ष्ण सर्पों के समान काम्बोजदेशियों से भिडूंगा ४८ उन नाना प्रकार के शस्त्र समूहों के रखनेवाले विष के समान प्रहारकरनेवाले किरातों से भी लडूंगा ४९ राजा से सदैव पालन कियेहुए दुर्योधन का हितचाहनेवाले इन्द्र के समान पराक्रमी शकों के साथ भिडूंगा ५० इसी प्रकार अग्नि के समान अजेय और तेजस्वी और काल के समान दुःख से आधीन करने के योग्य नाना प्रकार के अन्य २ शूरवीरों से भी लडूंगा ५१ हे राजन्! युद्ध में दुर्मद बहुत से शूरवीरों के साथ युद्धभूमि में भिडूंगा इस हेतु से शुभलक्षणवाले घोड़ों में श्रेष्ठ प्रशंस-नीय ५२ और पृथ्वी के लेटने सेही थकावट से रहित जल से तृप्त घोड़े फिर मेरे रथ में संयुक्त किये जायँ सञ्जय बोले कि राजा ने उसके सब तूणीरादिक सा-मान ५३ और नाना प्रकार के शस्त्रों को उसके रथपर अलंकृत करवाया इसके पीछे चार मनुष्यों ने उन सब सामानों से युक्त उत्तम घोड़ों को ५४ रसयुवान नशेदार जल पिलाया उन थकावट से रहित दाना जल आदि से तृप्त स्नान किये हुए अच्छे अलंकृत विना घाव सुवर्ण की माला रखनेवाले योग्य सुवर्ण वर्ण विनीत शीघ्रगामी ५५। ५६ अत्यन्त प्रसन्नमन विधि के अनुसार अलं-कृत चारों घोड़ों को उस रथ में जोड़ा जोकि स्वर्णमयी केशर की मालाओं से युक्त सिंहमूर्ति रखनेवाली ध्वजा से शोभित ५७ मणि मूंगों से जटित सुनहरी केतुओं से संयुक्त श्वेत बादल के समान प्रकाशमान पताकाओं से अलंकृत ५८ सुनहरी दण्ड से ऊंचे छत्रवाला और बहुत शस्त्रों समेत सामानों से भरा हुआ था उस स्वर्णमयी सामान से अलंकृत रथ को विधिपूर्वक जोड़ा ५९ दारुक के छोटे भाई और उसके सखा सूत ने तैयार कियेहुए रथको ऐसे वर्णन किया जैसे

कि इन्द्र के तैयार कियेहुए रथ को मातलिनाम सारथी कहता है ६० इसके पीछे स्नान करनेवाले सात्यकी ने जिसका कौतुक मङ्गल कियागया पवित्र होकर स्नातकनाम ब्राह्मणों को हज़ार २ अशर्फियां दीं ६१ उसके पीछे आशीर्वादों समेत सब से मिल श्रीमानों में श्रेष्ठ मधुपर्क के योग्य सात्यकी कैलातक नाम मदिरा पानकर ६२ अरुण नेत्र होकर महाशोभायमान हुआ फिर बड़ी प्रसन्नता से युक्त मद से चूर्ण और घूर्ण नेत्र सात्यकी वीरों के कांस्यपात्र को पाकर ६३ अग्नि के समान प्रकाशित द्विगुणित तेजवाला रथियों में श्रेष्ठ बाण समेत धनुष को गोदमें लेकर ६४ ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन किया हुआ कवच धारण किये लाजा अर्थात् धान की खील चन्दनादि सुगन्धित वस्तु और मालाओं से अच्छी रीति से अलंकृत कन्याओं करके अभिनन्दित ६५ युधिष्ठिर के दोनों चरणों को दोनों हाथों से दण्डवत् करके और युधिष्ठिर करके मस्तक पर सूंघा हुआ सात्यकी बड़े रथपर सवार हुआ ६६ उसके पीछे उन प्रसन्न हर्षित शरीर वायु के समान शीघ्रगामी अजेय आनन्द से प्रफुल्लित मुख सिन्धुदेशीय घोड़े उस विजय करनेवाले रथ को ले चले ६७ इसी प्रकार धर्मराज से पूजित भीमसेन भी युधिष्ठिर को दण्डवत् करके सात्यकी के साथ चले ६८ आपकी सेना में प्रवेशित होने को अभिलाषी शत्रुओं के विजय करनेवाले उन दोनों वीरों को देखकर आप के सब पुत्र जिनमें मुखिया द्रोणाचार्य थे नियतहुए ६९ तब वह प्रसन्नता से पूर्ण वीर सात्यकी कवच धारण किये पीछे चलनेवाले भीमसेन को देखकर उसको भी प्रसन्न करके प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाले वचन को बोला कि हे भीमसेन ! तुम राजा की रक्षाकरो यह कर्म तेरेही करने के योग्य माना है ७० । ७१ मैं इस काल से पकी हुई सेना में प्रवेश करूंगा और राजा की रक्षा करना वर्तमान और भविष्यत् दोनों कालों में कल्याण करनेवाली है ७२ हे शत्रुओं के पराजय करनेवाले, भीमसेन ! तुम मेरे पराक्रमको जानते हो और मैं तुम्हारी सामर्थ्य को जानता हूं इस हेतु से जो तुम मेरा हित चाहते हो तो लौटो ७३ सात्यकी के इस वचन को सुनकर भीमसेन सात्यकी से बोले हे पुरुषोत्तम ! तुम प्रयोजन सिद्ध करने के अर्थ यात्राकरो मैं राजा की रक्षा करूंगा ७४ इस रीति से कहाहुआ माधव सात्यकी भीमसेन से बोला कि हे पाण्डव ! तुम अवश्य जाओ निश्चय करके मेरीही विजय है ७५ क्योंकि जो

मेरी रक्षामें प्रीतिरखनेवाले तुम मेरी आधीनता में नियत हो और हे भीमसेन ! यह शुभशकुन भी मेरी विजयको सूचन करते हैं ७६ और इसी हेतुसे महात्मा अर्जुन के हाथसे पापी जयद्रथके मरनेपर मैं धर्मात्मा युधिष्ठिर से आकर मिलूंगा ७७ उस बड़े यशस्वी ने इतना कहकर भीमसेन को बिदाकरके आपकी सेना को इस प्रकार से देखा जैसे कि व्याघ्र मृगों के समूहों को देखता है ७८ हे राजन् ! सम्मुख देखते हुए उस सात्यकी को देखकर आपकी सेना अत्यन्त अचेत होकर फिर कम्पायमान हुई ७९ तदनन्तर अर्जुन के देखने का अभिलाषी वह सात्यकी धर्मराज की आज्ञा से अकस्मात् आपकी सेना की ओर चला ॥ ८० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वादशोपरिशततमोऽध्यायः ॥ ११२ ॥

एकसौतेरह का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! युद्धाभिलाषी होकर आपकी सेना की ओर सात्यकी के जानेपर सेना से युक्त धर्मराज १ द्रोणाचार्य के रथ को चाहनेवाले सात्यकी के पीछेचला २ उसके पीछे युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न और वसुदान पाण्डवीय सेना में पुकारे कि आवो २ प्रहारकरो शीघ्रता से ऐसे दौड़ो ३ जैसे कि युद्धदुर्मद सात्यकी सुखपूर्वक जाता है और बहुत से महारथी उसके पराजय करने में उपाय करते हैं ४ इस रीति से बोलतेहुए वह महारथी बड़ी तीव्रता से दौड़े वहां विजयाभिलाषी हम सबलोग उनके सम्मुखगये ५ उसके पीछे सात्यकी के रथपर बड़े शब्द हुए अर्थात् चारों ओर से वर्तमान दौड़तीहुई आप के पुत्र की सेना ६ यादव सात्यकी के हाथ से सैकड़ों प्रकार से छिन्नभिन्नहुई उस सेना के तितिर बितिर होजाने पर महारथी सात्यकी ने ७ सब सेनाओंके आगे बड़े धनुषधारी सात शूरवीरों को मारा हे महाराज ! फिर अनेक प्रकार के देशों के स्वामी अन्य २ राजालोगों को भी ८ अग्निरूप बाणों से यमलोक में पहुँचाया एक बाण से सौ को घायल किया और सौ बाणों से एक को ९ हाथी के सवारों समेत हाथियों को घोड़े के सवारों समेत घोड़ों को और घोड़े सारथियों समेत रथों को भी ऐसे मारा जैसे कि पशुओं को शिवजी मारते हैं १० आप की सेना के कोई भी शूरवीर लोग उस प्रकार अपूर्वकर्मी बाणरूपी वर्षा करने वाले सात्यकी के सम्मुख नहीं दौड़े ११ उन भयभीत घायल और लम्बी भुजा वाले सात्यकी से मलेहुए वीरों ने उस बड़े शूर प्रतापी को देखकर युद्धभूमि

को त्याग किया उसके तेज से अचेत उन लोगोंने उस अकेलेको अनेकप्रकार से देखा १२ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! मथेहुए टूटे नीढ़वाले रथ और टूटेहुए रथ, चक्र, गदा, छत्र, ध्वजा १३ अनुकर्ष, पताका, सुनहरी मुकुट, बाजूबन्द रखने वाली चन्दन से लिप्त भुजा १४ और हाथी के सूंड़ की समान सर्प के फणकी सूरत जङ्घाओं से पृथ्वी आच्छादित होगई १५ वह पृथ्वी उत्तम चक्षुवाले शूर वीरों के पड़ेहुए चन्द्रमा के समान प्रकाशित कुण्डलधारी मुखों से अग्नि के समान प्रकाशमान होगई १६ अनेक प्रकार से टूटे पर्वतों के समान पड़े हुए हाथियोंसे ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि पड़ेहुए पहाड़ोंसे शोभित होतीहै १७ मोतियों के जालों से अलंकृत सुनहरी ईशादण्डआदिक अपूर्व जेरबन्दों समेत घोड़े भी अपूर्व शोभायमान हुए १८ निर्जीव पृथ्वी को पाकर उस बड़ी भुजा वालेसे अत्यन्त मर्दित कियेगये फिर वह यादव सात्यकी आपकी अनेक प्रकार की सेनाओंको मारकर १९ और शेष सब सेनाको उच्छिन्नकरके आपकी सेना में घुसगया वहां जाकर सात्यकीने जिस मार्गसे कि अर्जुन गयाथा उसी मार्ग से जाना चाहा २० उसके पीछे द्रोणाचार्यसे रोकागया अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी भारद्वाज को पाकर ऐसे उल्लङ्घन करनेवाला नहीं हुआ २१ जैसे मर्यादाको समुद्र नहीं उल्लङ्घन करसक्ता फिर द्रोणाचार्य ने युद्ध में महारथी सात्यकी को रोक कर २२ मर्मभेदी तीक्ष्ण पांच बाणों से घायल किया हे राजन्! फिर सात्यकी ने भी उनको ऐसे सातबाणों से व्यथित किया २३ जोकि सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धार कङ्क और मोर के परों से संयुक्त थे फिर द्रोणाचार्य ने छःबाणों से घोड़े और सारथी समेत उसको घायलकिया २४ महारथी सात्यकी ने उन द्रोणाचार्य जी को नहीं सहा इसके पीछे सात्यकी ने सिंहनादकरके द्रोणाचार्य को व्यथित किया २५ और दूसरे चौबीस बाणों से द्रोणाचार्य को घायल करके भी फिर दशबाणों से घायलकिया २६ हे श्रेष्ठ! युद्ध में एकबाण से उनके सारथी को चारबाणों से चारों घोड़ों को और एकबाण से उनकी ध्वजा को भी काटा २७ फिर शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य ने टीड़ीदलों के समान तीक्ष्ण चलनेवाले बाणों से उसको घोड़े सारथी रथ और ध्वजा समेत ढकदिया २८ उसी प्रकार भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित सात्यकीने तीव्र चलनेवाले अनेक बाणों से द्रोणाचार्य को ढक दिया इसके पीछे द्रोणाचार्य बोले २९ कि

हे सात्यकिन् ! तेरा आचार्य तो मुझ लड़नेवाले को त्यागकरके नपुंसक के समान युद्ध को छोड़कर गया और परिक्रमा करी ३० हे माधव ! अब तुम मुझ से युद्ध करते जीवते नहीं जावोगे जो तुम भी अपने गुरु के समान मुझ को युद्ध में छोड़कर नहीं जावोगे तो ३१ सात्यकी बोला हे ब्रह्मन् ! आप का कल्याण हो मैं धर्मराज की आज्ञा से अर्जुन के खोजने को जाऊंगा मेरा समय व्यर्थ न होजाय ३२ आचार्यों का खोलाहुआ मार्ग सदैव शिष्यों से बर्ताव कियाजाता है इसहेतु से मैं उसीप्रकार शीघ्र जाता हूं जिस प्रकार से कि मेरे गुरु गये हैं ३३ सञ्जय बोले हे राजन् ! सात्यकी इतना कहकर आचार्यजी को त्याग करताहुआ चलने के समय सारथी से यह वचन बोला ३४ कि द्रोणाचार्य जी सबप्रकार से मेरे रोकने को उपाय करेंगे हे सूत ! युद्ध में सावधान होकर चल और इस उत्तम वचन को सुन ३५ कि अवन्तिदेशियों की यह सेना बड़ी प्रकाशमान दिखाई देती है और उसके पीछे यह दाक्षिणात्यों की बड़ी सेना दृष्टि पड़ती है ३६ उसके आगे बाह्लीक देशियों की भी वह बड़ी सेना और बाह्लीक देशियों के पास कर्ण की बड़ी सेना नियत है ३७ हे सारथे ! यह सब सेना एक दूसरे से पृथक् नियत हैं और युद्धभूमि में एक दूसरे की सहायता लेकर परस्पर रक्षा करती हैं ३८ सो हे सारथे ! इस अवकाश को पाकर अत्यन्त प्रसन्न के समान घोड़ों को चलायमान करो मध्यम तीव्रता में नियत होकर मुझ को वहां लेचल ३९ जहांपर कि नाना प्रकार के शस्त्रों के उठानेवाले बाह्लीक-देशीय और बहुत से वह दाक्षिणात्य जिनका अग्रगामी कर्ण है दिखाई देते हैं ४० और जहां पर नाना प्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले पदातियों से व्याप्त हाथी घोड़े और रथों से दुर्गम्य सेना दिखाई पड़ती है ४१ द्रोणाचार्य ब्राह्मण को त्याग करता हुआ सात्यकी अपने सारथी से इतना कहकर कि जो कर्ण की भयकारी बड़ी सेना है उसमें होकर चलो यह कहकर चलदिया ४२ फिर बहुत बाणों को फैलाते हुए क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य उस मुख न मोड़नेवाले जातेहुए महाभाग सात्यकी के पीछे चले ४३ वह सात्यकी तीक्ष्ण बाणों से कर्ण की बड़ी सेना को घायल करके उस भरतवंशियों की सेना में प्रवेश कर गया जोकि असंख्यात थी ४४ फिर चलायमान सेना के मध्य में सात्यकी के प्रवेशित होजाने पर क्रोधयुक्त कृतवर्मा ने सात्यकी को रोका ४५ पराक्रमी

सात्यकी ने छःबाणों से उस आतेहुए कृतवर्मा को घायल करके चार बाणों से उसके चारों घोड़ों को घायल किया ४६ इसके पीछे सात्यकी ने तीव्र चलाने वाले सोलह बाणों से कृतवर्मा को छाती के मध्य में फिर घायल किया ४७ हे महाराज ! यादव सात्यकी के अत्यन्त प्रकाशवान् अनेक बाणों से घायल उस कृतवर्मा ने सहनता नहीं की ४८ उस सात्यकी ने टेढ़े चलनेवाले वायु के समान वत्सदन्तनाम बाण को धनुषपर चढ़ाकर कानतक खैंचकर छाती पर घायलकिया ४९ वह सुन्दर पुङ्ख और पक्षवाला शायकनाम बाण उसके शरीर के कवच को छेदकर रुधिर में लिप्त होकर पृथ्वी में प्रवेश कर गया ५० हे राजन् ! इसके पीछे उत्तम अस्त्र के ज्ञाता कृतवर्मा ने सात्यकी के धनुष को बाणों के समूहों समेत अपने बहुत से बाणों से काटा ५१ हे राजन् ! इसके पीछे अत्यन्त क्रोध करके दूसरे दश तीक्ष्णबाणों से सत्यपराक्रमी सात्यकी को छाती के मध्य में घायलकिया ५२ तब धनुष के टूटनेपर शक्तिमानों में श्रेष्ठ सात्यकी ने अपनी शक्ति से कृतवर्मा की दाहिनी भुजा को घायल किया ५३ इसके पीछे सात्यकी ने अत्यन्त दृढ़ पूर्ण धनुष को चलाकर बड़ी शीघ्रता से हज़ारों हीं बाणों को छोड़ा ५४ इसके पीछे भी सात्यकी ने हार्दिक्य के पुत्र कृतवर्मा को रथ समेत चारों ओर से ढकदिया और बाणों से ढककर ५५ फिर उसके सारथी के शिर को भल्ल से काटा फिर मृतक सारथी कृतवर्मा के बड़े रथ से गिर पड़ा ५६ तदनन्तर सारथी से रहित वह घोड़े अत्यन्त भागे फिर तो भ्रान्ति से युक्त भोजवंशीय वीर कृतवर्मा आपही घोड़ों को पकड़कर ५७ धनुष हाथ में लेकर नियत हुआ सेना के लोगों ने उसकी प्रशंसा करी उसने एक मुहूर्त दम लेकर उन उत्तम घोड़ों को चलायमान किया ५८ और बड़ी निर्भयता से शत्रु के भय को उत्पन्न किया सात्यकी वहां से चलदिया और वह कृतवर्मा भीमसेन के सम्मुख गया ५९ हे महाराज ! कृतवर्मा की सेना से बाहर निकला हुआ सात्यकी भी बड़ी शीघ्रता से काम्बोजदेशियों की बड़ी सेना को गया ६० वहां बहुत से शूरवीर महारथियों से रोका हुआ वह सत्य पराक्रमी सात्यकी कम्पायमान नहीं हुआ ६१ युद्ध में उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य सेना को नियत स्थान पर नियत करके कृतवर्मापर भार को रखकर युद्ध की इच्छा से सात्यकी के सम्मुख गये ६२ पाण्डवीय सेना में प्रसन्नचित्त बड़े शूरवीरों ने इस प्रकार सात्यकी

के पीछे दौड़नेवाले द्रोणाचार्य को रोका ६३ फिर जिनका अग्रगामी भीमसेन है वे साहसी पाञ्चालदेशीय रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठ कृतवर्मा को पाकर ६४ और पराक्रम करके उस वीर कृतवर्मा से रोकेहुए उन सब उपाय करनेवाले कुछेक विमनलोगों को ६५ बाणों के समूहों से चारोंओर से थकी सवारीवाला किया कृतवर्मा की सेना को चाहनेवाले वह वीर युद्ध में उस भोजवंशीय से रुके हुए ६६ कुलीनों के समान बड़े सुयश को चाहते नियत हुए॥ ६७॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयोदशोपरिशततमोऽध्यायः॥ ११३॥

एकसौचौदह का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! ऐसी असंख्य सेना और ऐसे २ अगणित शूर वीर और इस रीति के न्याय के अनुसार रचे हुए व्यूहवाली अगणित सेना १ सदैव हम लोगों से पारितोषिक पानेवाली प्रतिदिन हम से प्रीति रखनेवाली अत्यन्त वृद्धियुक्त अपूर्वरूप प्रथमही से दृढ़ पराक्रम रखनेवाली २ न बहुत वृद्ध न बालक न दुर्बल न स्थूल चित्तरोचक चाल चलने की वृद्धि रखनेवाली उत्तम नीरोग अङ्गवाली शरीरों में कवच धारण किये बहुत शस्त्रादिक सामानों से अलंकृत शस्त्रविद्याओं में बड़ी कुशल ३। ४ चढ़ने उतरने चलने और समय पाकर अच्छी रीति से प्रहार करने सम्मुखजाने और हट जाने में सावधान ५ हाथी घोड़े और रथों की सवारियों में अच्छे परीक्षा कियेहुए और परीक्षा लेकर न्याय के अनुसार मासिक पानेवाले ६ और न केवल बातचीत सेवा और नातेदारी के कारण से नियत होनेवाले और दैव इच्छा से किसी से न मिलनेवाले मेरी सेना के लोग थे ७ और कुलीन श्रेष्ठ लोगों से संयुक्त प्रसन्न प्रफुल्लित नम्र कार्यकर्ता यशस्वी साहसी ८ उत्तम पवित्रकर्मी लोकपालोंके समान नरोत्तम दूसरे अनेक मन्त्रियों से रक्षित ९ अपनी इच्छा से सेना और पीछे चलने वालों समेत हमारे पास २ आनेवाले हमारे हित करने के अभिलाषी बहुत से राजाओं से रक्षित १० चारों ओर से नदियों से पूर्णहुए समुद्र के समान पक्षियों के समान विना पक्षवाले रथ घोड़ों से युक्त ११ और गण्डस्थलों से मद झाड़नेवाले हाथियों से संयुक्त मेरी बड़ी सेना जो मारीगई इसमें प्रारब्ध के सिवाय दूसरी बात क्या है १२ शूरवीररूपी अविनाशी जल रखनेवाले भयकारी सवारीरूप लहरों से युक्त यन्त्र, खड्ग, गदा, शक्ति, बाण और प्रासरूप मछ-

लियों से व्याप्त १३ ध्वजाओं के आभूषणों से दुर्गम्य रत्नरूप पाषाणों से युक्त दौड़नेवाली सवारियां रूप वायु की तीव्रता से कम्पायमान द्रोणाचार्यरूप गम्भीर पातालवाले कृतवर्मारूपी महाह्रदवाले बड़े राजा जलसिन्धु रूपी बड़े ग्राहवाले कर्णरूपी उदयमान चन्द्रमा से उन्नत होनेवाले समुद्र की समान सेना है १४ । १५ हे सञ्जय ! तीव्रता से मेरी समुद्ररूप सेना को पराजय करके एक रथ के ही द्वारा अर्जुन और सात्यकी के जानेपर १६ उस सेना में अर्जुन और बड़े रथी यादव सात्यकी के पहुँचनेपर मैं अपनी शेष रहीहुई सेना को भी बचता नहीं देखता हूं १७ वहां सब को उल्लङ्घन कर जानेवाले तीव्रगामी उन दोनों को देखकर गाण्डीव के लक्ष्य में राजा जयद्रथ को देखकर १८ काल से प्रेरित कौरवों ने किस कर्म को किया उस अत्यन्त भयकारी समयपर वह लोग किस रीति से कर्म करनेवाले हुए १९ हे तात ! मिले हुए कौरवों को काल से निगला हुआ मानता हूं उन्होंका पराक्रम भी युद्ध में वैसा नहीं दिखाई देता है २० वहां युद्ध में श्रीकृष्णचन्द्रजी और अर्जुन विना घायलही सेना में पहुँच गये हे सञ्जय ! यहां उन दोनों का रोकनेवाला कोई नहीं है २१ और ऐसे बहुत से शूरवीर मारे गये जो महारथी परीक्षा लेकर योग्यता के समान मासिकादि से पोषण किये गये और बहुत से मीठे वचनों से प्रसन्न कियेहुए २२ हे तात ! मेरी सेना में आदर सत्कार से कोई भी रहित नहीं है अपने २ कर्म के अनुसार मासिकआदि प्रतिदिन का सब खर्च मिलता है २३ हे सञ्जय ! मेरी सेना में कोई न लड़नेवाला व थोड़ा पारितोषिक पानेवाला और विना मासिक का कोई भी मनुष्य नहीं होगा २४ मैंने सामर्थ्य के अनुसार सब को दान मान और सत्कारादिकों से प्रसन्न किया हे तात ! इसी प्रकार सजातीय बान्धवों के साथ अपने इष्ट मित्रों को भी मेरे पुत्रों ने प्रसन्न किया है २५ उन को युद्ध में पाकर अर्जुन ने विजयकिया और सात्यकी से मर्दित किये गये इसमें प्रारब्ध के सिवाय और कौन सी बात समझना चाहिये २६ हे सञ्जय ! जो युद्ध में रक्षित कियाजाता है और जो रक्षा करनेवाला है रक्षकों समेत रक्षितों का साधारण एकही मार्ग है २७ युद्ध में जयद्रथ के सम्मुख अर्जुन को नियत देखकर अत्यन्त निर्बुद्धि मेरे पुत्र ने किस कर्म को किया २८ और युद्ध में निर्भय के समान प्रवेश करनेवाले सात्यकी को देखकर दुर्योधन ने

समय के अनुसार किस कर्म को माना २९ सब शत्रों को उल्लङ्घन करके चल-
नेवाले रथियों में श्रेष्ठ उन दोनों को सेना में पहुँचनेवाला देखकर मेरे पुत्रों ने
क्या बुद्धि करी ३० मैं मानता हूं कि अर्जुन के निमित्त नियत श्रीकृष्णजी को
और शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी को देखकर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३१ मैं मा-
नता हूं कि सात्यकी अर्जुन से उल्लङ्घन की हुई सेना को और भागनेवाले कौरवों
को देख कर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३२ मैं यह भी मानता हूं कि मेरे पुत्र रथ
सवारों को पृथक् २ और शत्रु को विजय करने में असाहसी होकर भागने में
प्रवृत्तचित्त देखकर शोच करते हैं ३३ यह भी अनुमान करता हूं कि मेरे पुत्र
यादव सात्यकी और अर्जुन से खाली कियेहुए रथ के बैठने के स्थानों को और
मृतक शूरवीरों को देखकर शोच करते हैं ३४ यह भी अनुमान होता है कि
मेरे पुत्र युद्ध में हज़ारों घोड़े हाथी रथ और वीरों को व्याकुलचित्त दौड़ताहुआ
देखकर शोचते हैं ३५ यह भी मानता हूं कि अर्जुन के बाणों से घायल भा-
गतेहुए बड़े २ हाथी और गिरतेहुए अनेक हाथियों को देखकर मेरे पुत्र शोच
करते हैं ३६ मैं मानता हूं कि वहां सात्यकी और अर्जुन के सवारों से विहीन
कियेहुए घोड़े और रथ से विहीन कियेहुए मनुष्यों को देखकर मेरे पुत्र शोच
करते हैं ३७ मैं मानता हूं कि युद्ध में सात्यकी और अर्जुन के मारेहुए और
जहां तहां से भागतेहुए घोड़ों के समूहों को देखकर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३८
मैं मानता हूं कि युद्ध में सब प्रकार से दौड़ते समूहों के पतियों को देखकर वि-
जय से निराश होकर मेरे सब पुत्र शोच करते हैं ३९ मैं मानता हूं कि यह
एक क्षणभर में ही द्रोणाचार्य की सेना को उल्लङ्घन करनेवाले महाविजयी
दोनों अजेय वीरों को देखकर मेरे पुत्र शोक में डूब रहे हैं ४० हे तात!
सात्यकी समेत मेरी सेना में प्रवेश करनेवाले इनदोनों अजेय श्रीकृष्ण और
अर्जुन को सुनकर अत्यन्त अचेत हूं ४१ शिनियों में अत्यन्त उत्तम रथी उस
सात्यकी के सेना में आजाने और कृतवर्मा की सेना के उल्लङ्घन करनेपर कौ-
रवों ने क्या किया ४२ इसी प्रकार उस युद्ध में पाण्डवों के रोकेजाने पर कैसे
प्रकार का युद्ध हुआ हे सञ्जय! वह सब मुझ से वर्णनकरो ४३ निश्चय करके
द्रोणाचार्य पराक्रमी और श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ होकर युद्ध में दुर्मद हैं ऐसे बड़े धनुषधारी
वीर को उस युद्ध में कैसे घायल किया ४४ अर्जुन की विजय चाहनेवाले वह

लोग द्रोणाचार्य से शत्रुता करनेवाले हैं इसीहेतु से भरद्वाज का पुत्र महारथी द्रोणाचार्य उनसे कठिन शत्रुता करनेवाले हैं ४५ अर्जुन ने भी जयद्रथ के मारने में जो २ कर्म किये वह सब भी मुझ से कहो क्योंकि हे सञ्जय ! तुम वर्णन करने में बड़े कुशल हो ४६ सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ, वीर, धृतराष्ट्र ! तुम अपने ही अपराध से उत्पन्न होनेवाले दुःखों को पाकर साधारण मनुष्य के समान शोच करने के योग्य नहीं हो ४७ पूर्व समय में अत्यन्त बुद्धिमान् विदुर आदिक शुभचिन्तकों ने जो तुमको समझाया था कि तुम पाण्डवों को मत त्यागकरो हे राजन् ! उनके वचनों को तुमने नहीं सुना निश्चय है कि जो अपनी वृद्धि चाहनेवाला मनुष्य अपने शुभचिन्तकों की बातों को नहीं सुनता है वह बड़े दुःखों को पाकर ऐसे शोचता है जैसे कि तुम शोचते हो ४८ । ४९ हे राजन् ! पूर्व समय में सन्धि के विषय में श्रीकृष्णजी ने भी आप से अनेक प्रकार की प्रार्थना की थी उस समय बड़े यशस्वी श्रीकृष्णजी ने भी उस मनोरथ को नहीं पाया अर्थात् तुमने उनके भी कहने को नहीं माना ५० तुम्हारी अगुणता पुत्रों का पक्ष और धर्म में अदृढ़ता और पाण्डवों के ऊपर ईर्षा जानकर ५१ और श्रेष्ठ पाण्डवों में तेरी कुटिलता पूर्वकबहुत पीड़ा के शब्दों को जानकर ५२ सब लोकों के मूल के जाननेवाले सर्वेश्वर प्रभु वासुदेवजी ने कौरवों के महायुद्ध को किया ५३ हे बड़ाई देनेवाले ! तुमने अपने बहुत बड़े अपराध से बड़ेभारी नाश को पाया यह अपराध दुर्योधन में लगाने के योग्य नहीं है ५४ हे भरतवंशिन् ! आदि अन्त में आगे पीछे से तुम्हारा कुछ शुभकर्म नहीं दिखाई देताहै इससे तुम पराजय के मूलहो ५५ इस हेतुसे चित्त में दृढ़ता करके और लोक की मूलदशा को जानकर देवासुर युद्ध के समान भयकारी युद्ध जैसे जारीहुआ उसको सुनो ५६ आपकी सेना में सत्यपराक्रमी सात्यकी के प्रवेश करनेपर भीमसेन आदिक पाण्डव आपकी सेना के सम्मुख गये ५७ महारथी अकेले कृतवर्मा ने उन क्रोध के रूप पीछे चलनेवालों समेत अकस्मात् आतेहुए पाण्डवों को रोका ५८ निश्चय करके जैसे उठेहुए समुद्र को मर्यादा रोकती है उसी प्रकार कृतवर्मा ने युद्ध में पाण्डवी सेना को रोका ५९ वहां हमने कृतवर्मा के अपूर्व पराक्रम को देखा कि जिसको पाण्डवों ने एक साथ होकर भी युद्ध में उल्लङ्घन नहीं किया ६० इसके पीछे सब पाण्डवों को

प्रसन्नकरते महाबाहु भीमसेन ने तीव्र चलनेवाले तीनबाणों से कृतवर्मा को छेद कर शङ्ख को बजाया ६१ फिर सहदेव ने बीसबाण से धर्मराज ने पांचबाण से और नकुल ने भी सौ बाणों से कृतवर्मा को घायल किया ६२ द्रौपदी के पुत्रों ने तिहत्तरबाणों से घटोत्कच ने सातबाणों से और धृष्टद्युम्न ने तीन बाणों से कृतवर्मा को पीड़ित किया ६३ विराट और यज्ञसेनके पुत्र द्रुपद ने पांचबाणों से और शिखण्डी ने कृतवर्मा को पांचबाणों से छेदकर ६४ फिर भी हँसते २ बीस शायकों से घायल किया हे राजन्! इसके पीछे कृतवर्मा ने सब ओर से उन प्रत्येक महारथियों को ६५ पांच २ बाणों से घायल करके सात बाणों से भीमसेन को व्यथित किया और उसके धनुष और ध्वजा को भी पृथ्वीपर गिराया ६६ फिर शीघ्रता करनेवाले क्रोधयुक्त उसी महारथी ने सत्तरि तीक्ष्णबाणों से टूटे धनुषवाले भीमसेन को छातीपर घायल किया ६७ तब रथ में बैठा पराक्रमी भीमसेन कृतवर्मा के उत्तम बाणों से अत्यन्त घायल होकर ऐसे कम्पायमान हुआ जैसे कि पृथ्वी के कँपने से पर्वत कम्पितहोता है ६८ हे राजन्! उन पाण्डवों ने जिनके अग्रगामी धर्मराज थे उस दशावाले भीमसेन को देखकर बाणोंके द्वारा कृतवर्मा को पीड्यमान किया ६९ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! उन प्रसन्नचित्तों ने उस कृतवर्मा को अपने रथसमूहों से इस प्रकार घेरकर युद्ध में भीमसेन की रक्षा के निमित्त शायकों से घायल किया ७० इसके पीछे महाबली भीमसेन ने चेतको पाकर सुनहरी दण्ड रखनेवाली लोहे की शक्ति को लिया ७१ और शीघ्र ही अपने रथ से कृतवर्मा के रथपर फेंका भीमसेन के हाथ से छोड़ीहुई वह कांचली से छूटेहुए सर्प की समान ७२ अत्यन्त भयकारी शक्ति कृतवर्मा के सम्मुख आकर अग्नि के समान प्रज्वलित हुई तब कृतवर्माने उस प्रलयकाल के समान प्रकाशमान अकस्मात् आती हुई शक्ति को ७३ दो बाणों से बीच में से दो खण्ड किये वह सुवर्णसे जटित शक्ति खण्ड २ होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ७४ हे राजन्! वह दिशाओंको प्रकाशित करतीहुई शक्ति ऐसे गिरी जैसे कि आकाशसे गिरी हुई बड़ी उल्का होती है भीमसेन उस शक्ति को टूटीहुई देखकर अत्यन्त क्रोध युक्त हुआ ७५ इसके पीछे युद्ध में क्रोधभरे भीमसेन ने वेगवान् बड़े शब्द वाले दूसरे धनुष को लेकर कृतवर्मा को रोका ७६ हे राजन्! आपकी कुमति से पराक्रमी भीमसेन ने पांचबाणों से छाती के मध्य में कृतवर्मा को व्यथित

किया ७७ हे श्रेष्ठ ! फिर भीमसेन के हाथ से घायल हुए सब अङ्ग वह कृतवर्मा युद्धभूमि में फूलेहुए लाल अशोक वृक्ष के समान शोभायमान हुआ ७८ इसके पीछे क्रोधयुक्त हँसतेहुए कृतवर्मा ने तीन बाणों से भीमसेन को घायल करके युद्ध में उनसब को भी अत्यन्त घायल किया ७९ बड़े धनुषधारी कृतवर्मा ने उन उपाय करनेवाले महारथियों को तीन २ बाणों से व्यथित किया उन्हों ने भी उसको सात २ बाणों से घायलकिया ८० इसके पीछे हँसतेहुए क्रोधयुक्त महारथी यादव कृतवर्मा ने युद्ध में क्षुरप्रनाम बाण से शिखण्डी के धनुष को काटा ८१ फिर धनुष के टूटनेपर क्रोधयुक्त शीघ्रता करनेवाले शिखण्डी ने युद्ध में खड्ग को हाथ में लिया और सौ चन्द्रमा रखनेवाली प्रकाशित ८२ सुवर्ण से अलंकृत बड़ी ढाल को घुमाकर उस खड्ग को कृतवर्माके रथपर चलाया ८३ हे राजन् ! वह बड़ा खड्ग उसके बाण समेत धनुष को काटकर पृथ्वीपर ऐसा गिरपड़ा जैसे कि आकाश से गिराहुआ नक्षत्र ८४ उसी समय पर युद्धमें शीघ्रता करनेवाले उन महारथियों ने कृतवर्मा को शायकों से अत्यन्त घायल किया ८५ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे शत्रुहन्ता कृतवर्माने उस टूटे हुए बड़े धनुषको त्यागके अन्य दूसरे धनुष को लेकर ८६ युद्ध में तीन २ बाणों से पाण्डवों को घायल किया और आठ बाणों से शिखण्डी को घायल किया ८७ फिर बड़े यशस्वी शिखण्डी ने दूसरे धनुष को लेकर कच्छप के नखाकारक लक रखने वाले बाणों से हार्दिक्य के पुत्र कृतवर्मा को रोका ८८ इसके पीछे युद्धमें क्रोध युक्त कृतवर्मा तीव्रता से उस याज्ञसेन के पौत्र महारथी शिखण्डी के सम्मुख गया ८९ हे राजन् ! वह शूर युद्ध में महात्मा भीष्मजी के मरने के कारण शिखण्डी को अपना पराक्रम दिखलाता हुआ ऐसे चला जैसे कि शार्दूल हाथीपर जाता है ९० वह दोनों दिग्गजों के समान अग्नि के समान ज्वलित शत्रुओं के पराजय करनेवाले कृतवर्मा और शिखण्डी बाणों की परस्पर वर्षा करतेहुए दोनों परस्पर सम्मुख दौड़े ९१ उत्तम धनुषों को चलायमान करते शायकों को धनुषों पर चढ़ाते हुए जैसे कि सूर्य अपनी किरणों को छोड़ता है उसी प्रकार सैकड़ों बाणों को छोड़ते ९२ और बाणों की तीव्रता से परस्पर सन्तप्त करते दोनों महारथी वीर प्रलयकालीन दो सूर्यों के समान शोभायमान हुए ९३ कृतवर्मा ने युद्ध में महारथी शिखण्डी को तिहत्तर बाणों से घायल करके फिर

साते बाणों से घायल किया ९४ वह कठिन घायल पीड़ित मूर्च्छा में डूबाहुआ धनुष बाण को छोड़कर रथ के बैठने के स्थानपर बैठ गया ९५ हे पुरुषोत्तम! आप के शूरवीरों ने युद्ध में उसको व्याकुल देखकर कृतवर्मा की प्रशंसाकरी और कपड़ों को हलाया ९६ शीघ्रता करनेवाला सारथी कृतवर्मा के बाणों से पीड्यमान महारथी शिखण्डी को उस दशा में युक्त जानकर युद्धभूमि से दूर लेगया ९७ उस रथ के बैठने के स्थानपर शिखण्डी को पीड्यमान जान कर पाण्डवों ने रथों के द्वारा शीघ्रही कृतवर्मा को घेरलिया ९८ वहांपर महारथी कृतवर्मा ने बड़ा अपूर्व कर्म किया जो अकेले नेही साथियों समेत पाण्डवों को युद्ध में रोका ९९ महारथी कृतवर्मा ने पाण्डवों को विजय करके चन्देरी पाञ्चाल सृञ्जय और केकयदेशीय महापराक्रमी शूरवीरों को भी विजय किया १०० कृतवर्मा से घायल इधर उधर दौड़नेवाले पाण्डवों ने युद्ध में धैर्य नहीं किया १०१ वह हार्दिक्य का पुत्र कृतवर्मा भीमसेनादिक पाण्डवों को युद्धमें विजय करके निर्धूम अग्नि के समान युद्ध में नियत हुआ १०२ युद्ध में कृतवर्मा से भागे हुए बाणों की वर्षा से पीड्यमान वह सब महारथी मुखों को फेरगये ॥ १०३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ ११४ ॥

एकसौपन्द्रह का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! चित्त को स्थिरकरके सुनो जैसे कि महात्मा कृतवर्मा से उस सेना के भागनेपर १ और अत्यन्त प्रसन्न आपके शूरवीरों के कारण से भी लज्जा से नीचा शिर करनेपर अथाह में थाह चाहनेवाले पाण्डवों का जो द्वीप अर्थात् रक्षाश्रय हुआ २ हे श्रेष्ठ! बड़े युद्ध में आपके शूरवीरों के उस भयकारी शब्द को सुनकर सात्यकी शीघ्रही कृतवर्मा के सम्मुख आया ३ वहां क्रोध और अधैर्य से युक्त सात्यकी अपने सारथी से बोला कि हे सूत! मेरे उत्तम रथ को कृतवर्मा के सम्मुख कर ४ और देख यह क्रोधयुक्त होकर पाण्ड-वीय सेना को नाश करता है हे तात! इसको विजय करके अर्जुन के पास जाऊंगा ५ हे बड़े ज्ञानिन्, धृतराष्ट्र! इस वचन के कहने पर उसका सारथी एक पल भर मेंही कृतवर्मा के सम्मुख गया ६ अत्यन्त क्रोधयुक्त हार्दिक्य के पुत्र कृतवर्मा ने तीक्ष्ण बाणों से सात्यकी को ढका उस कारणसे वह सात्यकी क्रोध-

रूप हुआ ७ फिर सात्यकी ने युद्ध में शीघ्रही तीक्ष्ण भल्ल को कृतवर्मा के ऊपर चलाया और दूसरे ऐसे चारबाणों को भी फेंका ८ कि जिन्हों ने उसके घोड़ों को मारा और भल्ल से उसके धनुष को काटा और इसी प्रकार पृष्ठरक्षक और सारथी को भी तीक्ष्ण बाणों से छेदा ९ इसके पीछे सत्यपराक्रमी सात्यकी ने उसको विरथ करके गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उसकी सेना को पीड्यमान किया १० तब सात्यकी के बाणों से पीड़ित होकर सेना पृथक् २ होगई यह सब काम करके वह सत्यपराक्रमी सात्यकी शीघ्रतासे चलदिया ११ हे राजन्! वह सात्यकी इस प्रकार से आपकी सेना में कर्म कर और द्रोणाचार्य की समुद्र-रूपी सेना को उल्लङ्घन करके १२ अत्यन्त प्रसन्नचित्त से युद्ध में कृतवर्मा को पराजय करके सारथी से बोला कि भय और व्याकुलतासे रहित होकर धीरे २ चलो १३ और रथ, घोड़े, हाथी और पदातियों से पूर्ण आपकी उस सेना को देखकर फिर सारथी से बोला १४ कि द्रोणाचार्य की सेना के बाईं ओर जो यह बादलरूपी बड़ीभारी हाथियोंकी सेना है जिसका मुख सुवर्ण का रथ रखनेवाला वीर है १५ हे सूत! यह बहुत से शूरवीर युद्ध में कठिनता से हटाने के योग्य और मेरे निमित्त जीवन के त्यागनेवाले दुर्योधन के आज्ञावर्ती १६ सब बड़े धनुषधारी और सिंह के समान लड़नेवाले सुवर्णजटित ध्वजाधारी त्रिगर्तदे-शियों के बड़े रथी राजकुमार १७ वीर युद्धाभिलाषी मेरे सम्मुख नियत हैं हे सारथे! अब घोड़ों को चलायमान करके मुझको वहां पहुँचा दे १८ मैं भारद्वाज द्रोणाचार्य के देखते हुए त्रिगर्त देशियों से लड़ूंगा इसके पीछे यादव सात्यकी के विचार में नियत होकर सूत बड़े धैर्य से १९ सूर्यवर्ण प्रकाशित पताकाधारी रथ की सवारी से चला सारथी के आज्ञाकारी और अपनी गति से चलने वाले २० युद्ध में वायु के वेग के समान कुन्द नाम फूल और चन्द्रमा और चांदी के समान प्रकाशमान उत्तम घोड़े उसको लेचले तदनन्तर तीक्ष्ण छेदने वाले नानाप्रकार के तीक्ष्ण शायकों को फैलाते शूरों ने सिंहवर्ण उत्तम घोड़ों की सवारी से युद्ध में आतेहुए उस सात्यकी को सब ओर से हाथियों की से-नाओं के द्वारा आकर घेरलिया २१ । २२ यादव सात्यकी ने भी तीव्रबाणों के द्वारा हाथियों की सेनासे ऐसा युद्ध किया जैसे कि, वर्षाऋतु में बड़ा बादल अपनी वर्षा से बड़े पहाड़ों के ऊपर वर्षा करता है २३ शिनियों में वीर सात्यकी

से प्रेरित वज्र और बिजली के स्पर्श के समान बाणों से घायलहुए हाथी युद्ध को त्याग २ कर भागे २४ हे राजन्! टूटे दाँत रुधिर में लिप्त टूटे मस्तक गिरेहुए कान मुख ध्वजा सारथी और पताकाओं से रहित २५ टूटे कवच घण्टे टूटीहुई बड़ी ध्वजा कम्बल से रहित और मृतक सवारीवाले हाथी दिशाओं को भागे २६ यादव सात्यकी के नाराच, वत्सदन्त, भल्ल, अञ्जुलिक, क्षुरप्र और अर्धचन्द्रनाम बाणों से खण्ड २ अङ्ग बादल के समान शब्दकरनेवाले हाथी नाना प्रकार के शब्दों को करते रुधिर मूत्र और विष्ठा को छोड़ते हुए भागे २७। २८ और बहुत से हाथी घूमनेवाले और चेष्टा करनेवाले हुए और कितनेही पृथ्वी पर गिरपड़े इसी प्रकार बहुत से मृतकप्राय होगये इस प्रकार से वह हाथियों की सेना महापीड्यमान हुई २९ अग्नि और सूर्य के समान बाणों से चारों ओर को भागे उस हाथियों की सेना के मरनेपर बड़े पराक्रमी और उपाय करनेवाले जलसिन्धु ने ३० चांदीवर्णके घोड़े रखनेवाले सात्यकी के रथपर अपने हाथी को पहुँचाया वह जलसिन्धु स्वर्णमयी कवचधारी शूरवीर सुवर्ण के बाजूबन्दों समेत पवित्र ३१ कुण्डल मुकुट और खड्ग रखनेवाला लालचन्दन से लिप्ताङ्गशिर पर स्वर्णनिर्मित प्रकाशित मालाधारी ३२ छाती पर निष्क और प्रकाशित कण्ठसूत्र को धारणकर्ता हाथी के मस्तकपर स्वर्णमयी धनुष को चलायमान करता ३३ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली समेत बादल होताहै राजा मगधके अकस्मात् आतेहुए उस उत्तम हाथीको ३४ सात्यकी ने ऐसे रोका जैसे कि समुद्र को मर्यादा रोकती है हे राजन्! सात्यकी के उत्तम बाणों से रुकेहुए उस हाथी को देखकर ३५ बड़ा पराक्रमी जलसिन्धु युद्ध में क्रोधरूप हुआ इसके अनन्तर क्रोधयुक्त जलसिन्धु ने भार के साधने वाले बाणों से ३६ शिनी के पौत्र को छातीपर घायल किया इसके पीछे विष में बुझायेहुए तीक्ष्ण दूसरे भल्ल से ३७ वृष्णियों में वीर धनुषधारी सात्यकी के धनुष को काटा हे भरतवंशिन्! फिर उस हँसतेहुए मगधदेशीय वीर ने उस टूटे धनुषवाले सात्यकी को पांच तीक्ष्ण बाणों से घायल किया जलसिन्धु के बहुत बाणों से घायल वह पराक्रमी ३८। ३९ महाबाहु कम्पायमान नहीं हुआ यह आश्चर्य सा हुआ बाणों को ध्यान न करते पराक्रमी सात्यकी ने दृढ़ता और विश्वास समेत ४० दूसरे धनुष को लेकर तिष्ठ २ इस शब्द को कहा सात्यकी

ने इतना कहकर जलसिन्धुको वह बृहद्वक्षस्स्थल पर ४१ साठबाणोंसे अत्यन्त घायल किया और हँसतेहुए ने अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र से जलसिन्धु के बड़े धनुष को मुष्टि के स्थानपर काटा ४२ और तीन बाणों से घायल किया फिर जल-सिन्धु ने उस धनुष को बाणसमेत त्यागकरके ४३ शीघ्रही सात्यकी के ऊपर तोमर को छोड़ा वह भयकारी तोमर उस बड़े युद्ध में सात्यकी की वाम भुजा को छेदकर ४४ बड़े सर्प के समान श्वास लेता पृथ्वीपर गिरपड़ा फिर वाम भुजा के छेदनेपर सत्यपराक्रमी सात्यकी ने ४५ तीस तीक्ष्ण विशिखों से जल-सिन्धु को घायल किया इसके पीछे बड़े पराक्रमी जलसिन्धु ने खड्ग को ले कर ४६ और सौ चन्द्रमाओं से युक्त बड़ी उत्तम ढाल को लेकर खड्ग को घुमा कर सात्यकी पर छोड़ा ४७ वह खड्ग सात्यकी के धनुष को काटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा और पृथ्वीपर गिरकर बनेठी के समान शोभायमान हुआ ४८ फिर सात्यकी ने सब शरीर के चीरनेवाले शाल की शाखा के रूप इन्द्रवज्र के स-मान शब्दायमान दूसरे धनुष को लेकर ४९ क्रोध से टङ्कारकर बाण के द्वारा जलसिन्धु को घायल किया इसके पीछे मधुदेशियों में श्रेष्ठ हँसतेहुए सात्यकी ने जलसिन्धु की भूषणों से अलंकृत दोनों भुजाओं को क्षुरप्रनाम दो बाणों से काटा फिर वह परिघ के समान उसकी दोनों भुजा उस उत्तम हाथी के ऊपर से पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ीं ५० । ५१ जैसे कि पर्वत से गिरेहुए पांचशिरवाले दो सर्प इसके पीछे सात्यकी ने सुन्दरदाढ़ और कुण्डलों से शोभित ५२ उसके बड़े उत्तम शिर को तीसरे क्षुरप्रनाम बाण से काटा जलसिन्धु के उस भयकारी दर्शन वाले धड़ ने जिसके शिर और भुजा काटडाले थे हाथीको रुधिरसे सींचा ५३ हे राजन् ! युद्धभूमि में जलसिन्धु को मारकर शीघ्रता करनेवाले सात्यकी ने विमान को हाथी के कन्धे से गिराया ५४ जलसिन्धु का हाथी रुधिर में भरा हुआ लटकते और चिपटेहुए उत्तम आसन को लेचला ५५ यादव के बाणों से पीड्यमान वह बड़ा हाथी अपनी सेना को पीड़ित और मर्दन करताहुआ बड़े भयकारी शब्दोंको करताहुआ भागा ५६ हे श्रेष्ठ ! फिर वृष्णियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी के हाथ से मरेहुए जलसिन्धु को देखकर आपकी सेना में बड़ा हाहाकार हुआ ५७ आपके शूरवीर भागने में प्रवृत्तचित्त शत्रुओं के विजय करने में असाहसी और मुख मोड़ २ कर चारों ओर से भागे ५८ इसी अन्तर में शस्त्र-

धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से महारथी सात्यकी के सम्मुख गये ५६ बड़े २ कौरवलोग उस प्रकार के पराक्रम करनेवाले सात्यकी को देखकर द्रोणाचार्य के साथ क्रोधरूप सात्यकी के सम्मुख गये ६० इसके पीछे यादव सात्यकी द्रोणाचार्य और कौरवों का युद्ध महाभयकारी देवासुरों के युद्ध के समान जारीहुआ ॥ ६१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चदशोपरिशततमोऽध्यायः ॥ ११५॥

एकसौसोलह का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, बाणसमूहों के फैलानेवाले सावधान प्रहारकर्ता और शीघ्रता करनेवाले उन सब ने सात्यकी से युद्ध किया १ द्रोणाचार्य ने सत्तर तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसको घायल किया दुर्मर्षण ने बारह बाणसे दुस्सह ने दश बाणों से २ विकर्ण ने भी तीक्ष्ण धारवाले तीस बाणों से वामभाग में और दोनों छातियों के मध्य में घायल किया ३ दुर्मुखने दश बाणों से दुश्शासन ने आठ बाण से और चित्रसेन ने दो बाणोंसे सात्यकी को घायल किया ४ हे राजन्! दुर्योधन ने युद्ध में बाणों की बड़ी वर्षा से माधव सात्यकी को पीड्यमान किया और अन्य २ बहुत से शूर महारथियों ने भी घायल किया ५ फिर आपके महारथी पुत्रों से रुके हुए यादव सात्यकी ने उन सब को पृथक् २ बाणों से घायल किया ६ भारद्वाज द्रोणाचार्य को तीन बाण से दुस्सह को नव बाणों से विकर्ण को पचीस बाणों से चित्रसेन को सात बाण से ७ दुर्मर्षण को बारह बाण से विविंशति को आठ बाणों से सत्यव्रत को नव बाणों से और विजय को दश बाणों से घायल किया ८ इसके पीछे धनुष को टङ्कारता हुआ महारथी सात्यकी शीघ्रता से आपके महारथी पुत्र सुवर्ण के बाजूबन्द रखनेवाले दुर्योधन के सम्मुख गया ९ सब पृथ्वी के राजा और सब लोक के महारथियों को बाणों से कठिन घायल किया इसके पीछे उन दोनों का युद्ध हुआ १० तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते शायकों को धनुषपर चढ़ाते उन दोनों महारथियों ने युद्ध में परस्पर दृष्टि से गुप्त किया ११ कौरवराज दुर्योधन से घायल सात्यकी अत्यन्त शोभित हुआ और ऐसे बहुत रुधिर को डाला जैसे कि लाल चन्दन अपने रस को डालता है १२ और यादव के बाणसमूहों से घायल आपका पुत्र भी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि स्वर्णमयी भूषणों का रखनेवाला ऊंचा यज्ञस्तम्भ

होता है १३ हे राजन् ! युद्ध में हँसते हुए माधव सात्यकी ने युद्ध में धनुषधारी दुर्योधन के धनुष को क्षुरप्र से काटा १४ फिर इस टूटे धनुषवाले को अनेक बाणों से ढकदिया उस शीघ्रता करनेवाले शत्रु के बाणों से घायल १५ राजा ने युद्ध में शत्रु के विजयचिह्न को नहीं सहा १६ इसके पीछे सुवर्णपृष्ठ कठिनता से खैंचने के योग्य दूसरे धनुष को लेकर शीघ्रही सौ शायकों से सात्यकी को घायल किया १७ आपके पराक्रमी धनुषधारी पुत्र से अत्यन्त घायल क्रोध के वशीभूत हुए उस सात्यकी ने आपके पुत्र को पीड्यमान किया १८ आपके महारथी पुत्रों ने राजा को पीड़ित देखकर बड़े बल से बाणों की वर्षा के द्वारा सात्यकी को ढकदिया १९ आपके बहुत से महारथी पुत्रों से ढकेहुए सात्यकी ने प्रत्येक को पांच २ बाणों से घायल करके फिर सात बाणों से घायल किया २० और शीघ्रही आठ बाणों से दुर्योधन को घायल किया और हँसतेहुए सात्यकी ने उसके उस शत्रुओंके डरानेवाले धनुषको भी काटा २१ और मणिजटित नागवाली ध्वजा को बाणों से गिराया और बड़े यशवान् ने तेज धारवाले चार बाणों से चारों घोड़ों को मारकर क्षुरप्रनाम बाण से सारथी को गिराया २२ इसी अन्तर में प्र-सन्नचित्त सात्यकी ने मर्मों के छेदनेवाले बहुत बाणों से महारथी राजा दुर्यो-धन को आच्छादित करदिया २३ हे राजन् ! युद्ध में सात्यकी के उत्तम बाणों से घायल वह आपका पुत्र दुर्योधन अकस्मात् भागकर २४ धनुषधारी चित्र-सेन के रथपर सवार हुआ जैसे कि आकाश में राहु से ग्रसेहुए चन्द्रमा को देखते हैं उसी प्रकार युद्ध में सात्यकी से पराजय कियेहुए राजा को देखकर संसारभर हाहाकाररूप होगया फिर महारथी कृतवर्मा उस शब्द को सुनकर अकस्मात् वहांपर सम्मुख आया जहांपर कि वह समर्थ सात्यकी था २५ । २६ उत्तम धनुष को टङ्कारता और घोड़ों को चलायमान करता सारथी को घुड़कता कि शीघ्र आगे चलो २७ हे महाराज ! सात्यकी उस खुलेहुए मुख काल के समान आतेहुए को देखकर सारथी को यह वचन बोला २८ कि यह बाण रखनेवाला कृतवर्मा रथ की सवारी से शीघ्र आता है सो तू अपने रथ के द्वारा इस सर्वो-त्तम धनुषधारी के सम्मुख चल २९ इसके पीछे अत्यन्त तीव्रगामी घोड़ेवाले विधिपूर्वक अलंकृत रथ की सवारी से सात्यकी ने धनुषधारियों के मूर्तिरूप भोजवंशीय कृतवर्मा को युद्धमें सम्मुख पाकर ३० अत्यन्त क्रोध से अग्निरूप

व्याघ्र के समान वेगवान् दोनों नरोत्तम परस्पर सम्मुख हुए ३१ कृतवर्मा ने सात्यकी को छब्बीस तीक्ष्ण धारवाले शायकों से घायल किया ३२ सारथी को पांचबाण से और चार उत्तम बाणों से उन चारों घोड़ों को ३३ घायल किया जो कि बहुत उत्तम जाति के सिन्धुदेशीय थे फिर उसी सुनहरी ध्वजावाले सुवर्णपृष्ठी बड़े धनुष को टङ्कार करनेवाले ३४ सुवर्ण के बाजूबन्द और कवच-धारी ने सुवर्ण के पुङ्खवाले बाणों से उसे ढकदिया इसके पीछे शीघ्रता से युक्त अर्जुन के देखने के अभिलाषी सात्यकी ने अस्सी शायकों को कृतवर्माके ऊपर फेंका ३५ उस पराक्रमी के हाथ से अत्यन्त घायल शत्रुओं का तपानेवाला अ-जेय कृतवर्मा ऐसे अत्यन्त कम्पायमान हुआ जैसे कि भूकम्प होने में पर्वत कम्पायमान होता है ३६ सत्य पराक्रमी सात्यकी ने शीघ्रता से ही तीक्ष्णधार वाले तिरसठबाणों से उसके चारों घोड़ों को और सात बाणों से सारथी को घा-यल किया ३७ इसके पीछे सात्यकीने सुनहरी पुङ्खवाले विशिखनाम बाण को धनुषपर चढ़ाकर उस बड़े अग्निरूप क्रोधयुक्त सर्पके समान बाणको छोड़ा ३८ यमदण्ड के समान रूपवाले उस बाण ने कृतवर्मा को छेदा ३६ वह भयकारी बाण सुवर्ण से जटित उसके प्रकाशित कवच को काटकर रुधिर से लिप्त होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ४० युद्धभूमि में यादव सात्यकी के बाणों से रुधिर से पूर्ण पीड्यमान होकर वह कृतवर्मा बाण समेत धनुष को छोड़कर अपने उत्तम रथ से गिरपड़ा ४१ अर्थात् सिंह की समान दंष्ट्रावाला अतुल पराक्रमी वह नरो-त्तम कृतवर्मा सात्यकी के बाणों से पीड्यमान रथ के बैठनेके स्थानपर जङ्घाओं से गिरपड़ा ४२ सहस्रबाहु और समुद्र के समान व्याकुलता से रहित कृतवर्मा को रोककर फिर सात्यकी चलागया ४३ वह शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी सब सेना के लोगों के देखते हुए खड्ग धनुप और शक्तियों से व्याप्त हाथी घोड़े और रथों से व्याकुल और सैकड़ों उत्तम क्षत्रियों के कारण भयकारी रुधिर से लिप्त सेना को छोड़कर बीच में से ऐसे चला जैसे कि वृत्रासुर का मारनेवाला इन्द्र असुरों की सेना में से गया था ४४ । ४५ फिर वह पराक्रमी कृतवर्मा सचेत होकर दूसरे बड़े धनुष को लेकर वहां युद्ध में पाण्डवों को रोकता हुआ नियत हुआ ॥४६॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषोडशोपरिशततमोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

एकसौसत्रह का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, जहां तहां सात्यकी के हाथ से पृथक् २ सेना के होनेपर भारद्वाज द्रोणाचार्य ने बाणों के बड़े समूहों से सात्यकी को ढकदिया १ द्रोणाचार्य और सात्यकी का वह कठिन युद्ध सब सेनाके लोगों के देखते ऐसाहुआ जैसे कि राजा बलि और इन्द्र का हुआ था २ इसके पीछे द्रोणाचार्य ने अपने अपूर्व लोहे के बने हुए सर्प के समानरूप तीन बाणों से सात्यकीके ललाटपर छेदा ३ हे महाराज! वह सात्यकी ललाटपर लगेहुए सीधे चलनेवाले उन बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखर रखनेवाला पर्वत ४ इसके पीछे अवकाशके चाहनेवाले भारद्वाज द्रोणाचार्य ने इन्द्रवज्रके समान शब्दायमान दूसरे बाणों को उसके ऊपर चलाया ५ उत्तम अस्त्र के जाननेवाले सात्यकी ने द्रोणाचार्य के धनुष से छुटे और गिरतेहुए उन बाणों को सुन्दर पुङ्खवाले दो २ बाणों से काटा ६ हे राजन्! द्रोणाचार्य ने उसकी इस हस्तलाघवता को देख कर बहुत हँसकर तीस बाणों से सात्यकी को घायल किया ७ इसके पीछे सात्यकी की हस्तलाघवता को अपनी हस्तलाघवता से नाश करते द्रोणाचार्य ने फिर पचास बाणों से उसको घायल किया ८ जैसे कि बामी से क्रोधयुक्त बड़े २ सर्प उछलते हैं हे राजन्! उसी प्रकार द्रोणाचार्य के रथ से शरीर के छेदनेवाले बाण गिरते थे ९ उसी प्रकार सात्यकी के छोड़े हुए रुधिर पीनेवाले बाणों ने द्रोणाचार्य के रथ को ढक दिया १० हे श्रेष्ठ! ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य और यादव सात्यकी की हस्तलाघवता में मुख्यता को हमने नहीं पाया वह दोनों नरोत्तम समान थे ११ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी ने नव बाणों से घायल किया और तीक्ष्णधार बाण से भुजा को १२ और भारद्वाजजी के देखतेहुए सौ बाणों से सारथी को घायलकिया महारथी द्रोणाचार्य ने सात्यकी की हस्तलाघवता को देखकर १३ सत्तरबाण से सारथी को घायल करके तीन २ बाणों से घोड़ों को घायल किया १४ फिर सुनहरी पुङ्ख और पक्ष रखने वाले दूसरे भल्ल से महात्मा सात्यकी की ध्वजा को भी काटा १५ उसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी सात्यकी ने धनुष को त्यागकर बड़ी गदा को लिया और भारद्वाज के ऊपर फेंका १६ द्रोणाचार्य ने उस रेशमी कपड़े से मढ़ीहुई लोह-

मयी अकस्मात आतीहुई गदा को बहुत प्रकार के अनेक बाणों से रोका १७ फिर सत्य पराक्रमी सात्यकी ने दूसरे धनुष को लेकर तीक्ष्णधारवाले बहुत बाणों से द्रोणाचार्य को घायलकिया १८ उसने युद्ध में द्रोणाचार्य को छेदकर सिंहनाद को छोड़ा निश्चय करके सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने उसको नहीं सहा १९ इसके पीछे सुनहरी दण्डवाली लोहे की शक्ति को लेकर वेग से सात्यकी के रथ पर फेंका २० वह काल के समान भयकारी शब्दयुक्त महाभयानकरूप शक्ति सात्यकी को न पाकर रथ को आघातित करके पृथ्वीपर गिर पड़ी २१ हे भरतर्षभ, राजन्, धृतराष्ट्र ! इसके पीछे बाण से दाहिनी भुजा को पीड्यमान करते हुए सात्यकी ने द्रोणाचार्य को घायल किया २२ द्रोणाचार्य ने भी युद्ध में अर्धचन्द्र नाम बाण से सात्यकी के बड़े धनुष को काटा और रथ शक्ति नाम शक्तिसे सारथीको घायल किया २३ और उसका सारथी रथशक्ति से घायल होकर अचेत होगया वह एक मुहूर्ततक रथ की बैठक को पाकर बैठ गया २४ हे राजन् ! सात्यकी ने बुद्धि से बाहर सारथ्य कर्म को किया जो द्रोणाचार्य से युद्ध करनेवाला होकर आपही घोड़ों की बागडोरों को पकड़ा २५ इसके पीछे प्रसन्नरूप महारथी सात्यकी ने युद्ध में सौ बाणों से ब्राह्मण को घायल किया २६ हे भरतवंशिन् ! फिर द्रोणाचार्य ने पांचबाण उसपर चलाये युद्ध में उन पांचों भयकारी बाणों ने कवच को छेदकर रुधिर का पानकिया २७ फिर भयकारी बाणों से घायल सात्यकी अत्यन्त क्रोधयुक्त हुआ और अपने शायक नाम बाणों को सुवर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य पर छोड़ा २८ उसके पीछे एक बाण से द्रोणाचार्य के सारथी को पृथ्वीपर गिराकर मृतक सारथीवाले घोड़ोंको बाणों से इधर उधर भगाया २९ हे राजन् ! उस प्रकाशमान और चलायमान रथ ने युद्ध में ऐसे हजारों मण्डल किये जैसे कि सूर्य करते हैं ३० सब राजकुमार राजाओं समेत पुकारे कि चलो दौड़ो द्रोणाचार्य के घोड़ों को पकड़ो ३१ हे राजन् ! वह महारथी युद्धमें शीघ्रही सात्यकी को छोड़कर जिधर द्रोणाचार्य थे उधरही को चलेगये ३२ युद्ध में सात्यकी के बाणों से पीड्यमान और दौड़ते हुए उन लोगों को देखकर आपकी सेना फिर व्याकुल होकर छिन्न भिन्न होगई ३३ फिर वायु के समान शीघ्रगामी सात्यकी के बाणों से पीड्यमान घोड़ों से पहुँचाये हुए द्रोणाचार्य व्यूह के मुखको पाकर नियत हुए ३४ परा-

क्रमी ने पाण्डव पाञ्चाल और सात्यकी से पृथक् कियेहुए व्यूह को देखकर उपाय किया और व्यूह की ही रक्षाकरी ३५ अग्नि के समान भस्मकरनेवाले पाण्डव और पाञ्चालों को रोककर काल सूर्य के समान उदयहुए द्रोणाचार्यरूपी प्रकाशित अग्नि नियत हुई॥ ३६॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तदशोपरिशततमोऽध्यायः॥ ११७॥

एकसौअठारह का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, वह पुरुषों में और शिनियों में बड़ावीर और श्रेष्ठ कौरवों से भी अतिश्रेष्ठ सात्यकी द्रोणाचार्य और कृतवर्मा आदिक आपके बड़े २ शूरवीरों को विजय करके हँसता हुआ सारथी से यह वचन बोला १ कि हे सारथे! हम यहां केवल एक निमित्तमात्रही हैं क्योंकि केशवजी और इन्द्र के पुत्र अर्जुन के हाथसे मरेहुए अथवा मारेहुएही शत्रुओं को हमने माराहै व मारेंगे २ तब वह उत्तम धनुषधारी शत्रुओं का मारनेवाला पराक्रमी शिनिवंशियों में श्रेष्ठ सात्यकी युद्ध में उसको इस प्रकार से कहता सब ओर को बाणों की वर्षा करता हुआ अकस्मात् ऐसा दौड़ा जैसे मांस को देखकर बाज पक्षी दौड़ता है ३ हे भरतवंशिन्! जितने कि आपकी सेना के समूह थे वे सबलोग चारों ओर से उस चन्द्रमा और शङ्ख के समान श्वेत घोड़ों की सवारीवाले इन्द्र के समान प्रभाव और पराक्रमवाले असह्य पराक्रमी सूर्य के समान तेजस्वी रथियों में श्रेष्ठ सेना को मझाकर जानेवाले नरोत्तम सात्यकी के रोकने को ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि आकाश में बादल सूर्य को नहीं रोकसक्ते ४।५ क्रोधयुक्त और अत्यन्त अपूर्वयुद्ध करनेवाले धनुषधारी उस स्वर्णमयी कवचधारी राजाओं में श्रेष्ठ सुदर्शन ने हठ करके आतेहुए सात्यकी को रोका ६ हे भरतवंशिन्! उन दोनों का युद्ध बड़ा भयकारी हुआ उस युद्ध को आपके शूरवीर और सोमकों ने ऐसी प्रशंसा करी जैसे कि देवताओं के समूहों ने वृत्रासुर और इन्द्र के युद्ध की करी थी ७ सुदर्शन ने युद्धभूमि में अत्यन्त तीक्ष्ण सैकड़ों बाणों से उस यादवोंमें श्रेष्ठ सात्यकी को घायल किया हे राजन्! सात्यकीने भी उन बाणों को बीचही में काटा ८ इसी प्रकार इन्द्र के समान सात्यकी ने भी राजा सुदर्शन पर जिन शायकों को फेंका उन शायकों को उत्तम रथपर सवार सुदर्शन ने अपने उत्तम बाणों से खण्ड २ करदिया ९ इसके अनन्तर बड़े तेजस्वी

सुदर्शन ने सात्यकी के बाणों की तीव्रता से उन अपने पूर्व बाणों को कटा हुआ देखकर क्रोध से भस्म करनेवाले के समान उसने सुवर्ण से जटित बाणों को छोड़ा १० फिर उसने तीक्ष्णधार सुन्दर पुङ्ख अग्निके समान कानतक खैंचे हुए तीन बाणों से छेदा वह बाण कवच को काटकर सात्यकीके शरीर में प्रवेश कर गये ११ फिर उस राजकुमार ने धनुष चढ़ाकर दूसरे अग्निरूप चारबाणों से हठकरके उसके चांदी के वर्ण चारों घोड़ों को घायल किया १२ इसी प्रकार उसके हाथ से घायल वेगवान् इन्द्रके समान पराक्रमी सात्यकी अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों के समूहों से शीघ्रही सुदर्शन के चारों घोड़ों को मारकर बड़े शब्द से गर्जा १३ फिर शिनियों में बड़े वीर सात्यकी ने इन्द्रवज्र के रूप कालाग्नि के समान क्षुरप्रनाम बाण से उसके सारथी के शिर को काटकर सुदर्शन के भी उस शिर को १४ जोकि कुण्डलधारी और पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान था शरीर से ऐसा जुदा किया जैसे कि पूर्व समय में वज्रधारी इन्द्र ने हठकरके बड़े पराक्रमी राजा बलि के शिर को काटा था १५ हे राजन्! वह यादवों में श्रेष्ठ वेगवान् बड़ी प्रसन्नता से युक्त महात्मा इन्द्र के समान सात्यकी उस राजकुमार को मारकर युद्ध में शोभायमान हुआ १६ हे राजन्! इसके पीछे लोकको आश्चर्य युक्त करने का अभिलाषी नरों में वीर अर्जुन बाणों के समूहों से आपकी सेना को हटाकर उत्तम घोड़ों से युक्त रथ की सवारी के द्वारा जिस मार्ग होकर गया था उसी मार्ग में होकर यह भी गया १७ इकट्ठे उत्तम शूरवीरों ने उसके उस आश्चर्य युक्त किये हुए कर्म की बड़ी प्रशंसा की कि इसने बाणों के लक्ष्यों पर वर्तमान किये हुए शत्रुओंको ऐसे भस्म करादिया जैसे कि अग्नि करताहै ॥१८॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणयष्टादशोपरिशततमोऽध्यायः ॥ ११८ ॥

एकसौउन्नीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके अनन्तर वह बुद्धिमान् और बड़ा साहसी वृष्णियों में श्रेष्ठ सात्यकी युद्धभूमि में सुदर्शन को मारकर सारथी से फिर बोला १ कि रथ हाथी और घोड़ेरूप कीच रखनेवाले बाण शक्तिरूप तरङ्ग मालाधारी खड्ग रूप मछली और गदारूप ग्राह रखनेवाले शूरों के धनुष आदि से बड़े शब्द वाले २ प्राणोंके घातक भयकारी बाजे और सिंहनादोंसे शब्दायमान शूरवीरों से कठिनतापूर्वक स्पर्श होनेवाले और विजयाभिलाषियों को दुःख से विजय

होनेवाले ३ दुःख से तरने के योग्य इस द्रोणाचार्य के महासमुद्र से हम पार होगये वह समुद्र युद्धभूमि में जलसिन्धु की सेनारूप मनुष्य खादकों से घिरा हुआ था ४ इसके सिवाय दूसरी शेष बचीहुई सेना को थोड़े जलवाली उतरने के योग्य छोटी नदी मानता हूं अब तुम घोड़ों को निर्भयता से चलायमान करो ५ अब मैं युद्ध में दुःख से सम्मुखता के योग्य द्रोणाचार्य को उनके साथियों समेत विजय करके अर्जुन की प्राप्ति को मानता हूं ६ और शूरवीरों में श्रेष्ठ कृतवर्मा को विजय करके भी अर्जुन को मिला हुआ मानता हूं नाना प्रकार की सेनाओं को देखकर मुझको ऐसे भय नहीं उत्पन्न होता है ७ जैसे कि सूखी घास और लतावाले सूखे वन में ज्वलित अग्नि का पाण्डवों में श्रेष्ठ मुकुटधारी अर्जुन से चलीहुई ८ और पड़ेहुए घोड़े, हाथी, रथ और पत्तियों के समूहों से विषम की हुई पृथ्वी को ऐसी देखो जैसे कि उस महात्मा से पराजित हुई बहुत सेना भागती है ९ हे सूत! चारोंओर को दौड़तेहुए रथ हाथी और घोड़ों से यह धूलि उठती है जोकि सोसनी रङ्गवाले रेशमी कपड़े के समान है १० मैं श्वेत घोड़े और श्रीकृष्ण को सारथी रखनेवाले अर्जुन को समीपही नियत मानता हूं बड़े तेजस्वी गाण्डीव धनुष के यह शब्द सुनाई देते हैं ११ निश्चयकरके जैसे शकुन मेरे आगे प्रकट होते हैं-उनसे प्रत्यक्ष है कि सूर्यास्त के पूर्वही अर्जुन जयद्रथ को मारेगा १२ धीरेपने से घोड़ों को विश्वास देता हुआ वहांपर चल जहां कि शत्रुओं की सेना है और जहांपर हस्तत्राण रखने वाले दुर्योधनको आगे रखनेवाले यह १३ कवचधारी निर्दयकर्मी युद्ध में दुर्मद काम्बोजदेशीय बाण धनुर्धारी प्रहार करनेवाले यव १४ शक, किरात, दरद, बर्बर, ताम्रलिप्तक और नाना प्रकार के शस्त्र हाथ में रखनेवाले अन्य अनेक म्लेच्छ हैं १५ जहांपर हस्तत्राणयुक्त दुर्योधन को आगे रखनेवाले युद्धाभिलाषी यह सब लोग सम्मुख नियत हैं १६ इन शत्रुओं को रथ हाथी और घोड़ों समेत युद्धभूमि में मारकर इस बड़े भयकारी दुर्गम्य सेनारूपी समुद्र को तराहुआ जानो १७ सूत बोला हे सत्यपराक्रमिन्, माधव, सात्यकिन्! भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता मुझको नहीं उत्पन्न होसक्ती चाहे क्रोधयुक्त परशुरामजी भी आप के आगे नियत होजायँ १८ अथवा रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य कृपाचार्य और शल्य भी सम्मुख होयँ हे महाबाहो! उस दशामें भी आपकी रक्षामें होकर मुझको भय

नहीं होसकी १९ हे शत्रुओं के मारनेवाले! तुमने युद्धमें कवचधारी निर्दयकर्मी युद्धमें दुर्मद बहुतसे काम्बोजदेशीय विजय किये २० धनुषबाण रखनेवाले प्रहारकर्ता यवन, शक, किरात, दरद, बर्बर, ताम्रलिप्तक २१ और नानाप्रकारके शस्त्र हाथमें रखनेवाले अन्य बहुतसे म्लेच्छभी विजयकिये तबतो किसीदशामेंभी मुझ को भय नहीं हुआ २२ हे पण्डित! अब गोखुर के समान युद्ध को पाकर मैं क्या भय करूंगा हे दीर्घायुवाले! किसी मार्ग से तुम को अर्जुन के पास पहुँचाऊंगा २३ हे यादव! तुम किन लोगोंपर क्रोधित हो और किनका काल सम्मुख वर्तमान है और किन्हों का मन यमपुर के जाने की अभिलाष करता है २४ और युद्ध में पराक्रम करनेवाले अथवा नाश करनेवाले काल के समान तुम से पराक्रमी को देखकर किन्हों की सेना भागेगी हे महाबाहो! अब यमराज किन को याद करता है २५ सात्यकी बोला कि मैं अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा और काम्बोजदेशियों समेत इन मुण्डों को भी ऐसे मारूंगा जैसे दानवलोगों को इन्द्र मारता है तू मुझ को ले चल २६ अब मैं इन्हों का नाशकरके प्यारे पाण्डव अर्जुन से मिलूंगा अब दुर्योधन समेत कौरवलोग मेरे पराक्रम को देखेंगे २७ हे सूत! अब वारंवार मुण्डोंकी सेना और सब सेना के मनुष्यों के मरने पर युद्ध में छिन्न भिन्न होनेवाली कौरवीय सेना के २८ शब्द को सुनकर दुर्योधन अनेक प्रकार से दुःखी होगा अब मैं श्वेत घोड़े रखनेवाले अपने आचार्य महात्मा अर्जुन के कियेहुए मार्ग को देखूंगा २९ अब राजा दुर्योधन मेरे बाणों से हज़ारों उत्तम शूरवीरों को मराहुआ देखकर पछतावेगा ३० अब कौरव मुझ हस्तलाघव व उत्तम बाणों के फेकनेवाले के धनुष को बनेठी के रूप को देखेंगे ३१ मेरे बाणों से संयुक्त अङ्ग व वारंवार रुधिर छोड़नेवाले सेना के लोगों के नाश को सुनकर दुर्योधन दुःखी होगा ३२ अब दुर्योधन मुझ क्रोधरूप और उत्तम २ वीरों को मारनेवाले के कर्म को देखकर इस लोक को दो अर्जुन रखनेवाला मानेगा ३३ अब राजा दुर्योधन बड़े युद्ध में मेरे हाथ से मारेहुए हज़ारों राजाओं को देखकर दुःखी होगा ३४ अब हज़ारों राजाओं को मारकर राजाओं के मध्य में महात्मा पाण्डवों में अपनी प्रीति और भक्ति को दिखलाऊंगा कौरवलोग मेरे बल पराक्रम और कृतज्ञता को जानेंगे ३५ सञ्जय बोले कि सात्यकी के इस प्रकार के वचनों को सुनकर उस सारथी ने चन्द्रवर्ण अति

शिक्षित श्रेष्ठों के सवार करानेवाले घोड़ों को अत्यन्त चलायमान किया ३६ मन और वायु के समान शीघ्रगामी आकाश को पान करतेहुए उत्तम घोड़ों ने सात्यकी को यवनों के सम्मुख पहुँचाया ३७ उन बड़े हस्तलाघवीय यवनों ने सेनाओं से मुख न फेरनेवाले सात्यकी को सम्मुख पाकर बाणों की वर्षा से ढकदिया ३८ हे राजन्! तब उस वेगवान् सात्यकी ने अपने बाणों से उन सब के बाण और अस्त्रों को काटा और उनके बाणों ने उसको नहीं पाया ३९ उस भयकारीरूप सात्यकी ने सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्णधार सीधे चलनेवाले बाणों से यवनों के शिर और भुजाओं को भी काटा ४० वह बाण चारोंओर से लाल रङ्ग लोहे कांसी के कवचों को और उनके शरीरों को छेदकर पृथ्वीपर गिर-पड़े ४१ युद्ध में वीर सात्यकी के हाथ से मारेहुए वह हज़ारों निर्जीव म्लेच्छ वहां पृथ्वीपर गिरपड़े ४२ कानतक प्रत्यञ्चा को खैंचकर छोड़ेहुए अटूटधार बाणों से पांच छः सात आठ यवनों को छेदा ४३ हे राजन्! वहां आपकी सेना को मारते सात्यकी ने काम्बोजदेशियों समेत शक शबर किरात और हज़ारों बर्बरों से ४४ पृथ्वी को गुप्तमांस रुधिर सूरत कींचरखनेवाली किया ४५ शिरत्राण रखनेवाले टूटेबाल डाढ़ी मूंछ रखनेवाले शैव्यनाम म्लेच्छों के शिरों से पृथ्वी ऐसी आच्छादित होगई जैसे कि विना पक्षवाले पक्षियों से व्याप्तहोती है ४६ तब उन रुधिर से लिप्त सर्वाङ्ग और धड़ों से युक्त सब युद्धभूमि में ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि लालबादलों से व्याप्त आकाश होता है ४७ इन्द्रवज्र के समान स्पर्शवाले सुन्दरपर्व सीधे चलनेवाले यादव के बाणों से होकर उन लोगों ने पृथ्वी को आश्रयस्थान किया ४८ प्राणों की आपत्ति में फँसेहुए अचेतरूप थोड़े शेष बचेहुए लोग छिन्न भिन्न होकर पृथक् होगये हे महाराज! उन कवचधारियों को युद्ध में सात्यकी ने विजय किया ४९ एँड़ी और चाबुकों से घोड़ों को मारते और भय के कारण बड़ी तीव्रता में नियत होकर सब ओर से भागे ५० हे भरतवंशिन्! युद्ध में कठिनता से विजय होनेवाले काम्बोज देशियों की सेना को भगाकर और यवनों की उस अनीक को छिन्न भिन्न करके ५१ सेनाको प्रवेशकर वह पुरुषोत्तम सत्य पराक्रमी सात्यकी आपके पुत्रों को विजयकरके अपने सारथी से कहनेलगा कि चलो ५२ गन्धर्वों समेत चारणों ने युद्ध में उसके कियेहुए उस कर्म को जो कि पूर्वसमय में किसी ने

नहीं किया था देखकर बड़ी प्रशंसाकरी ५३ हे राजन्! प्रसन्नचित्त धारण और आपके शूरवीरों ने उस आतेहुए सात्यकी को जोकि अर्जुन का पृष्ठरक्षक था देखकर प्रशंसाकरी ॥ ५४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ ११९ ॥

एकसौबीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इसके अनन्तर रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी यवन और काम्बोजों को विजय करके आपकी सेना में होकर अर्जुन की ओर को चला १ सुन्दर दंष्ट्रा अपूर्व कवच ध्वजा रखनेवाले नरोत्तम ने आपकी सेना को ऐसा भयभीत किया जैसे कि व्याघ्र मृगों को सूंघकर भयभीत करता है २ रथ की सवारी से मार्गों को घूमते उस सात्यकी ने सुवर्णपृष्ठ बड़े वेगवान् सुनहरी चन्द्रमाओं से संयुक्त धनुष को अच्छे प्रकार से घुमाया ३ सुवर्ण के बाजूबन्दों से अलंकृत स्वर्णमयी कवचधारी सुवर्ण कीही ध्वजा व धनुष का धारण करनेवाला शूर सात्यकी मेरु पर्वत के शिखर के समान शोभायमान हुआ ४ युद्ध में धनुष मण्डल और पराक्रमरूपी किरणों का रखनेवाला वह नररूपी सूर्य ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि शरद ऋतु का उदयहुआ सूर्य होता है ५ उत्तम भुजा पराक्रमी उत्तम चक्षुवाला नरोत्तम सात्यकी आपके शूरवीरों के मध्य में ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि गौवों के मध्य में बलीबर्द शोभित होता है ६ व्याघ्रों के समान मारने के अभिलाषी आपके शूरवीर उस मदोन्मत्त हाथी के समान चलनेवाले और समूह के मध्य में नियत मदझाड़नेवाले हाथी के समान सात्यकी के सम्मुख गये कठिनता से तरने के योग्य द्रोणाचार्य और कृतवर्मा की सेनाओं के उल्लङ्घन करनेवाले ७। ८ राजा जलसिन्धु और काम्बोज देशियों की सेनारूपी समुद्र से पार होकर कृतवर्मारूपी नक्र से रहित सेनारूपी सागर से पार होनेवाले ९ सात्यकी को अत्यन्त क्रोधरूप आपके इन रथियों ने घेरलिया जिनके कि नाम यह हैं कि दुर्योधन, चित्रसेन, दुश्शासन, विविंशति १० शकुनी, दुस्सह, तरुण, दुर्धर्षण, क्रथ और दूसरे अन्य बहुत से शूर जोकि शस्त्रों के धारण करनेवाले कठिनता से आधीन होनेवाले थे वह क्रोधरूप होकर उस जातेहुए सात्यकी के पीछे दौड़े ११ हे श्रेष्ठ! फिर आपकी सेना का ऐसा बड़ा शब्द हुआ जैसे कि पूर्वकाल में वायु से

व्याकुल कियेहुए समुद्र का शब्द होता है १२ सात्यकी उन सब सम्मुख दौड़ने वालों को देखकर हँसताहुआ सारथी से बोला कि चल १३ हाथी, घोड़े, रथ और पत्तियों से पूर्ण जो यह दुर्योधन की सेना मेरे सम्मुख आई है जिसने कि रथों के शब्द से सब दिशाओं को शब्दायमान किया है और पृथ्वी आकाश और समुद्रादिकों को भी कम्पितकिया १४।१५ हे सारथे! मैं बड़े युद्ध में इस सेनारूपी समुद्र को ऐसे रोकूंगा जैसे कि पूर्णमासी के उठेहुए समुद्रको मर्यादा रोकती है १६ हे सारथे! इस बड़े युद्ध में इन्द्र के समान मेरे बड़े पराक्रम को देखो इन शत्रुओं की सेनाओं को अपने तीक्ष्णबाणों से शब्दायमान करता हूं १७ युद्ध में अग्नि के समान मेरे बाणों से घायल शरीर और मरेहुए हज़ारों पदाती घोड़े रथ और हाथियों को देखोगे १८ इस प्रकार कहतेही कहते उस बड़े तेजस्वी सात्यकी के सम्मुख सेना के लोग युद्धाभिलाषी होकर शीघ्रही जापहुँचे मारो चलो भिड़ो देखो २ ऐसे शब्द करतेहुए गये १९ सात्यकी ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उन इस प्रकार से बोलतेहुए वीरों को घायलकिया और तीन सौ घोड़ों समेत चार सौ हाथियों को मारा २० उस सात्यकी और उन धनुषधारियों का वह कठिन युद्ध हुआ कि जिसमें देवासुरयुद्ध के समान मनुष्यादिकों का नाश हुआ २१ हे श्रेष्ठ! उस सात्यकी ने सर्पों के समान बाणों से आपके पुत्र की उस बादलों के जालों के समान रूपवाली सेना को आच्छादित करदिया २२ हे महाराज! युद्ध में बाणों के जालों से ढकेहुए आपके बहुत से शूरवीरों को उस सात्यकी ने मारा हे महाराज! वहां मैंने बहुत बड़े आश्चर्य को देखा है प्रभो! सात्यकी का कोई बाण भी निष्फल नहीं हुआ २३।२४ रथ हाथी और घोड़ेरूप कीच रखनेवाला पदातीरूप तरङ्गों से व्याप्त सेनारूपी सागर सात्यकी रूप मर्यादा को पाकर स्थिरहुआ २५ चारों ओर को उसके बाणों से घायल वह सेना जिसके मनुष्य घोड़े हाथी आदिक व्याकुल थे वारंवार सम्मुखगये २६ और जहां तहां ऐसे भ्रमण करने लगे जैसे कि शरदी से दुःखित गौवें मैं ने वहां सात्यकी के शायकों से विना घायलहुए पदाती रथ हाथी और सवारों समेत किसी घोड़ेको भी नहीं देखा २७। २८ हे राजन्! वहां अर्जुन ने भी वैसा नाश नहीं किया था जैसा कि सेनाओं का नाश सात्यकी ने किया २९ अभय हस्तलाघवता से युक्त पुरुषोत्तम सात्यकी अर्जुन को उल्लङ्घनकर अपने कर्मको

दिखलाता हुआ युद्ध करताहै ३० इसके पीछे राजा दुर्योधनने तीक्ष्णधारवाले तीन बाणों से सात्यकी के सारथी को और चार बाण से चारों घोड़ों को घायल किया ३१ सात्यकी को तीनबाणों से छेदकर फिर आठ बाणों से घायल किया दुश्शासन ने सात्यकी को सोलह बाणों से ३२ शकुनी ने पचीसबाणसे चित्रसेन ने पांचबाणों से और दुस्सह ने पन्द्रह बाणों से सात्यकी को छाती पर घायल किया ३३ हे महाराज! इस प्रकार बाणों से घायल मन्दमुसकान करते वृष्णियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने उन सबको तीन २ बाणों से घायल किया ३४ बड़ा उग्र पराक्रमी सात्यकी अत्यन्त प्रकाशित बाणों से शत्रुओं को कठिन घायल करके युद्ध में बाज के समान घूमने लगा ३५ फिर शकुनी के धनुष को और हस्तत्राणों को काट तीन बाणों से दुर्योधन को छाती के मध्य में घायल किया ३६ सात्यकी ने सौ बाणों से चित्रसेन को दश बाणों से दुस्सह को और बीसबाणों से दुश्शासन को घायलकिया ३७ हे राजन्! आपके साले शकुनी ने दूसरे धनुष को लेकर आठ बाण से सात्यकी को घायलकरके फिर पांच बाणों से घायल किया ३८ हे राजन्! दुश्शासन ने दश बाणों से दुस्सह ने तीन बाणों से और दुर्मुख ने बारह बाणों से सात्यकी को घायल किया ३९ इसके पीछे दुर्योधन ने तिहत्तर बाणों से माधव सात्यकी को घायलकरके तीन तीक्ष्ण बाणों से उसके सारथी को घायल किया ४० सात्यकी ने एक साथ होकर उपाय करनेवाले उन शूरवीर महारथियों को पांच २ बाणों से फिर घायल किया ४१ और उस रथियों में श्रेष्ठ सात्यकीने आपके पुत्र के सारथी को शीघ्र ही भल्ल से मारा और वह मरकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ४२ हे प्रभो, धृतराष्ट्र! उस सारथीके गिरनेपर आपके पुत्र का रथ वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि से दूर चलागया ४३ हे राजन्! इसके पीछे आपके पुत्र और सैकड़ों सेना के मनुष्य राजा के रथ को देखकर भागे ४४ वहां सात्यकी ने उस सेना को भगाहुआ देखकर सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्ण धारवाले बाणों से ढकदिया ४५ हे राजन्! इस रीति से सात्यकी आपकी हजारों सेनाओं को भगाकर अर्जुन के रथ के समीप गया ४६ आपके शूरवीरों ने उस बाणों के लेनेवाले सारथी समेत अपने शरीर की रक्षा करनेवाले सात्यकी की बहुत प्रशंसा करी ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १२० ॥

एकसौइक्कीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! मेरे उन निर्लज्ज पुत्रों ने उस बड़ी सेना को मर्दन कराके अर्जुन के पास जाते हुए सात्यकी को देखकर क्या किया १ उस समय अर्जुन के और सात्यकी के इस प्रकार के कर्मों को देखकर इन काल पानेवाले मेरे पुत्रों की स्थिरता युद्ध में कैसे हुई २ सेना के मध्य में वह पराजय हुए क्षत्रिय क्या कहेंगे और बड़ा यशस्वी सात्यकी युद्ध में कैसे सब को उल्लङ्घन करके गया ३ हे सञ्जय ! युद्ध में सात्यकी किस प्रकार से मेरे जीवतेहुए पुत्रों के सम्मुख गया वह सब मुझसे कहो ४ हे तात ! मैं तेरे मुख से ही उस अत्यन्त अपूर्व युद्ध को सुनता हूं जो कि एक के साथ बहुत से महारथी शत्रुओं का हुआ ५ मैं अपने अभागे पुत्र में इस विपरीतता को मानता हूं जिस युद्ध में यादव के हाथ से महारथी मारेगये ६ हे सञ्जय ! जो सेना उस क्रोधयुक्त अकेले सात्यकी के ही साथ लड़ने को समर्थ नहीं है तो उसका स्वामी पाण्डव अर्जुन ७ महाकर्मी और अपूर्व युद्धकर्ता द्रोणाचार्य को विजय करके मेरे पुत्रों को इस प्रकार से मारेगा जैसे कि पशुओं के समूहों को सिंह मारता है ८ जो पुरुषोत्तम सात्यकी युद्ध में कृतवर्मा आदिक मतवाले शूरों से भी न मरसका ९ वहां अर्जुन ने भी इस प्रकार का युद्ध नहीं किया जैसा कि युद्ध बड़े यशस्वी सात्यकी ने किया १० सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! दुर्योधन के कारण से आपके कुमन्त्र होनेपर जो युद्ध हुआ है वह मैं तुमसे कहता हूं तुम चित्त लगाकर सुनो ११ कि वह परस्पर शपथ खानेवाले युद्धमें बड़ी निर्दय बुद्धि को करके आपके पुत्र की आज्ञा से लौट आये १२ हे महाराज ! जिनमें मुख्य दुर्योधन है वह तीन हज़ार सवार शक, काम्बोज, बाह्लीक, यवन, पारद १३ कुणिग, तङ्गण, अम्बष्ठ, बर्बर समेत पैशाच और पहाड़ी यह सब क्रोधयुक्त हाथ में पाषाण लिये १४ सात्यकी के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि शलभनाम पक्षी अग्निमें जाते हैं हे राजन् ! पांच सौ शूरवीर सात्यकी के सम्मुख गये १५ इसके पीछे हज़ार रथ सौ महारथ हज़ार हाथी दो हज़ार घोड़े नानाप्रकार के महारथी और असंख्य पातलोग बाणों की वर्षाओंको छोड़ते सात्यकी के सम्मुखगये १६ हे भरतवंशिन्, महाराज ! दुश्शासन ने सबको यह प्रेरणाकरी कि इसको मारो इस प्रकारसे सबको

कहनेवाले दुश्शासनने सात्यकीको घेरा १७। १८ वहांपर हमने सात्यकीके महा अद्भुत कर्म को देखा जो अव्याकुलचित्त होकर अकेलेनेही सब से युद्धकिया १९ उस हाथी और रथोंवाली सब सेना को और सब सवारियों समेत दस्युनाम जाति वालों को भी मारा २० वहां मथेहुए चक्र और टूटेहुए धनुष और अनेकप्रकार के टूटेहुए ईशा दण्डक बन्धुर और अक्षों से २१ और मथेहुए हाथी और गिराईहुई ध्वजा और कवचधारी सेनाओंसे भी पृथ्वी आच्छादित होगई २२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! वहां माला, भूषण, वस्त्र और अनुकर्षों से पृथ्वी ऐसी ढकगई जैसे कि ग्रहों से आकाश आच्छादित होताहै २३ हे श्रेष्ठ! जो हाथी कि अञ्जनवंश में उत्पन्न हुए और जो वामन वंश में सुप्रतीक वंश में और महापद्म वंश में उत्पन्नहुए वह पर्वताकार उत्तम हाथी भी पृथ्वीपर गिरपड़े २४ हे राजन्! जो हाथी ऐरावत वंश में और वहुत से अन्य २ वंश में उत्पन्न हुए वह बहुत से हाथी भी मृतक होकर पृथ्वी पर सोते हैं २५ वहां सात्यकी ने बानायुज पहाड़ी काम्बोज और वाह्लीक देशीय उत्तम घोड़ों को भी मारा २६ । २७ और नाना प्रकारके देशों में उत्पन्न होनेवाले बहुत प्रकार की जातिवाले सैकड़ों हज़ारों हाथियों को मारा २८ उन्हों के छिन्न भिन्न होने पर दुश्शासन दस्युज्ञातिवाले शूरवीरों से बोला कि हे धर्म के न जाननेवालो! लौटो युद्ध करो भागने से क्या लाभ होगा २९ आपके पुत्र दुश्शासन ने अत्यन्त छिन्न भिन्न उन लोगों को देख कर पत्थरोंसे लड़नेवाले पहाड़ी शूरों को चलायमान किया ३० और कहा कि हे पाषाणयुद्ध में सावधान लोगो! सात्यकी इसको नहीं जानता है इस पाषाण युद्ध के न जाननेवाले युद्धाभिलाषी सात्यकी को मारो ३१ इसी प्रकार सब कौरव भी पाषाणयुद्धमें कुशल नहीं हैं तुम सम्मुख जाओ भय मत करो सात्यकी तुमको नहीं पासकेगा ३२ पाषाणों से लड़नेवाले वह सब पहाड़ी राजा सात्यकी के सम्मुख ऐसे गये जैसे कि मन्त्री लोग राजा के सम्मुख होते हैं ३३ इसके पीछे वह पहाड़ी राजा हाथी के मस्तकों के समान पाषाणों को हाथों में लिये युद्ध में सात्यकी के आगे खड़ेहुए ३४ और इसी प्रकार आपके पुत्र के कहने से यादव के मारने के अभिलाषी अन्य शूर लोगों ने भी भल्लों को ले लेकर सबओर से दिशाओं को रोका ३५ सात्यकी ने बाणों को धनुष पर चढ़ा कर उन पाषाणयुद्ध करने के अभिलाषियों पर तीक्ष्णधार बाणों को फेंका ३६

और उन पहाड़ियों के चलाये हुए कठिन पाषाण समूहों को सर्पाकार नाराचों से काटा ३७ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! खद्योतों के समूहों के समान प्रकाशित उन पाषाणखण्डों से हाहाकार करनेवाले सेना के लोगही घायल होगये ३८ हे राजन् ! उसके पीछे बड़े २ पाषाण उठानेवाले वह पांचसौ शूरवीर जिनकी भुजा कटगई थीं सब पृथ्वी पर गिरपड़े ३९ फिर अन्य हज़ारों लाखों मनुष्य सात्यकी को न पाकर पत्थर रखनेवाले कटीहुई भुजाओं समेत गिरपड़े ४० पाषाणों से लड़नेवाले व उपाय करनेवाले हज़ारों नियत शूरवीरों को मारा वह भी आश्चर्य सा हुआ ४१ इसके पीछे उन व्यात्तमुख, दरद, तङ्गण, खश, लम्पाक और कुणिन्दनाम म्लेच्छ जिनके हाथ में शूल और खड्ग थे उन्हों ने सब ओर से पाषाणों को वर्षाया तब बुद्धिमानी के कर्म में कुशल सात्यकी ने उन पाषाण वृष्टियों को नाराचों से काटा ४२ । ४३ अन्तरिक्ष में तीक्ष्ण बाणों से टूटेहुए पत्थरों के शब्दों से रथ, घोड़े, हाथी और पत्तिलोग युद्ध से भागे ४४ पाषाण खण्डों से घायल मनुष्य, हाथी और घोड़े खड़े होने को ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि भौंरों से काटे हुए नहीं ठहर सक्के ४५ तब मरने से बचेहुए रुधिर में लिप्त टूटे मस्तक और पिण्डवाले हाथियों ने सात्यकी के रथ को त्याग किया ४६ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! इसके पीछे सात्यकीसे पीड़ित होकर आपकी सेना के ऐसे बड़े शब्द हुए जैसे कि पर्वों में सागर के शब्द होते हैं ४७ द्रोणाचार्य जी उस कठिन और कठोर शब्द को सुनकर सारथी से बोले हे सूत ! यह यादवों का महारथी युद्ध में क्रोधयुक्त ४८ सेना की अनेक प्रकार से पराजय करता हुआ काल के समान घूमताहै सो हे सारथे ! जहां पर यह कठोर शब्द है वहांही रथ को लेचल ४९ निश्चय सात्यकी पत्थरों से युद्ध करनेवालोंके साथ भिड़ा है और यह सब रथी भी शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि से शीघ्र जाते हैं ५० शस्त्र और कवचों से रहित बड़े पीड़ित होकर जहां तहां गिरते हैं और कठिन युद्ध में सारथी लोग घोड़ों को नहीं सँभाल सक्केहैं ५१ इस वचन को सुनकर द्रोणाचार्य का सारथी शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ भारद्वाजजीसे बोला५२ कि हे दीर्घायुवाले ! यह कौरवी सेना चारों ओरसे भागती है और युद्ध में छिन्नभिन्न हुए जहां तहां दौड़ते हुए शूरवीरों को देखो ५३ यह शूर पांचाल, पाण्डवों के साथ मिलेहुए तुमको मारने की इच्छा से चारों ओर दौड़तेहैं ५४

हे शत्रुओं के पराजय करनेवाले! यहां स्थिरतासे अथवा चलायमान होकर समय के अनुसार कर्मकरो सात्यकी दूरगया ५५ हे श्रेष्ठ! इस प्रकार भारद्वाज की वार्तालाप मेंही सात्यकी अनेक प्रकार के रथियों को मारता हुआ दिखाई दिया ५६ युद्ध में सात्यकी के हाथ से घायल वह आपके शूरवीर सात्यकी के रथ को त्याग करके द्रोणाचार्य की सेना में चलेगये ५७ फिर दुश्शासन पूर्व में जिनके साथ लौटा था वह रथ भी द्रोणाचार्य के रथ की ओर दौड़े ॥ ५८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १२१ ॥

एकसौबाईस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, दुश्शासन के रथ को सम्मुख नियत देखकर द्रोणाचार्यजी दुश्शासन से यह वचन बोले १ कि हे दुश्शासन! यह सब रथ किस रीति से भागे कहो राजा कुशल है और जयद्रथ जीवता है २ तू भी राजकुमार और राजा का भाई होकर महारथी है तू किस निमित्त युद्ध में भागता है युवराजपदवी को प्राप्त कर ३ तू द्यूत के समय द्रौपदी से कहता था कि तू द्यूत में विजय की हुई दासी है और मेरे बड़े भाई दुर्योधन के वस्त्रों की लानेवाली होकर हमारी आज्ञानुसार काम करनेवाली है ४ अब थोथेनलों के अर्थात् नपुंसकों के समान सब पाण्डव तेरे पति नहीं हैं हे दुश्शासन! पूर्व में तुम ऐसे वचन कहकर क्यों भागते हो ५ तू आपही पाञ्चाल और पाण्डवों के साथ शत्रुता करके अकेले सात्यकी को सम्मुख पाकर युद्ध में किस हेतु से भयभीत है ६ तुम पूर्व समय में नष्टद्यूत में पांसों को लेते हुए नहीं जानतेथे कि यह सब भयकारी सर्पों के समान बाण होंगे ७ पूर्व में सबसे प्रथम अधिकतर तुमहीं पाण्डवों के साथ असभ्य और अयोग्य अप्रिय वचनोंके कहनेवाले और द्रौपदीके दुःख देने के मूल हो ८ तेरी बड़ाई अहङ्कार और अहङ्कार से उत्पन्न होनेवाला पराक्रम कहां गया अब सर्प के समान पाण्डवों को क्रोधयुक्त करके कहां जायगा ९ यह भरतवंशियों की सेना राज्य और राजा दुर्योधन शोचने के योग्यहै जिसके कि तुम भाई होकर युद्ध से मुख फेरनेवाले हो १० हे वीर! अपनी भुजा के बल में नियत होकर सेना के छिन्न भिन्न होने से तुझ भयभीत के कारण पीड्यमान सेना रक्षा के योग्य है सो तुम युद्ध में भयभीत होकर युद्ध को त्याग करके शत्रुओं को प्रसन्न करते हो हे शत्रुओं के मारनेवाले! तुझ सेना के अधिपति और रक्षाश्रय

के भयभीत होकर भागनेपर युद्ध में कौन सा भयभीत नियत होगा ११।१२ अब युद्ध करनेवाले अकेले सात्यकी के कारण से तेरी बुद्धि युद्ध से भागने में प्रवृत्त है १३ हे कौरव ! जब तुम युद्ध में गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन, भीमसेन, नकुल और सहदेव को देखोगे तब क्या करोगे १४ युद्ध में सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशमान जैसे अर्जुन के बाण हैं उन बाणों के समान सात्यकी के बाण नहीं हैं जिनसे कि भयभीत होकर तुम भागते हो १५ हे वीर ! तुम शीघ्र जाओ और गान्धारी के गर्भ में फिर प्रवेश करो तुझ पृथ्वीपर दौड़नेवाले का जीवन मैं और किसी प्रकार नहीं देखता हूं १६ जो तेरी बुद्धि भागने में ही प्रवृत्त है तो सन्धिपूर्वक इस पृथ्वी को युधिष्ठिर को दो १७ जबतक अर्जुन के कांचली से छूटे सर्प की समान छोड़े बाण तेरे शरीर में नहीं लगते हैं तबतक पाण्डवों से सन्धि करो १८ जबतक महात्मा पाण्डव तेरे सौ भाइयों को युद्ध में मारकर पृथ्वी को नहीं लेतेहैं तबतक पाण्डवोंसे सन्धिकर १९ जबतक कि धर्म का पुत्र राजायुधिष्ठिर और युद्ध में प्रशंसनीय श्रीकृष्णजी कोपयुक्त नहीं होते हैं तबतक पाण्डवोंके साथ सन्धिकर २० जबतक महाबाहु भीमसेन बड़ी सेना को मँझाकर तेरे सगेभाइयों को आधीन नहीं करता है तबतक पाण्डवों के साथ सन्धिकर २१ पूर्व समय में इस तेरे भाई दुर्योधन को भीष्मजी ने समझाया था कि सुचाल और सुन्दर स्वभाववाले युद्ध में पाण्डवलोग अजेय हैं उनसे अवश्य सन्धि करले २२ तब तेरे निर्बुद्धि भाई दुर्योधन ने उनके कहने को नहीं किया सो तुम अब सावधान होकर बड़ी धीरता से पाण्डवों के साथ युद्धकरो २३ और मैंने सुना है कि भीमसेन तेरे रुधिर को पियेगा यह भी सत्य है और वह अवश्य उसी प्रकार होगा २४ हे अज्ञानिन् ! क्या तू भीमसेन के पराक्रम को नहीं जानता है जो युद्ध में मुख फेरनेवाले होकर तुमने उनसे शत्रुता प्रारम्भ की २५ शीघ्रही रथ की सवारी से वहां जाओ जहां सात्यकी वर्तमान है हे भरतवंशिन् ! तुझसे पृथक् होकर यह सब सेना भागजायगी अपने अर्थ युद्ध में सत्यपराक्रमी सात्यकी के साथ युद्ध करो २६ इतने समझाने और कहनेपर भी आपके पुत्र ने कुछ भी नहीं कहा सुनी अनसुनी करके उस मार्ग को चला जिस मार्ग में होकर वह सात्यकी जाता था २७ मुख न फेरनेवाले म्लेच्छों की बड़ी सेना समेत युद्ध में सावधान वह दुश्शासन

सात्यकी से युद्ध करनेलगा २८ रथियों में श्रेष्ठ अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य भी मध्यम तीव्रता से संयुक्त पाञ्चाल और पाण्डवों के सम्मुख गये २९ द्रोणाचार्य ने युद्ध में पाञ्चालों की सेना में प्रवेश करके सैकड़ों हज़ारों शूरवीरों को भगाया ३० हे महाराज! इसके पीछे द्रोणाचार्य ने युद्धमें अपने नामको सुनाकर पाण्डव पाञ्चाल और मत्स्यदेशियों का बड़ा विनाश किया ३१ द्रुपद का पुत्र तेजस्वी वीरकेतु जहां तहां सेनाओं के विजय करनेवाले उन भारद्वाज द्रोणाचार्य जी के सम्मुख गया ३२ उसमें गुप्तग्रन्थिवाले पांच बाणों से द्रोणाचार्य को घायल करके एक बाण से ध्वजा को भेदा और सातबाणों से उसके सारथी को घायल किया ३३ हे महाराज! वहां युद्ध में मैंने अपूर्व कर्म को देखा जो द्रोणाचार्यजी युद्ध में वेगवान् धृष्टद्युम्न के सम्मुख नियत नहीं रहे ३४ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! युद्ध में रुकेहुए द्रोणाचार्य को देखकर उन विजयाभिलाषी पाञ्चालों ने धर्मपुत्र युधिष्ठिर को सब ओर से आवरण करलिया ३५ हे राजन्! उन लोगों ने अग्निरूप बाण और बड़े बादलरूप तोमर और नाना प्रकार के शस्त्रों से अकेले द्रोणाचार्य को ढकदिया ३६ कि द्रोणाचार्य उनको बाणोंके समूहों के द्वारा सब ओर से घायल करके ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बड़े आकाश में बादलों को घायल करके वायु शोभित होते हैं ३७ इसके पीछे शत्रुहन्ताने सूर्य और अग्नि के समान बड़े भयकारी बाणों को वीरकेतु के रथपर चलाया ३८ हे राजन्! वह बाण द्रुपद के पुत्र वीरकेतु को छेदकर रुधिरसे लिप्त अग्निरूप के समान शीघ्र ही पृथ्वीपर गिरपड़ा ३९ इसके पीछे राजा पाञ्चाल का पुत्र शीघ्रही रथ से ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वायु से पीड़ित चम्पे का बड़ा वृक्ष पर्वत के शिखर से गिरता है ४० उस बड़े धनुषधारी बड़े पराक्रमी राजकुमार के मरने पर शीघ्रता करनेवाले पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य को सब ओरसे घेरलिया ४१ हे भरतवंशिन्! भाई के दुःख से पीड्यमान चित्रकेतु, सुधन्वा, चित्रवर्मा, चित्ररथ ४२ यह सब वर्षाऋतु के समान बाणों की वर्षा करते युद्धाभिलाषी होकर एकसाथही द्रोणाचार्य के सम्मुख गये ४३ महारथी राजकुमारों से बहुत प्रकार से घायल उस उत्तम ब्राह्मण ने उनके विनाश के अर्थ क्रोध करके ४४ बाणों के जालों को उनपर छोड़ा हे राजाओं में श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! कानतक खींचेहुए द्रोणाचार्य के बाणों से घायल ४५ कुमारों ने करने के योग्य कर्म को नहीं जाना हे भरतवंशिन्!

हँसते और क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने उन अचेत कुमारों को ४६ युद्ध में घोड़े रथ और सारथियों से रहित किया फिर बड़े यशस्वी द्रोणाचार्य ने अत्यन्त तीक्ष्णधार बाण और भल्लों से उन सब के ४७ शिरों को फूलों के समान गिराया फिर वह तेजस्वी राजकुमार मृतक होकर रथों से पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े ४८ जैसे कि पूर्व समय में देवासुरों के युद्ध में दैत्य और दानव गिरे थे हे राजन् ! प्रतापवान् भारद्वाज द्रोणाचार्य ने युद्ध में उनको मारकर ४९ सुवर्ण-पृष्ठी कठिनता से चढ़ाने के योग्य धनुष को घुमाया देवताओं के रूप समान महारथी पाञ्चालदेशीय कुमारों को मृतक देखकर ५० युद्ध में क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने नेत्रों से जल को गिराया और क्रोधयुक्त होकर बाणों को मारताहुआ युद्ध में द्रोणाचार्य के रथ के पास आया ५१ हे राजन् ! इसके पीछे युद्ध में धृष्टद्युम्न के बाणों से ढकेहुए द्रोणाचार्य को देखकर अकस्मात् हाहाकार शब्द उत्पन्न हुआ ५२ परन्तु महात्मा धृष्टद्युम्न के हाथ से बहुत प्रकार से ढकेहुए वह द्रो-णाचार्य पीड्यमान नहीं हुए और मन्दमुसकान करते युद्ध करनेलगे ५३ हे महाराज ! इसके पीछे क्रोध से मूर्च्छावान् क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने नब्बेबाणों से द्रोणाचार्य को छातीपर घायलकिया ५४ उस पराक्रमी के हाथ से कठिन घायल बड़े यशस्वी द्रोणाचार्यजी रथ के बैठने के स्थानपर बैठकर मूर्च्छावान् होगये ५५ फिर महाबली पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने उस दशा में युक्त उन द्रोणाचार्य को देखकर धनुष को त्यागकर शीघ्रही खड्ग को लिया ५६ हे श्रेष्ठ ! वह महारथी धृष्टद्युम्न शीघ्रही अपने रथ से कूदकर द्रोणाचार्य के रथपर चढ़गया ५७ क्रोध से लाल-नेत्र ने शरीर से शिर को काटना चाहा उसके पीछे सचेत हुए द्रोणाचार्य ने नवीन धनुष को लेकर ५८ मारने की अभिलाषा से सम्मुख वर्तमान धृष्टद्युम्न को देखकर समीप से छेदनेवाले वैतस्तिक नाम बाणों से घायलकिया ५९ और युद्ध में महारथी शत्रु से लड़े हे राजन् ! वह समीप से मारनेवाले द्रोणाचार्य के छोड़ेहुए जो वैतस्तिक बाण थे ६० उन बहुत से शायकों से घायल और वेग से रहित दृढ़पराक्रमी वीर महारथी धृष्टद्युम्न ने अपने रथपर चढ़कर और बड़े धनुष को लेकर युद्ध में द्रोणाचार्य को घायलकिया ६१ । ६२ द्रोणाचार्य ने भी बाणों से धृष्टद्युम्न को घायलकिया तब द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का वह महायुद्ध ऐसा अत्यन्त अपूर्व हुआ ६३ जैसा कि तीनोंलोकों के चाहनेवाले

इन्द्र और प्रह्लाद का युद्ध हुआ था यमक आदि अनेक मण्डलों के घूमने वाले ६४ युद्ध की रीति के ज्ञाता और युद्धभूमि में शूरवीरों के चित्तों को अचेत करनेवाले द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न ने बाणों से परस्पर घायलकिया ६५ वर्षाऋतु में बलाहकनाम बादलों के समान बाणों की वर्षा करतेहुए दोनों महात्मा बाणोंसे आकाश दिशा और पृथ्वीको ढकनेवाले हुए ६६ हे महाराज ! वहांपर जीवों के समूह क्षत्रियों के समूह और जो अन्य २ सेना के मनुष्य थे उन सबने इन दोनों के अपूर्व युद्ध की प्रशंसा करी ६७ हे महाराज ! फिर पाञ्चालदेशीय पुकारे कि युद्ध में धृष्टद्युम्न से भिड़ेहुए द्रोणाचार्य अवश्यही हमारे आधीनता में वर्तमान होंगे ६८ फिर शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य ने युद्ध में धृष्टद्युम्न के सारथी के शिर को ऐसे गिराया जैसे कि वृक्ष के पकेहुए फल को गिराते हैं ६९ हे राजन् ! इसके पीछे उस महात्मा के घोड़े भागे उनके भागनेपर पराक्रमी द्रोणाचार्य ने जहां तहां युद्ध में पाञ्चाल और सृञ्जयों से युद्धकिया ७० हे समर्थ, धृतराष्ट्र ! शत्रुविजयी प्रतापी द्रोणाचार्य पाण्डव और पाञ्चालों को विजयकरके फिर अपने व्यूह में नियत होकर खड़ेहुए पाण्डवों ने युद्ध में उन के विजय करने को साहस नहीं किया ॥ ७१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वाविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १२२ ॥

एकसौतेईस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! इसके पीछे बादल के समान बाणों की वर्षा करताहुआ दुश्शासन सात्यकी के सम्मुख गया १ उसने सात्यकी को साठ बाणों से और सोलहबाणों से युद्ध में घायलकरके युद्ध में नियतहुए को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि मैनाक पर्वत को नहीं करसके २ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! फिर नाना देशों में उत्पन्न होनेवाले रथों के समूहों समेत सब ओर से असंख्य शायकों को छोड़ते और बादल के समान शब्दों से दशों दिशाओं को शब्दायमान करते शूरवीर दुश्शासन ने शायकनाम बाणों से उस सात्यकी को बहुत ढका ३ । ४ महाबाहु सात्यकी ने युद्ध में उस आतेहुए दुश्शासन को देखकर सम्मुख में जाकर शायकों से ढकदिया ५ बाणों के समूहों से ढकेहुए युद्ध में भयभीत वह लोग जिनमें मुख्य दुश्शासन था आपकी सेना के देखतेहुए भागे ६ हे महाराज, राजन्, धृतराष्ट्र ! उन लोगों

के भागनेपर आपका पुत्र दुश्शासन सेना से पृथक् होकर नियत हुआ और बाणों से सात्यकी को पीड्यमान किया ७ उसने चार बाणों से उसके घोड़ों को तीन बाणों से सारथी को और सौ बाणों से सात्यकी को युद्धभूमि में घायलकरके सिंहनाद को किया ८ इसके पीछे क्रोधयुक्त सात्यकी ने युद्ध में उसके रथ ध्वजा और सारथी को बाणों से गुप्त करदिया ९ उसने शूरवीर दुश्शासन को शायकों से ऐसा अच्छा ढका जैसे कि मकड़ी प्राप्त होनेवाले मशक जन्तु को अपने जालों से ढकती है शत्रु के विजय करनेवाले शीघ्रतायुक्त सात्यकी ने अपने बाणों से आच्छादित करदिया १० राजा दुर्योधन ने इस प्रकार सैकड़ों बाणों से ढकेहुए दुश्शासन को देखकर त्रिगर्तदेशियों को सात्यकी के रथपर भेजने की प्रेरणा करी ११ तब वह निर्दयकर्मी युद्धकुशल त्रिगर्तदेशीय तीन हजार रथी सात्यकी के सम्मुख गये १२ वहां जाकर उन लोगों ने परस्पर शपथ खाकर युद्ध में बुद्धि को प्रवृत्तकरके उस सात्यकी को रथों के बड़े समूहों से घेरलिया १३ युद्ध में उपाय करनेवाले और बाणों की वर्षा करनेवाले उन त्रिगर्तदेशियों के पांच सौ उत्तम शूरवीरों को सब सेना के देखतेहुए सात्यकी ने मारडाला १४ शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी के हाथ से मरेहुए वह लोग ऐसे शीघ्र गिरे जैसे कि बड़े वायु के वेग से पर्वत से टूटेहुए वृक्ष गिरते हैं १५ हे राजन्! वहां बहुत प्रकार से टूटे अङ्गवाले हाथियों से ध्वजाओं से सुवर्णभूषित पड़ेहुए घोड़ों से १६ और सात्यकी के बाणों से टूटेहुए रुधिर में मनुष्यों के शरीरों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि प्रफुल्लित किंशुकके वृक्षों से शोभित होती है १७ युद्ध में सात्यकी के हाथ से घायल उन आपके शूरवीरों ने अपने रक्षक को ऐसे नहीं पाया जैसे कीच में फँसाहुआ हाथी अपने रक्षक को नहीं पासक्ता १८ इसके पीछे वह सब द्रोणाचार्य के रथ के पास ऐसे वर्तमान हुए जैसे कि पक्षियों के राजा गरुड़ के भय से बड़े २ सर्प बिलों में गुप्त होते हैं १९ वह वीर सर्पाकार बाणों से पांच सौ वीरों को मारकर धीरे से अर्जुन के रथ की ओर को चला २० आपके पुत्र दुश्शासन ने शीघ्रही गुप्तग्रन्थीवाले नव बाणों से उस जातेहुए नरोत्तम सात्यकी को घायल किया २१ फिर उस बड़े धनुषधारी ने तीक्ष्णधार सुनहरी पुङ्खवाले गृध्रपक्षयुक्त सीधे चलने वाले बाणों से उसको घायलकिया २२ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र!

हँसतेहुए सात्यकी ने तीन बाणों से दुश्शासन को छेदकर फिर पांच बाणों से घायल किया २३ फिर सात्यकी तीक्ष्ण शीघ्रगामी पांच बाणों से आपके पुत्र को घायल करके और युद्ध में उसके धनुष को भी काटकर हँसता हुआ अर्जुन की ओर चला २४ इसके पीछे मारनेके इच्छावान् क्रोधभरे दुश्शासनने केवल लोहे की बनीहुई शक्ति को चलतेहुए सात्यकी के ऊपर छोड़ा २५ हे राजन्! तब सात्यकी ने आपके पुत्र की उस भयकारी शक्ति को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से काटा २६ हे राजन्! फिर आपके पुत्र ने दूसरे धनुष को लेकर बाणों से सात्यकी को घायलकरके सिंहनाद किया २७ फिर युद्ध में क्रुद्ध सात्यकी ने आपके पुत्र को अचेत करके अग्नि के समान बाणों से छाती में घायल किया २८ फिर उसी महाभाग ने गुप्तग्रन्थीवाले केवल लोहे के तीक्ष्णमुख तीन बाणों से छेदकर फिर आठ बाणों से घायल किया २९ दुश्शासन ने बीस बाण से सात्यकी को घायल किया सात्यकी ने भी गुप्तग्रन्थीवाले तीन बाणों से छाती के मध्य में व्यथित किया ३० इसके पीछे महारथी सात्यकी ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उसके घोड़ोंको मारा और बड़े तीव्र गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से सारथीकोभी मारा ३१ एक भल्ल से धनुष को पांच बाण से हस्तत्राण को दो भल्ल से ध्वजा समेत रथ की शक्ति को काटा उसी प्रकार विशिखनाम तीक्ष्णबाण से सारथी के पीछेवाले को मारा ३२ वह टूटेधनुष रथ से विहीन मृतक घोड़े व सारथीवाला दुश्शासन सेनापति त्रिगर्तदेशियों की सेना के मुख्य रथ के द्वारा हटाया गया ३३ हे भरतवंशिन्! महाबाहु सात्यकी ने एक मुहूर्त भर सम्मुख जाकर भीमसेन के वचन को स्मरणकरके उस दुश्शासन को नहीं मारा ३४ हे भरतवंशिन्! भीमसेन ने सभा के मध्यमें आपके सब पुत्रों के मारने की प्रतिज्ञाकरी है ३५ हे समर्थ,राजन्, धृतराष्ट्र! इसके पीछे युद्ध में सात्यकी दुश्शासनको विजयकरके उसी मार्ग में शीघ्रता से चला जिस मार्ग होकर कि अर्जुन गया था ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयोविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १२३ ॥

एकसौचौबीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! क्या मेरी उस सेना में कोई महारथी नहीं थे जिन्हों ने उस प्रकार जाते और मारते हुए सात्यकी को भी नहीं रोका १ युद्ध में उसने वह कर्म किया जैसे कि महेन्द्र ने दानवों के मध्य में किया था २

अथवा वह पृथ्वी शूरवीरों से रहित थी जिधर होकर सात्यकी गया व वह बहुत मृतकवाली थी जिस मार्गसे सात्यकी गया ३ हे सञ्जय ! युद्धमें वीर सात्यकी के किये हुए जिस कर्म को कहता है ऐसे कर्म करने को इन्द्र भी साहस नहीं करसक्ता है ४ हे सञ्जय ! जैसा तू कहता है वह श्रद्धा से रहित बुद्धि से बाहर है निश्चय करके उस अकेले सत्यपराक्रमी ने बहुत सी सेनाओं को विध्वंस किया ५ अकेला सात्यकी किस प्रकार उन युद्ध करनेवाले बहुत महात्माओं को विजयकरके दूर चलागया हे सञ्जय ! वह मुझसे कहो ६ सञ्जय बोले हे राजन् ! आपकी सेना के मनुष्य रथ, हाथी, घोड़े और पत्तियों की चढ़ाई बड़ी कठिन प्रलयकाल के समान हुई ७ हे बड़ाई देनेवाले ! आह्निक समूहों में संसार के मध्य आपकी सेना के समान कोई समूह नहीं हुआ यह मेरा मत है ८ वहांपर आनेवाले देवता और चारणलोग बोले कि इस पृथ्वीपर सेनाओं के समूह इससे बढ़कर कभी नहीं होंगे ९ हे राजन् ! इस प्रकार का कोई व्यूह नहीं हुआ जैसा कि जयद्रथ के मारने में द्रोणाचार्य की ओर से नियत हुआ १० युद्धमें परस्पर सम्मुख दौड़ते हुए सेनाओं के समूहों के ऐसे शब्द हुए जैसे कि कठिन वायु से ओत प्रोत समुद्रों के शब्द होते हैं ११ हे नरोत्तम ! आपकी और पाण्डवों की सेना में इकट्ठे होनेवाले हजारों राजा थे १२ वहां युद्ध में दृढ़कर्मी क्रोधयुक्त बड़े वीरों के बड़े रोमहर्षण करनेवाले कठिन शब्द हुए १३ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! इसके पीछे भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और धर्मराज युधिष्ठिर पुकारे १४ कि आओ प्रहार करो शीघ्र चारों ओर से दौड़ो वीर सात्यकी और अर्जुन शत्रु की सेना में पहुँचे हुए हैं १५ सुखपूर्वक जयद्रथ के पास चलो शीघ्रता से ऐसाही करो इस प्रकार से सेनाओं को प्रेरणा करी १६ उन दोनों के मरनेपर कौरव अभीष्ट सिद्धि करें और हम हारजावें बड़े वेग वाले तुम सब साथ होकर शीघ्रही सेनासागर को १७ ऐसे उथल पुथल करो जैसे कि वायु समुद्र को उथल पुथल करता है हे राजन् ! भीमसेन और धृष्टद्युम्न की आज्ञानुसार उन लोगों ने अपने प्राणों को त्याग करके युद्ध में कौरवों को घायल किया युद्ध में शस्त्रों के द्वारा मृत्यु को चाहते स्वर्गाभिलाषी बड़े तेजस्वियों ने १८।१९ मित्र के कार्य में अपने जीवन की इच्छाको नहीं किया हे राजन् ! उसी प्रकार बड़े यश को चाहते आपके शूरवीर युद्ध में उत्तम बुद्धिको

करके नियत हुए २० उस कठिन भयकारी युद्ध के उत्पन्न होनेपर सात्यकी सब सेना को विजय करके अर्जुन के पास गया २१ उस युद्ध में सूर्य की किरणों से प्रकाशमान शरीरों के कवचों के प्रकाश ने सेना के लोगों की दृष्टियों को चारोंओरसे घायल किया २२ हे महाराज! इस प्रकार उपाय करनेवाली महात्मा पाण्डवों की बड़ी सेना को राजा दुर्योधन ने मँझाया २३ हे भरतवंशिन्! उन्हों का और उसका वह कठिन युद्ध सब जीवों का महाविनाशकारी हुआ २४ धृतराष्ट्र बोले हे सूत! इस प्रकार सेना के भागने पर आपत्ति में फँसेहुए दुर्योधन ने आपही पीछे की ओर से युद्ध किया २५ बड़े युद्ध में एक का और बहुत का मुख्य करके राजा का युद्ध मुझको बहुत कठिन विदित होता है २६ बड़े सुखसे पोषण किया हुआ और लक्ष्मी से लोक का ईश्वर अकेला वह दुर्योधन बहुत शूरवीरों को पाकर मुख को तो नहीं फेरगया २७ सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! आपके अकेले पुत्रका अपूर्व युद्ध जैसे कि बहुतों से हुआ उसको मैं तुमसे कहता हूं तुम चित्त से सुनो २८ युद्ध में दुर्योधन ने पाण्डवीय सेनाको ऐसा तिरबिर किया जैसे कि कमलों का वन हाथी से छिन्न भिन्न होताहै २६ हे राजन्! इसके पीछे आपके पुत्र के हाथसे घायलहुई उस सेना को देखकर वह पाञ्चालदेशीय जिनमें मुख्य भीमसेन था उसके सम्मुख गये ३० उसने पाण्डव भीमसेन को दशबाणों से वीर नकुल व सहदेव को तीन २ बाण से और धर्मराज को सात बाण से घायल किया ३१ विराट समेत द्रुपद को छः बाण से शिखण्डी को सौ बाण से धृष्टद्युम्न को बीस बाण से और द्रौपदी के पुत्रों को तीन २ बाण से छेदा ३२ और युद्ध में हाथी और रथों समेत अन्य सैकड़ों शूरवीरों को भयकारी बाणों से ऐसे मारा जैसे कि क्रोधयुक्त काल सृष्टि को मारता है ३३ गुरु की आज्ञा पूर्वक अपने अस्त्रों के बल से शत्रुओं को मारा वह दुर्योधन जिसका कि धनुष मण्डलरूप था वह न बाण को चढ़ाता और न छोड़ता दिखाई पड़ा ३४ मनुष्यों ने युद्ध में उस शत्रुहन्ता दुर्योधन का स्वर्णमयी पृष्ठवाला बड़ा धनुष मण्डलरूप देखा ३५ हे कौरव! इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने दो भल्ल से आपके उपाय करनेवाले पुत्र के धनुष को युद्ध में काटा ३६ और अच्छेप्रकार से चलायेहुए उत्तम दश बाणों से उसको घायलकिया वह शीघ्रही कवच को फाड़ शरीर को छेदकर पृथ्वीपर

गिरपड़े ३७ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न पाण्डवों ने युधिष्ठिर को ऐसे आवरण किया जैसे कि पूर्व समय में देवता और महर्षियों ने वृत्रासुर के मारने में इन्द्र को आवरणित किया था ३८ उसके पीछे आप का प्रतापी पुत्र दूसरे धनुष को लेकर राजा युधिष्ठिर को तिष्ठ २ शब्द कहकर सम्मुख गया ३९ बड़े युद्ध में आतेहुए उस आपके पुत्रको सम्मुख आया हुआ देखकर अत्यन्त प्रसन्न विजय के इच्छावान् पाञ्चालदेशीय उसके सम्मुख गये ४० युद्ध में पाण्डव को चाहते द्रोणाचार्य ने उनको ऐसे रोका जैसे कि कठिन वायुसे उठाये हुए जल छोड़ने वाले बादलों को वायु रोकता है ४१ हे महाबाहो, राजन्, धृतराष्ट्र! उस युद्ध में पाण्डवों का और आपके पुत्रों का ऐसा बड़ा संग्राम हुआ जो कि रोमाञ्चों को खड़ा करता था ४२ रुद्रजी के क्रीड़ास्थानके समान सब देहधारियोंका विनाश हुआ इसके पीछे जिधर अर्जुन था उस ओरसे ऐसा बड़ाभारी शब्द हुआ ४३ जो कि सब शब्दों से अधिकतर रोमाञ्चों का खड़ा करनेवाला था महाबाहु अर्जुन के और आपके धनुषधारियों के शब्द ४४ और भरतवंशियोंकी सेनाके मध्यवर्ती बड़े युद्ध में सात्यकी के शब्द और व्यूह के द्वार पर शत्रुओं के साथ बड़े युद्ध में द्रोणाचार्यके भी बड़े शब्द हुए ४५ हे राजन्! अर्जुन द्रोणाचार्य और महारथी सात्यकी के क्रोधरूप होनेपर इस रीति से यह बड़ा भारी विनाश पृथ्वीपर वर्तमान हुआ॥ ४६॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्विंशत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १२४॥

एकसौपच्चीस का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! सोमकों के साथ द्रोणाचार्य का बड़ाभारी युद्ध हुआ वह युद्ध बादल के समान शब्दायमान था १ नरों में वीर और सावधान द्रोणाचार्य लाल घोड़ेवाले रथपर सवार होकर मध्यम तीव्रता में नियत होकर युद्ध में पाण्डवों के सम्मुख गये २ हे भरतवंशिन्! आपके प्रियहित की वृद्धि में प्रवृत्त बड़े धनुषधारी पराक्रमी उत्तम कलश से उत्पन्न होनेवाले प्रतापी भारद्वाज द्रोणाचार्य अपूर्व पुङ्खवाले तीक्ष्ण बाणों से उत्तम २ शूरवीरों को चुनते हुए युद्ध में क्रीड़ा करनेवाले हुए ३। ४ और युद्ध में निर्दय केकयों का महारथी पांचो भाइयों में श्रेष्ठ बृहत्क्षत्र उनके सम्मुख गया ५ और तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते उसने ऐसा अत्यन्त पीड्यमान किया जैसे कि गन्धमादन पर्वत

पर वर्षा के जल को बरसाता हुआ बड़ा बादल होता है ६ हे महाराज! अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधारवाले पन्द्रहबाणों को उसके ऊपर फेंका ७ प्रसन्न चित्त के समान उसने युद्ध में द्रोणाचार्य के छोड़े हुए उन प्रत्येक बाणों को जोकि क्रोध भरे सर्प की सूरत थे पांच बाणों से काटा ८ उत्तम ब्राह्मण ने उसकी उस हस्तलाघवता को देख बहुत हँसकर गुप्त ग्रन्थीवाले आठबाणों को चलाया ९ द्रोणाचार्य के धनुष से निकले हुए शीघ्रता से गिरनेवाले उन बाणों को देखकर युद्ध में उसने उतनेही तीक्ष्ण बाणों से रोका १० हे महाराज! बृहच्छत्र के किये हुए कठिनता से करने के योग्य उस कर्म को देखकर आपकी सेनावालों को आश्चर्य हुआ ११ इसके पीछे बृहच्छत्र को मारने की इच्छा से द्रोणाचार्य ने युद्ध में बड़े कष्ट से विजय होने वाले दिव्य ब्रह्मअस्त्र को प्रकट किया १२ तब उस बृहच्छत्र ने द्रोणाचार्य के छोड़े हुए अस्त्र को देखकर ब्रह्मअस्त्र सेही उस ब्रह्मअस्त्र को निवारण किया १३ हे भरतवंशिन्! इसके पीछे अस्त्र सेही उस ब्रह्मअस्त्र के शान्त होनेपर बृहच्छत्र ने सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधारवाले साठबाणों से ब्राह्मण को घायल किया १४ फिर द्विपादों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने उसको नाराच से घायल किया वह बाण उसके कवच को काटकर पृथ्वी में समागया १५ हे राजाओं में श्रेष्ठ! जैसे कांचली से छुटा हुआ कालासर्प बामी में प्रवेश करता है उसी प्रकार वह बाण युद्ध में बृहच्छत्र को घायलकरके पृथ्वी में समागया १६ हे महाराज! द्रोणाचार्यके शायकों से अत्यन्त घायल बड़े क्रोधसे पूर्ण उस बृहच्छत्रने अपने दोनों शुभ नेत्रोंको खोलकर १७ सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधारवाले सत्तरबाणों से द्रोणाचार्य को व्यथित किया और एक बाणसे उनके सारथी को मर्मस्थलमें अत्यन्त घायलकिया १८ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! बृहच्छत्र के बहुत बाणोंसे घायल द्रोणाचार्य ने बड़े तीक्ष्ण बाणों को बृहच्छत्र के रथपर फेंका १९ फिर द्रोणाचार्य ने उस महारथी बृहच्छत्र को व्याकुलकरके उसके चारों घोड़ों को चारबाणों से मारा २० एकबाण से सारथी को रथ के बैठने के स्थान से गिरादिया और बाणों से ध्वजा समेत छत्र को काटकर पृथ्वी पर गिराया २१ इसके पीछे उत्तम ब्राह्मण ने अच्छेप्रकार छोड़ेहुए नाराच से बृहच्छत्र को हृदयपर छेदा तब वह हृदय से विदीर्ण होकर गिरपड़ा २२ हे राजन्! केकयों के महारथी बृहच्छत्र के मरनेपर अत्यन्त क्रोध-

युक्त वीरों में उत्तम शिशुपाल का पुत्र अपने सारथी से यह वचन बोला २३ हे सारथे ! तू वहांचल जहां यह कवचधारी द्रोणाचार्य सब केकय और पाञ्चाल देशियों की सेना को मारताहुआ नियत है २४ रथियों में श्रेष्ठ को सारथी ने शीघ्रगामी काम्बोजदेशीय घोड़ों के द्वारा द्रोणाचार्य के सम्मुख किया २५ चन्देरीदेशियों में उत्तम बड़े पराक्रम से उदयमान धृष्टकेतु मारने के निमित्त द्रोणाचार्य के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि पतङ्ग अग्नि में जाताहै २६ तब सोतेहुए व्याघ्र को पीड्यमान करतेहुए उस धृष्टकेतु ने साठबाणों से ध्वजा रथ और घोड़ों समेत द्रोणाचार्य को घायलकिया फिर दूसरे अन्य तीक्ष्णबाणों से भी व्यथित किया २७ तब द्रोणाचार्य ने तीक्ष्ण और पक्षवाले क्षुरप्र से उस उपाय करनेवाले धृष्टकेतु के धनुष को मध्य से काटा २८ महारथी धृष्टकेतु ने फिर दूसरे धनुष को लेकर कङ्क और मोर के पङ्खों से मढ़े शायकों से द्रोणाचार्य को घायलकिया २९ हँसतेहुए द्रोणाचार्य ने चारबाणों से उसके चारों घोड़ों को मारकर सारथी के शरीर समेत उसके शिर को काटा ३० फिर उसको पचीसशायकों से घायल किया राजा चन्देरी ने शीघ्रही रथ से कूद शीघ्रही गदा को लेकर ३१ क्रोधयुक्त सर्पिणी के समान उस गदा को द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका उस काल रात्रि के समान उठाईहुई लोहे की भारी सुवर्ण से खचित आतीहुई गदा को देखकर भारद्वाज द्रोणाचार्य ने हज़ारों तीक्ष्ण बाणों से काटा ३२ । ३३ हे श्रेष्ठ, कौरव, धृतराष्ट्र ! भारद्वाज के बहुत बाणों से टूटीहुई वह गदा पृथ्वी को शब्दायमान करतीहुई पृथ्वीपर गिरपड़ी ३४ फिर क्रोधयुक्त वीर धृष्टकेतु ने उस गदा को टूटीहुई देखकर तोमर और सुवर्ण के समान प्रकाशमान शक्ति को छोड़ा ३५ तोमर को पांचबाण से तोड़कर शक्ति को पांचबाणों से काटा और गरुड़ से काटेहुए दो सर्पों के समान वह दोनों पृथ्वीपर गिरपड़े ३६ इसके पीछे मारने के उत्सुक प्रतापवान् द्रोणाचार्य ने इसके मारने के निमित्त युद्ध में तीक्ष्ण बाण को चलाया ३७ वह बाण उस तेजस्वी के कवच और हृदय को तोड़कर पृथ्वीपर ऐसे गया जैसे कि कमल के वन में हंस जाता है ३८ जैसे कि भूखा नीलकण्ठ क्रोध से पतङ्ग को निगल जाता है उसी प्रकार से शूर द्रोणाचार्य ने युद्ध में धृष्टकेतु को मारा ३९ चन्देरी के राजा के मरनेपर क्रोध के आधीन उत्तम अस्त्रों का जाननेवाला उसका पुत्र उस सेना के भाग में पहुँचा ४०

हँसतेहुए द्रोणाचार्य ने बाणों से उसको भी यमलोक में ऐसे पहुँचाया जैसे कि बड़े वन में पराक्रमी बड़ा व्याघ्र मृग के बच्चे को खाजाता है ४१ हे भरत-वंशिन् ! शूरवीरों के नाशहोने पर जरासन्ध का वीरपुत्र आपही द्रोणाचार्य के सम्मुख गया ४२ फिर उस महाबाहु ने युद्ध में बाणों की धाराओं से शीघ्रही द्रोणाचार्य को ऐसे दृष्टि से गुप्त करदिया जैसे कि बादल सूर्य को आच्छादित करदेता है ४३ क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य ने उसकी उस हस्त-लाघवता को देखकर शीघ्रही सैकड़ों और हजारों शायकों को छोड़ा ४४ द्रोणाचार्य ने उस रथियों में श्रेष्ठ रथपर सवार जरासन्ध के पुत्र को युद्ध में बाणों से ढककर सब धनुषधारियों के देखतेहुए शीघ्रही मारा ४५ जो शूरवीर वहांगया उसको कालरूप द्रोणाचार्य ने ऐसे मारा जैसे कि समय के अन्तपर काल सब जीवधारियों को मारता है ४६ हे महाराज ! इसके पीछे द्रोणाचार्य ने युद्ध में नामों को सुनाकर हज़ारों बाणों से पाण्डवों के शूरवीरों को ढक दिया ४७ द्रोणाचार्य के चलायेहुए तीक्ष्ण धारवाले उन बाणों ने जिनपर कि नाम खुदाहुआ था युद्ध में सैकड़ों मनुष्य हाथी और घोड़ों को मारा ४८ जैसे कि इन्द्र के हाथ से महाअसुर घायल होते हैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य के हाथ से घायलहुए वह पाञ्चाल ऐसे कम्पायमानहुए जैसे कि शरदी से पीड्य-मान गौवें होती हैं ४९ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! द्रोणाचार्य के हाथ से सेनाओं के मरने और घायल होनेपर पाण्डवों के दुःखदायी शब्द उत्पन्नहुए ५० तब सूर्य से सन्तप्त और शायकों से घायल पाञ्चाल चित्त से भयभीतहुए ५१ युद्ध में द्रोणाचार्य के बाणजालों से अचेत बड़े ज्ञान में आश्रित पाञ्चालदेशियों के महारथी ५२ और चन्देरी, सृञ्जय, काशी और कौशलदेशियों के शूरवीर अत्यन्त प्रसन्न युद्ध की इच्छा से द्रोणाचार्य के सम्मुख गये ५३ चन्देरी पाञ्चाल और सृञ्जयदेशियों के वह शूरवीर युद्ध में परस्पर यह कहते हुए कि द्रोणाचार्य को मारो द्रोणाचार्य को मारो द्रोणाचार्य के सम्मुख गये बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य को यमलोक में पहुँचाने के अभिलाषी वह पुरुषोत्तम अपनी २ सब सामर्थियों से उपाय करनेवाले हुए ५४ । ५५ भारद्वाज द्रोणाचार्य ने उन उपाय करनेवाले वीरों को मुख्य करके चन्देरी देश के उत्तम शूरों को बाणों से यमलोक को भेजा ५६ उन चन्देरीदेशियों के उत्तम वीरों के नाश होने

पर द्रोणाचार्य के बाणों से पीड्यमान सब पाञ्चाल बड़े कम्पायमान हुए ५७ हे श्रेष्ठ, भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र ! वह पाञ्चाल द्रोणाचार्य के उस प्रकार के कर्मों को देखकर भीमसेन और धृष्टद्युम्न को पुकारे ५८ कि निश्चय करके इस ब्राह्मण ने दुःख से होने के योग्य महातपको किया है जो क्रोध होकर युद्ध में इस प्रकार से क्षत्रियों का विध्वंस करता है ५९ क्षत्रिय का धर्म युद्ध है और ब्राह्मण का धर्म उत्तम तपस्या है यह तपस्वी विद्यावान् दृष्टि से भी भस्म करसक्ते हैं ६० हे भरतवंशिन् ! बहुत से उत्तम क्षत्रिय द्रोणाचार्य के अस्त्रों की उस अग्नि में जो कि अग्नि के समान स्पर्शवाली कठिनता से तरने के योग्य महाभय-कारी थी प्रवेशित हुए और वहां जाकर भस्म हुए ६१ बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य बल पराक्रम और साहस के अनुसार सब जीवों को अचेत करते हमारी सेनाओं को मारते हैं ६२ क्षत्रधर्मा उन सब के वचनों को सुनकर सम्मुख नियत हुआ और क्रोध से व्याकुलचित्त बड़े पराक्रमी क्षत्रधर्मा ने अर्धचन्द्र नाम बाण से द्रोणाचार्य के धनुषबाण को काटा क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य ने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर ६३ । ६४ प्रकाशित और वेगवान् दूसरे धनुष को लेकर शत्रु की सेना के मारनेवाले तीक्ष्णबाण को उसपर चढ़ाकर ६५ पराक्रमी आचार्यजी ने कानतक खैंचेहुए बाण को छोड़ा वह बाण क्षत्रधर्मा को मारकर पृथ्वीपर गया ६६ फिर वह भी हृदय से विदीर्ण सवारी से पृथ्वी में गिरपड़ा इस के पीछे धृष्टद्युम्न के पुत्र के मरनेपर सब सेना कम्पायमान हुई ६७ तब बड़े पराक्रमी चेकितान ने द्रोणाचार्य के ऊपर चढ़ाई करी उसने द्रोणाचार्य को दश बाणों से छेदकर छाती में घायल किया ६८ चारबाण से उनके सारथी को और चार ही बाणों से उनके घोड़ों को घायल किया द्रोणाचार्य ने सोलह २ बाणों से उसकी दक्षिण भुजा ६९ ध्वजा को और सात बाणसे सारथी को मारा उसके सारथी के मरनेपर वह घोड़े रथ को लेकर भागे ७० हे श्रेष्ठ! युद्ध में भारद्वाज के बाणोंसे चेकितान के रथ को मृतक घोड़े और सारथी से रहित देखकर पाञ्चाल और पाण्डवों में बड़ा भय उत्पन्न हुआ ७१ उस समय युद्ध में इकट्ठे हुए उन चन्देरी पाञ्चाल और सृञ्जयदेशियों के शूरोंको चारों ओर से प्रसन्न करते हुए द्रोणाचार्य बहुत शोभायमान हुए ७२ कानतक श्वेतबाल रखनेवाले अवस्था में पचासी वर्षके वृद्ध द्रोणाचार्य सोलह वर्षकी अवस्थावाले के समान युद्ध में घूमने

लगे ७३ तब शत्रुओं ने उन निर्भय के समान घूमनेवाले शत्रुओं के मारनेवाले द्रोणाचार्य को वज्रधारी इन्द्र माना ७४ इसके पीछे बुद्धिमान् महाबाहु राजा द्रुपद बोले कि यह लोभकर्मी क्षत्रियों को ऐसे मारता है जैसे कि व्याघ्र छोटे मृगों को ७५ दुर्बुद्धि और पापी दुर्योधन दुःखरूपी लोकों को पावेगा जिसके लोभ से युद्ध में उत्तम २ क्षत्रियलोग मारेगये ७६ उत्तम गौ बैलों के समान मारेहुए रुधिर से लिप्त अङ्ग कुत्ते और शृगालों के भोजनरूप सैकड़ों शूरवीर पृथ्वीपर सोते हैं ७७ हे महाराज ! तब अक्षौहिणी सेना का स्वामी राजाद्रुपद इस प्रकार से कहकर युद्ध में पाण्डवों को आगे करके द्रोणाचार्य के सम्मुख गया ॥ ७८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १२५ ॥

एकसौछब्बीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, जहां तहां पाण्डवों की सेनाओं के छिन्नभिन्न करनेपर पाण्डवलोग पाञ्चाल और सोमकों समेत बहुत दूर गये १ हे भरतवंशिन् ! जैसे कि प्रलयकाल में संसार का कठिन विनाश होता है उसी प्रकार भयकारी रोमहर्षण करनेवाले युद्ध में संसार के अत्यन्त नाश होनेपर २ युद्ध में पराक्रम करनेवाले द्रोणाचार्य के वारंवार गर्जते व पाञ्चालदेशियों के नाशयुक्त होने और पाण्डवों के घायल होनेपर धर्मराज युधिष्ठिर ने किसी आश्रय स्थान को नहीं देखा ३ हे महाराज ! उस समय उसने चिन्ता करी कि यह कैसे होगा तदनन्तर अर्जुन के देखने की इच्छा से सब दिशाओं को देखा ४ फिर नरोत्तम युधिष्ठिर ने न अर्जुन को देखा न श्रीकृष्णजी को और हनुमान्जी की मूर्त्ति रखनेवाली ध्वजा कोभी नहीं देखा ५ । ६ तब उन दोनों नरोत्तमों को न देखकर चिन्ता से पूर्णशरीर धर्मराज युधिष्ठिर ने शान्ति को नहीं पाया ७ बड़े साहसी महाबाहु धर्मराज युधिष्ठिर ने संसार की अपकीर्ति के भय से सात्यकी के रथ के विषय में चिन्ता करी कि मित्रों का अभय करनेवाले सत्यसङ्कल्प शिनी के पौत्र सात्यकी को युद्ध में मैंनेही अर्जुन के खोज के लिये भेजा है ८ । ९ अब निश्चय करके मुझको दो प्रकार की चिन्ता उत्पन्न हुई सात्यकी पाण्डव अर्जुन समेत अन्वेषण करने के योग्य है १० अर्जुन के पीछे चलनेवाले सात्यकी को भेजकर युद्ध में सात्यकी के पीछे चलनेवाले किस वीर को भेजूंगा ११ जो मैं सात्यकी को खोज न करके बड़े उपाय से भाई के खोज को

करूंगा तो संसार मुझको बुरा कहैगा १२ कि धर्म का पुत्र युधिष्ठिर भाई को तलाश करके सत्यपराक्रमी यादव सात्यकी को त्याग करदेता है १३ सो मैं संसार के अपवाद के भय से पाण्डव भीमसेन को महात्मा सात्यकी की तलाश को भेजूंगा १४ शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन में जैसी मेरी प्रीति है उसी प्रकार युद्ध में दुर्मद वृष्णियों में वीर प्रतापी सात्यकी में भी मेरी बड़ी प्रीति है १५ मैंने सात्यकी को बड़े भार में संयुक्त किया है वह बड़ा पराक्रमी मित्र की प्रेरणा और बड़प्पन से १६ भरतवंशियों की सेना में ऐसे पहुँचा जैसे कि सागर में मगर जाताहै मुख न फेरनेवाले बुद्धिमान् वृष्णिवीर के साथ परस्पर युद्ध करनेवाले शूरवीरों के यह शब्द सुनेजाते हैं मैंने समय के अनुसार बहुत प्रकार से निश्चय किया है १७। १८ कि धनुषधारी पाण्डव भीमसेन का वहां जाना मुझ को स्वीकार है जहां पर वह दोनों महारथी गये हैं १९ इस पृथ्वी पर भीमसेन का असह्य कुछ भी नहीं वर्तमान है युद्ध में उपाय करनेवाला यह भीमसेन अपने भुजबलमें नियत होकर पृथ्वीके सब धनुषधारियों से सम्मुखता करने को समर्थ है २०। २१ हम सब जिस महात्मा के भुजबल के आश्रित होकर वनवाससे निवृत्त हुए और युद्ध में पराजय नहीं हुए २२ इधर से सात्यकी के पास पाण्डव भीमसेन के जानेपर वह दोनों अर्जुन और सात्यकी सनाथ होंगे २३ मेरी बुद्धि से शस्त्र चलाने में कुशल वह दोनों सात्यकी और अर्जुन आप श्रीवासुदेवजी से रक्षित शोच के योग्य नहीं हैं परन्तु मुझको अपने शोच का दूर करना अवश्य उचित है इस हेतु से सात्यकी के खोजने के निमित्त भीमसेन को आज्ञादूंगा २४।२५ इसके पीछे सात्यकी के विषय में कर्म को कियाहुआ मानता हूं धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर इस प्रकार मनसे निश्चय ठहराकर सारथी से बोला कि मुझको भीमसेन के पास लेचल २६ अश्वविद्या में कुशल सारथी ने धर्मराज के वचन को सुनकर सुवर्णके समानवाले रथ को भीमसेन के पास पहुँचाया २७ फिर भीमसेन को आज्ञा देकर समय के अनुसार चिन्ता करी अर्थात् वहांपर राजा आज्ञा करताहुआ बड़ा मूर्च्छित हुआ २८ वह मूर्च्छा से व्याप्त कुन्ती का पुत्र राजा युधिष्ठिर भीमसेन को बुलाकर यह वचन बोला २९ हे भीमसेन! जो अकेला रथी होकर देवता गन्धर्व और दैत्यों को भी विजय करसक्ता है उस तेरे छोटे भाई के ध्वजा के चिह्नको नहीं देखता

हूं ३० इसके पीछे भीमसेन उस दशावाले धर्मराज से बोले कि आपकी इस प्रकारकी मूर्च्छा मैंने न कभी देखी और न सुनी ३१ निश्चय पूर्व समयमें बड़े दुःख से व्याकुल हमलोगों के आप गतिरूप हुए हे महाराज! आप उठिये २ जो आप कहैं वही हम करें ३२ हे बड़ाई देनेवाले! मेरा कर्म निष्फल नहीं है हे कौरवों में श्रेष्ठ! आज्ञा करो और चित्त में खेद न करो ३३ काले सर्प के समान श्वास लेता अश्रुपातों से युक्त अप्रकाशितमुख राजा युधिष्ठिर उस भीमसेन से यह वचन बोले ३४ कि क्रोधयुक्त यशस्वी वासुदेवजी के पाञ्चजन्य शङ्ख का शब्द जैसा सुनाई देता है ३५ निश्चय मालूम होता है कि अब तेरा भाई अर्जुन मृतक होकर सोता है उसके मरने पर अब यह श्रीकृष्णजी लौटते हैं ३६ पाण्डव जिस पराक्रमी के बल से अपना जीवन करते हैं और बड़े २ भयों में जिसकी ऐसे शरण लेते हैं जैसे कि देवता इन्द्र की लेते हैं ३७ जयद्रथ के मारने की इच्छा से वह शूर भरतवंशियों की सेना में गया है हे भीमसेन! हम उसकी यात्रा को तो जानते हैं परन्तु लौटने को नहीं जानते हैं ३८ वह अर्जुन श्याम तरुण दर्शनीय महारथी बड़े वक्षस्थल और भुजाओं का रखनेवाला मतवाले हाथी के समान पराक्रमी ३९ चकोर के समान नेत्रधारी रक्तमुख शत्रुओं के भय का बढ़ानेवाला है हे शत्रुविजयिन्! तेरा कल्याण हो मेरे शोच का यह हेतु है ४० हे महाबाहो, भीमसेन! सात्यकी और अर्जुन के कारण से मुझको इतना कष्ट बढ़रहा है जैसे कि वारंवार घृत की आहुति से वृद्धियुक्त अग्नि ४१ उसकी ध्वजा के चिह्न को नहीं देखता हूं इसी हेतु से मूर्च्छा को पाता हूं उस पुरुषोत्तम को और महारथी सात्यकीको खोजकरो वह सात्यकी उस तेरे छोटेभाई अर्जुन के पीछे गया है मैं उस महाबाहु को न देखकर मूर्च्छायुक्त होता हूं ४२ । ४३ निश्चयकरके उस अर्जुनके मरनेपर वह श्रेष्ठ सात्यकी लड़ता है उसका कोई सहायक नहीं है इस हेतु से मूर्च्छा को पाता हूं ४४ उस अर्जुन के मरने पर वह युद्ध में कुशल सात्यकी लड़ता है इससे तुम वहां जाओ जहां अर्जुन गया है ४५ और जहां पर बड़ा पराक्रमी सात्यकी भी गया है हे धर्मज्ञ! जो मेरा वचन करने के योग्य तू मानता है तो कर मैं तेरा बड़ाभाई हूं ४६ अर्जुन तु मसे इस प्रकार खोजने के योग्य नहीं है जैसे कि सात्यकी खोजने के योग्य है ४७ हे भीमसेन! वह सात्यकी मेरे हित

को चाहता हुआ अर्जुन के खोज करने को गया है जोकि कठिनता से प्राप्त भयकारी और मूर्खोंको अप्राप्तहै हे भीमसेन ! दोनों कृष्ण और यादव सात्यकी को कुशलपूर्वक देखकर अपने सिंहनाद से प्रकट करो ॥ ४८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषड्विंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १२६ ॥

एकसौसत्ताइस का अध्याय ॥

भीमसेन बोले कि, पूर्व समय में जिस रथ ने ब्रह्मा, शिव, इन्द्र और वरुण नाम देवताओं को सवार किया उसी रथपर श्रीकृष्ण और अर्जुन भी सवार होगये हैं उन दोनों को कभी भय उत्पन्न नहीं है मैं आपकी आज्ञा को शिर से धारण करके जाता हूं शोच मत करो मैं उन नरोत्तमों से मिलकर आपको विदित करूंगा १ । २ सञ्जय बोले कि इसप्रकार कहकर वह पराक्रमी भीमसेन युधिष्ठिर को धृष्टद्युम्न आदिक शुभचिन्तकों के सुपुर्द करके चलदिया ३ बड़ा बली भीमसेन धृष्टद्युम्न से यह बोला कि हे महाबाहो ! तुमको विदित है जैसे कि यह महारथी द्रोणाचार्य हैं वह सब उपायों से धर्मराज के पकड़ने में प्रवृत्त हैं हे धृष्टद्युम्न ! मेरा काम यात्रा में ऐसा वर्तमान नहीं है ४ । ५ जैसा कि हमारा बड़ा काम राजा की रक्षा में है मुझको राजा की यह आज्ञा हुई है मैं उनको उत्तर नहीं दे सक्ता हूं ६ अब मैं वहां जाऊंगा जहांपर कि वह मृत्यु की इच्छा करनेवाला जयद्रथ नियत है निस्सन्देह धर्मराज के वचनपर नियत होना योग्य है ७ मैं बुद्धिमान् यादव सात्यकी और भाई अर्जुन के ढूंढ़ने को जाऊंगा सो अब तुम युद्ध में सावधान होकर राजा युधिष्ठिर की चारों ओर से रक्षा करो ८ युद्ध के मध्य में सब कामों से मुख्य काम यही है हे महाराज ! यह सुनकर धृष्टद्युम्न भीमसेनसे बोला ९ हे भीमसेन ! तू किसी बातकी चिन्ता न कर और यात्रा करो मैं तेरे अभीष्ट को करूंगा द्रोणाचार्य धृष्टद्युम्न को युद्ध में विना मारेहुए किसी दशा में १० भी धर्मराज को नहीं पकड़सके इसके पीछे भीमसेन राजा युधिष्ठिर को धृष्टद्युम्न के सुपुर्द करके ११ और बड़ेभाई गुरुरूप को दण्डवत् कर धर्मराज से मिलकर यात्रा करनेवाला हुआ हे भरतवंशिन् ! जिस प्रकार से अर्जुन गया था १२ उसी प्रकार मस्तकपर सूंघाहुआ शुभ मङ्गलकारी आशीर्वाद सुनाया हुआ भीमसेन पूजित प्रसन्नचित्त ब्राह्मणों को दक्षिणावर्ती करके १३ अग्नि, गौ, सुवर्ण, दूर्वा, गोरोचन, अमृत के स्वत में

जल, घृत, अक्षत, दही इन आठों मङ्गलीक वस्तुओं को स्पर्श करके और कैरातिकनाम मधु को अर्थात् मादक रस को पीकर दूने युद्ध के सामानों को रख मद से रक्तनेत्रवाला वीर १४ ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन किया हुआ विजय के उत्पत्ति को जतानेवाली विजयानन्द बढ़ानेवाली अपनी बुद्धि को देखता १५ अनुकूल पवनों से शीघ्रही विजय के उदय का देखनेवाला महाबाहु भीमसेन कवच और शुभकुण्डलधारी १६ बाजूबन्द हस्तत्राण व रथ का रखनेवाला रथियों में श्रेष्ठ होकर प्रस्थित हुआ उसका सुवर्ण से जटित लोहमयी कवच बहु मूल्य धनुष १७ सब ओर से शरीर में चिपटा हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली रखनेवाला बादल पीत रक्त कृष्ण और श्वेत वस्त्रों से अलंकृत १८ कण्ठत्राणसमेत ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्रधनुष रखनेवाला बादल आपकी सेना से युद्धाभिलाषी भीमसेन के यात्रा करने के समय १९ फिर पाञ्चजन्य शङ्ख का भयकारी शब्द हुआ हे राजन्! उस तीनोंलोकों के भयकारी पाञ्चजन्य के बड़े शब्द को सुनकर २० धर्मका पुत्र युधिष्ठिर महाबाहु भीमसेन से बोला कि यह शङ्ख वृष्णियों में बड़े वीर श्रीकृष्णजी ने बड़े वेगसे कठिन बजाया है २१ इस शङ्खों के राजाने पृथ्वी अन्तरिक्ष और आकाशको महाशब्दायमान करदिया है निश्चय करके बड़े दुःख में अर्जुन के पड़जाने से २२ चक्रगदाधारी श्रीकृष्णजी आपही सब कौरवों से लड़ते हैं निश्चयकरके आर्या कुन्ती व देखनेवाली द्रौपदी और सुभद्रा ने बान्धवों समेत पापरूप शकुनों को कहा है सो हे भीमसेन! अब शीघ्रताकरके तुम वहां जाओ जहांपर कि अर्जुन है २३। २४ हे वृकोदर! अर्जुन के और यादव सात्यकी के न देखने के कारण मेरी सब दिशा और विदिशा मोह से गुप्त होती हैं २५ हे राजन्, धृतराष्ट्र! वह भीमसेन गुरु से यह आज्ञा दियागया कि जाओ २ इसके पीछे पाण्डु का पुत्र प्रतापवान् भीमसेन २६ धर्म के हस्तत्राण और अंगुष्ठत्राण का धारण करनेवाला हाथों में धनुष लिये भाई का हित करनेवाला बड़े भाई का भेजा हुआ २७ भीमसेन दुन्दुभी को बजाकर और वारंवार शङ्ख को भी शब्दायमान करके सिंहनाद से गर्जकर वारंवार प्रत्यञ्चा को खैंचताहुआ चला २८ उस शब्द से वीरों के चित्तों को गिराकर अपने शरीर को भयकारी दिखलाता अकस्मात् शत्रुओं के सम्मुखचला २९ शिक्षित हींसतेमन और वायु के समान

शीघ्रगामी विशोक नाम सारथी से युक्त बहुत उत्तम शीघ्रगामी घोड़े उसको ले चले ३० मारते पीड़ा देते हाथ से प्रत्यञ्चा को अच्छी रीति से खैंचते लक्ष्य बाँधकर बाणों को छोड़ते पाण्डव भीमसेन ने सेनामुख को इधर उधर करके छिन्नभिन्न करदिया ३१ सोमकों समेत पाञ्चालदेशीय शूर उस चलनेवाले महाबाहु के पीछे ऐसे चले जैसे कि इन्द्र के पीछे देवता चलते हैं ३२ हे महाराज ! आपके उन शूरवीरों ने मिलकर उसको घेरलिया जिनके कि यह नाम हैं दुःशल, चित्रसेन, कुण्डभेदी, विविंशति ३३ दुर्मुख, दुस्सह, विकर्ण, शल्य, बिन्द, अनुबिन्द, सुमुख, दीर्घबाहु, सुदर्शन ३४ वृन्दारक, सुहस्त, सुषेण, दीर्घलोचन, अभय, रुद्रकर्मा, सुवर्मा, दुर्विमोचन ३५ यह सब रथियों में श्रेष्ठ सेना से युक्त और पीछे चलनेवालों समेत शोभायमान हुए और युद्ध में कुशल वह सब वीर भीमसेन के सम्मुख गये ३६ युद्धों में बड़ा शूरवीर महारथी चारों ओर से उन युद्धकर्ता लोगों से घिराहुआ कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन उनको देखकर सम्मुखता में ऐसे वर्तमान हुआ जैसे कि वेगवान् सिंह छोटे मृगों के सम्मुख होता है ३७ वहां उन वीरों ने दिव्य महाअस्त्रों को दिखलाया और बाणों से भीमसेन को ऐसे ढकदिया जैसे कि उदयहुए सूर्य को बादल आच्छादित कर देते हैं ३८ वह वेग से उनको उल्लङ्घन कर द्रोणाचार्य की सेनापर दौड़ा और आगे से हाथियों की सेना को बाणों की वर्षा से ढकदिया ३९ उस वायुपुत्र ने थोड़ेही समय में सब दिशाओं को आच्छादित करके तीक्ष्णधारवाले बाणों से उस हाथियों की सेना को छिन्नभिन्न किया ४० जैसे कि वन के मध्य में शरभ के गर्जने से मृग भयभीत होते हैं उसी प्रकार भीमसेन के गर्जने से सब हाथी भयभीत होकर भागे ४१ फिर वेग से उस हाथियों के समूहों को उल्लङ्घन कर द्रोणाचार्य की सेना के सम्मुख गया वहां आचार्यजी ने उसको ऐसे रोका जैसे कि उठेहुए समुद्र को मर्यादा रोकती है ४२ और मन्दमुसकान करतेहुए आचार्यजी ने उसको ललाटपर घायल किया उससे भीमसेन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि उन्नतज्वाला रखनेवाला सूर्य होता है ४३ आचार्यजी ने कहा कि जैसा मेरा शिष्य अर्जुन है उसी प्रकार यह भीमसेन है यह मेरा पूजन करेगा इस प्रकार मानतेहुए उन आचार्य ने भीमसेन से कहा ४४ हे महाबाहो, भीमसेन ! अब युद्ध में मुझ शत्रु को विना विजय कियेहुए तुझ को शत्रुओं

की सेना में प्रवेश करना योग्य नहीं ४५ जो वह तेरा छोटा भाई अर्जुन मेरी अनुमति से सेना में प्रविष्ट हुआ परन्तु यहां तुझसे मेरी सेना में प्रवेश करना असम्भव है ४६ फिर निर्भय क्रोध से रक्तनेत्र शीघ्रता करनेवाला भीमसेन गुरु के वचन को सुनकर द्रोणाचार्य से बोला ४७ हे ब्रह्मबन्धो! अर्जुन आपकी अनुमति से युद्धभूमि में नहीं गया वह निर्भय होकर इन्द्र की सेना में भी प्रवेश करसक्ता है ४८ उत्तमपूजन के करनेवाले अर्जुन से आप पूजित होकर प्रतिष्ठा दियेगये हो हे द्रोणाचार्य! मैं दयावान् अर्जुन नहीं हूं मैं आप का शत्रु भीमसेन हूं ४९ तुम हमारे पिता गुरु और बन्धु हो और उसीप्रकार से हम आपके पुत्र हैं प्रतिष्ठापूर्वक नम्रता से नियत हम सब आप को इसरीति से मानते हैं ५० अब आपकी बातों के करने में गुरुभक्तिपूर्वक गुरु की प्रीति विपरीति दिखाई देती है जो तुम अपने को शत्रु मानते हो तो वैसाही होय ५१ मैं भीमसेन तुम शत्रुरूप के योग्य कर्म को करता हूं हे राजन्! जैसे कि यमराज कालदण्ड को घुमाता है उसीप्रकार भीमसेन ने गदा को घुमाकर ५२ द्रोणाचार्य के ऊपर छोड़ा वह रथ से कूदपड़े तब उस गदा ने द्रोणाचार्य के रथ को घोड़े सारथी ध्वजा को भी खण्ड २ अर्थात् चूर्ण करदिया ५३ और बहुत से शूरवीरों को ऐसे मर्दन किया जैसे कि वायु अपने वेग से वृक्षों को करता है फिर आपके उन पुत्रों ने उस उत्तम रथी को घेरलिया ५४ प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य दूसरे रथपर सवार होकर व्यूह के द्वार को पाकर युद्ध के निमित्त सम्मुख नियत हुए ५५ हे महाराज! उसके पीछे क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेन ने आगे से रथों की सेना को बाणों की वर्षा से ढकदिया ५६ वह युद्ध में घायल महारथी युद्ध में भयकारी पराक्रमी और विजयाभिलाषी आपके पुत्र भीमसेन से युद्ध करने लगे ५७ इसके पीछे पाण्डुनन्दन भीमसेन के मारने के अभिलाषी दुश्शासन ने अत्यन्त लोहमयी रथ शक्ति को फेंका ५८ भीमसेन ने आप के पुत्र की फेंकी हुई उस महाशक्ति को आताहुआ देखकर दो खण्ड किये यह आश्चर्य सा हुआ ५९ फिर पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने दूसरे तीक्ष्ण तीनबाणों से गण्डभेदी सुषेण और दीर्घनेत्र इन तीनों आपके पुत्रों को मारा ६० और युद्ध करनेवाले आप के वीर पुत्रों के मध्य कौरवों की कीर्ति बढ़ानेवाले वीर वृन्दारक को भी मारा ६१ फिर भीमसेन ने अभय रुद्रकर्मा और दुर्विमोचन

इन तीनों आपके पुत्रों को तीन बाणों से मारा ६२ हे महाराज! उस बल-वान् के हाथ से घायल आपके पुत्रों ने प्रहारकर्ताओं में श्रेष्ठ भीमसेन को चारों ओर से घेर लिया ६३ वह सब युद्ध में भयकारी कर्मकर्ता भीमसेन पर ऐसे बाणों की वर्षा करने लगे जैसे कि वर्षाऋतु में बादल अपनी धाराओं से पर्वत पर वर्षा करते हैं ६४ जैसे कि पर्वत पाषाणवृष्टि को सहता है उसी प्रकार शत्रुओं का मारनेवाला वह पाण्डव भीमसेन उन बाणरूपी वर्षा को सहताहुआ पीड्यमान नहीं हुआ ६५ फिर हँसतेहुए भीमसेन ने बाणों से बिन्द अनुबिन्द को एक साथही आपके सुवर्मा नाम पुत्र समेत यमलोक में पहुँचाया ६६ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! इसके पीछे युद्ध में आप के पुत्र वीर सुदर्शन को भी घायल किया और वह शीघ्रही गिरकर मरगया ६७ उस पाण्डुनन्दन ने सब दिशाओं को अच्छीरीति से देखकर थोड़ेही समय में उस रथ की सेना को तीक्ष्ण चलनेवाले बाणों से छिन्नभिन्न करदिया ६८ हे राजन्! इसके पीछे आप के पुत्र युद्ध में ऐसे छिन्न भिन्न होगये जैसे कि रथ के शब्द से और गर्जने से मृग छिन्न भिन्न होकर इधर उधर भगजाते हैं ६९ भीमसेन के भय से वह सब अकस्मात् भागे और भीमसेन आपके पुत्रों की बड़ी सेनापर दौड़ा ७० हे राजन्! युद्ध में उसने सब ओर से कौरवों को घायलकिया फिर भीमसेन के हाथ से घायल आपके शूरवीर ७१ भीमसेनको त्यागकर उत्तम घोड़ोंको चला-यमान करते युद्धभूमि से चलेगये महाबली पाण्डव भीमसेन ने युद्ध में उनको विजय करके ७२ सिंहनाद और भुजाओं के शब्दों को किया फिर महाबली भीमसेन अपने हाथों की हथेलियों से भी बड़ेभारी शब्दों को करके ७३ रथ की सेना को दौड़ाकर उत्तम २ शूरों को मारता उत्तम २ रथियों को उल्लङ्घन कर द्रोणाचार्य की सेना के सम्मुख गया ॥ ७४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १२७ ॥

एकसौअट्ठाइस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, युद्ध में रोकने के अभिलाषी हँसतेहुए आचार्यजी ने रथ की सेना से पार होनेवाले भीमसेन को बाणों की वर्षा से ढक दिया १ द्रोणा-चार्य के धनुष से गिरेहुए उन बाणों के समूहों को पान करता अपने बल के प्रभाव से सब को अचेत करता वह भीमसेन भाइयों के सम्मुख गया २ आप

के पुत्र की प्रेरणा से उत्तम धनुषधारी राजाओं ने बड़े वेग में नियत होकर युद्ध में सब ओर से उसको घेरलिया ३ हे भरतवंशिन्! उन सिंह समान गर्जने वाले राजाओं से घिराहुआ उस भीमसेन ने उन राजाओं के निमित्त अपनी घोर गदा को उठाया ४ और शत्रुओं के मारनेवाली उस गदा को बड़े वेग से ऐसे फेंका जैसे कि दृढ़ चित्तवाले इन्द्र से घुमाया हुआ इन्द्रवज्र होता है हे महाराज! उस गदा ने आपकी सेना के मनुष्यों का चूर्ण करडाला ५ हे राजन्! बड़े शब्द से पृथ्वी को शब्दायमान करती अपने तेज से प्रकाशित उस भयकारी गदा ने आपके पुत्रों को भयभीत किया ६ आपके सब शूरवीर उस वेगवान् प्रकाशित गदा को गिरता हुआ देखकर भयकारी शब्दों को कर करके इधर उधर को भागे ७ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! तब वहां रथसवार और मनुष्य उस गदा के असह्य शब्द को सुनकर अपने २ रथों से गिरपड़े ८ गदा हाथ में लेनेवाले भीमसेन से घायल आप के शूरवीर ९ युद्ध में ऐसे भागे जैसे कि व्याघ्र के सूंघेहुए भयभीत मृग भागते हैं उस भीमसेन ने युद्ध में उन कठिनता से विजय होनेवाले शत्रुओं को भगाकर पक्षियों के राजा गरुड़ के समान बड़े वेग से सेनाओं को उल्लङ्घन किया १० हे राजन्! भारद्वाज द्रोणाचार्यजी उस प्रकार अप्रिय कर्म करनेवाले महारथी भीमसेन के सम्मुख गये ११ द्रोणाचार्य ने युद्ध में बाणरूपी तरङ्गों से भीमसेन को रोककर अकस्मात् शब्दों को करके पाण्डवों के भय को उत्पन्न किया १२ हे महाराज! महात्मा भीमसेन और द्रोणाचार्य का वह महायुद्ध ऐसा हुआ जैसा कि महाभयकारी देवासुरों का युद्ध हुआ था १३ जब द्रोणाचार्य के धनुष से निकलेहुए तीक्ष्ण बाणों से सैकड़ों और हजारों वीर युद्ध में मारेगये १४ हे राजन्! इसके पीछे पाण्डव रथ से कूदकर बड़े वेगमें नियत होकर दोनों नेत्रोंको बन्दकरके पदाती द्रोणाचार्य के सम्मुख गया १५ पराक्रमी भीमसेन ने कन्धे पर शिर और छातीपर दोनों हाथों को नियत करके मन वायु और गरुड़ के समान तीव्रता में नियत होकर १६ जैसे कि उत्तम वृषभ लीलाही से जल की वृष्टि को सहता है उसी प्रकार नरोत्तम भीमसेन ने बाणों की वर्षा को सहा १७।१८ हे श्रेष्ठ! युद्ध में घायल उस बड़े पराक्रमी ने द्रोणाचार्य के रथ को हाथ से ईशादण्डपर पकड़कर फेंकदिया हे राजन्! फिर युद्ध में भीमसेन के हाथ से

फेंकेहुए द्रोणाचार्य शीघ्रही दूसरे रथपर सवार होकर व्यूह के द्वारपर गये १९ तब फिर उस निरुत्साहरूप गुरुको उसी प्रकार से आताहुआ देखकर भीमसेनने वेग से रथ की धुरी को पकड़कर २० बड़े क्रोधपूर्वक उस बड़े रथ को भी फेंक दिया इसी प्रकार लीलापूर्वक भीमसेन ने द्रोणाचार्य के आठ रथोंको फेंका २१ फिर एक पलभर में ही अपने रथपर नियत दिखाई पड़ा और आश्चर्य करके आपके शूरों ने उसकी ओर को देखा २२ हे कौरव ! उसी क्षण में भीमसेन के सारथी ने शीघ्रही घोड़ों को चलायमान किया वह भी आश्चर्य सा हुआ इसके अनन्तर बड़ा पराक्रमी भीमसेन अपने रथ में नियत होकर वेग से आप के पुत्र की सेना की ओर दौड़ा २३ । २४ जैसे कि उठा हुआ वेगवान् वायु वृक्षों का मर्दन करता है उसी प्रकार युद्ध में क्षत्रियों को मर्दन करता अथवा जैसे कि समुद्र का वेग पहाड़ों को घेरलेता है उसी प्रकार सेना को रोकता गया २५ वह बड़ा पराक्रमी वीर भोजवंशीय कृतवर्मा से रक्षित सेना को पाकर और उसको बड़े वेग से मथकर २६ तल के शब्दों से सेनाओं को डराते हुए भीमसेन ने सब सेनाओं को ऐसे विजय किया जैसे कि शार्दूल सिंह गौ और बैलों को विजय करता है २७ कृतवर्मा की सेना को उल्लङ्घनकर दुर्योधन की सेना को भी विजय किया उसी प्रकार म्लेच्छों के उन बड़े समूहों को जो कि युद्धमें कुशल थे उनको भी विजय किया २८ लड़तेहुए महारथी सात्यकी को देखकर उपाय करनेवाला भीमसेन रथ की सवारी पर बड़ी तीव्रता से चला २९ हे महाराज ! अर्जुन के देखने का अभिलाषी पाण्डुनन्दन भीमसेन युद्ध में आपके शूरवीरों को उल्लङ्घन करके ३० उस पराक्रमी ने जयद्रथ के मारने के निमित्त पराक्रम और युद्ध करनेवाले महारथी अर्जुनको वहां देखा ३१ हे महाराज ! वर्षाऋतु के समय में गर्जनेवाले बादल के समान पुरुषोत्तम भीमसेन ने उस अर्जुन को देखकर बड़े शब्द किये ३२ हे कौरव ! अर्जुन और वासुदेवजी ने युद्ध में उस गर्जनेवाले भीमसेन के भयकारी शब्द को सुना ३३ वह दोनों वीर एक साथ वारंवार गर्जनेवाले पराक्रमी भीमसेन के शब्द को सुनकर देखने के अभिलाषी हुए ३४ हे महाराज ! इसके पीछे अर्जुन और सात्यकीने बड़े शब्दों को किया और उत्तम वृषभों के समान गर्जते हुए सम्मुख गये ३५ फिर धर्म का पुत्र युधिष्ठिर धनुषधारी अर्जुन और भीमसेन

के शब्दों को सुनकर प्रसन्न हुआ उन दोनों के शब्दों को सुनकर राजा शोच से रहित हुआ और उस समर्थ युद्ध में अर्जुन की ही विजय की आशा करी ३६। ३७ उस रीति से मदोन्मत्त भीमसेन के गर्जनेपर धर्मपुत्र महाबाहु धनुर्धर युधिष्ठिर ने मन्दमुसकान पूर्वक चित्त से ध्यानकरके स्नेह में प्रवृत्त हो कर यह वचन कहा हे भीमसेन ! तुम ने मुझको जतलाया और मुझ गुरु की आज्ञा का पालन किया ३८। ३९ हे पाण्डव ! तुम जिनके शत्रु हो युद्ध में उनकी विजय नहीं होसक्ती सव्यसाची और संसार के धनों का विजय करने वाला अर्जुन युद्ध में प्रारब्ध से जीवता है ४० और प्रारब्धही से सत्यपराक्रमी वीर सात्यकी भी आनन्दपूर्वक है और मैं भी प्रारब्धही से वासुदेवजी और अर्जुन को गर्जता हुआ सुनता हूं ४१ जिसने युद्ध में इन्द्र को विजय करके अग्नि देवता प्रसन्न किये वह शत्रुओं का मारनेवाला अर्जुन युद्धमें प्रारब्धही से जीवता है ४२ हम सब जिसके भुजों के आश्रय से जीवतेरहे वह शत्रुओं की सेनाओं का मारनेवाला अर्जुन प्रारब्धसे चिरञ्जीवी है ४३ जिसने देवताओं से भी कठिनता से विजय होनेवाले निवातकवची नाम दैत्यों को एकही धनुष के द्वारा विजय किया वह अर्जुन भाग्य से जीवता है ४४ जिसने विराटनगर में गौओं के हरने के निमित्त एकसाथ आतेहुए सब कौरवों को विजय किया वह अर्जुन प्रारब्ध से जीता है ४५ जिसने बड़े युद्ध में अपने भुजबल से चौदहहज़ार कालकेयनाम असुरों को मारा वह अर्जुन प्रारब्धसे जीवता है ४६ निश्चय करके जिसने दुर्योधन के निमित्त पराक्रमी गन्धर्वों के राजाको अपने अस्त्रों के बल से विजय किया वह अर्जुन प्रारब्ध से जीवता है ४७ मुकुट मालाधारी पराक्रमी श्वेत घोड़ों से युक्त श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाला और सदैव मेरा प्यारा है वह अर्जुन प्रारब्ध से जीवता है ४८ पुत्र के दुःख से दुःखी और कठिन कर्म के करने का अभिलाषी जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा को जिस अर्जुन ने पूराकिया ४९ वह अर्जुन कब जयद्रथ को युद्ध में मारेगा और कब मैं सूर्यास्त होने से पूर्वही उस जयद्रथ को मारकर प्रतिज्ञा पूरी करनेवाले वासुदेवजी से रक्षित अर्जुन से मिलूंगा और कब दुर्योधनकी वृद्धिमें प्रीति रखने वाला राजा जयद्रथ ५०। ५१ अर्जुन के हाथ से मराहुआ शत्रुओं को प्रसन्न करेगा क्या राजा दुर्योधन अर्जुनके हाथ से गिराये ५२ सिन्धुके राजा जयद्रथ

को देखकर युद्ध में हमारे विषय में कल्याण को धारण करेगा युद्ध में भीमसेन के हाथ से मारेहुए अपने भाइयों को देखकर निर्बुद्धि दुर्योधन हमारे विषय में कल्याण को धारण करेगा ५३ कहीं अभागा दुर्योधन पृथ्वी पर गिराये हुए दूसरे बड़े शूरवीरों को देखकर पश्चात्ताप को करेगा ५४ कहीं हमारी शत्रुता अकेले भीष्म से ही शान्ति को पावेगी और शेषों की रक्षा के निमित्त दुर्योधन सन्धि करेगा ५५ तब इस प्रकार से बहुत प्रकार की चिन्ता करनेवाले कृपा से संयुक्त शरीरवाले उस राजा का घोर युद्ध वर्तमान हुआ ॥ ५६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टाविंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १२८ ॥

एकसौउन्तीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, इस प्रकार से गर्जनेवाले मेघस्तनित (गर्जन) के समान शब्दायमान महाबली भीमसेनको किन वीरोंने रोका १ मैं तीनों लोकों में ऐसे किसी शूरवीर को नहीं देखता हूं जो कि युद्ध में क्रोधयुक्त भीमसेन के सम्मुख नियत होय २ हे सञ्जय! मैं यहां उस पुरुष को नहीं देखता हूं जो इस काल के समान गदा के घुमानेवाले भीमसेन के आगे नियत होय ३ जो रथ से रथको तोड़े हाथी को हाथी से मारे उसके युद्ध में कौन नियत होसक्ता है साक्षात् इन्द्र भी वहां नहीं ठहरसक्ते हैं ४ दुर्योधन के हित में प्रवृत्त कौन २ से वीर उस मेरे पुत्रों के मारने के अभिलाषी क्रोधयुक्त भीमसेन के आगे अच्छे प्रकार से नियत हुए ५ कौन मनुष्य घास के समान मेरे पुत्रों को जलाने के अभिलाषी भीमसेनरूपी दावानल के आगे युद्ध के मुख पर नियत हुए ६ जैसे कि काल से सब सृष्टि परलोक को जाती है उसी प्रकार भीमसेन के युद्ध में मेरे पुत्रोंको भगाहुआ देखकर किन वीरों ने भीमसेन को रोका ७ मुझको वैसा भय अर्जुन श्रीकृष्ण और सात्यकी से भी नहीं है जैसा कि भय अग्नि से उत्पन्न होने वाले धृष्टद्युम्न से और भीमसेन से है ८ कौन शूरवीर उस मेरे पुत्रों के नाश करने के अभिलाषी अत्यन्त प्रकाशित भीमसेनरूपी अग्नि के सम्मुख वर्तमान हुए हे सञ्जय! वह सब मुझसे कहो ९ सञ्जय बोले कि पराक्रमी कर्ण भी कठोर शब्द से युक्त इस प्रकार गर्जनेवाले महाबली भीमसेन के सम्मुख गया १० बड़े युद्ध को चाहते और युद्ध में अपने पराक्रम को दिखलाना चाहते और बहुत धनुष को चलायमान करते क्रोधयुक्त कर्ण ने भीमसेन के मार्ग को ऐसे

रोका ११ जैसे कि वायु के मार्ग को वृक्ष रोकता है भीमसेन ने भी अहङ्कारी सम्मुख वर्तमान सूर्य के पुत्र कर्ण को देखकर १२ कठिन क्रोध किया और बड़ी शीघ्रता से वीर ने तीक्ष्णधारवाले बाणों को उसके ऊपर फेंका कर्ण ने भी उन बाणों को न सहकर शत्रुपर बाणों को छोड़ा १३ इसके अनन्तर कर्ण और भीमसेन के युद्ध में उपाय करनेवाले और तमाशा देखनेवाले शूरवीरों के अङ्ग अत्यन्त कम्पायमान हुए १४ उन दोनों की प्रत्यञ्चा के शब्दों को सुनकर रथ-सवार और अश्वसवारों के भी अङ्ग काँपनेलगे युद्धभूमि में भीमसेन के भय-कारी शब्द को सुनकर १५ उत्तम २ क्षत्रियों ने आकाश और पृथ्वी को एक माना फिर महात्मा पाण्डव भीमसेन के घोर शब्द से १६ युद्ध में सब शूर-वीरों के धनुष गिरपड़े और दोनों हाथों से शस्त्र भी गिरपड़े कितनेही शूरवीरों के प्राण निकलगये १७ और सब भयभीत लोगों ने मूत्र और विष्ठा को छोड़ा और सब सवारियां निरुत्साह हुईं १८ और भयकारी अनेक अशकुन प्रकट हुए गृध्र कङ्क आदिक पक्षियों के समूहों से पृथ्वी और आकाश मध्यभाग पूर्ण हुआ १९ हे राजन्! कर्ण और भीमसेन का अत्यन्त घोरयुद्ध हुआ इसके पीछे कर्ण ने भीमसेन को बीस बाणों से पीड्यमान किया २० और शीघ्रही उसके सारथी को पांच बाणों से घायल किया भीमसेन भी हँसकर युद्धमें कर्ण के स-म्मुख दौड़ा २१ और शीघ्रता करके उस यशस्वी ने चौंसठ बाण मारे बड़े ध-नुषधारी कर्ण ने चार बाण उसपर फेंके २२ हे राजन्! हस्तलाघवताको दिख-लाते हुए भीमसेन ने झुके पक्षवाले बाणों से बीचहीमें उनको काटा २३ कर्ण ने उसको बाणसमूहों से बहुत रीति करके ढकदिया कर्ण के हाथ से अत्यन्त ढके हुए पाण्डुनन्दन २४ महारथी ने कर्ण के धनुष को मूठ के स्थान पर से काटा और गुप्तपर्ववाले बहुत बाणों से उसको छेदा २५ फिर भयकारी कर्म क-रनेवाले कर्ण ने दूसरे धनुष को लेकर युद्ध में भीमसेन को छेदा २६ अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने वेग से कर्ण की छातीपर गुप्तपर्ववाले तीन बाणों को मारा २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! उस समय कर्ण छातीपर वर्तमान हुए उन बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखरवाला ऊंचा पहाड़ शोभित होता है २८ उत्तम बाणों से घायल उस कर्ण का रुधिर ऐसे निकलने लगा जैसे धातु के गिरानेवाले पर्वत से धातु निकलती है २९

घटित प्रहार से पीड़ित और कुछ कम्पायमान कर्ण ने कानतक खैंचकर बाणों से भीमसेन को बेधा ३० फिर हज़ारों बाणों को फेंका उस दृढ़धनुषधारी कर्ण के बाणों से पीड्यमान भीमसेनने शीघ्रही क्षुर से उसकी प्रत्यञ्चाको काटा ३१ और फिर महारथी ने उसके सारथी को भी भल्ल से रथ के स्थान से नीचे गिरा दिया और उसके चारों घोड़ों को यमपुर भेजा ३२ हे राजन्! फिर कर्ण उस मृतक घोड़ेवाले रथ से कूदकर भयसे शीघ्रही वृषसेन के रथपर सवार हुआ ३३ फिर प्रतापवान् भीमसेन युद्ध में कर्ण को विजय करके बादल के समान शब्दायमान गर्जना से गर्जा ३४ युधिष्ठिर उसके उस शब्द को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए युद्ध में भीमसेन के हाथ से कर्ण को पराजित मानकर ३५ पाण्डवीय सेना ने चारों ओर से शङ्खों के शब्द किये आप के शूरवीर शत्रुओं की सेना के शब्द को सुनकर अत्यन्त गर्जे ३६ उस राजा युधिष्ठिर ने प्रसन्नतापूर्वक युद्ध में शङ्ख वीणा आदिक प्रसन्नता के बाजों से अपनी सेना को प्रसन्न किया ३७ अर्जुन ने गाण्डीव धनुष को टङ्कार और श्रीकृष्णजी ने पाञ्चजन्य शङ्ख को बजाया हे राजन्! तब गर्जते हुए भीमसेन के शब्द उन सब शब्दों को दबाकर सब सेनाओं में बड़े कठोर सुनेगये ३८ इसके पीछे पृथक् २ बाण और अस्त्रों से कर्ण ने बड़ी नम्रता से प्रहार किये और भीमसेन ने कठोरता से प्रहार किये ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनत्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १२९ ॥

एकसौतीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, उस सेना के पृथक् २ होने और जयद्रथ के लिये अर्जुन सात्यकी और भीमसेन के जानेपर आपका पुत्र द्रोणाचार्य के पास गया १ एक रथ के द्वाराही शीघ्रता करता और बहुत बातों को विचारता हुआ गया आपके पुत्र का वह रथ बड़ी शीघ्रता से युक्त २ मन वायु के समान वेगवान् शीघ्रही द्रोणाचार्य के पास गया और क्रोध से रक्तनेत्र होकर आपका पुत्र उनसे बोला ३ अर्थात् हे कौरवनन्दन! भय से उत्पन्न होनेवाले वेग से युक्त वह दुर्योधन यह वचन बोला कि अजेय महारथी अर्जुन सात्यकी और भीमसेन सब बड़ी सेना को विजयकरके विना रुकेहुए जयद्रथ के सम्मुख वर्तमान हुए ४ । ५ वह सब अजेय महारथी सब सेनाओं को विजयकरके वहां भी प्रहार करते हैं ६

हे बड़ाई देनेवाले ! आप किस रीति से सात्यकी और भीमसेन से उल्लङ्घन किये गये हो इसलोक में यह आश्चर्य की सी बात है जैसे कि समुद्र का सूखजाना ७ हे उत्तम, ब्राह्मण ! सात्यकी अर्जुन और भीमसेन के हाथ से आपके पराजय होने को लोग बड़ा आश्चर्य करते हैं ८ कि धनुर्वेद के पारगामी द्रोणाचार्य युद्ध में कैसे विजय कियेगये सब शूरवीर इस प्रकार से कहते हैं यह आपकी पराजय श्रद्धा और विश्वास के योग्य नहीं है ९ निश्चयकरके मुझ अभागे का युद्ध में पराजयपूर्वक विनाशही है जिस स्थान में कि तीन रथियों ने तुम सरीखे पुरुषोत्तम को उल्लङ्घन किया १० ऐसी दशा में इस करने के योग्य कर्म में जो आपका कहना योग्य है उसको कहो जो वह व्यतीत हुआ सो व्यतीत हुआ अब आगे शेष बचे हुए को विचारो ११ शीघ्रता से समय के अनुसार जयद्रथ का जो काम है उसको अच्छी रीति से विचारकर करो व्याकुल मत हो १२ द्रोणाचार्यजी बोले कि जो बहुत प्रकार से विचारने और करने के योग्य है हे तात ! उसको मुझसे सुनो कि पाण्डवों के तीनों महारथी उल्लङ्घन करनेवाले हुए १३ उन्हों के पीछे से जितना भय है उतनाही उनके आगे है मैं उसको बड़ीबात मानता हूं जिस स्थानपर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने १४ वह भरतवंशियों की सेना आगे और पीछे से आधीनता में करी वहां मैं जयद्रथ की रक्षा को करने के योग्य मानता हूं १५ हे तात ! क्रोधयुक्त अर्जुन से भयभीत वह जयद्रथ हमसे बड़ी रक्षा के योग्य है भयकारीरूप सात्यकी और भीमसेन जयद्रथ के सम्मुख गये १६ यह वह द्यूत प्राप्तहुआ जोकि शकुनी की बुद्धि से उत्पन्न हुआ है उस सभा में न विजयहुई न पराजय हुई १७ अब यहां बाजी करनेवाले हमलोगों की जय पराजय है पूर्व समय में शकुनी कौरवों की सभा में जिन भयकारी पांसों को मानता हुआ खेला है वह कठिनता से सहने के योग्य बाण हैं १८। १९ हे राजन् ! जहांपर वह बहुत से कौरव नियत हैं हे तात ! उस सेना को द्यूत खेलनेवाला और बाणों को पांसे जानो २० उसमें जयद्रथ दाँव है फिर जयद्रथ केही विषय में बड़ा द्यूत शत्रुओं से हुआ २१ हे महाराज ! यहां तुम सब अपने जीवन को त्यागकरके युद्ध में बुद्धि के अनुसार जयद्रथ की रक्षा करने के योग्य हो २२ दाँव लगानेवाले हमलोगों की उस स्थानपर विजय और पराजय है जहांपर कि वह बड़े उपाय करनेवाले

धनुषधारी जयद्रथ की रक्षा करते हैं २३ तुम आप वहां शीघ्र जावो और रक्षा करनेवालों की रक्षा करो मैं इसी स्थानपर नियत रहूंगा और शत्रुओं को यम-लोक में भेजूंगा २४ पाञ्चालों को पाण्डव और सृञ्जयों समेत मारूंगा इसके पीछे गुरु की आज्ञा पातेही दुर्योधन शीघ्र चलागया २५ पीछे चलनेवालों समेत अपने को कठिन कर्म के अर्थ उद्युक्त करके गया पाञ्चालदेशीय युधामन्यु और उत्तमौजा जोकि चक्र के रक्षक थे २६ वह बाहर की ओर से सेना में प्रवेश करके अर्जुन के पास गये हे महाराज ! जोकि पूर्व में कृतवर्मा से रोके गये थे २७ हे राजन् ! युद्धाभिलाषीपने से आपकी सेना में अर्जुन के प्रवेश करने पर दोनों वीर बगल से आपकी सेना को चीरकर सेनामें प्रवेशित हुए २८ राजा दुर्योधन ने बगल में से आयेहुए उन दोनों को देखा पराक्रमी शीघ्रता करनेवाले भरतवंशीय दुर्योधन ने उन जल्दी करनेवाले दोनों भाइयों के साथ उत्तम युद्ध किया २९ वह दोनों जो प्रसिद्ध महारथी और क्षत्रियों में अत्यन्त श्रेष्ठ जिन्हों ने धनुष को ऊंचा कररक्खा था उसके सम्मुख गये ३० युधामन्यु ने तीसबाणों से उसको घायल करके बीसबाण से उसके सारथी को और चार बाण से चारों घोड़ों को घायल किया ३१ आपके पुत्र दुर्योधनने एकबाण से युधामन्यु की ध्वजा को दूसरे बाण से उसके धनुष को काटकर ३२ भल्ल से उसके सारथी को रथ के बैठक के स्थान से नीचे गिरादिया उसके पीछे चार तीक्ष्ण बाणों से चारों घोड़ों को छेदा ३३ अत्यन्त क्रोधयुक्त शीघ्रता करने वाले युधामन्यु ने युद्ध में तीसबाण आपके पुत्रपर छोड़े ३४ और इसी प्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त उत्तमौजा ने सुवर्णजटित तीक्ष्णबाणों से छेदा और उसके सारथी को यमलोक में भेजा ३५ हे राजेन्द्र ! दुर्योधन ने भी उस पाञ्चालदे-शीय उत्तमौजा के चारों घोड़ों को और उन दोनों आगे पीछेवाले सारथियों को मारा ३६ युद्ध में मृतक घोड़े और सारथीवाला उत्तमौजा शीघ्रता से अपने भाई युधामन्यु के रथपर सवारहुआ ३७ उसने भाई के रथ को पाकर दुर्योधन के घोड़ों को बहुत बाणों से घायलकिया वह घोड़े मृतक होकर पृथ्वीपर गिर पड़े ३८ युधामन्यु ने घोड़ों के गिरनेपर युद्ध में शीघ्रही उत्तम बाण से उसके धनुष और तरकस को काटा ३९ आपके पुत्र राजा ने मृतक घोड़े और सारथी वाले रथ से उतर गदा को लेकर उन दोनों पाञ्चालदेशियों को पीड्यमान

किया ४० तब उस क्रोधयुक्त आतेहुए कौरवपति दुर्योधन को देखकर युधामन्यु और उत्तमौजा रथ से कूदकर पृथ्वीपर चलेगये ४१ इसके पीछे उस क्रोधयुक्त गदाधारी ने गदा से उस सुवर्णजटित रथ को घोड़े सारथी और ध्वजासमेत खण्ड २ करदिया ४२ शत्रुसन्तापी वह मृतक घोड़े और सारथीवाला आपका पुत्र रथ को तोड़कर शीघ्रही शल्य के रथपर सवार हुआ ४३ इसके पीछे पाञ्चाल देशियों में श्रेष्ठ दूसरे राजपुत्र महारथी रथपर सवार होकर अर्जुन के पासगये॥४४॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १३०॥

एकसौइकतीस का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! रोमहर्षण करनेवाले युद्ध के वर्तमान होने सब के व्याकुल होने और सब प्रकार से पीड्यमान होनेपर १ कर्ण ने भीमसेन को युद्ध के निमित्त ऐसे रोका जैसे कि वन में मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है २ धृतराष्ट्र बोले कि जो वह महाबली कर्ण और भीमसेन कठिन युद्ध करनेवाले हुए तब कहो कि यह युद्ध अर्जुन के रथ के पास कैसा हुआ ३ युद्ध में भीमसेन से कर्ण पूर्वही विजय कियागया था फिर वह महारथी कर्ण किस प्रकार से भीमसेन के सम्मुख हुआ ४ अथवा भीमसेनही युद्ध में कैसे उस कर्ण के सम्मुखगया जोकि पृथ्वीपर रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठ महारथी विख्यात है ५ धर्मराज युधिष्ठिर ने भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य को छोड़कर सिवाय महारथी कर्ण के किसी और से भय नहीं पाया ६ हे महाबाहो! वह युधिष्ठिर सदैव महात्मा कर्ण के पराक्रम को शोचता और उससे भय को करता हुआ बहुतवर्ष से नहीं सोता है भीमसेन ने किस प्रकार करके उस कर्ण से युद्ध किया ७ पाण्डव भीमसेन ने उस ब्राह्मणों के भक्त पराक्रमी युद्धों में मुख न फेरनेवाले शूरवीरों में श्रेष्ठ कर्ण से कैसे २ युद्ध किया ८ जो वह बड़े वीर पराक्रमी कर्ण और भीमसेन युद्ध में सम्मुख हुए उन दोनों का किस प्रकार का युद्ध हुआ ९ जिसने पूर्व में अपना भायपने का नाता दिखाया वह दयावान् कर्ण भी कुन्ती के वचनों को स्मरण करता भीमसेन के साथ में कैसे लड़ा १० अथवा शूरवीर भीमसेन प्राचीन शत्रुता को स्मरण करताहुआ सूत के पुत्र कर्ण से कैसे युद्ध करनेवाला हुआ ११ मेरा पुत्र दुर्योधन सदैव कर्ण मेंही यह भरोसा करता है कि कर्णही सब पाण्डवों को विजय करेगा १२ मेरे अभागे पुत्र दुर्योधन

को युद्ध में विजय की आशा जिसमें है वह कर्ण भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेन के साथ किस प्रकार से लड़ा १३ मेरे पुत्रों ने जिसको अपना आश्रय जानकर महारथियों से शत्रुता करी हे तात ! वह भीमसेन उस सूतके पुत्र के साथ कैसे लड़नेवाला हुआ १४ सूतपुत्र के कियेहुए अनेक अनुपकारी कर्मों को स्मरण करतेहुए राधेय कर्ण से कैसे युद्ध किया १५ जिस पराक्रमी अकेले ने सब पृथ्वी को एक रथके द्वारा विजय किया उस सूत के लड़के के साथ भीमसेनने किसप्रकार से युद्ध किया १६ जोकि दो कुण्डल और कवच-धारी शरीर से उत्पन्न हुआ उस सूतपुत्र के साथ भीमसेन ने कैसे युद्ध किया १७ जिस प्रकार से उन दोनों का युद्ध हुआ और दोनों में जो विजयी हुआ उस को मुख्यता समेत मुझसे कहो १८ क्योंकि हे सञ्जय ! तुम वृत्तान्तों के वर्णन करने में बड़े सावधान हो सञ्जय बोले फिर भीमसेन ने रथियों में श्रेष्ठ कर्ण को छोड़कर वहां जाने की इच्छा करी जहांपर कि वे दोनों वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन थे १९ हे महाराज ! कर्ण उस जातेहुए भीमसेन के पास जाकर बाणों से ऐसे वर्षा करनेलगा जैसे कि बादल पर्वत पर पानी की वर्षा करता है २० तब प्रफुल्लित कमल के समान मुख से हँसतेहुए पराक्रमी अधिरथी कर्णने जातेहुए भीमसेन को युद्ध में बुलाया २१ कर्ण बोला हे भीमसेन ! शत्रुओं के साथ तेरा युद्ध स्वप्न में भी अधिक चिन्ता के योग्य नहीं हुआ सो तुम किस हेतु से अर्जुन के देखने की इच्छा से मुझ को पीठ दिखलाते हो २२ हे पाण्डुनन्दन ! यह बात कुन्ती के पुत्रों के समान नहीं है इस हेतु से मेरे सम्मुख नियत हो-कर बाणों की वर्षा से मुझको ढको २३ तब भीमसेन युद्ध में कर्ण के बुलाने को न सहसका और आधे मण्डल को घूमकर सूत के पुत्र से युद्ध किया २४ वह बड़े सीधे चलनेवाले बाणों से उस कवचधारी और सब शस्त्रों में कुशल और द्वैरथ आनेवाले कर्णपर शरों की वर्षा करनेलगा २५ युद्ध का अन्त करना चाहते और मारने के अभिलाषी बड़े पराक्रमी भीमसेन ने उसके पीछे चलनेवाले को मारकर उस कर्ण को घायल किया २६ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! शत्रुसन्तापी क्रोधभरे भीमसेन ने क्रोध से भयकारी नानाप्रकार के बाणों की वर्षा उसपर करी २७ फिर उत्तम अस्त्र के जाननेवाले कर्ण ने उस मतवाले हाथी के समान चलने-वाले भीमसेन के उन बाणों की वर्षा को अस्त्रों की मायाओं से दूर किया २८

वह महाबाहु बड़ानामी धनुर्धर पराक्रमी कर्ण अपनी विद्या के बल से विधि के अनुसार आचार्य के समान भ्रमण करने लगा २६ हे राजन् ! वह हँसता हुआ कर्ण उस क्रोध से लड़नेवाले कुन्ती के पुत्र भीमसेन के सम्मुख हुआ ३० चारोंओर से वीरों के लड़ने और देखने पर भीमसेन ने युद्ध में कर्ण की उस अस्त्रज्ञता को नहीं सहा ३१ पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने वत्सदन्त नाम बाणों से उस सम्मुख वर्तमान कर्ण को हृदयपर ऐसा घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं ३२ फिर सुवर्ण कवच से अलंकृत सूतपुत्र को सुनहरी पुङ्खवाले तीक्ष्ण धारवाले अच्छी रीति से छोड़ेहुए सात बाणों से छेदा ३३ कर्ण ने सुनहरी जालों से ढके वायु के समान शीघ्रगामी भीमसेन के घोड़ों को पांच २ बाणों से घायल किया ३४ हे राजन् ! इसके पीछे आधेही निमिष में कर्ण का उत्पन्न कियाहुआ बाणरूपी जाल भीमसेन के रथपर दिखाई दिया ३५ तब भीमसेन कर्ण के धनुष से निकलेहुए बाणों से रथ ध्वजा और सारथी समेत ढकगया ३६ कर्ण ने चौंसठबाणों से उसके दृढ़ कवच को तोड़ा और मर्मभेदी बाणों से बड़ी शीघ्रतापूर्वक भीमसेन को घायल किया ३७ इसके पीछे भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित महाबाहु भीमसेन ने कर्ण के धनुष से निकलेहुए बाणों से भय को न करके सूतपुत्र से युद्ध किया ३८ हे महाराज ! उस भीमसेन ने कर्ण के धनुष से प्रकटहुए सर्पाकार बाणों को सहा और युद्ध में पीड़ा को नहीं पाया ३९ इसके पीछे प्रतापवान् भीमसेन ने युद्ध में कर्ण को तीक्ष्ण बेतवाले पचीस भल्लों से घायलकिया ४० कर्ण ने विना उपाय केही अपने बाणों से उस जयद्रथ के मारने के इच्छावान् भीमसेन को अत्यन्त ढकदिया ४१ कर्ण ने युद्धभूमि में साधारणता से भीमसेन के साथ युद्ध किया और वैसेही प्रथम की शत्रुता स्मरण करके भीमसेन ने क्रोध से कठोरतापूर्वक युद्ध किया ४२ क्रोधयुक्त शत्रुओं के मारनेवाले भीमसेन ने उस अपमान को न सहा और शीघ्रता से बाणों की वर्षा उस पर करी युद्ध में उस भीमसेन के छोड़ेहुए वह बाण सब ओर से पक्षियों के समान शब्द करते वीर कर्ण के ऊपर गिरे ४३ । ४४ भीमसेन के धनुष से सुनहरीपुङ्ख और साफ़ नोकवाले उन बाणों ने कर्ण को ऐसे ढकदिया जैसे कि शलभनाम पक्षी अग्नि को आच्छादित करते हैं ४५ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! फिर

चारोंओर से ढकेहुए रथियों में श्रेष्ठ कर्ण ने भयकारी बाणों की वर्षा करी ४६ भीमसेन ने उस युद्ध में शोभा पानेवाले कर्ण के उन बाणों को जोकि वज्र के समान थे बहुत भल्लों से बीचही में काटा ४७ हे भरतवंशिन्! फिर शत्रुहन्ता सूर्य के पुत्र कर्ण ने युद्ध में उस भीमसेन को बाणों की वर्षा से ढकदिया ४८ वहां युद्ध में सब शूरवीरों ने भीमसेन को शायकों से छेदा हुआ शरीर ऐसा देखा जैसे कि शललों (साही का कांटा) से घायल कुत्ता होता है उस वीर ने युद्ध में कर्ण के धनुष से निकलेहुए साफ बाणों को ऐसे धारण किया जैसे कि सूर्य अपनी किरणों को धारण करता है ४९। ५० वसन्तऋतु में बहुत से पुष्पों से युक्त अशोकवृक्ष के समान रुधिर से लिप्तअङ्ग भीमसेन महाशोभायमान हुआ ५१ फिर क्रोध से रक्तनेत्र महाबाहु भीमसेन ने युद्ध में महाबाहु कर्ण के उस कर्म को नहीं सहा ५२ उसने कर्ण को पचीस बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि श्वेतपर्वत को बड़े विषधारी सर्पों से घायल करते हैं फिर भी देवता के समान पराक्रमी भीमसेन ने शरीर से कवच त्यागनेवाले सूतपुत्र को मर्मोंपर चौदहबाणों से घायलकिया ५३। ५४ फिर प्रतापवान् हँसतेहुए भीमसेन ने शीघ्रही दूसरे बाण से कर्ण के धनुष को काटकर ५५ और तीक्ष्ण बाणों से चारों घोड़े और सारथी को मारा और सूर्य के समान प्रकाशित नाराच नाम बाण से कर्ण को छातीपर घायलकिया ५६ वह बाण बड़े शीघ्र कर्ण को घायलकरके पृथ्वी में ऐसे समागये जैसे कि बादल को तोड़कर सूर्य की किरणें समाजाती हैं ५७ उस प्रकार बाणों से घायल टूटा धनुष पुरुषोत्तम कर्ण बड़ी व्याकुलता को पाकर दूसरे रथपर चलागया॥ ५८॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकत्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १३१॥

एकसौबत्तिस का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, जो भृगुवंशियों में श्रेष्ठ और धनुषधारी श्रीमहादेवजी के शिष्य कर्ण ने उन परशुरामजी की शिष्यता को पाया और अस्त्रविद्या में उनके समान हैं १ अथवा शिष्यता के गुणों से युक्त कर्ण उनसे विशेष है वह कुन्ती के पुत्र भीमसेन से लीलापूर्वकही विजय किया गया २ हे सञ्जय! जिसमें मेरे पुत्रों की विजय की बड़ी आशा है उस कर्ण को भीमसेन से पराजित देखकर दुर्योधन ने क्या कहा ३ हे तात! बल में प्रशंसित पराक्रमी भीमसेन

ने कैसे २ युद्ध किया अथवा इससे पूर्व कर्ण ने युद्ध में उस अग्नि के समान प्रज्वलित क्रोधरूप भीमसेन को देखकर क्या किया ? सञ्जय बोले कि वायु से उठायेहुए समुद्र के समान कर्ण विधि के अनुसार तय्यार कियेहुए दूसरे रथपर सवारहोकर पाण्डव भीमसेन के सम्मुख आया ४ । ५ हे राजन् ! आपके पुत्रों ने कर्ण को क्रोधयुक्त देखकर भीमसेन को अग्नि के मुख में होमाहुआ माना ६ इसके पीछे कर्ण धनुष और तल के भयकारी शब्दों को करके भीमसेन के रथ की ओर चला ७ फिर उस सूर्य के पुत्र शूर कर्ण और वायुपुत्र महात्मा भीमसेन का युद्ध भयकारी हुआ ८ क्रोधयुक्त और परस्पर मारने के अभिलाषी नेत्रों से भस्म करनेवाले दोनों महाबाहुओं ने परस्पर में देखा ९ क्रोध से रक्तनेत्र सर्प की समान श्वास लेनेवाले शत्रुविजयी दोनों शूरों ने सम्मुख होकर परस्पर घायल किया १० व्याघ्रों के समान क्रोधयुक्त और बाजपक्षियों के समान शीघ्रगामी और शरभनाम पक्षियों के समान क्रोधभरे परस्पर युद्धकर्ता हुए ११ उसके पीछे शत्रुविजयी भीमसेन द्यूत के पांसे बन के दुःख और विराट नगर में पायेहुए दुःखों को १२ और आपके पुत्रों के हाथ से वृद्धियुक्त रत्नवाले देशों के हरण को और पुत्रों समेत तुमसे दिये हुए वारंवार के कष्टों को १३ जिस दुर्योधन ने निरपराधिनी कुन्ती को पुत्रों समेत भस्मकरना चाहा और उसी प्रकार सभा में दुराचारियों के हाथ से द्रौपदी के कष्टों को १४ हे भरतवंशिन् ! उसीप्रकार दुश्शासन के हाथ से शिरकी चोटी का पकड़ना और कर्ण की ओर कठोर वचनों का कहना १५ कि दूसरे पति को इच्छाकर तेरे पति नहीं हैं थूथेतल अर्थात् नपुंसकों के समान सब पाण्डव नरक में पड़े इन सब बातों को स्मरण करता १६ और हे कौरव ! उस समय आपके सम्मुख जो २ बातें कौरवों ने कहीं और आपके पुत्र दासीभाव में करके द्रौपदी के भोगने के अभिलाषी हुए १७ और कर्ण ने आपके सम्मुख सभा के मध्य में श्याम मृगचर्मधारी वनवास को जानेवाले पाण्डवों को भी जो कठोर वचन कहे १८ और जैसे कि सुखीहुए क्रोधयुक्त निर्बुद्धि आपके पुत्र ने दुःखी पाण्डवों को तृण के समानकरके भीमसेन के चलने की नकल करके उपहास किया और बहुतसी बातें करीं १९ शत्रुओं का मारनेवाला धर्मात्मा भीमसेन अपनी बाल्यावस्था से दुःखों को शोचता जीवन से दुःखी हुआ २० इसके पीछे भरतवंशियों में श्रेष्ठ

शरीर की प्रीति त्यागनेवाला भीमसेन सुवर्णपृष्ठी बड़ी कठिनता से चढ़ाने के योग्य धनुष को चढ़ाकर कर्ण के सम्मुख गया २१ उस भीमसेन ने कर्ण के रथपर प्रकाशित तीक्ष्णधार बाणों के जालों से सूर्य की किरणों को रोका २२ इसके पीछे कर्ण ने हँसकर शीघ्रही तीक्ष्णधार बाणों से इस भीमसेन के बाण-जालों को तोड़ा २३ तब उस महाबाहु महाबली कर्ण ने तीक्ष्णधारवाले नौ बाणों से भीमसेन को घायल किया २४ चाबुकों से रोकेहुए हाथी के समान बाणों से रोकाहुआ वह भ्रान्ति से युक्त भीमसेन कर्ण के सम्मुख दौड़ा २५ कर्ण भी उस वेग से गिरते महावेगवान् पाण्डवों में श्रेष्ठ भीमसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि युद्ध में मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है २६ इस के पीछे सौभेरी के शब्द के समान शङ्ख को बजाया तब सेना प्रसन्नता से ऐसे चलायमान हुई जैसे कि उठाहुआ समुद्र २७ भीमसेन ने हाथी घोड़े रथ और पत्तियों से पूर्ण उस उठीहुई सेना को देखकर और कर्ण को पाकर शायकों से ढकदिया २८ कर्ण ने युद्ध में ऋक्षवर्ण घोड़ों को हंसवर्णवाले उत्तम घोड़ों से मिलादिया और पाण्डव को बाणों से ढकदिया २९ वायु के समान शीघ्रगामी ऋक्षवर्ण घोड़ों को श्वेत रङ्गवाले घोड़ों से मिलाहुआ देखकर आपके पुत्रों की सेना हाहाकार करनेवाली हुई ३० हे महाराज ! वह वायु के समान शी-घ्रगामी श्वेत और श्याम रङ्गवाले घोड़े ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि आकाश में बादल होते हैं आपके पुत्रों के महारथी उन क्रोधरूप और क्रोध से रक्तनेत्र कर्ण और भीमसेन को देखकर बड़े भयपूर्वक कम्पायमानहुए ३१ । ३२ उन दोनों की युद्धभूमि यमराजवाले देश के समान भयकारी और ऐसे कठिनता-पूर्वक देखने के योग्य हुई जैसे कि प्रेतों के राजा यमराज का पुर होता है ३३ उस अपूर्व रङ्गभूमि को देखते महारथियों ने बड़े युद्ध में प्रत्यक्षता से एक की भी विजय को नहीं देखा ३४ हे राजन् ! पुत्र के साथ आपका दुर्मन्त्र होनेपर उन बड़े अस्त्रज्ञों के कठिन युद्धको देखा ३५ तीक्ष्ण बाणों से परस्पर ढकते उन दोनों शत्रुसन्तापियों ने बाणों की वृष्टि के द्वारा आकाश को बाण जालों से संयुक्त कर दिया ३६ तीक्ष्ण बाणों से परस्पर प्रहार करनेवाले वह दोनों महा-रथी ऐसे बड़े दर्शन के योग्यहुए जैसे कि वर्षा करनेवाले दो बादल होते हैं ३७ हे प्रभो ! सुवर्णजटित बाणों को छोड़ते उन दोनों शत्रुविजयियों ने आकाश

को ऐसा प्रकाशित किया जैसे कि बड़ी उल्काओं से होता है हे राजन्! उन दोनोंके छोड़ेहुए बाण जोकि गृध्र के पक्ष से युक्त थे ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि शरदऋतु में आकाश में मतवाले सारसों की पंक्तियां होती हैं श्रीकृष्ण और अर्जुन ने शत्रुओं के विजय करनेवाले भीमसेन को कर्ण के साथ युद्ध करनेवाला देखकर भीमसेन के ऊपर बड़ाभारी भार माना ३८।४० वहां कर्ण और भीमसेन के छोड़े बाणों से महाघायल घोड़े मनुष्य और हाथी बाणों के पतन-स्थानों को उल्लङ्घन कर गिरपड़े ४१ हे महाराज, राजन्, धृतराष्ट्र! उन गिरते व गिरेहुए और निर्जीव बहुत से मनुष्य घोड़े आदि से आपके पुत्रों के मनुष्यों का विनाशहुआ ४२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! पृथ्वी एकक्षणभर में ही निर्जीव मनुष्य घोड़े और हाथियों के शरीरों से पूर्ण होगई॥ ४३॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वात्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १३२॥

एकसौतेंतिस का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! मैं भीमसेन के पराक्रम को अत्यन्त अपूर्व मानता हूं जो युद्ध में तीव्र पराक्रमी कर्ण से युद्ध करनेवाला हुआ १ जो कर्ण युद्धभूमि में सब शस्त्रधारी चढ़ाई करनेवाले देवताओं को भी यक्ष, असुर और मनुष्यों समेत को हटा सक्ता है २ उसने उस युद्ध में उस लक्ष्मी से शोभित पाण्डव भीमसेन को युद्ध में कैसे नहीं विजय किया हे सञ्जय! इस हेतु को मुझ से कहो ३ प्राणों के द्यूत में उन दोनों का युद्ध किस प्रकार से हुआ मैं मानता हूं कि इस युद्ध में जयाजय दोनों मिलीहुई हैं ४ हे सूत! मेरा पुत्र दुर्योधन युद्ध में कर्ण को पाकर गोविन्दजी और यादवों के साथ पाण्डवों के विजय करने को साहस करता है ५ युद्ध में भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेन के हाथ से कर्ण को वारंवार पराजित हुआ सुनकर बड़ा मोह होता है ६ मैं अपने पुत्र के अन्यायों से कौरवों को विनाशहुआ मानताहूं हे सञ्जय! वह कर्ण बड़े धनुष-धारी पाण्डवों को विजय नहीं करसकेगा ७ कर्ण ने पाण्डवों के साथ जो युद्ध किया तो सर्वत्र पाण्डवों नेही युद्धभूमि में कर्ण को विजय किया ८ हे तात! पाण्डवलोग देवताओं समेत इन्द्रसे भी अजेय हैं वह मेरा पुत्र निर्बुद्धि दुर्योधन नहीं जानता है ९ मेरा निर्बुद्धिपुत्र दुर्योधन कुबेर के समान अर्जुन के धनको हरण करके सुहृद् के चाहने के समान उपाधियों को नहीं जानता है १० मैंने

विजय करलिया है इस बातका माननेवाला छलसंयुक्त बुद्धि रखनेवाला दुर्योधन बड़े छल से महात्माओं के राज्यको छलकर पाण्डवों का अपमान करता है ११ पुत्रकी प्रीति से विमोहित व म्लानचित्त मुझसे भी धर्ममें नियत महात्मा पाण्डव लोग अपमान किये गये १२ सगेभाइयों के साथ सन्धि को अभिलाषी ऊंची दृष्टिवाला युधिष्ठिर यह मानकर कि यह असमर्थ है मेरे पुत्रों से अपमान किया गया १३ उन बहुतसे दुःख बुरेकर्म और उन अपकारोंको हृदयमें करके महाबाहु भीमसेन कर्ण के साथ युद्ध करनेवाला हुआ १४ हे सञ्जय ! उसी हेतु से जिस प्रकार युद्ध में श्रेष्ठ परस्पर मारने के अभिलाषी कर्ण और भीमसेनने युद्धभूमि में युद्ध किया उसको मुझ से कहो सञ्जय बोला कि हे राजन् ! जैसे कि कर्ण और भीमसेन का युद्ध जारीहुआ उसको कहताहूं जैसे कि वनमें परस्पर मारनेवाले दो हाथियों का युद्ध होताहै उसी प्रकार इन दोनों का युद्धहुआ १५। १६ हे राजन् ! क्रोधयुक्त कर्ण ने पराक्रमकरके तीस बाणों से उस पराक्रमी शत्रुहन्ता भीमसेनको घायल किया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! सूर्यके पुत्र कर्णने बड़ेवेगवान् साफ नोक सुवर्णजटित बाणों से भीमसेन को घायल किया १७।१८ भीमसेन ने उस खैंचनेवाले के धनुषको तीन बाणों से काटा और भल्ल से सारथीको रथ से गिराया १९ भीमसेन के मारने को सदैव चाहते उस कर्णने सुवर्ण और वैडूर्य मणियों से जटित दण्ड शक्ति को हाथ में लिया २० अर्थात् वहां बली कर्णने उस द्वितीय कालशक्ति के समान उस दण्डशक्ति को उठाकर और पराक्रम से पकड़ कर २१ उस जीवन की नाशकारिणी शक्ति को भीमसेनके ऊपर फेंका इन्द्रवज्र के समान शक्तिको छोड़कर २२ वह सूतका पुत्र कर्ण बड़े भारी शब्द से गर्जा इसके पीछे उस शब्द को सुनकर आपके पुत्र प्रसन्न हुए २३ भीमसेन ने उस कर्ण के हाथ की फेंकीहुई शक्ति को सात बाणों से आकाशही में काटा २४ हे श्रेष्ठ ! उसकी सर्प के समान शक्ति को काटकर कर्ण के प्राणों को चाहते क्रोधयुक्त भीमसेन ने २५ युद्ध में मोरपक्ष से जटित सुनहरी पुङ्ख और स्वच्छ यमराज के दण्ड के समानवाले बाणों को चलाया २६ तब कर्ण ने भी सुवर्ण-पृष्ठी दुष्प्राप्य दूसरे धनुष को लेकर बहुत खैंचकर शायकों को छोड़ा २७ हे राजन् ! पाण्डव भीमसेन ने कर्ण के छोड़ेहुए नौ बड़े बाणों को टेढ़े पर्ववाले बाणों से काटा २८ फिर भीमसेन उन बाणों को काटकर सिंह के समान गर्जा

जैसे कि गौवों के मध्य में दो बैल गर्जें उसी प्रकार वह दोनों पराक्रमी शब्द करनेवाले हुए २६ और जैसे कि दो शार्दूल मांस के अर्थ गर्जें उसी प्रकार परस्पर प्रहारकरने के अभिलाषी परस्पर छिद्र देखनेवाले और चाहनेवाले दोनों परस्पर में गर्जें ३० जिस प्रकार गौशाला में दो बैल परस्पर देखते हैं उसी प्रकार परस्पर में देखनेवाले हुए दाँतों की नोकों से बड़े हाथियों के समान परस्पर सम्मुख होकर ३१ कानतक खैंचेहुए बाणों से परस्पर घायल किया हे महाराज! बाणों की वर्षा से एक २ को क्रोधित करनेवाले ३२ और क्रोधयुक्त फैले हुए नेत्रों से देखने और हँसनेवाले और वारंवार आपस में घुड़की देने-वाले ३३ शङ्खों को शब्दायमान करनेवाले होकर परस्पर युद्ध करने लगे हे श्रेष्ठ! फिर भीमसेनने उसके धनुष को मुष्टिका के स्थान पर काटा ३४ और बाणों से उन शङ्खवर्ण घोड़ों को यमलोक में पहुँचाया और इसी प्रकार उसके सारथी को भी रथ के नीड़ से नीचे गिरादिया ३५ इसके पीछे युद्ध में बाणों से ढकेहुए सूर्य के पुत्र कर्ण ने जिसके कि घोड़े और सारथी मरगये थे बड़ी भारी चिन्ताको पाया ३६ और बाणजाल से मोहित होकर करने के योग्य कर्म को नहीं पाया इसके पीछे क्रोध से कम्पायमान राजा दुर्योधन ने उस प्रकार की आपत्ति में पड़े हुए कर्णको देखकर दुर्जय को आज्ञाकरी कि हे दुर्जय! तुम कर्ण के सम्मुख जावो वह भीमसेन आगे से उसको ग्रसे लेताहै ३७।३८ तू कर्ण के पराक्रम को आश्रित होकर इस बड़े भोजन करनेवाले को मार इस प्रकार आज्ञा दिया हुआ आपका पुत्र तथास्तु कहकर ३९ उस भिड़ेहुए भीमसेन को बाणों से ढकता सम्मुख दौड़ा उसने भीमसेन को नौ बाणों से और घोड़ों को आठ बाणों से घायल किया ४० छः बाणों से सारथी को तीन बाणों से ध्वजा को और सात बाणों से फिर उसको घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने भी शीघ्र चलने-वाले बाणों से घोड़े सारथी समेत ४१ टूटे कवचवाले दुर्जय को यमलोक में पहुँचाया फिर पीड्यमान और रोतेहुए कर्ण ने उस अच्छे अलंकृत पृथ्वीपर गिरे सर्प के समान कड़कड़ाते आपके पुत्र को प्रदक्षिणा किया तब उस हँसते हुए भीमसेन ने उस बड़े शत्रु कर्ण को विरथ करके ४२। ४३ बाणों के समूह और दिव्य शतघ्नी शंकुओं से चिनदिया उसके बाणों से घायल शत्रुसन्तापी अतिरथी कर्ण ने युद्ध में क्रोधरूप भीमसेन को त्याग नहीं किया॥ ४४। ४५॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयस्त्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १३३॥

एकसौचौंतिस का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, इस प्रकार विरथ और भीमसेन से पराजित हुए कर्ण ने फिर दूसरे रथपर सवार होकर पाण्डव भीमसेन को फिर घायल किया १ दाँत की नोकों से बड़े हाथियोंके समान परस्पर सम्मुख होकर कानतक खैंचेहुए बाणों से परस्पर घायल किया २ अर्थात् कर्ण बाणों के समूहों से भीमसेन को घायल करके बड़े शब्द को गर्जा और फिर भी छातीपर घायल किया ३ भीमसेन ने सीधे चलनेवाले दश बाणोंसे उसको घायल किया फिर टेढ़े पर्ववाले सत्तर बाणोंसे घायल किया ४ हे राजन्! भीमसेनने कर्ण को हृदयपर नौ बाणों से घायलकरके तीक्ष्ण धारवाले एक शायकसे ध्वजा को छेदा ५ इसके पीछे पाण्डवने तिरेसठ बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं और कोड़े से घोड़े को ६ यशस्वी पाण्डव के हाथ से अत्यन्त घायल क्रोध से रक्तनेत्र वीर कर्ण ने होठों को चाटा ७ हे महाराज! इसके पीछे सब शरीरों के चीरनेवाले बाण को भीमसेन के लिये ऐसे फेंका जैसे कि बलिके अर्थ इन्द्र वज्रको फेंकता है ८ कर्ण के धनुष से वह गिरा हुआ सुनहरी पुङ्खवाला बाण युद्ध में भीमसेन को घायलकरके पृथ्वी को फाड़ पृथ्वी में समागया ९ इसके पीछे विचार रहित क्रोध से रक्तनेत्र महाबाहु भीमसेन ने वज्र के समान चार हाथ मोटी स्वर्णमयी बाजूबन्द रखनेवाली छः पक्ष रखनेवाली भारी गदा को कर्ण के ऊपर फेंका उस गदा ने श्रेष्ठों की सवारी के योग्य कर्ण के उत्तम घोड़ों को मारा १०। ११ अर्थात् क्रोधयुक्त भरतवंशीय भीमसेन ने गदा से घोड़ों को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र वज्र से मारता है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! इसके पीछे महाबाहु भीमसेन ने क्षुरप्रनाम दो बाणों से १२ कर्ण की ध्वजा को काटकर बाणों से सारथी को भी मारा फिर धनुष को टङ्कारता महादुःखी चित्त कर्ण उस घोड़े सारथी और ध्वजा से रहित रथ को त्यागकरके खड़ा होगया वहां हमने कर्ण के अपूर्व पराक्रम को देखा १३। १४ जिस रथियों में श्रेष्ठ विरथरूप ने शत्रु को रोका युद्ध में उस नरोत्तम कर्ण को विरथ देखकर १५ दुर्योधन ने दुर्मुख से कहा हे दुर्मुख! यह कर्ण भीमसेन के हाथ से विरथ कियागया १६ उस नरोत्तम महारथी कर्ण को रथ संयुक्त करो इसके पीछे दुर्मुख दुर्योधन के वचन को सुनकर १७ शीघ्रही

कर्ण के पास आया और बाणों से भीमसेन को ढकदिया युद्ध में कर्ण के पीछे चलनेवाला दुर्मुख को देखकर १८ वायुपुत्र भीमसेन होठों को चाटता हुआ अत्यन्त प्रसन्न हुआ हे राजन्! इसके पीछे पाण्डव ने शिलीमुखनाम बाणों से कर्ण को रोककर १९ शीघ्रही अपने रथ को दुर्मुख के पास पहुँचाया हे महाराज! इसके पीछे भीमसेन ने एक क्षणभर मेंही टेढ़े २० सुन्दर मुखवाले नौ बाणों से दुर्मुख को यमलोक में पहुँचाया हे राजन्! दुर्मुख के मरनेपर कर्ण उसी रथपर सवार होकर सूर्य के समान तेजस्वी शोभायमान हुआ टूटेहुए मर्म-स्थल और रुधिर में भरेहुए दुर्मुख को देखकर २१। २२ अश्रुपातों से भरे नेत्र-वाला कर्ण एक मुहूर्ततक सम्मुख वर्तमान नहीं हुआ लम्बे और उष्णश्वास लेतेहुए वीर कर्णने उस निर्जीव को उल्लङ्घनकर प्रदक्षिणा करके करने के योग्य कर्म को नहीं जाना हे राजन्! उस अवकाश में भीमसेन ने गृध्र पक्ष से जटित चौदह नाराचों को २३। २४ कर्ण के निमित्त चलाया हे महाराज! उन प्र-काशमान सुनहरी पुङ्खवाले बाणोंने उसके स्वर्णजटित कवच को तोड़कर २५ दिशाओं को प्रकाशित किया और उन रुधिर पीनेवालों ने कर्ण के रुधिर को पानकिया २६ हे महाराज! काल के प्रेरित क्रोधयुक्त तीव्रगामी सर्पों के समान वह बाण पृथ्वी पर ऐसे शोभायमानहुए २७ जैसे कि पृथ्वी के विवरों में आधे घुसेहुए बड़े २ सर्प होते हैं फिर विचार से रहित कर्ण ने सुवर्ण से शोभित भ-यकारी चौदहों नाराचों से छेदा वह भयकारी बाण भीमसेन की बाईं भुजा को छेदकर २८। २९ पृथ्वी में ऐसे प्रवेशकर गये जैसे कि क्रौञ्च पक्षी पर्वत में प्रवेश करजाते हैं पृथ्वी में घुसेहुए वह नाराच ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि सूर्य के अस्त होनेपर प्रकाशित किरणें होती हैं युद्ध में मर्मभेदी नाराचों से घायल उस भीमसेनने ३०।३१ ऐसे रुधिर को गिराया जैसे कि जल को पर्वत गेरता है उस दुःखितहुए भीमसेनने गरुड़ के समान शीघ्रगामी तीन बाणों से कर्णको और सातबाणोंसे उसके सारथीको घायल किया हे महाराज! भीमसेन के बाणों से घायल हुआ व्याकुल कर्ण ३२।३३ बड़े भय से युद्ध को त्यागकर शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा भागा फिर अग्नि के समान प्रकाशमान अतिरथी भीमसेन सुवर्ण जटित धनुष को टङ्कारकर युद्ध में नियत हुआ॥ ३४। ३५॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुस्त्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १३४॥

एकसौपैंतीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सञ्जय ! मैं दैव को अर्थात् प्रारब्ध को बड़ा मानता हूं इस निरर्थक उपाय और उद्योग करने को धिक्कार है इस स्थानपर उपाय करनेवाले कर्णने भीमसेन को नहीं तरा १ कर्ण युद्ध में गोविन्दजी समेत सब पाण्डवों को विजय करने का उत्साह करता है मैं लोक में इस कर्ण के समान किसी शूरवीर को नहीं देखता हूं २ मैंने वारंवार यह बात कहनेवाले दुर्योधन के मुख से सुना कि कर्ण पराक्रमी शूर और दृढ़धनुषधारी और महापरिश्रमी है ३ हे सूत ! पूर्वसमय में निर्बुद्धि दुर्योधनने मुझसे यह वचन कहा कि देवता भी मुझ कर्णको साथ रखनेवाले के सम्मुख होने को समर्थ नहीं हैं ४ फिर निर्बुद्धि निर्बल विचारे पाण्डव कैसे होसक्ते हैं अर्थात् कभी नहीं होसक्ते वहां निर्विष सर्प के समान पराजित कर्ण को देखकर ५ उस युद्ध से मुख मोड़नेवाले को दुर्योधन ने क्या कहा दुःख की बात है कि मोहितहुए कर्ण ने युद्धों में अकुशल अकेले दुर्मुख को ६ पतङ्ग के समान अग्नि में प्रवेशित किया हे सञ्जय ! निश्चयकरके अश्वत्थामा, शल्य, कृपाचार्य और कर्ण यह सब एक होकर भी ७ भीमसेन के सम्मुख नियत होने को समर्थ नहीं हैं वह भी इस भीमसेन के बड़े भयकारी दश हज़ार हाथियों के समान बल को और वायु के समान कठिन पराक्रमीके कठिन विचार को जानते उस निर्दयकर्मी कालमृत्यु और यमराज के समान भीमसेन को किस निमित्त ८ । ९ युद्ध में क्रोधयुक्त करते हैं जोकि उसके बल क्रोध और पराक्रम के जाननेवाले हैं अपने भुजबल से अहङ्कारी महाबाहु अकेले कर्ण ने भीमसेन को तिरस्कार करके युद्धभूमि में संग्राम किया जिस भीमसेन ने युद्ध में कर्ण को ऐसे विजय किया जैसे कि इन्द्र असुरों को विजय करता है १० । ११ वह पाण्डव भीमसेन युद्ध में किसी से भी विजय करने के योग्य नहीं जो अकेलाही द्रोणाचार्य की सेना को मथकर मेरी सेना में प्रवेशित हुआ १२ भीमसेन अर्जुन के खोजने में प्रवृत्त है कौन जीवन की इच्छा करनेवाला उसको पराजय करसक्ता है हे सञ्जय ! कौन सा वीर है जो भीमसेन के आगे सम्मुख होने को उत्साह करे जैसे कि वज्र के उठानेवाले महेन्द्र के आगे आनेको कोई दानव मनुष्य साहस नहीं करसक्ता है उसीप्रकार भीमसेन

के भी सम्मुख होने को समर्थ न होकर कोई उत्साह नहीं करसक्ता है १३ चहै वज्रधारी इन्द्र के आगे दानव मनुष्य यमराज के पुर को पाकर लौट आवे परन्तु १४ भीमसेन को पाकर कभी नहीं लौट सक्ता जैसे कि पतङ्ग अग्नि में प्रवेश करता है उसी प्रकार वह सब उसमें भस्म हुए १५ जब अचेत पुरुष अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन के सम्मुख दौड़े तब क्रोधयुक्त भयकारी रूपवाले भीमसेन ने सभा में कौरवों को सुनाकर तेरे पुत्रों के मारने से सम्बन्ध रखने वाला जो उसने वचन कहा था उसको विचारकर और कर्ण को विजय किया हुआ देखकर १६ । १७ दुश्शासन अपने भाई समेत भयकरके भीमसेन से हटगया हे सञ्जय ! जिस दुर्बुद्धि ने सभा के मध्य में वारंवार यह वचन कहा था कि १८ कर्ण दुश्शासन और हम मिलकर युद्ध में पाण्डवों को विजय करेंगे निश्चयकरके वह मेरा पुत्र भीमसेन से पराजित विरथ कर्ण को देखकर १९ श्रीकृष्णजी के अपमान से अत्यन्त दुःख पाता है निश्चय है कि मेरा पुत्र युद्ध में कवचधारी भाइयों को मराहुआ देखकर अपने अपराध से बड़ा पछ-तावा करके दुःखों को पाता है अपने जीवन का चाहनेवाला विरुद्धहुए पाण्डव भीमसेन के आगे जासक्ता है २० जोकि भयकारी रूप और शस्त्रों का धारण करनेवाला क्रोध से पूर्ण साक्षात् काल के समान वर्तमान है चाहै बड़वा-नल अग्नि के मुख से भी मनुष्य बचसके २१ परन्तु भीमसेन के मुख में पहुँचकर फिर नहीं छुट सक्ता यह मेरा मत है क्रोधयुक्त अर्जुन पाञ्चालदेशीय सात्यकी और केशवजी २२ जीवन की रक्षा करने को जानते हैं हे सूत ! बड़े कष्ट की बात है कि मेरे पुत्रों का जीवन आपत्ति में फँसा हुआ है २३ सञ्जय बोले कि हे कौरव ! जो तुम बड़े भय के वर्तमान होने पर भय को करते हो सो तुम्हीं निस्सन्देह इस संसार के नाश के मूल हो २४ पुत्रों के वचनोंपर नियत होकर आप बड़ी शत्रुता को करके समझाने से भी तुम ऐसे नहीं मानते थे जैसे कि मरणहार मनुष्य नीरोगकारी ओषधि को नहीं अङ्गीकार करता है २५ हे महाराज, नरोत्तम ! तुम आप बड़ी कठिनता से पचनेवाले कालकूट नाम विष को पानकरके अब उसके पूरे २ सब फलों को पावोगे २६ फिर जो तुम युद्ध करनेवाले बड़े पराक्रमी शूरवीरों की निन्दा करते हो उसका वृत्तान्त तुमसे इस स्थान पर कहता हूं जैसे कि युद्ध प्रारम्भ हुआ २७ हे भरतवंशिन् !

इसके अनन्तर आपके पुत्रों ने भीमसेन से पराजित कर्ण को देखकर बड़े धनुषधारी पांचों सगेभाइयों ने नहीं सहा २८ दुर्मर्षण, दुस्सह, दुर्मद, दुर्धर और जय यह पांचों अपूर्वकवचों को धारण कियेहुए पाण्डव भीमसेनके सम्मुख गये २९ उन्होंने सब ओर से महाबाहु भीमसेन को घेरकर बाणों से दिशाओं को ऐसे ढकदिया जैसे कि शलभनाम पक्षियों के समूहों से आच्छादित होती हैं ३० हँसतेहुए भीमसेन ने युद्ध में उन अकस्मात् आतेहुए देवरूप कुमारों को लिया ३१ भीमसेन के आगे चलनेवाले आपके पुत्रों को देखकर कर्णभी फिर बड़े पराक्रमी भीमसेन के सम्मुखगया ३२ उस समय भी आपके पुत्रों से रोकाहुआ वह भीमसेन तीव्र सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधारवाले बाणों को छोड़ता शीघ्रही उस कर्ण के सम्मुखगया ३३ फिर कौरवों ने सब ओर से कर्णको मध्यमें करके टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे भीमसेन को ढकदिया ३४ हे राजन् ! भयकारी धनुष रखनेवाले भीमसेन ने पचीसबाणों से उन नरोत्तमों को घोड़े सारथियों समेत यम-लोक में पहुँचाया ३५ वह मृतकहोकर सारथियों समेत रथोंसे ऐसे गिरपड़े जैसे कि अपूर्व पुष्प रखनेवाले वायु से टूटेहुए बड़े २ वृक्ष होते हैं ३६ वहां हम ने भीमसेन के अपूर्व पराक्रम को देखा जो बाणों से कर्ण को रोककर आप के पुत्रों को मारा ३७ हे महाराज ! चारों ओर से भीमसेन के तीक्ष्ण बाणों से रुकेहुए उस कर्ण ने भीमसेन को देखा ३८ और क्रोध से रक्तनेत्र भीमसेन ने बड़े धनुष को टङ्कारकर वारंवार उस कर्ण को देखा ॥ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चत्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३५ ॥

एकसौछत्तीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, फिर वह प्रतापवान् कर्ण पृथ्वीपर पड़ेहुए आप के पुत्रों को देखकर बड़े क्रोध में भरा जीवन से निराश हुआ १ तब कर्ण ने अपने कोही अपराधीमाना जोकि उसके नेत्रों के समक्ष में आप के पुत्र भीमसेन के हाथ से मारेगये २ उसके पीछे भ्रान्ति से युक्त क्रोधभरे पूर्व शत्रुता को स्मरण करते भीम-सेन ने कर्ण के तीक्ष्णधार बाणों को काटा ३ फिर उस हँसतेहुए कर्ण ने भीमसेन को पांच बाणों से घायलकरके फिर सुनहरी पुङ्खवाले सत्तर तीक्ष्ण बाणों से घायल किया ४ भीमसेन ने कर्ण के चलायेहुए उन बाणों को ध्यानकरके युद्ध में सुनहरी पुङ्खवाले सौ बाणों से कर्ण को घायल किया ५ हे श्रेष्ठ ! फिर पांच

बाणों से उसके मर्मस्थलों को छेदकर एक भल्ल से कर्ण के धनुष को काटा ६ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे शत्रुसन्तापी दुःखी चित्त कर्ण ने दूसरे धनुष को लेकर बाणों से भीमसेन को ढकदिया ७ फिर भीमसेन उसके घोड़े और सारथी को मारकर बदला लेनेवाला कर्म होनेपर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ८ तब पुरुषोत्तम ने बाणों से उसके धनुष को काटा हे महाराज ! वह सुवर्णपृष्ठी और बड़े शब्द वाला धनुष भी गिरपड़ा ९ फिर तो महारथी कर्ण उस रथ से उतरा और क्रोध करके गदा को भीमसेन के ऊपर फेंका १० भीमसेन ने उस आतीहुई बड़ी गदा को देखकर सब सेना के देखतेहुए अपने बाणों से रोकदिया ११ इसके पीछे कर्ण के मारने के अभिलाषी शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेन ने हज़ारों बाणों को चलाया १२ कर्ण ने उस बड़े युद्ध में इन बाणों को अपने बाणों से रोककर शायकों से भीमसेन के कवच को गिराया १३ इसके पीछेसब सेना के लोगों के देखते पच्चीस नाराचों से उसकोघायलकिया यह आश्चर्य सा हुआ १४ हे श्रेष्ठ ! इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबाहु भीमसेन ने नौ बाणों को कर्ण के ऊपर चलाया १५ वह तीक्ष्ण बाण उसके कवच और दाहिनी भुजा को छेदकर पृथ्वी में ऐसे समागये जैसे कि सर्प बामी में समाजाते हैं १६ भीमसेन के धनुष से गिरेहुए बाणों के समूहों से ढकाहुआ कर्ण फिर भी भीमसेन से मुख फेरगया १७ राजा दुर्योधन भीमसेन के बाणों से ढकेहुए मुख फेरनेवाले पदाती कर्ण को देखकर बोला १८ कि सब ओर से उपायों को करके तुम शीघ्रही कर्ण के रथ के समीप जाओ हे राजन् ! इसके अनन्तर आप के पुत्र भाई के अपूर्व वचन को सुनकर १९ युद्ध में बाणों को छोड़ते भीमसेन के सम्मुख गये उनके नाम चित्र, अपचित्र, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन, मित्रायुध, चित्रवर्मा यह सब युद्ध में अपूर्व युद्ध करनेवाले थे महारथी भीमसेन ने इन आतेहुए २०।२१ आप के पुत्रों को एक २ बाण से युद्धभूमि में गिराया वह मृतक होकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायु से उखाड़ेहुए वृक्ष होते हैं २२ हे राजन् ! आप के महारथी पुत्रों को मराहुआ देखकर अश्रुपातों से भीजेहुए मुखवाले कर्ण ने विदुरजी के वचनों को स्मरण किया २३ फिरयुद्ध में शीघ्रता करनेवाला पराक्रमी कर्ण विधि के अनुसार अलंकृत कियेहुए दूसरे रथपर सवार होकर भीमसेन के सम्मुख गया २४ वह दोनों सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्ण धारवाले बाणों से परस्पर में

घायलकरके ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि सूर्य की किरणों से पिरोयेहुए २५ दो बादल उसके पीछे क्रोधयुक्त पाण्डव ने तीक्ष्णधार और तीक्ष्ण बेंतवाले छत्तीस भल्लों से कर्ण की प्रत्यञ्चा को तोड़ा २६ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! महाबाहु कर्ण ने भी टेढ़े पर्ववाले पचास बाणों से भीमसेन को घायल किया २७ रुधिर से लिप्त अङ्ग और बाणों से टूटेकवच शरीर वह दोनों कर्ण और भीमसेन ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि काञ्चली से छूटेहुए दोसर्प होते हैं २८ जैसे कि दो व्याघ्र डाढ़ों से परस्पर रुधिर की वर्षा करें उसी प्रकार से बाणधारा को उत्पन्न करनेवाले दोनों नरोत्तम वीर बादलों के समान वर्षा करनेवाले हुए २९ जैसे किसी गौ से दो बैल परस्पर में घायल करें उसी प्रकार शायकों से अङ्गों को घायल करनेवाले वह दोनों शत्रुविजयी अच्छे शोभायमान हुए ३० वह रथियों में श्रेष्ठ शब्दों को करके प्रसन्न होते परस्पर क्रीड़ा करते रथों से मण्डलों को भी करनेवाले हुए ३१ सिंहों के समान पराक्रम करनेवाले नरोत्तम महाबली ऐसे गर्जे जैसे कि गौ के स्पर्श को दो महाबली बैल गर्जना करते हैं ३२ परस्पर देखनेवाले क्रोध से रक्तनेत्र बड़े पराक्रमी वह दोनों इन्द्र और राजाबलि के समान युद्धकर्ता हुए ३३ हे राजन् ! इसके पीछे महाबाहु भीमसेन युद्ध में भुजाओं से धनुष को चलायमान करता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली रखनेवाला बादल होता है नेमीरूप शब्द रखनेवाले भीमसेनरूपी बड़े बादल ने धनुषरूप बिजली और बाणरूप जलधाराओं से कर्णरूपी पर्वत को ढकदिया ३४ । ३५ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे भयकारी पराक्रम करनेवाले भीमसेन ने अच्छे प्रकारसे छोड़े हुए हजार बाण से कर्ण को आच्छादित करदिया ३६ वहां पर आपके पुत्रों ने भीमसेन के पराक्रम को देख ३७ जो उसने कर्ण को सुन्दर पुङ्ख गृध्रपक्ष युक्त बाणों से ढक दिया और अर्जुन समेत यशस्वी केशवजी को युद्ध में प्रसन्न किया ३८ और दोनों चक्र के रक्षक सात्यकी को भी प्रसन्न किया और कर्ण से युद्ध किया हे महाराज ! उसके विख्यात बल के पराक्रम भुजबल और धैर्य को देखकर आप के पुत्र उदासचित्त हुए ॥ ३९ । ४० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्त्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३६ ॥

एकसौसैंतीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, कर्ण ने भीमसेन की प्रत्यञ्चा और तल के शब्द को सुन

कर ऐसे नहीं सहा जैसे कि मतवाला हाथी अपने सम्मुख आनेवाले मतवाले हाथी के शब्द को १ उसने भीमसेन के सम्मुख से एक मुहूर्त दूर हटकर भीमसेन के हाथ से गिराये हुए आप के पुत्रों को देखा २ हे नरोत्तम ! उनको देखकर लम्बी और उष्ण श्वास लेकर फिर भीमसेन के सम्मुख गया ३ वह क्रोध से रक्तनेत्र कर्ण बड़े सर्प की समान श्वासलेता और बाणों को छोड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि किरणों को फैलाता हुआ सूर्य शोभित होता है ४ हे भरतर्षभ ! जैसे कि सूर्य की किरणों से पर्वत ढक जाता है उसीप्रकार भीमसेन भी कर्ण के फेंकेहुए बाणों से ढकगया ५ कर्ण के धनुष से प्रकट होने वाले मोरपक्ष से जटित वह बाण सबओर से भीमसेन के शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि पक्षी निवासस्थान के लिये वृक्ष में घुस जाते हैं ६ कर्ण के धनुप से गिरेहुए और जहां तहां गिरते सुनहरी पुङ्खवाले वह बाण भी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि पंक्ति बांधे हुए हंस होते हैं ७ हे राजन् ! कर्ण के बाण धनुष ध्वजा सामान छत्र और ईशामुख और युग से प्रकट होनेवाले दिखाई पड़े आकाश को पूर्ण करते कर्ण ने बड़े वेगवान् और पक्षियों के परों से जटित आकाशगामी सुवर्ण गुम्फित अपूर्वबाणों को छोड़ भीमसेन ने बाणों को त्याग करके विजयी होकर तीक्ष्णधारवाले बाणों से उस काल के समान तीव्र प्रकृतियुक्त आयेहुए कर्ण को घायल किया ८ । १० पराक्रमी भीमसेन ने उस कर्ण की असह्य तीव्रता को देखकर उन बड़े बाणसमूहों को हटाया ११ इसके पीछे भीमसेन ने कर्ण के बाणजालों को तोड़कर दूसरे तीक्ष्ण धारवाले बीस बाण से कर्ण को घायल किया १२ जैसे कि वह पाण्डव कर्ण के बाणोंसे ढकगया था उसीप्रकार पाण्डव ने भी युद्ध में कर्ण को बाणों से ढकदिया १३ हे भरतवंशिन् ! युद्ध में भीमसेन के पराक्रम को देखकर आप के शूरवीरों ने प्रशंसाकरी १४ भूरिश्रवा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, जयद्रथ, उत्तमौजा, युधामन्यु, सात्यकी, अर्जुन, केशवजी, कौरव और पाण्डवों में अत्यन्त श्रेष्ठ दश महारथी वेग से धन्य २ शब्द करके पुकारे और सिंहनाद किये १५।१६ हे राजन् ! उस कठिन और रोमहर्षण करनेवाले शब्द के उठनेपर आप का पुत्र दुर्योधन शीघ्रता करताहुआ बोला १७ राजा, राजकुमार और मुख्य करके सगे भाइयों से बोला तुम्हारा भला हो भीमसेनसे कर्णको रक्षाकरतेहुए जाओ १८

भीमसेन के धनुष से गिरेहुए बाण कर्ण को बहुत शीघ्रही मारना चाहते हैं हे बड़ेधनुषधारियो ! सो तुम कर्ण की रक्षा करने में उद्योगकरो १९ हे भरतवंशिन् ! फिर दुर्योधन की आज्ञानुसार सात सगे भाइयों ने सम्मुख जाकर भीमसेन को घेरलिया २० उन्हों ने भीमसेन को पाकर बाणों की वर्षा से ऐसे ढकदिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल जल की धाराओं से पर्वत को ढकदेता है २१ हे राजन् ! उन क्रोधरूप सातों महारथियों ने भीमसेन को ऐसे पीड्यमान किया जैसे कि प्रलयकाल में सातोंग्रह सोम देवता को पीड़ित करते हैं २२ इसके पीछे समर्थ भीमसेन ने वेग से मुष्टिका के द्वारा अच्छे अलंकृत धनुष को खैंच कर २३ और मनुष्यों की संख्या को जानकर उनके समान सातशायकों को चढ़ाकर सूर्य की किरणों के समान बाणों को उनकी ओर को छोड़ा २४ हे महाराज ! पहली शत्रुता को स्मरण करते और आप के पुत्रों के शरीरों से प्राणों को निकालते भीमसेन ने उन बाणों को छोड़ा २५ हे भरतवंशिन् ! भीमसेन के छोड़ेहुए सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधारबाण उन सातों आप के पुत्र भरतवंशियों को मारकर आकाश को उछले २६ अर्थात् वह सुवर्ण से अलंकृत बाण उन सातोंके हृदयोंको फाड़कर आकाशचारी गुणोंके समान शोभायमान हुए हे राजेन्द्र ! वह रुधिर में लिप्त नोक और पक्षवाले सुवर्णजटित सातोंबाण आप के पुत्रों के रुधिरों को पान करके आकाश को गये २७।२८ बाणों से घायल मर्मस्थलवाले वहसातों मृतकहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि पर्वत के शिखरपर उत्पन्नहुए हाथी से तोड़ेहुए बड़े वृक्ष गिरते हैं २९ शत्रुञ्जय, शत्रुसंह, चित्र, चित्रायुध, दृढ़, चित्रसेन, विकर्ण यह सातों मारे गये ३० पाण्डव भीमसेन आप के सब मृतक पुत्रों के मध्य में से एक प्यारे विकर्ण को अत्यन्त शोचता था ३१ अर्थात् इस वचन को कहता था कि हे विकर्ण ! मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि धृतराष्ट्र के सब पुत्र मारने के योग्य हैं उस हेतुसे तू भी मारागया और मैंने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया ३२ हे वीर ! क्षत्रिय धर्म को स्मरण करता तू युद्ध करने को आया इसीहेतु से युद्ध में मारागया निश्चयकरके धर्मयुद्ध बड़ा कठिन है ३३ तुम बड़े तेजस्वी होकर राजा की और हमारी दोनों ओर की वृद्धि करने में प्रीति रखनेवाले थे इस प्रकार के न्याय से तुम न्याय के ज्ञाता काही केवल दुःख है ३४ पृथ्वीपर बृहस्पतिजी के समान अतिबुद्धिमान्

श्रीगङ्गाजी के पुत्र भीष्मजी ने युद्ध में प्राणों को त्याग किया इसहेतु से युद्ध बड़ा कठिन है ३५ सञ्जय बोले कि महाबाहु पाण्डवनन्दन ने कर्ण के देखते उनको मारकर भयकारी सिंहनाद को किया ३६ हे भरतवंशिन्! उस शूरके उस शब्द ने वह युद्ध और अपनी बड़ी विजय धर्मराज युधिष्ठिर को विदित करी ३७ धनुषधारी भीमसेन के उस बड़े शब्द को सुनकर बुद्धिमान् धर्मराज को बड़ी प्रसन्नता हुई ३८ हे राजन्! इसके पीछे प्रसन्नचित्त युधिष्ठिर ने भाई के सिंहनादके शब्द को बाजोंके बड़े शब्दों के साथलिया ३९ भीमसेनके इस संज्ञा करनेपर बड़ी प्रसन्नतासे युक्त सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर युद्धमें द्रोणाचार्यकेसम्मुखगये ४० हे महाराज! दुर्योधनने आपके इकतीस पुत्रोंको गिराये और मारे हुए देखकर विदुरजी के उस वचन को स्मरण किया ४१ विदुरजी का वह कल्याणकारी वचन वर्तमान हुआ ऐसा जान आपके पुत्र ने इस बात को शोच कर उत्तर नहीं पाया ४२ आपके निर्बुद्धि अज्ञानी और अचेतपुत्र ने कर्ण के साथ होकर द्यूत के समय द्रौपदी को बुलाकर सभा में जो कहा ४३ और कर्ण ने पाण्डवों के और आप के समक्ष में सभा के मध्य में द्रौपदी से जो कठोर वचन कहे ४४ अर्थात् हे राजेन्द्र! आप के और सब कौरवों के सुनते हुए यह वचन कहे कि हे द्रौपदि! पाण्डव नाश हुए और सनातन नरक को गये ४५ तुम दूसरे किसी पति को वरो उसीका यह फल अब प्राप्तहुआ है और जो नपुंसकआदि कठोर वचन क्रोधयुक्त करने की इच्छा से आपके पुत्रों ने महात्मा पाण्डवों को सुनाये ४६ पाण्डव भीमसेन तेरह वर्ष से नियत हुए उस क्रोध की अग्नि को उगलता है और उस अग्नि में आप के पुत्रों का हवन करता है ४७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! बहुत विलाप करते हुए विदुरजी ने आप के विषय में शान्ति को नहीं पाया सो तुम पुत्र समेत उसके उदय हुए फल को भोगो ४८ तुम वृद्ध पण्डित और फल की मुख्यता के देखनेवाले ने शुभचिन्तकों के कहने को नहीं माना और न उनकी शिक्षा को किया इसमें दैव बड़ा बलवान् है ४९ हे नरोत्तम! सो तुम शोच मत करो आप काही इसमें महाअन्याय है आपही अपने पुत्रों के नाश के मूल हो यह मेरा कथन है ५० हे राजेन्द्र! विकर्ण और पराक्रमी चित्रसेन मारेगये आप के पुत्रों में अत्यन्त श्रेष्ठ अन्य २ बहुत से महारथी भी मारेगये ५१ हे महाराज! भीमसेन ने नेत्रों के

सम्मुख आयेहुए जिन २ आप के दूसरे पुत्रों को देखा बड़ी शीघ्रता से उनको मारा ५२ निश्चय करके मैंने आपके कारण से भीमसेन और कर्ण के छोड़े हुए हज़ारों बाणों से भस्म होनेवाली सेना को देखा ॥ ५३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तत्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३७ ॥

एकसौअड़तीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सूत ! इसमें मेराही अधिकतर अन्याय है हे सञ्जय ! मैं मानता हूं कि अब वही मुझ शोच करनेवाले के सम्मुख आया १ जो हुआ सो हुआ यह मेरे चित्त में नियत हुआ अब इस स्थानपर अर्थात् वर्तमानदशा में क्या करना चाहिये हेसञ्जय ! मैं उसको करूंगा २ मेरेही अन्याय से यह वीरों का विनाश हुआ वह मुझ से कहो मैं नियत हूं सञ्जय बोले कि हे महाराज ! पराक्रमी महाबली कर्ण और भीमसेन ने बाणों की वर्षा ऐसी करी जैसे कि वर्षा करनेवाले दो बादल होते हैं ३ । ४ सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधारवाले बाण जिनपर कि भीमसेन का नाम चिह्नित था जीवन को क्षयकर कर्ण को पाकर उसके शरीर में प्रविष्ट हुए ५ उसी प्रकार मोरपक्ष से जटित कर्ण के छोड़ेहुए हज़ारों बाणों ने वीर भीमसेन को ढक दिया ६ चारों ओर से गिरते उन दोनों के बाणों ने उस युद्ध में सेना के उन लोगों को व्याकुल किया जो कि समुद्र के समान थे ७ हे शत्रुविजयिन् ! उस भीमसेन के धनुष से निकले और सर्प के समान भयकारी बाणों से आपकी सेना सब सेना के बीच में मारीगई ८ हे राजन् ! मनुष्यों समेत मरकर गिरेहुए हाथी और घोड़ों से आच्छादित पृथ्वी ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि वायु से गिरेहुए वृक्षों से होती है ९ युद्ध में भीमसेन के धनुष के द्वारा गिरेहुए बाणों से घायल होकर वह आप के शूरवीर भागे और यह बोले कि क्या आपत्ति है उसके पीछे सिन्धु सौवीर और वह कौरवों की सेना कर्ण और भीमसेन के बड़े वेगवान् बाणों से हटाईहुई पृथक् २ होगई १० । ११ वह शूर जिनके बहुत मनुष्य मारेगये और रथ हाथी और घोड़ों का नाशहुआ वह भीमसेन और कर्ण को छोड़ कर सब दिशाओं को भागे १२ निश्चयकरके देवता अर्जुन के अभीष्ट के निमित्त हम को मोहित करते हैं जो हमारी सेना कर्ण और भीमसेन के छोड़ेहुए बाणों से मारीजाती है १३ आप के शूरवीर भय से दुःखी और इस प्रकार

बोलते बाण के पतनस्थानों को छोड़कर देखने के अभिलाषी होकर युद्ध में नियतहुए १४ इसके पीछे युद्धभूमि में वह नदी उत्पन्न हुई जोकि भयकारी सूरत शूरवीरों की प्रसन्नता करनेवाली भयभीतों के भय की बढ़ानेवाली १५ हाथी घोड़े और मनुष्यों के रुधिरों से उत्पन्न निर्जीव हाथी घोड़े और मनुष्यों से युक्त १६ अनुकर्षों समेत पताका, हाथी, घोड़े और रथ के भूषण टूटे रथ, चक्र, अक्ष, कूबर १७ और सुवर्ण से जटित धनुष सुनहरी पुङ्खवाले बाण हजारों नाराच १८ और कर्ण व भीमसेन के छोड़ेहुए कांचली से रहित सर्पाकार प्रास तोमरों के समूह फरसों समेत खड्ग १९ सुवर्ण जटित गदा मूसल पट्टिश और नानारूपों के वज्र शक्ति परिघ २० और जड़ाऊ शतघ्नियों से शोभायमान थी हे भरतवंशिन्! इसी प्रकार सुनहरी बाजूबन्द हार कुण्डल मुकुट २१ और टूटे वलय, अपविद्ध, अंगुलवेष्टक, चूड़ामणि, सुवर्ण सूत्र की वेष्टनी २२ कवच, हस्तत्राण, हार, निष्क, पोशाक, छत्र टूटे चँवर, व्यजन २३ घायल हाथी, घोड़े, मनुष्य, रुधिर भरे बाण और जहां तहां इन नाना प्रकार की टूटीहुई वस्तुओं से २४ और टूटे गिरेहुए सामानों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि ग्रहों से आकाश शोभित होता है ध्यान से बाहर अपूर्व बुद्धि से परे उन दोनों के कर्मों को देखकर २५ सिद्ध चारणों को भी आश्चर्य हुआ जैसे कि सूखे वन में वायु के साथ रखनेवाले अग्नि की गति होती है हे राजन्! उसी प्रकार युद्ध में २६ भीमसेन को साथ में रखनेवाले कर्ण से युक्त वह मेघजालों के समान सेना जिसके ध्वजा, रथ, घोड़े, हाथी और मनुष्य मारेगये थे ऐसी भयकारी रूपवाली हुई जैसे कि भिड़े हुए दो हाथियों से कमल का वन होता है २७।२८ युद्ध में कर्ण और भीमसेन लड़ते २ बड़े नकसेलहुए॥ २९॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टत्रिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १३८॥

एकसौउन्तालीस का अध्याय॥

हे महाराज! इसके पीछे कर्ण ने तीन बाणों से भीमसेन को घायल करके बहुत उत्तम बाणों की वर्षा को छोड़ा घायलहुए पर्वत के समान कर्ण के हाथ से घायल महाबाहु पाण्डव भीमसेन पीड़ावान् नहीं हुआ १।२ हे श्रेष्ठ! उसने कर्ण को विषमिले तीक्ष्ण तेल से सफा किये हुए कर्णी नाम बाणों से कानपर अत्यन्त घायलकरके ३ कर्ण के सुवर्णजटित शोभायमान बड़े

कुण्डल को पृथ्वी पर ऐसे गिराया जैसे कि आकाश से तारा गिरता है ४ इसके पीछे हँसते और क्रोधयुक्त भीमसेन ने कर्ण को दूसरे भल्ल के द्वारा हृदयपर अत्यन्त घायल किया हे भरतवंशिन्! फिर शीघ्रता करनेवाले महाबाहु भीमसेन ने युद्ध में कांचली से रहित विषैले सर्प के समान दश नाराचों को उसके ऊपर चलाया ५।६ उस भीमसेन से चलाये हुए वह बाण कर्ण के ललाट को छेदकर ऐसे घुसगये जैसे कि सर्प बामी में घुसता है ७ उसके पीछे कर्ण ललाटपर नियत हुए बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व समय में कमल की माला को धारण करता हुआ देवता शोभित होता है ८ वेगवान् पाण्डव के हाथ से अत्यन्त घायल उस कर्ण ने रथ के कूबर का बड़ा सहारा लेकर दोनों नेत्रों को बन्द करलिया ९ शत्रु के तपानेवाले उस कर्ण ने एक मुहूर्त मेंही फिर सचेतता को पाया और रुधिर से लिप्त शरीर कर्ण ने महाक्रोध को धारण किया १० इसके पीछे दृढ़ धनुषधारी से पीड्यमान क्रोधयुक्त बड़े वेगवान् कर्ण ने युद्ध में भीमसेन के रथपर वेगकिया ११ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! क्षमा से रहित पराक्रमी कर्ण ने गृध्रपक्षवाले सौ बाणों को उसके ऊपर फेंका १२ इसके अनन्तर उसके पराक्रम को ध्यान न करते पाण्डव भीमसेन ने युद्ध में उसको तिरस्कारकरके बाणों की भयकारी वर्षा करी १३ हे शत्रुओं के तपानेवाले, महाराज, धृतराष्ट्र! क्रोधभरे कर्ण ने क्रोध से ज्वलित भीमसेन को नव बाणों से छातीपर घायल किया १४ डाढ़ रखनेवाले शार्दूल के समान वह दोनों नरोत्तम युद्ध में दो बादलों के समान परस्पर बाणों की वर्षा करनेलगे १५ तल के शब्दों से परस्पर दोनों ने भयभीतकर नाना प्रकार के बाणजालों से भी भयभीत किया १६ और युद्ध में क्रोधयुक्त परस्पर युद्धकर्म करने के अभिलाषी हुए हे भरतवंशिन्! इसके पीछे शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला भीमसेन कर्ण के धनुष को १७ क्षुरप्र से काटकर गर्जा महारथी कर्ण ने टूटे धनुष को डालकर १८ भार के दूर करनेवाले बड़े वेगवान् दूसरे धनुष को लिया भीमसेन ने इसके उस धनुष को भी आधेही निमेष में काटा १९ इसी प्रकार पराक्रमी भीमसेन ने कर्ण के तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे, सातवें, आठवें, नवें, दशवें २० ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें, चौदहवें, पन्द्रहवें, सोलहवें, सत्रहवें, अठारहवें आदि अनेक धनुषों को काटा २१।२२ इतने धनुषों के कटनेपर भी आधेही निमेष में फिर

धनुष हाथ में लिये कर्ण उपस्थित हुआ कौरवलोग सौवीर और सिन्धु के वीरों के बड़े नाश को २३ और पड़े हुए कवच ध्वजा और शस्त्रों से व्याप्त पृथ्वी को देखकर अथवा हाथी घोड़े और रथ सवारोंके शरीरोंको अनेक प्रकारसे निर्जीव देखकर २४ क्रोध के मारे कर्ण का शरीर अग्निरूप हुआ उस कर्ण ने बड़े धनुष को चलायमान करके घोर आंखों से घोररूप भीमसेन को देखा इसके पीछे क्रोधयुक्त कर्ण बाणों को छोड़ता ऐसे शोभायमान हुआ २५। २६ जैसे कि शरदऋतु में मध्याह्न का सूर्य होताहै हे राजन्! सैकड़ों बाणोंसे चिताहुआ कर्ण का शरीर ऐसा भयानक रूप हुआ जैसे कि किरणसमूहों का धारण करने वाला सूर्य का शरीर होता है बाणों को हाथों से लेते और चढ़ाते २७। २८ खैंचते और छोड़ते कर्ण का अन्तर युद्ध में दिखाई नहीं दिया दाहिने और बायें बाणों को फेंकते कर्ण का धनुष अग्निचक्र के समान भयकारी मण्डल रूप हुआ हे महाराज! कर्ण के धनुष से निकलेहुए सुनहरी पुङ्खवाले बाणों ने २९। ३० सब दिशाओं समेत सूर्य की किरणों को ढकदिया उसके पीछे सुनहरी पुङ्ख और टेढ़े पर्ववाले धनुष से निकलेहुए बाणों के बहुत समूह आ-काश में दिखाई पड़े कर्ण के धनुष से शायकनाम बाण प्रकटहुए ३१। ३२ और आकाश में पंक्तिवाले क्रौञ्च पक्षियों के समान शोभायमान हुए कर्ण ने गृध्र के पक्षों से जटित स्वच्छ सुवर्ण से शोभित ३३ बड़े वेगवान् प्रकाशित नोकवाले बाणों को छोड़ा धनुष के वेग से फेंके और सुवर्ण से अलंकृत वह बाण ३४ वारंवार भीमसेन के रथपर पड़े सुवर्ण से जटित और कर्ण से चलाय-मान वह हजारों बाण आकाश में ऐसे शोभायमान हुए ३५ जैसे कि शलभ नाम पक्षियों के समूह कर्ण के धनुष से निकलेहुए बाण ऐसे शोभित हुए ३६ जैसे कि अत्यन्त लम्बा एक बाण आकाश में नियत होता है और जिस प्रकार बादल जलों की धाराओं से पर्वत को ढक देताहै ३७ उसी प्रकार क्रोधयुक्त कर्ण ने बाणों की वर्षाओं से भीमसेनको ढकदिया हे भरतवंशिन्! वहांपर भीमसेन के बल पराक्रम और निश्चय को आपके पुत्रों ने और सब सेना के लोगों ने देखा कि उठे हुए समुद्र के समान बड़ी भारी उस बाणवृष्टि को कुछ ध्यान न करके क्रोधयुक्त भीमसेन कर्ण के सम्मुख गया ३८। ३९ हे राजन्! भीमसेन का सुवर्णपृष्ठी बड़ा धनुष कान से लेकर मण्डलरूप दूसरे इन्द्रधनुष के समान

था ४० उस धनुष से आकाश को पूर्ण करते हुए बाण प्रकटहुए ४१ सुनहरी पुङ्ख टेढ़े पर्ववाले बाणों से आकाश में भीमसेन की रचीहुई स्वर्णमयी माला शोभायमान हुई ४२।४३ युद्ध में उन दोनों कर्ण और भीमसेन के बाणजालों से जोकि अग्नि के पतङ्गों के समान स्पर्शवाले थे ४४ और जिनकी परस्पर गतियाँ भी मिलीहुई थीं बाणजालों से आकाश को व्याप्त होने पर कुछ भी नहीं जानागया वह कर्ण पृथक् २ प्रकार के बाणों से भीमसेन को ढकता हुआ ४५। ४६ उस महात्मा के पराक्रम को तिरस्कार करके पास गया हे श्रेष्ठ! वहां उन दोनों के छोड़ेहुए बाणों के जाल ४७ परस्पर में मिले हुए वायुरूप दिखाई पड़े और उन बाणों के परस्पर भिड़ने से ४८ आकाश में अग्नि उत्पन्न हुई हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! उसी प्रकार क्रोधयुत कर्ण ने कारीगरके साफ किये हुए तीक्ष्ण ४९ सुवर्णजटित बाणों को उसके मारने के निमित्त चलाया भीमसेन ने उन प्रत्येक बाणों को विशिख नाम बाणों से खण्ड २ कर दिया ५० कर्ण के मारने के अभिलाषी भीमसेन बोले कि हे कर्ण! खड़ाहो ऐसा कहकर उस भीमसेन ने फिर भयकारी बाणों की वर्षा की ५१ जोकि असहिष्णु बली क्रोध से युक्त होकर भस्म करनेवाली अग्नि के समान था इसके पीछे उन दोनों गदा के प्रहारों से चटचटा नाम शब्दहुए ५२ और बहुत बड़े बल के शब्द व भयकारी सिंहनाद और रथ की नेमियों की ध्वनियों से बड़ा भयकारी शब्द उत्पन्नहुआ ५३ हे राजन्! परस्पर मारने के अभिलाषी कर्ण और भीमसेन के पराक्रम के देखने के इच्छावान् शूरवीर लोगोंने युद्ध करना बन्द करदिया ५४ देवता ऋषि सिद्ध और गन्धर्वों ने बड़ी प्रशंसाकरी कि धन्य २ है उसी प्रकार विद्याधरों के समूहों ने पुष्पों की वर्षाकरी ५५ इसके पीछे क्रोधयुक्त दृढ़ पराक्रमी महाबाहु भीमसेन ने अस्त्रों से अस्त्रों को रोककर बाणों से कर्ण को घायल किया ५६ महाबली कर्ण ने भी युद्ध में भीमसेन के बाणों को हटाकर सर्प के समान नौ नाराचों को चलाया ५७ फिर भीमसेन ने उतनेही बाणों से कर्ण के नाराचों को आकाश में काटा और तिष्ठ २ वचन को कहा ५८ फिर महाबाहु भीमसेन ने क्रोधरूप होकर काल और यमराज के समान दूसरे दण्ड के समान बाण को कर्ण के ऊपर छोड़ा ५९ हे राजन्! तब हँसतेहुए प्रतापवान् कर्ण ने पाण्डव के उस आतेहुए बाण को तीनबाणों से काटा ६० फिर भीमसेन ने

भयकारी बाणों की वर्षाकरी तब निर्भय के समान कर्ण ने उसके उन सब अस्त्रों को सहकर ६१ बड़े क्रोध से अस्त्रों की माया से उस लड़नेवाले भीमसेन के दोनों तरकस धनुष व प्रत्यञ्चा को गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से काटकर ६२ घोड़ों की रस्सी और ईशादण्डआदि को युद्ध में काटा फिर उसके घोड़ों को मारकर सारथी को पांचबाणों से घायल किया ६३ वह सारथी शीघ्रही दूर जाकर युधामन्यु के रथपर गया फिर क्रोधयुक्त कालाग्निके समान तेजस्वी हँसतेहुए कर्ण ने भीमसेन की ६४ ध्वजा को काटकर पताका को भी गिराया उस धनुष से रहित महाबाहु भीमसेन ने रथ शक्ति को धारण किया ६५ उस शक्ति को घुमाकर क्रोधयुक्त भीमसेन ने कर्ण के रथपर फेंका उपाय करनेवाले कर्ण ने उस सुवर्णजटित ६६ बड़ी उल्का के समान आतीहुई शक्ति को दशबाणों से काटा कर्ण के तीक्ष्ण बाणों से दश स्थानपर कटीहुई वह शक्ति गिरपड़ी ६७ उस भीमसेन ने मित्र के अर्थ अपूर्व युद्ध करनेवाले कर्ण से बाण प्रहार करतेही करते सुवर्णजटित ढाल को हाथ में लिया और छिद्रान्वेषण करनेवाले ने मृत्यु व विजय के खड्ग को भी हाथ में लिया तब कर्ण ने बड़े वेग से उसकी उस स्वर्णमयी प्रकाशित ढालको बहुत से भयकारी बाणों से तोड़ा हे महाराज ! कवच रथ से रहित क्रोध से मूर्च्छामान् ६८।७० शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने खड्ग को घुमाकर कर्ण के रथपर छोड़ा वह बड़ा खड्ग कर्ण के सन्नद्ध धनुषको काटकर ७१ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि आकाश से क्रोधयुक्त सर्प गिरता है इसके पीछे क्रोधयुक्त अतिरथी कर्ण ने हँसकर युद्ध में शत्रुओं के मारनेवाले दृढ़ प्रत्यञ्चावाले दूसरे धनुष को लेकर भीमसेन के मारने की इच्छा से बाणों को छोड़ा ७२।७३ हे महाराज ! सुनहरी पुङ्ख और सुन्दर वेतवाले हजारों बाणों को मारा कर्ण के धनुष से गिरेहुए बाणों से घायल पराक्रमी ७४ कर्ण के मन को पीड़ित करताहुआ भीमसेन आकाश को उछला उस युद्ध में विजयाभिलाषी भीमसेन के कर्म को देखकर ७५ उस कर्ण ने शरीर को सिकोड़कर भीमसेन को ठगा उस इन्द्रियों से पीड़ित रथ के बैठने के स्थान में छिपे और सिकुड़ेहुए कर्ण को बैठाहुआ देखकर ७६ भीमसेन उसकी ध्वजापर चढ़कर फिर पृथ्वीपर नियतहुआ सब कौरवों ने और चारणलोगों ने उसके उस कर्म की बड़ी प्रशंसा की ७७ उसने रथ से कर्ण को ऐसे हरनाचाहा जैसे कि गरुड़ सर्प को हरण

करता है वह टूटा धनुष और रथ से विहीन भीमसेन अपने धर्म को पालन करताहुआ अपने रथ को पीछे की ओर को करके युद्ध के निमित्त नियतहुआ ७८ इसके पीछे कर्ण उसके उस विचार को निष्फल करके क्रोध से युद्धभूमि में युद्ध के निमित्त आगे वर्तमान भीमसेन के सम्मुखहुआ हे महाराज! वह दोनों ईर्षा करनेवाले महाबली परस्पर में भिड़े ७९। ८० वर्षाऋतु के बादलों के समान दोनों नरोत्तम गर्जनेवाले हुए उन क्रोधयुक्त और असह्य दोनों के प्रहार युद्ध में देवता और दानवों के प्रहारों के समानहुए फिर टूटे शस्त्रवाला भीमसेन कर्ण के साथ सम्मुखता में प्रवृत्त होकर अर्जुन के हाथ से मरकर पर्वताकार पड़े हुए हाथियों को देखकर रथ के मार्ग के विघातन के अर्थ विनाही शस्त्र के प्रवेश करगया ८१। ८२ हाथियों के समूहों को पाकर और रथों के दुर्गम मार्गों में प्रवेशकरके जीवनकी इच्छा से भीमसेन ने कर्ण को नहीं पकड़ा शत्रु के पुर को विजय करनेवाला पाण्डव भीमसेन अर्जुन के बाणों से घायल रक्षास्थान को चाहते हुए हाथी को उठाकर ऐसे नियत किया ८४। ८५ जैसे कि हनुमान्‌जी महौषधियों से युक्त द्रोणागिरि पर्वत को उठाकर शोभितहुए थे फिर कर्ण ने उसके उस हाथी को खण्ड २ किया ८६ तब पाण्डुनन्दन ने हाथी और घोड़ों को पकड़ २ कर कर्ण के ऊपर फेंका और क्रोध से युक्त होकर रथ के चक्र घोड़े आदि जिस २ सामान को पृथ्वीपर देखा ८७ उस उसको कर्ण के ऊपर फेंका कर्ण ने उसके उन सब फेंके हुए सामानों को अपने बाणों से काटा ८८ फिर अर्जुन को स्मरण करतेहुए भीमसेन ने बड़ी भयकारी वज्ररूप मुष्टिका को उठाकर कर्ण को मारना चाहा ८९ परन्तु अर्जुन की प्रतिज्ञा की रक्षा करतेहुए समर्थ पाण्डुनन्दन भीमसेन ने भी कर्ण को नहीं मारा ९० कर्ण ने उस प्रकार व्याकुल हुए भीमसेन को तीक्ष्ण बाणों के वारंवार प्रहारों से मूर्च्छायुक्त किया ९१ कुन्ती के वचन को याद करतेहुए कर्ण ने इस अस्त्र को नहीं मारा फिर कर्ण ने समीप जाकर उसको धनुष की नोक से घायलकिया ९२ धनुष के प्रहार से क्रोधयुक्त उस भीमसेनने उसके धनुषको तोड़कर कर्णको मस्तकपर घायलकिया ९३ भीमसेन के हाथ से घायल और क्रोध से रक्तनेत्र हँसता हुआ कर्ण इस वचन को बोला ९४ हे वारंवार बहुत भोजन करनेवाले, निर्बुद्धे, दीर्घ उदरवाले, अस्त्र के न जाननेवाले, युद्ध में नपुंसक! बालयुद्ध मतकर ९५ हे दुर्बुद्धे, पाण्डव,

भीमसेन! जिस स्थानपर अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्य और पान करने की अनेक वस्तु हैं वहां केही तुम योग्य हो युद्ध के योग्य तुम किसी प्रकार से नहीं हो ९६ हे भीमसेन! तुम वन के मध्य में व्रत और नियमों में मूल, फल, फूल के आहार के योग्य हो तुम युद्ध में कुशल नहीं हो ९७ कहां युद्ध और कहां मुनिभाव हे भीमसेन! तुम वन को जाओ हे तात! तुम वनवास मेंही प्रीति रखनेवाले होकर अब युद्ध के योग्य नहीं हो ९८ हे भीमसेन! तुम शीघ्रता करनेवाले होकर घर में भोजन के अर्थ रसोइयां नौकर ९९ और दासों को क्रोध से अत्यन्त शासना करने के योग्य हो हे दुर्बुद्धे, भीमसेन! तुम मुनि होकर फलों को प्राप्तकरो हे कुन्ती के पुत्र! वन को जाओ तुम युद्ध में सावधान नहीं हो १०० हे भीमसेन! तुम फल मूलादि के खाने और अतिथि के पूजन में समर्थ हो मैं तुम को शस्त्रविद्या में योग्य नहीं समझता हूं १०१ हे राजन्! बाल्यावस्था के जो अप्रिय वृत्तान्त थे उन सब को भी रूखे २ वचनों से खूब सुनाया १०२ फिर वहां सिकुड़कर बैठेहुए उसको धनुष से स्पर्श किया तब हँसतेहुए कर्ण ने भीमसेन से यह वचन कहा १०३ हे श्रेष्ठ! दूसरे स्थान में लड़ना चाहिये मुझ सरीखे शूरवीर से न लड़नाचाहिये मुझसे लड़नेवाले शूरवीरों की यह दशा और अन्य अनेकप्रकार की दशा होजाती हैं १०४ अथवा तुम भी वहीं जाओ जहां वह दोनों कृष्ण हैं वह तेरी युद्ध में रक्षा करेंगे हे कुन्ती के पुत्र! अथवा घर को जाओ हे बालक! तुझ को युद्धकरने से क्यां प्रयोजन है १०५ भीमसेन कर्ण के अतिकठोर वचन को सुनकर सब को सुना कर हँसताहुआ कर्ण से यह वचन बोला १०६ हे दुष्ट! तुझ को बारंबार मैंने विजयकिया तू निरर्थक अपनी क्यों बड़ाई करता है पूर्व के वृद्धों ने महेन्द्र की विजय और पराजय दोनों को देखा है १०७ हे दुष्टकुल में उत्पन्न होनेवाले! जो तू बड़ाई करता है तो मुझसे मल्लयुद्धकर जैसे कि महाबली और महाभोगी कीचक मारागया १०८ उसी प्रकार सब राजाओं के देखतेहुए मैं तुझको मारूंगा बुद्धिमानों में श्रेष्ठ कर्ण भीमसेन के विचार को जानकर १०९ सब धनुषधारियों के देखतेहुए उस युद्ध से अलग होगया हे राजन्! इस प्रकार कर्ण ने उसको विरथ करके महात्मा अर्जुन और श्रीकृष्णजी के समक्ष में ऐसे कठोर वचन कहे हे राजन्! इसके पीछे केशवजी की प्रेरणा से वानरध्वज अर्जुन ने

साफ बाणों को कर्ण के निमित्त भेजा ११० फिर अर्जुन की भुजा से छुटे सुवर्ण से जटित गाण्डीव धनुष से प्रकटहुए बाण १११ कर्ण के शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि हंस व क्रौञ्चपर प्रवेश करते हैं ११२ उस अर्जुन ने सर्पों के समान घुसे और गाण्डीव धनुष के भेजेहुए बाणों के द्वारा ११३ कर्ण को भीमसेन से दूर हटादिया भीमसेन के हाथ से टूटा धनुष और अर्जुन के बाण से घायल वह कर्ण बड़े रथ के द्वारा शीघ्रही भीमसेन के पास से हटगया नरोत्तम भीमसेन भी सात्यकी के रथपर सवार होकर ११४ । ११५ युद्ध में अपने भाई पाण्डव अर्जुन के पीछे गया उसके पीछे शीघ्रता करनेवाले क्रोध से रक्तनेत्र नाशकारी काल के समान अर्जुन ने कर्ण को लक्ष्य बनाकर नाराच नाम बाण को भेजा गाण्डीव धनुष से चलायमान और आकाश में सर्प को चाहनेवाले गरुड़जी के समान ११६ । ११७ वह नाराच कर्ण के सम्मुख गिरा अश्वत्थामा ने उस बाण को अपने बाण से अन्तरिक्ष मेंही काटा ११८ अर्जुन के भय से कर्ण की रक्षा के अर्थ महारथी ने ऐसा किया इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुन ने अश्वत्थामा को चौंसठबाणों से घायलकिया ११९ और फिर शिलीमुख नाम बाणों से भी घायलकिया और तिष्ठ २ कहकर गमनं माकुरु अर्थात् मत जाओ यह भी कहा वह अश्वत्थामा अर्जुन के बाणों से पीड्यमान शीघ्रही मतवाले हाथियों से पूर्ण और रथों से संकुलित १२० सेना में चलागया उसके पीछे पराक्रमी अर्जुन ने गाण्डीव धनुष के शब्द से युद्ध में शब्द करनेवाले सुवर्णपृष्ठी धनुषों के शब्दों को १२१ निरादर किया और अर्जुन पीछे की ओर से उस प्रकार से जातेहुए अश्वत्थामा के सम्मुखगये १२२ जोकि बहुत लम्बा मार्ग नहीं था सेना को भयभीत करतेहुए अर्जुन ने नाराचों से मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरों को चीरकर १२३ कङ्क और मोरपक्ष से जटित बाणों से सेना को छिन्नभिन्न किया फिर उपाय करनेवाले इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने उस घोड़े हाथी और मनुष्योंवाली सेना को मारा ॥ १२४ । १२५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिभीमकर्णयुद्धेएकोनचत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३९ ॥

एकसौचालीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! दिन २ मेरा प्रकाशमान यश क्षीण होताजाता है मेरे बहुत से शूरवीर मारेगये इसमें मैं समय की विपरीतता मानता हूं १

अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन मेरी सेना में पहुँचा जो अश्वत्थामा कर्ण से रक्षित होकर देवताओं से भी अजेय है २ जबसे वह बड़ा पराक्रमी उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण भीमसेन और शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी समेत सेना में पहुँचा है ३ तब से मुझ को शोक ऐसे भस्म कररहा है जैसे मकान को अग्नि भस्म करता है और जयद्रथ के साथ राजाओं को ग्रसित देखता हूं ४ सिन्धु का राजा उस अर्जुन का बड़ा असह्य अपराध करके नेत्रों के सम्मुख वर्तमान कैसे जीवन को पासक्ता है ५ हे सञ्जय ! अनुमान से देखता हूं कि जयद्रथ नहीं है वह युद्ध जैसे जारीहुआ उसको मूलसमेत वर्णनकर ६ जो क्रोधयुक्त अकेलाही बड़ी सेना को छिन्नभिन्न करके और वारंवार मँझाकर ऐसे प्रवेशितहुआ जैसे कि कमल के वन में हाथी प्रवेश करता है ७ उस वृष्णियों में वीर सात्यकी का वह युद्ध मुझसे ठीक २ कहो जो उसने अर्जुन के निमित्त किया है हे सञ्जय ! तुम सावधान हो ८ सञ्जय बोले हे राजन् ! इस प्रकार कर्ण से पीड्यमान पुरुषों में बड़े वीर शीघ्रता से जातेहुए उस भीमसेन को देखकर शिनियों में बड़ा वीर सात्यकी नर वीरों के मध्य में रथ की सवारी से चला ९ वर्षाऋतु के बादल के समान गर्जता और बादलों के हटजानेपर सूर्य के समान प्रकाशित दृढ़ धनुष से शत्रुओं को मारता और आपके पुत्र की सेना को कँपाताहुआ चला १० हे भरतवंशिन् ! आपके सब रथी उस मधुदेशियों में श्रेष्ठ युद्धभूमि में गर्जते और चाँदी के वर्ण घोड़ों की सवारी से जाते सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए ११ तब क्रोध से पूर्ण सम्मुख लड़नेवाले धनुषधारी सुवर्ण कवचधारी राजाओं में श्रेष्ठ अलम्बुष ने समीप जाकर सात्यकी को रोका १२ हे भरतवंशिन् ! उन दोनों का युद्ध ऐसा हुआ जैसा कि कोई नहीं हुआ था आपके शूरवीर आदि सब लोगों ने उन युद्ध में शोभापानेवाले दोनों वीरों को देखा १३ राजाओं में श्रेष्ठ अलम्बुष ने इसको निरादर करके दशबाणों से घायलकिया सात्यकी ने भी बाणों से उन पृषत्क नाम बाणों को बीचही में काटा १४ फिर उसने अग्नि के समान कानतक खैंचे हुए तीक्ष्णधार सुन्दर पुङ्खवाले तीन बाणों से कवच को काटकर छेदा वह बाण सात्यकी के शरीर में प्रवेश कर गये १५ अग्नि और वायु के समान प्रभाववाले तीक्ष्णधार अग्निरूप उन बाणों से उसके शरीर को अनादरपूर्वक घायल करके चार बाणों से उन रजतवर्ण

चारों घोड़ों को घायल किया १६ चक्रधारी श्रीकृष्णजी के समान प्रभाववाले वेगवान् उस घायलहुए सात्यकी ने बड़े वेगवान् चार बाणों से अलम्बुष के चारों घोड़ों को मारा १७ फिर कालाग्नि के समान भल्ल से उसके सारथी के शिर को काटकर कुण्डलधारी पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान और शोभायमान उसके मुख को भी शरीर से काटा १८ हे राजन् ! यादवों में श्रेष्ठ शत्रुहन्ता अकेला सात्यकी युद्ध में उस सूर्यवंशीय को मार आपकी सेना को हटाकर फिर अर्जुन के पीछे चला १६ अर्जुन के पीछे चलनेवाले शत्रुओं के मध्य में घूमनेवाले ने जिस प्रकार वायु बादल के समूहों को नाशकरे उसी प्रकार बाणों से कौरवी सेना को मारते वृष्णी सात्यकी को देखकर २० श्रेष्ठ लोगों से शिक्षा पाया हुआ गौ के दूध कुन्द फूल और बरफ़ के समान श्वेत वर्णवाले सुनहरी जालों से अलंकृत सिन्धुदेशीय उत्तम घोड़े जहां २ वह चाहता था वहां २ उसको लेजाते थे २१ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे वह आप के पुत्रादि सब शूरवीर शीघ्रही आप के पुत्र उस अजमीढ़वंशीय दुश्शासन को जोकि शूरवीरों में मुख्य था आगे करके एक साथही सम्मुख गये २२ सेना समेत उन वीरों ने सात्यकी को युद्ध में सबओर से घेरकर घायल किया हे वीर ! उस यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी ने भी उन सबको बाणों के जालों से रोका २३ हे अजमीढ़वंशिन् ! शत्रुहन्ता सात्यकी ने धनुष को उठाकर शीघ्रही अग्नि के समान बाणों से उनको रोककर दुश्शासन के घोड़ों को मारा २४ इसके पीछे अर्जुन ने पुरुषों में बड़े वीर श्रीकृष्णजी को देखकर युद्ध में बड़ी प्रसन्नता को पाया ॥ २५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १४० ॥

एकसौएकतालीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि शीघ्रता योग्य कर्मों में शीघ्रता करनेवाले दुश्शासन के रथ के पास वर्तमान १ सेनारूपी समुद्र में प्रवेशित महाबाहु सात्यकी को उन त्रिगर्तदेशियों के धनुषधारियों ने जिनकी ध्वजा सुवर्ण जटित थीं चारोंओर से घेर लिया २ उसके पीछे उन क्रोधरूप बड़े धनुषधारियों ने रथों के समूहों से उसको सब ओर से घेरकर बाणों से आच्छादित करदिया ३ फिर सत्यपराक्रमी अकेले सात्यकी ने बड़े युद्ध में तत्त्व के शब्दों से व्याकुल खड्ग, गदा, शक्तियों से

पूर्ण बिना नौकावाली नदी के समान भरतवंशियों की सेना को पाकर उन शोभा से युक्त पचास राजकुमार शत्रुओं को विजय किया ४ । ५ उस युद्ध में हमने सात्यकी के अपूर्व कर्म को देखा कि उसको पश्चिम दिशा में देखकर शीघ्रता सेही पूर्व में देखा ६ वह शूर उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम आदि विदिशाओं में नाचता हुआ ऐसा घूमा जैसे कि रथों का एक सैकड़ा घूमता है उस के उस कर्म को देखकर सिंह के समान चाल चलनेवाले पीड़ावान् त्रिगर्तदेशीय अपने लोगों में लौटगये ७ । ८ बाणों के समूहों से घायल करते शूरसेन देशियों के दूसरे शूरों ने युद्ध में उसको ऐसे रोका जैसे कि अंकुश से मतवाले हाथी को ९ उत्तम बुद्धि सात्यकी ने एक मुहूर्त उनके साथ युद्ध किया फिर बहुबुद्धि से बाहर बल पराक्रम रखनेवाला सात्यकी कलिङ्गदेशियों से युद्ध करनेलगा १० कलिङ्गदेशियों की सेना को उल्लङ्घन करके महाबाहु सात्यकी पाण्डव अर्जुन के पास पहुँचा ११ और उनको पाकर इतना प्रसन्न हुआ जैसे कि जल का थका हुआ स्थल को पाकर प्रसन्न होता है सात्यकी उस पुरुषोत्तम को देखकर विश्वासित हुआ १२ केशवजी ने उस आते हुए सात्यकी को देखकर अर्जुन से कहा हे अर्जुन ! तेरे पीछे चलनेवाला यह सात्यकी आता है यह सत्यपराक्रमी तेरा शिष्य और मित्र है उस पुरुषोत्तम ने सब शूरवीरों को निरादर करके विजय किया १३ । १४ हे अर्जुन ! प्राणों से भी तेरा प्यारा और परममित्र यह सात्यकी कौरवी शूरवीरों के घोर उपद्रवों को करके आता है १५ हे अर्जुन ! यह सात्यकी विशिख नाम बाणों से द्रोणाचार्य और भोजवंशीय कृतवर्मा इन दोनों को विजय करके आता है १६ हे तात ! यह धर्मराज के प्रिय का खोजनेवाला अस्त्रज्ञ शूर सात्यकी उत्तम २ शूरों को मारकर तेरे पास आता है १७ हे अर्जुन ! यह बड़ा पराक्रमी सात्यकी युद्ध में कठिनतर कर्मों को करके तेरे दर्शन की अभिलाषा को करता पास आता है १८ हे अर्जुन ! यह सात्यकी युद्धभूमि में एक रथ के द्वारा आचार्यादिक अनेक महारथियों से युद्ध करके आता है १९ हे अर्जुन ! धर्मराज का भेजाहुआ यह सात्यकी अपने भुजबल के भरोसे से सेना को चीरकर पास आता है २० हे अर्जुन ! कौरवों में जिसके समान कोई शूरवीर नहीं है वह युद्ध में दुर्मद सात्यकी आता है २१ जैसे कि सिंह गौओं के मध्य में से अलग होता है उसीप्रकार कौरवी सेनाओं

से पृथक् होकर यह सात्यकी बहुत सेनाओं को मारकर पास आता है २२ हे अर्जुन ! यह सात्यकी कमलसमान मुखवाले हज़ारों राजाओं के शिरों से पृथ्वी को आच्छादित करके शीघ्रता से आता है २३ यह सात्यकी युद्ध में सब भाइयों समेत दुर्योधन को विजय करके और जलसिन्धु को मारकरके शीघ्र आता है २४ यह सात्यकी रुधिरसमूह से युक्त रुधिररूपी कीच रखनेवाली नदी को जारी करके और कौरवों को तृण के समान छोड़ करके आता है २५ यह सुन कर अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्जुन केशवजी से यह वचन बोले कि हे महाबाहो ! मुझको स्वीकार नहीं है जो सात्यकी मेरे पास आता है २६ हे केशवजी ! मैं धर्मराज के वृत्तान्त को नहीं जानता हूं सात्यकी से पृथक् होकर वह जीवता है या नहीं २७ हे महाबाहो, श्रीकृष्णजी ! वह राजा युधिष्ठिर इस सात्यकी सेही रक्षा के योग्य था यह उसको छोड़कर किस हेतु से मेरे पीछे चलनेवाला हुआ २८ राजा युधिष्ठिर को इसने द्रोणाचार्य के लिये छोड़ा और राजा सिन्धु नहीं मारागया और यह भूरिश्रवा युद्ध में सात्यकी के सम्मुख आता है २९ यह बड़ाभारी भार जयद्रथ के निमित्त नियत हुआ मुझ से राजा युधिष्ठिर जानने के योग्य और सात्यकी रक्षा करने के योग्य है ३० जयद्रथ मारने के योग्य है और सूर्य अस्ताचल की ओर को जाते हैं अब महाबाहु सात्यकी निर्बल और थकाहुआ है ३१ और उसका घोड़ों समेत सारथी भी थक गया है हे माधव, केशवजी ! भूरिश्रवा थका भी नहीं है और सहायता रखनेवाला है ३२ अब इस युद्ध में भी इसकी कुशल होय सत्यपराक्रमी सात्यकी सेनारूपी समुद्र को तरकर ३३ गाय के खुर के समान जलरूप स्थान को पाकर नाश को न पावे बड़ा तेजस्वी सात्यकीभी कौरवों में श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ महात्मा ३४ भूरिश्रवा के साथ भिड़कर कुशलपूर्वक रहै हे केशवजी ! मैं धर्मराज के इस विपर्यय को मानता हूं ३५ जो आचार्य से भय को त्याग करके सात्यकी को भेजा जैसे कि आकाशगामी शचान मांस को चाहै उसी प्रकार द्रोणाचार्य धर्मराज के पकड़ने को चाहते हैं ३६ वह सदैव चाहते हैं तो राजा युधिष्ठिर की कैसे कुशल रहै ॥३७॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकचत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १४१ ॥

एकसौबयालीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! भूरिश्रवा उस युद्ध में दुर्मद आतेहुए यादव

सात्यकी को देखकर क्रोध से एकाएकी सम्मुखगया १ हे महाराज ! सम्मुख होकर वह कौरव सात्यकी से बोला कि अब तू प्रारब्ध से मेरे नेत्रों के सम्मुख वर्तमान हुआ है २ मैं बहुत काल से चाहेहुए अभिलाषको अब युद्धमें पाऊंगा जो तू युद्ध को न त्यागेगा तो मुझसे जीवता बचकर न जायगा ३ हे यादव ! अब मैं तुझ सदैव शूरता के अभिमान रखनेवाले को युद्ध में मारकर कौरवराज दुर्योधन को प्रसन्न करूंगा वीर अर्जुन और केशवजी दोनों एक साथही अब तुझ को युद्ध में मेरे बाण से मराहुआ पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखेंगे ४ । ५ अब धर्मपुत्र युधिष्ठिर भी मेरे हाथ से तुझ को मराहुआ सुनकर शीघ्रही लज्जायुक्त होगा जिसने कि तुझ को इस सेना में भेजा है अब तुझ को रुधिर में भरे पृथ्वीपर गिरेहुए मृतक होकर सोने पर पाण्डव अर्जुन मेरे पराक्रम को जानेगा ६।७ यह तेरे साथ में युद्ध का करना मैं बहुत काल से ऐसे चाहता हुआ हूं जैसे कि पूर्वसमय में देवासुरों के युद्ध में इन्द्र का भिड़ना राजाबलि से चाहा हुआ था हे यादव ! अब बड़ा भारी युद्ध तुझ से करूंगा उससे तू मेरे बल पराक्रम और वीरता को जानेगा ८ । ९ अब तू युद्ध में मेरे हाथ से माराहुआ यमलोक को ऐसे जायगा जैसे कि रामचन्द्रजी के छोटे भाई लक्ष्मणजी के हाथ से रावण का पुत्र मेघनाद यमलोक को भेजागया था १० । ११ हे माधव ! अब तीक्ष्ण शायकों से तुझ को दण्ड देकर उन स्त्रियों को प्रसन्न करूंगा जिन को कि युद्ध में तैंने विधवा करके मारा है १२ हे माधव ! मेरे नेत्रों के सम्मुख आयाहुआ तू ऐसे नहीं छुटसक्ता जैसे कि सिंह के देश में वर्तमान छोटा मृग नहीं जासक्ता हे राजन् ! फिर सात्यकी ने भी हँसकर उसको उत्तर दिया कि हे कौरव ! युद्ध में मुझको भय नहीं वर्तमान है १३ । १४ केवल तेरी बातों से मैं भय के योग्य नहीं हूं युद्ध में वही मुझको मारसक्ता है जो मुझको अशस्त्र करे १५ जो मुझको युद्ध में मारे वह सदैव सब को विजय करै निरर्थक बहुत सी बातों से क्या लाभ है अपना कर्म करके दिखलाओ १६ शरद ऋतु के बादलों के समान तेरा गर्जना वृथा है हे वीर ! तेरी गर्जना को सुनकर मुझको हँसी आती है १७ हे कौरव ! अब लोक में बहुत काल से चाहाहुआ युद्ध होय हे तात ! तेरे युद्ध को चाहनेवाली मेरी बुद्धि शीघ्रता कररही है १८ हे नीच पुरुष ! अब मैं तुझ को विना मारे नहीं लौटूंगा इस प्रकार वाक्यपारुष्यों से

परस्पर घायल करनेवाले वह दोनों नरोत्तम १९ मारने के अभिलाषी और अत्यन्त क्रोधरूप होकर युद्ध में सम्मुखहुए वह बड़े धनुषधारी पराक्रमी ईर्षा करने वाले युद्ध में ऐसे भिड़े जैसे कि मतवाले दो हाथी हथिनी के लिये वन में भिड़ जाते हैं शत्रुहन्ता भूरिश्रवा और सात्यकी ने बादलों के समान भयकारी बाणों की वर्षाओं को परस्पर वर्षाया फिर भूरिश्रवा ने शीघ्र चलनेवाले बाणों से सात्यकी को ढककर २० । २२ मारनेके अभिलाषी ने तीक्ष्णधारवाले बाणों से घायल किया हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे भी भूरिश्रवा ने दश बाणों से सात्यकी को छेदन कर २३ मारने की इच्छा से दूसरे तीक्ष्ण बाणों को छोड़ा हे राजन् ! सात्यकी ने उसके उन तीक्ष्ण बाणों को अन्तरिक्ष में २४ अस्त्रों की माया से काटा और हे प्रभो ! फिर वह दोनों पृथक् २ होकर बाणों की वर्षा से वर्षा करनेवाले हुए २५ बड़े कुलवान् कौरव और वृष्णियों के यश को उत्पन्न करनेवाले वह दोनों वीर ऐसे युद्ध करनेवाले हुए जैसे कि नखों से शार्दूल और दांतों से दो मतवाले हाथी लड़ते हैं २६ अङ्गों से घायल रुधिर छोड़ने वाले उन दोनों ने रथ शक्ति और विशिख नाम बाणों से परस्पर घायल किया २७ प्राणों के द्यूत खेलनेवाले उन दोनों ने परस्पर रोका इस प्रकार उत्तमकर्मी कौरव और वृष्णियों के यश बढ़ानेवाले वह दोनों २८ परस्पर में ऐसे युद्ध करनेवाले हुए जैसे कि समूहों के अधिपति दो हाथी युद्ध करते हैं थोड़े ही समय में ब्रह्मलोक को उत्तम माननेवाले २९ उत्तम स्थानों में जाने के अभिलाषी वह दोनों परस्पर गर्जे सात्यकी और भूरिश्रवा प्रसन्न मन के समान धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते हुए परस्पर बाणों की वर्षा करनेलगे लोगों ने उन शूरवीरों के अधिपतियों को लड़तेहुए ऐसे देखा ३० । ३१ जैसे कि हथिनी के लिये यूथों के स्वामी दो हाथी लड़ते हैं परस्पर घोड़ों को मार धनुषों को तोड़ ३२ विरथ होकर बड़ेयुद्धमें खड्ग चलानेके लिये सम्मुखहुए उत्तमजटित सुन्दर २ बड़ी २ ढालों को लेकर ३३ खड्गों को मियानसे बाहरकरके दोनों युद्धमें भ्रमण करनेवाले हुए नाना प्रकार के मार्गों को घूमते अपने २ भाग के मण्डलों को करते ३४ उन क्रोधयुक्त शत्रुहन्ताओं ने परस्पर वारंवार प्रहार किये खड्ग कवच निष्क और बाजूबन्द रखनेवाले ३५ दोनों यशस्वियों ने घुमाना ऊंचे घुमाना तिरछे मारना छेदना रुधिरसे लिप्तकरना रुधिर में डुबोना हटाना गिरानाआदि अनेक चमत्कारी

खड्गों के प्रहारों को दिखलाया ३६ और दोनों खड्गों से परस्पर प्रहारकर्ता हुए और अन्तर चाहनेवाले दोनों वीरों ने अपूर्व भ्रमण किये ३७ शिक्षा तीव्रता और उत्तमता को दिखलाते युद्ध करनेवालों में श्रेष्ठ दोनों पुरुषोत्तमों ने युद्ध में परस्पर एक ने दूसरे को खींचा ३८ हे राजन् ! दोनों वीर सब सेना के लोगों के देखते एक मुहूर्त परस्पर युद्ध करके फिर विश्राम करनेवाले हुए ३९ फिर उन पुरुषोत्तमों ने सौ चन्द्रमा रखनेवाली सुवर्णजटित ढालों को खड्गों से काट कर भुजाओं से युद्धकिया ४० बड़ी छाती और लम्बी भुजारखनेवाले भुजा के युद्ध में कुशल वह दोनों लोहे की परिघों के समान भुजों से भुजोंको मिलाकर चिपटगये ४१ हे राजन् ! उन दोनोंकी भुजाओं के आघात से उस बल और शिक्षा से उत्पन्न होनेवाले निग्रह प्रग्रह नाम पेंच सब शूरों के प्रसन्न करने वाले हुए ४२ तब युद्ध में लड़नेवाले उन दोनों नरोत्तमों के शब्द बड़े भयकारी ऐसे प्रकट हुए जैसे कि वज्र और पर्वत के भयकारी शब्द होते हैं ४३ और जैसे कि दो हाथी दाँतों और दो बड़े बैल सींगों से युद्ध करें उसी प्रकार भुजाओं की गसावट और शिर की टक्कर चरण का खैंचना पैंतरे बदलना खम्भठोकना नोचना चरण से पेट को दबाना चारों ओर को घूमना जाना आना फेंकना पृथ्वीपर लोटजाना उठबैठना कूदना दौड़ना इन पेंचों से ४४ । ४५ कौरव और यादवों में श्रेष्ठ दोनों महात्माओं का युद्ध हुआ ४६ हे भरतवंशिन् ! जो युद्ध कि बत्तीस अङ्ग रखनेवाला है उन सब अङ्गों को उन युद्ध करनेवाले महारथियों ने वहां दिखलाया ४७ इसके पीछे टूटे शस्त्रवाले यादव के युद्ध करनेपर वासुदेवजी अर्जुन से बोले कि सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ रथ से विहीन युद्ध में लड़नेवाले सात्यकी को देखो ४८ हे भरतवंशिन्, अर्जुन ! यह सात्यकी तेरे पीछे भरतवंशियों की सेना को छिन्न भिन्न करके आपहुँचा है और बड़े २ पराक्रमी सब भरतवंशियों से युद्ध किया ४९ और युद्ध का अभिलाषी भूरिश्रवा इस बड़े शूरवीर थकेहुए आते सात्यकी के सम्मुख हुआ है हे अर्जुन ! यह समय के अनुसार योग्य बात नहीं है ५० इसके पीछे युद्ध में दुर्मद क्रोधयुक्त भूरिश्रवा ने सात्यकी को उठाकर ऐसे पटका जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी को पटकता है हे राजन् ! युद्ध में रथपर नियत क्रोधयुक्त शूरवीरों में श्रेष्ठ अर्जुन और केशवजी के युद्ध में देखनेपर ५१ । ५२ महाबाहु श्रीकृष्णजी ने

अर्जुन से कहा कि वृष्णि और अन्धकों में श्रेष्ठ सात्यकी को भूरिश्रवा की आधीनता में देखो ५३ हे अर्जुन ! कठिन कर्म को करके थके पृथ्वीपर वर्तमान तेरे पास आनेवाले वीर सात्यकी की रक्षाकरो ५४ हे पुरुषोत्तम, अर्जुन ! यह उत्तम सात्यकी तेरे कारण से भूरिश्रवा के आधीन न होजाय हे समर्थ ! सो तुम शीघ्रताकरो ५५ इसके पीछे प्रसन्नचित्त अर्जुन वासुदेवजी से बोले कि कौरवों में श्रेष्ठ भूरिश्रवा को वृष्णियों में बड़े वीर सात्यकी के साथ ऐसे क्रीड़ा करनेवाला देखो ५६ जैसे कि वन में यूथ के स्वामी सिंह को मतवाले बड़े हाथी के साथ सञ्जय बोले हे भरतर्षभ ! पाण्डव अर्जुन के इसप्रकार कहनेपर ५७ सेनाओं में बड़ा हाहाकार हुआ फिर उस महाबाहु ने सात्यकी को उठाकर पृथ्वीपर पटका ५८ वह कौरवों में श्रेष्ठ भूरिश्रवा उस ज्ञाति में अत्यन्त श्रेष्ठ सात्यकी को युद्ध में खींचता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि सिंह हाथियों को खींचता हुआ शोभित होता है ५९ फिर भूरिश्रवा ने मियान से खड्ग को निकाल कर उसके केशों को पकड़ लिया और वैसे ले छातीपर घायलकिया ६० इसके पीछे उसके शरीर से उसका कुण्डलधारी शिर काटना चाहा फिर शीघ्रता करने वाले यादव ने भी एक क्षणतक बाल पकड़नेवाली भूरिश्रवा की भुजा के साथ शिर को ऐसा अच्छा घुमाया जैसे कि दण्ड से छेदाहुआ कुम्हार का चक्र होता है ६१ । ६२ हे राजन् ! फिर वासुदेवजी युद्ध में खींचते हुए उस यादव को देखकर अर्जुन से बोले ६३ हे महाबाहो ! तुम भूरिश्रवा की आधीनता में आयेहुए उस सात्यकी को देखो जो वृष्णिवंशीय और अन्धकवंशियों में श्रेष्ठ और तेरा शिष्य है और धनुष विद्या में तेरे समान है ६४ हे अर्जुन ! वहां पराक्रम मिथ्या है जहां भूरिश्रवा युद्ध में सत्यपराक्रमी यादव सात्यकी को मारता है ६५ वासुदेवजी के इस वचन को सुनकर महाबाहु अर्जुन ने युद्ध में भूरिश्रवा की चित्त से प्रशंसा की ६६ कौरवों की कीर्ति का बढ़ानेवाला युद्ध में क्रीड़ा करनेवाला भूरिश्रवा यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी को खींचकर मुझ को फिर प्रसन्न करता है ६७ जो वृष्णिवंशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ सात्यकी को नहीं मारता है और जैसे वन में बड़े हाथी को सिंह खैंचता है उसी प्रकार यह भी खैंचता है ६८ हे राजन् ! महाबाहु पाण्डव अर्जुन ने इसप्रकार मन से कौरव को पूजकर वासुदेवजी से कहा ६९ कि जयद्रथ में दृष्टि लगने से इस माधव

सात्यकी को नहीं देखता हूं इससे मैं इस कठिन कर्म को यादव के निमित्त करता हूं ७० वासुदेवजी के वचन को करतेहुए अर्जुन ने यह कहकर उसके पीछे तीक्ष्णधार क्षुरप्र को गाण्डीव धनुषपर चढ़ाया ७१ जैसे कि आकाश से गिराहुआ उल्का होता है उसीप्रकार अर्जुन की भुजा से छूटेहुए उस बाण ने भूरिश्रवाकी उस बाजूबन्द से शोभित खड्ग पकड़नेवाली भुजा को शरीर से काटा ॥ ७२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विचत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १४२ ॥

एकसौतैंतालीस का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, वह भुजा खड्ग और शुभ बाजूबन्द समेत पृथ्वीपर गिर पड़ी उस उत्तम भुजा ने जीवलोक के बड़े दुःख को नियत किया मारने की इच्छावान् भुजा दृष्टि से गुप्त अर्जुन के बाण से काटीहुई पांच फण रखनेवाले सर्प की समान वेग से पृथ्वीपर गिरपड़ी १ । २ उस कौरव ने अर्जुन के कारण अपने को निष्फल देख सात्यकी को छोड़कर क्रोध से पाण्डव की निन्दा करी ३ अर्थात् भूरिश्रवा बोला हे कुन्ती के पुत्र ! दुःख की बात है कि तुम ने यह निर्दयकर्म किया जो मुझ दूसरे से प्रवृत्त युद्ध न देखनेवाले की भुजा को काटा ४ धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिर जब पूछेंगे कि युद्ध में मेरे साथ किस कर्म के करने से भूरिश्रवा मारागया तब तुम उसको क्या उत्तर दोगे हे अर्जुन ! साक्षात् महात्मा इन्द्र रुद्र द्रोणाचार्य और कृपाचार्य ने यह अस्त्रविद्या तुझको उपदेश की ५ । ६ निश्चय करके तुम अस्त्रधर्मों के ज्ञाता और लोक में सब शूरवीरों से अधिक होकर भी तुम ने मुझ युद्ध न करनेवाले को कैसे मारा ७ उत्तम चित्तवाले पुरुष अचेत भयभीत विरथ प्रार्थना करनेवाला और आपत्ति में फँसाहुआ इतने प्रकार के शूरवीरोंपर प्रहार नहीं करते ८ यह कर्म जो तुमने किया है सो सत्पुरुषों से त्यागाहुआ और नीचों का कियाहुआ है हे अर्जुन ! तुमने इस कठिनता से करने के योग्य पापकर्म को कैसे किया ९ हे अर्जुन ! उत्तम कर्म का करना उत्तम पुरुषों से सुगम कहा है और बुरा कर्म अच्छे लोगों से इस पृथ्वीपर करना कठिनहै १० हे नरोत्तम ! मनुष्य जिन २ अच्छे और बुरे मनुष्यों में और जिन २ बुरे भले कर्मों में वर्तमान होता है उसी २ प्रकृति को शीघ्रता से पाता है वह सब तुझ में दिखाई पड़ता है ११ सुन्दर चलन और व्रत करनेवाला और राजाओं के वंश में उत्पन्न मुख्यकरके कौरववंशीय होकर

तू क्षत्रिय धर्म से किस निमित्त जुदाहुआ १२ जो यह अत्यन्त नीचकर्म सात्यकी के निमित्त तुम ने किया निश्चयकरके यह वासुदेवजी का मत है तुझ में नहीं विदित होता है १३ प्रकट है कि दूसरे के साथ युद्ध करनेवाले और अचेत के अर्थ सिवाय श्रीकृष्ण के अपने मित्र को और कौन ऐसे दुःख देसक्ता है १४ हे अर्जुन ! तुमने इस व्रात्य दुष्कर्मी स्वभावही से निन्दित वृष्णी और अन्धकवंशीय को किस प्रकार से प्रमाणकिया युद्धभूमि में उसके ऐसे वचनों को सुनकर अर्जुन भूरिश्रवा से बोला कि प्रत्यक्ष है वृद्ध मनुष्य अपनी बुद्धि को भी वृद्ध करदेता है यह जो तुमने कहा है सब वृथा है १५ । १६ इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी को जानतेहुए तुम मुझ पाण्डव की निन्दा करते हो जोकि तुम युद्धों के धर्मों के ज्ञाता और सब शास्त्रों के अर्थों में पूर्णता से कुशल हो १७ मैं अधर्म कभी नहीं करसक्ता तुम जानतेहुए मोहित होते हो अपने मनुष्यों से संयुक्त क्षत्रियलोग शत्रुओं से लड़ते हैं १८ वह भाई, पिता, चाचा आदि और पुत्र, नातेदार, मित्र और समान वयवालों के साथ होकर शत्रुओं से लड़ते हैं वह सब भुजा में रक्षित हैं १९ सो मैं अपने शिष्य सुखदाई नातेदार और कठिनता से छोड़ने के योग्य प्राणों को छोड़कर हमारे निमित्त युद्ध करनेवाले २० मेरी दक्षिणभुजारूप युद्ध में दुर्मद सात्यकी की कैसे रक्षा नहीं करूं हे राजन् ! निश्चयकरके युद्धभूमि में वर्तमान वीर से अपना शरीर रक्षा करने के योग्य नहीं है २१ जो जिसके मनोरथ प्राप्त करने में प्रवृत्त होता है निश्चयकरके वह रक्षा के योग्य है वह राजा बड़े युद्धों में उन रक्षितों से रक्षा के योग्य है २२ जो मैं इस बड़े युद्ध में सात्यकी को मृतक देखूं तो उस अनर्थ से और उस के पृथक् होने के विरह से मुझ को पाप होता २३ इस हेतु से मैंने उसकी रक्षा करी इस कारण से तुम मुझपर क्यों क्रोध करते हो हे राजन् ! जो तुम दूसरे के साथ भिड़होने से मेरी निन्दा करते हो २४ कि मैं तुझ से ठगागया हूं उसमें तेरे कवच को अस्तव्यस्तकरते और आप रथपर सवार धनुष की प्रत्यञ्चा को खींचतेहुए वह शत्रुओं के साथ लड़नेवाली बुद्धि भ्रान्ति है इस प्रकार रथ हाथियों से पूर्ण रथ के सवार और पत्तियों से व्याकुल २५ । २६ सिंहनादों से शब्दायमान सेनारूपी गम्भीर सागर में मिलेहुए अपनी सेना के लोग दूसरों से यादव समेत सन्मुख होने में २७ किस रीति से एक का युद्ध एकही के साथ होसक्ता है यह सात्यकी

बहुतवीरों से भिड़कर और महारथियों को विजयकरके २८ थकाहुआ थकीही सवारीवाला बेमन और शस्त्रों से पीड़ावान् है ऐसी दशावाले और अपने बल के आधीन होनेवाले महारथी सारथी को युद्ध में विजयकरके २९ अपनी ही अधिकता जानते हो और युद्ध में खड्ग से उसके शिर को काटना चाहते हो ३० उस प्रकार की आपत्ति में फँसेहुए सात्यकी को कौन सहसकेगा तुम अपनीही निन्दाकरो जो अपनी भी रक्षा नहीं करते हो जो मनुष्य तुम्हारी शरण में आवे तो हे वीर! उसके विषय में तुम कैसी करोगे ३१ सञ्जय बोले कि अर्जुन के इन वचनों को सुनकर महाबाहु भूरिश्रवा सात्यकी को छोड़कर युद्ध में मरने के निमित्त बैठगया ३२ उस पवित्र लक्षण और ब्रह्मलोक के जाने के अभिलाषी भूरिश्रवा ने बायेंहाथ से बाणों को बिछाकर अपने प्राणों को प्राणों में नियत किया ३३ सूर्य में नेत्रों को और जल में स्वच्छ मन को लय करके महा उपनिषदों को ध्यान करता हुआ वह भूरिश्रवा योग में नियतचित्त होगया ३४ उसके पीछे सब सेना के मनुष्यों ने श्रीकृष्ण और अर्जुन की निन्दाकरी और उस मृतक पुरुषोत्तम की प्रशंसा करी ३५ इस प्रकार से निन्दा कियेहुए दोनों पुरुष कुछ अप्रिय वचन को नहीं बोले उसके पीछे वह स्तुतिमान् भूरिश्रवा प्रसन्न नहीं हुआ हे राजन्! चित्त से उनके और उसके वचन को न सहता क्रोधरहित मन से वचनों को ध्यान करता पाण्डव अर्जुन इसप्रकारसे निन्दा करनेवाले आपके पुत्रों से बड़ी निन्दापूर्वक बोला ३६।३८ कि सब राजा भी मेरे बड़े व्रत को जानते हैं मेरा वह शूरवीर मारने के योग्य नहीं है जो मेरे बाण के सम्मुख होवे ३९ भूरिश्रवा की इसबात को देखकर मेरी निन्दा करनी योग्य नहीं है धर्म को न जानकर शत्रु निन्दा करने के योग्य नहीं है ४० युद्ध में शस्त्र उठानेवाले और वृष्णी वीर को मारने के अभिलाषी भूरिश्रवा की भुजा को जो मैंने काटा वह धर्म से निन्दित कर्म नहीं है ४१ शस्त्र और कवच से रहित विरथ बालक अभिमन्यु का मारना धर्मरूप है हे तात! उसको कौन अच्छा कहसक्ता है ४२ अर्जुन के इस प्रकार के वचन को सुनकर उसने शिर से पृथ्वी को स्पर्श किया और बायें हाथ से अपने कटे हुए दाहिने हाथ को अर्जुन की ओर फेंका ४३ इसके पीछे बड़ा तेजस्वी भूरिश्रवा अर्जुन के इस वचन को सुनकर नीचा शिर करके चुपहोरहा ४४

अर्जुन बोले कि जो मेरी प्रीति धर्मराज में व पराक्रमी भीमसेन में और नकुल सहदेव में है हे शल्य के बड़ेभाई, भूरिश्रवा ! वही मेरी प्रीति तुझ में है ४५ तुम मुझ से और महात्मा श्रीकृष्णजी से आज्ञा लेकर पवित्र लोकों को ऐसे जावो जैसे कि औशीनर का पुत्र शिबि स्वर्ग को गया ४६ वासुदेवजी बोले कि हे सदैव अग्निहोत्र करनेवाले, भूरिश्रवा ! जो मेरे निर्मल लोक एकबारही प्रकाश करते हैं और देवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजी आदिक जिनको चाहते हैं उन लोकों को तुम शीघ्रता से जाओ और गरुड़ के उत्तम शरीर पर सवारी करनेवाले होकर तुम मेरे समान हो ४७ सञ्जय बोले कि भूरिश्रवा के हाथ से छूटकर उठेहुए उस सात्यकी ने खड्ग को लेकर उस महात्मा के शिर को काटने की इच्छा से ४८ अर्जुन के हाथ से मारेहुये परमेश्वर में प्रवृत्तचित्त निष्पाप भूरिश्रवा को मारना चाहा ४९ बड़े दुःखी मन से सब सेनाओं को पुकारते निन्दा करते और श्रीकृष्ण महात्मा अर्जुन भीमसेन दोनों चक्र के रक्षक अश्वत्थामा कृपाचार्य कर्ण वृषसेन और जयद्रथ के निषेध करनेपर भी सात्यकी ने सेनाओं के पुकारतेहुए उस व्रतधारी टूटे भुज टूटी सूंड़वाले हाथी के समान बैठे हुए भूरिश्रवा को मारा ५० । ५२ सात्यकी ने युद्ध में शरीर के त्यागने के अर्थ अर्जुन के बाण टूटे भुजवाले विराजमान भूरिश्रवा के शिर को खड्ग से काटा ५३ फिर सेना के लोगों ने सात्यकी को उस कर्ण के करने से अच्छा नहीं कहा जो पूर्व में अर्जुन के मारेहुए कौरव को मारा ५४ सिद्ध चारण और मनुष्यों ने उस इन्द्र की समान भूरिश्रवा को युद्ध में शरीर त्यागने के निमित्त बैठा और मराहुआ देखकर ५५ उसके कर्मों से आश्चर्यित उन देवताओं ने उसको पूजा अर्थात् प्रशंसाकरी और आपकी सेना के लोग पक्षपात के अनेक वचनों को बोले ५६ कि इसमें यादव सात्यकी का अपराध नहीं है यह ऐसीही होनहार थी इस हेतु से तुमको क्रोध न करना चाहिये मनुष्यों का क्रोधही बड़ा दुःख है मैंने इसकी मृत्यु सात्यकी कोही नियत किया है ५७ । ५८ सात्यकी बोला हे धर्म से मुख फेरनेवाले और अधर्म के मार्ग में नियत होनेवाले, शूरलोगो ! यह मारने के अयोग्य है इन धर्मरूप वचनों से जो मुझको कहते हो ५९ तो उस काल में जब कि सुभद्रा का पुत्र बालक विना शस्त्र के युद्ध में तुम्हारे हाथ से मारागया तब तुम्हारा धर्म कहां जातारहा

था ६० मैंने अपने किसी अपमान में यह प्रतिज्ञाकरी कि जो मुझ जीवते को युद्ध में खैंचकर क्रोधपूर्वक पैरों से घायलकरे ६१ वह मेरा शत्रु मुझ से ही मारने के योग्य होय यद्यपि मुनि का व्रत रखनेवाला भी होय मुझ नेत्रवाले प्रहार में भुजा समेत चेष्टा करनेवाले को मरा हुआ मानते हो यह तुम्हारी स्वल्प बुद्धिता है हे उत्तम, कौरवो! मैंने इसका मारना योग्य समझकर किया है ६२। ६३ प्रतिज्ञा की रक्षा करनेवाले अर्जुन ने जो उसकी खड्ग समेत भुजा को काटा उससे ठगा गया हूं ६४ जो होनहार है वही होने के योग्य है और दैव अर्थात् प्रारब्धही कर्म करता है सो मैं इस युद्ध में उपाय करनेवाला हुआ इसमें कौन सा अधर्म किया ६५ पूर्व समय में बाल्मीकिजी ने भी यह श्लोक कहा है कि स्त्रियां मारने के योग्य नहीं हे वानर! जो तुम कहते हो सो सुनो कि निश्चयवाले मनुष्य को सदैव सब समय ६६ वह कर्म करना योग्य है जो शत्रुओं के दुःखों को उत्पन्न करनेवाला होय सञ्जय बोले कि हे महाराज! सात्यकी के इन वचनों को सुनकर सब उत्तम कौरवों ने कुछ भी नहीं कहा और मन से प्रशंसा की ६७ बड़े यज्ञों में मन्त्र से पवित्र यशस्वी हजारों दक्षिणा देनेवाले वनवासी मुनि के समान उस भूरिश्रवा के मारने की वहां किसी ने प्रशंसा नहीं की ६८ उस वरदाता शूरवीर भूरिश्रवा का वह शिर जिसके बाल बहुत नीले और कपोत के समान रक्तनेत्र थे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि हवन के योग्य यज्ञशाला में कटा हुआ घोड़े का शिर रक्खा हुआ होता है ६९ शस्त्र से उत्पन्न तेज से पवित्र वर के योग्य वह वरदाता अर्थात् विष्णुपद के मिलने से भूरिश्रवा अपने उत्तम धर्म से पृथ्वी और आकाश को व्याप्त करके उत्तम शरीर को त्यागकर ऊपर की ओर चला॥ ७०॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयश्चत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १४३॥

एकसौचवालीस का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, वीर सात्यकी युधिष्ठिर के पास प्रतिज्ञाकरके द्रोणाचार्य, कर्ण, विकर्ण और कृतवर्मा से अजेय सेनारूपी समुद्र से पार उतरा १ युद्धों में नहीं हटाया हुआ वह सात्यकी किस प्रकार कौरव भूरिश्रवा के बल से पकड़कर गिराया गया २ सञ्जय बोले कि जैसे पूर्वसमय में सात्यकी का और भूरिश्रवा का जन्म हुआ है और उसी में आपका सन्देह है उसको मुझ से सुनो कि ३

अत्रि का पुत्र चन्द्रमाहुआ चन्द्रमा का पुत्र बुध और बुध का एक पुत्र इन्द्र के समान पुरूरवानाम हुआ पुरूरवा का पुत्र आयु और आयु का पुत्र नहुष नहुष का पुत्र राजा ययाति हुआ वह ययाति देवऋषियों का अङ्गीकृतहुआ ४ । ५ देवयानी में ययाति का बड़ा पुत्र यदु हुआ यदु के वंश में देवमीढ़नाम पुत्रहुआ ६ उसका पुत्र यदुवंशीय शूरसेन नाम तीनों लोकों में विख्यातकीर्ति हुआ शूरसेन के पुत्र नरोत्तम बड़े तेजस्वी वसुदेवजी हुए ७ शूरसेन धनुष विद्या में असादृश्य और युद्ध में कार्त्तवीर्य के समान हुआ और उसी कुल में उसी के समान पराक्रमी शिनि हुआ ८ हे राजन् ! उसी समय में महात्मा देवक की पुत्री देवकी के स्वयंवर में सब क्षत्रियों के इकट्ठे होनेपर ९ उस स्थान में राजा शिनि ने सब राजाओं को विजय करके देवी देवकी को वसुदेवजी के अर्थ शीघ्रता से रथपर बैठालिया १० तब बड़े तेजस्वी शूर सोमदत्त ने उस रथपर नियतहुई देवकी को देखकर शिनि से क्षमा नहीं की ११ और उन दोनों को अनेक प्रकार का अद्भुत युद्ध मध्याह्न तकहुआ हे पुरुषोत्तम ! लड़ते २ उन दोनों वीरों का बाहुयुद्ध भी हुआ १२ और शिनि के हाथ से सोमदत्त पृथ्वी पर गिरायागया फिर खड्ग उठाकर शिर के बालों को पकड़ चारों ओर से देखनेवाले हजारों राजाओं के मध्य में पैरों से घायल किया फिर उसने दयाकरके उसको जीवताहुआ छोड़दिया १३ । १४ हे श्रेष्ठ ! फिर उस संशय से उस दशा वाले क्रोधयुक्त सोमदत्त ने महादेवजी को प्रसन्न किया १५ फिर उस बड़े वरदानी शिवजी ने उसपर प्रसन्न होकर उसको वरदान माँगने को उत्सुक किया फिर उस राजा ने वर माँगा १६ कि हे भगवन् ! मैं ऐसे पुत्र को चाहता हूं जोकि युद्ध में हजारों राजाओं के मध्य में शिनि के पुत्र को गिराकर चरणों से घायलकरे १७ हे राजन् ! वह शिवजी उस सोमदत्त के उस वचन को सुनकर और तथास्तु कहकर उसी स्थान में गुप्त होगये १८ उसने उसी वरप्रदान से भूरिश्रवानाम पुत्र को पाया और उस सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा ने शिनि के पुत्र को युद्ध में गिराया १९ और सब सेनाओं के देखतेहुए उसको चरणों से घायलकिया हे राजन् ! जो आपने मुझ से पूछा सो मैंने तुम से कहा २० यादव सात्यकी युद्ध में उत्तम पुरुषों से भी विजय करने के योग्य नहीं है क्योंकि यादवलोग युद्ध में लक्ष्यभेदी और अद्भुत योद्धा २१ देव दनुज और गन्धर्वों के विजय

करनेवाले आश्चर्य से रहित और अपने पराक्रम से विजय में प्रवृत्त होनेवाले हैं यह दूसरे के आधीन नहीं हैं २२ हे प्रभो, पुरुषोत्तम ! इस लोक में बल पराक्रम से वृष्णियों के समान तीनोंकाल में भी कोई शूरवीर उत्पन्न होनेवाला नहीं जाना जाता है २३ वह जाति का अपमान नहीं करते हैं और वृद्धों की आज्ञाओं में प्रीति रखनेवाले होते हैं देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष, उरग और राक्षस भी २४ वृष्णी वीरों के विजय करनेवाले नहीं हैं फिर मनुष्यों की क्या सामर्थ्य है ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानवालों के धनों के रक्षक हैं और जोकि किसी दशा में बन्धन में पड़े हों उनके भी रक्षक हैं और धन अहङ्कार से रहित साधु ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले और सत्यवक्ता हैं २५।२६ वह समर्थ होकर किसी प्रकारके दुःखी लोगों का अपमान नहीं करते हैं सदैव परमेश्वर के भक्त जितेन्द्रिय रक्षक और आत्मश्लाघा के करनेवाले नहीं हैं २७ इसी हेतु से वृष्णी वीरों के प्रताप का नाश नहीं होता है चाहे कोई पुरुष समुद्र को तरकर मेरु पर्वत को भी उठाले २८ परन्तु सम्मुख होकर वृष्णी वीरों के अन्त को नहीं पासक्ता है हे राजन् ! जिन २ बातों में आपको सन्देह था वह सब मैंने तुमसे कहा हे नरोत्तम, कौरवराज ! आपका बड़ा अन्याय है ॥ २९ । ३० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसात्यकीप्रशंसायांचतुश्चत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १४४ ॥

एकसौपैंतालीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय ! उस दशावाले उस कौरव भूरिश्रवा के मरने पर फिर जैसे युद्धहुआ उसको मुझ से कहो १ सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन् ! परलोक में भूरिश्रवा के जानेपर महाबाहु अर्जुन ने वासुदेवजी से प्रार्थनाकरी २ कि हे श्रीकृष्णजी ! घोड़ों को अत्यन्त प्रेरितकरके वहां ले चलो जहांपर राजा जयद्रथ है हे निष्पाप ! आप मेरी प्रतिज्ञा को भी सफल करने को योग्य हो ३ हे महाबाहो ! शीघ्रता करनेवाला सूर्य अस्ताचल को प्राप्तहोता है हे पुरुषोत्तम ! मैंने भी बड़े कर्म की प्रतिज्ञाकरी है ४ और कौरवीय सेना महारथियों से रक्षित है जैसे कि सूर्य अस्त न होय और मेरा वचन सत्य हो ५ और जैसे मैं जयद्रथ को मारूं हे श्रीकृष्णजी ! उसी प्रकार से आप घोड़ों को चलायमान करो इसके पीछे घोड़ों के हृदय के जाननेवाले महाबाहु श्रीकृष्णजी ने रजत वर्णवाले घोड़ों को ६ जयद्रथ के रथ की ओर को चलाया वायु के समान उछलकर

चलतेहुए घोड़ों के द्वारा जानेवाले उन सफल बाणवाले अर्जुन की ओर ७ शीघ्रता करनेवाले जो सेना के अधिपतिलोग दौड़े उनके नाम यह हैं दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य ८ अश्वत्थामा, कृपाचार्य और आप जयद्रथ, अर्जुन ने सम्मुख नियतहुए जयद्रथ को पाकर ९ क्रोध से अग्निरूप नेत्रों से उसको देखा हे राजन् ! इसके पीछे राजा दुर्योधन शीघ्रही जयद्रथ के मारने के अर्थ जानेवाले अर्जुन को देखकर कर्ण से बोला हे सूर्य के पुत्र, महात्मन् ! यह वह युद्ध का समय है अब तुम अपने उस बल को दिखलाओ जिससे अर्जुन के हाथ से युद्ध में जयद्रथ नहीं माराजाय हे कर्ण ! उसीप्रकार करना योग्य है १०।१२ हे नरवीर ! दिन थोड़ाही बाकी है अब शत्रु को बाणों के समूहों से अच्छे प्रकार से घायल कर हे नरों में बड़ेवीर, कर्ण ! दिन के अन्त को पाकर निश्चय हमारी विजय होगी १३ सूर्यास्त के समय जयद्रथ के बच जानेपर मिथ्या-प्रतिज्ञा करनेवाला अर्जुन अग्नि में प्रवेश करेगा १४ हे बड़ाई देनेवाले, कर्ण ! अर्जुन से रहित पृथ्वीपर इसके सब भाई अपने साथी सहायकों समेत एक मुहूर्त भी जीवते नहीं रहसक्के १५ हे कर्ण ! पाण्डवों के नाशहोने के पीछे इस अकण्टक पृथ्वी को पर्वत वन और काननों समेत भोगेंगे १६ हे बड़ाई देनेवाले, कर्ण ! दैव से मोहित प्रकृति के विपरीत कार्याकार्य के न जाननेवाले अर्जुन ने युद्ध में प्रतिज्ञाकरी १७ हे कर्ण ! निश्चयकरके पाण्डव अर्जुन ने अपनेही नाश के निमित्त जयद्रथ के मारने में यह प्रतिज्ञाकरी है १८ सो हे कर्ण ! तुझ अजेय के जीवते होनेपर अर्जुन सूर्यास्त से पूर्वही कैसे राजा जयद्रथ को मारसक्ता है १९ यह अर्जुन मद्र के राजा शल्य और महात्मा कृपाचार्य से रक्षितहुए जयद्रथ को युद्ध के मुखपर कैसे मारेगा २० काल से प्रेरित अर्जुन अश्वत्थामा दुश्शासन और मुझसे रक्षित जयद्रथ को किस प्रकार से पावेगा २१ बहुत से शूरवीर लड़नेवाले हैं और सूर्य जल्दी से अस्तङ्गत होनेवाले हैं मैं निश्चयकरके अनुमान करता हूं कि अर्जुन जयद्रथ को नहीं पावेगा २२ हे कर्ण ! सो तुम मेरेसाथ और अश्वत्थामा शल्य और कृपाचार्य और अन्य २ महारथी शूरवीरों के साथ २३ बड़े उपायपूर्वक युद्धभूमि में नियत होकर अर्जुन से युद्ध करो हे श्रेष्ठ ! आपके पुत्र के इन वचनों को सुनकर कर्ण ने २४ कौरवों में श्रेष्ठ दुर्योधन से यह वचन कहा कि मैं कठिन प्रहार करनेवाले धनुषधारी वीर भीमसेन

के २५ नाना प्रकार के बाणजालों से अत्यन्त घायल शरीर हूं हे बड़ाई देनेवाले! नियत होना योग्य है इस हेतु से मैं भी युद्ध में नियत हूं २६ बड़े बाणों से अच्छा सन्तप्त कियाहुआ मेरा कोई अङ्ग चेष्टा नहीं करता है सामर्थ्य के अनुसार मैं उसी प्रकार से लड़ूंगा जिसमें कि यह अर्जुन जयद्रथ को नहीं मारेगा क्योंकि मेरा जीवन तेरेही निमित्त है मेरे युद्ध करते और तीक्ष्ण शायकों के छोड़ते २७। २८ संसार के धनों का विजय करनेवाला वीर अर्जुन जयद्रथ को नहीं पावेगा भक्ति रखनेवाले सदैव दूसरे की भलाई चाहनेवाले पुरुषों से जो कर्म करने के योग्य है २९ हे कौरव! मैं उसी को करूंगा आगे विजय होना ईश्वर के आधीन है हे महाराज! अब मैं जयद्रथ के अर्थ और तेरे प्रिय के निमित्त युद्ध में उपाय करूंगा परन्तु विजय ईश्वर के आधीन है हे पुरुषोत्तम! अब अपनी वीरता में नियत होकर मैं तेरे निमित्त अर्जुन से लड़ूंगा विजय ईश्वर के आधीन है हे कौरवों में श्रेष्ठ! अब मेरे और अर्जुन के उस युद्ध को ३०। ३२ जोकि भय का उत्पन्न करनेवाला और रोमहर्षण करनेवाला होगा सब सेनाओं के मनुष्यों के देखतेहुए युद्ध में कर्ण और दुर्योधन की इस प्रकार की बातें होनेपरही ३३ अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से आप की सेना को मारा और तीक्ष्णधार बाणों से मुख न फेरनेवाले शूरों की ३४ भुजा जोकि परिघ और हाथी की सूंड़ों के समान थीं उनको युद्ध में काटा महाबाहु ने फिर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उनके शिरों को भी काटा ३५ हाथियों की सूंड़ें घोड़ों की गर्दनें और चारों ओर से रथियों के अक्ष परिघ और तोमरवाले रुधिर में भरे अश्व सवारों को ३६ घोड़ों और उत्तम हाथियों को अर्जुन ने अपने क्षुरों से दो २ और तीन २ खण्ड करदिये फिर वह कट २ कर चारोंओर से गिरपड़े ३७ ध्वजा, छत्र, चामर और शिर चारोंओर से गिरे और जैसे उठा हुआ अग्नि सूखे वन को भस्म करता है उसी प्रकार अर्जुन ने आपकी सेना को भस्मीभूत करदिया ३८ अर्जुन ने थोड़ीही देर में पृथ्वी को रुधिर से पूर्ण करदिया वह पराक्रमी अर्जुन उस आप की सेना को अनेक शूरों से रहितकरके भीमसेन और सात्यकी से रक्षित होकर ३९। ४० ऐसा प्रकाशमान हुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! जैसे कि प्रज्वलित अग्नि होता है फिर बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तम आप के शूरवीरों ने उस प्रकार से नियत उस अर्जुन को देखकर बलरूपी धन से अर्जुन को नहीं सहा

दुर्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य ४१ । ४२ अश्वत्थामा, कृपाचार्य, आप जयद्रथ इन सब कवचधारी वीरों ने जयद्रथ के निमित्त अर्जुन को घेरलिया ४३ युद्ध में कुशल और निर्भय काल के समान खुलेहुए मुखवाले उन सब ने उस युद्ध कुशल रथ के मार्गों में धनुष प्रत्यञ्चा और तल के शब्दों के साथ नृत्य करने वाले अर्जुन को चारोंओर से घेरलिया श्रीकृष्ण और अर्जुन के मारने के इच्छा-वान् उन लोगों ने जयद्रथ को पीछे की ओर करके ४४ । ४५ सूर्य के रक्तवर्ण होनेपर सूर्यास्त की अभिलाषा करतेहुओं ने सर्प के फणों के रूप हाथों से धनुषों को लचाकर सूर्य के समान प्रकाशमान हज़ारों बाणों को छोड़ा उसके पीछे युद्धदुर्मद अर्जुन ने उन खैंचेहुए प्रत्येक बाणों को ४६ । ४७ दो २ तीन २ खण्ड करके उन रथियों को घायल किया हे राजन् ! अपने पराक्रम को दिखाते सिंह लांगूल ध्वजावाले ४८ सारद्वत के पुत्र अश्वत्थामा ने अर्जुन को रोका अर्जुन को दश बाणों से और वासुदेवजी को सात बाणों से घायल करके ४९ जयद्रथ को रक्षित करता हुआ रथ के मार्गों में नियत हुआ इसके पीछे सब उत्तम कौरवों ने उसको ५० बड़े रथों के समूहों के द्वारा सब ओर से रोका धनुषों को टङ्कारते शायकों को छोड़ते ५१ लोगों ने आप के पुत्र की आज्ञा से जयद्रथ को चारोंओर से रक्षित किया इसके पीछे शूरवीर अर्जुन की दोनों भुजाओं का पराक्रम देखने में आया ५२ और बाणों की और गाण्डीव धनुष की अविनाशता को भी देखा कि अश्वत्थामा और कृपाचार्य के अस्त्रों को अस्त्रों से रोककर ५३ प्रत्येक को दश २ बाणों से घायल किया अश्वत्थामा ने उसको पच्चीस बाणों से वृषसेन ने सात बाणों से ५४ दुर्योधन ने बीस बाणों से कर्ण और शल्य ने तीन २ बाणों से इस प्रकार गर्जते और वारंवार घायल क-रते ५५ धनुषों को कँपाते उन वीरों ने सब ओर से अर्जुन को रोका और शीघ्र अपने रथमण्डल को लगाया ५६ सूर्यास्त को चाहते और उसके सम्मुख ग-र्जते धनुषों को चलायमान करते शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने ५७ उसको तीक्ष्ण बाणों से ऐसा आच्छादित किया जैसे कि जल की धाराओं से बादल पर्वत को आच्छादित करता है हे राजन् ! परिघ के समान भुजाधारी उन शूर-वीरों ने अर्जुन के शरीरपर दिव्य महाअस्त्रों को दिखलाया फिर उस पराक्रमी ने आप की सेना को बहुत मृतक शूरवीरवाली करके ५८ । ५९ सत्यपराक्रमी

निर्भय ने जयद्रथ को पाया हे राजन् ! कर्ण ने बाणों से उसको रोका ६० हे भरतवंशिन् ! फिर अर्जुन ने युद्धभूमि के मध्य भीमसेन और सात्यकी के देखतेहुए उस कर्ण को दश बाणों से छेदा ६१ महाबाहु अर्जुन ने यह युद्ध कर्म सब सेना के देखतेहुए किया हे श्रेष्ठ ! यादव सात्यकी ने कर्ण को तीन बाणों से घायल किया ६२ भीमसेन ने तीन बाण से और फिर अर्जुन ने सात बाण से इसके पीछे महारथी कर्ण ने साठ २ बाणों से उनको घायल किया हे श्रेष्ठ ! वहां हम ने कर्ण के अपूर्व कर्म को देखा ६३ । ६४ कि जिस क्रोध युक्त अकेले नेही युद्ध में तीन रथियों को रोका फिर महाबाहु अर्जुन ने सूर्य के पुत्र कर्ण को युद्ध में ६५ सौ शायकों से सब मर्मों पर घायल किया रुधिर से लिप्त सब शरीर प्रतापवान् वीर कर्ण ने ६६ पचास बाणों से अर्जुन को घायल किया अर्जुन ने युद्ध में उसकी उस हस्तलाघवता को देखकर नहीं सहा ६७ फिर शीघ्रता करनेवाले वीर अर्जुन ने धनुष को काटकर नौ शायकों से उसको हृदयपर पीड्यमान किया ६८ इसके पीछे प्रतापी कर्ण ने दूसरे धनुष को लेकर आठहजार शायकों से अर्जुन को ढकदिया ६९ अर्जुन ने कर्ण के धनुष से निकलेहुए उन बड़ी बाण वर्षा को शायकों से ऐसे छिन्नभिन्न किया जैसे कि शलभ नाम पक्षियों को वायु तिरंबिरं करदेता है ७० तब अर्जुन ने भी शायकों से उसको ढकदिया और शीघ्रता युक्त अर्जुन ने शीघ्रता के समय युद्ध में उसके मारने के निमित्त सूर्य के समान प्रकाशित शायक को फेंका ७१ अश्वत्थामा ने उस वेग से आतेहुए शायक को अर्धचन्द्र नाम तीक्ष्णबाणों से काटा वह कटाहुआ पृथ्वी पर गिरपड़ा ७२ इसके पीछे प्रतापवान् कर्ण ने दूसरे धनुष को लेकर हजारों शायकों से अर्जुन को ढकदिया ७३ अर्जुन ने उस कर्ण की शस्त्रवर्षा को शायकों से ऐसे उच्छिन्न करदिया जैसे कि वायु शलभाओं को करता है ७४ तब उसने अर्जुन को सब शूरवीरों के देखते और हस्तलाघवता को दिखातेहुए शायकों से ढकदिया ७५ शत्रुओं के मारनेवाले कर्ण ने भी युद्धकर्म के बदला करने की इच्छा से अर्जुन को हजारों शायकों से ढकदिया ७६ बैलों के समान गर्जना करनेवाले उन नरोत्तम महारथियों ने सीधे चलनेवाले शायकों से आकाश को गुप्तकिया ७७ बाणों के समूहों से गुप्त उन दोनों ने परस्पर में घायल किया और कहा कि हे कर्ण ! मैं अर्जुन हूं ठहरो ७८ तब इस प्रकार

घुड़कनेवाले दोनों ने वचनवज्रों से परस्पर पीड़ितकिया और दोनों वीर युद्ध में अपूर्व चित्तरोचक तीव्र युद्ध करते ७९ सब शूरवीरों के समूहों में देखने के योग्यहुए सिद्ध चारण और सर्पों ने भी उनकी प्रशंसा की ८० हे महाराज! परस्पर मारने के अभिलाषी वह दोनों युद्ध करनेवाले हुए इसके पीछे दुर्योधन आप के शूरवीरों से बोला ८१ कि उपाय से कर्ण की रक्षाकरो यह कर्ण युद्ध में अर्जुन को विना मारेहुए नहीं लौटेगा क्योंकि उसने मुझसे कहा है ८२ हे राजन्! इसी अन्तर में कर्ण के पराक्रम को देखकर श्वेत घोड़े रखनेवाले अर्जुन ने कानतक खैंचकर छोड़ेहुए चारबाणों से कर्ण के चारों घोड़ों को ८३ प्रेतलोक में पहुँचाया और भल्ल से उसके सारथी को रथकी नीढ़ से गिराया ८४ और फिर आप के पुत्र के देखतेहुए बाणों से उसको ढकदिया युद्ध में बाणों से ढकेहुए मृतक सारथी और घोड़ेवाले ८५ बाणजालों से मोहित ने करने के योग्य कर्म को नहीं पाया हे महाराज! तब उस प्रकार उस कर्ण को रथ से रहित देखकर अश्वत्थामा ने ८६ रथपर बैठाकर फिर अर्जुन से युद्ध किया और मद्र के राजा शल्य ने अर्जुन को तीसबाणों से छेदा ८७ फिर कृपाचार्य ने बीस बाण से वासुदेवजी को घायलकिया और शिलीमुख नाम बारहबाणों से अर्जुन को घायल किया ८८ जयद्रथ ने चारबाण से वृषसेन ने सातबाण से उसको घायल किया हे महाराज! जैसे पृथक् २ श्रीकृष्ण और अर्जुन को उन सब ने घायलकिया ८९ उसी प्रकार कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने भी उनको घायल किया और चौंसठ बाणों से अश्वत्थामा को और सौबाण से शल्य को ९० दश बाण से जयद्रथ को तीनबाण से वृषसेन को और बीसबाण से कृपाचार्य को घायलकरके गर्जा ९१ अर्जुन की प्रतिज्ञा के नाश को चाहनेवाले वह सब इकट्ठे शूरवीर एक साथही अर्जुन के सम्मुख दौड़े ९२ इसके पीछे धृतराष्ट्र के पुत्रों को सब ओर से भयभीत करतेहुए अर्जुन ने वारुणास्त्र को प्रकटकिया बाणों को वर्षाते कौरव बहुमूल्य रथों की सवारी से उस अर्जुन के सम्मुखगये ९३ हे भरतवंशिन्! उसके पीछे उस कठोर और बड़े भयकारी मोह के उत्पन्न करनेवाले युद्ध के जारी होनेपर वह राजपुत्र अचेत नहीं हुआ फिर उस मुकुट और मालाधारी राजकुमार ने सम्मुख होकर बाणों के समूहों को छोड़ा ९४ कौरवों के राज्य के इच्छावान् बारह वर्ष के पायेहुए महाखेदों को स्मरण करते

महात्मा बुद्धि से बाहर प्रभाववाले अर्जुन ने गाण्डीव धनुष के छोड़ेहुए बाणों से सब दिशाओं को ढकदिया ६५ और अन्तरिक्ष बड़ी प्रकाशमान उल्काओं से व्याप्तहुआ और मृतक शरीरोंपर पक्षी गिरे जिस हेतु से क्रोधयुक्त अर्जुन पिङ्गलवर्ण की प्रत्यञ्चावाले अजगवनाम धनुष से शत्रुओं को मारता था ६६ इसके पीछे बड़े यशस्वी शत्रुओं की सेना के विजय करनेवाले अर्जुन ने बड़े धनुष से बाणों को चलाकर उत्तमघोड़े और हाथियों की सवारियों से घूमनेवाले कौरवीय शूरवीरों को बाणों से गिराया ६७ भयकारी दर्शनवाले राजालोग भारी गदा और लोहे की परिघ खड्ग शक्तिआदिक बहुत से बड़े २ शस्त्रों को लेकर युद्ध में अकस्मात् अर्जुन के सम्मुखगये ६८ इसके पीछे यमराज के देश को बढ़ानेवाले अर्जुन ने प्रलयकाल के बादल के समान शब्दायमान महेन्द्र के धनुषरूप गाण्डीव नाम बड़े धनुष को दोनों हाथों से खैंचा और बहुत हँसता हुआ आप के शूरवीरों को भस्म करता शीघ्रही चला ६९ उस वीरने उन बड़े धनुषधारियों समेत पदातियों के बड़े समूहों को जिनके सब शस्त्र और जीवन भी नष्ट होगये थे हाथी और रथसवारों समेत यमराज के देश का वृद्धि करनेवाला किया ॥ १०० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिजयद्रथसकुलयुद्धेपञ्चचत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १४५ ॥

एकसौछियालीस का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, अर्जुन के खैंचेहुए उस धनुष का शब्द जोकि मृत्युके शब्द के समान अच्छे प्रकार से प्रकट उन्नत इन्द्रवज्र के समान महाभयकारी था उस को सुनकर आपकी वह सेना भय से ऐसी व्याकुलहुई जैसे कि प्रलयकाल की वायु से व्याकुल और चलायमान तरङ्गों से उत्तरङ्ग १। २ ग्राहमछली और मगरवाला सागर का जल होता है वह पाण्डव अर्जुन देखताहुआ युद्ध में घूमा ३ एक साथही सब दिशाओं में सब अस्त्रों को प्रकट करता घूमनेलगा हे महाराज! हमने उसकी हस्तलाघवता से उस लेते चढ़ाते ४ खैंचते छोड़ते हुए पाण्डवको नहीं देखा इसके पीछे सब भरतवंशियों को डराते क्रोधयुक्त महाबाहु अर्जुन ने कठिनता से सहनेके योग्य इन्द्रास्त्रको प्रकट किया इसके पीछे दिव्य मन्त्रों से अभिमन्त्रित ५। ६ अत्यन्त प्रकाशमान सैकड़ों और हजारों बाण प्रकटहुए कानतक खैंचकर छोड़ेहुए अग्नि सूर्य की किरणों के समान बाणों

से ७ आकाश दुःख से देखने के योग्य ऐसाहुआ जैसे कि उल्काओं से संयुक्त होता है इसके पीछे कौरवों से प्रकट किये हुए उस शस्त्रों के अन्धकार को ८ घूमतेहुए पाण्डव ने पराक्रम करके दिव्य अस्त्रों के अभिमन्त्रित बाणों से नाश करदिया जो कर्म दूसरों के मन से भी करने के योग्य ऐसे नहीं था ९ जैसे कि प्रातःकाल के समय सूर्य अपनी किरणों से रात्रि के अन्यायों को शीघ्रही दूरकर देता है उसके पीछे आप की सेना प्रकाशित बाणों की किरणों से १० ऐसें आकर्षण युक्तहुई जैसे उष्णऋतु में प्रभु सूर्यदेवता छोटे २ तालाबोंके जलों को आकर्षण करता है उससमय दिव्य अस्त्रज्ञ अर्जुन से छोड़ेहुए शायकरूप किरणों ने ११ शत्रुओं की सेना को ऐसे स्पर्शकिया जैसे कि सूर्य की किरणें लोक को स्पर्शकरती हैं इसके पीछे छोड़ेहुए दूसरे कठोर प्रकाशित बाण १२ शीघ्रही वीरों के हृदय में प्यारे बान्धवों के समान लगकर प्रवेशहुए जो शूरों में बड़े आपके युद्धकर्ता लोग युद्ध में उसके सम्मुखगये १३ उन्होंने ऐसे नाश को पाया जैसे कि शलभनाम पक्षी अग्नि को पाकर नाशहोते हैं इस प्रकार देह-धारी काल के समान अर्जुन शत्रुओं के जीवन और यशों को मर्दनकरता १४ युद्ध में घूमनेलगा उसने कितनेही वीरोंके मुकुट वस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली बड़ीभुजा और कुण्डलों के जोड़े धारण करनेवाले कानों को अपने बाणों से काटा १५ उस पाण्डव ने तोमर रखनेवाले हाथी के सवारों की भुजाओं को और प्रास रखनेवाले अश्वसवारों की भी भुजाओंको काटकर १६ ढाल रखने वाले पदातियों की भुजाओं को और धनुषबाण रखनेवाले रथियों की भुजाओं को और चाबुक रखनेवाले सारथियों की भी भुजाओं को काटा १७ वहां पर अर्जुन अत्यन्त प्रकाशित और भयकारी बाणरूपी किरणोंका धारण करनेवाला होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि स्फुलिंगों का धारण करनेवाला देदीप्य अग्नि होता है १८ फिर वह उपाय करनेवाले राजा लोग भी उस देवराज के समान सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ रथपर सवार पुरुषोत्तम बड़े अस्त्रोंके चलानेवाले दर्शनीयरूप रथ के भागों में नाचनेवाले धनुष प्रत्यञ्चा और तलसे शब्द करने वाले पाण्डव अर्जुन को सब दिशाओंमें एकबार देखने को भी ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि मध्याह्न के समय आकाश में तपानेवाले सूर्य की कोई देख नहीं सक्ता १९ । २१ वह प्रकाशित नोकवाले बाणोंका रखनेवाला ऐसा शोभा-

यमान हुआ जैसे कि वर्षाऋतु में इन्द्र धनुष के साथ बहुत जलों से भरा बड़ा बादल शोभित होता है २२ उत्तम शूरवीरलोग अर्जुन के जारी किये हुए उस कठिनता से तरने के योग्य बड़े भयानक महाअस्त्ररूप समुद्रमें डूबगये २३ टूटे मुख और भुजावाले शरीर टूटे हाथवाली भुजा उंगली टूटे हुए हाथ टूटी हुई सूंड़ नोकदाँत मदसे मतवाले हाथी ग्रीवारहित घोड़े चूर्णीभूत रथ २४। २५ टूटी आँत पैर इसी प्रकार टूटे जोड़वाले अन्य शूरवीर चेष्टा करनेवाले व अचेष्ट हज़ारों युद्ध कर्ताओं से २६ उस बड़ी युद्धभूमि को भयभीतों के भयके बढ़ानेवाली मृत्युकालकी संहारभूमिके समान ऐसा चित्तरोचक देखा २७ जैसे कि पूर्व काल में शूरों के पीड़ा देनेवाले रुद्रजी का क्रीड़ास्थान होता है क्षुर से काटीहुई हाथियों की सूंड़ोंसे पृथ्वी ऐसी जुदी शोभायमानहुई जैसे कि सर्पोंसे युक्त होती है २८ किसी स्थानपर मुखरूपी कमलों से आच्छादित पृथ्वी मालाधारीके समान शोभायमानहुई विचित्र पगड़ी, मुकुट, कुण्डल, केयूर, बाजूबन्दोंसे २९ और सुवर्ण जटित कवच घोड़े हाथियों के सामान और हज़ारों मुकुटों से जहां तहां आच्छादित और संयुक्त पृथ्वी नवीन बधू के समान अत्यन्त अद्भुत शोभायमानहुई वसा मस्तकरूप कीच रखनेवाली रुधिर समूहों से उत्तरङ्ग मर्म और अस्थियों से अथाह केशरूप शैवल शाद्वल रखनेवाली शिर भुजारूप तट के पाषाण रखनेवाली कटेहुए घोड़ों की छातियों के हाड़ों से अगम्य ३०। ३२ चित्र ध्वजा पताकाओं से युक्त छत्र धनुषरूप तरङ्गमाला रखनेवाली मृतक शरीरों से पूर्ण हाथियों के शरीरों से विगतरूप ३३ रथरूपी हज़ारों नौकाओं से युक्त घोड़ों के समूहरूप किनारेवाली और रथ के चक्र जुये ईशा अक्ष और कूबरों से अत्यन्त दुर्गम ३४ प्रास, खड्ग, शक्ति, फरसे और विशिखरूप सर्पों से कठिन काक कङ्करूप नक्रों से पूर्ण शृगालरूप मगरों से कठिनरूप ३५ बड़े गृध्ररूप भयानक ग्राह रखनेवाली शृगालों के शब्दों से भयानकरूप और नाचते हुए प्रेत पिशाचादि हज़ारों भूतों से युक्त ३६ मृतक और निश्चेष्ट शूरवीरों के हज़ारों शरीरों की बहानेवाली बड़ी भयानक रुद्र वैतरणी नदी के समान घोर ३७ भयभीतों के भयों की बढ़ानेवाली नदी को बहाया उस यमराजरूप अर्जुन के उस पराक्रम को जिसके समान पूर्व कोई नहीं हुआ ३८ देखकर युद्धभूमि के मध्य कौरवों में भय उत्पन्न हुआ रुद्रकर्म में नियत अर्जुन ने वीरों

के अस्त्रों को अपने अस्त्रों से आधीन करके ३६ अपने को रुद्ररूप प्रकट किया हे राजन् ! इसके पीछे अर्जुन ने उत्तम रथियों को उल्लङ्घन किया ४० और सब जीवधारी अर्जुन की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे मध्याह्न के समय सन्तप्त करनेवाले सूर्य को कोई देख नहीं सक्ता ४१ उस महात्मा के गाण्डीव धनुष से निकलेहुए बाणों के समूहों को युद्ध में ऐसा देखा जैसा कि आकाश में हंसों की पंक्तियों को ४२ वह सब ओर से वीरों के अस्त्रों को अपने अस्त्रोंसे रोककर अपने शरीर को रुद्ररूप दिखलाता भयकारी कर्म में प्रवृत्त हुआ ४३ हे राजन् ! तब नाराचों से मोहित करते सब दिशाओं में बाणों को छोड़ते श्रीकृष्ण को सारथी रखनेवाले अर्जुन ने जयद्रथ के मारने की अभिलाषा से उन महारथियों को उल्लङ्घन किया ४४ फिर वह दर्शनीय रथी अर्जुन शीघ्रता से चला और महात्मा शूरवीर अर्जुन के घूमतेहुए बाणों के समूह ४५ हज़ारों अन्तरिक्ष में दिखाईपड़े निश्चयकरके उस समय हमने शायकों को लेते चढ़ाते छोड़ते ४६ बड़े धनुषधारी पाण्डव को नहीं देखा हे राजन् ! जिस प्रकार वह कुन्ती का पुत्र सब दिशाओं को और सब रथियों को युद्ध में ४७ व्याकुल करता जयद्रथ के सम्मुख गया और टेढ़े पर्ववाले चौंसठ बाणों से घायलकिया ४८ शूरवीर जयद्रथ के सम्मुख जाते हुए अर्जुन को देखकर सब लोग उसके जीवन से निराश हुए ४६ हे प्रभो ! आपका जो २ शूरवीर उस युद्ध में अर्जुन के सम्मुख दौड़ा उस २ के शरीर में वह नाशकारी बाण समागये ५० विजय करनेवालों में श्रेष्ठ अर्जुन ने अग्नि की किरण के समान बाणों से आपकी सेना को धड़ों से पूर्णकिया ५१ हे राजन् ! तब अर्जुन आपकी चतुरङ्गिणी सेना को व्याकुलकरके जयद्रथ के पास गया ५२ पचास बाण से अश्वत्थामा को बीस बाण से वृषसेन को घायल करके दयावान् अर्जुन ने कृपाचार्य को नौबाणों से घायल किया ५३ शल्य को सोलह बाणों से कर्ण को बारह बाण से और जयद्रथ को चौंसठ बाण से घायल करके सिंह के समान गर्जा ५४ गाण्डीव धनुषधारी के बाणों से उस प्रकार घायल होकर बड़े क्रोध युक्त जयद्रथ ने ऐसे नहीं सहा जैसे कि चाबुकों से पीड़ित हाथी होता है उस बराहध्वज जयद्रथ ने शीघ्रही सीधे चलनेवाले क्रोधभरे सर्प के समान और कारीगर के साफ़ कियेहुए कानतक खैंचेहुए बाणों को अर्जुन के रथपर फेंका

फिर तीन बाणों से केशवजी को और छः नाराचों से अर्जुन को घायल करके ५५।५७ एक बाण से ध्वजा को और आठ बाणों से घोड़ों को घायल किया फिर अर्जुन ने शीघ्रही जयद्रथ के चलायेहुए बाणों को हटाकर ५८ एक ही वार में दो बाणों से उसके सारथी के शिर को काटकर उसकी अलंकृत ध्वजा को भी काटा ५६ अर्जुन के बाण से घायल वह जयद्रथ की ध्वजा का बहुत बड़ा देदीप्य अग्नि के समान बराह जिसकी कि यष्टी टूटगई थी गिरपड़ा ६० हे राजन्! उसी समय सूर्य के शीघ्र जाने पर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले ६१ हे महाबाहो, अर्जुन! इस जयद्रथ को छः महारथी वीरोंने अपने मध्य में किया है यह जीवन की इच्छा किये महाभयभीत नियत है ६२ हे महारथिन्, अर्जुन! युद्ध में इन छः महारथियों के विना विजय किये जयद्रथ मारने के योग्य नहीं है तुम बड़ी सावधानी से प्रहार करो ६३ मैं यहां सूर्य के अस्तङ्गत होने में योग करूंगा वह अकेला जयद्रथ ही सूर्य को अस्तङ्गत देखेगा ६४ हे प्रभो, अर्जुन! वह जीवन की इच्छा करनेवाला दुराचारी जयद्रथ प्रसन्नता से तेरे नाश के लिये अपने को किसी दशा में भी नहीं छुपावेगा ६५ हे कौरवों में श्रेष्ठ! उस समयपर तुझको इस पर प्रहार करना चाहिये सूर्य अस्त हुआ यह ध्यान न करना चाहिये ६६ अर्जुन ने केशवजी को उत्तर दिया कि तथास्तु ऐसा होय उसके पीछे योग से युक्त योगी और योगियों के ईश्वर हरि श्रीकृष्णजी से सूर्य के गुप्त होने के निमित्त अन्धकार उत्पन्न करने पर सूर्य अस्तहुआ जानकर ६७।६८ आपके शूरवीर अर्जुन के नाश से प्रसन्न हुए हे राजन्! उन प्रसन्न मन हुए सेना के लोगों ने मुखोंको ऊंचा करके सूर्य को देखा ६६ तब उस राजा जयद्रथ ने भी सूर्य की ओर दृष्टि करी तब सूर्य को उस जयद्रथ के दिखाई देनेपर ७० श्रीकृष्णजी अर्जुन से फिर यह वचन बोले कि हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तुझसे अत्यन्त निर्भय होकर सूर्य को देखनेवाले वीर जयद्रथ को देखो हे महाबाहो! इस दुरात्मा के मारने का यही समय है ७१।७२ शीघ्रही इसके शिर को काटकर अपनी प्रतिज्ञा की सफलता को कर केशवजी से इस वचन को सुनकर प्रतापवान् अर्जुन ने ७३ सूर्याग्नि के समान प्रकाशित बाणों से आप की सेना को मारा बीस बाण से कृपाचार्य को और पचास बाण से कर्ण को ७४ और छः बाणों से शल्यसमेत

दुर्योधन को आठ बाण से वृषसेन को और साठ बाणों से जयद्रथ को घायल किया ७५ हे राजन्! वह महाबाहु पाण्डुनन्दन इसी रीति से आपके पुत्रों को भी कठिन घायल करके जयद्रथ के पास गया ७६ जयद्रथ के रक्षकों ने अग्नि के समान चाटनेवाले सम्मुख नियत हुए अर्जुन को देखकर बड़े सन्देह को किया ७७ हे महाराज! फिर आपके सब विजयाभिलाषी शूरवीरों ने युद्ध में बाणों की धाराओं से इन्द्र के पुत्र अर्जुन को सींचा ७८ बहुत बाणजालों से ढकाहुआ वह अजेय महाबाहु कौरवनन्दन अर्जुन क्रोध से पूरित हुआ ७६ इसके पीछे इन्द्रनन्दन पुरुषोत्तम अर्जुन ने सेना के मारने की इच्छा से बाण-जालों को उत्पन्न किया हे राजन्! वीर अर्जुन के हाथ से घायल और भयभीत आपके शूरवीरों ने युद्ध में जयद्रथ को त्याग किया और दो पुरुष भी साथ में न रहे ८०। ८१ वहां हमने अर्जुन के अपूर्व पराक्रम को देखा जो कर्म उस यशवान् ने किया वह न हुआ है न होनेवाला है ८२ अर्थात् हाथी हाथी के सवार घोड़े घोड़ों के सवार और सारथीलोगों को भी ऐसे मारा जैसे कि रुद्रजी पशुओं को मारते हैं ८३ हे राजन्! उस युद्ध में हाथी घोड़े और मनुष्यों में ऐसा किसीको नहीं देखा जो कि अर्जुनके बाणोंसे घायल नहीं हुआ हो ८४ अँधेरे और धूलि से गुप्तनेत्रवाले शूरवीर घोरमोह में प्रवृत्त हुए और एक ने दूसरे को नहीं जाना ८५ हे भरतवंशिन्! बाणों से छिदे मर्म कालसे प्रेरित वह सेना के लोग घूमें और घूम २ कर चलायमान गिरेहुए पीड़ावान् और मृतक-प्राय शरीर हुए ८६ उस बड़े भयकारी प्रलय के समान कठिनता से पारहोने के योग्य बड़े भयानक युद्ध के वर्तमान होनेपर रुधिर की आर्द्रता और वायुकी तीव्रतासे और पृथ्वी को रुधिरसे आर्द्र होनेपर पृथ्वी की धूलि दबगई ८७।८८ नाभिपर्यन्त रुधिर में रथ के चक्र डूबगये हे राजन्! युद्धभूमि में आपके पुत्रों के मतवाले और वेगवान् ८६ टूटे अङ्ग मृतक सवारवाले हज़ारों हाथी अपनी सेना को मर्दन करते क्रन्दित चिग्घाड़ों को मारते भागे ६० और अर्जुन के बाणों से घायल पत्तिलोग और घोड़े जिनके कि सवार गिरपड़े थे वह सब भी भयभीत होकर भागे ६१ फैलेहुए बाल कवचों से रहित घावों से रुधिर बहाते भयभीत लोग युद्ध को त्यागकरके भागे ६२ वहां कोई तो पृथ्वी में दुःखी हो-गये कोई मृतक हाथियों में गुप्त होगये हे राजन्! अर्जुन ने इस प्रकार से आप

की सेना को भगाकर जयद्रथके रक्षकों को घोर शायकों से घायल किया ९३।९४ अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणजालों से अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कर्ण, शल्य, वृषसेन और दुर्योधन को ढक दिया ९५ हे राजन् ! वह अर्जुन शीघ्र अस्त्र चलाने से युद्ध में बाणों को पकड़ता चढ़ाता खैंचता और छोड़ता हुआ किसी दशा में भी दृष्टि में नहीं आया ९६ इस बाण चलानेवाले का वह धनुषमण्डलही दि-खाई पड़ा और चारों ओर को घूमते हुए शायक दिखाई पड़े ९७ कर्ण और वृष-सेन के धनुष को काटकर भल्लसे शल्यके सारथी को रथकी नीढ़से गिराया ९८ बड़े विजयी अर्जुन ने युद्ध में उन दोनों मामा भानजे अश्वत्थामा और कृपा-चार्य को बाणों से अत्यन्त घायल करके ९९ और इसरीति से आपके महा-रथियों को व्याकुल करके अग्निरूप घोर बाण को निकाला १०० इन्द्रवज्र के समान विख्यात दिव्य अस्त्र से अभिमन्त्रित सब भार के सहनेवाले सदैव माला से पूजित बड़े बाण को १०१ विधिपूर्वक वज्र अस्त्र से मिलाकर फिर उस कौरवनन्दन महाबाहु ने शीघ्रही धनुषपर चढ़ाया हे राजन् ! उस अग्नि के समान प्रकाशमान बाण के चलानेपर अन्तरिक्ष में जीवों के बड़े शब्द हुए१०२।१०३ फिर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजी बोले हे अर्जुन ! दुरात्मा जयद्रथ के शिरको काट १०४ क्योंकि सूर्य पहाड़ों में श्रेष्ठ अस्ताचल को जाना चाहताहै और जयद्रथ के मारने में इस मेरे वचन को सुन १०५ राजा जयद्रथ का पिता वृद्धक्षत्र नाम संसार में विख्यातहुआहै उसने इसलोक में बहुतकाल पीछे जयद्रथ नाम पुत्र को पाया है १०६ मेघ दुन्दुभी के समान शब्दायमान शरीररहित गुप्तवाणी ने उस शत्रुहन्ता राजा वृद्धक्षत्र से कहा है कि १०७ हे समर्थ। राजा वृद्धक्षत्र तेरा पुत्र कुलस्वभाव और विजयकीर्तिवाला होगा १०८ क्षत्रियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और लोक में बड़ा मान्य होगा परन्तु अत्यन्त क्रोध-युक्त क्षत्रियों में श्रेष्ठ वह पुरुष युद्ध में इसके शिर को काटेगा जोकि पृथ्वीपर दिखाई नहीं पड़ेगा शत्रुओं का पराजय करनेवाला राजा सिन्धु इस वचनको सुन बड़ी देरतक ध्यानकरके १०९ पुत्र के स्नेहबद्ध ने अपने ज्ञातिवालों से यह कहा कि जो पुरुष युद्ध में लड़नेवाले और बड़े भार के उठानेवाले ११०।१११ मेरे पुत्र के शिरको पृथ्वीपर गिरावेगा उसका भी मस्तक सौ टुकड़े होगा ११२ वृद्धक्षत्र इतना कहकर इस जयद्रथ को राज्यपर नियत करके वन को गया और

उग्रतप में नियत हुआ ११३ हे वानरध्वज, अर्जुन ! वह तपस्वी वृद्धक्षत्र इस स्यमन्तपञ्चक से बाहर कठिनता से करने के योग्य घोर तप को तपरहा है ११४ हे शत्रुहन्तः, भीमसेन के छोटे भाई, भरतवंशिन्, अर्जुन ! इस हेतु से तुम इस बड़े युद्ध में महाघोर दिव्य अस्त्र से जयद्रथ के शिरको काटकर ११५ फिर उस जयद्रथ के कुण्डलधारी शिर को इस वृद्धक्षत्र की गोद में गिराओ ११६ जो तुम इसके शिरको पृथ्वीपर गिराओगे तो तुम्हारे भी शिर के सौ टुकड़े निस्सन्देह होंगे ११७ जिस प्रकार कि वह तप में युक्त राजा वृद्धक्षत्र उसको न जाने हे कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन ! दिव्य अस्त्रों के आश्रयवाले तुम भी उसी प्रकार से करो इसके पीछे तुम उसके शिर को पृथ्वीपर गिराओगे हे इन्द्रनन्दन ! तीनों लोकों में भी तुमको कोई कर्म करना कठिन नहीं है और कोई बात ऐसी नहीं है जिसको तुम किसी स्थान में न करसको ११८।१२० होठों को चाटतेहुए अर्जुन ने इस वचन को सुनकर इन्द्रवज्र के समान स्पर्शवाले दिव्यमन्त्र से अभिमन्त्रित १२१ सब भार के सहनेवाले सदैव सुगन्धित मालाओं से पूजित जयद्रथ के मारने के लिये धनुषपर चढ़ाये हुए बाण को शीघ्रही छोड़ा १२२ फिर गाण्डीव धनुष से छोड़ाहुआ वह बाज के समान शीघ्रगामी बाण जयद्रथ के शिर को काटकर आकाश को उछला १२३ अर्जुन ने मित्रों की प्रसन्नता और शत्रुओं के दुःख के अर्थ बाणों से जयद्रथ के उस शिर को उठाया १२४ उस समय अर्जुन ने बाणों से जाल को फैलाकरके फिर उन छः महारथियों से भी युद्ध किया १२५ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे वहां हमने बड़े आश्चर्य को देखा जो उस बाण से जयद्रथ का शिर स्यमन्तपञ्चक से बाहर डालागया १२६ हे श्रेष्ठ ! उसी समय पर आपका सम्बन्धी वृद्धक्षत्र सन्ध्या कररहा था १२७ फिर श्यामकेश कुण्डलधारी जयद्रथ का शिर उस बैठेहुए वृद्धक्षत्र की गोदी में गिराया १२८ हे शत्रुहन्तः ! सुन्दर कुण्डलधारी वह शिर वृद्धक्षत्र का न देखाहुआ उसकी गोदी में गिरा १२९ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे उस जप के समाप्त करनेवाले वृद्धक्षत्र के उठतेही वह शिर अकस्मात् पृथ्वीपर गिरपड़ा १३० हे शत्रुहन्तः ! उस राजा के पुत्र का शिर पृथ्वीपर गिरने के समयही उसका भी शिर सौ खण्ड होगया १३१ इसके पीछे सब सेना के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और सब ने वासुदेवजी

की और अर्जुन की प्रशंसा करी १३२ हे भरतर्षभ, राजन्, धृतराष्ट्र! अर्जुन के हाथ से राजा जयद्रथ के मारेजानेपर उस अन्धकार को वासुदेवजी ने दूर किया १३३ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! आपके पुत्रों ने अपने साथियों समेत पीछेसे जाना कि यह माया वासुदेवजी की पैदा की हुई थी १३४ हे राजन्! आठ अक्षौहिणी सेना को मारकर बड़े तेजस्वी अर्जुन के हाथ से आपका जमाई जयद्रथ इस रीति से मारागया १३५ आपके पुत्रों ने जयद्रथ को माराहुआ देख कर दुःख से अश्रुपातों को गेरा और विजय से निराशहुए १३६ हे शत्रुहन्तः, राजन्, धृतराष्ट्र! अर्जुन के हाथ से जयद्रथ के मारेजाने पर केशवजी और महाबाहु अर्जुन ने शङ्ख को बजाया १३७ हे भरतवंशिन्! भीमसेन वृष्णियों में श्रेष्ठ युधामन्यु और पराक्रमी उत्तमौजा ने भी पृथक् २ शङ्खों को बजाया १३८ धर्मराज युधिष्ठिर ने उस बड़े शब्द को सुनकर महात्मा अर्जुन के हाथ से जय-द्रथ को माराहुआ माना १३९ इसके पीछे बाजों के शब्दों से अपने शूरवीरों को प्रसन्न किया और द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी वह लोग युद्ध में स-म्मुख वर्तमान हुए १४० हे राजन्! इसके पीछे सूर्यास्त होनेपर द्रोणाचार्य का युद्ध सोमकों के साथ जारी हुआ वह युद्धभी रोमहर्षण करनेवाला था १४१ फिर सब उपायों से द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी वह महारथी जयद्रथ के मरनेपर युद्ध करनेवाले हुए १४२ फिर विजय से मतवाले वह सब पाण्डव विजय को पाकर जयद्रथ को मारकर जहां तहां द्रोणाचार्य से युद्ध करने लगे १४३ इसके पीछे महाबाहु अर्जुन ने भी राजा जयद्रथ को मारकर रथियों में श्रेष्ठ आप के शूरवीरों से युद्ध किया १४४ जैसे कि देवराज इन्द्र देवताओं के शत्रु असुरों को और उदय हुआ सूर्य अन्धकार को दूर करते हैं उसी प्रकार उस अति शूरवीर अर्जुन ने चारोंओर से शत्रुओं को छिन्न भिन्न करदिया और अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को दूर किया ॥ १४५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिजयद्रथवधे षट्चत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १४६ ॥

एकसौसैंतालीस का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! अर्जुन के हाथ से उस वीर जयद्रथ के मरने पर मेरे पुत्रों ने जो २ किया वह सब मुझसे कहो १ सञ्जय बोले कि हे भरतवंशिन्! युद्ध में अर्जुन के मारेहुए जयद्रथ को देखकर क्रोधयुक्त कृपाचार्य ने २ बाणों की

बड़ी वर्षा से अर्जुन को ढकदिया और अश्वत्थामा भी रथ में सवार होकर अर्जुन के सम्मुख गये ३ इन रथियों में श्रेष्ठ दोनों ने रथ की सवारीके द्वारा दोनों ओर से तीक्ष्ण बाणों की वर्षाकरी ४ इस प्रकार दोनों की बड़ी बाणवर्षा से पीड्यमान उस रथियों में श्रेष्ठ महाबाहु अर्जुन ने बड़ी पीड़ा को पाया ५ उस युद्ध में गुरु को और गुरुपुत्र को न मारने के अभिलाषी उस कुन्तीनन्दन अर्जुन ने अस्त्रों के अभ्यास की पूर्णता को प्रकट किया ६ न मारने के अभिलाषी अर्जुन ने अश्वत्थामा और कृपाचार्य के अस्त्रों को अपने अस्त्रों से रोककर मन्द वेगवाले बाणों को उन दोनों के ऊपर छोड़ा ७ अर्जुन से छोड़े हुए उन विशिखनाम बाणों ने भी उनको अत्यन्त घायल किया और उन दोनों ने बाणों की आधिक्यता से बड़ी पीड़ा को पाया ८ हे राजन् ! फिर अर्जुन के बाणों से पीड्यमान कृपाचार्य रथ के स्थान में ही व्याकुल हुए और मूर्च्छा को पाया ६ सारथी बाणों से पीड़ित अपने स्वामी को अचेत जानकर और मरणप्राय समझकर दूर लेगया १० हे महाराज ! युद्ध में उस कृपाचार्य के पराजय होनेपर अश्वत्थामाजी भी अर्जुन से हटगये ११ उस बड़े धनुषधारी अर्जुन ने कृपाचार्य को रथ के ऊपर बाणों से पीड़ित और अचेत देखकर बड़ा विलाप किया १२ और अश्रुपूरित महादुःखी होकर यह वचन बोला कि बड़े ज्ञानी और इस नाश के देखनेवाले विदुरजी ने कुल के नाश करनेवाले दुर्योधन के उत्पन्न होनेपर राजा धृतराष्ट्र से यह कहा था कि बहुत अच्छा है इस कुलकलङ्की को परलोक में पहुँचाना चाहिये १३। १४ इससे उत्तम २ कौरवों को महाभय उत्पन्न होगा उस सत्यवक्ता का अब वह वचन वर्तमान हुआ १५ अब उस दुर्योधन के कारण से गुरुजी को नरशय्यापर वर्तमान देखता हूं क्षत्रिय के आचार बल और पराक्रम को धिक्कार है १६ मुझ सा कौन सा मनुष्य ब्राह्मण गुरु से शत्रुता करे मेरे आचार्य ऋषि के पुत्र हैं और द्रोणाचार्य के मित्र हैं १७ यह कृपाचार्य मेरे बाणों से पीड्यमान रथ के स्थान पर सोते हैं अनिच्छा सेही मैंने विशिखनाम बाणों से पीड्यमान किये १८ यह गुरुजी बैठने के स्थान में व्याकुल होकर मेरे प्राणों को पीड़ा देते हैं पुत्र के शोक से दुःखी बाणों से पीड़ित १६ उस पाप धर्मपर चलने वाले मुझ क्षत्रिय के बहुत बाणों से घायल यह गुरुजी निश्चय करके मेरे पुत्र के मरने से फिर मुझको शोचते हैं २० श्रीकृष्णजी इस दशा में

शुक्र अपने रथपर पड़ेहुए कृपाचार्य को देखो जो उत्तम लोग गुरुओं से विद्या को पढ़कर २१ इस लोक में अभीष्ट दक्षिणाओं को देते हैं वह देवभाव को पाते हैं और नीच दुराचारी पुरुष गुरुओं से विद्या को लेकर २२ उनकोही मारते हैं वह निश्चय करके नरकगामी हैं मैंने यह कर्म अवश्य नरकके निमित्त किया २३ बाणों की वर्षा से रथपर कृपाचार्यजी को पीड्यमान करनेवाले मैंने ऐसा किया पूर्व समयमें अस्त्रविद्या को उपदेश करते समय कृपाचार्यने मुझसे कहाथा २४ कि हे कौरव! किसी दशा में भी गुरुपर न प्रहार करना चाहिये इन महात्मा आचार्यजी का वह वचन २५ अब युद्धभूमि में बाणों की वर्षा करनेवाला मैं काम में न लाया उस बड़े पूजा के योग्य मुख न मोड़नेवाले कृपाचार्य के अर्थ नमस्कार है २६ हे श्रीकृष्णजी! मुझको धिक्कार है जो मैं इनपर प्रहार करता हूं उन कृपाचार्य के रथ के पास इस रीति से अर्जुन के विलाप करने पर कर्ण जयद्रथ को मारा देखकर सम्मुख गया २७। २८ दोनों पाञ्चालदेशीय और सात्यकी अकस्मात् सम्मुखता में गये महारथी अर्जुन सम्मुख आनेवाले कर्ण को देखकर २९ हँसताहुआ वासुदेवजी से यह वचन बोला कि यह कर्ण सात्यकी के रथपर आता है ३० निश्चय करके यह युद्ध में भूरिश्रवा का मृतक देखना नहीं सहता है हे जनार्दनजी! जहांपर जाताहै वहांपर आप इन घोड़ों को चलायमान करो ३१ यह कर्ण सात्यकीको भूरिश्रवा के मार्ग में नहीं पहुँचावे अर्जुनके इस वचनको सुनकर महाबाहु केशवजी ३२ समयके अनुसार इस वचन को बोले कि हे अर्जुन! यह महाबाहु अकेला सात्यकी भी कर्ण के लिये बहुत है ३३ फिर द्रौपदी के पुत्रोंसमेत यह यादव सात्यकी क्यों न समर्थ होगा हे अर्जुन! तेरा युद्ध कर्ण के साथ तबतक योग्य नहीं है ३४ जबतक बड़ी उल्का के समान ज्वलितरूप इन्द्र की शक्ति इसके पास वर्तमान है हे शत्रुओं के मारनेवाले! यह पूजित शक्ति तेरेही निमित्त रक्षा की जाती है ३५ इस हेतु से कर्ण इच्छानुसार सात्यकी के सम्मुख खुशी से जाय हे अर्जुन! मैं इस दुरात्मा के काल को जतलाऊंगा जिस समय तू इसको तीक्ष्ण बाण से पृथ्वीपर गिरावेगा ३६ धृतराष्ट्र बोले कि भूरिश्रवा के मरने और जयद्रथ के गिरानेपर कर्ण के साथ वीर सात्यकी का जो यह संग्राम है ३७ और रथ से विहीन सात्यकी और चक्र के रक्षक दोनों पाञ्चालदेशीय किस रथ पर सवार हुए हे सञ्जय! वह मुझ से

कहो ३८ सञ्जय बोले कि बड़े युद्ध में जैसा २ वृत्तान्त हुआ है उसको कहताहूं आप स्थिरचित्त होकर अपने दुष्टकर्म को सुनो ३६ हे प्रभो! प्रथमही श्रीकृष्णजी ने अपने चित्त से इस बात को जाना था जैसे कि वीर सात्यकी भूरिश्रवा के हाथ से विजय करने के योग्य था ४० हे राजन्! वह श्रीकृष्णजी भूत भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालों की बातों को जानते हैं हे राजन्! उस महाबली ने इस हेतु से दारुक सारथी को बुलाकर आज्ञा करी ४१ कि मेरा रथ विधि के अनुसार जोड़ो देवता, गन्धर्व, यक्ष, सर्प, राक्षस ४२ और मनुष्य इनमें से कोई भी श्रीकृष्ण और अर्जुन के विजय करने को समर्थ नहीं है जिनमें मुख्य ब्रह्माजी हैं उन देवता और सिद्धों ने उनको जाना है ४३ उन दोनों का बड़ा प्रभाव है और जैसे वह युद्ध हुआ उसको उसी प्रकार से कहता हूं कि माधवजी ने सात्यकी को रथ से रहित और कर्ण को युद्ध में सन्नद्ध देखकर ४४ बड़े शब्दवाले शङ्ख को बड़े स्वर से बजाया दारुक ने उस इङ्गित को जानके और शङ्ख के शब्द को सुनकर ४५ गरुड़ मूर्तिवाले ऊंची ध्वजा रखनेवाले रथ को उसके पास पहुँचाया वह शिनी का पौत्र सात्यकी केशवजी की सलाह से उस दारुक सारथी से युक्त ४६ अग्नि सूर्य के समान रथपरसवार हुआ इच्छानुसार चलनेवाले बड़े वेगवान् सुवर्ण के सामानों से अलंकृत शैब्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, बलाहकनाम बड़े घोड़ों से संयुक्त विमानरूप उस रथपर चढ़कर ४७। ४८ बहुत शायकों को फैलाता हुआ सात्यकी कर्ण के सम्मुख गया और चक्ररक्षक युधामन्यु और उत्तमौजा ४९ अर्जुन के रथ को छोड़कर कर्ण के सम्मुख गये हे महाराज! अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण भी बाणों की वर्षा को छोड़ता ५० अजेय सात्यकी के सम्मुख गया उस प्रकार का युद्ध देवता गन्धर्व और असुरों का भी पृथ्वी और स्वर्ग में नहीं सुनागया जिसको देखकर रथ, घोड़े, हाथी और मनुष्यों समेत सब सेना भी युद्ध करने से ठहरगई ५१। ५२ अर्थात् वह सब लोग उन दोनों के कर्मों को देखकर अचेत थे उसके पीछे सबने भी उस बुद्धि से बाहरवाले युद्ध को देखा ५३ हे राजन्! उन दोनों का युद्ध और दारुक का सारथीपन गत प्रत्यागत मण्डल और रथसवार काश्यपगोत्रीय सारथी के कर्म से आकाश में वर्तमान देवता गन्धर्व और पृथ्वी के सब मनुष्य आश्चर्यित होकर कर्ण और सात्यकी के युद्ध को देखने में प्रवृत्त हुए वह दोनों पराक्रमी

ईर्षा करनेवाले युद्ध में मित्र के लिये पराक्रम करनेवाले हुए ५४। ५६ हे महाराज! देवताओं के समान कर्ण और सात्यकी ने परस्पर बाणों की वर्षा को बरसाया ५७ भूरिश्रवा और जलसिन्धु के मारने को क्षमा न करनेवाले कर्ण ने शायकों की वर्षा से शिनी के पौत्र सात्यकी को घायलकरके अचेत करदिया ५८ हे शत्रुविजयिन्! शोक से पूर्ण बड़े सर्प की समान श्वास लेता नेत्रों से भस्मकरता क्रोधयुक्त कर्ण ५६ तीव्रता से फिर सात्यकी के सम्मुख दौड़ा तब सात्यकी उसको क्रोधयुक्त देखकर ६० बड़ी बाणों की वर्षा से ऐसे युद्ध करने लगा जैसे कि हाथी के साथ हाथी युद्ध करता है व्याघ्र के समान वेगवान् अनुपम पराक्रमी सम्मुख होनेवाले नरोत्तमों ने ६१ युद्ध में परस्पर घायल किया हे धृतराष्ट्र! इसके अनन्तर सात्यकी ने अत्यन्त लोहमयी बाणों से कर्ण को सब अङ्गोंपर फिर घायल किया और भल्ल से उसके सारथी को रथ की नीड़ से गिरा दिया ६२। ६३ और तीक्ष्णबाणों से उसके चारों श्वेतघोड़ों को मारा हे पुरुषोत्तम! फिर ध्वजा को काटकर रथ के सौ टुकड़े किये ६४ इसरीति से आपके पुत्र के देखतेहुए सात्यकी ने कर्ण को विरथ करदिया हे राजन्! फिर आपके उदासरूप महारथी ६५ कर्ण का पुत्र वृषसेन मद्रदेश का राजा शल्य और अश्वत्थामा इन तीनों ने सात्यकी को सबओर से घेरलिया ६६ इसके पीछे सब सेना महाव्याकुल हुई और कुछ नहीं जानागया हे राजन्! इसप्रकार सात्यकी के हाथ से वीर कर्ण के विरथ करनेपर ६७ सब सेनाओं में बड़ा हाहाकार हुआ सात्यकी के बाणों से विरथ कियाहुआ कर्ण भी ६८ श्वास लेताहुआ शीघ्रही दुर्योधन के रथपर सवार हुआ लड़कपन सेही आपके पुत्र की प्रीति को मानता ६६ और राज्यप्रदान की हुई प्रतिज्ञा को पूरी करना चाहता रथपर सवार हुआ हे राजन्! इस प्रकार रथ से रहित कर्ण को और दुश्शासनादिक आप के वीर पुत्रों को ७० प्रबल होनेवाले सात्यकी ने नहीं मारा पूर्वसमय में भीमसेन और अर्जुन की कीहुई प्रतिज्ञा की रक्षा करते हुए सात्यकीने ७१ उनको रथ से रहित और अचेत भी किया परन्तु प्राणों से पृथक् नहीं किया क्योंकि भीमसेन ने तेरे पुत्रों के मारने की प्रतिज्ञा करी ७२ और अर्जुन ने दूसरे द्यूत में कर्ण के मारने की प्रतिज्ञा करी इसके अनन्तर उन कर्ण आदिकों ने सात्यकी के मारने में उपाय किया ७३ परन्तु वह सब अनेक उपायों से

भी उस महारथी सात्यकी के मारने को समर्थ नहीं हुए उनके नाम अश्वत्थामा, कृतवर्मा, आदि अन्य २ महारथी थे धर्मराज के प्रियकारी परलोक के चाहनेवाले सात्यकी ने एकही धनुष के द्वारा हज़ारों क्षत्रियलोग विजय किये ७४ । ७५ पराक्रममें श्रीकृष्ण और अर्जुन के समान शत्रुसन्तापी हँसते हुए सात्यकी ने आपकी सेनाओं को विजय किया ७६ हे नरोत्तम ! लोक में श्रीकृष्णजी धनुषधारी अर्जुन और तीसरा सात्यकी इन तीनों धनुषधारियों के विशेष चौथा कोई धनुषधारी नहीं वर्तमान है ७७ धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें श्री कृष्णजी के समान सात्यकी ने वासुदेवजी के अजेय रथपर सवार होकर कर्ण को रथ से हीन करदिया ७८ अपने भुजबल से अहङ्कारी वह शत्रुसन्तापी दारुक सारथी समेत कहीं दूसरे रथपर भी सवार हुआ ७९ मैं उसको सुना चाहता हूं क्योंकि तुम वर्णन करने में सावधान हो मैं जिसको असह्य मानता हूं हे सञ्जय! उसको मुझसे कहो ८० सञ्जय बोले कि हे राजन् ! जैसा वृत्तान्त है उसको सुनो दारुक के छोटेभाई बड़े बुद्धिमान् ने शीघ्र रीति से अलंकृत ८१ लोहे और सुनहरी वस्त्रों से भी अलंकृतग्रीवा हज़ारों नक्षत्रों से जटित सिंहरूप ध्वजा पताकावाले ८२ वायु के समान शीघ्रगामी सुवर्ण के सामानों से शोभित चन्द्रवर्ण और सब शब्दों को उल्लङ्घन करके चलनेवाले दृढ़ और सुनहरी जड़ाव के कवच रखनेवाले और घोड़ों में श्रेष्ठ सिन्धुदेशीय घोड़ों से युक्त घण्टाजालों के शब्दों से व्याकुल शक्ति तोमररूप बिजली रखनेवाले ८३।८४ युद्ध के सामान और अनेक प्रकार के शस्त्रों से युक्त बादल के समान गम्भीर शब्द रखने वाले रथ को तैयार किया ८५ सात्यकी उस रथपर सवार होकर आपकी सेना के सम्मुख गया दारुक भी इच्छानुसार केशवजी के पास गया ८६ हे राजन् ! शङ्ख और गौ के दुग्धसमान श्वेत सुनहरी जड़ाऊ कवच रखनेवाले बड़े वेगवान् उत्तम घोड़ों से और सुनहरी कक्षावाली ध्वजा से युक्त अपूर्व यन्त्र और पताका से युक्त बहुत से शस्त्रों से पूर्ण अच्छे सारथीवाले उत्तम कर्ण के रथ को भी ८७।८८ वर्तमान किया कर्ण भी उसपर बैठकर शत्रुओं के सम्मुख गया यह जो २ आपने पूछा वह सब आपसे वर्णन किया ८९ फिर भी अपने अन्याय से होने वाले इस विनाश को सुनो कि भीमसेन ने आपके इकतीस पुत्र मारे ९० सदैव कठिन युद्ध करनेवाले दुर्मुख को आदि लेकर सात्यकी और अर्जुन ने हज़ारों

शूरवीरों को मारा ६१ हे भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र! इस प्रकार आपकी कुमन्त्रता में भीष्म और भगदत्त आदि करके यह विनाश वर्तमान हुआ॥ ६२॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिकर्णसात्यकीयुद्धेसप्तचत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः॥ १४७॥

एकसौअड़तालीस का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! तब मेरे और पाण्डवों के शूरवीरों की उस दशा के होनेपर भीमसेन अर्जुन और सात्यकी ने क्या किया १ सञ्जय बोले कि रथ से विहीन कर्ण के वचनरूप भालों से पीड़ित क्रोध के वशीभूत भीमसेन ने अर्जुन से यह वचन कहा २ कि हे अर्जुन! कर्ण ने जो यह वचन आपके देखते हुए मुझसे कहे कि हे बड़े भोजन करनेवाले, बहुत उदर रखनेवाले, अज्ञान, अस्त्रों से अभिज्ञ, युद्ध में नपुंसक, बालक, भीमसेन! युद्ध मत करो ३ यह वचन कर्ण ने वारंवार कहा ऐसे प्रकार से कहनेवाला मेरे हाथ से मारने के योग्य है हे भरतवंशिन्! मुझको उसने इस प्रकार से कहा है और ऐसा कहनेवाला मुझसे मारने के योग्य है ४ हे महाबाहो! मैंने यह व्रत आपके साथ किया हे अर्जुन! जैसा कि तेरा व्रत है उसी प्रकार निस्सन्देह मेरा भी व्रत है ५ हे नरोत्तम, अर्जुन! उसके मारने के निमित्त इस मेरे वचन को स्मरण करो और वह जिस प्रकार से सत्य होय उसी प्रकार से करो ६ उस बड़े पराक्रमी भीमसेन के उस वचन को सुनकर युद्ध में अर्जुन कुछ समीप जाकर कर्ण से बोले ७ हे अपनी प्रशंसा करनेवाले, अधर्मबुद्धे, निरर्थकदृष्टिवाले, सूतपुत्र! मेरे इन वचनों को सुन ८ युद्ध में शूरों के कर्म दो प्रकार के हैं एक विजय और दूसरी पराजय युद्ध करनेवाले इन्द्र के भी वह दोनों कर्म विनाशवान् हैं ९ मृत्यु का चाहनेवाला इन्द्रियों से आकुल और विरथ होकर मुझसे मारने के योग्य तुझको जानकर युद्ध में विजय करके तुमको जीवता छोड़दिया १० जो तुमने युद्ध में लड़नेवाले महाबली भीमसेन को किसी दशा में दैवयोग से विरथ करके रूखे और अयोग्य वचन कहे ११ यह बड़ा अधर्म है और अच्छे लोगों से करने के योग्य नहीं है शत्रु को विजयकरके अपनी प्रशंसा नहीं करते हैं और न कठोर वचन कहते हैं १२ नरोत्तम शूर और सन्तलोग किसी की निन्दा नहीं करते हैं हे सूत के पुत्र! तुम प्राकृतबुद्धि रखनेवाले होकर ऐसे २ वचनों को कहते हो १३ युद्ध करनेवाले पराक्रमी शूर और श्रेष्ठलोगों

के व्रत में प्रीति रखनेवाले भीमसेन को जो तुमने अत्यन्त निरर्थक सुनने के अयोग्य चपलता से अनभ्यस्त अप्रियवचन कहे वह तेरे वचन सत्य नहीं हैं सब सेनाओं के और केशवजी समेत मेरे देखते १४। १५ युद्ध में तू बहुधा भीमसेन से विरथ कियागया है पाण्डव भीमसेन ने उस २ समयपर तुमको कभी कठोर वचन नहीं कहा १६ जोकि तुमने भीमसेन को ऐसे अयोग्य और रूखे वचन सुनाये और अभिमन्यु मेरी अविद्यमानता में तुम्हारे हाथसे मारागया १७ इस हेतु से इस पापकर्म के फल को शीघ्र पावोगे हे दुर्बुद्धे! तुमने अपने नाश के लिये उसके धनुष को काटा १८ हे अज्ञानिन्! इसहेतु से भृत्यपुत्र और बान्धवों समेत मेरे हाथ से तू मारने के योग्य है तुम सब कर्मों को करो तेरे निमित्त बड़ाभय उत्पन्न होगा १९ युद्ध में तेरे देखतेहुए वृषसेन को मारूंगा और जो दूसरे राजालोग भी भूल से मेरे सम्मुख आवेंगे उन सब को भी मारूंगा मैं सत्यता से शस्त्रों की शपथ खाता हूं हे अज्ञानिन्, निर्बुद्धे! युद्ध में अपने को बुद्धिमान् माननेवाले तुझको २०। २१ गिरा हुआ देख वह निर्बुद्धि दुर्योधन अत्यन्त दुःखी होगा अर्जुन की ओर से कर्ण के पुत्र के मारने की प्रतिज्ञा करनेपर २२ रथीलोगों के बड़े कठिन शब्द हुए उस बड़े भयकारी कठिन युद्ध के वर्तमान होनेपर २३ मन्द किरणों का रखनेवाला सूर्य अस्ताचल के पास गया हे राजन्! इसके पीछे इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी युद्ध के मुखपर नियत २४ प्रतिज्ञा पूरी करनेवाले अर्जुन से मिलकर यह वचन बोले हे विजय के अभ्यासिन्, अर्जुन! तुम ने प्रारब्ध से अपनी बड़ी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया २५ और प्रारब्ध से पापी वृद्धक्षेत्र अपने पुत्र समेत मारागया हे भरतवंशिन्, अर्जुन! देवताओं की सेना भी दुर्योधन की सेना को पाकर २६ युद्ध में पीड़ा को पाती है इसमें विचार न करना चाहिये हे पुरुषोत्तम! मैं विचार करता हुआ लोकों में कहीं उस पुरुष को नहीं देखता हूं २७ जो इस सेना से युद्ध करे दुर्योधन के कारण से इकट्ठे होनेवाले बड़े प्रभाववाले अपनी समान और अपने से भी अधिक बहुत से राजालोग तुम्हारे सम्मुख हुए क्रोधयुक्त कवचधारी वह सब शूरवीर तुझको युद्ध में पाकर सम्मुख वर्तमान नहीं रहे २८। २९ कोई युद्ध में रुद्र इन्द्र और यमराज की समानता रखनेवाले तेरे इस प्रकार के बल पराक्रम के करने को समर्थ नहीं हुए ३० अब जिस प्रकार के पराक्रम को

हे शत्रुसन्तापिन्! तुझ अकेले ने किया इसी प्रकार भाईआदि समेत दुरात्मा कर्णके मारेजानेपर ३१ तुझ विजय करनेवाले की जिसके कि शत्रु मारेगये फिर प्रशंसा करूंगा अर्जुन ने उनको उत्तर दिया कि हे माधवजी! यह सब आपही की कृपा से हुआ और आगे भी सब पूरा होगा ३२ यह प्रतिज्ञा जो मैंने पूरी की है इसको देवता भी कठिनता से पूरी करसक्ते हैं उनलोगों की विजय आश्चर्य से रहित है जिन लोगों के सहाय और साथ में हे केशवजी! आप हो ३३ हे प्रभो, श्रीकृष्णजी! राजा युधिष्ठिर आपकी कृपा से सम्पूर्ण पृथ्वी को पावेंगे यह आपकाही प्रभाव है और आपही की विजय है ३४ हे मधुसूदनजी! हम सदैव आपसे पोषण के योग्य हैं इसके पीछे ऐसे कहेहुए और धीरे २ घोड़ों को चलातेहुए श्रीकृष्णजी ने ३५ वह बड़ी कठिन और भयकारी युद्धभूमि अर्जुन को दिखलाई ३६ श्रीकृष्णजी बोले कि युद्ध में विजयको और विख्यात उत्तम यश को चाहते शूर राजालोग तेरे बाणों से मरेहुए पृथ्वीपर सोते हैं ३७ गिरे हुए शस्त्र और भूषणवाले घोड़े रथ और हाथियों से जुदे टूटे चूर्णीभूत कवच वाले उन लोगों ने बड़ी व्याकुलता को पाया ३८ सजीव निर्जीव बड़े प्रकाशित रूपों से युक्त हैं निर्जीव राजालोग जीवते से दिखाईदेते हैं ३९ उन्हों के सुनहरी पुङ्ख बाण और नाना प्रकार के तीक्ष्ण शस्त्र सवारी और धनुषआदिकों से व्याप्त पृथ्वी को देखो ४० कवच, ढाल, हार, कुण्डलधारी, हस्तत्राण, मुकुट, माला, चूड़ामणि, वस्त्र ४१ कण्ठसूत्र, बाजूबन्द, प्रकाशित निष्क और अन्य २ जड़ाऊ भूषणों से पृथ्वी प्रकाशमान होरही है हे भरतवंशिन्! ४२ अनुकर्ष, उपासङ्ग, पताका, ध्वजा, वस्त्र, अधिष्ठान, ईशादण्ड, कबन्धुर ४३ चूर्ण, कियेहुए अपूर्व रथचक्र, अनेक प्रकार के अक्ष, युग, योक्त्र, कलाप, धनुष, शायक, प्रस्तोम, कुथा, परिघ, अंकुश, शक्ति, भिन्दिपाल, तूणीर, शूल, फरसे ४४। ४५ प्रास, तोमर, कुन्त, यष्टी, शतघ्नी, भुशुण्डी, खड्ग, मुशल, मुद्गल, गदा, कणप, सुवर्णजटित कशा ४६। ४७ और गजेन्द्रों के घण्टे और नाना प्रकार के सामान, माला, अनेक प्रकार के भूषण, बहुमूल्य वस्त्र ४८ इन सब टूटेहुए पदार्थों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान है जैसे कि शरदऋतु का आकाश ग्रहों से शोभायमान होता है पृथ्वीपर पृथ्वी केही अर्थ पृथ्वी के स्वामी मारेगये ४९ पृथ्वी को अपने अङ्गों से ढककर ऐसे सोगये जैसे कि लोग

अपनी प्यारी स्त्रियों को छिपाकर सोते हैं शस्त्रों के प्रहारों से उत्पन्न होनेवाले गुफा मुखघावों से बहुत से रुधिर को स्रवतेहुए पर्वतों के शिखर के समान ऐरावत के समान इन हाथियों को ऐसे देखो जैसे कि कन्दरारूपी मुखों के साथ झिरनेवाले पहाड़ होते हैं ५० । ५१ हे वीर ! बाणों से घायल पृथ्वी पर झाग डालनेवाले इन हाथियों को देखो और स्वर्णमयी सामानों से अलंकृत पड़ेहुए घोड़ों को देखो ५२ हे तात, अर्जुन ! गन्धर्वनगर के रूप उन रथों को जिनके कि स्वामी मारेगये ध्वजा, पताका, अक्ष, रथ, चक्रादिक टूटे और सारथी मारे गये ५३ वह कूबरयुग टूटेहुए ईशादण्ड कबन्धुर से टूटेहुए विमानों के समान दीखनेवाले पृथ्वीपर टूटेहुए देखो ५४ हे वीर ! सैकड़ों हज़ारों मृतक पत्तिलोग और रुधिर से लिप्त सोतेहुए धनुषधारी और ढालबन्दों को देखो ५५ हे महाबाहो ! तेरे बाणों से घायलशरीर और सब अङ्गों से पृथ्वी को मिलकर सोतेहुए शूरवीरों के बालों को देखो ५६ हे नरोत्तम ! दुःख से देखने के योग्य पृथ्वी को देखो जोकि गिरायेहुए हाथी घोड़े और रथों से पूर्ण रुधिरमांसरूपी बड़ी कीच रखनेवाली और राक्षस श्वान भेड़िये और पिशाचोंको प्रसन्न करनेवाली है ५७ हे प्रभो, अर्जुन ! युद्धभूमि में यश का बढ़ानेवाला यह बड़ा कर्म तुझी में शोभित होता है इस प्रकार से बड़े युद्ध में दैत्य दानवों के मारने के अभिलाषी इन्द्रादिक देवताओं में भी श्रेष्ठ ५८ शत्रुओं के मारनेवाले और शीघ्रता से शत्रुओं की पृथ्वी अर्जुन को दिखलातेहुए श्रीकृष्णजी ने अजातशत्रु युधिष्ठिरको मिलकर जयद्रथ को मृतक हुआ वर्णन किया ५९ चमर, व्यजन, छत्र, ध्वजा, घोड़े, रथ, हाथी, अनेक प्रकार पृथक् घोड़ों के परिकर्षण ६० विचित्र कुथा बहुमूल्य सामानवाले रथ और वीरों से आच्छादित पृथ्वी को देखो मानों यह स्त्रीरूपा पृथ्वी अपूर्व वस्त्रों से अलंकृत है ६१ अलंकृत हाथियों से गिरेहुए बहुतेरे वीरों को हाथियों समेत ऐसे देखो जैसे कि वज्र से मरेहुए पर्वतों के शिखरों से गिरेहुए सिंह होतेहैं ६२ सञ्जय बोले कि इसप्रकार अर्जुन को युद्धभूमि दिखलाते और अपने विजयी वीरों से संयुक्त श्रीकृष्णजी ने पाञ्चजन्य को बजाया ॥ ६३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वएयष्टचत्वारिंशोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १४८ ॥

एकसौउनचास का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, जयद्रथ के मारेजानेपर उन अत्यन्त प्रसन्न श्रीकृष्णजी ने

धर्म के पुत्र राजायुधिष्ठिर से प्रणामपूर्वक मिलकर, यह वचन कहा १ हे राजेन्द्र, नरोत्तम ! तुम मृतक शत्रुओं से वृद्धि को पाते हो और आप के छोटेभाई ने प्रारब्ध से प्रतिज्ञा को पूरा किया २ इसके पीछे श्रीकृष्णजी के इस प्रकार कहने पर वह प्रसन्नचित्त शत्रु के पुर को विजय करनेवाला राजा युधिष्ठिर रथ से उतरकर ३ आनन्द के अश्रुपातों से भीजा हुआ कमल के समान प्रभावाले उज्ज्वल मुखको साफकरके दोनों कृष्णों से प्रीति के साथ मिला ४ और बोला कि हे कमललोचन! तुम से इस प्रिय बात को सुनकर मैं प्रसन्नता के अन्त को ऐसे नहीं पाता हूं जैसे कि पार होने का अभिलाषी मनुष्य समुद्र के अन्त को नहीं पाता है ५ हे श्रीकृष्णजी ! बुद्धिमान् अर्जुन ने यह अत्यन्त अपूर्व कर्म किया प्रारब्ध से युद्ध में भार से रहित हुए दोनों महारथियों को देखता हूं ६ और प्रारब्ध से ही मनुष्यों में नीच पापी जयद्रथ मारागया और दोनों कृष्णों ने भाग्य से मेरा बड़ा हर्ष उत्पन्न किया ७ हे गोविन्दजी ! आपसे रक्षित उस अर्जुन ने पापी जयद्रथ को मारकर मुझको बड़ा आनन्दित किया जिनके आप रक्षक हैं उन लोगों का कर्म अत्यन्त अपूर्व नहीं है ८ हे मधुसूदनजी ! सब लोक के आपही नाथ और गुरु हो आपही की कृपा से हम शत्रुओं को विजय करेंगे ९ तुम सदैव सर्वात्मभाव से हमारे प्रिय और वृद्धि में नियत हो हमने तुम्हारी शरण लेकर युद्ध प्रारम्भ किया १० हे इन्द्र के छोटेभाई ! जैसे कि युद्ध में देवताओं के हाथ से असुरों के मरने में इन्द्र को प्रसन्नता होती है उसी प्रकार आपकी कृपालुता से और अर्जुन की वीरता से मुझको प्रसन्नता प्राप्त हुई हे जनार्दनजी ! यह कर्म देवताओं से भी होना असम्भव है ११ जो इस अर्जुन ने आपके बुद्धि बल और पराक्रम के द्वारा इस कर्म को किया हे श्रीकृष्णजी ! मैंने बाल्यावस्था से ही आपके कर्मों को सुना जोकि बुद्धि से बाहर दिव्य बड़े और बहुत हैं तभी मैंने शत्रुओं को मरा हुआ और सब पृथ्वी का प्राप्त होना जानलिया १२।१३ हे इन्द्रियों के स्वामिन्, वीर, श्रीकृष्णजी ! इन्द्र ने आपकी कृपा से हजारों दैत्यों को मारकर देवताओं की ईश्वरता को पाया और स्थावर जङ्गम जगत् अपनी बुद्धि में नियत जप और होमों में प्रवृत्त है १४ पूर्व समय में यह सब जगत् जलरूप और अन्धकाररूप था हे महाबाहो, पुरुषोत्तम ! फिर आपहीकी कृपा से यह संसार प्रकट हुआ १५ जो पुरुष सब लोकों के उत्पन्न करनेवाले

अविनाशी परमात्मा श्रीकृष्णजी को देखते हैं वहकभी मोहको नहीं पाते हैं १६ हे इन्द्रियों के स्वामिन्, श्रीकृष्णजी ! जो भक्तजन आपही को आदि अन्त रखने वाला सब सृष्टि का स्वामी और अविनाशी ईश्वर जानते हैं वह सब आपत्तियों से पार होते हैं १७ जो प्रपञ्च से पृथक् पुररूप शरीर का अधिष्ठान परमात्मा और ब्रह्मादिक देवताओं का उत्पत्ति का कारण है उस पुरुषोत्तम के प्राप्त होनेवाले को बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त होता है १८ चारोंवेद जिसको गाते हैं और जो वेदों में गाया जाता है उस परमात्मा को प्राप्त होकर उत्तम ऐश्वर्यों को पाता है १६ हे परमेश्वर, ईश्वरों के भी ईश्वर, तिर्यग्गामी आदि सब नरों के ईश्वर, निष्पाप, श्रीकृष्णजी ! चिरंजीवि मार्कण्डेय ऋषि आपके चरित्रों के जाननेवाले हैं २० पूर्व समय में असित देवल और महातपस्वी नारदमुनि ने आपके माहात्म्य और अनुभाव को वर्णन किया और मेरे पितामह व्यासजी ने भी तुमको श्रेष्ठतर कहा तुम्हीं तेज हो तुम्हीं परब्रह्म हो तुम्हीं सत्य तुम्हीं बड़े सत्य २१ तुम्हीं तेज तुम्हीं उत्तम तेज तुम्हीं जगत् के कारण तुम्हीं से यह सब जड़ चैतन्यात्मक सृष्टि उत्पन्न है २२ प्रलय के होने पर यह सब जगत् फिर तुम्हीं में लय होता है हे जगत्पते ! वेदज्ञ पुरुषों ने तुम्हीं को आदि अन्त से रहित देवता विश्व का ईश्वर २३ धाता, अजन्मा, अव्यक्त, (अर्थात् माया से पृथक् कहा है) देवता भी सब सजीव जीवों के तुम आत्मा अनन्त विश्वतोमुख २४ गुप्त प्रथम जगत् के स्वामी नारायण और परमदेवता और परमात्मा ईश्वर को नहीं जानते हैं २५ जो कि ज्ञान के उत्पत्तिस्थान हरि विष्णु मोक्षाभिलाषियों के परमस्थान सब से परे प्राचीन पुरीरूप शरीरों में वास करने वाले प्राचीनों से भी परे हो २६ इस लोक और स्वर्गलोक के मध्य तीनोंकालों में प्रकट होनेवाले आपके इन अनेक प्रकार के गुण और कर्मों की संख्या का करनेवाला यहां वर्तमान नहीं हैं २७ हम सब ओर से ऐसे रक्षा के योग्य हैं जैसे कि देवता इन्द्र से रक्षा के योग्य होते हैं इन्हीं हेतुओं से सब गुणसम्पन्न तुम हमलोगों के शुभचिन्तक निश्चय किये गये २८ इस रीति से धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी की स्तुति की तब जनार्दन श्रीकृष्णजी यह योग्य वचन बोले २६ आपके उग्रतप और उत्तम धर्म साधुतापूर्वक सरलपन से पापी जयद्रथ को मारा ३० हे पुरुषोत्तम ! तेरी कृपा से संयुक्त होकर इस अर्जुन ने हजारों

शूरवीरों को मारकर जयद्रथ को मारा ३१ कर्म भुजबल निर्भयता शीघ्रता और बुद्धि की दृढ़ता में अर्जुन के समान कोई नहीं है ३२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! जो यह तेरा भाई अर्जुन है उसने युद्ध में सेना का नाश करके जयद्रथ के शिर को काटा ३३ हे राजन्! इसके पीछे प्रभु युधिष्ठिर ने अर्जुन से मिलकर और उसके मुख को साफ कर विश्वास दिया कि हे अर्जुन! तुमने बहुत बड़ा कर्म किया है यह कर्म देवताओं समेत इन्द्र से भी सहने के योग्य नहीं है ३४। ३५ हे शत्रुहन्तः! तुम प्रारब्ध से भारहित मृतक शत्रुवाले हो और प्रारब्ध से पापी जयद्रथ को मारकर यह तुम्हारी प्रतिज्ञा सत्य हुई ३६ बड़े यशस्वी राजा युधिष्ठिर ने इस प्रकार कहकर पवित्र सुगन्धित हाथ से अर्जुन की पीठ को स्पर्श किया ३७ इस रीति से कहेहुए वह दोनों महात्मा श्रीकृष्णजी और पाण्डव अर्जुन राजा युधिष्ठिर से बोले ३८ पापी राजा जयद्रथ आपकी क्रोधाग्नि से भस्म हुआ और युद्ध में दुर्योधन की बड़ी सेना भी ३९ मरी और मारी जाती है और मारी जायगी हे शत्रु के विजय करनेवाले, भरतवंशिन्, कौरव! आपके ही क्रोध से मारेगये ४० हे वीर! दुर्बुद्धि दुर्योधन नेत्रों से ही नाशकर्ता रूप तुमको क्रोधयुक्त करके युद्ध में मित्र बान्धवों समेत प्राणों को त्याग करेगा ४१ पूर्व समय में देवताओं से भी बड़ी कठिनता से विजय होनेवाले कौरवों के पितामह भीष्मजी आपके क्रोध से घायल शरशय्या पर वर्तमान होकर शयन करते हैं ४२ युद्ध में उन शत्रुहन्ता का विजय करना बड़ा कठिन था वह भी मृत्यु के वशीभूत हुए हे बड़ाई देनेवाले, पाण्डव! तुम जिसपर क्रोधयुक्त हो ४३ उसका राज्य, प्राण, लक्ष्मी, पुत्र और अनेकप्रकार के सुख यह सब विनाश को पावेंगे ४४ हे शत्रुसन्तापिन्! सदैव तुझ राजधर्म में प्रवृत्त के क्रोधयुक्त होनेपर कौरवों को पुत्र पशु और बान्धवों समेत नाश हुआ मानता हूं ४५ उसके पीछे बाणों से घायल महाबाहु भीमसेन और महारथी सात्यकी बड़े गुरु को दण्डवत् करके ४६ पाञ्चालदेशियों से आवृत पृथ्वीपर खड़े हुए उन बड़े धनुषधारी प्रसन्नचित्त हाथ जोड़े हुए आगे नियत दोनों वीरों को देखकर ४७ युधिष्ठिर ने उन दोनों भीमसेन और सात्यकी को आशीर्वाद दिये प्रारब्ध से उन दोनों शूरों को सेनासागर से पार उतरे ४८ द्रोणाचार्यरूपी ग्राह से दुर्गम्य कृतवर्मारूपी समुद्र से उत्तीर्ण देखता हूं और प्रारब्ध से युद्ध में पृथ्वी

पर सब राजालोग विजय किये ४६ प्रारब्ध से युद्ध में तुम दोनों को भी विजयी देखता हूं प्रारब्धही से महाबली कृतवर्मा और द्रोणाचार्य को युद्ध में विजय किया ५० प्रारब्ध सेही युद्ध में कर्ण भी बाणों से पराजय कियागया हे पुरुषोत्तमो ! तुम दोनों के हाथ से शल्य ने भी युद्ध से मुख फेरा ५१ प्रारब्ध से रथियों में श्रेष्ठ युद्ध में कुशल तुम दोनों को कुशलपूर्वक युद्ध से लौटकर आने वाला देखता हूं ५२ मैं प्रारब्ध सेही अपने आज्ञाकारी अधिकार और प्रतिष्ठा के आधीन सेनासागर से पार होनेवाले दोनों वीरों को देखता हूं ५३ मैं प्रारब्ध सेही युद्ध में प्रशंसनीय पराजय न पानेवाले अपने प्राणों से भी प्यारे दोनों वीरों को देखता हूं ५४ राजा युधिष्ठिर उन सात्यकी और भीमसेन दोनों पुरुषोत्तमों से यह कहकर मिला और बड़े आनन्द के अश्रुपातों को छोड़ा ५५ हे राजन् ! इसके पीछे पाण्डवों की सब सेना अत्यन्त प्रसन्न होकर युद्ध में प्रवृत्त होगई और युद्ध के निमित्त मन किया ॥ ५६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनपञ्चाशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १४६ ॥

एकसौपचास का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! जयद्रथ के मरनेपर आपका पुत्र दुर्योधन अश्रुपातों से युक्त महादुःखी होकर शत्रुओं के विजय करने में अधैर्यपूर्वक असाहस हुआ १ दुर्मन टूटी डाढ़वाले सर्प के समान श्वास लेनेवाले दुष्टरूप सब लोक के अपराधी आपके पुत्र ने बड़ी पीड़ा को पाया २ युद्ध में अर्जुन भीमसेन और सात्यकी से कियेहुए अपनी सेना के महाभयकारी नाश को देखकर ३ उस रूपान्तरवाले दुर्बल दुःखी अश्रुपातों से भरे नेत्र दुर्योधन ने माना कि इस पृथ्वीपर अर्जुन की समान कोई शूरवीर नहीं है ४ हे श्रेष्ठ ! उसने विश्वास कर लिया कि युद्ध में क्रोधयुक्त अर्जुन के सम्मुख होने को न द्रोणाचार्य न कर्ण न अश्वत्थामा और न कृपाचार्यजी समर्थ हैं ५ अर्जुन ने मेरे सब महारथियों को विजयकरके युद्ध में जयद्रथ को मारा और युद्ध में किसी ने भी नहीं रोका ६ यह कौरवों की बड़ी सेना सब ओर से नाशमान है इसका रक्षक साक्षात् इन्द्र भी नहीं होसक्ता जिसके कि आश्रय को लेकर युद्ध में शस्त्र चलावें वह कर्ण युद्ध में विजय कियागया और जयद्रथ मारागया ७ । ८ मैंने जिसके पराक्रम का आश्रय लेकर सन्धि चाहनेवाले श्रीकृष्णजी को भी तृण के समान

जाना वह कर्ण भी युद्ध में पराजय हुआ ९ हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! इसप्रकार दुःखितचित्त और सब लोक का अपराधी आपका पुत्र दर्शन करने को द्रोणाचार्य के पास आया १० वहां आकर उसने कौरवों के उस सम्पूर्ण नाश को और डूब जानेवाले आपके पुत्रों का और विजय करनेवाले शत्रुओं का भी सब वृत्तान्त वर्णन किया ११ दुर्योधन बोला कि हे महाराजों के आचार्यजी ! मेरे पितामह भीष्मजी को आदि लेकर इस बड़े विनाश को देखो १२ यह लोभी अभीष्ट सिद्ध करनेवाला शिखण्डी उन भीष्मपितामह को मारकर सब पाञ्चालों समेत सेना के आगे वर्तमान है १३ और अर्जुनने सात अक्षौहिणी सेनाको मार कर आपके दूसरे शिष्य कठिनतासे पराजय होनेवाले जयद्रथको मारा १४ मेरी विजय चाहनेवाले कर्मकर्ता यमलोक में पहुँचेहुए शुभचिन्तकलोगों की अऋणता को मैं कैसे पाऊंगा १५ जो राजालोग इस पृथ्वी को मेरे निमित्त चाहते हैं वह संसारवाली पृथ्वी के राज्यों को छोड़कर पृथ्वीपर सोते हैं १६ मैं महानपुंसक मित्रों के ऐसे विनाश को करके हजार अश्वमेध यज्ञों के द्वारा भी अपने पवित्र होने को नहीं उत्साह करता हूं १७ मुझ लोभी पापी धर्म के गुप्त करनेवाले की विजय को पुरुषार्थ से चाहनेवाले क्षत्रियों ने यमलोक को पाया १८ राजसभा में पृथ्वी मुझ दुराचारी मित्रों के दुःखदायी और शत्रु को अपने में प्रवेशकरने को क्यों न विवररूप हुई १९ जो मैं राजाओं के मध्य में रुधिरलिप्तशरीर युद्धभूमि में घायल और शयन करनेवाले भीष्मपितामह की रक्षा करने को समर्थ नहीं हुआ २० वह परलोक के विजय करनेवाले कठिनता से पराजय होनेवाले भीष्मजी मुझ नीच पुरुष और मित्र से शत्रुता करनेवाले अधर्मी से मिलकर क्या कहेंगे २१ प्राणों को त्याग करके मेरेही निमित्त युद्ध में प्रवृत्त सात्यकी के हाथ से मारेहुए बड़े धनुषधारी महारथी जलसिन्धु को देखो २२ काम्बोज, अलम्बुष और अन्य बहुत शुभचिन्तकों को मृतक देख- कर अब जीवन से मुझको क्या प्रयोजन है अर्थात् मेरा जीवन वृथा है २३ मेरे अर्थ जो जीवन से प्रीतिरहित मुखों के न फेरनेवाले और मेरे शत्रुओं के विजय करने को बड़े २ उपायों से उद्योग करनेवाले शूर मारेगये २४ हे शत्रुसन्तापिन् ! अब मैं बड़ी सामर्थ्य से उनकी अऋणता को पाकर यमुनाजी में उनको जल से तृप्त करूंगा २५ हे सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ, गुरुजी ! मैं आप

अर्जुन को युद्ध में सदैव अजेय कहनेवाले तू अपने ऐसे वचन बाणों से क्यों घायल करता है ६ हे कौरव ! युद्ध में इतनीही बात से अर्जुन का जानना सम्भव है जो अर्जुनसे रक्षित शिखण्डीने भीष्मजी को मारा ७ मैंने युद्धमें देव दानवों से भी अजेय वीरों को माराहुआ देखकर तभी यह जानलिया था कि यह भरतवंशियों की सेना नहीं है ८ हम मानते हैं कि जो तीनों लोकोंमें सब मनुष्यों में सब का शूर है उस शूरवीर के गिरने पर किस शेष बचेहुए शूर की संख्या और विद्यमानता करें ६ हे तात ! कौरवीय सभा में जिन पाशों को शकुनी लेता था वह पाशे नहीं थे किन्तु शत्रुओं के तपानेवाले बाण थे १० हे तात ! वही बाण अर्जुन से चलायमान होकर हम को मारते हैं उस समय विदुरजी के जेताने और समझानेपर भी तुमने उन बाणों को नहीं जाना ११ शुभचिन्तकता से तुम्हारी कुशल के निमित्त कहनेवाले महात्मा पण्डित विदुरजी के जिन २ कल्याणरूप वचनों को अपने द्यूत में आसक्त होकर तुमने नहीं सुना १२ हे दुर्योधन ! तेरेही कारण उस वचन के अपमान से यह महाभयकारी नाश वर्तमान है १३ जो अज्ञानी पुरुष सत्यकर्मी शुभचिन्तकों के परिणाम कुशलरूप वचनों को तिरस्कार करके अपने मतको करता है वह शीघ्रही शोच के योग्य होता है १४ जो कुल में उत्पन्न और सब धर्मोंपर कर्म करनेवाली उस दशा के अयोग्य द्रौपदी को हमारे देखतेहुए उस सभा में बुलाकर अप्रतिष्ठापूर्वक निरादर किया १५ हे गान्धारी के पुत्र ! उस अधर्म का यह बड़ा फल प्रकट हुआ है जो ऐसा न होय तो परलोक में तुम इससे भी अधिक पापों को भोगो १६ जो उन पाण्डवों को द्यूत में अन्यायपूर्वक विजयकरके उन मृगचर्मधारियों को वनवास दिया १७ अपनेको ब्राह्मण कहनेवाला मुझसा दूसरा कौनसा मनुष्य उनसे शत्रुता करे जोकि पुत्रों के समान सदैव धर्म के आचरण करनेवाले हैं १८ तुम ने शकुनी के साथ कौरवों की सभा में धृतराष्ट्र के मत से पाण्डवों के इस क्रोध को अपने सम्मुख नियत किया दुश्शासन से युक्त और कर्ण से मिलेहुए कर्म करनेवाले तुमने विदुरजी के वचन को तिरस्कारकरके उस क्रोध को वारंवार दृढ़ किया १६ । २० और तुम सब सावधानी से कर्म में प्रवृत्त हुए जिन्होंने जयद्रथ को आश्रय होकर अर्जुन को घेरलिया वह तुम्हारे मध्य में से कैसे मारागया २१ कर्ण, कृपाचार्य, शल्य,

अश्वत्थामा और तेरे जीवतेजी राजासिन्धु ने कैसे मृत्यु को पाया २२ जयद्रथ की रक्षा करने को युद्ध करनेवाले सब राजालोग कठिन पराक्रम को करते थे उसपर भी वह तुम्हारे बीच में से कैसे मारागया २३ हे तात ! राजा जयद्रथ अर्जुन से अपनी रक्षा को अधिकतर मुझमें और तुझमें अभिलाषा पूर्वक आशा रखता था २४ इसके पीछे अर्जुन से उसके रक्षित न होनेपर अपने जीवन का कोई स्थान नहीं देखता हूं २५ उस शिखण्डी समेत पाञ्चाल- देशियों के बिना मारे धृष्टद्युम्नके अपराधमें आपको मग्नहुए के समान देखता हूं २६ हे भरतवंशिन् ! सो तुम राजा जयद्रथ की रक्षा में असमर्थ होकर मुझ दुःखी को वचनरूपी बाणों से क्यों घायल करते हो २७ सुगमकर्मी सत्यप्र- तिज्ञ भीमसेन के स्वर्णमयी कवच को युद्ध में देखता हुआ कैसे विजय की आशा करता है २८ जिस स्थानपर महारथियों के मध्य में राजा जयद्रथ और भूरिश्रवा मारेगये वहां शेष बचेहुओं को क्या मानते हो २९ हे राजन् ! क- ठिनता से पराजय होनेवाले जो कृपाचार्य जीवते हैं और राजा सिन्धु के मार्ग को नहीं गये मैं उनकी प्रशंसा करता हूं ३० हे कौरव ! इस स्थानपर तेरे छोटे भाई दुश्शासन के देखतेहुए कठिनकर्मी युद्ध में इन्द्र समेत देवताओं से अजेय के समान भीष्मजी को मृतकप्राय देखा तब मैंने यह चिन्ताकरी कि यह पृथ्वी तेरी नहीं है ३१ । ३२ हे भरतवंशिन् ! अब पाण्डव और सृञ्जयों की यह सेना मुझपर एकसाथही चढ़ाई करती है ३३ हे धृतराष्ट्र के पुत्र ! मैं सब पाञ्चालों को बिना मारेहुए कवच को शरीर से नहीं उतारूंगा और युद्ध में तेरे प्रिय कर्म को करूंगा ३४ हे राजन् ! तुम मेरे पुत्र अश्वत्थामा से कहो कि युद्ध में जीवन की रक्षा करनेवाले सोमक क्षत्रिय उसको छोड़देने के योग्य नहीं हैं अर्थात् सबको मारे ३५ पिता की जो आज्ञा होय उस वचनपर काम करो अ- र्थात् आज्ञा का प्रतिपालन करो दया जितेन्द्रियपन सत्य और सत्यवक्तापने में नियत हो ३६ उससे वारंवार कहदो कि धर्म, अर्थ, काम में सावधान और धर्म को उत्तम माननेवाला अश्वत्थामा धर्म अर्थ को पीड़ा न देता हुआ युद्धकर्मों को करे ३७ नेत्र मन और सामर्थ्य इन सब बातों से ब्राह्मण पूज्य हैं इनका अप्रिय कभी न करना चाहिये निश्चयकरके वह प्रज्वलित अग्नि के समान हैं ३८ हे शत्रुहन्तः, राजन्, दुर्योधन ! तेरे वचनरूपी बाणों से पीड्यमान होकर

मैं बड़े युद्ध करने के अर्थ सेनाओं में प्रवेश करता हूं हे दुर्योधन! जो तुम समर्थ हो तो अब तुम इस सेना की रक्षा करो यह क्रोधयुक्त कौरव सृञ्जय रात्रि में भी युद्ध करेंगे ३९। ४० द्रोणाचार्य इस प्रकार से कहकर क्षत्रियों के तेजों को आकर्षण करते पाण्डव और सृञ्जयों पर ऐसे दौड़े जैसे कि चन्द्रमा नक्षत्रों के तेजों को आकर्षण करता दौड़ता है॥ ४१॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकपञ्चाशदुपरिशततमोऽध्यायः॥ १५१॥

एकसौबावन का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे द्रोणाचार्य की आज्ञानुसार क्रोध के वशीभूत राजा दुर्योधन ने युद्ध के निमित्त मन से विचार किया १ तब आपका पुत्र दुर्योधन कर्ण से बोला कि देखो श्रीकृष्णजी को साथ में रखनेवाले पाण्डव अर्जुन ने गुरुजी के बनायेहुए उस व्यूह को जोकि देवताओं से भी तोड़ना कठिन था तोड़कर तुझ उपाय करनेवाले और महात्मा द्रोणाचार्य २। ३ और सेना के बड़े २ उत्तम धनुषधारियों के देखतेहुए सिन्धु के राजा जयद्रथ को गिराया हे राधा के पुत्र, कर्ण! देखो युद्ध में अत्यन्त उत्तम राजालोग पृथ्वी पर ४ अकेले अर्जुन के हाथ से ऐसे मारेगये जैसे कि सिंह के हाथ से दूसरे हजारों मृग महात्मा द्रोणाचार्य के और मेरे उपाय करनेपर ५ इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने सेना को बहुतही न्यून करदिया अर्थात् थोड़ेही शेष रहगये हैं युद्ध में द्रोणाचार्य के उस अद्वितीय व्यूह को जो कि कठिनता से तोड़ने के योग्य था तोड़कर अर्जुन ने जयद्रथ को मारकर अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया ६। ७ हे कर्ण! युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारे हुए और पृथ्वीपर गिरायेहुए उन बहुत राजाओं को जो कि इन्द्र के समान पराक्रमी थे सोतेहुए देखो ८ हे वीर! पाण्डव अर्जुन इस उपाय करनेवाले और अपनी विजय चाहनेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य के कठिनता से तोड़ने के योग्य व्यूह को कैसे तोड़सका ९ हे शत्रुहन्तः, कर्ण! यह पाण्डव अर्जुन महात्मा आचार्य का सदैव से प्यारा है उसी हेतु से विना युद्ध कियेही उसको द्वार दे दिया १० शत्रुसन्तापी द्रोणाचार्य ने जयद्रथ के अर्थ निर्भयता देकर अर्जुन के निमित्त द्वार को दिया मेरी दुर्भाग्यता को देखो ११ कि जो प्रथमही मैं जयद्रथ को घर जाने की आज्ञा दे देता तो यह मनुष्यों का नाश काहे को होता १२ हे मित्र! द्रोणाचार्य से निर्भयता को

पाकर मुझ अभागे ने उस जीवन की इच्छा करनेवाले जयद्रथ को घर जाने से रोका १३ अब मेरे भाई चित्रसेन आदिक युद्ध में भीमसेन को पाकर हम सब दुरात्माओं के देखतेहुए उसके हाथ से नाश हुए १४ कर्ण बोले कि आचार्य की निन्दा मत करो यह ब्राह्मण अपने जीवन को त्यागकरके सामर्थ्य बल और उत्साह के समान युद्ध करता है १५ जो अर्जुन उनको उल्लङ्घनकरके सेना में गया इसमें आचार्यका किसीप्रकारका भी दोष नहींहै महाकर्मी सावधान तरुण शूरवीर अस्त्रज्ञ तीक्ष्ण सामर्थ्य और अभेद्यकवच से अलंकृतशरीर पराक्रमी भुजा धन से अहङ्कारी अर्जुन जो दिव्य अस्त्रों से युक्त वानररूप ध्वजाधारी उस रथपर जिसके कि घोड़ों को श्रीकृष्णजी ने पकड़ा था सवार होकर और अजर दिव्य गाण्डीव धनुषको लेकर तीक्ष्णबाणोंको बरसाता द्रोणाचार्य के समीपही जाकर सम्मुख हुआ १६। १६ और हे राजन् ! उसने यह विचार किया कि आचार्यजी वृद्ध हैं शीघ्रता से नहीं चलसक्के हैं और भुजा के परिश्रम और कर्म करने में असमर्थ हैं २० इस हेतुसे श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णजीको सारथी रखनेवाला अर्जुन इसप्रकार से उल्लङ्घन करनेवाला हुआ इसमें उन द्रोणाचार्य का अपराध नहीं देखता हूं २१ युद्ध में इन अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य से पाण्डवों को मैं अजेय मानताहूं उसीप्रकार अर्जुनने इनको उल्लङ्घन करके सेनामें प्रवेश किया २२ मैं मानता हूं कि दैव का उपदेश कियाहुआ कर्म कहीं भी विपरीत नहीं वर्तमान होताहै हे सुयोधन ! इसी कारण से बड़ी सामर्थ्य के साथ हमलोगों के युद्ध करतेहुए भी युद्ध में जयद्रथ मारागया यहां युद्धभूमि में तेरे साथ बड़े उपाय करनेवाले हम लोगोंका प्रारब्ध बड़ा कहागयाहै २३।२४ वह दैव सदैव छल और पराक्रम से कर्म करनेवाले हमलोगों के उपाय आदिकों को नाशकरके हमको पीछे करता है दैव से घायल पुरुष किसी स्थानपर भी जो कुछ कर्म करता है वह कियाहुआ कर्म दैव से न्यून हानिकारक होता है २५ । २६ निश्चय करनेवाले मनुष्य से जो कर्म सदैव करने के योग्य है वह निस्सन्देह करना उचित है उसकी सिद्धि दैव में नियत है २७ हे भरतवंशिन् ! पाण्डव छल से और विष के देने से भी ठगे और लाख के गृह में भस्म कियेगये और द्यूत में भी पराजय किये २८ और राजनीति को छोड़कर वन को भेजे इन उपायों से कियाहुआ वह कर्म दैव से निष्फल हुआ २६ दैव को निष्प्रयोजन न करके उपाय में प्रवृत्त होकर

युद्ध करो तेरे और उनके उपाय करतेहुए दैवमार्ग से प्राप्त होगा ३० हे वीर, दुर्योधन! कहीं उनलोगों का कर्म श्रेष्ठबुद्धि के अनुसार और तेराकर्म दुष्टबुद्धि के विपरीत देखने में नहीं आता है ३१ सुकृत और दुष्कृत कर्म का प्रमाण दैव है दृढ़कर्मवाला दैव शयन करनेवालों के मध्य में भी जागता है ३२ आपकी सेना की संख्या और वीरों की संख्या असंख्य थी इतनी पाण्डवों की न सेना थी और न वीर थे इस रीति से युद्ध जारी हुआ ३३ तुम्हारी ओर के बहुत से प्रहारकर्ता उनथोड़े से प्रहारकर्ताओं से नाश किये गये में निस्सन्देह कहता हूं कि दैवीकर्म है जिससे उपाय और उद्योग सब नष्ट हुए ३४ सञ्जय बोले कि हे राजन्! इस रीति के बहुत से वचनों को कहते पाण्डवों की सेना युद्ध में दिखाईपड़ी ३५ हे राजन्! आपके कुविचार होने पर आपके शूरवीरों का युद्ध उन दूसरे शूरवीरों के साथ हुआ जोकि रथ और हाथियों से संयुक्त थे ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विपञ्चाशदुपरिशततमोऽध्यायः ॥ १५२ ॥

एकसौतिरपन का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! आपकी वह बड़ी हाथियों की सेना पाण्डवीय सेना को उल्लङ्घन कर सबओर से युद्ध करनेलगी १ यमलोक और बड़े परलोक के निमित्त दीक्षित पाञ्चालदेशीय और कौरव परस्पर में युद्ध करनेलगे २ शूरों ने शूरों के साथ भिड़कर युद्ध में बाण तोमर और शक्तियों से घायल किया और यमलोक में पहुँचाया ३ परस्पर मारनेवाले रथियों का बड़ायुद्ध जोकि रुधिर के गिरने से भय का उत्पन्न करनेवाला था रथियों के साथ जारी हुआ ४ हे महाराज! अत्यन्तक्रोधयुक्त मतवाले हाथियों ने परस्पर सम्मुख होकर एक ने दूसरे को चीरडाला ५ और कठिन युद्ध में बड़े यश के चाहनेवाले अश्वसवारों ने प्रास शक्ति और फरसों से अश्वसवारों को घायल किया ६ हे महाबाहो, राजन्, धृतराष्ट्र! शस्त्रों को धारण कियेहुए सदैव पराक्रम में उपाय करनेवाले सैकड़ों पत्तियों ने परस्पर पीड़ावान् किया ७ हे श्रेष्ठ! हमने गोत्रनाम और कुलों के सुनने सेही पाञ्चाल और कौरवों को जाना ८ युद्ध में निर्भय के समान घूमनेवाले उन शूरवीरों ने बाण शक्ति और फरसों से परस्पर परलोक में भेजा ९ हे राजन्! सूर्य के अस्त होनेपर भी दशो दिशाओं में उन्हीं के छोड़ेहुए

हज़ारों बाण अच्छे प्रकार से प्रकाशमान नहीं हुए थे १० हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र! उस प्रकार से पाण्डवों के युद्ध करने से दुर्योधन ने उस सेना को मँझाया ११ जयद्रथ के मरने से अत्यन्त दुःखी दुर्योधन चित्त से मरना विचार कर सेना में प्रविष्ट हुआ १२ रथ के शब्द से शब्दायमान पृथ्वी को कँपाता आपका पुत्र पाण्डवों की सेना के सम्मुख वर्तमान हुआ १३ हे भरतवंशिन्! उसकी और उन्होंकी वह कठिन चढ़ाई सब सेनाओं की बड़ी नाशकारी हुई १४ जिस प्रकार किरणों से तपानेवाले सूर्य को दिन के मध्य में नहीं देखसक्के उसी प्रकार पाण्डव भरतवंशियों के युद्ध में बाणरूप किरणों से अत्यन्त तपानेवाले आपके पुत्र को सेना के मध्य में १५ देखने को समर्थ नहीं हुए उस महात्मा से घायल पाञ्चालदेशीय भागने में प्रवृत्तचित्त और शत्रु के विजय करने में असाहसी १६ चारोंओर को दौड़े पाण्डवीय सेना के लोग आपके धनुषधारी पुत्र के सुनहरी पुङ्खवाले साफ़ नोक के बाणों से १७ पीड़ावान् शीघ्र गिरपड़े आपके शूरों ने युद्ध में ऐसे प्रकार के कर्म को नहीं किया १८ हे राजन्! जैसा कि आपके पुत्र ने कर्म किया युद्ध में वह सेना आपके पुत्र से ऐसे मथीगई १९ जिस प्रकार प्रफुल्लित कमल रखनेवाली कमलिनी चारोंओर हाथी से बिलोवन कीजाती है और जिस प्रकार पानी से रहित कमलिनी सूर्य के कारण से प्रभारहित हो २० उसी प्रकार आपके पुत्र के तेज से पाण्डवी सेना भी होगई हे भरतवंशिन्! आप के पुत्र के हाथ से पाण्डवीय सेना को घायल और मरीहुई देखकर २१ सब पाञ्चालदेशीय जिनमें मुख्य भीमसेन था सम्मुख गये उसने भीमसेन को दश बाणों से नकुल और सहदेव को तीन २ बाणों से २२ विराट और द्रुपद को छः बाण से शिखण्डी को सौ बाण से धृष्टद्युम्न को सत्तर बाणों से धर्म के पुत्र युधिष्ठिर को सात बाण से २३ केकय और चन्देरीदेशियों को तीव्र धारवाले बहुत बाणों से सात्यकी को पांच बाण से और द्रौपदी के पुत्रों को तीन २ बाणों से घायल करके २४ घटोत्कच को युद्ध में घायल करताहुआ सिंह के समान गर्जना करी और बड़े युद्ध में दूसरे सैकड़ों शूरवीरों को हाथियों के साथ २५ उग्रबाणों से ऐसे काटा जैसे कि क्रोधयुक्त काल सृष्टि को संहार करता है हे राजन्! उस आपके पुत्र के बाणों से घायल वह पाण्डवीय सेना २६ युद्ध से भागी हे राजन्! बड़े युद्ध में सूर्य

के समान तपानेवाले उस कौरवराज दुर्योधन के देखने को २७ पाण्डवीय सेना के लोग समर्थ नहीं हुए हे राजाओं में श्रेष्ठ! इसके पीछे क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिर २८ आप के पुत्र को मारने की इच्छा से कौरवपति दुर्योधन के सम्मुख दौड़ा युद्ध में वह दोनों शत्रुसन्तापी सम्मुख हुए २९ अर्थात् वह दोनों दुर्योधन और युधिष्ठिर अपने प्रयोजनों के हेतु से पराक्रम करनेवाले हुए इसके पीछे क्रोधयुक्त दुर्योधन ने झुके पर्ववाले ३० दश बाणों से घायल किया और शीघ्रही एक बाण से ध्वजा को भी काटा और उस इन्द्रसेन को तीन बाण से ललाटपर घायलकिया ३१ जोकि महात्मा युधिष्ठिर का पहला सारथी था महारथी ने फिर दूसरे बाण से उसके धनुष को काटा ३२ और चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने एक निमिष में ही दूसरे धनुष को लेकर ३३ वेग से कौरव को रोका हे श्रेष्ठ! बड़े पाण्डव युधिष्ठिर ने शत्रुहन्ता उस दुर्योधन के स्वर्णपृष्ठी बड़े धनुष को ३४ दो भल्लों से तीन टुकड़े किया सूर्य की किरणों के समान अत्यन्त भयकारी दूर न होनेवाले बाण को लेकर ३५ हाय मारा है ऐसा कहकर युधिष्ठिर ने बाण को छोड़ा कानतक खैंचकर उस छोड़े हुए बाण से घायल वह दुर्योधन ३६ अत्यन्त अचेत होकर रथ के बैठने के स्थानपर गिरपड़ा हे राजेन्द्र! इसके पीछे पाञ्चालदेशियों की प्रसन्न सेना के शब्द चारोंओर से हुए ३७ कि राजा मारागया हे श्रेष्ठ! वहां बाणों के महाभयकारी शब्द सुनेगये ३८ उसके पीछे द्रोणाचार्यजी भी उस युद्ध में शीघ्र दिखाईपड़े और प्रसन्नचित्त दुर्योधन भी दृढ़धनुष को लेकर ३९ तिष्ठ २ शब्द को बोलता राजा युधिष्ठिर के सम्मुख आया फिर विजयाभिलाषी पाञ्चालदेशीय शूरवीर शीघ्रही उसके सम्मुख गये ४० कौरवों में श्रेष्ठ दुर्योधन को चाहते द्रोणाचार्यजी ने उनको ऐसे रोका जैसे कि कठिन वायु से उठाये हुए बादलों को सूर्य नाश करता है ४१ हे राजन्! इसके पीछे युद्ध की इच्छा से सम्मुख होनेवाले आपके और पाण्डवों के शूरवीरों का महाप्रबल परस्पर में मारनेवाला कठिन युद्ध हुआ ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिपञ्चाशदुपरिशततमोऽध्यायः ॥ १५३ ॥

एकसौचौवन का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, जब क्रोधयुक्त बल पराक्रमवाले आचार्यजी शास्त्र के उल्ल-

छन करनेवाले निर्बुद्धि मेरे पुत्र दुर्योधन को कहकर पाण्डवों की सेना में प्रवेश करनेवाले हुए १ तब पाण्डवों ने उस रथपर नियत शूरवीर प्रवेश करके घूमने-वाले बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्यजी को कैसे रोका २ बड़ेयुद्ध में बहुत से शत्रुओं के मारनेवाले आचार्यजी के दक्षिण के चक्र को किन लोगों ने रक्षित किया और उत्तरीय चक्र को किन पुरुषों ने रक्षित किया ३ कौनसे शूरवीर इनके पीछे हुए और कौन से रथी शत्रु इनके आगे वर्तमान हुए ४ मैं मानता हूं कि ऋतु के विपरीत कठिन शीतने उनको स्पर्श किया और यह भी मानता हूं कि वह ऐसे प्रकार से काँपते होंगे जैसे कि शिशिरऋतु में गौवें काँपती हैं ५ जो वह बड़ा धनुषधारी अजेय सब शस्त्रधारियों में और रथियों में श्रेष्ठ उत्पातग्रह अथवा अग्नि के समान क्रोधयुक्त रथ के मार्गों में नृत्य करता सब पाञ्चालदेशीय सेनाओं को भस्म करता उन्हीं पाञ्चालदेशीय सेनाओं में प्रविष्ट हुआ उसने कैसे मृत्यु को पाया ६ । ७ सञ्जय बोले कि बड़ा धनुषधारी सात्यकी और अर्जुन सायङ्काल के समय जयद्रथ को मारकर राजा से मिलकर द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़े ८ उसीप्रकार उपाय करनेवाले पाण्डव युधिष्ठिर और भीमसेन पृथक् २ सेनाओं समेत द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़े ९ उसी स्थानपर बुद्धिमान् और कठिनता से विजय होनेवाला सहदेव और सेनासहित धृष्टद्युम्न केकय के साथ विराट १० मत्स्यदेशीय और शाल्वदेशीय सेना युद्ध में द्रोणाचार्य के सम्मुख गई हे राजन् ! धृष्टद्युम्न का पिता राजा द्रुपद भी पाञ्चालदेशियों से रक्षित ११ द्रोणाचार्य केही सम्मुख वर्तमान हुआ द्रौपदी के बड़े धनुषधारी पुत्र घटोत्कच राक्षस १२ यह सब सेनाओं समेत बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य के सम्मुख हुए और प्रहार करनेवाले पाञ्चाल-देशीय छः हज़ार प्रभद्रक नाम १३ शिखण्डी को आगे करके द्रोणाचार्य के सम्मुख वर्तमान हुए उसी प्रकार पाण्डवों के अन्य २ महारथी १४ एक साथही ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य के सम्मुख वर्तमान हुए हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! युद्ध के निमित्त उन शूरवीरों के जानेपर वह रात्रि भयानकरूप भयभीतों के भय की बढ़ानेवाली शूरवीरों की नाशकारिणी रुद्ररूप होकर मृत्यु से मिलानेवाली हुई १५ । १६ और हाथी घोड़ों समेत मनुष्यों के प्राणों की नाशकारक हुई उस घोर रात्रि में सब दिशाओं से बोलनेवाले शृगालों ने १७ अग्निरूप ग्रास रखनेवाले मुखों से घोर रुधिर को जारी किया फिर बड़े भय के सूचक उलूक भी

दिखाईपड़े १८ कौरवों की सेना में अत्यन्त भयकारी उत्पात बहुत से दिखाई दिये हे राजन्! इसके पीछे सेनाओं में बड़ेशब्द हुए १६ भेरी मृदङ्गों के बड़े शब्द हाथियों की चिग्घाड़ घोड़ों का हिंसन २० खुरों के शब्द और गिरने से सब ओर को कठिन शब्द हुए हे महाराज! इसके पीछे द्रोणाचार्य और सृञ्जयों का अत्यन्त भयकारी युद्ध सब ओर से जारी हुआ और अन्धकार से सब संसार के ढकजाने के कारण कुछ नहीं जानागया २१। २२ चारोंओर से सेनाओं की उठीहुई धूलि से मनुष्य घोड़े और हाथियों का रुधिर मिलगया २३ हमने आर्द्रता से युक्त पृथ्वी की धूलि को नहीं देखा जैसे कि पर्वत के ऊपर जलने वाले बांसों के वन का २४ चटचटा शब्द होता है उसी प्रकार रात्रि के समय गिरनेवाले अस्त्रों के शब्द हुए मृदङ्ग, ढोल, झर्झरी, पटा नाम बाजों से २५ फेत्कार और ह्रेषितशब्दों से सब व्याकुल और शोभायमान हुए हे राजन्! अन्धकार के कारण अपने और पराये कोई नहीं जानेगये २६ रात्रि में वह सबसेना उन्मत्तों के समान जानीगई हे राजन्! फिर पृथ्वी की धूलि रुधिर से नष्ट हुई २७ स्वर्णमयी कवच और नाना प्रकार के भूषणों से अन्धकार दूर हुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! इसके पीछे मणि सुवर्णादि से अलंकृत भरतवंशियों की सेना २८ रात्रि में नक्षत्रयुक्त आकाश के समान हुई शृगालों के समूहों से शब्दायमान शक्ति ध्वजाओं से व्याकुल २६ हाथियों के शब्दों से संयुक्त घोररूप वीरों के गर्जने के बड़े शब्दवाली हुई वहांपर सब दिशाओं को पूर्ण करता रोमहर्षण करनेवाला महेन्द्र वज्र की समान बड़ाकठोर शब्द हुआ हे महाराज! वह भरतवंशियों की सेना रात्रि के समय ३०। ३१ बाजूबन्द, कुण्डल, निष्क और अस्त्रों से प्रकाशित दिखाई पड़ी और सुवर्ण से अलंकृत हाथी रथ ३२ रात्रि के समय बिजलीसमेत बादलों के समान दृष्टिगोचर हुए दुधारे, खड्ग, शक्ति, गदा, बाण, मुसल, प्रास और पट्टिश ३३ अग्नि के समान प्रकाशित गिरतेहुए दिखाई दिये जिस सेना में दुर्योधन मुख्य था वह रथ हाथी बादल ३४ और बादलों की गर्जनासमेत धनुष ध्वजारूप बिजली द्रोणाचार्य और पाण्डवरूप बादल, खड्ग, शक्ति, गदा, वज्र ३५ और बाणों की धारा उस कठिन शीतोष्णता से पूर्ण घोर आश्चर्यकारी उग्र नाश जीवनरूप आपत्ति रखनेवाली ३६ बड़े भयकारी सेना में युद्ध के चाहनेवाले शूरवीर लोग प्रवृत्त हुए बड़े शब्द से

शब्दायमान और घोररूपी उस रात्रि में ३७ भयभीतों के भय का बढ़ानेवाला और शूरों के आनन्द का बढ़ानेवाला घोर भयानक रात्रि के युद्ध जारी होने पर ३८ क्रोधयुक्त पाण्डव और सृञ्जय एकसाथ ही द्रोणाचार्य के सम्मुख गये हे राजन्! जो २ महारथी सम्मुख वर्तमान हुए ३९ उन सब के मुखों को फेरा और कितनोंही को यमलोक में पहुँचाया उन हजारों हाथी अयुतों रथ ४० और प्रयुतों अर्बुदों पदाती और घोड़ों के समूहों को रात्रि के समय अकेले द्रोणाचार्य ने घायल किया और मारा॥ ४१॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिरात्रियुद्धेचतुष्पञ्चाशदुपरिशततमोऽध्यायः॥ १५४॥

एकसौपचपन का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि, सृञ्जयों की सेनामें उस निर्भय बड़े तेजस्वी असहनशील क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य के प्रवेश करनेपर तुम्हारी कैसी बुद्धिहुई १ फिर जब बड़े बुद्धिमान् द्रोणाचार्यजी शास्त्र को उल्लङ्घन करनेवाले मेरे पुत्र दुर्योधनको ऐसे कहकर सेना में घुसे तब अर्जुन ने कौन कर्म किया २ वीर जयद्रथ और भूरिश्रवा के मरनेपर जब बड़े तेजस्वी अजेय द्रोणाचार्यजी पाञ्चालों के सम्मुख गये ३ उस निर्भय शत्रुसन्तापी द्रोणाचार्य के प्रवेश करनेपर अर्जुन और दुर्योधन ने समय के अनुसार किस २ कर्म को माना ४ उन ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वरदाता वीर आचार्य के सम्मुख कौन २ गये पीछे कौन २ वीर गये ५ और आगे कौन वर्तमान हुए मैं द्रोणाचार्य के बाणों से सब पाण्डवों को ऐसे पीड्यमान मानताहूं ६ हे समर्थ! जैसे कि शिशिर ऋतुमें कम्पायमान और दुर्बल गौवें ७ उस बड़े धनुर्द्धर शत्रुविजयी पुरुषोत्तम द्रोणाचार्य ने पाञ्चालों की सेना में पहुँचकर कैसे मृत्यु को पाया ८ रात्रि के समय सब शूरवीरों के इकट्ठे होने और महारथियों के भिड़ने और सेना के छिन्न भिन्न होने पर तुमलोगों में से कौन बुद्धि से विचार करनेवाला हुआ ९ मेरे रथसवारों को युद्ध में मृतक युद्ध में प्रवृत्तचित्त पराजय विरथ और मारेहुए कहते हो १० तब पाण्डवों से छिन्न भिन्न होकर अचेत अथवा मोह में डूबेहुए उन शूरवीरों का कौन विचार हुआ ११ यहां तुम पाण्डवों को अत्यन्त प्रसन्न बुद्धिमान् और अभीष्ट सिद्धिवाले कहते हो और मेरे पुत्रों को अप्रसन्न और नाशयुक्त वर्णन करते हो १२ हे सञ्जय! तब वहां रात्रि के समय मुख न फेरनेवाले पाण्डवों का प्रकाश कौरवों में कैसे

हुआ १३ सञ्जय बोले कि हे राजन् ! तब अत्यन्त भयकारी रात्रि के युद्ध जारी होने पर सब पाण्डवलोग सोमकों समेत द्रोणाचार्य के सम्मुख गये १४ उस के पीछे द्रोणाचार्य ने तीक्ष्ण चलनेवाले बाणों से केकयों समेत धृष्टद्युम्न के सब पुत्रों को यमलोक में भेजा १५ हे भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र ! जो महारथी उनके सम्मुख वर्तमान हुए उन सब को उन्होंने पितृलोक में भेजा १६ हे राजन् ! तब प्रतापवान् शिबि अत्यन्त क्रोध से उन वीरों के मथनेवाले महारथी द्रोणाचार्य के सम्मुख गया १७ उस पाण्डव के महारथी को आताहुआ देखकर केवल लोहमयी दशबाणोंसे घायल किया १८ शिबिने तीक्ष्णधारवाले तीस बाणों से उनको व्यथित किया और मन्दमुसकान करतेहुएने अपने भल्ल से उनके सारथी को गिराया १९ फिर द्रोणाचार्य ने भी उस महात्मा के सारथी समेत घोड़ों को मारकर उसके शिर को देह से जुदाकिया २० इसके पीछे दुर्योधन ने शीघ्रही उनके दूसरे सारथी को आज्ञा दी उस सारथी को लेकर वह द्रोणाचार्यजी फिर शत्रुओं के सम्मुख गये २१ पूर्वसमयमें अपने पिता के मारने से क्रोधयुक्त राजा कलिङ्ग का पुत्र कलिङ्गदेशियों की सेना से निकल युद्ध में भीमसेन के सम्मुख गया २२ उसने भीमसेन को पांचबाणों से पीड्यमान करके फिर सातबाणों से पीड़ित किया विष्वक्सारथी को तीनबाण से और ध्वजा को एकबाण से खण्डित किया क्रोधयुक्त भीमसेन ने रथ के द्वारा रथ के समीप जाकर उस क्रोधयुक्त कलिङ्गदेशियों के शूर को मुष्टिकाओं से घायल किया २३।२४ युद्धभूमि में पराक्रमी भीमसेन की मुष्टिकाओं से घायल उस राजकुमार की सब हड्डियां पृथक् २ होकर गिरपड़ी २५ हे शत्रुसन्तापिन् ! फिर कर्ण के भाइयों ने उसको नहीं सहा और उन्हों ने भीमसेन को विषधर सर्पके समान नाराचों से घायल किया २६ इसके पीछे भीमसेन उस शत्रु के रथ को छोड़कर ध्रुवरथ के पास गया वहां जाकर बराबर बाण चलानेवाले ध्रुव को भी मुष्टिकाओं से अच्छीरीति से मारा २७ पराक्रमी भीमसेनके हाथ से माराहुआ वह ध्रुव पृथ्वीपर गिरपड़ा हे महाराज ! महाबली भीमसेन उसको मारकर २८ जयरात के रथ को पाकर वारंवार सिंह के समान गर्जा और गर्जतेहुए में बायें हाथसे खैंच २९ कर्ण के आगे वर्तमान होकर तमाचे से नाश किया फिर कर्णने सुनहरी शक्ति को भीमसेनके ऊपर छोड़ा ३० इसके पीछे अजेय पाण्डुनन्दन

भीमसेन ने उस शक्ति को पकड़लिया और उसी को युद्धभूमि में कर्णके ऊपर छोड़ा ३१ शकुनीने उस आतीहुई शक्तिको तैलपायनी नाम बाणसे काटा वह पराक्रमी युद्धमें इस बड़ेकर्मको करके ३२ फिर शीघ्रही अपने रथपर सवार होकर आपकी सेनापर आटूटा हे राजन्! बड़े बाणों की वर्षा से ढकतेहुए आपके महारथी पुत्रों ने उस मारने के अभिलाषी काल के समान क्रोधयुक्त आतेहुए महाबाहु भीमसेन को रोका ३३।३४ उसके पीछे हँसते हुए भीमसेन ने युद्ध में बाणों से दुर्मद के सारथी और घोड़ों को यमलोक में पहुँचाया ३५ तब दुर्मद दुष्कर्ण के रथपर सवार हुआ वह शत्रुसन्तापी एक रथपर सवार दोनों भाई ३६ युद्ध के मुखपर भीमसेन के सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि वरुण और मित्र देवता दैत्यों में श्रेष्ठ तारक के सम्मुख दौड़े थे ३७ उसके पीछे दुर्मद और दुष्कर्णनाम आपके पुत्रोंने एक रथपर सवार होकर बाणों से भीमसेनको घायल किया ३८ शत्रुविजयी भीमसेन ने कर्ण, अश्वत्थामा, दुर्योधन, कृपाचार्य, सोमदत्त और बाह्लीक के देखते हुए ३९ वीरदुर्मद और दुष्कर्ण के उस रथ को एक लात मार कर पृथ्वी पर गिरादिया ४० इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन आपके पराक्रमी और शूरवीर दुर्मद और दुष्कर्ण पुत्रों को मुष्टिका से घायल और मर्दनकरके गर्जा ४१ हे राजन्! उसके पीछे सेना के हाहाकार करनेपर राजा लोग भीमसेन को देखकर बोले कि यह रुद्रजी भीमसेन के रूप से धृतराष्ट्र के पुत्रों में लड़ते हैं ४२ हे भरतवंशिन्! सब राजालोग ऐसा कहकर अचेत होकर सवारियों को चलातेहुए भागे और दोभी साथ होकर नहीं दौड़े ४३ उसके पीछे सायङ्काल के समय सेना के अत्यन्त उत्तम राजाओं से पूजित फूले कमल के समान नेत्र रखनेवाले महाबली भीमसेन ने राजा युधिष्ठिर को पूजा अर्थात् प्रशंसा करी ४४ उसके पीछे नकुल, सहदेव, द्रुपद, विराट, केकयदेशीय राजकुमार और युधिष्ठिर ने भी बड़ी प्रसन्नता को पाया और उन सब ने भीमसेन की ऐसी अत्यन्त प्रशंसा करी जैसे कि अन्धक के मारनेपर देवताओं ने महादेवजी की करी थी ४५ उस समय वरुण के पुत्रों के समान क्रोधयुक्त युद्धाभिलाषी आप के पुत्रों ने महात्मा गुरुजी के साथ होकर रथ पदाती और हाथियों के द्वारा भीमसेन को चारोंओर से घेरलिया ४६ इसके पीछे अन्धकाररूप बादलों से युक्त बड़ी भयकारी रात्रि में महात्मा और उत्तम राजाओं का अपूर्व

युद्ध भेड़िये काक और गृध्रों का प्रसन्न करनेवाला भयकारी और भयानक रूपवाला हुआ॥ ४७॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिरात्रियुद्धेभीमपराक्रमेपञ्चपञ्चाशदुपरिशततमोऽध्यायः॥ १५५॥

एकसौछप्पन का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, सात्यकी के हाथ से उस पुत्र के मरनेपर जोकि मरने के निमित्त आसनपर बैठा था अत्यन्त क्रोधयुक्त सोमदत्त ने सात्यकी से यह वचन कहा १ कि पूर्व समय में महात्मा देवताओं से जो क्षत्रियधर्म देखागया है यादव! उस धर्म को त्यागकर तुम चोरों के धर्म में कैसे प्रीति करनेवाले हुए २ हे सात्यकिन्! क्षत्रियधर्म में प्रीति करनेवाला बुद्धिमान् मनुष्य युद्ध में मुख फेरनेवाले दुःखी और शस्त्रों के त्यागनेवाले वीर के ऊपर कैसे प्रहार करसक्ता है ३ हे यादव! यादवों में निश्चयकरके तुम और महाबाहु प्रद्युम्न दोही महारथी युद्ध में विख्यात हो ४ तुमने किस हेतु से अर्जुन के बाण से कटीहुई भुजावाले शरीर त्यागने के अर्थ बैठेहुए भूरिश्रवा के ऊपर उस प्रकार के निर्दय और पापकर्म को किया है ५ हे दुराचारिन्! अब तू भी उस दुष्कर्म के फल को युद्ध में प्राप्तकर हे अज्ञानिन्! अब मैं पराक्रमकरके बाणों से तेरे शिरको काटूंगा ६ हे यादव! मैं अपने दोनों पुत्र और शुभकर्म की शपथ खाता हूं हे यादव! कुलकलङ्की जो सूर्योदय के पूर्व विजय के अभ्यासी अर्जुन से अरक्षित और वीरों से स्तुतिमान् मैं तुझको न मारूं तो घोरनरक में पडूं ७। ८ अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी सोमदत्त ने इस प्रकार कहकर बड़े शब्द से शङ्ख को बजाकर सिंहनाद को किया इसके पीछे कमलपत्र के समान नेत्र सिंह की समान डाढ़ रखनेवाला कठिनता से विजय होनेवाला अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी सोमदत्त से बोला ९। १० हे कौरव! तेरे साथ और दूसरों के साथ मुझ युद्ध करनेवाले का कोई भय किसी दशा में भी मेरे हृदय में वर्तमान नहीं है ११ हे कौरव! जो तुम सब सेना से रक्षित होकर भी मुझसे युद्ध करोगे तो भी तुमसे मुझको किसीप्रकार की पीड़ा नहीं है १२ मैं युद्धसार वाक्यों से और असत्लोगों के सम्मतों से क्षत्रियधर्मवाला होकर तुझसे भयभीत होने के योग्य नहीं हूं १३ हे राजन्! जो अब तू मुझसे लड़ने की इच्छा करता है तो तुम निर्दय होकर तीक्ष्णधार बाणों से प्रहार करो मैं तुमपर प्रहार करता हूं १४ हे महाराज! आपका पुत्र भूरिश्रवा मारागया और

भाई के दुःख से पीड़ित शल्य भी मारागया १५ और अब तुम को भी पुत्र बान्धवों समेत मारूंगा अब युद्ध में तुम उपाय करनेवाले होकर नियत हो तुम महारथी कौरव हो १६ जिस युधिष्ठिर में सदैव दान जितेन्द्रियपन शान्ति पवित्रता जीवमात्र से शत्रुता न करना लज्जा धैर्य और क्षमा यह सब अविनाशी हैं १७ पूर्वसमय में तुम उस मृदङ्गकेतु युधिष्ठिर के तेज से मारेगये अब भी तुम कर्ण और शकुनी समेत युद्ध में नाश को पाओगे १८ मैं श्रीकृष्ण के चरणयज्ञ और वापीआदि बनाने के फलों की शपथ खाता हूं जो क्रोधयुक्त कियाहुआ मैं तुझ पापी को पुत्र समेत नहीं मारूं १९ जो युद्ध को त्यागकरके हटजायगा तो छूटेगा नहीं तो माराजायगा फिर क्रोध से रक्तनेत्र दोनों पुरुषोत्तम परस्पर ऐसा कह-कर शस्त्र चलाने को प्रवृत्तहुए उसके पीछे हज़ार रथ और दशहज़ार हाथियों समेत २० । २१ दुर्योधन ने चारों ओर से सोमदत्त को मध्यवर्ती किया और आपका साला महाबाहु वज्र के समान दृढ़शरीर युवा सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनी जोकि इन्द्र के समान पुत्र पौत्र और भाइयों से संयुक्त था २२ । २३ और जिस बुद्धिमान् के घोड़ों की संख्या एकलाख से ऊ-पर थी उसने भी बड़े धनुषधारी सोमदत्त को चारों ओर से रक्षित किया २४ परा-क्रमियों से रक्षित सोमदत्त ने सात्यकी को बाणों से ढकदिया टेढ़ेपर्ववाले बाणों से ढकेहुए उस सात्यकी को देखकर २५ क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न बड़ी सेना को लेकर सम्मुख आया बड़े कठिन वायु के वेग से चलायमान समुद्र के जैसे शब्द होते हैं २६ उसी प्रकार प्रहार करनेवाली सेनाओं के परस्पर घातों के शब्द हुए सो-मदत्त ने नव बाणों से सात्यकी को घायल किया २७ सात्यकी ने भी उस कौरवों में श्रेष्ठ सोमदत्त को भी नवबाणों से व्यथित किया युद्ध में पराक्रमी दृढ़ धनुषधारी से घायल २८ और अचेत सोमदत्त रथ के स्थिति स्थान को आश्रय लेकर अचेत हुआ सारथी उस महारथी वीर सोमदत्त को अचेत जानकर बड़ी शीघ्रता से २९ युद्ध से दूर लेगया उसको अचेत और सात्यकी के बाण से पीड्यमान देखकर ३० द्रोणाचार्य यदुवीर के मारने की इच्छा से सम्मुख गये उस आतेहुए को देखकर यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी को चाहते और युधिष्ठिर को आगे करनेवाले वीरों ने उन महात्मा आचार्यजी को घेरलिया इसके पीछे द्रोणाचार्य का और पा-ण्डवों का ऐसा युद्ध जारी हुआ ३१ । ३२ जैसे कि पूर्वसमय में तीनों लोकों

के विजय की इच्छा से राजा बलि का युद्ध देवताओं के साथ हुआ था इसके पीछे बड़े तेजस्वी भारद्वाज द्रोणाचार्य ने बाणों के जालों से पाण्डवीय सेना को ढकदिया और युधिष्ठिर को घायलकिया दशबाणों से सात्यकी को बीस से धृष्टद्युम्न को ३३। ३४ नवबाणों से भीमसेन को पांच से नकुल को आठ से सहदेव को सौबाणों से शिखण्डी को ३५ और पांच २ बाणों से द्रौपदी के पुत्रों को ३६ तीन बाण से युधामन्यु को छःबाणों से उत्तमौजा को और अन्य २ सेना के लोगों को भी घायलकरके युधिष्ठिर के सम्मुख गये ३७ हे राजेन्द्र! द्रोणाचार्य के हाथ से घायल वह पाण्डवीय सेना के लोग जिनके कि शब्द पीड़ा से युक्त थे भयभीत होकर दशों दिशाओं को भागे ३८ द्रोणाचार्य के हाथ से इधर उधर होनेवाली उस सेना को देखकर कुछ क्रोधयुक्त पाण्डव अर्जुन गुरु के सम्मुख गया ३९ फिर द्रोणाचार्यजी युद्ध में सम्मुख दौड़नेवाले अर्जुन को देखकर नियतहुए और फिर वह युधिष्ठिर की सेना भी लौटी ४० इसके पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य का युद्ध पाण्डवों के साथ फिर हुआ हे राजन्! सब ओर से आपके पुत्रों से रक्षित द्रोणाचार्य ने ४१ पाण्डवीय सेना को ऐसे भस्मकिया जैसे कि रुई के तोदे को अग्नि भस्म करदेता है हे राजन्! उस सूर्य के समान प्रकाश और प्रकाशित अग्नि के समान तेजस्वी बाणरूप ज्वाला रखनेवाले सूर्य के समान तपानेवाले धनुष को मण्डलरूप करनेवाले ४२। ४३ शत्रुओं के कठिन भस्म करनेवाले द्रोणाचार्य को देखकर सेनामें से किसी ने नहीं रोका जो २ पुरुष द्रोणाचार्य के सम्मुख हुआ ४४ उस उसके शिरको काटकर द्रोणाचार्य के बाण पृथ्वीपर गये इसप्रकार से महात्मा के हाथ से घायल वह पाण्डवीय सेना ४५ जोकि भय से पूर्ण थी अर्जुन के देखतेही फिर लौटी हे भरतवंशिन्! रात्रि में द्रोणाचार्य के हाथ से इधर उधर होने और भागनेवाली सेना को देखकर ४६ अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले कि द्रोणाचार्य के रथ के पास चलिये उसके पीछे श्रीकृष्णजी ने रजतदुग्धा गौ, कुन्द के पुष्प और चन्द्रमा के समान प्रकाशित ४७ घोड़ों को द्रोणाचार्यजी के रथ की ओर चलायमान किया भीमसेन भी द्रोणाचार्य की ओर जातेहुए उस अर्जुन को देखकर ४८ अपने सारथी से बोले कि मुझको द्रोणाचार्य की सेना में लेचल उस विष्वक् ने भी भीमसेन के वचन को सुनकर सत्यसङ्कल्प अर्जुन की ओर पीछे से घोड़ों को

चलाया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! द्रोणाचार्य की सेना की ओर जानेवाले सावधान दोनों भाइयों को देखकर ४९ । ५० पाञ्चाल, सृञ्जय, मत्स्य, चन्देरी, कारुष्य, कौसिल और केकयदेशीय महारथी भी उसके पीछे चले ५१ हे राजन्! इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला भयकारी युद्ध जारी हुआ ५२ आपकी सेना के दक्षिणीयभाग को अर्जुन ने और उत्तरीयभाग को भीमसेन ने रथ के बड़े समूहोंसमेत घेरलिया ५३ हे राजन्! उन दोनों पुरुषोत्तम भीमसेन और अर्जुन को देखकर महाबली सात्यकी और धृष्टद्युम्न सम्मुख गये ५४ उस समय परस्पर प्रहार करनेवाले सेना के समूहों के ऐसे शब्द हुए जैसे कि कठिन वायु से चलायमान समुद्रों के शब्द होते हैं ५५ हे राजन्! भूरिश्रवा के मरने से क्रोधयुक्त मारने के लिये निश्चय करनेवाले अश्वत्थामा युद्ध में सात्यकी को देखकर सम्मुख दौड़े ५६ सात्यकी के रथपर आनेवाले उस अश्वत्थामा को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने शत्रु को रोका ५७ कर्णनाम लोहे का बना बड़ेघोर रीछ के चर्म से मढ़े हुए छः सौ गज विस्तृत बड़े रथ में ५८ यन्त्र मन्त्र और कवच से अलंकृत बहुत बादलों के समूहों के समान शब्दायमान हाथियों के तुल्य घोड़ों से युक्त जिनको न घोड़े कहसकें न हाथी ५९ कहसकें फैलेहुए पर और चरण बड़े नेत्र शब्द करनेवाले गृध्रराज के चिह्नवाली शोभायमान ध्वजा से युक्त जिसका दण्डा उठाहुआ था ६० लोहित और आर्द्रपताकावाला अँतड़ियों की मालाओं से अलंकृत आठ चक्र रखनेवाले बहुत बड़े रथपर सवार होकर ६१ उस घोररूप राक्षसों की अक्षौहिणी सेना से जो कि शूल मुद्गलधारी पहाड़ और वृक्षों को हाथों में लियेहुए थी आवृत होकर सम्मुख आया ६२ बड़े धनुष को ऊंचा करनेवाले उस राक्षस को देखकर राजालोग ऐसे पीड़ावान् हुए जैसे कि प्रलय के समय दण्डधारी काल को देखकर पीड़ित होते हैं ६३ उसके पीछे उस पर्वत के शिखर के रूप भयानक भयकारी करालदाढ़ उग्रमुख शङ्ख के समान कान बड़े नख रखनेवाले ६४ उन्नतकेश भयानकनेत्र प्रकाशितमुख गम्भीरउदर महावट के समान गलद्वार मुकुट से गुप्तकेश ६५ सब जीवों के डरानेवाले काल के समान खुला मुख तेजस्वी शत्रु को व्याकुल करनेवाले ६६ बड़े धनुषधारी राक्षसों के इन्द्र आतेहुए उस घटोत्कच को देखकर आपके पुत्र की सेना के लोग भय से पीड़ित ऐसे महाव्याकुल हुए ६७ जिसप्रकार वायु से चञ्चलभँवँर

उत्तरङ्ग गङ्गाजी होती हैं घटोत्कच के कियेहुए सिंहनाद से भयभीत ६८ हाथियों ने मूत्र को गिराया और मनुष्य भी अत्यन्त पीड़ावान् हुए इसके पीछे वहां चारों ओर से पाषाणों की कठिनवर्षा हुई ६९ सायङ्काल के समय अधिक बलवान् होनेवाले राक्षसों के चलायेहुए लोहे के चक्र भुशुण्डी प्रास तोमर ७० शूल शक्ति और पट्टिशआदि शस्त्र वारंवार अधिकता से पृथ्वीपर गिरते थे उस उग्र बड़े रौद्र युद्ध को देखकर राजालोग ७१ आपके पुत्र और कर्णादिक शूर भी पीड़ावान् होकर दिशाओं को भागे वहांपर अस्त्रों के पराक्रम में प्रशंसनीय बड़े प्रतापी अकेले अश्वत्थामाही पीड़ावान् नहीं हुए ७२ उन्होंनेही घटोत्कच की उत्पन्न कीहुई माया को नाशकिया फिर माया के नाश होने पर उस क्रोधयुक्त घटोत्कच ने ७३ घोरबाणों को छोड़ा वह बाण अश्वत्थामा के शरीर में प्रवेश करगये जैसे कि क्रोध से मूर्च्छावान् सर्प तीव्रता से बामी में घुसजाते हैं उसी प्रकार वह बाण अश्वत्थामाजी को घायलकरके रुधिर से लिप्तअङ्ग ७४ सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधार शीघ्र चलनेवाले पृथ्वी में समागये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त हस्त-लाघवीय प्रतापवान् अश्वत्थामा ने अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच को दशबाणों से छेदा ७५ अश्वत्थामा के हाथ से मर्मस्थलोंपर घायल कठिन पीड़ावान् घटो-त्कच ने लाख आरा रखनेवाले ७६ छुराओं से युक्त बालार्क के समान प्रकाशित मणिवज्र से शोभित चक्र को हाथ में लिया फिर उस भीमसेन के पुत्र घटोत्कच ने मारने की इच्छा से अश्वत्थामापर फेंका ७७ फिर अश्वत्थामा ने अपने बाणों से उसको काटा अश्वत्थामा के बाणों से टूटाहुआ वह चक्र बड़े वेग से पृथ्वीपर जाकर ऐसे निष्फल गिरा जैसे कि अभागे का सङ्कल्प निष्फल जाता है ७८ इसके पीछे घटोत्कच ने गिरायेहुए चक्र को देखकर शीघ्रही अश्वत्थामा को बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि राहु सूर्य को ढकता है ७९ घटोत्कच के पुत्र श्रीमान् भिन्नाञ्जनसमूह के समान अञ्जनपर्वानाम ने आतेहुए अश्वत्थामा को ऐसे रोका जिसप्रकार गिरिराज ने प्रभञ्जन को रोका था उस भीमसेन के पौत्र अञ्जनपर्वा के बाणों से रुकाहुआ अश्वत्थामा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बादल की धाराओं से मेरुपर्वत शोभायमान होता है ८० । ८१ भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित रुद्र और विष्णु के समान पराक्रमी अ-श्वत्थामा ने एकबाण से अञ्जनपर्वा की ध्वजा को काटा ८२ दो बाण से उसके

सारथी को तीनबाण से त्रिवीणक को एक बाण से उसके धनुष को काटकर चारबाणों से चारों घोड़ों को मारा ८३ उस रथ से विरथ हुए के हाथ से उठायेहुए सुवर्ण बिन्दुओं से जटित खड्ग को अत्यन्त तीक्ष्ण विशिख नाम बाण से दो खण्ड किया ८४ फिर हे राजन् ! सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाली गदा घटोत्कच के पुत्र ने फेंकी वह भी अश्वत्थामा के बाणों से शीघ्रही गिरपड़ी ८५ उसके पीछे कालमेघ के समान गर्जते उस अञ्जनपरवा ने अन्तरिक्ष से उछलकर आकाश से वृक्षों की वर्षा करी ८६ इसके पीछे अश्वत्थामा ने घटोत्कच के पुत्र मायाधारी को बाणों से आकाश में ऐसे छेदा जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से बादल को छेदता है ८७ तब वह आकाश से उतरकर अपने स्वर्णमयी रथमें ऐसे नियतहुआ जैसे कि पृथ्वीपर वर्तमान बड़ा उग्र श्रीमान् अञ्जन का पर्वत होता है ८८ फिर अश्वत्थामा ने उस लोहे के कवच रखनेवाले अञ्जनपरवा नाम भीमसेन के पोतेको ऐसे मारा जैसे कि महेश्वर ने अन्धक को मारा था ८९ इसके पीछे अश्वत्थामा के हाथ से मरेहुए अपने पुत्र अञ्जनपरवा को देखकर और अश्वत्थामा के पास आकर क्रोध से कम्पित बाजूबन्द ९० भ्रान्ति से रहित घटोत्कच उस उठी हुई अग्नि के समान पाण्डवीय सेना के भस्म करनेवाले वीर अश्वत्थामा से बोला ९१ कि हे द्रोण के पुत्र ! खड़ा हो मेरे हाथ से जीवता नहीं जायगा अब तुझको ऐसे मारूंगा जैसे कि अग्नि के पुत्र स्वामिकार्त्तिकजी ने क्रौञ्च पर्वत को मारा था ९२ अश्वत्थामा बोले कि देवता के समान पराक्रमवाले पुत्र जावो दूसरों के साथ लड़ो हे हिडम्बा के पुत्र, घटोत्कच ! पुत्र से पिता को पीड़ा होना न्याय के अनुसार नहीं है ९३ निश्चयकरके मेरा क्रोध तुझपर नहीं है परन्तु यह बात है कि क्रोधयुक्त जीव अपने को भी मारे ९४ सञ्जय बोले कि यह बात सुनकर क्रोध से रक्तनेत्र पुत्र के शोक से व्याकुल घटोत्कच अश्वत्थामा से बोला ९५ हे द्रोणाचार्य के पुत्र ! क्या मैं युद्ध में साधारण मनुष्य के समान भयानक हूं जो तुम मुझको बाणों से डराते हो यह आपका वचन धन्यवाद के योग्य है ९६ निश्चयकरके कौरवों के वंश में मैं भीमसेन से उत्पन्न हुआ और युद्ध में मुख न फेरनेवाले पाण्डव का पुत्र हूं ९७ मैं राक्षसों का महाराज हूं बल पराक्रम में रावण के समान हूं हे द्रोणाचार्य के पुत्र ! खड़ा हो २ मेरे हाथ से जीवता नहीं जायगा ९८ अब मैं इस युद्धभूमि में तेरी युद्ध की इच्छा

को नाशकरूंगा क्रोध से रक्तनेत्र वह राक्षस यह कहकर ९९ क्रोध में पूर्ण अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गया जैसे गजराज के सम्मुख केशरी सिंह जाता है घटोत्कच रथ के अक्ष की समान बाणों से १०० रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य के पुत्र के ऊपर ऐसे वर्षा करनेलगा जैसे कि जलधाराओं से बादल वर्षा करता है अश्वत्थामा ने उस बाणवृष्टि को मार्ग मेंही नाश करदिया १०१ उसके पीछे अन्तरिक्ष में बाणों का मानों द्वितीय युद्ध हुआ तब अस्त्रों के मर्दन से उत्पन्न पतङ्गों से १०२ रात्रि के समय आकाश ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पटबीजनों से आच्छादित होकर शोभित होता है युद्ध का अभिमान रखनेवाले अश्वत्थामा से दूर की हुई उस माया को देखकर १०३ अन्तर्धान होकर घटोत्कच ने फिर माया को उत्पन्न किया वह राक्षस वृक्षों से पूर्ण शिखरोंसमेत बड़ा पर्वत बनगया १०४ वह पहाड़, शूल, प्रास, खड्ग और मूसलरूपी बड़े भिरनों का रखनेवाला था १०५ अश्वत्थामा उस अञ्जन पहाड़ के समान पर्वत को देखकर गिरनेवाले अस्त्रों के समूहों से पीड़ावान् नहीं हुआ १०६ इसके पीछे हँसतेहुए अश्वत्थामा ने वज्रअस्त्र को प्रकट किया उस अस्त्र से विदीर्ण वह गिरिराज शीघ्रही नाश होगया १०७ इसके पीछे उस राक्षस ने युद्ध में आकाश के मध्य में वज्र रखनेवाला नीलाबादल होकर बड़े उग्ररूप से शस्त्रों की वर्षा से अश्वत्थामा को ढकदिया १०८ इसके अनन्तर अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी ने वायुअस्त्र को चढ़ाकर उस उठेहुए नीले बादल को छिन्न भिन्न करदिया १०९ उस द्विपादों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ने बाणों के समूहों से सब दिशाओं को ढककर एकलाख रथ के सवारों को मारा ११० रथ की सवारी से आनेवाले बड़े धनुषधारी व्याकुलतारहित सिंह शार्दूल के समान मतवाले हाथी के समान पराक्रमी हाथीसवार रथसवार और भयानक १११। ११२ मुख शिर और गला रखनेवाले पीछे चलनेवाले पुलस्त्यवंशीय यातुधानवंशीय तामस नामवाले इन्द्र की समान पराक्रमी ११३ नाना प्रकार के शस्त्रधारी वीर नाना प्रकार के कवचों से अलंकृत बड़े पराक्रमी भयकारी शब्द और क्रोध से खुलेहुए नेत्र ११४ युद्धदुर्मद संग्राम में सम्मुख नियत अनेक राक्षसों से युक्त घटोत्कच को देखने से आकुलचित्त अश्वत्थामाजी आपके पुत्र को देखकर यह वचन बोले ११५ कि हे दुर्योधन ! अब तुम ठहरो तुमको इन वीर भाई इन्द्र के समान

पराक्रमी राजाओंसमेत भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता न करनी चाहिये ११६ मैं तेरे शत्रुओं को मारूंगा तेरी पराजय नहीं है यह तुझसे मैं सत्य २ प्रतिज्ञा करता हूं तुम सेना को विश्वास कराओ ११७ दुर्योधन बोले कि हे गौतमीनन्दन, अश्वत्थामाजी ! मैं मानता हूं कि यह अपूर्व बात नहीं है जो यह आप का उदारचित्त और हमपर बड़ी प्रीति है ११८ सञ्जय बोले कि अश्वत्थामा से ऐसा वचन कहकर दुर्योधन युद्ध के शोभा देनेवाले एकहजार घोड़े और रथों से संयुक्त नियत होनेवाले शकुनी से बोला ११९ कि हे शकुने ! तुम साठ हज़ार रथियों समेत अर्जुन के सम्मुख जाओ कर्ण, वृषसेन, कृपाचार्य, नील १२० उत्तरीयराजा, कृतवर्मा, पुरोमित्र, सुतापन, दुश्शासन, निकुम्भ, पराक्रमी कुण्डभेदी १२१ पुरञ्जय, दृढ़रथ, पताकी, हेमकम्पन, शल्य, अरुणी, इन्द्रसेन, सञ्जय, विजय, जय १२२ कमलाक्ष, परक्राथी, जयवर्मा और सुदर्शन यह सब और छः अयुत सेना के अधिपति तुम्हारे पीछे चलेंगे १२३ हे मामाजी ! तुम, भीमसेन, नकुल, सहदेव और धर्मराज को ऐसे मारो जैसे कि देवताओं का इन्द्र असुरों को मारता है मेरी आशा विजय होने में नियत है १२४ हे मामाजी ! द्रोणाचार्य के बाणों से छिन्न भिन्न और अत्यन्त घायलहुए कुन्ती के पुत्रों को ऐसे मारो जैसे कि अग्नि के पुत्र स्वामिकार्त्तिकजी ने असुरों को मारा था १२५ हे राजन् ! आपके पुत्र के इस वचन को सुनकर शकुनी आप के पुत्रों को प्रसन्न करनेवाला पाण्डवों को भस्म करने का अभिलाषी उसकी आज्ञा पातेही बड़ी शीघ्रता से चला १२६ उसके पीछे रात्रि के समय युद्धभूमि में अश्वत्थामा और राक्षस का ऐसा कठिन युद्ध जारी हुआ जैसे कि इन्द्र और प्रह्लाद का युद्ध हुआ था १२७ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने विष और अग्नि की सूरत दृढ़ दशबाणों से अश्वत्थामा को छातीपर घायल किया १२८ भीमसेन के पुत्र के हाथ से चलायमान उन बाणों से अत्यन्त घायल रथ के मध्य में वर्तमान अश्वत्थामाजी ऐसे कम्पायमान हुए जैसे कि वायु से वृक्ष कम्पायमान होते हैं १२९ फिर घटोत्कच ने अञ्जलिकनाम बाण से अश्वत्थामा के हाथ में वर्तमान महाप्रकाशित धनुष को शीघ्र काटा १३० इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने दूसरे बाणोंसमेत धनुष को लेकर तीक्ष्ण बाणों की ऐसी वर्षा करी जैसे कि जलधाराओं को बादल वर्षाता है १३१ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे अश्वत्थामाजी

ने सुनहरी पुङ्ख शत्रुओं के मारनेवाले आकाशचारी बाणों को आकाशचारी घटोत्कच पर फेंका १३२ बड़े वक्षस्थलवाले राक्षसों का वह समूह बाणों से पीड़ावान् होकर ऐसे शोभित हुआ जैसे कि सिंह से व्याकुल मतवाले हाथियों का समूह होता है १३३ घोड़े हाथी और सारथियों के साथ रथियोंसमेत सब राक्षसों को छिन्न भिन्न करके ऐसे नाश करदिया जैसे कि प्रलय के समय भगवान् अग्नि सब जीवमात्रों को भस्म कर देते हैं १३४ हे राजन्! वह अश्वत्थामाजी बाणों से राक्षसों की अक्षौहिणी सेना को भस्म करते ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि स्वर्ग में त्रिपुर को भस्मकरके महेश्वरजी शोभायमान हुए थे १३५ जैसे कि प्रलयकाल की अग्नि जीवों का नाश करके शोभित होती हैं उसी प्रकार विजय करनेवालों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा आपके शत्रुओं को भस्म करके शोभित हुआ १३६ इसके पीछे क्रोधयुक्त घटोत्कच ने भयकर्मी राक्षसों के समूहों को यह आज्ञा करी कि अश्वत्थामा को मारो १३७ फिर वह राक्षस घटोत्कच की आज्ञा को अङ्गीकार करके बड़े सिंहनाद से पृथ्वी को शब्दायमान करते अश्वत्थामा के मारने को दौड़े जोकि स्वच्छदाढ़ बड़े मुखों से युक्त घोररूप महाभयानक विस्तृतमुख घोरजिह्वा क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र इन नाना प्रकार के शस्त्रों के धारण करनेवाले थे शक्ति, शतघ्नी, परिघ, वज्र, शूल पट्टिश १३८ । १४० खड्ग, गदा, मूसल, फरसे, प्रास, भिन्दिपाल, दुधाराखड्ग, तोमर, कणप, तेजकम्पन १४१ स्थूल, भुशुण्डी, अश्म, गदा, स्थूण जोकि कार्ष्ण नाम लोहे के थे और युद्ध में शत्रुओं के पराजय करनेवाले घोर मुद्गरों को १४२ अश्वत्थामा के मस्तकपर मारा और उन भयानक पराक्रमी क्रोध से रक्तनेत्र राक्षसों ने हज़ारों शस्त्रों को फेंका १४३ इसके पीछे वह सब शूरवीर अश्वत्थामा के मस्तकपर पड़ीहुई उस बड़ीभारी शस्त्रों की वर्षा को देखकर पीड़ावान् हुए १४४ फिर पराक्रमी अश्वत्थामा ने उस घोर और ऊंची शस्त्रों की बड़ी वर्षाको देखकर वज्र की समान तीक्ष्णधारवाले बाणों से नाश किया १४५ इसके पीछे बड़े साहसी अश्वत्थामाजी ने दिव्य अस्त्र से अभिमन्त्रित सुनहरी पुङ्ख दूसरे बाणों से शीघ्रही राक्षसों को मारा १४६ बड़े वक्षस्थलवाले राक्षसों का वह समूह बाणों से पीड़ित होकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे सिंहों से भयभीत होने वाला मतवाले हाथियों का समूह व्याकुल होता है १४७ अश्वत्थामा के हाथ

से घायल अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी वह राक्षस अश्वत्थामा के मारने को दौड़े १४८ हे भरतवंशिन्! वहां अश्वत्थामा ने इस अपूर्व पराक्रम को दिखलाया जोकि सब जीवधारियों में अन्य पुरुष से करना असम्भव था १४६ जो बड़े अस्त्रज्ञ अकेले अश्वत्थामा ने राक्षसों के राजा घटोत्कच के देखतेहुए प्रकाशित बाणों से राक्षसीसेना को एक क्षणमात्र मेंही भस्म कर दिया १५० वह अश्वत्थामा युद्ध में राक्षसों की सेना को मारकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवों को मारकर संवर्तक नाम अग्नि शोभित होता है १५१ हे भरतवंशिन्! युद्ध में उन हज़ारों राजाओं और पाण्डवों के मध्य में राक्षसों के राजा वीर घटोत्कच के सिवाय कोई वीर उस सर्प के समान बाणों के चलानेवाले अश्वत्थामाजी के देखने को भी समर्थ नहीं हुए १५२। १५३ इसके अनन्तर वह क्रोध से चलायमाननेत्र घटोत्कच दशनों से दशनच्छदों को काटकर १५४ क्रोधयुक्त होकर अपने सारथी से बोला कि मुझको अश्वत्थामा के पास लेचल यह कहकर वह शत्रुहन्ता अश्वत्थामा के साथ द्वैरथ युद्ध को चाहताहुआ घोररूप प्रकाशित पताकावाले रथ की सवारी से चला १५५ उस भयानकपराक्रम राक्षस ने सिंह के समान बड़े शब्द को गर्ज कर युद्ध में आठ घण्टे रखनेवाले बड़े घोर देवताओं के बनायेहुए वज्र को घुमाकर अश्वत्थामा के ऊपर फेंका अश्वत्थामा ने धनुष को रथपर रख रथ से उतरकर उस वज्र को पकड़लिया १५६। १५७ और उसको उसीके ऊपर छोड़ा वह रथ से उतरगया १५८ वह बड़ा प्रकाशित कठिन भय का उत्पन्न करनेवाला वज्र घोड़े सारथी और ध्वजा समेत रथ को भस्म कर पृथ्वी को चीरकर उसमें घुसगया १५६ सब जीवधारियों ने उस अश्वत्थामा के कर्म को देखकर उसकी स्तुति करी जो रथ से उतरकर शङ्करजी के बनाये हुए घोर वज्र को पकड़लिया १६० हे राजन्! इसके पीछे भीमसेन के पुत्र घटोत्कच ने धृष्टद्युम्न के रथपर जाकर इन्द्रवज्र के समान बड़े घोर धनुष को लेकर तीक्ष्णधारवाले बाणों को फिर अश्वत्थामा की बड़ी छातीपर छोड़ा १६१ फिर व्याकुलता से रहित धृष्टद्युम्न ने विषैले सर्प के समान सुनहरी पुङ्खवाले बाणों को अश्वत्थामा की छातीपर छोड़ा १६२ इसके पीछे अश्वत्थामा ने हज़ारों नाराचों को छोड़ा और उन दोनों ने भी प्रज्वलित अग्नि

के समान बाणों से उसके नाराचों को काटा १६३ हे भरतर्षभ ! उन दोनों पुरुषोत्तम और अश्वत्थामा का बड़ा कठिन युद्ध शूरवीरों के आनन्द का उत्पन्न करनेवाला हुआ १६४ इसके पीछे भीमसेन हजार रथ तीनसौ हाथी और छः हजार घोड़ों समेत उस स्थानपर आये १६५ उस समय सुगमपराक्रमी धर्मात्मा अश्वत्थामा ने भीमसेन के पुत्र राक्षस से और छोटे भाई समेत धृष्टद्युम्न से युद्ध किया १६६ वहां अश्वत्थामाने अपूर्व पराक्रम को दिखाया हे भरतवंशिन् ! जोकि सब जीवमात्रों में दूसरे के करने के योग्य नहीं था १६७ भीमसेन घटोत्कच और धृष्टद्युम्न के देखते पलक मारने मेंही तीक्ष्ण बाणों से राक्षसों की अक्षौहिणी सेना को घोड़े, रथ, सारथी और हाथियों समेत मारडाला १६८ नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर, अर्जुन और श्रीकृष्णजी के देखतेहुए ऐसा कर्म किया सीधे चलनेवाले नाराचों से अत्यन्त घायल १६९ हाथी शिखरधारी पर्वतों के समान गिरपड़े हाथियों की कटीहुई जहां तहां सूंड़ों से १७० आच्छादित होकर पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि चेष्टा करनेवाले सर्पों से शोभित होती है और सुनहरी दण्डवाले गिरेहुए राजछत्रों से भी पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई १७१ जैसे कि प्रलयकाल में ग्रहों से युक्त उदयहुए चन्द्रमा और सूर्यवाला आकाश शोभित होता है जिसमें बड़ी ध्वजा मण्डूक और फैलीहुई भेरियां कछुये १७२ छत्ररूप हंसों की पंक्तियों से युक्त सुनहरी तोरणों की माला रखनेवाली जिनमें कङ्क और गृध्रही बड़े ग्राह और बहुत शस्त्ररूप झषनाम मछलियों से पूर्ण रथों से चूर्ण कियाहुआ बड़ारेत था और पताकारूप सुन्दर वृक्ष और बाणरूप भयानक प्रकार के मत्स्य, प्रास, शक्ति, दुधारे, खड्ग, रूप डिण्डिभ नाम के सर्प थे मज्जा मांसही बड़ी कीच और धड़रूपी नौका बालरूप शैवल था भयभीतों के मूर्च्छा करनेवाले गजराज घोड़े और शूरवीरों के मृतकशरीरों से उत्पन्न होनेवाली रुधिरसमूहों से बड़ी घोर नदी को अश्वत्थामाजी ने जारी किया १७३ । १७६ जोकि शूरवीरों के कष्टित शब्दों से शब्दायमान रुधिर की तरङ्गों से लहलहाती पदातियों से महाघोर यमलोक का महासमुद्र था १७७ अश्वत्थामा ने बाणों से राक्षसों को मारकर घटोत्कच को पीड़ावान् किया फिर अत्यन्तक्रोधयुक्त महाबली समर्थ ने भीमसेन और धृष्टद्युम्नसमेत १७८ पाण्डवों को नाराचों के समूहों से घायलकरके द्रुपद के पुत्र सुरथ नामको मारा १७९ फिर युद्ध

में द्रौपदी के पुत्र शत्रुञ्जय बलानीक जयानीक और जयास्व नामको मारा १८० अश्वत्थामा ने राजा श्रुताह्वय को यमलोक में पहुँचाया सुन्दरपुङ्ख तीक्ष्ण धार वाले दूसरे तीनबाणों से हेममाली १८१ पृषध्र और चन्द्रसेन को मारा हे श्रेष्ठ! उसने दशबाणों से कुन्तिभोज के पुत्रों को मारा १८२ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने उग्र सीधेचलनेवाले उत्तम यमदण्डके समान घोर बाणको चढ़ा कर और शीघ्रही घटोत्कच को लक्ष्य बनाकर कानतक खैंचेहुए धनुष से छोड़ा हे राजन्! वह सुन्दर पुङ्खवाला बड़ा बाण उस राक्षस के हृदय को छेदकर शीघ्र ही पृथ्वी में घुसगया १८३। १८४ हे राजेन्द्र! महारथी धृष्टद्युम्न ने उस घायल और गिरेहुए घटोत्कच को जानकर अश्वत्थामा के सम्मुख से उत्तम रथ को हटालिया १८५ इसके पीछे वह वीर अश्वत्थामा युधिष्ठिर की उस सेना को जिसका स्वामी मुख फेरगया युद्ध में विजय करके गर्जा जोकि सब जीवों के मध्य में आपके पुत्रों से प्रशंसनीय था १८६ इसके पीछे सैकड़ों बाणों से टूटे और चूर्णहुए शरीर मृतक पड़ेहुए नाशवान् उन राक्षसों से पृथ्वी चारों ओर से अत्यन्त भयानक और दुर्गम्य होगई १८७ सिद्ध गन्धर्व, पिशाचों के समूह, नाग, गरुड़, पितृ, पक्षी, राक्षसों के समूह, अप्सरा, देवता और जीवधारियों के समूहों ने उन अश्वत्थामाजी की स्तुति करी ॥ १८८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्पञ्चाशदुपरिशततमोऽध्यायः ॥ १५६ ॥

एकसौसत्तावन का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, अश्वत्थामा के हाथ से मारेहुए द्रुपद के पुत्र कुन्तिभोज के पुत्र और हजारों राक्षसों को देखकर १ बड़े उपाय करनेवाले युधिष्ठिर भीमसेन धृष्टद्युम्न और सात्यकी ने युद्ध केही निमित्त चित्त किया २ हे भरतवंशिन्! फिर क्रोधयुक्त सोमदत्त ने युद्ध में सात्यकी को देखकर बड़ी बाणों की वर्षा से ढकदिया ३ उसके पीछे विजयाभिलाषी आपके पुत्र का और दूसरों का घोर युद्ध महाकठिन और भय का बढ़ानेवाला हुआ ४ भीमसेन ने उस सम्मुख आयेहुए सोमदत्त को देखकर सात्यकी के निमित्त सुनहरीपुङ्खवाले दश बाणों से उसको घायलकिया ५ सोमदत्त ने भी उस वीर को सौ बाणों से घायलकिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी ने पुत्रादिकों से युक्त ६ नहुष के पुत्र ययाति के समान वृद्ध वृद्धों के गुणों से सम्पन्न सोमदत्त को वज्र की समान गिरने

वाले तीक्ष्णधार दश बाणों से घायल किया ७ शक्ति से उसको छेदकर फिर सात बाणों से घायल किया उसके पीछे सात्यकी के लिये भीमसेन ने नवीन बनेहुए और दृढ़ ८ घोर परिघ को सोमदत्त के मस्तकपर छोड़ा फिर क्रोधयुक्त सात्यकी ने भी युद्ध में अग्नि के समान सुन्दर परवाले तीक्ष्णधार उत्तम बाण को सोमदत्त की छातीपर छोड़ा वह घोर परिघ और बाण एकसाथही उस वीर के ऊपर गिरे ९। १० फिर वह महारथी गिरपड़ा फिर पुत्र के अचेत होनेपर बाह्लीक ११ समयपर वर्षाकरनेवाले बादल के समान बाणों की वर्षा को करता उस सात्यकी के सम्मुख गया उसके पीछे युद्ध के मुखपर सात्यकी के निमित्त महात्मा बाह्लीक को अत्यन्त पीड़ा देतेहुए भीमसेन ने नव बाण से १२ घायलकिया फिर महाबाहु अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रातिपीयवंशीय बाह्लीक ने शक्ति को भीमसेन की छातीपर ऐसे मारा १३ जैसे कि इन्द्र वज्र को मारता है उस प्रकार से घायल हुआ वह भीमसेन कम्पित होकर अचेत हुआ १४ फिर परा-क्रमी ने सचेत होकर उसपर गदा को छोड़ा पाण्डव की चलाई हुई उस गदा ने बाह्लीक के शिर को काटा १५ वह मृतक होकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्र से घायल होकर गिरिराज गिरता है हे पुरुषोत्तम ! उस वीर बाह्लीक के मरने पर १६ श्रीरामचन्द्रजी के समान दश पुत्रों ने भीमसेन को पीड़ावान् किया उनके नाम नागदत्त, दृढ़रथ, वीरबाहु, अयोभुज १७ दृढ़, सुहस्त, विरज, प्रमाथ, उग्रयायि, भीमसेन उनको देखकर क्रोधयुक्त हुआ और भार सहनेवाले बाणों को लिया १८ प्रत्येक को लक्ष्य बनाकर बाणों से आ-च्छादित किया वह दशों घायल और मृतक होकर रथों से ऐसे गिरपड़े १९ जैसे कि तीव्र वायु के वेग से पर्वत के शिखर से टूटेहुए वृक्ष गिरते हैं भीमसेन ने दश नाराचों से आपके उन पुत्रों को मारकर २० कर्ण के प्यारे पुत्र वृषसेन को बाणों से ढकदिया उसके पीछे कर्ण के भाई प्रसिद्ध वृकरथ नाम ने नाराचों से भीमसेन को घायलकिया २१ वह पराक्रमी उसके भी सम्मुख गया हे भरत-वंशिन् ! इसके पीछे वीर भीमसेन आपके शालों के सात रथियों को २२ मार कर नाराचों से सुतचन्द्र को मारा सुतचन्द्र के मरने को न सहनेवाले २३ शकुनी के वीर भाई गवाक्ष शरभ और विभुनामों ने सम्मुख जाकर तीक्ष्णबाणों से भीमसेन को घायलकिया जैसे कि पर्वत वर्षा की तीव्रता से घायल होता है

उसी प्रकार नाराचों से घायल उस पराक्रमी भीमसेन ने पांच बाणों से पांचों अतिरथियों को मारा २४ । २५ उन मृतक हुए वीरों को देखकर श्रेष्ठ राजा भी कम्पायमान हुआ उसके पीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने आपकी सेना को मारा २६ हे निष्पाप, धृतराष्ट्र ! युद्ध में क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य और आपके पुत्रों के देखतेहुए अम्बष्ठ, मालव, शूर, त्रिगर्त और सशिबीनों को भी मारकर यमपुर को भेजा २७ राजा ने अभिषाह शूरसेन, बाह्लीक और विशातकों को मारकर रुधिररूप कीचवाली पृथ्वी को किया २८ हे राजन् ! युधिष्ठिर ने बाणों से शूरवीर मालव और मद्रकों के समूहों के सिवाय अन्य २ शूरों को भी यमलोक में भेजा २९ मारो घेरो पकड़ो छेदो मारडालो यह कठिन शब्द युधिष्ठिर के रथ के पास हुए ३० सेनाओं के भगानेवाले उस युधिष्ठिर को देखकर आपके पुत्र के कहने से द्रोणाचार्य ने शायकों से युधिष्ठिर को ढकदिया ३१ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने वायुअस्त्र से राजा को घायल किया उसने भी उस दिव्य अस्त्र को अपने अस्त्र से दूर किया ३२ उस अस्त्र के निष्फल होनेपर पाण्डुनन्दन के मारने को अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर के ऊपर वारुण याम्य अग्नि और त्वाष्ट्र अस्त्र को चलाया ३३ निर्भय हुए धर्मपुत्र ने द्रोणाचार्य के चलाये और चलेहुए उन अस्त्रों को अपने अस्त्रों से दूरकिया ३४ हे भरतवंशिन् ! फिर आपके पुत्र की वृद्धि में प्रवृत्त धर्मपुत्र के मारने के इच्छावान् सत्यप्रतिज्ञा करने की इच्छा से द्रोणाचार्य ने ऐन्द्र और प्राजापत्य अस्त्र को प्रकटकिया ३५ कौरवों के स्वामी हाथी और सिंह के समान चलनेवाले विशाल वक्षस्स्थल रक्त और दीर्घनेत्रवाले बड़े तेजस्वी युधिष्ठिर ने दूसरे महेन्द्र अस्त्र को जारी किया उसने उनके अस्त्र को दूरकिया ३६ अस्त्रों के निष्फल होनेपर युधिष्ठिर का मारना चाहनेवाले क्रोधसे पूर्ण द्रोणाचार्यने ब्रह्मअस्त्रको प्रकटकिया ३७ हे राजन् ! इसके पीछे घोर अन्धकार से ढकजानेपर कुछ नहीं जानागया और सब जीवों ने बड़े भय को पाया ३८ हे राजेन्द्र ! कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर ने प्रकट होनेवाले ब्रह्मास्त्र को देखकर ब्रह्मास्त्र सेही उस अस्त्र को भी रोकदिया ३९ उसके पीछे उन सेनाओं के स्वामियों ने उन बड़े धनुषधारी सब प्रकार के युद्धों में कुशल नरोत्तम युधिष्ठिर और द्रोणाचार्य की प्रशंसा करी ४० हे भरतवंशिन्! तब क्रोध से रक्तनेत्र द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर को त्याग करके वायव्य अस्त्र से

द्रुपद की सेना को छिन्नभिन्न किया ४१ द्रोणाचार्य के हाथ से घायल वह पा-ञ्चाल महात्मा अर्जुन और भीमसेन के देखतेहुए भयभीत होकर भागे ४२ इसके पीछे अर्जुन और भीमसेन दो बड़े रथसमूहों समेत सेना को चारों ओर से नियतकरके अकस्मात लौटे ४३ अर्जुन ने दाहिने पक्ष को भीमसेनने उत्त-रीय पक्ष को रक्षित किया और बाणों के बड़े समूहों से भारद्वाज के ऊपर वर्षा करनेलगे ४४ हे महाराज! बड़े तेजस्वी केकय, सृञ्जय, पाञ्चाल और मत्स्य-देशीय यादवों समेत पीछे चले ४५ तदनन्तर अर्जुन के हाथ से घायल वह भरतवंशियों की सेना लोग अन्धकार और निद्रा से फिर भी इधर उधर हुए ४६ हे राजेन्द्र! तब द्रोणाचार्य से और निज आपके पुत्र से रोकेहुए वह शूरवीर रुकने को समर्थ नहीं हुए ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तपञ्चाशदुपरिशततमोऽध्यायः ॥ १५७ ॥

एकसौअट्ठावन का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, पाण्डवों की उस चढ़ाई करनेवाली बड़ी सेना को देखकर उसको न सहने के योग्य माननेवाले दुर्योधन ने कर्ण से कहा १ हे मित्रों के प्यारे! मित्रों का यह वह समय वर्तमान हुआ है कि तुम युद्ध में उन सब महा-रथी शूरवीरों की रक्षा करो २ जोकि सब ओर से क्रोधयुक्त सर्प के समान श्वास लेनेवाले पाञ्चाल मत्स्य केकयदेशीय और महारथी पाण्डवों से घिरेहुए हैं ३ विजय से शोभायमान इन्द्र के समान वह पाण्डव और पाञ्चालदेशियों के बहुत से रथों के समूह प्रसन्नचित्त होकर गर्जरहे हैं ४ कर्ण बोले कि जो इन्द्र भी यहां अर्जुन की रक्षा करने को आवे तो प्रथम शीघ्रता से उसको विजय करके पीछे से पाण्डवों को मारूंगा ५ हे भरतवंशिन्! मैं तुमसे सत्य २ प्रतिज्ञा करता हूं मेरा विश्वास कर सम्मुख आयेहुए पाण्डव और पाञ्चालों का मैं नाश करनेवाला हूं ६ तुमको ऐसे विजय दूंगा जैसे कि स्वामिकार्त्तिकजी ने इन्द्रको दी थी हे राजन्! तेरा अभीष्ट मुझको करना अवश्य योग्य है मैं केवल इसी निमित्त जीवता हूं ७ सब पाण्डवों में अर्जुन अधिक पराक्रमी है उसपर इन्द्रकी बनाई हुई अमोघ शक्ति को छोड़ूंगा हे बड़ाई देनेवाले! उस धनुर्धारी के मरने पर उसके सब भाई तेरे आज्ञाकारी होंगे अथवा फिर वन को जायँगे ८। ९ हे कौरव! मेरे जीवते हुए कभी व्याकुलता को मत करो युद्ध में सब पाण्डवोंको

एकसाथही विजय करूंगा १० और सम्मुख आये हुए केकय पाञ्चाल और यादवों को भी बाणों के समूहों से खण्ड २ करके पृथ्वी तुझको दूंगा ११ सञ्जय बोले कि फिर हँसतेहुए महाबाहु शारद्वत कृपाचार्यजी इसप्रकार से कहने वाले सूत के पुत्र कर्ण से यह वचन बोले १२ हे राधा के पुत्र ! धन्य है २ तुझ नाथ के होने से राजा दुर्योधन सनाथ है जोकि बातोंही से सिद्ध होता है हे कर्ण ! कौरव के सम्मुख ऐसी २ बातें बहुधा कहाकरते हो परन्तु तेरा कोई बल पराक्रम देखने में नहीं आता १३ । १४ तुमने बहुधा पाण्डवों के साथ सम्मुखता करी परन्तु हे सूतनन्दन ! तू सब स्थानों पर पाण्डवों से हारा है १५ हे कर्ण ! गन्धर्वों के हाथ से दुर्योधन के पकड़ेजानेपर सेना के लोगों ने युद्ध किया तूही अकेला सेना के आगे से भागा १६ और हे कर्ण ! विराटनगर में इकट्ठे सब कौरव और अपने छोटे भाई समेत तुम भी युद्ध में अर्जुन से पराजय किये गये १७ तुम युद्धभूमि में अर्जुन के सम्मुख होने को भी समर्थ नहीं हो फिर श्रीकृष्णजीसमेत सब पाण्डवों के विजय करने को कैसे उत्साह करते हो १८ हे सूत के पुत्र, कर्ण ! तुम बहुत कहते हो विना कहेहुए युद्ध कर यही सत्पुरुषों का व्रत है १९ हे सूतपुत्र ! तुम शरदऋतु के बादल के समान गर्ज कर निष्फल और निरर्थक दिखाई पड़ते हो राजा तुम्हारी इस बात को नहीं जानता है २० हे राधा के पुत्र ! तभी तक गर्जना करलो जबतक कि अर्जुन का रूप नहीं देखते हो अर्जुन को समीप से देखकर तेरा गर्जना कठिन है २१ तुम अर्जुन के उन बाणों को न पाकर अधिक गर्जते हो अर्जुन के बाणों से घायल होकर तुझ घायल का गर्जना बड़ा कठिन है २२ क्षत्रिय भुजाओं से शूर हैं ब्राह्मण बातों में गुरु हैं अर्जुन धनुष से शूर है और कर्ण मनोरथों सेही शूर है २३ जिससे रुद्रजी भी प्रसन्न हुए उस अर्जुन को कौन मारसक्ता है तब २४ उन कृपाचार्य के वचनों से अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ कर्ण कृपाचार्य से यह वचन बोला शूरवीर सदैव ऐसे गर्जते हैं जैसे कि वर्षाऋतु में बादल गर्जना करते हैं २५ और शीघ्रही फल को ऐसे देते हैं जैसे कि ऋतु में बोया हुआ बीज फल को देता है इस युद्ध के मुखपर शूरों के दोषों को नहीं देखता हूं २६ जोकि युद्ध में उस २ वचन के कहनेवाले और भार के उठानेवाले हैं पुरुष चित्त से ही जिस भार के उठाने को निश्चय करता है २७ उसमें सहायता

करने को दैव अवश्य उसके पास वर्तमान होता है दृढ़ विचारकी सहायता रखने वाला मैं मन से भार को उठाता हूं २८ युद्धभूमि में श्रीकृष्ण और यादवों समेत पाण्डवों को मारकर जो गर्जता हूं हे ब्राह्मण ! उसमें तुम्हारी क्या हानि होती है २९ शूरवीर शरदृऋतु के बादलों के समान निरर्थक नहीं गर्जते हैं पण्डित प्रथम अपनी सामर्थ्य को जानकर फिर गर्जते हैं ३० मैं अब युद्ध में साथ उपाय करनेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुन के विजय करने को चित्त से उत्साह करता हूं हे गौतमजी ! मैं इसकारण से गर्जता हूं ३१ हे ब्राह्मण ! इस मेरे गर्जने के फल को देखो कि युद्धभूमि में श्रीकृष्णजी समेत पाण्डवों को मारकर इस निष्कण्टक पृथ्वी को दुर्योधन के अर्थ दूंगा ३२ कृपाचार्यजी बोले कि हे सूत के पुत्र, कर्ण ! यह मनोरथों की वार्ता मुझको अङ्गीकार नहीं है निश्चयकरके तुम सदैव श्रीकृष्ण अर्जुन और धर्मराज युधिष्ठिर की निन्दा करते हो ३३ हे कर्ण ! निश्चय करके वहीं विजय है जहांपर युद्ध में कुशल कवचधारी शस्त्रधारी देवता, गन्धर्व, यक्ष, मनुष्य, उरग और राक्षसों के समूहों से भी ३४ अजेयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुन हैं धर्मपुत्र युधिष्ठिर वेद ब्राह्मणों का रक्षक सत्यवक्ता जितेन्द्रिय गुरु और देवताओं का पूजन करनेवाला ३५ सदैव धर्म में प्रीतिमान् अधिकतर शास्त्रों का ज्ञाता धैर्ययुक्त उपकार का नहीं भूलनेवाला है ३६ और उसके भाई बलवान् और अस्त्रों में परिश्रम करनेवाले गुरु में भक्तिपूर्वक प्रीति रखनेवाले बुद्धिमान् सदैव धर्मपर चलनेवाले और यशस्वी हैं ३७ और उनके नातेदार भी इन्द्र के समान पराक्रमी बड़े प्रीतिमान् प्रहार करनेवाले धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, दुर्मुखी, जनमेजय, चन्द्रसेन, रुद्रसेन, कीर्ति, धर्मा, ध्रुव, धर, वसुचन्द्र, दामचन्द्र, सिंहचन्द्र, सुतेजन ३८ । ३९ और इसीप्रकार द्रुपद के पुत्र महाअस्त्रज्ञ द्रुपद और जिन्हों के निमित्त छोटे भाइयों समेत राजा विराट अच्छा उपाय करनेवाला है ४० शतानीक, सूर्यदत्त, श्रुतानीक, श्रुतध्वज, बलानीक, जयानीक, जयाश्व, रथवाहन ४१ चन्द्रोदय, समर्थ यह सब विराट के उत्तम भाई नकुल, सहदेव, द्रौपदी के पुत्र और घटोत्कच राक्षस ४२ जिन्हों के अर्थ लड़ते हैं उन्हों की पराजय नहीं होसक्ती पाण्डवों के यह सब और अन्य बहुत से समूह हैं निश्चयकरके भीमसेन और अर्जुन देवता, असुर, मनुष्य, यक्ष, राक्षस, भूत, सर्प और हाथियों से समेत सब संसार को

अस्त्रों के बल से निर्मूल करसक्ते हैं और युधिष्ठिर अपनी घोरदृष्टि से भी सब पृथ्वी को भस्म करसक्ता है ४३ । ४५ वह अत्यन्त पराक्रमी श्रीकृष्णजी जिन्हों के लिये कवच धारण किये हैं हे कर्ण ! युद्ध में उन शत्रुओं के विजयकरने को तू किसप्रकार उत्साह करता है ४६ हे सूत के पुत्र ! सदैव यह तेरा बड़ा अन्याय है जो युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन से लड़ने को उत्साह करता है ४७ सञ्जय बोले हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! हँसते और इसप्रकार कहेहुए राधा के पुत्र कर्ण ने गुरु शारद्वत कृपाचार्य से कहा ४८ कि हे ब्राह्मण ! जो तुमने पाण्डवों के विषय में वचन कहा सो सब सत्य है निश्चय करके पाण्डवों में यह सब गुण और इनके सिवाय और भी बहुत से गुण हैं ४६ पाण्डव युद्ध में दैत्य, यक्ष, गन्धर्व, पिशाच, उरग, राक्षस और इन्द्र ५० समेत सब देवताओं से भी अजेय और अवध्य हैं तो भी इन्द्रही की दीहुई शक्ति से पाण्डवों को विजय करूंगा हे ब्राह्मण ! निश्चय करके इन्द्र ने यह अमोघ शक्ति मुझको दी है ५१ इस शक्ति से युद्ध में अर्जुन को मारूंगा फिर पाण्डव अर्जुन के मरनेपर उसके सगे भाई ५२ अर्जुन से रहित होकर किसी दशा में भी पृथ्वी के भोगने को समर्थ नहीं होंगे हे गौतमजी ! उन सब के नाश होनेपर यह ससागरा पृथ्वी ५३ विनाही परिश्रम के दुर्योधन के आधीन होगी इस लोक में अच्छी नीतियों से सब प्रयोजन सिद्ध होते हैं इसमें जरा भी सन्देह नहीं है ५४ हे गौतमजी ! मैं इस ज्ञान को जानकर उस ज्ञान से गर्जता हूं तुम वृद्ध ब्राह्मण और युद्ध में भी असमर्थ ५५ पाण्डवों में प्रीति करनेवाले होकर मोह से मेरा अपमान करते हो हे ब्राह्मण ! जो तुम यहां इस रीति से फिर मेरे अप्रिय को कहोगे ५६ तो हे दुर्बुद्धे ! खड्ग से तुम्हारी जिह्वा को काटूंगा हे दुर्बुद्धे, विप्र ! जो तुम सब कौरवीय सेना के मनुष्यों को भयभीत करते युद्ध में पाण्डवों की प्रशंसा करना चाहते हो हे ब्राह्मण ! इस स्थानपर मेरे इस यथार्थ कहेहुए वचन को सुनो ५७ दुर्योधन, द्रोण, शकुनी, दुर्मुख, जय, दुश्शासन, वृषसेन, शल्य और तुम ५८ । ५६ सोमदत्त, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, विविंशति यह सब युद्ध में कुशल और कवचधारी जिस सेना में नियत होयँ ६० तब इन्द्र के समान भी कौनसा शत्रु मनुष्य इनको विजय करसक्ता है यह शूरवीर अस्त्रज्ञ स्वर्ग के अभिलाषी ६१ धर्मज्ञ युद्ध में सावधान लड़ाई में देवताओं को भी मारसकेंगे

पाण्डवों के मारने के अभिलाषी दुर्योधन की विजय चाहनेवाले कवचधारी यह लोग युद्ध में नियत होयँ मैं बड़े पराक्रमी लोगों की भी विजय को दैव के आधीन मानता हूं ६२। ६३ जिस स्थानपर महाबाहु भीष्म सैकड़ों बाणों से युक्त होकर सोते हैं और विकर्ण, चित्रसेन, बाह्लीक, जयद्रथ ६४ भूरिश्रवा, जय, जलसिन्धु, सुदक्षिण, रथियों में श्रेष्ठ शल्य, पराक्रमी भगदत्त ६५ यह और दूसरे राजा जोकि देवताओं से भी कठिनता से विजय होनेवाले बड़े पराक्रमी शूर थे युद्ध में पाण्डवों के हाथ से मारेगये ६६ हे नीच पुरुष, ब्राह्मण! दैवसं-योग के विशेष दूसरी कौन बात मानते हो जिससे कि दुर्योधन के शत्रुओं की वारंवार प्रशंसा करते हो ६७ उन्हों के भी सैकड़ों और हज़ारों शूर मारे गये और पाण्डवोंसमेत कौरवों की सब सेना विनाश को पाती हैं ६८ यहांपर मैं किसी प्रकार से भी पाण्डवों के प्रभाव को नहीं देखता हूं हे नीच, ब्राह्मण! जो तुम सदैव उन्हीं को बलवान् पराक्रमी मानते हो ६९ मैं दुर्योधन के हित के निमित्त युद्ध में अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनके साथ लड़ने को उपाय करूंगा विजय दैव के आधीन है॥ ७०॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टपञ्चाशदुपरिशततमेऽध्यायः॥ १५८॥

एकसौउनसठ का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, अश्वत्थामा कर्ण से उसप्रकार कठोर वचन सुनेहुए मामा को देखकर शीघ्रही खड्ग को उठाकर तीव्रता से दौड़ा १ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा कौरवराज दुर्योधन के देखतेहुए कर्ण के सम्मुख ऐसे आया जैसे कि सिंह मतवाले हाथी के सम्मुख जाय २ अश्वत्थामा बोले हे नरों में नीच, अत्यन्त दुर्बुद्धे, कर्ण! जो तू अर्जुन के सत्य २ गुणों के कहनेवाले शूर मामाजी को शत्रुता से घुड़कता है ३ अब शूरता से अपनी प्रशंसा करनेवाला बड़े अहङ्कार में फँसाहुआ तू सब लोक के धनुषधारी को युद्ध में कुछ न गिनता निन्दा को करता है ४ तेरा पराक्रम कहां और अस्त्र कहां रहे जिस तुझको गा-ण्डीव धनुषधारी ने विजयकरके तेरे देखतेहुए जयद्रथ को मारा ५ जिसने पूर्व समय के बीच साक्षात् महादेवजी से युद्ध किया हे सूतों में नीच! निरर्थक मनोरथों से उस अर्जुन को विजय कियाचाहता है ६ इन्द्र समेत सुरासुर भी सब मिलकर जिस सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के साथी लोक के एकवीर

और अजेय अर्जुन को विजयकरने को समर्थ नहीं हैं हे दुर्बुद्धे, सूत ! फिर तुम युद्ध में इन सब राजाओं समेत क्या समर्थ होगे ७ । ८ हे नरों में नीच, अत्यन्त दुर्बुद्धे, कर्ण ! अब नियत हो मैं इसी समय तेरे शिर को शरीर से जुदा करता हूं ९ सञ्जय बोले कि बड़े तेजस्वी आप राजा दुर्योधन और द्विपादों में श्रेष्ठ कृपाचार्य ने उस युद्ध के लिये सन्नद्ध अश्वत्थामा को शीघ्रता से रोका १० कर्ण बोला हे कौरवों में श्रेष्ठ, दुर्योधन ! यह ब्राह्मणों में नीच दुर्बुद्धि शूर युद्ध में प्रशंसनीय मेरे पराक्रम को पावो हे दुर्योधन ! तुम इसको छोड़दो ११ अश्वत्थामा बोले कि हे दुर्बुद्धे, कर्ण ! हमलोगों की ओर से यह तेरा अपराध क्षमा कियाजाता है इस तेरे बड़े अहङ्कार को अर्जुन नाश करेगा १२ दुर्योधन बोला हे बड़ाई देनेवाले, अश्वत्थामाजी ! प्रसन्न होकर क्षमाकरने के योग्य हो निश्चय करके आपको किसीप्रकार से कर्ण के ऊपर क्रोध न करनाचाहिये १३ क्योंकि कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, शल्य, शकुनी और आप इन छओं के ऊपर बड़ा भार नियत है हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! प्रसन्न हूजिये १४ हे ब्राह्मण ! यह सब पाण्डव कर्ण के साथ सम्मुख होकर युद्ध करने के अभिलाषी चारोंओर से इसको बुलाते हुए आते हैं १५ सञ्जय बोले हे महाराज ! इसके पीछे क्रोध की तीव्रता से युक्त बड़े साहसी राजा से प्रसन्न कियेहुए अश्वत्थामाजी प्रसन्न हुए १६ हे राजेन्द्र ! फिर बड़े साहसी और शीघ्रही मृदु होनेवाले कृपाचार्यजी भी सौम्यभाव से यह वचन बोले १७ कि हे अत्यन्त दुर्बुद्धे, कर्ण ! यह तेरा क्रोध हमारी ओर से क्षमा कियाजाता है अर्जुनही तेरे बड़ेभारी अहङ्कार को नाश करेगा १८ सञ्जय बोले हे राजन् ! इसके अनन्तर कर्ण को चारोंओर से घुड़कते वह यशस्वी पाञ्चाल और पाण्डव एकही साथ आपहुँचे १९ तब रथियों में श्रेष्ठ पराक्रमी कर्ण भी धनुष को उठाकर उत्तम कौरवों से ऐसा रक्षित हुआ जैसे कि देवताओं के समूहों से इन्द्र रक्षित होता है २० अपने भुजबल में आश्रित होकर कर्ण नियत हुआ फिर कर्ण का युद्ध पाण्डवों के साथ जारी हुआ २१ हे राजन् ! वह युद्ध डरानेवाले सिंहनाद से शोभित था तदनन्तर उन वीर पाण्डव और पाञ्चालों ने २२ महाबाहु कर्ण को देखकर उच्चस्वर से शब्द किया और बोले कि यह कर्ण है कर्ण कहां है हे कर्ण ! इस बड़े युद्ध में नियत हो २३ हे पुरुषों में नीच, दुर्बुद्धे ! हमारे साथ युद्ध कर और कोई २ कर्ण को देखकर क्रोध से रक्तनेत्रकरके

यह वचन बोले २४ यह अहङ्कारी और निर्बुद्धि सूत का पुत्र सब उत्तम राजाओं की ओर से मारने के योग्य है ऐसे मनुष्य के जीवने से हमारा कोई प्रयोजन नहीं है २५ यह दुर्योधन के मत में नियत पापी पुरुष कर्ण सदैव से पाण्डवों का शत्रु होकर उपद्रवों का मूल है २६ मारो २ यह वचन बोलते और बाणों की बड़ी वर्षा से ढकते महारथी क्षत्रिय पाण्डव से आज्ञा दियेहुए कर्ण के मारने के निमित्त सम्मुख दौड़े कर्ण ने उन उस प्रकार दौड़तेहुए महारथियों को देख कर २७। २८ पीड़ा और भय को नहीं पाया उस प्रलयकाल के समान उठेहुए सेनासागर को देखकर २९ आपके पुत्रों की प्रसन्नता चाहनेवाले युद्धों में अजेय पराक्रमी शीघ्रता करनेवाले महाबली कर्ण ने बाणों के समूहों से ३० उस सेना को सब ओर से रोका हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! उसके पीछे पाण्डवों ने बाणों की वर्षा करके उसको रोका ३१ वह हज़ारों वीर धनुषों को खैंचते कर्ण से ऐसे युद्ध करनेलगे जैसे कि दैत्यों के समूह इन्द्र से लड़ते हैं ३२ हे प्रभो! कर्ण ने राजाओं की वर्षाहुई बाणवृष्टि को अपने बाणों की बड़ी वर्षा से चारों ओर को हटाया ३३ युद्धकर्म में उन युद्धाभिलाषियों का युद्ध ऐसाहुआ जैसे कि देवासुरों के युद्ध में इन्द्र का युद्ध दानवों से हुआ था ३४ वहां पर हमने कर्ण की अपूर्व तीव्रता को देखा जो युद्ध में कुशल पराक्रमी उन शत्रुओं ने उसको आधीन नहीं किया ३५ महारथी कर्ण ने राजाओं के बाण समूहों को रोककर युग ईशा छत्र ध्वजा और घोड़ोंपर ३६ अपने नाम से चिह्नित बाणों को चलाया इसके पीछे कर्ण के हाथ से पीड़ावान् व्याकुलरूप वह राजा लोग ३७ जहां तहां ऐसे घूमे जैसे कि शरदी से पीड़ावान् गौवें घूमती हैं उन मृतक घोड़े हाथी और रथों के समूहों को जोकि कर्ण के हाथ से घायल थे जहां तहां देखा उस समय मुख न फेरनेवाले शूरों के पड़े हुए शिर भुजाओं से ३८।३९ चारोंओर से सब पृथ्वी आच्छादित होगई मरनेवाले और सब ओर से शब्द करनेवाले वीरों से ४० युद्धभूमि यमराज की पुरी के समान महारुद्र रूप हुई उसके पीछे राजा दुर्योधन ने कर्ण के पराक्रम को देखकर ४१ और अश्वत्थामा से मिलकर यह वचन कहा कि कवचधारी कर्ण सब राजाओं के साथ युद्धभूमि में लड़ता है ४२ कर्ण के बाण से पीड़ित और भागीहुई इस सेना को ऐसे देखो जैसे कि स्वामिकार्त्तिक के हाथ से मारीहुई आसुरी सेना

होती है ४३ युद्ध में बुद्धिमान् कर्ण के हाथ से मारीहुई उस सेना को देखकर यह अर्जुन कर्ण के मारने की इच्छा से कर्ण के सम्मुख आता है सो जिस प्रकार अर्जुन हमारे देखतेहुए युद्ध में महारथी कर्ण को न मारसके उसी प्रकार की नीति कीजिये ४४ । ४५ तब उसके पीछे महारथी अश्वत्थामा कृपाचार्य शल्य कृतवर्मा यह सब कर्ण की रक्षा के निमित्त अर्जुन के सम्मुखगये ४६ जैसे कि दैत्यों की सेना इन्द्र को देखती है उसी प्रकार आतेहुए अर्जुन को देखकर सम्मुख हुए हे राजेन्द्र ! पाञ्चालों से रक्षित अर्जुन भी कर्ण के सम्मुख ऐसेगया जैसे वृत्रासुर के सम्मुख इन्द्र जाता है ४७ धृतराष्ट्र बोले हे सूत ! सूर्य के पुत्र कर्ण ने कालमृत्यु और यमराज के समान क्रोधयुक्त अर्जुन को देखकर किस उत्तररूप दशा को पाया ४८ वह महारथी सदैव अर्जुन के साथ ईर्षा करता है और युद्ध में बड़े भयकारी कर्मवाले अर्जुन के विजयकरने की अभिलाषा करता है ४९ हे सूत ! उस सूर्यपुत्र कर्ण ने उस सदैव के बड़े भारी शत्रुरूप अकस्मात् सम्मुख आयेहुए अर्जुन को देखकर कौन से प्रत्युत्तर को पाया ५० सञ्जय बोले कि व्याकुलता से रहित कर्ण उस सम्मुख आनेवाले पाण्डव अर्जुन को देखकर युद्ध में ऐसे सम्मुख हुआ जैसे कि हाथी हाथी के सम्मुख जाता है ५१ अर्जुन ने उस वेग से आतेहुए कर्ण को सीधे चलनेवाले बाणों से ढकदिया और कर्ण ने भी अर्जुन को बाणों से ढका ५२ फिर अर्जुन ने बाणजालों से कर्ण को ढकदिया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने तीनबाणों से छेदा ५३ महाबली अर्जुन ने उसकी उस हस्तलाघवता को नहीं सहा फिर शत्रु के हटानेवाले अर्जुन ने शिलापर घिसेहुए सीधे चलनेवाले ५४ तीन सौ बाणों को उस कर्ण के निमित्त चलाया और फिर उस हँसतेहुए पराक्रमी बड़े बली ने एक बाण से बायें हाथ के पञ्जे को छेदा बाण से घायल उस कर्ण के हाथ से धनुष गिरपड़ा ५५।५६ महाबली और हस्तलाघवी कर्ण ने आधेही निमिष में उस धनुष को फिर लेकर बाणों के समूहों से अर्जुन को ढकदिया ५७ हे भरतवंशिन् ! कर्ण के हाथ से उस छोड़ीहुई बाण वर्षा को मन्दमुसकान करते अर्जुन ने बाणों की वर्षा से छिन्नभिन्न किया ५८ हेराजन् ! युद्धकर्म पर युद्धकर्म करने के अभिलाषी उन दोनों बड़े धनुषधारियों में परस्पर सम्मुख होकर बाणों की वर्षा से ढकदिया ५९ यह युद्धभूमि में कर्ण और अर्जुन का वह बड़ा अपूर्व युद्ध ऐसा

हुआ जैसे कि हथिनी के ऊपर क्रोधयुक्त दो हाथियों का होता है ६० इसके पीछे बड़े धनुषधारी शीघ्रतायुक्त अर्जुन ने कर्ण के पराक्रम को देखकर उसके धनुष को मुष्टिका के स्थानपर काटा ६१ फिर शत्रुओं के तपानेवाले ने चार भल्लों से उसके चारों घोड़ों को भी यमलोक में पहुँचाया और एक भल्ल से सारथी के शिर को उसके शरीर से जुदा किया ६२ इसके पीछे पाण्डुनन्दन अर्जुन ने इस टूटे धनुष मरेघोड़े और नाशहुए सारथीवाले कर्ण को चार शायकों से छेदा ६३ बाणों से पीड़ित नरोत्तम कर्ण मृतक घोड़ेवाले रथ से शीघ्र उतर कर कृपाचार्य के रथपर सवार हुआ ६४ अर्जुन के बाणसमूहों से घायल शल्यक वृक्ष के समान चितेहुए जीवन की आशा करनेवाले कर्ण ने कृपाचार्य के रथपर सवारी करी ६५ हे भरतवंशिन् ! आपके शूरवीर लोग कर्ण को पराजित देखकर अर्जुन के बाणों से घायल होकर दशों दिशाओं को भागे ६६ हे राजन् ! तब राजा दुर्योधन ने उन भागेहुओं को देखकर फिर लौटाया और इस वचन को कहा ६७ हे शूरलोगो ! भागना बन्दकरो हे श्रेष्ठ, क्षत्रियलोगो ! ठहरो मैं आप युद्ध में अर्जुन के मारने को जाता हूं ६८ मैं पाण्डवलोगों को पाञ्चालदेशीय और सोमकों समेत मारूंगा अब पाण्डव गाण्डीव धनुषधारी समेत मुझ युद्ध करनेवाले के ६९ पराक्रम को ऐसे देखेंगे जैसे कि प्रलयकालीन कालपुरुष के पराक्रम को देखते हैं अब शूरवीरलोग मेरे छोड़ेहुए हजारों बाणजालों को ७० युद्ध में ऐसे देखेंगे जैसे कि टीड़ियों की आधिक्यता को देखते हैं अब सेना के लोग युद्ध में मुझ धनुषधारी के छोड़ेहुए बाणसमूहों को ७१ युद्ध में ऐसे देखेंगे जैसे कि वर्षाऋतु के आदि में बादल की वर्षा को देखते हैं अब मैं युद्ध में टेढ़े बरवाले शायकों से अर्जुन को विजय करूंगा ७२ हे शूरवीरलोगो ! युद्ध में नियत होकर अर्जुन से भय को त्याग करो अर्जुन मेरे पराक्रम को पाकर ऐसे नहीं सहसकैगा जैसे कि मकरादिक जीवों का आश्रयरूप समुद्र मर्यादा अथवा तट को पाकर नहीं सहसक्ता है अर्थात् उल्लङ्घन नहीं करसक्ता है यह कह कर बड़ी सेना से संयुक्त अजेय क्रोधसे रक्तनेत्र राजा दुर्योधन अर्जुन के सम्मुख चला तब कृपाचार्यजी ने जातेहुए उस महाबाहु दुर्योधन को देखकर ७३।७५ और अश्वत्थामा से मिलकर इस वचन को कहा यह सहन न करनेवाला क्रोध से मूर्च्छावान् महाबाहु राजा दुर्योधन ७६ पतङ्ग के समान नियत होकर अर्जुन

से लड़ना चाहता है यह पुरुषोत्तम अर्जुन के साथ युद्ध करते हमारे देखते ७७ जबतक प्राणों को त्याग नहीं करे तबतक इस कौरव की रक्षा करो अब जबतक वीर राजा दुर्योधन अर्जुन के बाणों के लक्ष्यों को नहीं पाता है ७८ तबतक युद्ध में रक्षाकरो जबतक काञ्चली से छुटे सर्प की समान घोर अर्जुन के बाणों से ७६ राजा भस्म नहीं किया जाता है तबतक युद्ध से निषेध करो हे बड़ाई देनेवाले ! हमलोगों के विद्यमान होने पर इस बातको मैं अयोग्य जानता हूं ८० कि जो अकेलाही राजा आप अर्जुन से लड़ने को उसके सम्मुख जाता है मुकुटधारी अर्जुन के साथ युद्ध करनेवाले दुर्योधन के जीवन को मैं कठिनता से प्राप्त होना ऐसा मानता हूं ८१ जैसे कि शार्दूल के साथ लड़नेवाले हाथी का जीवन कठिनता से होसक्ता है मामा से इस प्रकार आज्ञा किया हुआ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ८२ शीघ्रता से दुर्योधन से यह वचन बोला कि हे गान्धारी के पुत्र ! मेरे जीवते जी तुम युद्ध करने को योग्य नहीं हो ८३ हे अपने सदैव हित चाहनेवाले, कौरव ! मुझ को तिरस्कार करके अर्जुन के विजय के लिये तुमको व्याकुलता न करना चाहिये ८४ मैं अर्जुन को रोकूंगा हे दुर्योधन ! तुम ठहरो ८५ दुर्योधन बोला कि निश्चय करके गुरुजी पाण्डवों को पुत्रों के समान रक्षा करते हैं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! तुम भी सदैव उन पाण्डवों में उदासीनता करते हो ८६ अथवा मेरी अभाग्यता से युद्ध में आप का पराक्रम थोड़ा है व धर्मराज और द्रौपदी के अर्थ थोड़ा है उसको हम नहीं जानते ८७ मुझ लोभी को धिक्कार है जिसके कारण सुख भोगने के योग्य अजेय सब बान्धवलोग बड़े दुःखों को पाते हैं ८८ शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ युद्ध में महेश्वरजी के समान समर्थ गौतमी के पुत्र के सिवाय कौन शत्रुओं को नाशकरसक्ता है ८६ हे अश्वत्थामाजी ! प्रसन्न होकर इन सावधान शत्रुओं को नाशकरो आपके अस्त्रों के लक्ष्य में नियत होने को देवता और असुर भी समर्थ नहीं हैं ६० हे महात्माजी ! पाञ्चाल और सोमकों को उनके पीछे चलनेवालों समेत मारो आपही से रक्षित होकर हमलोग शेष बचेहुए शत्रुओं को मारेंगे ६१ हे ब्रह्मन् ! यह यशवान् सोमक और पाञ्चाल अत्यन्त क्रोधयुक्त मेरी सेनाओं में दावानल नाम अग्नि के समान विचरते हैं ६२ हे महाबाहो, नरोत्तम ! उनको और केकयों को रोको अर्जुन से रक्षित होकर वह नाश को कररहे हैं ६३ हे शत्रु-

विजयिन्, श्रेष्ठपुरुष, अश्वत्थामाजी ! शीघ्रतायुक्त होकर तुम चलो प्रारम्भ में अथवा अन्त में यह आपका कर्म है ६४ हे महाबाहो ! तुम पाञ्चालों के मारने के निमित्त उत्पन्न हुए हो निश्चय करके तुम सब जगत् को पाञ्चालों से रहित करोगे ६५ इसके पीछे वह यही सिद्ध वचन बोले कि ऐसाही होगा हे पुरुषोत्तम ! तुम इस कारण से सब पाञ्चालों को उनके पीछे चलनेवालों समेत मारो ६६ इन्द्र समेत सब देवता भी तेरे अस्त्रों के लक्ष्यपर नियत होने को समर्थ नहीं हैं फिर पाञ्चालों समेत पाण्डवलोग क्या पदार्थ हैं ? यह तुम से मैं सत्य २ कहता हूं ६७ हे वीर ! युद्ध में सोमकों समेत सब पाण्डव पराक्रम से आप के साथ लड़ने को समर्थ नहीं हैं यह सत्य २ कहता हूं ६८ हे महाराज ! चलो २ हमारा समय टल न जाय यह हमारी सेना पाण्डवों के हाथ से पीड़ित होकर भागती है ६६ हे बड़ाई देनेवाले, महाबाहो ! तुम अपने दिव्य तेज से पाण्डव और पाञ्चालों के विजय करनेको समर्थ हो ॥ १०० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनषष्ठ्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १५६ ॥

एकसौसाठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, दुर्योधन के इसरीतिपर समझाने से युद्ध में दुर्मद अश्वत्थामा ने शत्रुओं के मारने में ऐसा उपायकिया जैसे कि इन्द्र ने दैत्यों के मारने में उपाय किया था उस महाबाहु ने आपके पुत्र को यह उत्तर दिया १ कि हे महाबाहो, कौरव ! जो तुम कहते हो वह सब सत्य है पाण्डव सदैव मेरे और मेरे पिता के प्यारे हैं २ उसी प्रकार हम दोनों भी उनके प्यारे हैं परन्तु युद्ध में नहीं हे तात ! हम प्राणों को त्यागकर निर्भय के समान अपनी सामर्थ्य से लड़ते हैं ३ हे राजाओं में श्रेष्ठ ! मैं कर्ण शल्य कृपाचार्य और कृतवर्मा एक निमिष मेंही पाण्डवीय सेना का नाश करसक्ते हैं ४ और हे महाबाहो ! वह पाण्डव आधेही निमेष में कौरवीय सेना को नाश करसक्ते हैं जबकि हमलोग युद्ध में न होयँ ५ जो सामर्थ्य से पाण्डवों से युद्ध करनेवाले हम और हमसे युद्धाभिलाषी वह लोग भी युद्ध में न होयँ तो हे भरतवंशिन् ! तेज तेज से मिलकर नाश को पाता है ६ पाण्डवों के जीवते जी उनकी सेना शीघ्र विजय करने के योग्य नहीं है यह मैं तुमसे सत्य कहता हूं ७ हे भरतवंशिन् ! अपने निमित्त युद्ध करनेवाले वह समर्थ पाण्डव आप की सेना को कैसे नहीं

मारेंगे ८ हे राजन् ! तुम बड़े लोभी और छली हो हे कौरव ! तुम बातों के अ-हङ्कारी होकर सन्देह करनेवाले हो इसहेतु से तुम हमपर सन्देह करते हो ९ हे राजन् ! मैं मानता हूं कि तुम नीच पापात्मा पापी पुरुष हो हे नीच ! तू पाप करनेवाला होकर हमारे मध्य में दूसरोंपर भी सन्देह करता है १० हे कौ-रवनन्दन ! तेरे निमित्त जीवन का त्यागनेवाला मैं उपाय में प्रवृत्तहोकर तेरे ही कारण से युद्ध में जाता हूं ११ मैं शत्रुओं के साथ लडूंगा और उत्तम २ शूरवीरों को मारूंगा पाञ्चाल सोमक और केकयों से युद्ध करूंगा १२ हे शत्रु-विजयिन् ! मैं तेरे निमित्त पाण्डवों से भी युद्धकरूंगा अब मेरे बाणों से टूटे हुए अङ्गवाले पाञ्चाल और सोमक १३ सब ओर से ऐसे भागेंगे जैसे कि सिंह से पीड़ित गौवें भागती हैं अब धर्म का पुत्र राजा युधिष्ठिर मेरे पराक्रम को देखकर १४ सोमकों समेत लोक को अश्वत्थामारूप मानेगा धर्मपुत्र युधिष्ठिर युद्ध में सोमकों समेत पाञ्चालों को मृतकहुआ देखकर वैराग्य को पावेगा युद्ध में जो मेरे सम्मुख होकर युद्धकरेंगे हे भरतवंशिन् ! मैं उनको मा-रूंगा १५ । १६ वह वीर मेरी भुजाओं के मध्य में वर्तमान होकर बच नहीं सक्के महाबाहु अश्वत्थामा आपके पुत्र दुर्योधन से इसप्रकार के वचन कह-कर १७ सब धनुषधारियों को भयभीत करता और जीवधारियों में श्रेष्ठ आप के पुत्रों के हित को करना चाहता युद्ध के निमित्त सम्मुख वर्तमान हुआ १८ उसके पीछे वह गौतमी के पुत्र अश्वत्थामाजी पाञ्चाल और केकयों से बोले कि हे महारथियो ! तुम सब इधर से मेरे अङ्गोंपर प्रहारकरो १९ और अस्त्रों की तीव्रता दिखलाते नियत होकर तुम युद्धकरो हे महाराज ! ऐसे वचन सुनकर उन सब ने अश्वत्थामा के ऊपर शस्त्रों की वर्षा ऐसेकरी २० जैसे कि जल की वृष्टि को बादल करते हैं अश्वत्थामा ने उन बाणों को काटकर दश वीरों को मारा २१ हे प्रभो ! वह दशों पाण्डवों समेत धृष्टद्युम्न के सम्मुख नाश हुए युद्ध में घायल वह पाञ्चाल और सृञ्जय २२ युद्ध में अश्वत्थामा को त्याग करके दशों दिशाओं को भागे हे महाराज ! उन भागतेहुए सोमकों समेत शूर पाञ्चालों को देखकर २३ धृष्टद्युम्न युद्ध में अश्वत्थामा के सम्मुख गया उसके पीछे सुवर्ण के सामान से अलंकृत जलभरे बादल के समान गर्जने वाले २४ मुख न फेरनेवाले सैकड़ों शूर रथियों से युक्त राजाद्रुपद का पुत्र

महारथी धृष्टद्युम्न २५ गिरायेहुए शूरवीरों को देखकर अश्वत्थामा से यह वचन बोला हे आचार्य के पुत्र, दुर्बुद्धे ! इन शूरवीरों के मारने से तुझको क्या लाभ है २६ जो तू युद्ध में बड़ाशूर है तो मेरे साथ युद्धकर मैं तुझको अवश्य मारूंगा अब मेरे आगे नियत हो २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! इसके पीछे प्रतापवान् धृष्टद्युम्न ने मर्मस्थलों के छेदनेवाले तीक्ष्ण बाणों से आचार्य के पुत्र को घायल किया २८ फिर वह सुनहरी पुङ्ख साफनोक सब शरीर के चीरनेवाले पंक्तिरूप बाण अश्वत्थामा के शरीर में ऐसे प्रवेश करगये २९ जैसे कि स्वतन्त्र भ्रमर मधु के लोभी पुष्पित वृक्षपर वह अत्यन्त घायल चरण दबेहुए सर्प के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त ३० भय से उत्पन्नहोनेवाली व्याकुलता से रहित अहंकारी अश्वत्थामाजी हाथ में बाण को लेकर यह वचन बोले कि हे धृष्टद्युम्न ! तू नियत होकर एकमुहूर्ततक ठहरजा ३१ फिर तुझ को यमलोक में भेजूंगा शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अश्वत्थामाजी ने इस प्रकार से कहकर ३२ हस्तलाघवता के समान बाणों के समूहों से धृष्टद्युम्न को चारोंओर से ढक-दिया संग्राम में अश्वत्थामा से पीड़ित युद्ध में दुर्मद ३३ उस द्रुपद के पुत्र ने वचनोंही से अश्वत्थामा को घुड़का कि हे ब्राह्मण ! तुम मेरी प्रतिज्ञा और उ-त्पत्ति को नहीं जानते हो ३४ हे अत्यन्त दुर्बुद्धे ! मैं निश्चय करके द्रोणाचार्य को मारकर तुझको मारूंगा इसी से तू मुझसे अवध्यहै और द्रोणाचार्य के जीवते हुए अभी तुझको नहीं मारता हूं ३५ हे दुर्बुद्धे ! अब इसी रात्रि में सूर्योदय से पूर्वही तेरे पिता को मारकर फिर युद्ध में तुझको भी प्रेतलोकमें पहुँचाऊंगा ३६ यह मेरे चित्त में नियत है इसहेतु से कि जो तेरी शत्रुता पाण्डवों में और भक्ति कौरवों में है ३७ तो नियत होकर उनको दिखलाओ वह मुझ से जीवते नहीं वचसक्ते जो ब्राह्मण अपने धर्मको त्यागकर क्षत्रिय धर्ममें प्रीति रखनेवाला है ३८ वह सबलोकों से ऐसे मारने के योग्य है जैसे कि पुरुषों में नीच तुम धृष्टद्युम्न से ऐसे कठोर वचनों को सुनकर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ने ३९ कठिन क्रोध किया और तिष्ठ २ यह वचन भी कहा और दोनों नेत्रों से भस्म करतेहुए उसने धृष्टद्युम्न को देखा ४० सर्प की समान श्वास लेते अश्वत्थामा ने बाणों से ढकदिया हे राजाओं में श्रेष्ठ ! युद्ध में अश्वत्थामा के बाणों से ढका ४१ और पाञ्चालदेशीय सब सेना से संयुक्त रथियों में श्रेष्ठ अपने पराक्रम में आश्रित

महाबाहु धृष्टद्युम्न कम्पायमान नहीं हुआ ४२ और नाना प्रकार के शायकों को अश्वत्थामा पर छोड़ा प्राणों का द्यूत और दाँव रखनेवाले युद्ध में परस्पर बाणों के समूहों से पीड़ा देनेवाले क्रोधयुक्त चारोंओर से बाणों की वर्षा करनेवाले बड़े धनुषधारी वह दोनों फिर सम्मुख वर्तमानहुए ४३।४४ सिद्ध चारण और वार्तिकों ने अश्वत्थामा और धृष्टद्युम्न के उस घोररूप भयानक युद्ध को देखकर बड़ी प्रशंसा की ४५ बाणों के समूहों से आकाश और दिशाओं को पूर्ण करतेहुए वह दोनों बाणों से बड़े अन्धकार को उत्पन्न करके दृष्टि से गुप्त होकर युद्ध करनेलगे ४६ युद्ध में नाचते और धनुष को मण्डलरूप करने और एक दूसरे के मारने में उपाय करनेवाले परस्पर मारने के अभिलाषी ४७ युद्ध में हज़ारों उत्तम शूरवीरों से स्तूयमान दोनों महाबाहु अपूर्व मनोहर और श्रेष्ठ युद्धके करनेवाले हुए ४८ जैसे कि वन में दो जङ्गली हाथी होते हैं उसी प्रकार युद्ध में कुशल उन दोनों को देखकर दोनों सेनावालों को अत्यन्त आनन्द हुआ ४९ सिंहनादों के शब्द हुए शङ्खों को बजाया और हज़ारों बाजे भी बजे ५० भयभीतों के भय के बढ़ानेवाले उस कठिन युद्ध में वह युद्ध एक मुहूर्त तक एकहीसा हुआ ५१ हे महाराज! इसके पीछे अश्वत्थामाजी महात्मा धृष्टद्युम्न के भुजा धनुष और छत्र को घायलकरके यक्ष के रक्षकसमेत ५२ चारों घोड़े और सारथी को मारकर युद्ध में सम्मुखदौड़े बड़े साहसी ने झुके पर्ववाले बाणों से उन सब पाञ्चालों को ५३ जोकि सैकड़ों और हज़ारों थे भगादिया हे भरतर्षभ! इसके पीछे पाण्डवीय सेना पीड़ावान् हुई ५४ युद्ध में अश्वत्थामा के इन्द्र के समान बड़े कर्म को देखकर सेना ने बड़ी पीड़ा को पाया महारथी अश्वत्थामा ने सौबाणों से पाञ्चालों के सौही मनुष्यों को मारकर ५५ और तीक्ष्णधार तीन बाणों से तीन महारथियों को मार धृष्टद्युम्न और अर्जुन के देखते ५६ उन बहुत से पाञ्चालों का विनाशकिया जोकि सम्मुख वर्तमान थे युद्ध में सृञ्जयों समेत घायलहुए पाञ्चाल ५७ जिनके रथ और ध्वजा गिरपड़े थे वह अश्वत्थामा को छोड़कर चलेगये वह अश्वत्थामा युद्ध में शत्रुओं को विजयकरके ५८ बहुत बड़े शब्द से ऐसे गर्जा जैसे कि वर्षा के प्रारम्भ में बादल गर्जता है वह अश्वत्थामाजी बहुत से शूरों को मारकर ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि प्रलयकाल की अग्नि सब जीवों को भस्मकरके शोभित होती है युद्ध

में प्रशंसनीय प्रतापी अश्वत्थामा लड़ाई में हज़ारों शत्रुओं को विजयकरके ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि शत्रुओं के समूहों को मारकर देवराज इन्द्र शोभित होता है॥ ५९। ६०॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषष्ठ्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १६०॥

एकसौइकसठ का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! पाण्डव युधिष्ठिर भीमसेन ने चारोंओर से अश्वत्थामा को घेरलिया १ उसके पीछे द्रोणाचार्य को साथ लेकर राजा दुर्योधन युद्ध में पाण्डवों के सम्मुखगया फिर वह युद्ध जारीहुआ २ हे महाराज! जोकि घोररूप और भयभीतों के भय का बढ़ानेवाला था क्रोधयुक्त भीमसेन ने अम्बष्ठ, मालव, बङ्ग, शिबि और त्रिगर्तदेशियों के ३ समूहों को भी यमपुर को भेजा इसके विशेष भीमसेन ने अभिषाह और शूरसेन नाम क्षत्रिय जोकि युद्ध में दुर्मद थे ४ उनको मारकर पृथ्वी को रुधिररूपी कीच से पूर्णकिया हे राजन्! अर्जुनने पहाड़ी मालव और माद्रिक शूरवीरों को भी ५ तीक्ष्ण धारवाले बाणों से मृत्युलोक में पहुँचाया सीधे चलनेवाले नाराचों से अत्यन्त कठिन घायल ६ हाथी दो शिखर रखने वाले पर्वतों के समान पृथ्वीपर गिरपड़े हाथियों की कटीहुई और इधर उधर चेष्टाकरनेवाली सूंड़ों से ७ आच्छादित पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि चलायमान सर्पों से शोभित होती है ८ पड़ेहुए राजछत्रों से पृथ्वी ऐसी शोभितहुई जैसे कि प्रलयकाल में सूर्य चन्द्रमा आदिक ग्रहों से संयुक्त आकाश होता है द्रोणाचार्य के रथ के पास ऐसाकठोर शब्दहुआ कि हे वीरलोगो! तुम निर्भय होकर मारो प्रहार करो भेदो काटडालो ९ फिर बड़े क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने युद्ध में वायुअस्त्र से ऐसे उनको छिन्न भिन्न किया जैसे कि दुःख से उल्लङ्घन के योग्य बड़ावायु बादलों को तिर्रबिर्र कर देता है १० द्रोणाचार्य के हाथ से घायल वह पाञ्चाल महात्मा अर्जुन और भीमसेन के देखतेहुए भयभीत होकर भागे ११ उसके पीछे अर्जुन और भीमसेन बड़ेरथों के समूहोंसमेत भारीसेना को रोककर अकस्मात् लौटे १२ अर्जुन ने दक्षिणीय पक्ष को और भीमसेन ने उत्तरीय पक्ष को रक्षितकिया और बड़ी बाणों की वर्षा द्रोणाचार्य पर करी १३ उसीप्रकार बड़े तेजस्वी सृञ्जय, पाञ्चाल, मत्स्य और सोमकलोग उन दोनों के पीछेचले १४ हे राजन्! उसीप्रकार आपके पुत्र के बड़े रथी

जोकि प्रहारों के करनेवाले थे बड़ी सेनाओं समेत द्रोणाचार्य के रथ के समीप गये १५ उसके पीछे अर्जुन के हाथ से घायल वह भरतवंशियों की सेना अँधेरे और निद्रा से फिर इधर उधर को हुए १६ हे महाराज ! तब आप द्रोणाचार्य और आप के पुत्र से रोकेहुए वह शूरवीर न रुकसके १७ अन्धकार से युक्त संसार के होनेपर पाण्डव अर्जुन के बाणों से इधर उधर होजानेवाली वह बड़ी सेना सब ओर को मुख फेरकरके भागी १८ वहां कितनेही राजा तो अपनी सैकड़ों सवारियों को भी छोड़कर भयभीत होकर चारोंओर से भागे ॥ १९ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसंकुलयुद्धयेकषष्ठ्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६१ ॥

एकसौबासठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि फिर सात्यकी बड़े धनुष के चलायमान करनेवाले सोमदत्त को देखकर सारथी से बोला कि मुझको सोमदत्त के सम्मुख लेचल १ हे सूत ! मैं कौरवों में नीच अपने शत्रु बाह्लीक को विना मारेहुए युद्धभूमि से नहीं लौटूंगा यह मेरा सत्य २ कथन है २ उसके पीछे सारथी ने मन के समान शीघ्रगामी और युद्ध में सब शस्त्रों को उल्लङ्घनकरके चलनेवाले शङ्खवर्ण सिन्धुदेशीय घोड़ों को युद्धभूमि में पहुँचाया ३ हे राजन् ! मन और वायु के समान शीघ्रगामी वह घोड़े सात्यकी को ऐसे लेचले जैसे कि पूर्व समय में हरीजाति के घोड़े दैत्यों के मारने में सन्नद्ध इन्द्रको लेचले थे ४ युद्ध में आते हुए उस वेगवान् यादव को देखकर महाबाहु सोमदत्तजी विना व्याकुलताके लौटे ५ बादल के समान बाणों की वर्षा को करते सोमदत्त ने सात्यकी को ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल सूर्य को ढक देते हैं हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! फिर व्याकुलता से रहित सात्यकी ने भी कौरवों में श्रेष्ठ सोमदत्त को बाणों के समूहों से युद्ध में चारोंओर से ढकदिया ६ । ७ फिर सोमदत्त ने उस माधव सात्यकी को साठबाणों से छातीपर घायलकिया हे राजन् ! फिर सात्यकी ने भी तीक्ष्ण बाणों से उसको छेदा वह दोनों परस्पर बाणों से घायल ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि फूलों की ऋतु में सुन्दर फूल रखनेवाले फूलेहुए किंशुक के वृक्ष होते हैं ८ । ९ रुधिर से लिप्त सब देह और कौरव व वृष्णियों का यश उत्पन्न करनेवाले नेत्रों से भस्म करनेवाले उन दोनों ने परस्पर देखा १० रथमण्डल मार्गों में घूमनेवाले वह दोनों शत्रुओं के मर्दन करनेवाले ऐसे घोररूप हुए

जैसे कि वर्षा करनेवाले दो बादल होते हैं ११ हे राजेन्द्र! बाणों से टूटे अङ्ग और सब ओर से कटेहुए बाणों से घायल वह दोनों चमत्कारी अचम्भे के समान विदितहुए १२ अर्थात् वह दोनों सुनहरी पुङ्खवाले बाणों से छिदेहुए ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि वर्षाऋतु में पटबीजनों से युक्त वनस्पति शोभित होती है शायकों से ज्वलितरूप सर्वाङ्ग और युद्ध में क्रोधयुक्त वह दोनों महारथी ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि उल्काओं से ज्वलितरूप दो हाथी होते हैं १३। १४ हे महाराज! इसके पीछे महारथी सोमदत्त ने युद्ध में अर्द्धचन्द्र नाम बाण से माधव के बड़े धनुष को काटा १५ और उसको भी बीस शायकों से घायल किया और शीघ्रता के समय तीव्रता करनेवाले ने फिर दशबाणों से छेदा १६ इसके पीछे सात्यकी ने दूसरे वेगवान् धनुष को लेकर पांच शायकों से सोमदत्त को छेदा १७ तदनन्तर हँसतेहुए सात्यकी ने युद्ध में दूसरे भल्लसे बाह्लीक की सुनहरी ध्वजा को काटा १८ फिर व्याकुलता से रहित सोमदत्तने गिराई हुई ध्वजा को देखकर पचीस शायकों से सात्यकी को घायल किया १९ युद्ध में क्रोधयुक्त यादव सात्यकी ने भी धनुषधारी सोमदत्त की ध्वजा को क्षुरप्रनाम तीक्ष्ण भल्ल से काटा २० हे राजन्! इसके पीछे टेढ़े पर्व और सुनहरी पुङ्खवाले बाणों के एक सैकड़े से उसको अनेकप्रकार से ऐसे घायल किया जैसे कि टूटी डाढ़वाले हाथी को घायल करते हैं २१ इसके पीछे महाबली महारथी सोमदत्त ने दूसरे धनुष को लेकर बाणों की वर्षा से सात्यकी को ढकदिया २२ फिर क्रोधयुक्त सात्यकी ने युद्ध में उस सोमदत्त को घायल किया और सोमदत्त ने भी सात्यकी को बाणों के जालों से पीड़ित किया २३ भीमसेन ने यादव सात्यकी के निमित्त दश बाणों से बाह्लीक के पुत्र को घायल किया और व्याकुलता से रहित सोमदत्त ने भी सौ बाणों से भीमसेन को घायल किया २४ फिर उसके पीछे भीमसेन ने यादव के निमित्त नवीन और दृढ़ घोर परिघ को सोमदत्त की छातीपर छोड़ा २५ हँसतेहुए कौरव ने युद्ध में उस वेग से आतीहुई घोर दर्शनवाली परिघ को दो टुकड़े करदिया २६ वह बड़ी परिघ लोहे की दो खण्ड होकर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि वज्र से टूटा पर्वत का बड़ा शिखर होता है २७ हे राजन्! उसके पीछे सात्यकी ने युद्ध में सोमदत्त के धनुष को भल्ल से और हस्तत्राण को पांच बाणों से काटा २८

हे भरतवंशिन्! उसके पीछे चार बाणों से उन उत्तम घोड़ों को यमराज के पास पहुँचाया २९ हे नरोत्तम! फिर हँसतेहुए सात्यकी ने टेढ़े पर्ववाले भल्ल से सारथी के शिर को शरीर से पृथक् करदिया ३० हे राजन्! इसके अनन्तर यादव सात्यकी ने अग्नि के समान ज्वलित सुनहरी पुङ्ख तीक्ष्णधार महाघोर बाण को छोड़ा ३१ पराक्रमी सात्यकी के हाथ से छोड़ाहुआ वह घोर उत्तम बाण शीघ्रता से उसकी छातीपर गिरा ३२ हे महाराज! यादव के हाथ से अत्यन्त घायल महाबाहु महारथी सोमदत्त रथ से गिरा और मर गया ३३ महारथी लोग वहां उस मरेहुए सोमदत्त को देखकर बड़ी बाणों की वर्षा करते सात्यकी के सम्मुख गये ३४ हे महाराज! बाणों से ढकेहुए सात्यकी को देखकर युधिष्ठिरादि सब पाण्डव और सब प्रभद्रक बड़ी सेना को साथ लिये द्रोणाचार्य की सेना की ओर दौड़े ३५ उसके पीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य के देखतेहुए आपके पुत्रों की बड़ी सेना को बाणों से भगाया ३६ सेनाओं के भगानेवाले युधिष्ठिर को देखकर क्रोध से रक्तनेत्र द्रोणाचार्यजी बड़े वेग से सम्मुख गये ३७ इसके पीछे अत्यन्त तीक्ष्णधार सात बाणों से युधिष्ठिर को घायल किया फिर बड़े क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने भी पांच बाणों से घायल किया ३८ होठों को चाटते अत्यन्त घायल महाबाहु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर की ध्वजा और धनुष को काटा ३९ उस टूटे धनुष और रथ से रहित उत्तम राजा ने शीघ्रता के समयपर युद्ध में दूसरे दृढ़ धनुष को वेग से लिया ४० इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने हजार बाणों से घोड़े ध्वजा सारथी और रथ समेत द्रोणाचार्य को घायल किया वह आश्चर्य सा हुआ ४१ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! फिर बाणों की वर्षा से अत्यन्त पीड्यमान द्रोणाचार्य एक मुहूर्त तक रथ के बैठने के स्थानपर बैठगये ४२ इसके पीछे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने एक मुहूर्तही में सचेत होकर बड़े क्रोध में पूरित होकर वायुअस्त्र को छोड़ा ४३ तब व्याकुलता से रहित पराक्रमी युधिष्ठिर ने धनुष को खैंचकर उनके अस्त्र को अपने अस्त्र से रोक दिया ४४ और बड़ी शीघ्रता से उनके धनुष को काटा हे कौरव्य, धृतराष्ट्र! इसके पीछे क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य ने उसके उस धनुष को भी तीक्ष्ण भल्लों से काटा ४५ फिर वासुदेवजी कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर से बोले हे महाबाहो, युधिष्ठिर! जो मैं तुम से कहता हूं उसको

सुनो ४६ हे भरतर्षभ ! तुम द्रोणाचार्य के युद्ध से हाथ खैंचो द्रोणाचार्य सदैव युद्ध में आपके पकड़ने को चाहते हैं ४७ मैं उसके साथ आपका युद्ध अयोग्य मानता हूं सुनो जो पुरुष उनके नाश करने को उत्पन्न हुआ है वही उनको मारेगा ४८ गुरु को त्यागकरके अब तुम वहां जाओ जहां पर राजा दुर्योधन है राजा को राजाही के साथ युद्ध करना योग्य है राजा को अन्य से युद्ध करने का अभिलाष नहीं होना चाहिये ४९ हे युधिष्ठिर ! तुम हाथी घोड़े और रथों से संयुक्त होकर तबतक वहीं जावो जबतक कि मुझ को साथ में रखनेवाला अर्जुन ५० और रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन दोनों कौरवों के साथ युद्ध करते हैं धर्मराज युधिष्ठिर वासुदेवजी के वचन को सुनकर ५१ एक मुहूर्त चिन्ताकरके फिर शीघ्रही कठिन युद्ध में वहांगया जहांपर कि शत्रुओं का मारनेवाला भीमसेन नियत था ५२ काल के समान मुख फाड़ेहुए आपके शूरवीरों को मारते और रथ के बड़े शब्द से पृथ्वी को शब्दायमान करते ५३ वर्षा ऋतु के बादल के समान दशोंदिशाओं को भी शब्दों से पूरित करते पाण्डव युधिष्ठिर ने शत्रुओं के मारनेवाले भीमसेन के पार्श्ववर्तीपने को स्वीकार किया ५४ फिर रात्रि के समय द्रोणाचार्य ने भी पाण्डव और पाञ्चालों को छिन्न भिन्न किया ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिघोररात्रियुद्धेद्विषष्ट्युत्तरिशततमोऽध्यायः ॥ १६२ ॥

एकसौतिरसठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! इसप्रकार घोररूप भयकारी युद्ध के वर्तमान होने अन्धकार समेत धूलि से लोक के भरजानेपर १ युद्ध में नियतहुए शूरवीरों ने एक दूसरे को नहीं देखा अनुमान और नामों के द्वारा वह बड़ाभारी युद्ध बढ़गया २ जोकि मनुष्य घोड़े और हाथियों के मथनेवाले और बड़े रोमहर्षण करनेवाले थे हे राजाओं में श्रेष्ठ ! उन भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकी और द्रोणाचार्य, कर्ण और कृपाचार्य इन सब वीरों ने ३ परस्पर व्याकुल किया उन महारथियों के हाथ से चारों ओर से घायलहुई सेना ४ अँधेरे और धूलि से सब ओर को भागीं सब ओर से भागनेवाले अचेत युद्ध में दौड़नेवाले उन शूर वीरों ने प्रहार किये और हजारों महारथियों ने युद्ध में परस्पर एक ने दूसरे को मारा ५ । ६ आपके पुत्र की सलाह से रात्रि के अपराधों और उपद्रवों में सब

अज्ञानहुए हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे उस युद्ध में अँधेरे से संयुक्त होनेपर सब सेना के मनुष्य और अफसरलोग अत्यन्त मोहितहुए ७ धृतराष्ट्र बोले तब पाण्डवों से व्याकुल और पराक्रम से हीन कठिन अपराधों में डूबेहुए उन लोगों की कौन गतिहुई ८ हे सञ्जय ! इस प्रकार अँधेरे से संसार के ढकजानेपर उन पाण्डवों का और मेरी सेना का प्रकाश कैसे हुआ ९ सञ्जय बोले फिर उस सब सेना ने जो कि मरने से बाकी बची थी सेना के अफसरों से कहकर फिर व्यूह को रचा १० हे राजन् ! द्रोणाचार्य आगे और शल्य, अश्वत्थामा, कृतवर्मा और शल पीछे के भाग में नियतहुए और आप राजा रात्रि के समय सब सेना को घूमताहुआ देख ११ सब पदातियों के समूहों से यह मधुरता से वचन बोला कि तुम सब उत्तम शस्त्रों को छोड़कर हाथों से प्रकाशित मशालों को पकड़ो १२ इसके पीछे राजा दुर्योधन की आज्ञानुसार प्रसन्नचित्त उन लोगों ने मशालों को लिया और स्वर्ग में नियत प्रसन्नचित्त देव, ऋषि, गन्धर्व, देवता, ऋषियों के समूह, विद्याधर, अप्सराओं के समूह १३ नाग, यक्ष, उरग और किन्नरों ने भी मशालों को हाथ में लिया सुगन्धित तेलों से पूर्ण मशालों को देखकर वहां पर दिशाओं के देवता लोग आये अधिकतर कौरव पाण्डवों के निमित्त नारद और पर्वत ऋषि के कहने से उन देवताआदिकों ने प्रकाश प्रकटकिया फिर वही विभागित सेना रात्रि में अग्नि के प्रकाशों से शोभायमान हुई १४ । १५ और गिरतेहुए बहुमूल्य दिव्य भूषणादि और प्रकाशित अस्त्रों से भी प्रकाशित हुए उस सेना में एक २ रथपर पांचमशाल और प्रत्येक हाथी के साथ तीन २ मशाल और घोड़े घोड़े प्रति एक बड़ी मशाल पाण्डव और कौरवों की ओर से जलाईगई वह सब मशाल एकक्षण मेंही प्रकाशितहुईं और शीघ्रही आप की सेना को भी प्रकाशित किया १६ । १७ तेज और मशाल हाथ में रखने वाले पदातियों के द्वारा अत्यन्त प्रकाशित और शोभायमान सेना रात्रि के समय ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि अन्तरिक्ष में बिजलियों समेत बादल शोभित होते हैं १८ इसके पीछे सेना के प्रकाशित होनेपर अग्नि की समान स्वर्ण-मयी कवचधारी द्रोणाचार्य चारों ओर से शत्रुओं को तपातेहुए ऐसे शोभा-यमान हुए जैसे मध्याह्न के समय किरणसमूह रखनेवाला सूर्य होता है १९ इसके पीछे वहांपर सुवर्ण के आभूषणादि शुद्धनिष्क धनुष और शस्त्रोंपर

अग्नि के प्रकाश से प्रकट होनेवाला प्रकाश उत्पन्नहुआ २० शैक्य में रहनेवाली गदा उज्ज्वल परिघ और रथों में आवागमन करनेवाली शक्तियां प्रतिबिम्बित प्रकाशों से वारंवार दीपकों को उत्पन्न करती थीं २१ हे राजन्! तब वहां शूरवीरों के छत्र, बाण, व्यजन, खड्ग और प्रकाशमान बड़ी मशालें और बहुत चञ्चल सुवर्ण की माला शोभायमान हुईं २२ उस समय वह सेना शस्त्रों के प्रकाश से शोभायमान दीपकों के तेज से शोभित भूषणों के प्रकाशों से प्रकाशित अत्यन्त ज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित हुई २३ वीरों के छोड़ेहुए विष से भरे रुधिर से आर्द्र शरीर के छेदनेवाले शस्त्रों ने वहांपर बड़े भारी प्रकाश को ऐसे उत्पन्न किया जैसे कि वर्षा के प्रारम्भ में अन्तरिक्ष में चमकतीहुई बिजली होती है २४ प्रहारोंकी तीव्रता से अत्यन्त कम्पित घायल और गिरतेहुए मनुष्यों के शिर ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि वायु से चलायमान बड़े बादल २५ हे भरतवंशिन्! जैसे कि लकड़ियों से पूर्ण जलतेहुए बड़े वन में सूर्य का प्रकाश भी नाश को पाता है उसी प्रकार से वह बड़ी भयकारी भयानकरूप सेना भी अत्यन्त प्रकाशमानहुई २६ तुम्हारी उस सेना को अत्यन्त प्रकाशमान देखकर पाण्डवों ने शीघ्रही उसी प्रकार से सब सेनाओं में पदातियों को आज्ञादी उन्होंने भी मशालों को प्रकाशित किया २७ हरएक हाथी के साथ सात २ मशालें और प्रत्येक रथ के साथ दश २ मशालें और घोड़े २ के पीछे दो २ और दोनों पक्ष ध्वजा और पीछे के स्थान पर दूसरी मशालें प्रकाशित हुईं २८ सब सेनाओं के मध्य में पक्षों में आगे पीछे और चारोंओर उसी प्रकार सेना के मध्य में दूसरी मशालें हाथ में लेनेवाले पदातियों ने पाण्डवी सेना को प्रकाशितकिया २९ इस प्रकार से दोनों सेनाओं के मध्य में जलतीहुईं मशालें हाथ में लेकर मनुष्य घूमने लगे सब सेनाओं में पदातियों के समूह हाथी घोड़े और रथों के समूहों से मिलगये ३० उन मशालों ने आपकी सेना को और पाण्डवों की रक्षित सेना को भी अत्यन्त प्रकाशित किया इस रीति से अत्यन्त प्रकाशित उस सेना से आप की सेना ऐसे अत्यन्त प्रकाशमान हुई ३१ जैसे कि प्रकाशमान सूर्य ग्रहों से प्रकाशित होता है उन दोनों का प्रकाश पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओं को उल्लङ्घनकरके वृद्धियुक्त हुआ ३२ हे राजन्! उन्हों की और आपकी सेना

उस प्रकाश से अत्यन्त प्रकाशित हुई आकाश में पहुँचनेवाले उस प्रकाश से देवतालोगों के समूह भी खबरदार हुए ३३ गन्धर्व यक्ष असुर और सिद्धों के समूहोंसमेत सब अप्सरा आपहुँचीं देवता गन्धर्व यक्ष असुरों के राजा अप्सराओं के समूह ३४ और मरकर स्वर्ग में चढ़नेवाले शूरों से घिरीहुई वह युद्धभूमि दिव्यरूपहुई रथ हाथी और घोड़ों के समूहों की मशालों से बड़ी प्रकाशमान और क्रोधयुक्त वीर मृतक और भागेहुए घोड़े रखनेवाली ३५ बड़ी सेना जिस के रथ घोड़े और हाथी क्रमपूर्वक नियत थे देवासुरों के व्यूह की समान हुए शक्तियों के समूहरूप कठोर वायु बड़े रथरूप बादल रखनेवाला हाथी घोड़ों से शब्दायमान ३६ शस्त्रों के समूहरूप वर्षा रुधिररूप जलधारा रखनेवाला रथीरूप दुर्दिन विना ऋतु के वर्षा करनेवाला दिन रात्रि में वर्तमान हुआ उसमें महाअग्निरूप ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महात्मा द्रोणाचार्य पाण्डवों को तपातेहुए ऐसे प्रकार के हुए हे राजेन्द्र! जैसे कि वर्षा ऋतु के अन्त पर मध्याह्न के समय अपनी किरणों से तपाताहुआ सूर्य होता है ॥ ३७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिदीपोद्योतनेत्रिषष्ठ्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६३ ॥

एकसौचौंसठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, तब धूलि और अन्धकार से युक्त संसार के अप्रकाशित होने पर परस्पर मारने के अभिलाषी शूरवीर सम्मुख हुए १ हे राजन्! शस्त्र प्रास खड्ग और तलवार धारण करनेवाले और परस्पर अपराधी उनलोगों ने युद्ध में सम्मुख होकर एक ने दूसरे को देखा २ तब रत्नजटित सुनहरी दण्ड रखनेवाली सुगन्धित तेलों से सींची हुई देवता और गन्धर्वों के दीपकादि के प्रकाशादि से अत्यन्त प्रकाशमान चारोंओर से चमकनेवाली हजारों मशालों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई हे भरतवंशिन्! जैसे कि ग्रहों से आकाश शोभित होता है ३। ४ युद्धभूमि ज्वलित अग्निरूप हजारों उल्काओं से ऐसी अत्यन्त शोभायमान हुई जैसे कि सृष्टि के प्रलय होने के समय जलती हुई पृथ्वी होती है ५ सब दिशा चारों ओर से उन प्रकाशों से ऐसे अत्यन्त प्रकाशित हुईं जैसे कि वर्षाऋतु के प्रदोषकाल में पटबीजनों से संयुक्त वृक्ष प्रकाशमान होते हैं ६ इसके पीछे हरएक वीर दूसरे वीरों से जुदे २ होकर भिड़े हाथी हाथियों के साथ घोड़े घोड़ों के साथ सम्मुख हुए ७ और बड़ी प्रसन्नता से उत्तम रथी दूसरे रथियों

के सम्मुखहुए उस घोररात्रि में आप के पुत्र की आज्ञा से ८ चतुरङ्गिणी सेना की बहुतबड़ी चढ़ाईहुई हे महाराज ! इसके पीछे शीघ्रता से युक्त सब राजाओं को प्रेरणाकरते अर्जुन ने कौरवीयसेना को तिरिबिरि किया ९।१० धृतराष्ट्रबोले कि मेरेपुत्र की उससेना में उस क्रोधयुक्त अशान्त और अजेय अर्जुन के प्रवेश करनेपर तुम्हारा चित्त कैसाहुआ ११ शत्रु के पीड़ा देनेवाले अर्जुन के प्रवेशित होनेपर सेना के लोगों ने क्या किया और दुर्योधन ने समय के अनुसार किस कर्म को माना अर्जुन के प्रवेश होनेपर कौनसा शत्रु विजयी पुरुष उसवीर के सम्मुखगया और कौन २ से वीरों ने द्रोणाचार्य को श्रेष्ठ रीति से रक्षित किया १२।१३ किन वीरों ने शत्रुहन्ता द्रोणाचार्य के दक्षिणपक्ष की रक्षाकरी और कौन २ बायेंपक्ष और पृष्ठभाग पर रक्षाकरनेवाले हुए १४ युद्धमें शत्रुलोगों को मारतेहुए कौन २ से वीर आगेचले जो बड़े धनुषधारी अजेय द्रोणाचार्य पाञ्चालों की सेना में गये १५ रथमार्गों में नाचते जिस पराक्रमी द्रोणाचार्य ने बाणों से पाञ्चालों के रथसमूहों को भस्मीभूत किया १६ उस अग्नि के समान क्रोधयुक्त ने किसप्रकार से मृत्युको पाया तुम दूसरों को व्याकुलता से पृथक् और अजेय कहते हो १७ और युद्धमें बड़ी प्रसन्नता भी उन्हीं की कहते हो हे सूत ! उस प्रकार से मेरे पुत्रोंको नहीं कहते हो किन्तु उनको मृतक घायल और छिन्न भिन्न होनेवाला कहते हो १८ मेरे रथियों को युद्धों में रथ से रहित और मारेहुए व मरेहुए कहते हो १९ सञ्जय बोले कि हे महाराज ! दुर्योधन उस रात्रि में युद्धाभिलाषी द्रोणाचार्य के विचार को जानकर अपने आज्ञाकारी इनभाइयों से बोला २० विकर्ण, चित्रसेन, महाबाहु कौरव, दुर्धर्ष, दीर्घबाहु और जो २ उनके पीछे चलनेवाले थे २१ इनसे यह वचन कहा कि उपाय और पराक्रम करने वाले तुम सब द्रोणाचार्य की पीछे से रक्षाकरो कृतवर्मा दक्षिणीयचक्र को और शल्य उत्तरचक्र को रक्षाकरो २२ और त्रिगर्तदेशियों के जो शूर महारथी मरने से शेषरहे थे उन सब को आप के पुत्र ने प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य को आगे से रक्षितकरो २३ आचार्यजी अत्यन्त उपाय करनेवाले हैं और पाण्डव भी अत्यन्त उपाय करनेवाले हैं सो तुम अच्छे उद्योग करनेवाले होकर युद्ध में शत्रुओं के मारनेवाले द्रोणाचार्यजी की रक्षाकरो २४ पराक्रमी और प्रतापी द्रोणाचार्य युद्ध में बड़े हस्तलाघवी हैं वह युद्धमें देवताओं को भी विजय कर

सक्के हैं फिर सोमकों समेत पाण्डवों का विजयकरना उनको कितनी बात है २५ सदैव उपायकरनेवाले तुम महारथी लोग एक साथ ही पाञ्चालदेशीय महारथी धृष्टद्युम्न से द्रोणाचार्य की रक्षाकरो पाण्डवों की सेना में धृष्टद्युम्न के सिवाय और किसी राजा को नहीं देखते हैं जो युद्ध में द्रोणाचार्य के सम्मुख युद्ध करसके २६ इस हेतु से सर्वात्मभाव से मैं द्रोणाचार्यकी रक्षाको मानता हूं अच्छे रक्षित होकर द्रोणाचार्यजी सृञ्जय और सोमकों समेत पाण्डवों को मारेंगे २७ सेनाके मुखपर सब सृञ्जयों के मारेजाने पर अश्वत्थामा युद्धमें अवश्य धृष्टद्युम्न को मारेगा इसमें सन्देह नहीं २८ और इसी प्रकार महारथी कर्ण भी अर्जुनको मारेगा और युद्ध में दीक्षित हुआ मैं भी भीमसेन को विजय करूंगा २९ और मेरे शेष शूरवीर अपने पराक्रम से बाकी बचेहुए पाण्डवों को जबरदस्ती से मारेंगे प्रकट है कि यह मेरी विजय बहुत समयतक होगी ३० इस कारण से युद्ध में महारथी द्रोणाचार्यही की रक्षाकरो हे भरतर्षभ ! आपके पुत्र दुर्योधन ने यह कहकर ३१ उस महाकठिन अन्धकार में अपनी सेना को आज्ञादी और फिर रात्रि में युद्धहोना जारी हुआ ३२ परस्पर विजय करने की इच्छा से दोनों सेनाओं का घोर संग्राम जारी हुआ अर्जुन ने कौरवीय सेना को और कौरवों ने भी अर्जुन को ३३ नाना प्रकार के शस्त्रों के समूहों से परस्पर पीड्यमान किया अश्वत्थामा ने राजाद्रुपद को द्रोणाचार्य ने सृञ्जयों को ३४ युद्ध में टेढ़े पर्ववाले बाणों से ढक दिया हे भरतवंशिन् ! परस्पर मारनेवाले पाण्डवीय पाञ्चालदेशीय और कौरवों की ३५ सेनाओं के महाघोर शब्दहुए हमलोगों ने और आगे के वृद्धों ने भी उस प्रकार के युद्ध को पूर्व में कभी देखा था न सुना था जैसा कि यह रौद्र भयानक युद्ध हुआ था ॥ ३६ । ३७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसंकुलयुद्धेचतुष्षष्ट्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६४ ॥

एकसौपैंसठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! तब उस रुद्र और सब जीवों के नाश करने वाले रात्रि के युद्ध वर्तमान होनेपर धर्म का पुत्र युधिष्ठिर १ मनुष्य रथ और हाथियों के नाश के अर्थ पाण्डव पाञ्चाल और सोमकोंसे बोला २ अर्थात् राजा युधिष्ठिर ने अपने शूरवीरों से कहा कि मारने की इच्छा से दौड़कर द्रोणाचार्य के सम्मुख जाओ ३ फिर वह पाञ्चाल और सृञ्जय राजा के वचन से भयानक

शब्दों को करते और गर्जते द्रोणाचार्य के सम्मुख वर्तमानहुए ४ अर्थात् वह क्रोधयुक्त और सम्मुख गर्जनेवाले युद्ध में बल पराक्रम और साहस के अनुसार सम्मुख गये ५ जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख जाता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य की ओर को आनेवाले युधिष्ठिर के सम्मुख हार्दिक्य का पुत्र कृतवर्मा गया ६ हे राजन्! कौरव भूरियुद्ध के मुखपर चारों ओर से बाणवृष्टि करनेवाले सात्यकी के सम्मुख गया ७ फिर सूर्य के पुत्र कर्ण ने द्रोणाचार्य को सम्मुख चाहनेवाले आतेहुए महारथी पाण्डव सहदेव को रोका ८ इसके पीछे काल के समान फैलेमुख मृत्युरूप भीमसेन के सम्मुख आप राजा दुर्योधन गया ९ हे राजन्! शीघ्रता करनेवाले सौबलके पुत्र शूरवीरों में श्रेष्ठ सब युद्धों में कुशल ने नकुल को रोका १० तदनन्तर शारद्वत कृपाचार्य ने रथ की सवारी से आतेहुए रथियों में श्रेष्ठ शिखण्डी को युद्ध में रोका ११ हे महाराज! फिर उपाय करनेवाले दुश्शासन ने मोरवर्ण घोड़ों की सवारी से आनेवाले उपाय करनेवाले प्रतिविन्ध को रोका १२ इसके पीछे अश्वत्थामा ने सैकड़ों माया में कुशल आतेहुए घटोत्कच राक्षस को रोका १३ फिर वृषसेन ने द्रोणाचार्य को चाहनेवाले महारथी द्रुपद को सेना और पीछे चलनेवालों समेत रोका १४ हे भरतवंशिन्! फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शल्य ने द्रोणाचार्य के मारने को शीघ्र आनेवाले विराट को रोका १५ चित्रसेन ने द्रोणाचार्य की इच्छा से युद्ध में वेगवान् आतेहुए नकुल के पुत्र शतानीक को बाणों के द्वारा शीघ्रही रोका १६ हे महाराज! राक्षसों के राजा अलम्बुषने शूरवीरों में श्रेष्ठ शीघ्र आतेहुए महारथी अर्जुन को रोका १७ इसी प्रकार पाञ्चालदेशीय धृष्टद्युम्न ने शत्रुओं के मनुष्यों के मारनेवाले युद्ध में प्रसन्नमूर्ति बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य को रोका १८ उसके पीछे आप के रथियों ने वेग से पाण्डवों के दूसरे महारथी सम्मुख आनेवालों को रोका १९ हे राजन्! उस बड़े युद्ध में सैकड़ों और हजारों हाथी के सवारों से हाथियों समेत शीघ्र भिड़कर युद्धकर्ता और मर्दनकर्ता रात्रि के समय परस्पर घोड़ों को भगाते वेग से सपक्ष पर्वतों के समान दिखाई दिये २० । २१ और प्रास शक्ति और दुधारा खड्ग हाथ में रखनेवाले गर्जना करते अश्वसवारों समेत पृथक् २ सम्मुख हुए २२ फिर वहां बहुत मनुष्य गदा मूसल और नाना प्रकार के शस्त्रों से युद्ध में परस्पर सम्मुखहुए २३ अत्यन्त

क्रोधयुक्त कृतवर्मा हार्दिक्य के पुत्र ने धर्मपुत्र युधिष्ठिर को ऐसे रोका जैसे कि उठे हुए समुद्र को मर्यादा रोकती है २४ फिर युधिष्ठिर ने शीघ्रही पांचबाणों से कृतवर्मा को घायल किया फिर बीसबाण से पीड़ितकरके तिष्ठ २ वचन कहा २५ हे राजन् ! फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्मा ने भल्ल से युधिष्ठिर के धनुषको काटा और सातबाण से पीड्यमान किया इसके पीछे महारथी युधिष्ठिर ने दूसरे धनुष को लेकरके दशबाणों से कृतवर्मा को भुजा और छातीपर घायल किया २६ । २७ हे श्रेष्ठ ! युद्ध में धर्मपुत्र के हाथ से घायल माधव कृतवर्मा क्रोध से कम्पायमान हुआ और सात बाणों से युधिष्ठिर को पीड्यमान किया २८ युधिष्ठिर ने उसके धनुष को तोड़ हस्तत्राणों को काटकर तीक्ष्णधारवाले पांचबाणों को चलाया २९ वह बाण उसके सुवर्णमय बहुमूल्य कवच को काटकर और छेदकरके पृथ्वी में ऐसे समागये जैसे कि बामी में सर्प समा जाते हैं ३० उसने पलमात्र मेंही दूसरे धनुष को लेकर पाण्डव को छः बाण से और सारथी को नौ बाणों से घायल किया ३१ हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र ! उस बड़े साहसी युधिष्ठिर ने बड़े धनुष को रथपर रखकर सर्प के समान शक्ति को फेंका ३२ वह युधिष्ठिर की भेजीहुई स्वर्णमय चिह्न रखनेवाली बड़ी शक्ति दाहिनी भुजा को छेदकर पृथ्वी में समा-गई ३३ फिर उसी समय युधिष्ठिर ने धनुष को लेकर टेढ़े पर्ववाले बाणों से कृतवर्मा को ढक दिया ३४ इसके पीछे बड़े महारथी कृतवर्मा ने आधेही पल में युधिष्ठिर को घोड़े सारथी और रथ से विरथ किया ३५ तब बड़े पाण्डव ने ढाल और तलवार को लिया फिर माधव कृतवर्मा ने उसकी उस ढाल तलवार को भी तीक्ष्ण बाणों से टुकड़े २ किया ३६ इसके पीछे युधिष्ठिर ने सुनहरी दण्डवाले कठिनता से सहने के योग्य तोमर को लेकर युद्ध में शीघ्रही कृतवर्मा के ऊपर फेंका ३७ फिर मन्दमुसकान करते हस्तलाघवीय कृतवर्मा ने धर्मराज की भुजा से फेंकेहुए अकस्मात् आतेहुए उस तोमर के दो खण्ड किये ३८ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त ने युद्धभूमि में सौ बाणों से युधिष्ठिर को ढकदिया और उसके कवच को भी तीक्ष्णबाणों से तोड़ा ३९ हे राजन् ! युद्ध में कृतवर्मा के बाणों से टूटाहुआ बहुमूल्य कवच ऐसे गिरा जैसे कि आकाश से ताराजाल गिरता है ४० वह टूटेधनुष रथ से रहित गिराहुआ कवच बाणों से पीड़ित धर्म का पुत्र युधिष्ठिर शीघ्रही युद्ध से हटगया ४१ फिर कृतवर्मा ने धर्मात्मा

युधिष्ठिरको विजयकरके महात्मा द्रोणाचार्य की सेना को रक्षित किया॥ ४२ ॥
इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणियुधिष्ठिरापमानन्नामपञ्चषष्ठ्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६५ ॥

एकसौछाछठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, फिर भूरि ने युद्ध में रथियों में श्रेष्ठ आतेहुए सात्यकी को ऐसे रोका जैसे कि गर्त के द्वारा हाथी को रोकते हैं १ उसके पीछे क्रोधयुक्त भूरि ने शीघ्रही तीक्ष्णधारवाले पांचबाणों से सात्यकी को हृदयपर घायल किया तब उसकारुधिर बहुत सा गिरा२ उसी प्रकार उस फिर कौरव भूरिने युद्धमें तीक्ष्णधार वाले दश बाणों से दुर्मद सात्यकी को भुजा के मध्य में छेदा ३ हे महाराज ! क्रोध से रक्तनेत्र उन दोनों ने क्रोध से धनुषों को चलायमानकरके बाणों से अत्यन्त घायल किया ४ उन क्रोधयुक्त शायकों के छोड़नेवाले यमराज और कालरूप दोनों के शस्त्रों की वर्षा अत्यन्त भयकारी हुई ५ फिर वह दोनों परस्पर बाणों से ढकेहुए अच्छी रीति से नियत हुए और वह युद्ध एक मुहूर्ततक एक सा हुआ ६ इसके अनन्तर क्रोधयुक्त अत्यन्त हँसतेहुए सात्यकी ने युद्ध में महात्मा कौरव के धनुष को काटा ७ फिर इस टूटे धनुषवाले को तीक्ष्णधार के नौ बाणों से शीघ्र हृदयपर छेदा और तिष्ठ २ वचनकहा ८ पराक्रमी शत्रुके बाणों से अत्यन्त छिदेहुए उस शत्रुसन्तापी ने दूसरे धनुष को लेकर यादव सात्यकी को छेदा ९ हे राजन् ! फिर उस हँसतेहुए भूरि ने तीन बाणों से यादवको घायल करके अत्यन्त तीक्ष्ण भल्ल से धनुष को काटा १० फिर उस टूटेधनुष क्रोध से मूर्च्छावान् सात्यकी ने बड़ी वेगवान् शक्तिको उसकी बड़ी छाती पर मारा ११ फिर शक्ति से टूटे अङ्ग भूरि अपने उत्तम रथ से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि दैवेच्छा से प्रकाशमान किरण वाला मङ्गल नक्षत्र आकाश से गिरता है १२ महारथी अश्वत्थामाजी उस शूरको मराहुआ देखकर युद्धमें वेग से सात्यकी के सम्मुख दौड़े १३ हे राजन् ! अश्वत्थामाजी सात्यकी से तिष्ठ २ वचन कहकर बाणों की ऐसी वर्षा करनेलगे जैसे कि बादल अपनी जलधाराओं से पर्वत को ढकता है १४ फिर महारथी घटोत्कच सात्यकी के रथपर आतेहुए उस क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी से बोला १५ कि हे द्रोणाचार्य के पुत्र ! खड़ा हो २ मेरे हाथसे बचकर न जायगा तुझको मैं ऐसे मारूंगा जैसे कि शरभ भैंसे को मारता है १६ और मैं युद्धभूमि में तेरे युद्ध की श्रद्धा को नाश करूंगा क्रोध से रक्तनेत्र शत्रुओं के

वीरों का मारनेवाला राक्षस यह कहकर १७ अश्वत्थामा के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि क्रोधयुक्त केशरी गजराजके सम्मुख जाताहै घटोत्कच अक्षरथ के समान बाणों से रथियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी के ऊपर ऐसे वर्षा करनेलगा १८ जैसे कि बादल जलधाराओं से वर्षा करता है फिर मन्दमुसकान करते अश्वत्थामा ने वेग से युद्धमें विषैले सर्प की समान बाणों से उस प्रकट होनेवाली बाणों की वर्षा का नाश किया १९ इसके पीछे मर्मभेदी शीघ्रगामी तीक्ष्ण सैकड़ों बाणोंसे उसशत्रु- विजयी राक्षसों के राजा घटोत्कच को ढकदिया २० हे महाराज ! उनके बाणों से छिदाहुआ वह राक्षस युद्धभूमि में ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि श्वाविद् शिलों से चिताहुआ होता है २१ उसके पीछे क्रोध से पूर्ण प्रतापवान् घटोत्कच ने भयानक और रुद्रवज्र के समान बाणों से अश्वत्थामा को घायलकिया २२ क्षुरप्र, अर्धचन्द्र, नाराच, शिलीमुख, बाराह, कर्ण, नालीक और विकर्ण नाम बाणों से वर्षा करनेलगा २३ पीड़ा से रहित सावधानरूप तेजस्वी अश्वत्थामा ने उस असंख्य वज्र और बिजली के समान शब्दायमान ऊपर पड़नेवाली उस बाणवृष्टि को २४ बड़े दुःख से सहने के योग्य दिव्यअस्त्र के मन्त्रों से अभिम- न्त्रित घोर बाणों से ऐसे इधर उधर किया जैसे कि वायु बड़े बादलों को तिरबिर करता है हे महाराज ! इसके पीछे अन्तरिक्ष में दूसरा घोररूप युद्ध शूरवीरों के आनन्द का बढ़ानेवाला हुआ २५।२६ उस समय आकाश अस्त्रों की घिसावट से स्फुलिङ्गों समेत उत्पन्न होनेवाली अग्नि से रात्रि के समय चारोंओर से प- टबीजनों से संयुक्त के समान शोभायमान हुआ २७ उस अश्वत्थामा ने सब ओर से दिशाओं को बाणों के समूहों से ढककर आपके पुत्रों के हितार्थ राक्षस को अच्छा ढका २८ उसके पीछे गहन रात्रि के मध्य युद्ध में अश्वत्थामा और राक्षस का युद्ध ऐसे जारीहुआ जैसे कि इन्द्र और प्रह्लाद का हुआ था २९ तब अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने युद्ध में कालाग्नि के समान दशबाणों से अ- श्वत्थामा को छातीपर घायल किया ३० उस राक्षस के मारेहुए बाणोंसे घायल वह महाबली अश्वत्थामा युद्ध में ऐसे कम्पायमान हुए जैसे कि वायु से आघा- तित वृक्ष होता है ३१ और अचेत होनेवाले अश्वत्थामा ध्वजा की यष्टि से आश्रितहुए ३२ हे राजन् ! इसके पीछे आपकी सब सेना हाहाकार करनेलगी और आपके सब शूरवीरों ने उसको मृतकरूप माना ३३ पाञ्चाल और सृञ्जयों

ने युद्ध में उस दशावाले अश्वत्थामा को देखकर सिंहनादकिये ३४ इसके पीछे शत्रुओं के विजय करनेवाले महाबली अश्वत्थामा ने सचेतता से अपने वामहस्त से धनुष को दबाकर ३५ शीघ्रही घटोत्कच को लक्ष्य बनाकर कान तक खैंचेहुए उस धनुष से घोर और श्रेष्ठ उस बाण को जोकि यमदण्ड के समान था छोड़ा ३६ हे राजन्! वह सुन्दर पुङ्ख भयकारी उत्तम बाण उस राक्षस के हृदय को छेदकर पृथ्वी में घुसगया ३७ उसके आघात से युद्धमें शोभा पाने वाले अश्वत्थामा के हाथ से अत्यन्त घायल वह बड़ा पराक्रमी राक्षसाधिप रथ की उपस्थपर बैठगया ३८ भय से व्याकुल शीघ्रतायुक्त सारथी उस घटोत्कच को अश्वत्थामा के हाथ से अचेत देखकर युद्धभूमि से दूरलेगया ३९ महारथी अश्वत्थामा युद्ध में राक्षसाधिप घटोत्कच को इस प्रकार से घायलकरके बहुत बड़े शब्द को गर्जा ४० हे भरतवंशिन्! आपके पुत्र और सब शूरवीरों से स्तूयमान वह अश्वत्थामा शरीर से ऐसे अत्यन्त प्रकाशित हुआ जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य होता है ४१ आप राजा दुर्योधन ने द्रोणाचार्य के रथ के पास युद्ध करनेवाले भीमसेन को तीक्ष्ण बाणों से छेदा ४२ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! फिर भीमसेन ने उसको दशबाणों से छेदा दुर्योधन ने बीस बाण से छेदा ४३ वह युद्धभूमि में शायकों से ढकेहुए ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि आकाश में मेघजालों से ढकेहुए सूर्य और चन्द्रमा होते हैं ४४ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! उसके पीछे राजा दुर्योधन ने भीमसेन को पांचबाणों से घायलकरके तिष्ठ २ वचन कहा ४५ भीमसेन ने दशबाणों से उसके धनुष और ध्वजा को काटकर टेढ़े पर्ववाले नव्वे बाणों से उस कौरवों के राजा को घायलकिया ४६ इसके अनन्तर हे भरतर्षभ! क्रोधयुक्त दुर्योधन ने दूसरे बड़े धनुष को लेकर युद्ध के शिरपर सब धनुर्धारियों के देखते हुए भीमसेन को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ितकिया ४७ भीमसेन ने दुर्योधन के धनुष से निकले हुए उन बाणों को काटकर कौरव को पचीस बाणों से घायल किया ४८ हे श्रेष्ठ! फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने क्षुरप्रनाम बाण से भीमसेन के धनुष को काटकर दशबाणों से छेदा ४९ फिर महाबली भीमसेन ने दूसरे धनुष को लेकर शीघ्रही तेज धारवाले सात बाणोंसे राजा को घायलकिया ५० हे महाराज! हस्तलाघवी के समान दुर्योधन ने शीघ्रही उसके उस धनुषको किन्तु हाथमें लियेहुए दूसरे, तीसरे, चौथे औरपांचवें

धनुष को भी काटा अर्थात् विजय से शोभा पानेवाले मतवाले आपके पुत्र ने भीमसेन के अनेक धनुषों को काटा ५१ । ५२ इसप्रकार वारंवार धनुषों के तोड़नेपर उस भीमसेन ने युद्ध में अत्यन्त लोहमयी उस शुभ शक्ति को दुर्योधनपर छोड़ा ५३ जो कि सदैव काल की समान प्रकाशित किरण और अग्नि के समान प्रकाशमान आकाश के सीमन्त को उत्पन्न करनेवाली थी ५४ कौरव ने सब लोक और महात्मा भीमसेन के देखते उस शक्ति को बीचही में तीनटुकड़े किया ५५ हे महाराज ! इसके पीछे भीमसेन ने बड़ी प्रकाशमान उस भारी गदा को वेग से घुमाकर दुर्योधन के रथपर फेंका ५६ हे भरतर्षभ ! उसके पीछे उस भारी गदा ने युद्ध में आपके पुत्रके घोड़े और सारथी को मर्दन किया ५७ हे राजेन्द्र ! फिर आपका पुत्र स्वर्णजटित रथ से उतर कर अकस्मात् महात्मा नन्दक के रथपर सवार हुआ ५८ तब रात्रि में कौरवों को घुड़कते भीमसेन ने आपके पुत्र महारथी को मृतक हुआ मानकर बड़ा सिंहनाद किया ५९ और आपके सेना के लोगों ने भी उस राजा को मृतक माना उसके पीछे वह सब चारोंओर से हाय २ पुकारे ६० हे राजन् ! उन सब भयभीतों के शब्दों को सुनकर और महात्मा भीमसेन के भी शब्द को सुन कर राजा युधिष्ठिर दुर्योधन को मराहुआ मानकर शीघ्रता से वहां आकर वर्तमान हुए जहां पर कि पाण्डव भीमसेन था ६१ । ६२ हे राजन् ! पाञ्चाल, केकय, मत्स्य, सृञ्जयदेशीय शूरवीर सब उपायों समेत युद्ध की अभिलाषा से द्रोणाचार्य के सम्मुख हुए ६३ वहांपर द्रोणाचार्य का महाभारी युद्ध दूसरे लोगों से हुआ और घोर अन्धकार में डूबेहुए परस्पर मारनेवाले शूरवीरों का भी युद्ध हुआ ॥ ६४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषट्षष्ठ्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६६ ॥

एकसौसड़सठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे भरतवंशिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! सूर्य के पुत्र ने द्रोणाचार्य के युद्ध में चाहनेवाले सहदेव को रोका १ फिर सहदेव ने नौ बाणों से कर्ण को छेदकर टेढ़े पर्ववाले विशिखों से पीड़ित किया २ कर्ण ने टेढ़े पर्ववाले सौबाणों से उसको घायल किया और हस्तलाघवता के समान उसके धनुष को काटा ३ उसके पीछे प्रतापवान् सहदेव ने दूसरे धनुष को लेकर कर्ण को

बीस बाण से घायल किया यह आश्चर्य सा हुआ ४ कर्ण ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से उसके घोड़ों को मारकर उसके सारथी को भी शीघ्रही भल्ल से यमलोक पहुँचाया फिर रथ से रहित सहदेव ने ढाल तलवारको हाथ में लिया हँसतेहुए कर्ण ने उसकी उस ढाल तलवार को भी खण्ड २ करदिया ५। ६ उसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सहदेव ने बड़ी घोर सुवर्णजटित बड़ी भारी गदा को कर्ण के रथपर फेंका ७ कर्ण ने सहदेव की फेंकीहुई अकस्मात् आतीहुई गदा को बाणों से रोककर पृथ्वीपर गिराया ८ शीघ्रतायुक्त सहदेव ने गदा को निष्फल देखकर कर्ण के लिये शक्तिको फेंका उसने उस शक्तिको भी बाण से काटा ६ हे महाराज ! इसके पीछे सहदेव ने व्याकुलता से युक्त शीघ्रही रथ से कूदकर कर्ण को सम्मुख देख रथ के चक्र को लेकर युद्धभूमि में कर्ण के ऊपर छोड़ा तब कालचक्र के समान उठाहुआ वह चक्र अकस्मात् आकर गिरा १०। ११ सूतनन्दन कर्ण ने हज़ारों बाणों से उसको काटा महात्मा कर्ण के हाथ से उस चक्र के टूटने पर १२ ईषादण्ड, प्रोक्तर और नानाप्रकार के युग हाथियों के अङ्ग घोड़े और मृतक मनुष्यों को भी कर्ण को लक्ष्य बनाकर फेंका कर्ण ने बाणों से ही उनको हटाया उस सहदेव ने अपनेको अशस्त्र जानकर विशिख नाम बाणों से रुकेहुए ने युद्ध को त्यागा हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! हँसतेहुए कर्ण ने एक क्षणभर में उसके सम्मुख जाकर १३।१५ सहदेव से यह वचन कहा कि हे पराक्रमिन् ! युद्ध में उत्तम रथियों के साथ तू युद्ध मत कर १६ हे माद्री के पुत्र ! सदैव अपने बराबरवाले से युद्ध कर मेरे वचनपर सन्देह मत कर और फिर धनुष की नोक से पीड़ित करताहुआ फिर यह बोला कि यह अर्जुन जो कौरवों के साथ लड़ता है हे माद्री के पुत्र ! शीघ्र वहां जावो अथवा घर को जावो जो मुझको मानते हो रथियों में श्रेष्ठ कर्ण उसको उस प्रकार से कहकर अपने रथके द्वारा १७ पाञ्चाल और पाण्डवों की सेना को भस्म करताहुआ चला शत्रु के मारनेवाले कर्ण ने मारने के स्थानपर वर्तमानहुए सहदेवको नहीं मारा १८ हे राजन् ! सत्यप्रतिज्ञ बड़े यशस्वी कर्ण ने कुन्ती के वचन को स्मरणकरके ऐसा किया इसके पीछे उदासमन और बाणों से पीड़ित १६ और कर्ण के बाणरूपी वचनों से दुःखी सहदेव जीवन से युक्तहुआ और शीघ्रता समेत वह महारथी युद्ध में पाञ्चालदेशीय महात्मा जनमेजय के रथपर सवार हुआ ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिघोरयुद्धेसप्तषष्ट्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६७ ॥

एकसौअड़सठ का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, फिर मद्र के राजा शल्य ने द्रोणाचार्य की ओर सेना समेत शीघ्रता से आनेवाले धनुषधारी विराट को बाणों के समूह से ढकदिया १ उन दोनों दृढ़ धनुषधारियों का युद्ध युद्धभूमि में ऐसा हुआ जैसा कि पूर्व समय में जम्भ और इन्द्र का हुआ था २ हे महाराज ! शीघ्रता करनेवाले शल्य ने शीघ्रही सौ बाणों से वाहिनीपति राजा विराटको घायल किया ३ और तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणों से फिर उसको घायल किया फिर तीसरी बार तिहत्तर बाणों से इसके पीछे चौथीबार सौ बाणों से घायलकिया तदनन्तर, राजा शल्य ने उसके चारों घोड़ों को मारकर युद्ध में बाणों से सारथी और ध्वजा को गिराया ४ । ५ वह महारथी मृतक घोड़ेवाले रथ से शीघ्रही उतरकर धनुष को चलायमान करता और तेजबाणों को छोड़ता नियत हुआ ६ इसके पीछे शतानीक भाई को विरथ देखकर सब लोक के देखते शीघ्र रथ की सवारी से सम्मुख आया ७ फिर शल्य ने आतेहुए शतानीक को बड़े युद्धमें विशिख नाम बहुत बाणों से छेदकर यमलोक में पहुँचाया ८ उस वीर के मरनेपर रथियों में श्रेष्ठ विराट उस ध्वजाओं की माला रखनेवाले रथपर शीघ्रही सवार हुआ ९ उसके पीछे क्रोध से द्विगुणित बलवाले विराट ने दोनों नेत्रों को चलायमान करके शीघ्रही बाणों से शल्य के रथ को बाणों से ढकदिया १० इसके पीछे क्रोधयुक्त राजा शल्य ने टेढ़े पर्ववाले बाण से वाहिनीपति राजा विराट को छातीपर कठिन घायल किया ११ फिर वह अत्यन्त घायल विराट रथ के पृष्ठपर बैठगया और बड़ा मूर्च्छित हुआ १२ युद्ध में विराट को कठिन घायल देखकर सारथी दूर हटालेगया हे भरतवंशिन् ! फिर वह बड़ी सेना रात्रि में भागी १३ जोकि युद्धको शोभा देनेवाली शल्य के सैकड़ों बाणों से घायल थी हे राजेन्द्र ! फिर अर्जुन और वासुदेवजी उस भागीहुई सेना को देखकर वहां गये जहां राजा शल्य नियत था १४ और राक्षसों का राजा अलम्बुष आठ चक्रवाले उत्तम रथपर सवार होकर उन दोनों के सम्मुख गया १५ जोकि घोरदर्शन विशालरूप उत्तम घोड़ों से युक्त रक्त पताका रखनेवाला रक्तही मालाओं से अलंकृत १६ कार्ष्णनाम लोहे का बना घोर रीछों के चमड़े से मढ़ाहुआ और

रौद्र अपूर्वपक्ष और बड़े नेत्र शब्दकरनेवाले १७ गृध्रराज की मूर्ति से शोभायमान ऊंचे दण्ड की ध्वजावाला था हे राजन् ! वह राक्षस चूर्ण जनसमूह के समान शोभायमान हुआ १८ अर्जुन के शिरपर सैकड़ों बाणसमूहों को फैलाते हुए उसने आतेहुए अर्जुनको ऐसे रोका जैसे कि प्रभञ्जन को गिरिराज रोकता है १९ हे भरतर्षभ ! तब वहां नर और राक्षस का अत्यन्त कठिन युद्ध सब देखनेवालों को प्रसन्नता देनेवाला २० गृध्र, काक, बलाक, उलूक और शृगालों का प्रसन्न करनेवाला हुआ अर्जुन ने सौ बाणों से उसको घायल किया २१ और नौ तीक्ष्ण बाणों से ध्वजाको काटा और तीन २ बाण से सारथी त्रिवेणुक को २२ एक बाण से धनुष को काटकर चारबाणों से चारों घोड़ों को मारा फिर उसने दूसरा धनुष सन्नद्ध किया उस धनुष के भी दो खण्ड किये २३ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे अर्जुन ने तीक्ष्णधारवाले बाणों से उस राक्षसाधिप को छेदा तब घायल और भयभीत होकर भागा २४ अर्जुन उसको शीघ्र विजय करके मनुष्य हाथी और घोड़ोंपर बाणों को फैलाता द्रोणाचार्य के सम्मुख गया २५ हे महाराज ! यशस्वी अर्जुन के हाथ से घायल सेना पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि वायु से टूटेहुए वृक्ष गिरते हैं २६ महात्मा अर्जुन के हाथ से उन सेनाओं के नाश होनेपर आपके पुत्रों की सब सेना भागी ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणयष्टषष्ठ्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६८ ॥

एकसौउनहत्तर का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे भरतवंशिन् ! आपके पुत्र चित्रसेन ने आपकी सेना को बाणों से भस्म करनेवाले शतानीक को रोका १ और उस नकुलके पुत्र शतानीक ने चित्रसेन को पांचबाणों से छेदकर उसको तीक्ष्णधारवाले दशबाणों से फिर छेदा २ हे महाराज ! फिर चित्रसेन ने युद्ध में शतानीक को तीक्ष्णधारवाले नौबाणों से छातीपर छेदा ३ तब नकुल के पुत्रने टेढ़ेपर्ववाले विशिखों से उसके कवच को शरीरसे गिराया वह आश्चर्य सा हुआ ४ हे राजन्, धृतराष्ट्र ! वह कवचसे रहित आपका पुत्र ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि समय पाकर कांचली से छूटाहुआ सर्प होता है ५ इसके पीछे नकुल के पुत्रने युद्ध में उपाय करनेवाले इस चित्रसेनकी ध्वजा और धनुषको तीक्ष्ण बाणों से काटा ६ हे महाराज ! युद्ध में उस टूटे धनुष कवच से रहित महारथी ने शत्रु के मारने

वाले दूसरे धनुष को हाथमें लिया ७ इसके पीछे क्रोधयुक्त चित्रसेन ने नकुल के पुत्र को नौबाणों से शीघ्रही घायल किया ८ हे श्रेष्ठ! फिर नरोत्तम शतानीक ने चित्रसेन के सारथी समेत चारों घोड़ोंको मारा ९ बलवान् महारथी चित्रसेन ने उस रथ से उतरकर नकुल के पुत्र को पच्चीस बाणों से पीड़ित किया १० नकुल के पुत्र ने उस कर्म के करनेवाले चित्रसेन के रत्नजटित धनुष को अर्धचन्द्र बाण से काटा ११ वह टूटे धनुष विरथ मृतक सारथी समेत घोड़ेवाला चित्रसेन शीघ्रही महात्मा कृतवर्मा के रथपर सवार हुआ १२ तब सैकड़ों बाणों से ढकता हुआ वृषसेन शीघ्रही उस महारथी द्रुपद के सम्मुख गया जोकि सेना समेत द्रोणाचार्य की सम्मुखता करने का अभिलाषी था १३ हे निष्पाप, धृतराष्ट्र! द्रुपद ने कर्ण के पुत्र महारथी को साठबाणों से छाती और भुजा पर छेदा १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त रथपर चढ़ेहुए वृषसेन ने द्रुपद को तीक्ष्ण शायकों से छातीपर घायलकिया १५ हे महाराज! बाणों से घायलअङ्ग बाणरूप काँटों से संयुक्त वह दोनों युद्ध में ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि साही अपने काँटों से शोभित होती है १६ वह दोनों बड़े युद्ध में सुनहरी पुङ्ख साफ नोक वाले बाणों से टूटे कवच शरीर रुधिरसमूह से आर्द्रदेह महाशोभायमान हुए १७ अर्थात् वह दोनों युद्धभूमि में सुवर्णरूप कल्पवृक्षके समान फूलेहुए किंशुकवृक्ष के सदृश शोभायमान हुए १८ हे राजन्! इसके पीछे वृषसेनने द्रुपद को नौबाणों से छेदकर फिर सत्तरबाणों से घायलकिया इसके पीछे भी तीन २ दूसरे बाणों से १९ इसी प्रकार वह कर्णका पुत्र वर्षा करनेवाले बादलकी समान हजारों बाणोंको छोड़ता शोभायमान हुआ २० तब क्रोधयुक्त द्रुपदने तीक्ष्णधार पीतरङ्गवाले भल्ल से वृषसेनके धनुष के दो खण्ड किये २१ उसने सुवर्णजटित नवीन दृढ़ दूसरे धनुष को लेकर और तूणीर से साफ तीक्ष्ण दृढ़ पीतरङ्गवाले भल्ल को खैंच २२ धनुष में लगाकर और उस द्रुपद को देखकर सब सोमकों को भयभीत करतेहुए उस कानतक खैंचेहुए भल्लको छोड़ा २३ वह भल्ल उसके हृदय को छेदकर पृथ्वी में गया वृषसेन के बाणसे घायल राजा द्रुपद मूर्च्छायुक्त हुआ २४ फिर सारथी अपने कर्म को स्मरण करता उसको दूर लेगया हे राजेन्द्र! उस पाञ्चालों के महारथी द्रुपद के पराजय होने पर २५ बाणों से टूटे कवचवाली द्रुपद की सेना उस भयानक रात्रि के होने में भागी २६ उस समय

उन जलतीहुई चारोंओर से प्रज्वलित मशालों से लोग ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों के विना नक्षत्रों से आकाश शोभित होता है २७ इस प्रकार से गिरेहुए रत्नजटित बाजूबन्दों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि वर्षा ऋतु में बिजलियों से आकाश शोभित होता है २८ इसके पीछे कर्ण के पुत्रसे भयभीत सोमक ऐसे भागे जैसे कि तारासम्बन्धी युद्ध में इन्द्र के भय से भयातुर दानव लोग भागते हैं २९ हे महाराज ! युद्ध में उसके हाथ से पीड्यमान भागते और मशालोंसे प्रकाशित वह सोमक शोभायमान हुए ३० हे भरतवंशिन् ! कर्ण का पुत्र भी युद्धमें उनको विजयकरके ऐसा शोभितहुआ जैसे कि मध्याह्नके समय वर्तमान उष्ण किरणवाला सूर्य शोभित होता है ३१ आपके अन्य उन हज़ारों राजाओं के मध्य में प्रतापवान् वृषसेन अकेलाही सबको तपाताहुआ नियत हुआ ३२ वह वृषसेन युद्ध में सोमकों के शूर महारथियों को विजय करके शीघ्रही वहां गया जहांपर कि राजा युधिष्ठिर थे ३३ इसके पीछे आपका पुत्र महारथी दुश्शासन उस क्रोधयुक्त युद्ध में शत्रुओं के नाश करनेवाले प्रतिविन्ध्य के सम्मुखगया ३४ हे राजन् ! उन दोनों का वह समागम ऐसा आश्चर्यकारी हुआ जैसे कि बादलों से रहित आकाश में बुध और सूर्य का संयोग होता है ३५ दुश्शासन ने युद्ध में कठिन कर्म करनेवाले प्रतिविन्ध्य को तीन बाणों से ललाटपर छेदा ३६ आपके अत्यन्त पराक्रमी धनुषधारी पुत्र के हाथ से अत्यन्त घायल महाबाहु प्रतिविन्ध्य शिखरधारी पर्वत के समान शोभायमान हुआ ३७ महारथी प्रतिविन्ध्य ने युद्ध में दुश्शासन को नौ शायकों से छेदकर फिर सात बाणों से घायल किया ३८ हे भरतवंशिन् ! आपके पुत्र ने वह कठिन कर्म किया कि प्रतिविन्ध्य के घोड़ों को अपने उग्रबाणों से गिराकर ३९ उस धनुषधारी की सारथी समेत ध्वजा को भी गिराया और रथ को तिलों के समान खण्ड २ किया ४० हे प्रभो ! इसके पीछे भी उस क्रोधयुक्त ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से पताका, तूणीर, बागडोर और पोक्करों को तिल के समान खण्ड २ करके काटा ४१ फिर रथ से रहित धनुष हाथ में लिये धर्मात्मा हज़ारों बाणों को फैलाताहुआ आपके पुत्र से युद्ध करने लगा ४२ आपके पुत्र ने क्षुरप्रनाम बाण से उसके धनुष को काटकर उस टूटे धनुषवाले को दश बाणों से पीड्यमान किया ४३ फिर उसको रथ से रहित देखकर उसके महारथी भाई

बड़े वेग से उसके पीछे सेना समेत वर्तमान हुए ४४ हे महाराज ! उसके पीछे वह प्रतिविन्ध्य सुतसोम के प्रकाशमान रथपर सवारहुआ और धनुष को लेकर आपके पुत्र को घायल किया ४५ उस समय बड़ी सेनासमेत आपके सब शूरवीर आपके पुत्र को मध्यवर्ती करके युद्ध में सम्मुख वर्तमानहुए तदनन्तर भयकारी रात्रि के समय आपके शूरवीरों से और पाण्डवों से वह युद्ध जारी हुआ जोकि यमराज के पुर की वृद्धि करनेवाला था ॥ ४६ । ४७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिघोररात्रियुद्धेएकोनसप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६९ ॥

एकसौसत्तर का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, क्रोधयुक्त शकुनी उस वेगवान् युद्ध में आपकी सेना के मारनेवाले नकुल के सम्मुख गया और तिष्ठ२ शब्द को उच्चारण किया १ शत्रुता करनेवाले परस्पर मारने के अभिलाषी उन दोनों वीरों ने कानतक खैंच कर छोड़ेहुए बाणों से परस्पर में घायल किया २ हे राजन् ! जैसे कि नकुल ने बाणों की वर्षा करी उसी प्रकार शकुनी नेभी गुरुकी शिक्षाको दिखलाया ३ हे महाराज ! तब युद्ध में बाणरूप काँटों से संयुक्त देह वह दोनों शूर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि साही काँटों से व्याप्त होकर शोभित होती हैं ४ अर्थात् सुनहरी पुङ्ख और सीधे चलनेवाले बाणों से टूटे कवच रुधिरसमूह से लिप्त वह दोनों बड़े युद्ध में शोभित हुए ५ सुवर्ण वर्ण और कल्पवृक्ष के तुल्य प्रफुल्लित किंशुकवृक्ष के समान युद्धभूमि में प्रकाशमान हुए ६ हे महाराज ! बहुत बाणों से भिदेहुए वह दोनों शूर युद्ध में ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि काँटों से युक्त शाल्मली वृक्ष होता है ७ तदनन्तर अत्यन्त कुटिल दृष्टि खुलेहुए विस्तृत नेत्र क्रोध से अत्यन्त रक्तवर्ण परस्पर नाश करनेवाले दिखाई पड़े ८ अत्यन्त क्रोधयुक्त हँसतेहुए आपके साले ने अत्यन्त तीक्ष्णधार करणी नाम बाण से माद्री के पुत्र नकुल को हृदय पर छेदा ९ फिर आपके धनुषधारी साले के हाथ से अत्यन्त घायल नकुल रथ की पृष्ठपर बैठगया और मूर्च्छित भी हुआ १० हे राजन् ! शकुनी अत्यन्त शत्रुता करनेवाले शत्रु को उस दशावाला देखकर ऐसे गर्जा जैसे कि वर्षा के प्रारम्भ में बादल गर्जता है ११ उस के पीछे पाण्डवनन्दन नकुल सचेत होकर कालके समान मुख को चौड़ा किये फिर शकुनी के सम्मुख गया १२ हे भरतर्षभ ! उस क्रोधयुक्त नकुल ने शकुनी

को साठबाण से घायल किया फिर उसको नाराच नाम सौबाणों से छातीपर छेदा १३ और उसके बाणसमेत धनुष को मुष्टिका के स्थानपर काट शीघ्रही ध्वजा को काटकर रथ से पृथ्वीपर गिराया १४ पाण्डवनन्दन नकुल ने तीक्ष्ण तीव्रधार पीतरङ्ग के विशिख नाम एक बाण से दोनों जङ्घाओं को छेदकर १५ उसको ऐसे गिराया जैसे कि ब्याधा के हाथ से सपक्ष बाज पक्षी गिराया जाता है हे महाराज ! तब अत्यन्त घायल वह शकुनी ध्वजा की लाठी को पकड़कर रथ के उपस्थ पर ऐसे बैठगया जैसे कि कामी मनुष्य स्त्री को पकड़ कर बैठता है १६ हे निष्पाप, धृतराष्ट्र ! सारथी उस आपके साले को अचेत और गिरा हुआ देखकर शीघ्रही रथ की सवारी से सेनामुख से दूर लेगया १७ उसके पीछे नकुल और जो उसके पीछे चलनेवाले थे धन्य २ शब्द को पुकारे शत्रुसन्तापी नकुल युद्ध में शत्रु को विजय करके क्रोधयुक्त होकर सारथी से बोला कि मुझ को द्रोणाचार्य की सेना के सम्मुख लेचल १८ हे राजन् ! तब सारथी उस बुद्धिमान् नकुल के वचन को सुनकर उस स्थान को चला जहां पर कि द्रोणाचार्यजी वर्तमान थे १९ तब वह उपाय करनेवाले शारद्वत द्रोणाचार्य वेग से युद्ध में अपने को चाहनेवाले शिखण्डी के सम्मुख गये २० हँसते हुए शिखण्डी ने द्रोणाचार्य की सेना में आनेवाले शत्रुविजयी कृपाचार्य को नौ भल्लों से छेदा २१ हे महाराज ! आपके पुत्रों का हित करने वाले कृपाचार्य ने उसको पांचबाणों से छेदकर फिर बीसबाणों से छेदा २२ फिर उन दोनों का युद्ध घोररूप और ऐसा भयानक हुआ जैसे कि देवासुरों के युद्ध में शबर और देवराज का हुआ था २३ युद्ध में दुर्मद वीर महारथी ने आकाश को बाणजालों से ऐसा व्याप्त किया जैसे कि वर्षाऋतु में दो बादल करते हैं २४ फिर वह युद्ध स्वाभाविकही अत्यन्त घोररूप होगया युद्ध में शोभापानेवाले शूरवीरों की रात्रि कालरात्रि के समान घोररूप और भयानक हुई २५ हे महाराज ! फिर शिखण्डी ने गौतम कृपाचार्य के तैयार किये हुए बड़े धनुष को विशिख नाम बाणसमेत अर्धचन्द्रनाम बाण से काटा २६ तब क्रोधयुक्त कृपाचार्य ने भयानक और साफनोक तीक्ष्णधार कारीगर से साफ की हुई शक्ति को उसके ऊपर फेंका २७ शिखण्डी ने उस आतीहुई शक्ति को बहुत बाणों से काटा फिर वह प्रकाशित और चमकदार शक्ति प्रकाश करती

हुई पृथ्वी पर गिरपड़ी २८ रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य ने दूसरे धनुष को लेकर तीक्ष्ण बाणों से शिखण्डी को ढकदिया २६ उस यशस्वी कृपाचार्य के हाथ से युद्ध में ढकाहुआ वह रथियों में श्रेष्ठ शिखण्डी रथ की उपस्थपर बैठगया ३० हे भरतवंशिन्! फिर शारद्वत कृपाचार्य ने युद्ध में उसको पीड्यमान देखकर मारने की अभिलाषा करते हुए बहुत बाणों से घायल किया ३१ पाञ्चाल और सोमकों ने द्रुपद के पुत्र महारथी को युद्ध में मुख फेरनेवाला देखकर चारों ओर से मध्यवर्ती किया ३२ उसी प्रकार आपके पुत्रों ने बड़ी सेना समेत ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कृपाचार्य को मध्यवर्ती किया इसके पीछे युद्ध जारी हुआ ३३ हे राजन्! युद्ध में परस्पर सम्मुख लड़नेवाले रथियों का कठिन शब्द ऐसा हुआ जैसे कि गर्जनेवाले बादलों का शब्द होता है ३४ परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले अश्वसवार और हाथियों की संग्राम भूमिबड़ी कठिन दिखाई पड़ी ३५ और दौड़नेवाले पत्तियों के चरणाघात से पृथ्वी ऐसी कम्पित हुई जैसे कि भय से पीड़ावान् स्त्री कम्पायमान होती है ३६ हे राजन्! रथ रथियों को पाकर बड़े वेग से दौड़े और बहुतों ने ऐसे पकड़ लिया जैसे कि काक शलभनाम पक्षी को पकड़लेता है ३७ हे भरतवंशिन्! इसी प्रकार उस युद्ध में प्रवृत्त मदोन्मत्त बड़ेहाथियों ने भी बड़े २ मतवाले हाथियों को पकड़ लिया ३८ अश्वसवार ने अश्वसवार को और पदाती ने पदाती को परस्पर पाकर क्रोध से एक को एक ने जाने नहीं दिया ३९ उस रात्रि में दौड़ते चलते और फिर लौटतेहुए सेनाओं के कठिन शब्द हुए ४० हे महाराज! रथ हाथी और घोड़ों के मध्यमें वह प्रकाशित मशालें ऐसी दिखाई पड़ीं जैसे कि आकाश से गिरीहुई उल्का होती हैं ४१ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, राजन्! वह रात्रि युद्ध के शिरपर मशालों से प्रकाशित दिन के रूप होगई ४२ जैसे कि लोक का वर्तमान अन्धकार सूर्य की किरणों से नाश को पाता है उसीप्रकार जहां तहां प्रकाशित मशालों से भी बहुत सा अन्धकार दूर होगया ४३ धूलि और अन्धकार से पूरित आकाश पृथ्वी दिशा और विदिशा प्रकाश से फिर प्रकाशित हुईं ४४ अस्त्र कवच और बड़ी मणियों के सब प्रकाश उन मशालों के प्रकाश से अन्तर्हितप्रभा होकर गुप्त होगये ४५ हे भरतवंशिन्! रात्रि के समय उस युद्ध के कोलाहल वर्त्तमान होनेपर किसी ने अपने को भी यह न जाना कि मैं कौन हूं ४६ आशय यह

है कि उस युद्ध में मोह से पिता ने पुत्र को पुत्र ने पिता को और इसी प्रकार मित्र ने मित्र को भी मारा ४७ मामा ने भानजे को भानजे ने मामाको जमाई ने श्वशुर श्वशुर ने जमाई और इतर ने इतर को मारा ४८ रात्रि के समय वह युद्ध मर्यादा से रहित होकर भयभीतों के भय का उत्पन्न करनेवाला हुआ ॥४९॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिघोररात्रिसंकुलयुद्धेसप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १७० ॥

एकसौइकहत्तर का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज ! उस भयानक तुमुल युद्ध के वर्तमान होनेपर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के सम्मुख वर्तमान हुआ १ उत्तम धनुष को चढ़ाता और वारंवार प्रत्यञ्चा को खैंचता हुआ द्रोणाचार्य के उस रथ की ओर दौड़ा जोकि सुवर्ण से अलंकृत था २ हे महाराज ! इसके साथी पाण्डवोंसमेत पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य के नाश करने की अभिलाषा से जातेहुए धृष्टद्युम्न को मध्यवर्ती करके द्रोणाचार्य को घेर लिया ३ आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य को उस प्रकार से घिराहुआ देखकर सब ओर से उपाय करनेवाले आपके पुत्रों ने युद्ध में द्रोणाचार्य को रक्षित किया ४ इसके पीछे वह दोनों सेनासागर रात्रि में ऐसे भिड़गये जैसे कि वायु से उठाये और व्याकुल जीववाले भय के उत्पन्न करने वाले दो समुद्र होते हैं ५ इसके अनन्तर धृष्टद्युम्न शीघ्रही पांचबाणों से द्रोणाचार्य को हृदय पर घायल करके सिंहनाद को गर्जा ६ हे राजन् ! फिर द्रोणाचार्य ने युद्ध में उसको पच्चीस बाणों से छेदकर दूसरे भल्ल से उसके बड़े शब्दवाले धनुष को काटा ७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! द्रोणाचार्य के हाथ से घायल धृष्टद्युम्न ने दशनच्छदों को काटकर शीघ्रही धनुष को त्याग किया ८ उस समय क्रोधयुक्त प्रतापवान् धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य के नाश करने की इच्छा से दूसरे उत्तम धनुष को लिया ९ और शत्रुओं के वीरों को मारनेवाले ने अपने सुवर्ण जटित धनुष को कानतक खैंचकर उसके द्वारा द्रोणाचार्य के नाश करनेवाले घोर शायक को छोड़ा १० बड़ेयुद्धमें पराक्रमी के हाथ से छोड़ेहुए उस घोर बाण ने उदयरूपी सूर्य के समान उस सेना को प्रकाशित किया ११ हे राजन् ! फिर देवता गन्धर्व और मनुष्यों ने उस घोरबाण को देखकर युद्ध में इस वचन को कहा कि द्रोणाचार्य का कल्याण हो १२ फिर कर्ण ने हस्तलाघवता के समान आचार्यजी के रथपर आतेहुए उस शायक को दश टुकड़े किया १३

हे राजन् ! धनुषधारी कर्ण के हाथ से बहुत प्रकार से कटाहुआ वह बाण शीघ्रता से ऐसे गिरपड़ा जैसे कि विनाविषवाला सर्प गिरता है १४ इसके पीछे कर्ण ने धृष्टद्युम्न को दशबाणों से अश्वत्थामा ने पांचबाणों से और आप द्रोणाचार्य ने सातबाणों से और उसीप्रकार दुश्शासन ने तीनबाणों से घायल किया १५ दुर्योधन ने बीसबाण से शकुनी ने पांचबाणसे तात्पर्य यहहै कि सब महारथियों ने शीघ्रता से धृष्टद्युम्न को छेदा १६ हे राजन् ! बड़े युद्ध में द्रोणाचार्य के निमित्त सात घोर बाणों से घायल उस धृष्टद्युम्न ने बड़ी असम्भ्रमता अर्थात् सावधानी से सब को तीन २ बाणों से छेदा १७ अर्थात् द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण और आपके पुत्र को घायल किया उस धनुषधारी के हाथ से घायल उन रथियों में श्रेष्ठ हरएक ने युद्ध में धृष्टद्युम्न को पांच २ बाणों से घायल किया १८ हे राजन् ! अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रुमसेन ने एक बाण से छेदकर शीघ्रही दूसरे तीन बाणों से भी छेदा और तिष्ठ २ शब्द भी किया फिर धृष्टद्युम्न ने उसी युद्ध में सीधे चलनेवाले तीक्ष्ण १९ सुनहरी पुङ्ख साफ प्राणों के नाशक तीनबाणों से छेदकर बड़े पराक्रमी ने दूसरे भल्ल से सुवर्ण के कुण्डलधारी २० द्रुमसेन के शिर को शरीर से काटा तब युद्ध में वह दोनों होठों का काटनेवाला शिर पृथ्वी में ऐसे गिरा २१ जैसे कि बड़े भारी वायु के वेग से उखाड़ा हुआ ताल वृक्ष का पक्काफल गिरता है फिर उस वीर ने तीक्ष्णधार वाले बाणों से उन शूरवीरों को छेदकर २२ अपूर्व युद्ध करनेवाले कर्ण के धनुष को भल्लों से काटा कर्ण ने भी उस प्रकार धनुष के टूटने को ऐसे नहीं सहा जैसे कि श्रीहनुमान्जी ने लांगूल के अत्यन्त खण्डित होने को नहीं सहा था क्रोध से रक्तनेत्र श्वास लेताहुआ वह कर्ण दूसरे धनुष को लेकर २३ । २४ बहुत से बाणोंसमेत उस महाबली धृष्टद्युम्न के सम्मुख गया फिर उन रथियों में श्रेष्ठ छः शूरों ने कर्ण को क्रोधयुक्त देखकर शीघ्र मारने की इच्छा से धृष्टद्युम्न को घेरलिया २५ शूरों में बड़े वीर आपके छः शूरवीरों के आगे कियेहुए उस धृष्टद्युम्न को काल के मुख में वर्तमान माना २६ फिर उसी समय यादव सात्यकी बाणों को फैलाता पराक्रमी धृष्टद्युम्न के पास वर्तमान हुआ २७ उस बड़े धनुषधारी और युद्ध में दुर्मद आयेहुए सात्यकी को कर्ण ने सीधे चलनेवाले दश बाणों से छेदा २८ हे महाराज ! सात्यकी ने सब वीरों के देखतेहुए उसको दश बाणों से छेदकर

चलाजा मत खड़ारह यह शब्द भी कहा २६ हे राजन् ! पराक्रमी सात्यकी और महात्मा कर्ण का ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि राजा बलि और देवराज इन्द्र का हुआ था ३० रथ के शब्द से क्षत्रियों को भयभीत करनेवाले क्षत्रियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने कमल के समान मुख रखनेवाले कर्ण को बाणों से छेदा ३१ हे महाराज ! वह पराक्रमी कर्ण धनुष के शब्दों से पृथ्वी को कँपाताहुआ सात्यकी से युद्ध करनेलगा ३२ कर्ण ने विपाठ, करणी, नाराच, वत्सदन्त, क्षुरप्र और अन्य नानाप्रकार के बाणों से भी सात्यकी को छेदा ३३ उसी प्रकार वृष्णियों में अत्यन्त श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले सात्यकी ने भी बाणों से कर्ण के ऊपर वर्षा करी वह दोनों का युद्ध समान हुआ ३४ इसके पीछे आपके पुत्रों ने और कवचधारी कर्ण के पुत्र ने शीघ्रही चारोंओर से तीक्ष्ण बाणों के द्वारा सात्यकी को छेदा ३५ हे समर्थ ! क्रोधयुक्त सात्यकी ने उन्हों के और कर्ण के अस्त्रोंको अपने अस्त्रों से रोककर वृषसेन को छातीपर घायल किया ३६ हे राजन् ! उस बाण से घायल पराक्रमी वृषसेन धनुष को डालकर अचेतता से रथपर गिर-पड़ा ३७ इसके पीछे पुत्र के शोक से दुःखी कर्ण ने महारथी वृषसेन को मृतक जानकर सात्यकी को पीड़ावान् किया ३८ कर्ण के हाथ से पीड़ित शीघ्रता करनेवाले महारथी सात्यकी ने कर्ण को बहुतबाणों से वारंवार छेदा ३६ उस यादव ने कर्ण को दशबाणों से और वृषसेन को सात बाणों से छेदकर उन दोनों के धनुषों को हस्तत्राण समेत काटा ४० शत्रु के भय को उत्पन्न करने-वाले उन दोनों ने दूसरे धनुष को तैयारकरके सात्यकी को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सब ओर को छेदा ४१ हे राजन् ! फिर उत्तम वीरों के नाश करनेवाले उस युद्ध के वर्तमान होनेपर गाण्डीव धनुष का बड़ा शब्द सुना गया ४२ हे राजन् ! उस रथ के और गाण्डीव धनुष के शब्द को सुनकर कर्ण दुर्योधन से यह वचन बोला ४३ कि फिर बड़ा धनुषधारी अर्जुन सब सेना को और उत्तम नरोत्तम पौरवों को मारकर उत्तम धनुष को फटकारता हुआ ४४ विजय करताहै क्योंकि गाण्डीव धनुष के बड़े शब्द और रथ के शब्द ऐसे सुनेजाते हैं जिस प्रकार गर्जतेहुए इन्द्र के शब्द होते हैं ४५ प्रत्यक्ष में अर्जुन अपने योग्य कर्मको करता है हे राजन् ! यह भरतवंशियों की सेना अनेकप्रकार से छिन्न भिन्न की जाती है ४६ बहुत सी छिन्न भिन्न सेना ऐसे नियत नहीं होती हैं जैसे कि वायु

से कँपायाहुआ बादलों का जाल फटजाता है और जिस प्रकार महासागर में टूटीहुई नौका नहीं नियत होती उसी प्रकार अर्जुन को पाकर ४७ भागती है और गाण्डीव धनुष के भेदेहुए सैकड़ों बड़े २ शूरवीर लोगों के बृहत् शब्द सुने जाते हैं ४८ हे राजाओं में श्रेष्ठ, दुर्योधन ! रात्रि में अर्जुन के रथ के पास हाहाकार का शब्द सिंहनाद और बहुत प्रकार के शब्दों को सुनो ४६ । ५० और यह यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी हमारे मध्य में नियत है जो यह लक्ष्य मारा जाता है अर्थात् सात्यकी स्वाधीन कियाजाता है तो भी सब शत्रुओं को विजय करेंगे ५१ यह राजा द्रुपद का पुत्र सब ओर को रथियों में शूरवीरों से संवृत द्रोणाचार्य के साथ भिड़ा हुआ है ५२ जो हम सात्यकी को और पर्षत के पौत्र धृष्टद्युम्न के मारने को समर्थ होयँ तो हमारी अवश्य विजय होय ५३ हे महाराज ! इनदोनों वीर और महारथी वृष्णी और पर्षदवंशियों में श्रेष्ठ को अभिमन्यु के समान घेरकर मारने का उपायकरें ५४ हे भरतवंशिन् ! वह अर्जुन सात्यकी को बहुत से उत्तम कौरवों के साथ भिड़ा हुआ जानकर द्रोणाचार्य के सम्मुख आता है ५५ तबतक रथियों में श्रेष्ठ अत्यन्त उत्तम २ शूरवीर लोग वहां जावो जबतक कि अर्जुन बहुत योद्धाओं से घिराहुआ सात्यकी को न जाने ५६ और यह शूरवीर अतिशीघ्रता से बाणों के छोड़ने में विलम्ब न करें जिससे कि यहां यह माधव सात्यकी परलोक को जाय ५७ हे महाराज ! अच्छी रीति से कीहुई श्रेष्ठ नीति को इसी प्रकार से करो तब आपके पुत्र ने कर्ण के मत में एकमत होकर शकुनी से ऐसे कहा ५८ हे राजन् ! जैसे कि इन्द्र ने युद्ध में यशवान् विष्णु से कहा था इससे मुख न फेरनेवाले दशहज़ार हाथियों से ५६ और दशहीहज़ार रथियों से संवृत होकर तुम बड़ी शीघ्रता से अर्जुन के सम्मुख जावो दुश्शासन, दुर्विषह, सुबाहु, दुष्प्रधर्षण ६० यह सबलोग बहुत से पत्तियों समेत आपके पीछे जायँगे हे महाबाहो, मामाजी ! आप श्रीकृष्णसमेत अर्जुन और धर्मराज को मारो और फिर इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेव को भी मारो ६१ मेरी विजय की आशा तुम्हीं में ऐसे नियत है जैसे कि देवताओं की विजय की आशा देवराज इन्द्र में होती है ६२ हे मामाजी ! तुम कुन्ती के पुत्रों को ऐसे मारो जैसे कि स्वामिकार्त्तिकजी ने असुरों को मारा था आपके पुत्रके इस प्रकार कहनेपर शकुनी पाण्डवों के सम्मुख गया ६३

हे समर्थ! वह शकुनी बड़ी सेना और आपके पुत्रों के साथ आपके पुत्र दुर्योधन के हितार्थ पाण्डवों के भस्मीभूत करने का अभिलाषी हुआ ६४ हे राजन्! इसके पीछे पाण्डवों की सेनापर शकुनी के चढ़ाई करने में आपके शूरवीरों का और शत्रुओं का युद्ध जारी हुआ ६५ बड़ी सेना से युक्त वह कर्ण युद्ध में हज़ारों बाणों को छोड़ता शीघ्रही सात्यकी के सम्मुखगया ६६ और उसी प्रकार सब राजाओं ने सात्यकी को संवृत किया उसके पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के रथपर जाकर ६७ चढ़ाईकरी हे भरतवंशिन्! तब वीर धृष्टद्युम्न और पाञ्चालों समेत द्रोणाचार्य का युद्ध बड़ाभारी हुआ॥ ६८॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकसप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १७१॥

एकसौबहत्तर का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, तदनन्तर वह शीघ्रता करनेवाले युद्ध में दुर्मद अक्षमी क्रोधयुक्त होकर सब शूरवीर एक साथही सात्यकी के रथपर दौड़े १ हे राजन्! उन्हों ने चाँदी और सुवर्ण से अलंकृत तैयारहुए रथ अश्वसवार और हाथियोंके द्वारा उसको चारों ओर से घेरलिया २ फिर उन सब महारथियों ने उसको चारों ओर से घेरकर सिंहनादों के साथ सात्यकी को घुड़का ३ वह शीघ्रता करने वाले माधव सात्यकी के मारने के इच्छावान् बड़े वीर अपने तीक्ष्ण बाणों से सत्यपराक्रमी सात्यकीपर वर्षा करनेलगे शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले महारथी सात्यकी ने उन आतेहुओं को देखकर शीघ्रही उनको आड़े हाथों लिया और बहुत बाणों को छोड़ा ४। ५ वहांपर बड़े धनुषधारी और युद्ध में दुर्मद वीर सात्यकी ने उदग्र और टेढ़ेपर्ववाले बाणों से शिरों को काटा ६ माधव ने क्षुरप्र नाम बाणों से आपके शस्त्रधारी शूरों की भुजा हाथियों की सूंड़ और घोड़ोंकी गर्दनों को काटकर पृथ्वी को ढकदिया ७ हे भरतवंशिन्! पड़ेहुए चामर और श्वेतछत्रों से हे प्रभो! पृथ्वी ऐसी व्याप्तहुई जैसे कि नक्षत्रों से आकाश व्याप्त होता है ८ युद्ध में सात्यकी के साथ लड़नेवाले उन वीरों के ऐसे कठिन शब्द हुए जैसे कि प्रेतों के क्रन्दित शब्द होते हैं ९ उस बड़े शब्द से पृथ्वी पूर्ण हुई और रात्रि भी कठिन भयङ्कर रूप भय की उत्पन्न करनेवाली हुई १० रोमहर्षण करनेवाली रात्रि में सात्यकी के बाणों से घायल और छिन्न भिन्न सेना को देखकर और बड़े शब्द को सुनकर ११ रथियों में श्रेष्ठ आपका पुत्र वारंवार

सारथी से कहनेलगा कि जहांपर यह शब्द है वहांपर घोड़ों को चलायमान करो १२ उसकी आज्ञा पाकर सारथी ने उन उत्तम घोड़ों को सात्यकी के रथपर चलायमान किया १३ इसके पीछे क्रोधयुक्त दृढ़ धनुषधारी हस्तलाघवीय अपूर्व युद्ध करनेवाला दुर्योधन सात्यकी के सम्मुख दौड़ा १४ तिस पीछे माधव सात्यकी ने खैंचकर छोड़ेहुए और रुधिर के भोजन करनेवाले बारहबाण से दुर्योधन को छेदा १५ प्रथमही उसके बाणों से पीड्यमान क्रोधयुक्त दुर्योधन ने दश बाणों से सात्यकी को छेदा १६ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे सब पाञ्चालों का और भरतवंशियों का बहुत उत्तम समान युद्ध हुआ १७ युद्ध में क्रोधयुक्त सात्यकी ने आपके पुत्र महारथी को अस्सी शायकों से छातीपर व्यथित किया १८ और युद्ध में अपने बाणों से उसके घोड़ों को यमलोक में पहुँचाया और शीघ्रही बाण से सारथी को भी रथ से गिराया १९ हे राजन् ! मृतक घोड़े वाले रथपर नियत आपके पुत्र ने तीक्ष्णधारवाले बाणों को सात्यकी के रथपर छोड़ा २० तब सात्यकी ने युद्ध में आपके पुत्र के फेंकेहुए उन पचास बाणों को हस्तलाघवता के समान काटा २१ फिर वेगवान् माधव ने युद्ध में आपके पुत्र के बड़े धनुष को अपने भल्ल से मुष्टिका के स्थानपर काटा २२ वह सब प्रजा का स्वामी प्रभु रथ धनुष से रहित होकर शीघ्रही कृतवर्मा के रथपर सवार हुआ २३ फिर रात्रि के मध्य में दुर्योधन के मुख फेरने पर सात्यकी ने विशिख नाम बाणों से आपकी सेना को घायलकिया २४ हे राजन् ! शकुनी ने हज़ारों रथ हाथी और हज़ारों ही घोड़ों से अर्जुन को चारों ओर से घेरकर नाना प्रकार के शस्त्रों से ढकदिया २५ उन काल के प्रेरित और अर्जुन के ऊपर सब अस्त्रों को छोड़नेवाले क्षत्रियों ने अर्जुन से युद्ध किया २६ बड़े नाशकर्ता दुःख पानेवाले अर्जुन ने उन हज़ारों रथ हाथी और घोड़ों को रोका २७ इसके पीछे सौवल के पुत्र हँसतेहुए शूर शकुनी ने तीक्ष्णधारवाले बाणों से अर्जुन को छेदा २८ और सौ बाण से उसके बड़े रथ को रोका २९ हे भरतवंशिन् ! अर्जुन ने उसको बीस बाणों से छेदा और अन्य २ बड़े २ धनुषधारियों को तीन २ बाणों से घायल किया ३० उस समय अर्जुन ने युद्ध में उन बाणों के समूहों को हटाकर आपके शूरवीरों को ऐसे मारा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र असुरों को मारता है ३१ फिर युद्ध में हाथी की सूंड़ों के समान टूटीहुई भुजाओं से

आच्छादित पृथ्वी ऐसी प्रकाशित और शोभायमान हुई जैसे कि पांच मुख रखनेवाले सर्पों से शोभित होती है ३२ मुकुट सुन्दर नाक सुन्दर कुण्डल और घूरनेवाले नेत्रयुक्त दोनों होठों के काटनेवाले क्रोधयुक्त ३३ निष्कचूड़ामणि-धारी प्यारे वचन बोलनेवाले क्षत्रियों के शिरों से पृथ्वी ऐसी शोभित हुई जैसे कि कमलों से पूर्ण पहाड़ों से शोभायमान होती है ३४ अर्जुन ने उस कठिन कर्म को करके फिर उग्र पराक्रम करनेवाले शकुनी को पांचबाणों से छेदा ३५ और तीन बाणों से उलूक को छेदा और छिदेहुए उलूक ने वासुदेवजी को व्यथित किया ३६ और पृथ्वी को शब्दायमान करता बड़े शब्द से गर्जा अर्जुन ने युद्ध में शकुनी के धनुष को शायकों से काटा ३७ और चारों घोड़ों को यमलोक में पहुँचाया हे भरतर्षभ ! फिर शकुनी रथ से उतरकर शीघ्र उलूक के रथपर सवार हुआ हे राजन् ! वह दोनों महारथी पिता पुत्र एक रथपर सवार हुए ३८ । ३९ फिर अर्जुन को दोनों ने बाणों से ऐसा सींचा जैसे कि दो बादल जलों से पर्वत को सींचते हैं हे महाराज ! तब पाण्डव अर्जुन ने तीक्ष्णधार बाणों से उन दोनों को घायलकरके ४० आपकी सेना को भगादिया और बाणों से ऐसा छिन्नभिन्न किया जैसे कि हवा से बादल चारों ओर को तिरबिर होजाते हैं ४१ हे राजन् ! इस प्रकार से सेना इधर उधर हुई तब रात्रि के समय वह घायल सेना ४२ भय से पीड़ित सब दिशाओं को देखतीहुई भागी युद्ध में कोई तो सवारियों को छोड़कर कोई सवारियों को चलायमान करते ४३ उस कठिन अन्धकार में भय से महाव्याकुल चारों ओर को दौड़े हे भरतर्षभ ! युद्ध में आपके शूरवीरों को विजयकरके ४४ प्रसन्नचित्त अर्जुन और वासुदेवजी ने शङ्खों को बजाया और धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य को तीन बाण से छेदकर ४५ शीघ्रही धनुष की प्रत्यञ्चा को तीक्ष्ण बाण से काटा क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले शूर द्रोणाचार्य ने उस धनुष को पृथ्वीपर रखकर ४६ वेगवान् बलवान् दूसरे धनुष को लिया हे राजन् !! उसके पीछे द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न को सातबाणों से छेदकर ४७ युद्ध में पांचबाणों से सारथी को छेदा फिर महारथी धृष्टद्युम्न ने शीघ्रही रथियों के द्वारा उनको हटाकर ४८ कौरवीय सेना को ऐसे विजय किया जैसे कि आसुरी सेना को इन्द्र विजय करता है हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! आपके पुत्र की उस सेना के घायल और मारेजाने पर ४९ घोर

और रुधिरसमूह से लहराती हुई वह नदी जारी हुई जोकि दोनों सेनाओं के मध्य में मनुष्य घोड़े और हाथियों की बहानेवाली थी ५० जैसे कि यमराज के पुर में वैतरणी नदी है वैसीही वह भी नदी हुई फिर तेजस्वी प्रतापवान् धृष्टद्युम्न उस सेना को भगाकर ५१ ऐसे सम्मुख दौड़ा जैसे कि इन्द्र देवतों के समूह में दौड़ता है इसके पीछे धृष्टद्युम्न और शिखण्डी ने महाशङ्खों को बजाया ५२ नकुल, सहदेव, सात्यकी, पाण्डव भीमसेन इन महारथियों ने आपके हजारों रथों को विजय करके ५३ विजय से शोभा पानेवाले युद्ध में मतवाले पाण्डवों ने आपके पुत्र कर्ण शूर द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा के देखते सिंहनाद किये ॥ ५४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विसप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १७२ ॥

एकसौतिहत्तर का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! महात्माओं के हाथ से मारी हुई और भगी हुई अपनी सेना को देखकर क्रोध से पूर्ण आपका पुत्र १ अकस्मात् बुद्धिमानों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य और कर्ण के पास जाकर क्रोध के वशीभूत वार्ताओं का जाननेवाला इस वचन को बोला २ यहां युद्ध में अर्जुन के हाथ से जयद्रथ को मराहुआ देखकर क्रोधयुक्त आपके साथ लड़ाई जारी हुई ३ पाण्डवों की सेना से मेरी सेना का नाश देखकर उस सेना के विजय में सामर्थ्यवान् होकर तुम सबलोग असमर्थों के समान दृष्टिगोचर हुए ४ जो मुझको आप त्यागने के ही योग्य जानते थे तो हे बड़ाई देनेवाले! मैं इस बात के भी सुनने के योग्य न था कि हम दोनों युद्ध में पाण्डवों को विजय करेंगे ५ मैं तभी आप लोगों से स्वीकृत वचनों को सुनकर पाण्डवों के साथ में इस शूरवीरों की नाशकारी शत्रुता को नहीं करता ६ हे श्रेष्ठ, पराक्रमी, पुरुषोत्तमो! जो मैं आपलोगों से त्यागने के योग्य नहीं हूं तो अपनी योग्यता के पराक्रम से युद्धकरो ७ आपके पुत्र के वचनरूपी कोड़े से घायल सर्पों के समान चलायमान उन दोनों वीरों ने युद्ध को जारी किया ८ इसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ लोक के धनुषधारी वह दोनों युद्ध में उन पाण्डवों के सम्मुख दौड़े जिनमें कि मुख्य सात्यकी था ९ उसी प्रकार सेना से युक्त पाण्डव भी उन एक साथ वारंवार गर्जनेवाले दोनों वीरों के सम्मुख वर्तमानहुए १० इसके पीछे बड़े धनुषधारी सब शस्त्रधारियों में

श्रेष्ठ क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने दश बाणों से शीघ्रतापूर्वक सात्यकी को घायल किया ११ कर्ण ने भी दशबाणों से आपके पुत्र ने सातबाण से वृषसेन ने दश बाणों से शकुनी ने सात बाणों से १२ इन सब ने दुर्योधन के रोने पीटने से सात्यकी को चारोंओर से घायलकिया युद्ध में पाण्डवीय सेना के मारनेवाले द्रोणाचार्य को देखकर १३ सोमकलोग चारोंओर से बाणों की वर्षा से शीघ्र पीड़ावान् हुए हे राजन्! वहां द्रोणाचार्य ने क्षत्रियों के प्राणों को ऐसे हरा १४ जैसे कि किरणों के द्वारा सूर्यदेवता चारोंओर के अन्धकार को हरते हैं द्रोणाचार्य से घायल परस्पर पुकारनेवाले पाञ्चालों के १५ बड़े शब्द सुनेगये कोई पुत्रों को कोई पिताओं को कोई भाई मामा को १६ भानजों को समान अवस्थावालों को नातेदार और बान्धवों को छोड़ २ कर जीवन के इच्छावान् होकर शीघ्रता से जाते थे १७ बहुत से मोह से अचेत होकर उनके सम्मुख गये और पाण्डवों के बहुत से शूरवीर परलोक को गये १८ हे राजन्! इसप्रकार महात्मा के हाथ से पीड्यमान पाण्डवीय सेना के लोग रात्रि के समय हज़ारों मशालों को छोड़कर १६ भीमसेन, अर्जुन, श्रीकृष्ण, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर के देखतेहुए भागे २० अन्धकार से लोक को व्याप्त होनेपर कुछ नहीं जानागया कौरवों के प्रकाश से दूसरे कौरव दिखाई पड़ते थे २१ हे राजन्! बहुतशायकों को फैलानेवाले महारथी कर्ण और द्रोणाचार्य ने उस भगीहुई सेना को देखकर पीछे की ओर से मारा २२ पाञ्चालों के छिन्न भिन्न होने और सब ओर से विनाशवान् होनेपर प्रसन्नचित्त श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले २३ कि बड़े धनुषधारी कर्ण और द्रोणाचार्य ने एकसाथ इन धृष्टद्युम्न सात्यकी और पाञ्चालों को शायकों से कठिन घायल किया २४ हे अर्जुन! इन दोनों के बाणों की वर्षा से हमारे महारथी लोग इधर उधर होगये और रोकने से भी यह सेना नहीं रुकती है २५ अर्जुन और केशवजी उस सेना को भगीहुई देखकर बोले कि हे पाण्डव! तुम भयभीत होकर मत भागो भय को त्याग करो २६ अच्छे प्रकार शस्त्रों के उठानेवाली सब अलंकृत सेना समेत हम दोनों उन द्रोणाचार्य और कर्ण को और वह दोनों हमारे पीड़ा देने को प्रवृत्त हैं २७ यह दोनों पराक्रमी शूर अस्त्रज्ञ विजय से शोभा पानेवाले इस रात्रि में आपकी सेना से अलग होकर नाश करेंगे २८ उन दोनों के इस प्रकार वार्तालाप करते

भयकारी कर्म करनेवाले महाबली उत्तम शूरवीर भीमसेन ने शीघ्रही सेना को लौटाकर चढ़ाई करी २६ हे राजन्! वह श्रीकृष्णजी आतेहुए भीमसेन को देखकर पाण्डव अर्जुन को प्रसन्न करतेहुए फिर बोले ३० कि युद्धमें प्रशंसनीय यह भीमसेन सोमक और पाण्डवों को साथ लिये बड़े वेग से महारथी कर्ण और द्रोणाचार्य के सम्मुख वर्तमान हुआ है ३१ हे पाण्डवनन्दन, अर्जुन! इस भीमसेन और महारथी पाञ्चालों के साथ तुम भी सब सेनाओं के विश्वास के निमित्त युद्ध करो ३२ उसके पीछे वह दोनों पुरुषोत्तम माधव और पाण्डव द्रोणाचार्य और कर्ण को पाकर युद्ध के शिरपर नियत हुए ३३ सञ्जय बोले कि पीछे से युधिष्ठिर की वह बड़ी सेना भी लौटआई फिर द्रोणाचार्य और कर्ण ने युद्ध में शत्रुओं को मर्दन किया ३४ हे राजन्! रात्रि के समय वह बड़ा कठिन युद्ध ऐसा हुआ जैसे चन्द्रोदय के समय दो सागरों का परस्पर सङ्घट्टन होता है ३५ उसके पीछे आपकी सेना के लोग विक्षिप्तों के समान हाथों से मशालों को छोड़कर पृथक् २ पाण्डवों से युद्ध करने लगे ३६ धूलि और अन्धकार से युक्त अत्यन्त भयानक लोक के होनेपर विजय के चाहनेवाले शूरवीर केवल नाम और गोत्र के द्वारा युद्ध करने लगे ३७ हे महाराज! प्रहार करनेवाले राजाओं से सुनायेहुए नाम युद्ध में ऐसे सुनेगये जैसे कि स्वयंवर में सुनाये जाते हैं ३८ अकस्मात् सेना का शब्द बन्द होगया फिर क्रोधयुक्त युद्धकर्ता विजयवाले और पराजितलोगों के भी बड़े शब्द हुए ३९ हे कौरवों में श्रेष्ठ! जहां २ मशालें दिखाई पड़ीं वहां २ शूरवीर लोग पतङ्गों के समान गिरे ४० हे राजेन्द्र! इस प्रकार से युद्ध करनेवाले पाण्डव और सब कौरवों की वह बड़ी रात्रि महादारुण हुई॥ ४१॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रिसप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १७३॥

एकसौचौहत्तर का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, इसके पीछे शत्रुओं के मारनेवाले कर्ण ने धृष्टद्युम्न को युद्ध में देखकर मर्मभेदी दश बाणों से छातीपर घायल किया १ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! फिर प्रसन्नचित्त धृष्टद्युम्न ने भी शीघ्रही दशशायकों से उसको घायलकिया और तिष्ठ २ वचन भी कहा २ उन दोनों महारथियों ने युद्धमें बाणों से परस्पर ढककर फिर कानतक खैंचेहुए शायकों से घोड़े परस्पर छेदा ३ इसके अनन्तर

कर्ण ने युद्ध में शायकों से पाञ्चालदेशियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न के सारथी और चारों घोड़ों को छेदा ४ और तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त श्रेष्ठ धनुष को भी काटा और भल्ल से उसके सारथी को रथ की नीढ़ से गिरादिया ५ रथ से रहित मृतक घोड़े और सारथी वाले धृष्टद्युम्न ने घोर परिघ को लेकर कर्ण के घोड़ों को पीसडाला ६ इसके पीछे विषैले सर्प के समान उसके बहुत बाणों से घायल पदाती होकर युधिष्ठिर की सेना में चलागया ७ हे श्रेष्ठ! वहां जाकर वह सहदेव के रथपर सवार हुआ और कर्ण की ओर को जाने का अभिलाषी हुआ तब युधिष्ठिर ने उसको वहां जाने से रोका ८ फिर बड़े तेजस्वी कर्णने सिंहनाद से मिलेहुए धनुष के शब्द को करके बड़े वेग से शङ्ख को बजाया ९ युद्ध में धृष्टद्युम्न को पराजित देखकर वह महारथी पाञ्चाल सोमकों समेत क्रोधयुक्त हुए १० वह सब कर्ण के मारने के लिये शस्त्रों को लेकर मृत्यु का भय त्याग कर्ण से युद्धाभिलाषी होकर चले ११ सारथी ने कर्ण के रथ में दूसरे घोड़ों को जोड़ा जोकि शङ्खवर्ण महावेगवान् और अच्छे लोगों के सवार करने के योग्य सिन्धुदेशीय थे १२ घायल और लक्ष्यभेदी कर्ण ने पाञ्चालों के महारथियों को बाणों से ऐसा पीड्यमान किया जैसे कि बादल पर्वत को करता है १३ तब पाञ्चालों की वह बड़ी सेना कर्ण के हाथ से पीड़ित और अत्यन्त भयभीत हो कर ऐसे भागी जैसे कि सिंह से पीड़ित और भयभीत मृग भागते हैं १४ तब मनुष्य जहां तहां हाथी घोड़े और रथों से पृथ्वीपर पड़ेहुए शीघ्रता से दिखाई पड़े १५ उस कर्ण ने बड़े युद्ध में क्षुरप्रनाम बाणों से दौड़तेहुए शूरवीरों की भुजा और कुण्डलधारी शिरों को काटा १६ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र! और बहुत से हाथी के सवार अश्वसवार और पदातियों की जङ्घाओं को काटा १७ युद्ध में दौड़तेहुए महारथियों ने अपने अङ्ग और सवारियों का टूटना नहीं जाना १८ युद्ध में घायल पाञ्चालों ने सृञ्जयों समेत वनस्पति के हिलने से भी कर्ण को माना १९ और युद्ध में दौड़ते और अचेत अपने शूरवीरों को भी कर्ण ही माना अर्थात् उससे भयभीत होकर वह भागे २० हे भरतवंशिन्! कर्ण बड़ी शीघ्रता से उन बाणों को छोड़ता पृथक् और भागीहुई सेनाके पीछे दौड़ा २१ महात्मा कर्ण से पृथक्हुए और परस्पर देखनेवाले अचेत होकर वहलोग खड़े होने को भी समर्थ नहीं हुए २२ हे राजन्! कर्ण और द्रोणाचार्य के उत्तम बाणों से

घायल पाञ्चाललोग सब दिशाओंको भागे २३ उसके पीछे राजा युधिष्ठिर अपनी सेना को भगाहुआ देखकर और हटजाने का विचार करके अर्जुन से यह वचन बोला २४ कि धनुषधारी रात्रि के समय सूर्य के समान तपानेवाले बड़े पराक्रमी कर्ण को देखो २५ हे अर्जुन ! कर्ण के शायकों से घायल अनाथों के समान पुकारनेवाले तेरे बान्धवों के यह शब्द वारंवार सुनेजाते हैं २६ हे अर्जुन ! जोकि बाणों के चढ़ाते और छोड़तेहुए इस कर्ण के अन्तर को नहीं देखता हूं इससे निश्चयकरके यह हमारा विनाश करेगा २७ जो यहां समय के अनुसार देर करना देखते हो हे अर्जुन ! अब कर्ण के विषय में जो करना उचित है उसको अवश्य करो २८ हे महाराज ! इसप्रकार युधिष्ठिर के वचनों को सुनकर अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले कि अब राजा युधिष्ठिर कर्ण के पराक्रम से भयभीत हैं २९ ऐसी दशा में आप शीघ्रही समय के अनुसार कर्ण की सेना में वारंवार निश्चय करो अपनी सेना भागीजाती है ३० हे भरतवंशिन् ! द्रोणाचार्य के शायकों से घायल और पृथक् होकर कर्ण से भयभीत सेना के लोगों का नियत होना वर्तमान नहीं है ३१ उसी प्रकार निर्भय के समान घूमते और घायल महारथियों को तीक्ष्णधार बाणों से हटाने वाले कर्ण को देखता हूं ३२ हे वृष्णियों में श्रेष्ठ ! प्रत्यक्ष में इस युद्ध के मुख्य भाग में घूमनेवाले कर्ण के सहने को मैं ऐसे समर्थ नहीं होता हूं जैसे कि चरण के स्पर्श से सर्प के सहने को समर्थ नहीं होसक्के ३३ सो आप शीघ्रही वहां चलो जहांपर महारथी कर्ण हैं हे मधुसूदनजी ! मैं उसको मारूंगा अथवा वही मुझको मारेगा ३४ श्रीवासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन ! मैं बुद्धि से परे पराक्रमी नरोत्तम युद्ध में घूमनेवाले कर्ण को देवराज इन्द्र के समान देखता हूं ३५ हे पुरुषोत्तम, अर्जुन ! तेरे और साक्षात् घटोत्कच के सिवाय युद्ध में इससे सम्मुखता करनेवाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है ३६ हे निष्पाप, महाबाहो ! मैं युद्ध में तबतक तेरी सम्मुखता कर्ण के साथ समय के अनुसार नहीं मानता हूं ३७ जबतक कि बड़ी उल्का के समान प्रकाशमान इन्द्र की शक्ति उसके पास नियत है हे महाबाहो ! यह शक्ति तेरे निमित्त युद्धमें कर्णकी ओरसे ३८ रक्षित कीजाती है और वह भयानक रूप को ध्यान करती है महाबली घटोत्कचही कर्ण के सम्मुख जाय ३९ वह देवता के समान पराक्रमी महाबली भीमसेन से

उत्पन्न हुआ है उसके पास दिव्य राक्षस असुर अस्त्र हैं ४० वह घटोत्कच सदैव तुमपर प्रीतिकरनेवाला और भला चाहनेवाला है और युद्ध में वह निस्सन्देह कर्ण को विजय करेगा ४१ इस प्रकार श्रीकृष्णजी के वचनों को सुनकर महाबाहु कमललोचन अर्जुन ने उस राक्षस को बुलाया और वह आगे आकर प्रकट हुआ ४२ हे राजन् ! फिर वह कवचधारी बाण खड्ग और धनुष हाथ में रखनेवाला घटोत्कच श्रीकृष्ण और पाण्डव अर्जुन को नमस्कार करके ४३ श्रीकृष्णजी से बोला कि हे मधुसूदनजी ! मैं घटोत्कच हूं मुझको आज्ञा दीजिये उसके पीछे हँसतेहुए श्रीकृष्णजी उस प्रकाशितमुख और कुण्डलधारी घटोत्कच से बोले ४४ कि हे पुत्र, घटोत्कच ! जो मैं तुझसे कहता हूं उसको तू समझ अब यह तेरे पराक्रम का समय आपहुँचा है दूसरे का नहीं है ४५ सो तुम डूबतेहुए पाण्डवों की नौका हो तेरे अस्त्र अनेक प्रकार के हैं और तुझ में राक्षसी माया है ४६ हे हिडम्बा के पुत्र ! युद्ध के मुखपर कर्ण के हाथ से पृथक् होनेवाली पाण्डवों की सेना को ऐसे देखो जैसे कि ग्वालियों के हाथ से गौवें होती हैं ४७ यह बड़ा धनुषधारी बुद्धिमान् दृढ़ पराक्रमी कर्ण पाण्डवों की सेनाओं में उत्तम २ क्षत्रियों को मारता है ४८ उस दृढ़ धनुषधारी के बाणों की बड़ी वर्षा होरही है और बाणों की किरणों से पीड़ित शूरवीर उसके सम्मुख खड़े होने को भी समर्थ नहीं होसक्ते हैं ४९ रात्रि के समय कर्ण के बाणों से पीड्यमान वह पाञ्चाल ऐसे भागते हैं जैसे कि सिंह से पीड्यमान मृग भागते हैं ५० हे भयानक पराक्रमी ! तेरे सिवाय दूसरा शूरवीर युद्ध में इस अत्यन्त वृद्धियुक्त कर्ण का रोकनेवाला कोई वर्तमान नहीं है ५१ हे महाबाहो, पुरुषोत्तम ! सो तुम यहां मामा और पिता के तेज बल और अपने योग्य तेज और अस्त्रबल के समान काम करो ५२ हे घटोत्कच ! मनुष्य इसी निमित्त पुत्र को चाहते हैं वह पुत्र क्यों नहीं दुःख से तारेगा इस हेतु से तुम दुःख से पाण्डवों को तारो ५३ हे घटोत्कच ! पितालोग अपने मनोरथ सिद्ध करने के निमित्त ऐसे अपने पुत्र को चाहते हैं जोकि प्रियकारी होकर इस लोक से परलोक में तारते हैं ५४ हे भीमनन्दन ! तुझ पराक्रमपूर्वक लड़नेवाले का अस्त्रबल बड़ा भयानक है और तेरी माया भी कठिनता से तरने के योग्य है ५५ हे शत्रुओं के तपानेवाले ! रात्रि में कर्ण के शायकों से छिन्न भिन्न और धृतराष्ट्र के पुत्रों में डूबनेवाले पाण्डवों

के तुमहीं पार पहुँचानेवाले हो ५६ और रात्रि मेंही राक्षस बड़े पराक्रमी, बल-वान् अजेय शूर और सिंह के समान चढ़ाई करनेवाले होते हैं ५७ । ५८ रात्रि में बड़े धनुषधारी कर्ण को अपनी माया से मारो और पाण्डवलोग जिनमें कि मुख्य धृष्टद्युम्न है वह द्रोणाचार्य को मारेंगे सञ्जय बोले कि शत्रुविजयी वह कौरव अर्जुन भी केशवजी के वचनों को सुनकर घटोत्कच राक्षस से बोला ५६ कि हे घटोत्कच ! तुम और लम्बी भुजावाला सात्यकी और पाण्डव भीमसेन सब सेनाओं में मुझसे प्रशंसनीय और अङ्गीकृत हैं ६० सो तुम कर्ण के सम्मुख होकर रात्रि में द्वैरथ युद्ध करो महारथी सात्यकी तेरा पृष्ठरक्षक होगा ६१ सात्यकी की सहायता से तुम युद्ध में कर्ण को ऐसे मारो जैसे कि पूर्व समय में इन्द्र ने स्वामिकार्त्तिकजी की सहायता से युद्धभूमि में तारकासुर को मारा था ६२ घटोत्कच बोला कि हे भरतवंशिन् ! मैं अकेलाही कर्ण के मारने को समर्थ हूं और द्रोणाचार्य के भी मारने को बहुत हूं और अस्त्रज्ञ महात्मा अन्य शूरवीरों के लिये भी बहुत हूं ६३ अब मैं रात्रि में कर्ण से वह युद्ध करूंगा जिसको मनुष्य तब तक वर्णन करेंगे जब तक कि पृथ्वी नियत रहैगी ६४ राक्षसी धर्म में नियत होकर मैं इस युद्ध में किसी शूरवीर को नहीं छोड़ूंगा न भयभीतों को न हाथ जोड़नेवालों को अर्थात् सबही को विना मारे नहीं छोड़ूंगा ६५ सञ्जय बोले कि शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला महाबाहु घटोत्कच इस प्रकार से कहकर आपकी सेना को भयभीत करता तुमुल युद्ध में कर्ण के सम्मुख गया ६६ हँसते हुए कर्ण ने उस अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रकाशितमुख प्रकाशमान केश रखनेवाले आतेहुए घटोत्कच को रोका ६७ हे नरोत्तम ! युद्ध में गर्जनेवाले उन दोनों राक्षस और कर्णका युद्ध ऐसा हुआ जैसा कि इन्द्र और प्रह्लाद का हुआ था ॥६८॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुस्सप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १७४ ॥

एकसौपचहत्तर का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! इस प्रकार योग्य और कर्ण के मारने के अभि-लाषी कर्ण के रथपर आतेहुए घटोत्कच को देखकर १ वहां आपका पुत्र दुर्यो-धन दुश्शासन से यह वचन बोला कि यह राक्षस युद्ध में कर्ण के पराक्रम को देखकर २ शीघ्रता से कर्ण के सम्मुख आता है सो तुम शीघ्रही उस महारथी को रोको बड़ी सेना से युक्त होकर वहां जावो जहांपर महाबली ३ सूर्य का

पुत्र कर्ण राक्षस के साथ युद्ध करता है हे बड़ाई देनेवाले युद्ध में कुशल सेना को साथ लेकर तुम कर्ण की रक्षा करो ४ नहीं तो भूल से घोर राक्षस कर्ण का विनाश करेगा हे राजन्! इसी अन्तर में जटासुर का बेटा पराक्रमी ५ प्रहार-कर्ताओं में श्रेष्ठ दुर्योधन के पास आकर बोला कि हे दुर्योधन! तेरी आज्ञा पाकर मैं तेरे शत्रु पाण्डव जो कि प्रसिद्ध और युद्ध में दुर्मद हैं उनको उनके सब साथियों समेत मारना चाहता हूं पूर्व समय में मेरा पिता जटासुर नाम राक्षस ६।७ राक्षसों का मारनेवाला कर्म प्रकट करके पाण्डवों के बाणों से गिराया गया शत्रुओंके रुधिर और मांसकी पूजासे उसका बदला चाहता हूं हे राजेन्द्र! मुझको आज्ञादेनेको योग्य हो ८ उसके पीछे प्रसन्न और प्रीतिमान् होकर राजा दुर्योधन वारंवार बोला कि मैं द्रोणाचार्य और कर्ण आदि के साथ शत्रुओं के मारने में पूरा हूं ९ तुम मेरी आज्ञा से जाकर उस राक्षस और मनुष्य से उत्पन्न होनेवाले निर्दयकर्मी घटोत्कच राक्षस को मारो १० सदैव पाण्डवों के शुभ-चिन्तक हाथी घोड़े और रथों के मारनेवाले और आकाश में वर्तमान राक्षस को युद्ध में यमलोक को पहुँचावो ११ उस बड़े शरीरवाले जटासुर के पुत्र ने बहुत अच्छा कहकर भीमसेन के पुत्र घटोत्कच को बुलाकर नानाप्रकार के शस्त्रों से ढकदिया १२ अकेले घटोत्कच ने अलम्बुष कर्ण और कठिनता से तरने के योग्य कौरवीय सेना को ऐसे मथडाला जैसे कि बड़ी वायु बादलों को मथती है १३ उसके पीछे अलम्बुष ने राक्षस की माया और बल को देखकर बड़े २ नानारूपवाले बाणसमूहों से घटोत्कच को घायल किया १४ महाबली राक्षस ने घटोत्कच को बहुत बाणों से छेदकर पाण्डवों की सेना को बाणों की वर्षा से भगाया १५ हे भरतवंशिन्! उसके पीछे उस राक्षस के हाथ से भगीहुई पाण्डवी सेना रात्रि में ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि वायु से आघातित बादल इधर उधर होजाते हैं १६ हे राजन्! इसी प्रकार घटोत्कच के बाणों से घायल आपकी सेना के लोग हज़ारों मशालों को छोड़कर रात्रि में भागे १७ इसके पीछे क्रोधयुक्त अलम्बुष ने घटोत्कच को बड़े युद्ध में दश बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि अंकुश से बड़े हाथी को घायल करते हैं घटोत्कच ने उसके रथसारथी समेत सब शस्त्रों को तिल के समान तोड़ा और अत्यन्त भयानक शब्दों से गर्जा इसके पीछे बाणों के समूहों से कर्ण व दूसरे हज़ारों

कौरव और अलम्बुष पर ऐसी वृष्टि करनेलगा जैसे कि मेरु पर्वत पर बादल बरसता है १८ । २० तब उस राक्षस के हाथ से पीड़ायुक्त कौरवीय सेना इधर उधर पृथक् होगई और परस्पर में पृथक् २ चतुरङ्गिणी सेना का मर्दनकिया२१ हे महाराज ! युद्ध में क्रोधयुक्त रथ और सारथी से रहित अलम्बुष ने घटोत्कच को मुष्टिकाओं से कठिन घायलकिया २२ उसकी मुष्टिकाओं से घायल घटोत्कच ऐसे कम्पित हुआ जैसे भूकम्प होने में गुल्मों के वृक्षों का रखनेवाला पर्वत होता है २३ इसके पीछे उस क्रोधयुक्त घटोत्कच ने परिघ के समान शत्रुओंकी मारने वाली भुजा की मुष्टि से अलम्बुष को अत्यन्त घायल २४ और मथन करके तीव्रता से गिराया और इन्द्रध्वजा के समान रूपवाली दोनों भुजाओं से पृथ्वीपर मर्दन किया २५ अलम्बुषने भी युद्ध में घटोत्कच राक्षस को उठाया और गेरकर क्रोधसे पृथ्वीपर रगड़ा २६ उन बड़े शरीरवाले गर्जनेवाले घटोत्कच और अल-म्बुषका कठिनयुद्ध रोमहर्षण करनेवाला हुआ २७ परस्पर मारनेके अभिलाषी मायाओं से पूर्ण बड़े पराक्रमी दोनों ऐसे युद्ध करनेलगे जैसे कि इन्द्र और बलि ने किया था २८ अग्नि और जल के समूह होकर गरुड़ और तक्षकरूप होकर बादल और बड़ी वायुरूप होकर वज्र और पर्वत होकर २६ हाथी और शार्दूल होकर फिर राहु और सूर्य होकर युद्ध करनेलगे इस प्रकार से सैकड़ों माया करनेवाले परस्पर मारने के इच्छावान् ३० अलम्बुष और घटोत्कच अत्यन्त युद्ध करनेवाले हुए परिघ, गदा, प्रास, मुद्गर, पट्टिश ३१ मूसल और पर्वतों के शिखरों से उन दोनों ने परस्पर घायल किया फिर पदाती रथ सवार बड़े मायावी राक्षसों में श्रेष्ठ वह दोनों घोड़े और हाथियों के साथ युद्ध करनेलगे हे राजन् ! इसके पीछे घटोत्कच अलम्बुष के मारने की इच्छा से ३२ । ३३ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उछला और बाजपक्षी के समान गिरकर बड़े शरीर वाले राक्षसाधिप अलम्बुष को पकड़कर ३४ कुछ ऊंचा उठाकर पृथ्वीपर ऐसा मारा जैसे कि विष्णु ने युद्ध में मयदैत्य को मारा था इसके पीछे बड़े पराक्रमी घटोत्कच ने अपूर्वदर्शन खड्ग को उठाकर उस फड़कते और युद्ध में गर्जते रौद्र राक्षस के शरीर से भयानक रूपवाले भयकारी शिर को ३५।३६ काटा हे महाराज ! रुधिरलिप्त बालोंसमेत शत्रु के उस शिर को लेकर ३७ घटो-त्कच शीघ्रही दुर्योधन के रथ के समीप गया वहां मन्दमुसकान करता वह

राक्षस पास जाकर ३८ भयानकमुख और बालों से युक्त शिर को उसके रथपर डालकर भयानक शब्दों से ऐसे गर्जा जैसे कि वर्षाऋतु में बादल गर्जता है ३६ और फिर दुर्योधन से यह वचन बोला कि यह तेरा बन्धु मरा और तुम ने इसका पराक्रम देखा ४० अब तू कर्ण की और अपनी निष्ठा को देखेगा जो अपने धर्म, अर्थ, काम इन तीनों को चाहता है ४१ खाली हाथ से राजा स्त्री और ब्राह्मण को नहीं देखना योग्य है तू तबतक ही अत्यन्त प्रसन्न होकर नियत रहे जबतक कि मैं कर्णको मारूं ४२ हे राजन्! वह घटोत्कच इस प्रकार से कहकर तीक्ष्णबाणों के समूहों को फैलाता और कर्ण के शिर पर छोड़ता कर्ण के सम्मुख गया ४३ हे महाराज! फिर युद्धभूमि में उस नर और राक्षसका युद्ध घोररूप महाभयानक आश्चर्यकारी हुआ ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणयलम्बुषवधोनामपञ्चसप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १७५ ॥

एकसौछिहत्तर का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, हे सञ्जय! सूर्य का पुत्र कर्ण और घटोत्कच राक्षस जो रात्रि में भिड़े वह युद्ध किस प्रकार से हुआ १ उस राक्षस का कैसा रूप हुआ और उसके घोड़े शस्त्र और रथ कैसे २ थे और उसके घोड़े रथ और ध्वजाओं का प्रमाण कितना २ था उसका कवच कैसा था और आप कैसा था हे सञ्जय! तुमसे मैं पूछता हूं तुम सावधानी से उसको वर्णनकरो ३ सञ्जय बोले कि वह घटोत्कच रक्तनेत्र बड़ा शरीर लालमुख गम्भीरउदर खड़ेरोम शरीर का रङ्ग पीत और पिङ्गलवर्ण हरितडाढ़ी मूछ शङ्ख के समान कान और बड़े २ नख रखने वाला था ४ कानतक फटाहुआ मुख तीक्ष्ण डाढ़ जिसके प्रत्येकभाग महाभयकारी थे बहुत बड़ी लालजिह्वा रक्तहोठ लम्बी भृकुटी मोटीनाक ५ नीला शरीर रक्तग्रीवा पर्वत के समान शरीरवाला बड़ाशरीर शिर और भुजाओं का रखनेवाला महाबली ६ मैला और कठोर शरीरका स्पर्श विकट बद्धपिंडक स्थूल स्फिग गम्भीरनाभि अत्यन्तस्थूल ७ बड़ा मायावी बाजूबन्द आदि हस्तभूषण वाला और जैसे कि पर्वत अग्निमाला को धारण करता है उसीप्रकार छाती पर निष्क को धारण करता ८ और उसका मुकुट स्वर्णमयी रत्नों से चित्रित अनेकरूपों से शोभित तोरणयुक्त नगर के बहिर्द्वाररूप उज्ज्वल मस्तक के ऊपर शोभायमान था ९ बालसूर्य के समान प्रकाशित दो कुण्डल स्वर्णमयीमाला

बड़ाप्रकाशित कांस्य कवच को धारण किये था १० सैकड़ों क्षुद्रघण्टिकाओंसे शब्दायमान रक्तध्वजा पताकाओं से शोभित ऋक्षचर्म से मण्डित और अलंकृत-अङ्ग और चारसौ हाथ लम्बा महाविस्तृत बड़ा रथ ११ सब उत्तम शस्त्रों से युक्त ध्वजाओं की माला रखनेवाला आठ चक्रों से शोभित बादल के समान गम्भीर शब्दवाला रथ था १२ और मतवाले हाथी के समान लालनेत्र भय-कारी पराक्रमी यथेच्छाचारी वर्ण और वेग से युक्त सौघोड़े १३ घोर राक्षस को सवार करते थकावट से रहित विपुलसटा नाम केशों से और स्कन्धों से युक्त वारंवार हींसनेवाले थे उसके सारथी प्रकाशित कुण्डलवाले विरूपाक्ष नाम रा-क्षस ने सूर्य की किरणों के समान रस्सियों से युद्ध में घोड़ों को पकड़ा १४।१५ वह उसके साथ ऐसा नियतहुआ जैसे कि अरुण के साथ सूर्य और बड़ा पर्वत बड़े बादल से चिपटाहुआ होता है १६ और रथपर सूर्य को स्पर्शकरनेवाली बड़ी ध्वजा नियत थी रक्त और उत्तम अङ्गवाला कच्चामांस खानेवाला बड़ा भयानक गृध्र उस ध्वजा में नियत था १७ इन्द्र के वज्र की समान शब्दायमान दृढ़ प्रत्यञ्चावाले और प्रत्यक्ष में बारहहाथ लम्बे धनुष को चलायमान करता १८ रथ के अक्ष के समान बाणों से सब दिशाओं को ढकता उस वीरोंकी नाशकरनेवाली रात्रि में कर्ण के सम्मुख गया उस रथ में नियत धनुषको चलायमान करनेवाले राक्षस के धनुष का शब्द ऐसा सुनागया जैसे कि वज्र का शब्द होता है १६। २० हे भरतवंशिन्! उससे भयभीत आपकी सब सेना ऐसी अत्यन्त कम्पायमान हुई जैसे कि समुद्र की बड़ी २ लहरें हिलती हैं २१ उस भय के करनेवाले भया-नकनेत्र आतेहुए राक्षस को देखकर शीघ्रता करतेहुए मन्दमुसक्यानवाले कर्ण ने रोका २२ उसके पीछे कर्ण बाणों को छोड़ता उसके पास ऐसे गया जैसे कि यूथ का यूथप हाथी श्रेष्ठ हाथी के सम्मुख जाता है २३ हे राजन्! उन दोनों कर्ण और राक्षस का वह युद्ध ऐसा कठिन हुआ जैसे कि इन्द्र और शम्बर दैत्य का हुआ था बड़े बाणों से घायल उनदोनों ने बड़े वेगवान् और भयानक शब्दवाले धनुषों को लेकर परस्पर बाणों से ढकदिया २४। २५ इसके पीछे कानतक खींचकर छोड़ेहुए टेढ़े पर्ववाले बाणों से शरीर के कवचों को काटकर परस्पर रोका २६ जैसे कि दो शार्दूल नखों से और दो बड़े हाथी दाँतों से घायल करते हैं उसी प्रकार उन दोनों ने रथ शक्ति और विशिखनाम बाणों से

परस्पर घायलकिया २७ अङ्गों के काटनेवाले शायकों से छेदनेवाले और बाण रूपी उल्काओं से भस्म करनेवाले वह दोनों कठिनता से देखने के योग्य हुए २८ सब घायल अङ्ग रुधिर से लिप्त वह दोनों ऐसे शोभित हुए जैसे कि धातु के रखनेवाले और जल के छोड़नेवाले दो पर्वत होते हैं २६ बाणों की नोकों से घायलअङ्ग परस्पर छेदनेवाले उपायकर्ता बड़े तेजस्वी उन दोनों ने परस्पर कम्पायमान नहीं किया ३० हे राजन् ! युद्धभूमि में प्राणों के जुआ खेलनेवाले कर्ण और राक्षस का वह जारीहुआ रात्रिका युद्ध बहुत विलम्बतक समान हुआ ३१ तब तीक्ष्णबाणों को चढ़ाते और चढ़ेहुओं को छोड़ते उन दोनों के धनुषों के शब्दों से अपने और दूसरे सबलोग भयभीत हुए ३२ हे महाराज ! जब कर्ण घटोत्कच को नाश न करसका इसके पीछे उस अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ कर्ण ने दिव्य अस्त्र को प्रकटकिया ३३ पाण्डवनन्दन घटोत्कच ने कर्ण के चढ़ायेहुए दिव्य अस्त्र को देखकर महामाया राक्षसी को प्रकट किया ३४ अर्थात् शूल मुद्गर-धारी और पर्वत वृक्षों को हाथ में रखनेवाले बहुत से घोररूप राक्षसों की सेना से संयुक्त हुआ ३५ वह राजालोग उसबड़े धनुष को उठानेवाले उग्र कालदण्ड के धारण करनेवाले यमराज की समान आनेवाले घटोत्कच को देखकर पीड़ावान् हुए ३६ घटोत्कच के कियेहुए सिंहनाद से हाथियों ने मूत्र को छोड़ा और मनुष्य अत्यन्त पीड़ावान् हुए इसके पीछे चारों ओर से महाभयकारी पाषाणों की वर्षाहुई ३७ अर्धरात्रि के समय अधिक बल पराक्रमी होनेवाले राक्षसों की सेना से लोहे के चक्र, भुशुण्डी, शक्ति और तोमर छोड़े गये और शूल शतघ्नी और पट्टिशों के समूह भी गिरते थे हे राजन् ! उस उग्र और बड़े रुद्र युद्ध को देखकर ३८ । ३६ आपके पुत्र और शूरवीरलोग पीड्यमान होकर भागे वहां पर अस्त्रबल में प्रशंसनीय महाअहङ्कारी एक कर्णही पीड्यमान नहीं हुआ ४० फिर कर्ण ने घटोत्कच की उत्पन्न कीहुई माया को बाणों के द्वारा दूर किया फिर माया के नाश होनेपर घटोत्कच ने क्रोध से ४१ घोर बाणों को छोड़ा वह कर्ण के शरीर में प्रवेश करगये अर्थात् उस बड़े युद्ध में कर्ण को छेदकर रुधिर से भरेहुए वह बाण ४२ अत्यन्त क्रोधयुक्त सर्पों के समान पृथ्वी में घुसगये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त हस्तलाघवीय प्रतापवान् कर्णने ४३ घटोत्कच को उल्लङ्घकर दशबाणों से छेदा कर्ण के हाथ से मर्मस्थलों पर अत्यन्त घायल ४४ बहुत

पीड्यमान घटोत्कच ने हज़ार आरा रखनेवाले बड़े दिव्यनेमी के ऊपर क्षुरों से जटित बालसूर्य के समान प्रकाशित मणिरत्नों से अलंकृत चक्र को हाथ में लिया ४५ फिर क्रोधयुक्त भीमसेन के पुत्र ने मारने की इच्छा से कर्ण के ऊपर फेंका बड़े वेग से घुमाया और कर्ण के शायकों से हटाया हुआ ४६ वह चक्र निष्फल होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि प्रारब्धहीन के मन का विचार गिरता है फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने चक्र को गिरायाहुआ देख कर ४७ कर्ण को बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि सूर्य को राहु ढकलेता है भय-जन्य व्याकुलता से रहित रुद्र इन्द्र और विष्णु के समान पराक्रमी कर्ण ने ४८ शीघ्रही घटोत्कच के रथ को बाणों से ढकदिया तब क्रोधयुक्त घटोत्कच ने स्वर्ण-मयी बाजूबन्दवाली गदा को ४९ घुमाकर फेंका वह भी कर्ण के बाणों से आघा-तित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी इसके पीछे बड़ा शरीरधारी घटोत्कच काल मेघ के समान गर्जता ५० अन्तरिक्ष को उछलकर आकाश से वृक्षों की वर्षा करनेलगा तब कर्ण ने उस मायावी भीमसेन के पुत्र को आकाश केही मध्य में ५१ बाणों से ऐसा छेदा जैसे कि सूर्य अपनी किरणों से बादल को छेदता है कर्ण उसके सब घोड़ों को मार रथ के सौ खण्ड करके ५२ वर्षाकरनेवाले बादलों की समान बाणों की वर्षा करनेलगा उसके शरीर में बाणों से विना घायल दो अंगुल का भी कोई स्थान बाकी नहीं रहा ५३ फिर वह एक मुहूर्तही में ऐसा दिखाईदिया जैसे कि काँटों से चिती हुई साही होती है हम ने बाणों के समूहों से गुप्त युद्ध में उसके न घोड़ों को न रथ को न ध्वजा को और न घटोत्कच को देखा फिर कर्ण के दिव्यअस्त्र को अपने अस्त्र से काटता ५४ । ५५ वह मायावी राक्षस मायायुद्ध के द्वारा कर्ण से लड़ा अर्थात् अपनी माया की तीव्रता से कर्ण से युद्ध करनेवाला हुआ ५६ आकाश में दिखाई न देनेवाले बाणों के जाल गिरे हे भरतवंशिन् ! वह बड़ी माया का जाननेवाला ५७ बड़े शरीरवाला घटोत्कच माया से मोहित करता भ्रमण करनेलगा उसने भयानकरूप और मुखों को अशुभ करके ५८ माया से कर्ण के दिव्यअस्त्रों को ग्रसा फिर भी बड़े शरीर-वाला और युद्ध में अनेक प्रकारों से टूटेअङ्ग ५९ विना पराक्रम और साहस के आकाश से गिराहुआ दिखाई पड़ा कौरवों में श्रेष्ठलोग उसको मृतक मानकर गर्जे ६० फिर दूसरे नवीन शरीरों से सब दिशाओं में दृष्टिगोचर हुआ तब भी

महाबाहु बड़ा शरीर सौ शिर और सौही पेट रखनेवाला दिखाई दिया ६१ फिर मैनाक पर्वत के समान दिखाई पड़ा तदनन्तर वह राक्षस मनुष्य के अंगुष्ठ के समान होकर ६२ समुद्र की लहरों के समान उठाहुआ तिरछा और ऊंचा वर्तमान हुआ और पृथ्वी को फाड़कर फिर जलों में डूबगया ६३ इसके पीछे जल में तैरता हुआ दूसरे स्थान में दिखाई पड़ा और जल से निकलकर सुवर्ण के दो रथों पर नियत हुआ ६४ वह कवच और कुण्डलधारी पृथ्वी आकाश और दिशाओं की माला से प्राप्त होकर कर्ण के रथ के पास जाके घूमनेलगा ६५ हे राजन्! फिर भयजन्य व्याकुलता से रहित होकर कर्ण से यह वचन बोला हे सूत के पुत्र! नियत हो अब मेरे हाथ से जीवता कहां जायगा ६६ अब मैं युद्धभूमि में तेरे युद्ध के उत्साह को नाश करूंगा क्रोध से रक्तनेत्र कठिन पराक्रमी राक्षस यह कहकर ६७ अन्तरिक्षमें उछलकर बड़े वेगसे हँसा और कर्ण को ऐसे घायल किया जैसे कि केशरी गजेन्द्र को करता है ६८ वह घटोत्कच रथ के अक्ष के समान बाणों से रथियों में श्रेष्ठ कर्ण पर ऐसे वर्षा करनेलगा जैसे कि बादल धाराओं से वर्षा करता है ६९ कर्ण ने उस प्रकट होनेवाली बाणवृष्टि को दूरही से काटा हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! इसके अनन्तर कर्ण से पृथक् की हुई माया को देखकर ७० अन्तर्धान होनेवाले घटोत्कच ने फिर माया को उत्पन्न किया अर्थात् वह ऐसा ऊंचा और वृक्षों से पूर्ण शिखर रखनेवाला पर्वत होगया ७१ जोकि शूल, प्रास, खड्ग और मूसलरूपी बड़े जल के झिरनाओं का रखनेवाला था वह कर्ण उस कज्जल समूह के समान और प्रहारों से भयानक शस्त्रों के सहनेवाले पर्वत को देखकर व्याकुल नहीं हुआ इसके पीछे मन्द मुसकान करते कर्ण ने दिव्य अस्त्र को प्रकट किया ७२ । ७३ फिर अस्त्रसे घायल उस गिरिराज ने नाश को पाया फिर उस उग्ररूप ने इन्द्रधनुष रखनेवाला नीलाबादल होकर ७४ पाषाण की वृष्टि से कर्ण को ढकदिया तब सूर्य के पुत्र अस्त्रज्ञ कर्णने वायुअस्त्र को धनुषपर चढ़ाकर ७५ उस कालमेघको छिन्न भिन्न किया हे महाराज! उस कर्ण ने बाणजालों से सब दिशाओं को ढककर ७६ घटोत्कच के चलायेहुए अस्त्र को विनाश किया इसके पीछे भीमसेन के पुत्र महाबली ने युद्ध में अत्यन्त हँसकर ७७ महारथी कर्ण के ऊपर बड़ी माया को प्रकट किया उस रथियों में श्रेष्ठ व्याकुलता से रहित रथ की सवारी से

फिर आतेहुए घटोत्कच को जोकि सिंह और शार्दूल के समान मतवाले हाथी के समान पराक्रमी हाथी के सवार रथसवार अश्वसवार और नानाप्रकार के शस्त्रधारी और अनेकभांति के भूषणधारी निर्दयी बहुत से राक्षसों से ७८।८० संयुक्त था देखकर बड़े धनुषधारी कर्ण ने युद्ध किया ८१ इसके पीछे घटोत्कच ने कर्ण को पांच बाणों से घायलकरके सब राजाओं को डराते और गर्जते हुए अंजुलिक नाम बाणों से बाण समूहों समेत कर्ण के हाथ में नियत धनुष को काटा ८२। ८३ तब कर्ण ने दृढ़भार सहनेवाले इन्द्रधनुष के समान ऊंचे बड़े धनुष को लेकर बल से खैंचा ८४ और उस सुनहरी पुङ्ख शत्रुहन्ता आकाशचारी शायकों को राक्षसों के ऊपर फेंका ८५ बड़े छातेवाले राक्षसों का वह समूह बाणों से ऐसा पीड्यमान हुआ जैसे कि जङ्गली हाथियों का समूह सिंह से पीड़ित और व्याकुल होता है ८६ उस समर्थ ने बाणों से राक्षसों को घोड़े सारथी और हाथियों समेत ऐसे भस्म करदिया जैसे कि भगवान् अग्नि प्रलयकाल में जीवधारियों को भस्म करते हैं ८७ फिर वह सूतनन्दन कर्ण राक्षसों को मारकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व समय में देवता महेश्वरजी त्रिपुर को भस्मीभूत करके स्वर्ग में शोभित हुए थे ८८ हे श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र ! उन हजारों राजा और पाण्डवों के मध्य में कोई भी इस कर्ण के देखने को समर्थ नहीं हुआ ८९ हे राजन् ! महाबली भयानक और पराक्रमयुक्त यमराज के समान क्रोधयुक्त राक्षसों के राजा घटोत्कच के सिवाय कोई भी देखने को समर्थ नहीं हुआ ९० उस समय उस क्रोधयुक्त के नेत्रों से ऐसे अग्नि उत्पन्न हुई जैसे कि बड़ी मशालों से ज्वलितरूप तेल की बूंदें उत्पन्न होती हैं हथेली को हथेली से मसलकर दाँतों की पंक्ति को काटकर ९१ हाथी के समान पिशाचों के से मुख रखनेवाले खचरों से युक्त माया से रचेहुए रथपर सवार होकर ९२ क्रोधयुक्त घटोत्कच सारथी से यह वचन बोला कि मुझको कर्ण के सम्मुख लेचल उस रथियों में श्रेष्ठ ने घोररूप रथ की सवारी से ९३ कर्ण के साथ फिर द्वैरथ युद्ध को किया हे राजन् ! फिर क्रोधयुक्त राक्षसने उस महाअशनि नामको कर्ण के ऊपर फेंका ९४ जोकि आठचक्र रखनेवाले शिवजी से उत्पन्न दो योजन ऊंची और एक योजन लम्बी चौड़ी ९५ लोहेकी बनी शूलों से ऐसी जटित थी जैसे कि केसरों से कदम्ब का वृक्ष होता है कर्ण ने बड़े धनुष को रख रथ से उतर

कर अशनीको पकड़कर ६६ उलटाकर उसके ऊपर छोड़ा उसको उलटा आता देखकर वह राक्षस रथसे उतरगया तब वह बड़ी प्रकाशित अशनी घोड़े सारथी और ध्वजासमेत रथ को धूलि में मिलाकर ९७ पृथ्वी को छेदकर प्रवेश करगई वहां देवताओंने बड़े आश्चर्य को पाया फिर सब जीवों ने शीघ्रता से कर्ण को पूजा ९८ जो रथ से उतरकर देवता की रचीहुई महाअशनि को पकड़ लिया कर्ण युद्धमें इसप्रकारके कर्म को करके फिर रथपर सवारहुआ ९९ हे बड़ाई देने वाले! फिर शत्रुसन्तापी कर्णने नाराचों को छोड़ा हे राजन्! कर्णने सब जीव-धारियों के मध्य में दूसरे से असम्भव और करने के अयोग्य कर्म को १०० उस भयानक दर्शनवाले युद्ध में किया जैसे कि पर्वत धाराओं से घायल होता है उसी प्रकार बाणों से घायल १०१ गन्धर्वनगरके रूप वह राक्षस फिर अन्तर्धान होगया इसप्रकार उस शत्रुके मारनेवाले राक्षस की माया से अस्त्रों के नाशवान् होनेपर १०२। १०३ व्याकुलता से रहित कर्ण उस राक्षससे युद्ध करनेलगा हे महाराज! इसके पीछे क्रोधयुक्त महाबली १०४ महारथियों के मारनेवाले घटोत्कच ने अपने को अनेक रूपवाला किया फिर दिशाओं से सिंह व्याघ्र और तरक्षुरूपों से दौड़ा १०५ अग्नि की समान जिह्वा रखनेवाले सर्प और लोहे के मुखवाले पक्षी भी कर्ण के धनुष से गिरेहुए विशिखों करके कीर्य-माण १०६ नागराज के समान कठिनता से देखने के योग्य राक्षस उसी स्थान पर अन्तर्धान होगया राक्षस पिशाच यातुधान १०७ और भयानकमुख बहुत से बन्दर शृगाल भेड़िये आदिक सब जीव कर्ण के मारने के इच्छावान् सब ओर से सम्मुख दौड़े १०८ तब भयानक वचन रुधिर से तर घोररूप बहुत से उठायेहुए शस्त्रों से भी उसको भयभीत किया १०९ कर्ण ने उन्हों के मध्य में प्रत्येक को बहुत शायकों से घायल किया फिर दिव्य अस्त्र से उस राक्षसी माया को दूर करके ११० टेढ़े पर्ववाले बाणों से उसके घोड़ों को मारा शायकों से घायल टूटेअङ्ग पृष्ठवाले वह घोड़े १११ उस राक्षस के देखते हुए पृथ्वीपर गिर-पड़े तब नाश हुई मायावाला घटोत्कच सूर्य के पुत्र कर्ण से यह बात कहकर कि तेरी मृत्यु उत्पन्न करता हूं अन्तर्धान होगया॥ ११२॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपट्सप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १७६॥

एकसौसतहत्तर का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, इस प्रकार उस राक्षस और कर्ण के युद्ध वर्तमान होने पर अलायुध नाम महापराक्रमी राक्षसों का राजा १ भयङ्कर रूपवाले हजारों राक्षसों से युक्त बड़ी सेना समेत आया २ नाना प्रकारके रूप धारण करनेवाले वीरों समेत पूर्व की शत्रुता को याद करता हुआ दुर्योधन के पास आया उसकी जातिवाला पराक्रमी ब्राह्मणों का भोजन करनेवाला बकनाम राक्षस मारा गया ३ तब बड़ा तेजस्वी किर्मीर और हिडम्ब भी मारागया सो बहुतकाल से मन में पुरानी शत्रुता को स्मरण करता ४ और इस रात्रि के युद्ध को जानकर युद्ध में भीमसेन को मारने का अभिलाषी हाथी के समान मतवाला सर्प के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह राक्षस ५ युद्धोत्सुक होकर दुर्योधन से यह वचन बोला कि हे महाराज! तुमको विदित है कि जिस प्रकार भीमसेन के हाथ से हिडम्ब, बक और किर्मीर नाम तीनों मेरे बांधव राक्षस मारेगये और पूर्व समय में हिडम्बानाम कन्या को हरण किया फिर ६ । ७ हमको और अन्य राक्षसोंको तिरस्कार करके दूसरी बात क्या कहें हे राजन्! मैं आप उस हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच को हाथी घोड़े रथ और मन्त्रियों समेत मारने को आया हूं अब मैं कुन्ती के सब पुत्र जिनमें अग्रगामी वासुदेवजी हैं ८ । ९ उनको मारकर उनके सब पीछे चलनेवालों को भी भक्षण करूंगा सब सेना को रोकदो हम पाण्डवों से लड़ेंगे १० उसके इस वचनको सुनकर प्रसन्नचित्त भाइयोंसमेत दुर्योधन उसको अङ्गीकार करके यह वचन बोला ११ कि हम तुझको आगे करके सब सेनासमेत शत्रुओंसे युद्ध करेंगे शत्रुता की समाप्ति में प्रवृत्तचित्त मेरे सेना के लोग नियत नहीं होंगे १२ ऐसाही होय ऐसा राजासे कहकर वह राक्षसों में श्रेष्ठ अलायुध शीघ्रही मनुष्योंके भक्षण करनेवाले राक्षसोंको साथ में लेकर घटोत्कच से लड़ने को १३ उस प्रकार के प्रकाशित अग्नि के समान तेजस्वी रथ की सवारी से घटोत्कच के सम्मुखगया हे राजन्! जैसी सवारी से कि घटोत्कच युद्धभूमि में वर्तमान था १४ वैसाही उसका भी बड़ारथ बड़े शब्दवाला बहुत सी तोरणों से चित्रित रीछ के चर्म से अलंकृतअङ्ग और चार सौ हाथ का लम्बा था १५ उसके घोड़े भी शीघ्रगामी हाथी के समान शरीर गधे के समान शब्द

वाले मांस रुधिर के भोजन करनेवाले बड़े शरीरों से युक्त संख्या में सौ रथ में वर्तमान थे १६ उसके रथका शब्द बड़े बादल के समान और बड़ा धनुष दृढ़ प्रत्यञ्चा वाला सुवर्ण से जटित था १७ बाण भी उसके रथ के अक्ष की समान सुनहरी पुङ्खयुक्त तीक्ष्णधार थे वह वीर सब प्रकार से उस वीर महाबाहु घटोत्कच केही समान था १८ उसकी भी ध्वजा अग्नि सूर्य के समान शृगालों के समूहों से रक्षित थी वह भी घटोत्कच के रूप से अधिक शोभायमान महाविस्तृत प्रकाशमान मुखवाला था १९ प्रकाशमान बाजू मुकुट और मालाधारी वेष्टनयुक्त खड्ग,गदा,भुशुण्डी,मूसल, हल और धनुष का रखनेवाला होकर हाथी के समान शरीरवाला था २० तब वह उस अग्नि के समान प्रकाशित अपने रथ की सवारी से उस पाण्डवीय सेना को भगाता युद्ध में वर्तमान होकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बिजलियों की माला रखनेवाला बादल अन्तरिक्ष में शोभित होता है २१ हे राजन्! सब में अत्यन्त श्रेष्ठ महाबली कवचधारी ढाल बाँधेहुए प्रसन्नचित्त वह शूरवीर भी सब ओर से उसके साथ युद्ध करनेलगे ॥ २२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तसप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १७७ ॥

एकसौअठहत्तर का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, सब कौरवों ने उस भयानककर्मी युद्ध में आतेहुए राक्षस को देखकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त की १ इसी प्रकार दुर्योधन जिनमें मुख्य हैं वह आपके पुत्र नौका से रहित के समान फिर नौका को पाकर समुद्र को तरने के अभिलाषी हुए २ अपने को द्वितीय जन्म पानेवाला मानकर उन पुरुषोत्तमों ने राक्षसों के राजा अलायुध को बड़ी श्लाघाओं के वचनों से पूजा ३ उस बड़े भयानक बुद्धि से बाहर युद्ध के वर्तमान होनेपर कर्ण और राक्षस के रात्रि के भयकारी युद्ध को ४ आश्चर्य करनेवाले पाञ्चालों ने अन्य राजाओं समेत देखा और इसी प्रकार आपके अश्वत्थामा द्रोणाचार्य कृपाचार्य आदिक शूरवीर भी युद्धभूमि में उस घटोत्कच के कर्म को देखकर पुकारे और भय से महाव्याकुल हुए ५ । ६ हे महाराज! आपकी सब सेना के लोग व्याकुल हाहाकाररूप और अचेत होकर कर्ण के जीवन में निराश हुए ७ फिर दुर्योधन बड़ी पीड़ापानेवाले कर्ण को देखकर राक्षसों के राजा अलायुध को बुलाकर यह वचन बोला ८ कि यह सूर्य का पुत्र कर्ण हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच के साथ भिड़ाहुआ युद्ध में

उस बड़े कर्म को करता है जोकि इसके योग्य है ६ घटोत्कच के हाथ से मारेहुए और नाना प्रकार के शस्त्रों से घायल शूर राजाओं को ऐसे देखो जैसे कि हाथी से उखाड़ेहुए वृक्षों को देखते हैं मैंने युद्ध में राजाओं के मध्य में तेरे विचार से तेराही भाग विचार किया है तुम पराक्रम करके उसको मारो १० । ११ हे शत्रुविजयिन्, अलायुध ! यह पापी घटोत्कच माया के बल में आश्रित होकर सूर्य के पुत्र कर्ण को सब के आगे पराजित करता है १२ राजा के इस वचन को सुनकर वह भयभीत पराक्रमी महाबाहु राक्षस उसके वचन को स्वीकार करके घटोत्कच के सम्मुख गया १३ हे प्रभो ! उसके पीछे भीमसेन के पुत्र घटोत्कच ने भी कर्ण को छोड़कर सम्मुख आतेहुए शत्रु को बाणों से मर्दन किया १४ फिर उन दोनों राक्षसाधिपों का ऐसा उत्तम भयकारी युद्ध हुआ जैसे कि हथिनी के लिये दो मतवाले हाथियों का युद्ध होता है १५ राक्षससे छुटाहुआ रथियों में श्रेष्ठ कर्ण भी सूर्य के समान प्रकाशित रथ की सवारी से भीमसेन के सम्मुख गया १६ जैसे कि सिंह बैल को अपने वशीभूत करता है उसी प्रकार अलायुध से ग्रसेहुए घटोत्कच को देखकर उस आतेहुए कर्ण को उल्लङ्घनकरके १७ प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीमसेन सूर्य के समान प्रकाशित रथ की सवारी से बाणसमूहों को फेंकता अलायुध के रथ के समीप गया १८ हे प्रभो ! तब उस अलायुध ने उस आतेहुए को देखके घटोत्कच को छोड़कर भीमसेन को बुलाया १९ फिर राक्षसोंके नाश करनेवाले भीमसेनने अकस्मात् सम्मुख जाकर उस राक्षसों के राजा को उसके सब साथी और सेनासमेत बाणों की वर्षा से ढकदिया २० हे शत्रुविजयिन्, राजन् ! उसी प्रकार अलायुध भी साफ और सीधे चलनेवाले बाणोंसे भीमसेनके ऊपर वारंवार वर्षा करनेलगा २१ उसी प्रकार नानाप्रकार के प्रहार करनेवाले भयानकरूप और आपके पुत्रों की विजय चाहनेवाले वह सब राक्षस भी भीमसेन के सम्मुख गये २२ बहुत बाणों से घायल उस महाबली भीमसेनने पांच २ तीक्ष्ण बाणों से उन सब को छेदा २३ भीमसेन के हाथ से घायल वह निर्दयबुद्धि राक्षस कठिन शब्दोंसे गर्जना करतेहुए दशों दिशाओं को भागे २४ भीमसेन से भयभीत उस बड़ी सेना को देखकर राक्षसने बड़ेवेग से सम्मुख जाकर बाणोंसे भीमसेनको ढकदिया २५ भीमसेनने फिर उस राक्षस को तीक्ष्ण नोकवाले बाणोंसे घायल किया फिर अलायुधने उन भीमसेनके च-

लायेहुए कितनेही विशिखों को युद्ध में काटा २६ और युद्ध में बड़ी शीघ्रता सेही कितनोंही को पकड़लिया भयानक पराक्रमी भीमसेन ने उस राक्षसों के राजा को देखकर २७ वज्रके समान गिरनेवाली गदाको फेंका उस ज्वालायुक्त वेग से आतीहुई गदा को उसने गदा सेही घातितकिया और वह गदा भीमसेन केही ओर गई उस कुन्तीके पुत्र भीमसेनने राक्षसाधिपको बाणों की वर्षा से ढकदिया २८।२९ राक्षस ने तीक्ष्णबाणों से उसके उन बाणों को भी निष्फल किया रात्रि में भयानकरूप सब राक्षसों ने भी ३० अपने राजा की आज्ञा से रथ और हाथियोंको मारा राक्षसों से अत्यन्त पीड़ावान् पाञ्चाल, सृंजयी घोड़े और हाथियों ने ३१ वहां शान्तिको नहीं पाया फिर उस महाघोर बड़ेभारी युद्ध को देखकर ३२ कमललोचन श्रीकृष्णजी अर्जुन से यह वचन बोले कि राक्षसों के राजा के आधीन हुए भीमसेन को देखो ३३ हे पाण्डव, अर्जुन! तुम इसके पीछे चलो विचार न करो धृष्टद्युम्न शिखण्डी युधामन्यु उत्तमौजा ३४ और द्रौपदी के पुत्र सब महारथी यह सब साथ होकर कर्ण के सम्मुख जावो पराक्रमी सात्यकी, नकुल और सहदेव ३५ तेरी आज्ञासे अन्य राक्षसों को मारें और हे महाबाहो, नरोत्तम, अर्जुन! तुम भी इस सेना को जिनके कि अग्रगामी द्रोणाचार्य हैं हटावो ३६ बड़ाभय उत्पन्न हुआ इस प्रकार श्रीकृष्णजी के कहने पर आज्ञा पाये हुए महारथी ३७ युद्धमें सूर्यके पुत्र कर्ण और उन राक्षसों के सम्मुख गये इसके पीछे प्रतापवान् राक्षसाधिप ने कानतक खैंचेहुए और विषैले सर्प की समान बाणों से ३८ भीमसेन के धनुष को काटकर उसके सारथीसमेत घोड़ोंको भीमसेन के देखतेहुए युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से मारा ३९ फिर मृतक घोड़े और सारथीवाले भीमसेन ने रथ से उतरकर ४० गर्जना करके महाभारी घोर गदा को उसके ऊपर छोड़ा उस भयकारी शब्दवाली आतीहुई बड़ी गदा को ४१ उस घोर राक्षस ने गदाही से ताड़ित किया और गर्जना करी राक्षसाधिप के उस घोर और भयकारी कर्म को देखकर ४२ प्रसन्नचित्त भीमसेन ने शीघ्रही गदा को पकड़ा तब गदा के आघातों से पृथ्वी को अत्यन्त कँपानेवाले उन नर और राक्षस का महाघोर कठिन युद्ध हुआ फिर गदा को त्याग करनेवाले उन दोनों ने परस्पर सम्मुख होकर ४३। ४४ वज्र के समान शब्दायमान बमों से परस्पर घायल किया इसके पीछे उन दोनों ने महाक्रोधित होकर इन

आगे लिखीहुई रथ चक्र,युग,अक्ष और अधिष्ठानआदि समीप वर्तमान वस्तुओं से परस्पर सम्मुख होकर घायल किया फिर रुधिर को डालतेहुए उन दोनों ने सम्मुख होकर ४५ । ४६ मतवाले हाथियों के समान वारंवार परस्पर खैंचा पाण्डवोंकी वृद्धि के चाहनेवाले इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी ने उसको देखा ४७ उन्हों ने भीमसेन की रक्षा के निमित्त घटोत्कचको प्रेरणा करी ॥ ४८ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टसप्तत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १७८ ॥

एकसौउनासी का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन् ! युद्ध में राक्षस से ग्रसेहुए भीमसेन को समीपसे देखकर श्रीकृष्णजी घटोत्कच से यह वचन बोले १ हे महाबाहो, हे महा तेजस्विन् ! सब सेना के और अपने देखते युद्ध में राक्षस से ग्रसेहुए भीमसेन को देखो २ हे महाबाहो ! तुम कर्ण को छोड़कर राक्षसों के राजा अलायुध को मारो इसके पीछे कर्ण को मारोगे ३ वह पराक्रमी घटोत्कच वासुदेवजी के वचन को सुनकर कर्ण को त्यागकर बकासुर के भाई राक्षसाधिप से युद्ध करने लगा ४ हे भरतवंशिन् ! उन दोनों अलायुध और घटोत्कच राक्षसों का युद्ध रात्रि में अत्यन्त कठिन हुआ ५ अलायुध के शूरवीर राक्षस जोकि भयानक-दर्शन शूर धनुषधारी वेग से आये थे उनको ६ शस्त्रों के उठानेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त महारथी सात्यकी नकुल और सहदेव ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से छेदा ७ और सब ओर से बाणों को छोड़ते मुकुटधारी अर्जुन ने सब उत्तम २ क्षत्रियों को युद्ध में से हटाया ८ हे राजन् ! कर्ण ने युद्ध में धृष्टद्युम्न और शिखण्डी आदिक पाञ्चालों के महारथियों को अन्य राजाओं समेत भगाया ९ भयानक पराक्रमी भीमसेन उन घायलों को देखकर युद्ध में विशिखनाम बाणों को छोड़ता शीघ्रही कर्ण के सम्मुख गया १० उसके पीछे वह महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी भी राक्षसोंको मारकर वहां आये जहांपर कि कर्ण था ११ उन्हों ने कर्ण से युद्ध किया और पाञ्चालों ने द्रोणाचार्य से फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अलायुधने शत्रुविजयी घटोत्कचको बहुत बड़ी परिघ से मस्तकपर घायल किया १२ फिर उस पराक्रमी महाबली घटोत्कच ने उस प्रहार से थोड़ी मूर्च्छा में होकर अपने शरीर को नियत किया १३ और प्रकाशित अग्निके समान सौ घण्टे रखनेवाली सुवर्णजटित अलंकृत गदा को युद्ध में उसके ऊपर फेंका १४

भयानककर्मी राक्षस के हाथ से छुटीहुई बड़े शब्दवाली उस गदा ने वेग से उसके रथ सारथी और घोड़ों को चूर्ण किया १५ फिर वह राक्षसी माया में नियत होकर उस मृतक सारथी घोड़े और टूटे अक्ष ध्वजा चक्रवाले रथ से शीघ्रही उछला १६ और माया में प्रवृत्त होकर बहुत रुधिर बरसाया तब आकाश बिजली से प्रकाशित और सघन बादलों से पूर्ण होगया १७ इसके अनन्तर बिजली समेत वज्र का गिरना और बिजली के साथ गर्जना उत्पन्नहोना और बड़ा चटचटाकार शब्द हुआ १८ हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच ने उस राक्षस की प्रबल माया को देखकर पृथ्वी से आकाशमें उछलकर उस माया को मायाही से नाश किया १९ उस मायावी राक्षस ने अपनी मायाको मायाही से नाश हुआ देखकर अत्यन्त कठोर पाषाणों की वर्षा को घटोत्कच के ऊपर किया २० उस पराक्रमी ने उस घोर पाषाण वर्षा को वर्षाही से नाश किया वह आश्चर्य सा हुआ २१ इसके पीछे नाना प्रकार के शस्त्रों से एक ने दूसरों पर वर्षाकरी लोहे की परिघ, शूल,गदा, मूसल, मुद्गर २२ पिनाक, करवाल, तोमर, प्रास, कम्पन, तीक्ष्णधार नाराच, भल्ल,चक्र,फरसे, अयोगूढ़, भिन्दिपाल,गोशीर्ष,उलूखल २३ और उखाड़ेहुए बड़ी शाखावाले नानावृक्ष शमी, पीलु, कदम्ब, चम्पक २४ अंगुद, बदरी, कोविदार, फूलेहुए पलाश, अरिमेद, प्लक्ष, न्यग्रोध, पिप्पल इन बड़े २ वृक्षों से भी युद्ध में परस्पर घायल किया और नाना प्रकार की धातुओं से चितेहुए बड़े २ शिखरों से परस्पर घायलकिया २५।२६ हे राजन्! उनके ऐसे महाशब्द हुए जैसे कि टूटनेवाले वज्रों के शब्द होते हैं उस घटोत्कच और अलायुध का ऐसा घोर युद्ध हुआ २७ जैसे कि पूर्व समय में वानरों के महाराज वालि और सुग्रीव का युद्ध हुआ था वह दोनों नाना प्रकार के घोर शस्त्र और विशिखोंसे युद्ध करके तीक्ष्ण खड्गों को लेकर परस्पर सम्मुख हुए २८ उन बड़े बलवान् और बड़े शरीरवालों ने परस्पर में सम्मुख जाकर भुजाओं से शिर के बालों को पकड़ा २९ हे राजन्! उन ऊष्माभरे शरीर से दोनों ने पसीना और रुधिर को ऐसे गिराया जैसे कि कठिन वर्षा करनेवाले दो बादल वर्षा करते हैं ३० इसके पीछे घटोत्कचने वेगसे गेरकर उस राक्षस को अत्यन्त घुमाकर बल से पृथ्वी पर पटककर उसके बड़े शिर को काटा ३१ तब वह बड़ा पराक्रमी कुण्डलों से अलंकृत उसके शिर को लेकर कठिन शब्द से गर्जा ३२

पाञ्चालदेशीय और पाण्डव उस शत्रुविजयी घटोत्कचसे वकासुर के जातिवाले बड़े शरीरवाले राक्षस को मराहुआ देखकर सिंहनादों से गर्जे ३३ इसके पीछे युद्धमें राक्षस के मरनेपर पाण्डवीय शूरवीरों ने हज़ारों भेरी और अयुतों शंखों को बजाया उन्हों की वह रात्रि चारोंओरसे दीपमाला रखनेवाली अत्यन्त प्रकाशमान विजय की देनेवाली महाशोभायमान हुई ३४ । ३५ फिर महाबली घटोत्कच ने निर्जीव अलायुध के शिरको दुर्योधन के सम्मुख फेंका ३६ हे भरतवंशिन् ! राजा दुर्योधन अलायुधको मराहुआ देखकर सेनासमेत अत्यन्त व्याकुल हुआ ३७ बड़ी शत्रुता को स्मरण करके उस राक्षस ने अपने आप आकर उसके साथ प्रतिज्ञा करी थी कि मैं भीमसेन को मारूंगा ३८ और राजा दुर्योधन ने यह माना था कि इसके हाथ से अवश्य भीमसेन मारने के योग्य है और भाइयों के जीवन को भी बहुत कालतक माना ३९ उसने भीमसेन के पुत्र के हाथ से निश्चय मराहुआ देखकर भीमसेन की प्रतिज्ञा को पूर्ण होना माना ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोनाशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १७९ ॥

एकसौअस्सी का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, अत्यन्त प्रसन्नमन घटोत्कच अलायुध राक्षस को मारकर आपकी सेना के समक्ष में नाना प्रकार के शब्दों से गर्जा १ हे महाराज ! उसके उस कठोर शब्द को जोकि हाथियों को भी कम्पायमान करनेवाला था सुनकर आप के शूरवीरों को बड़ा कठिन भय उत्पन्न हुआ २ महाबाहु कर्ण अलायुध से भिड़ेहुए महाबली घटोत्कच को देखकर पाञ्चालों के सम्मुख गया ३ और दृढ़ टेढ़े पर्ववाले कानतक खैंचेहुए दश बाणों से धृष्टद्युम्न और शिखण्डी को छेदा ४ इसके पीछे नाराचनाम उत्तम बाणों से महारथी सात्यकी युधामन्यु और उत्तमौजा को कम्पायमान किया ५ हे राजन् ! युद्ध में उन सब धनुषधारियों के दाहिने और बायें धनुषमण्डल दिखाईदिये ६ रात्रि में उन्हों की प्रत्यञ्चा तल और रथनेमियों के शब्द ऐसे कठोरहुए जैसे कि वर्षाऋतु में बादलों के शब्द होते हैं ७ उस समय जीवा धनुष और रथ की नेमियों के शब्दरूप गर्जनायुक्त बादल धनुषरूप विद्युन्मण्डल पताकारूप सुन्दर रङ्गवाला समूह बाणसमूहरूपी वर्षा का बरसनेवाला युद्धरूपी बादल प्रकट हुआ ८ हे महाराज ! शत्रुओं के समूहों के मर्दन करनेवाले बड़े पर्वत के समान पराक्रमी कर्ण ने उस अपूर्व

पर्वत के समान अकम्पित होकर वर्षा का नाश किया ९ इसके पीछे आपके पुत्र की वृद्धि में प्रवृत्त महात्मा कर्ण ने युद्ध में वज्रपात के समान सुनहरी और अद्भुत पुङ्ख रखनेवाले बड़े तीक्ष्ण बाणों से शत्रुओं को घायल किया १० कर्ण के हाथ से कितनेही टूटी ध्वजा कितनेही बाणों से पीड़ित घायल शरीरवाले और कितनेही सारथी और घोड़ों से रहित होगये ११ इसके पीछे युद्ध में कल्याण को न पानेवाले वह लोग युधिष्ठिर की सेना में चलेगये घटोत्कचने उन को छिन्नभिन्न और मुख फेरनेवाला देखकर अत्यन्त क्रोधकिया १२ अर्थात् उस सुवर्ण और रत्नों से जटित उत्तम रथपर सवार होकर सिंह के समान गर्जा और सूर्य के पुत्र कर्ण को सम्मुख होकर वज्र की समान बाणों से घायल किया १३ उन दोनों ने करणी, नाराच, शिलीमुख, नालीक, दण्डासन, वत्सदन्त, वराहकर्ण, विपाट, शृङ्ग और क्षुरप्र की वर्षाओं से आकाश को शब्दायमान किया १४ बाणों की वर्षा से पूर्ण और तिरछे चलनेवाले सुनहरी पुङ्ख ज्वालारूप प्रकाशवाले अपूर्व फूल रखनेवाले बाणों से पूर्ण अन्तरिक्ष ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि सृष्टि के जीवों से होता है १५ उन दोनों सावधान और अनुपम प्रभाववालों ने उत्तम अस्त्रों से परस्पर घायल किया उन दोनों उत्तम वीरों की मुख्यता को उसयुद्ध में किसी ने भी नहीं देखा १६ उन सूर्य के और भीमसेन के पुत्रों का युद्ध अत्यन्त अपूर्व अनुपम व्याकुलतापूर्वक शस्त्रों के गिरने का ऐसा हुआ जैसे कि स्वर्ग में राहु और सूर्य का युद्ध कठिन गरमी से संयुक्त होता है १७ सञ्जय बोले कि हे राजन्! जब घटोत्कच को कर्ण नहीं मारसका तब उस महाअस्त्रज्ञ ने उग्रअस्त्र को प्रकट किया १८ उस अस्त्र से उसके रथ सारथी और घोड़ोंको मारा रथसे रहित घटोत्कच भी शीघ्र अन्तर्धान हुआ १९ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! उस कठोरकर्मी शूर राक्षस के शीघ्र अन्तर्धान होनेपर मेरे शूरों ने जो २ विचार किये उनको मुझसे कहो २० सञ्जय बोले कि सब कौरव और कर्ण अन्तर्धान होनेवाले राक्षसों के राजा को जान कर पुकारे कि यह कठिन शूरवीर राक्षस दृष्टि से गुप्त होकर युद्ध में कैसे कर्ण को नहीं मारेगा २१ इसके पीछे तीक्ष्ण और अद्भुत अस्त्रों से लड़नेवाले कर्ण ने बाणजालों से सब दिशाओं को ढकदिया शायकोंसे अन्तरिक्ष के अन्धकाररूप होनेपर कोई जीवमात्र दिखाई नहीं पड़ा २२ बाणों से सब अन्तरिक्ष को

ढकता सूर्य का पुत्र कर्ण हस्तलाघवता से बाणों को लेता चढ़ाता और हाथों के अग्रभाग से तरकसों को स्पर्श करताहुआ दिखाई नहीं पड़ा २३ इसके पीछे हमने अन्तरिक्ष में राक्षस की रचीहुई भयानक घोर कठिन और रक्त बादल के रूप प्रकाशित ज्वलित अग्नि के समान उग्रमाया को देखा २४ हे कौरवेन्द्र! उसमें बिजलियां और ज्वलित उल्का भी दिखाईपड़ीं २५ इसके पीछे सुनहरी पुङ्खबाण, शक्ति, दुधारे खड्ग, प्रास, मूसल आदि शस्त्र और तेल से साफ फरसे, खड्ग, प्रकाशित नोकके तोमर और पट्टिश यह सब शस्त्र गिरे २६ प्रकाशित अथवा शोभायमान परिघ लोहेसे मढ़ीहुई गदा, अपूर्व तीक्ष्णधार शूल, सुवर्ण वस्त्र से मढ़ीहुई भारी गदा और शतघ्नी चारोंओर से प्रकट हुईं २७ जहां तहां बड़ी शिला और बिजलियों समेत हजारों वज्र और हजारों छुरे रखनेवाले चक्र जोकि अग्नि के समान प्रकाशित थे प्रकटहुए २८ कर्ण अपने बाणोंके समूहों से उस शक्ति, पाषाण, फरसा, प्रास, खड्ग, वज्र, बिजली और मुद्गरों की गिरने-वाली वर्षा को जोकि ज्वलितरूप बहुत बड़ी थी नाश करने को समर्थ नहीं हुआ २९ बाणों से घायल गिरतेहुए घोड़े वज्र से घायल हाथी और शिलाओं से घातित गिरतेहुए रथों के बड़े शब्द हुए ३० अत्यन्त भयानक और नाना प्रकार के शस्त्रों के सम्पात से दुर्योधन की वह सेना घटोत्कच के हाथ से चारों-ओरको घायलहुई और महापीड़ित होकर चक्रके समान घूमती दिखाई पड़ी ३१ हाहाकार करनेवाले चारोंओर से घूमनेवाले गुप्त होनेवाले व्याकुलरूप हुए तब वह पुरुषों में बड़ेवीर अपनी प्रतिष्ठा से मुख फेरनेवाले नहींहुए ३२ उस भयानक रूप बड़े घोर बड़े शस्त्रों से गिरनेवाली वर्षा को और सेनाके समूहों को गिराया हुआ देखकर आपके पुत्रों ने बड़ा भय माना ३३ राजा दुर्योधनके शूरवीर अग्नि के समान प्रकाशित जिह्वा और भयानक शब्दवाले सैकड़ों शृगालों को और गर्जनेवाले राक्षसों के समूहों को भी देखकर पीड़ावान् हुए ३४ और अग्नि के समान प्रकाशित जिह्वा तीक्ष्णधार भयकारी पर्वताकार शरीरवाले आकाश में वर्तमान हाथ में शक्ति रखनेवाले राक्षसों ने ऐसे बाणों की वर्षाकरी जैसे कि बड़ी उग्र वर्षा को बादल करताहै ३५ उन बाण, शक्ति, शूल, उग्रगदा, प्रकाशित परिघ, वज्र, पिनाक, अशनिप्रहार, शतघ्नी और चक्रों से मथेहुए वह लोग गिरपड़े ३६ उन शूल, भुशुण्डी, अगुड, लोहे की शतघ्नी और चादर से मढ़ेहुए बड़े शस्त्रों

ने आप के पुत्र की सेना को ढकदिया उससे महाभयकारी मूर्च्छा जारीहुई ३७ वहां गिरीहुई आँत और टूटे अङ्गवाले शूर कटेहुए शिरों समेत सोगये घोड़े हाथी मारेगये और रथ शिलाओं से चूर्ण होगये ३८ वह भयानकरूप राक्षस इस प्रकार पृथ्वीपर शस्त्रों की बड़ी वर्षा करनेवाले हुए वहां घटोत्कच की उत्पन्न की हुई माया ने न प्रार्थना करनेवाले को छोड़ा और न भयभीतों को छोड़ा ३९ कुरुवीरों की उस घोरपीड़ा और काल से उत्सृष्ट क्षत्रियों के विनाश में वह सब कौरवलोग पुकारते हुए अकस्मात् छिन्न भिन्न होकर भागे ४० हे कौरवलोगो! भागो यह घटोत्कच नहीं है यह इन्द्रसमेत देवतालोग पाण्डवों के निमित्त हमको मारेडालते हैं उस युद्धरूपी समुद्र में इस रीति से डूबनेवाले उन भरतवंशियों का आश्रयरूप द्वीप कर्ण हुआ ४१ उस कठिन रोने पीटने के वर्तमान होने व कौरवों की सेना को छिन्न भिन्न होकर गुप्त होने और सेनाओं के भाग प्रकट होनेपर न कौरव जानेगये न दूसरे ४२ हे राजन्! बेमर्याद और घोररूप सेना के भागनेपर सबदिशाओं को खाली देखनेवालों ने उस बाणों की वर्षा के झँझानेवाले केवल अकेले कर्ण ही को देखा उसके पीछे राक्षस की दिव्य माया से युद्धकरते लज्जावान् कर्ण ने बाणों से अन्तरिक्ष को ढकदिया और कठिनता से करने के योग्य उत्तम कर्म को करताहुआ सूत का पुत्र युद्ध में मोहित नहीं हुआ ४३। ४४ हे राजन्! उसके पीछे युद्ध में उस चैतन्यता की प्रशंसा करते और राक्षस की विजय को देखते भयभीत हुए सब बाह्लीकदेशीय और सिंधुदेशियों ने कर्ण को देखा उसके छोड़ेहुए चक्र से संयुक्त शतघ्नी ने एक साथ चारोंघोड़ों को मारा तब वह घोड़े दाँत आँख और जिह्वा से रहित मृतक होकर घुटनोंके बल से पृथ्वीपर गिरपड़े ४५। ४६ उसके पीछे मृतक घोड़ेवाले रथ से उतरकर भागनेवाले घोड़ों में जाकर नियत हुआ और माया से दिव्यअस्त्र के नाश होनेपर मोहित नहीं हुआ काल को वर्तमान हुआ जाना तदनन्तर सब कौरव घोररूप माया को देखकर कर्ण से बोले कि हे कर्ण! अब शीघ्रही उस शक्ति से राक्षस को मारो नहीं तो यह कौरव और धृतराष्ट्र के पुत्र नाश हुएजाते हैं ४७। ४८ भीमसेन और अर्जुन हमारा क्या करसक्ते हैं तुम इस तपानेवाले पापी को मारो हमलोगों में से जो मनुष्य घोररूप युद्ध से छूटेंगे वह हमारे बीच में सेना रखनेवाले पाण्डवों से युद्ध करेंगे ४९ इसहेतु

से तुम उस इन्द्र की घोरशक्ति के द्वारा इस राक्षस को मारो हे कर्ण ! इन्द्र के समान सब कौरव शूरवीरों समेत रात्रि के युद्ध में विनाश को न पावें ५० रात्रि के समय राक्षस के न मरनेपर सेना को भयभीत देखके और कौरवों के बड़े शब्दों को सुनकर कर्ण ने शक्ति छोड़ने का विचार किया ५१ उस क्रोधयुक्त सिंह के समान असह्य ने युद्ध में अपने ऊपर प्रहारों को नहीं सहा और उसके मारनेके अभिलाषीने असह्य वैजयन्ती नाम उत्तम शक्ति को हाथ में लिया ५२ हे राजन् ! जो वह प्रतिष्ठावान् शक्ति युद्धभूमि में अर्जुन के मारने के निमित्त बहुत वर्षोंतक रक्खी और इन्द्र ने कुण्डलों के लेने के लिये जिस श्रेष्ठ शक्ति को कर्ण को दी थी ५३ कर्ण ने उस चाटनेवाली अत्यन्त प्रकाशमान पाशों से युक्त यमराज की एक रात्रि और मृत्यु के समान उल्का के समान प्रकाशित शक्ति को राक्षस के लिये भेजा ५४ हे राजन् ! उस उत्तम और शत्रु के शरीर को नाश करनेवाली भुजापर नियत ज्वलितरूप अग्निको देखकर भय से पीड़ित राक्षस शरीर को विन्ध्याचल पर्वत के समान बड़ा करके भागा ५५ हे महाराज ! कर्ण की भुजा के मध्य में शक्ति को देखकर अन्तरिक्ष में सब जीवों ने शब्दकिया कठिनवायु चलीं और परस्पर वायु के सङ्घट्ट से बिजली भी पृथ्वी पर गिरी ५६ वह ज्वलितरूप शक्ति उस माया को भस्मकर के राक्षस के कठिन हृदय को बेधकर प्रकाश करतीहुई ऊपर को गई और रात्रि के समय नक्षत्रों के लोकों में पहुँची ५७ और वह राक्षस नाना प्रकार के दिव्य नाग मनुष्यों के अस्त्रों के समूहों से विदीर्ण नानाप्रकार के भयानक शब्दों को गर्जना करता हुआ इन्द्र की शक्ति के द्वारा अपने प्यारे प्राणों का त्यागनेवाला हुआ ५८ उसने शत्रु के नाश के लिये उस और दूसरे अपूर्व अद्भुत कर्म को किया उस समय पर शक्ति से भिदेहुए मर्मस्थल पर्वत और बादल की सूरत होकर वह राक्षस शोभायमान हुआ ५९ उसके पीछे वह राक्षसाधिप घटोत्कच बड़े रूप में नियत होकर औंधाशिर खड़ा शरीर जिह्वा विना निर्जीव और कटाशरीर होकर अन्तरिक्ष से पृथ्वीपर गिरा ६० अर्थात् वह भयानककर्मी भीमसेन का पुत्र उस रूप को भयानकरूप करके गिरा जिससे उस इस प्रकार के मृतक ने भी अपने शरीर से तेरी सेना के एकस्थान को विनाश किया ६१ शीघ्र बड़े लम्बे चौड़े अत्यन्त वर्द्धमान शरीरसमेत गिरते और पाण्डवों का हितकरते निर्जीव राक्षस

ने आप की एक अक्षौहिणी सेना को मारा ६२ इसके पीछे सिंहनादों समेत भेरी, शङ्ख, मुर्जा और ढोलों के महान् शब्द हुए और माया को भस्म करके राक्षस को मृतकहुआ देखकर बड़े प्रसन्न मन होकर कौरव लोग अत्यन्त गर्जे ६३ तदनन्तर कर्ण को कौरवों ने ऐसा पूजा जैसे कि वृत्रासुर के मारने में इन्द्र को देवताओं ने पूजा था आप के पुत्र के रथपर चढ़ाहुआ वह प्रसन्न मन कर्ण भी आप की उस सेना में पहुँचा ॥ ६४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिइन्द्रदत्तकर्णशक्तिद्वाराघटोत्कचवधेऽशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १८० ॥

एकसौइक्यासी का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, पर्वताकार गिरे और मरेहुए घटोत्कच को देखकर सब पाण्डव लोग शोक के अश्रुपातों से व्याकुल हुए १ फिर बड़ी प्रसन्नतापूर्वक वासुदेवजी सिंहनाद को गर्जे और अर्जुन को अपने हृदय से लगाया २ वह श्रीकृष्णजी बड़े शब्द को गर्जकर और बागडोरों को स्वाधीन करके प्रसन्नता से पूर्ण ऐसे नृत्य करनेलगे जैसे कि वायु से कम्पायमान वृक्ष घूमता है ३ इसके अनन्तर बुद्धिमान् और अजेय वासुदेवजी रथ के स्थितिस्थान में वर्तमान अर्जुन को अपने समक्ष करके वारंवार भुजाओं के शब्द करके गर्जे ४ हे राजन् ! इसके पीछे महाबली अर्जुन जोकि अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं था वासुदेवजीको अत्यन्तप्रसन्न जानकर बोला हे मधुसूदनजी ! घटोत्कच के मरने से शोक का स्थान वर्तमान होने पर यह आपकी बड़ी प्रसन्नता अयोग्य है ५ । ६ यहां घटोत्कच को मृतक देखकर आप की ओर की सब सेना मुख फेररही है और हम सबलोग भी घटोत्कच के मारेजाने से अत्यन्त व्याकुल हैं ७ हे जनार्दन जी ! इसका कारण मिथ्या नहीं विदित होता है सो हे सत्यवक्ताओं में श्रेष्ठ ! आप मेरे पूछनेपर सत्य २ कहो ८ हे शत्रुञ्जय ! जो यह बात आपको गुप्त करने के योग्य नहीं है तो इसको यथार्थता से मुझ से कहने को योग्य हो हे मधुसूदनजी ! अब आप धैर्य के रूपान्तर होने का कारण कहो ९ हे जनार्दन जी ! जैसे कि समुद्र का सूखजाना और मेरु का चलायमान होना होता है अब उसी प्रकार से इस आपके कर्म को मैं मानता हूं १० श्रीवासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन ! इस बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होने को कारण समेत मुझसे सुनो जोकि शीघ्रही चित्तको स्वस्थ करनेवाला और उत्तम है ११ हे बड़े तेजस्विन्,

अर्जुन ! घटोत्कच के द्वारा इस शक्ति को छोड़कर युद्धभूमि में शीघ्रही कर्ण को मराहुआ जानो १२ लोक में ऐसा कौन पुरुषहै जोकि युद्ध में इस कार्ति-केय के समान शक्ति हाथ में लिये कर्ण के सम्मुख नियत होसक्ता है १३ यह कर्ण प्रारब्धही से कवच रहित हुआ प्रारब्धही से कुण्डलों करके विहीन हुआ प्रारब्ध से ही यह अमोघ शक्ति इस घटोत्कच पर छोड़ीगई १४ जो कदाचित् यह कर्ण अपने कवच और कुण्डलोंसमेत होता तो अकेलाही देवताओं समेत तीनों लोकों को विजय करसक्ता था १५ इन्द्र, कुबेर, राजाबलि और यमराज भी युद्ध में कर्ण के सम्मुख होने को उत्साह नहीं करसक्ते १६ आप गाण्डीव धनुष को उठाकर और मैं सुदर्शनचक्र को लेकर उसप्रकार कवच कुण्डलों से युक्त नरोत्तम कर्ण के विजय करने को समर्थ नहीं थे इन्द्र ने तेरी वृद्धि के लिये अपनी माया से इस शत्रुओं के विजय करनेवाले कर्ण को कवच और कुण्डलों से रहित किया जिस हेतु से कि कर्ण ने अपने कवच और निर्मल कुण्डलों को उखाड़कर इन्द्र के अर्थ दिया उसी हेतु सेही यह कर्ण वैकर्त्तन नाम से वि-ख्यात हुआ १७ । १८ जो कर्ण विषैले सर्प की समान क्रोधयुक्त और मन्त्र के तेज से जम्भाई लेनेवाला था वह कर्ण अब मुझको शान्त अग्नि के समान दिखाई देता है २० हे महाबाहो ! जब से कि महात्मा इन्द्र ने कर्ण के अर्थ इस शक्ति को जोकि घटोत्कच के ऊपर उसने फेंकी २१ दिया था तभी से दोनों कुण्डल और दिव्य कवच से ठगेहुए कर्ण ने उस शक्ति को पाकर सब प्रकार से युद्ध में तुम को मराहुआ माना था २२ हे निष्पाप, पुरुषोत्तम ! इस दशावाला भी कर्ण तेरे सिवाय और किसी से मारने के योग्य नहीं है २३ वह वेदब्राह्मण और ईश्वर का भक्त सत्यवक्ता तपस्वी व्रत में सावधान होकर शत्रुओं पर दयावान् है उस हेतु से कर्ण वृषनाम से विख्यातहुआ २४ युद्ध में सावधान महाबाहु सदैव सन्नद्धहुए धनुषों के वन में केशरी के समान गर्जता युद्ध के शिर पर उत्तम रथियों के मद को ऐसे झाड़ता है जैसे कि यूथप हाथियों के झुण्ड के मदों को झाड़ता है जोकि दिवस के मध्याह्नकालीन सूर्य के समान २५ । २६ तेरे महात्मा और उत्तम शूरवीरों से देखने के भी योग्य नहीं है वह बाणजालों से शरदऋतु के सहस्रांशु सूर्य के समान २७ वर्षाऋतु के

ल के समान अविच्छिन्न बाणधाराओं को छोड़ता दिव्य अस्त्रों से बादल

की समान वर्षा करने वाला है २८ वह कर्ण चारोंओर से बाणवृष्टियों के करने वाले रुधिर मांस के जारी करनेवाले देवताओं से भी विजयकरने के योग्य नहीं है २९ हे पाण्डव! अब कवच और दोनों कुण्डलों से रहित वह कर्ण नरभाव को प्राप्तहुआ और इन्द्र की दी हुई शक्ति ने भी उसको त्यागा ३० इसके मारने के निमित्त एकही योग होगा उसी अवकाश में तुम सावधानी से इस अचेत और मोहित को समयपर मारो अर्थात् तुम प्रथम इस इङ्गित को विचार कर आपत्ति में फँसेहुए और रथ के चक्र के निकासने में प्रवृत्त होनेवाले को मारना ३१ बलि का मारनेवाला एक वज्रधारी वीर भी उस अजेय और अस्त्र उठानेवाले कर्ण को नहीं मारसक्ता है जरासन्ध महात्मा शिशुपाल और महाबाहु एकलव्य नाम निषाद यह सब जुदे २ योगों से तेरे हित के लिये मैंने मारे फिर अन्य राक्षसाधिप जिनमें हिडम्ब किर्मीर और बक यह बड़े श्रेष्ठ थे उनको भी भीमसेन के द्वारा मारा और शत्रु की सेना का मारनेवाला अलायुध और उग्रकर्मी वेगवान् घटोत्कच मारागया ॥ ३२ । ३३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकाशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १८१ ॥

एकसौबयासी का अध्याय ॥

अर्जुन बोले कि, हे जनार्दनजी! तुमने कौन सी इच्छाओं से हमारी वृद्धि के लिये बड़े २ जरासन्धादिक संसार के राजाओं को मारा १ वासुदेवजी बोले कि जो जरासन्ध शिशुपाल और महाबली एकलव्य प्रथमकाल में न मारेजाते तो महाभयकारी होते २ और दुर्योधन उन उत्तम रथियों को अवश्य बुलवाता और वह हमलोगों पर सदैव शत्रुता करनेवाले होकर कौरवों में संयुक्त होते ३ वह बड़े धनुषधारी अस्त्रज्ञ और दृढ़युद्ध करनेवाले वीर देवताओं के समान दुर्योधन की सब सेनाओं की रक्षा करते ४ कर्ण जरासन्ध शिशुपाल और निषाद के पुत्र यह सब दुर्योधन से संयुक्त होकर इस सब पृथ्वी को विजय करसक्तेथे ५ वह लोग जिन २ योगों से मारेगये हे अर्जुन! उसको भी सुनो कि वह युद्ध में विना योग के देवताओं से भी विजय करने के योग्य न थे ६ हे अर्जुन! उनमें प्रत्येक पृथक् २ युद्ध में देवताओं से रक्षित देवसेना से भी युद्ध करनेवाले थे ७ बलदेवजी से विजय कियेहुए क्रोधयुक्त जरासन्ध ने हमारे मारने के निमित्त नाश करनेवाली उस कालगदा को फेंका ८ जो कि अग्नि के समान

प्रकाशित और आकाश को सीमन्त के समान करनेवाली थी वह गिरती हुई ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि इन्द्र का छोड़ा हुआ वज्र होता है ९ रोहिणीनन्दन बलदेवजी ने उस आतीहुई गदा को देखकर उसके नाश के अर्थ स्तूणाकरण अस्त्र को छोड़ा १० अस्त्र के वेग से घायल वह गदा पृथ्वी देवी को फाड़ती और पर्वतों को कम्पायमान करती हुई पृथ्वीपर गिरपड़ी ११ जब कि वह जरा-सन्ध अपनी दो माताओं से आधा २ अङ्ग होकर उत्पन्न हुआ और निरर्थक जानकर उसको बाहर फेंक दिया था उस समय वहां घोर पराक्रमी जरानाम राक्षसी ने उस खण्ड २ उत्पन्न होनेवाले शत्रुविजयी जरासन्ध को उठाकर १२ जोड़ दिया तब सुन्दर रूपवाला होगया उस जराने जो सन्धि मिलाकर जोड़ा इसीसे इसका नाम जरासन्ध विख्यात हुआ १३ हे अर्जुन ! पृथ्वीपर वर्तमान वह राक्षसी अपने पुत्र बान्धवों समेत उस गदा और स्थूणाकरण अस्त्र से मारी गई १४ गदा से रहित वह जरासन्ध युद्धभूमि में तेरे देखते हुए भीमसेन के हाथ से मारागया १५ जो प्रतापवान् जरासन्ध उस गदाको हाथ में रखनेवाला होता तो हे नरोत्तम ! इन्द्र समेत सब देवता भी युद्धमें उसके विजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते १६ द्रोणाचार्य ने तेरी वृद्धि के लिये आचार्य दक्षिणा का उपदेशकरके कपटपूर्वक अंगुष्ठ से सत्यपराक्रमी एकलव्य जुदाकिया १७ वह अंगुलित्राण का धारण करनेवाला दृढ़ सत्यपराक्रमी बड़ा अहङ्कारी एक-लव्य दूसरे रामचन्द्रजी के समान वनचारी होकर शोभायमानहुआ १८ हे अ-र्जुन ! देवता, दानव, राक्षस और उरगों समेत युद्ध के मध्य में किसी दशा में उस अंगुष्ठ रखनेवाले एकलव्य के विजय करने को समर्थ नहीं हो सक्ते १९ वह दृढ़ मुष्टिक सदैव अहर्निश धनुष बाणों का अभ्यासी मनुष्यों से सम्मुख देखने को भी कठिन था उसको भी मैंने तेरी वृद्धि के अर्थ युद्धके शिरपर अपने हाथ से मारा और पराक्रमी शिशुपाल तेरे नेत्रों के सम्मुख मारा २०। २१ उसका भी युद्ध में सब देवता और असुरों से मारना असम्भव था मैं उसके और अन्य २ बहुत से असुरों के मारने को प्रकट हुआ हूं २२ हे नरोत्तम ! तुझको साथ रखनेवाले मैंने लोकों के अभ्युदय की इच्छा से प्रकट होकर उन हिडम्ब, बक और किर्मीर नाम राक्षसों को भीमसेन के हाथ से गिराया २३ जो कि रावण के समान बली और ब्रह्मयज्ञों के नाश करनेवाले थे इसी प्रकार

मायावी अलायुध भी घटोत्कच के हाथ से मारागया २४ और घटोत्कच भी उपाय के द्वारा कर्ण की शक्ति से मारा गया जो कदाचित् कर्ण उसको बड़े युद्ध में नहीं मारता २५ तो वह भीमसेन का पुत्र घटोत्कच मेरे हाथ से मारने के योग्य होता मैंने पूर्वसमय में तुम्हारे प्रिय करने की इच्छा से यह नहीं मारा था निश्चय करके यह राक्षस ब्राह्मण और यज्ञों से शत्रुता करनेवाला धर्म का गुप्त करनेवाला पापात्मा था इसी हेतु से यह मारागया २६ । २७ हे निष्पाप, पाण्डव ! इन्द्र की दी हुई शक्ति को भी मैंनेही उपाय से चलवाई जो धर्म के लोप करनेवाले हैं वह सब मुझ से वध्य हैं २८ मैंने धर्म की स्थिरता के लियेही यह अविनाशी प्रतिज्ञा करी है कि वेद तप ब्राह्मण सत्यता इन्द्रियों का जीतना बाह्याभ्यन्तरकी पवित्रता धर्म ह्री श्री धृति और क्षमा २९ यह सब जिस स्थानपर हैं वहां मैं सदैव रहता हूं मैं सत्य २ तेरी शपथ खाता हूं कि सूर्य के पुत्र कर्ण के विषय में तुझको व्याकुलता नहीं करनी उचित है ३० मैं तुझको उपायपूर्वक बतलाता हूं जिसके द्वारा तू उसको सहैगा भीमसेन भी युद्ध में दुर्योधन को मारेगा ३१ हे अर्जुन ! उसके भी मारने का तुझसे कहता हूं यह शत्रुओं की सेनामें कठोर शब्द की आधिक्यता होरही है ३२ और तेरी सेना दूसरी दिशाओं को भागती हैं लक्ष्यभेदी कौरवलोग तेरी सेना को छिन्नभिन्न करते हैं ३३ और यह प्रहारकर्ताओं में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य तेरी सेना को भस्म करेडालते हैं ॥ ३४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्व्यशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १८२ ॥

एकसौतिरासी का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, जब कर्ण के पास ऐसी शक्ति थी कि एकही वीर के मारने में फिर निष्फल होजाय तो किसकारण उसने सब को छोड़कर उस शक्ति को अर्जुन के ऊपर नहीं छोड़ा क्योंकि उसके मरनेपर सब सृञ्जयसमेत पाण्डव लोग मृतकरूप होजाते किस हेतु से युद्ध में एकही वीर के मारने में विजय को नहीं प्राप्त किया १ । २ क्योंकि अर्जुन का तो यह सत्यव्रत था कि बुलायाहुआ कभी नहीं लौटसक्ता था उस अर्जुन को कर्ण आप खोजकरलेता ३ इसके विशेष कर्ण ने द्वैरथ युद्ध को प्राप्तकरके किस निमित्त से अर्जुन को इन्द्र की दी हुई शक्ति से नहीं मारा हे सञ्जय ! यह मुझसे समझाकर कहो ४ निश्चयकरके मेरा पुत्र बुद्धि से और सहायता से रहित होकर पापी शत्रुओं से

ठगागया है वह कैसे शत्रुओं को विजय करसक्ता है ५ जो उसकी उत्तम शक्ति महाविजय का स्थान थी वह शक्ति वासुदेवजी ने घटोत्कच के ऊपर छुड़वादी ६ जैसे कि निर्बल के हाथ का वर्तमान फल बलवान् हरलेता है उसी प्रकार वह अमोघशक्ति घटोत्कच के ऊपर निष्फल हुई ७ मैं मानता हूं कि जिस प्रकार वराह और कुत्ते के युद्ध करतेहुए उन दोनों के नाशहोने में चाण्डाल का लाभ होता है हे विद्वन् ! उसी प्रकार कर्ण और घटोत्कच के युद्ध में वासुदेवजी का लाभहुआ ८ जो घटोत्कच कर्ण कोही मारदेता तो भी पाण्डवों का बड़ालाभ था अथवा कर्ण ने भी जो उसको मारा तो भी शक्ति के नाश होजाने से करने के योग्य कियाहुआ कर्म होगया ९ पाण्डवों के हितकारी और सदैव उनकी वृद्धि चाहनेवाले वासुदेवजी ने बुद्धि से उसको विचारकर युद्ध में कर्ण के हाथ से घटोत्कचको मरवाया १० सञ्जय बोले कि मधुसूदनजी ने कर्ण के उसकर्म करने की इच्छा को जानकर द्वैरथ युद्ध में राक्षसों के राजा घटोत्कचको प्रवृत्त किया ११ हे राजन् ! आपके दुर्मन्त्र करने पर बड़े बुद्धिमान् जनार्दनजी ने अमोघशक्ति के नाश के अर्थ बड़े पराक्रमी घटोत्कच को आज्ञा करी १२ हे कुरूद्वह ! हमलोग तभी कृतकार्य अर्थात् मनोरथ सिद्ध करनेवाले होसक्के हैं जब कि श्रीकृष्ण उस पाण्डव अर्जुन को महारथी कर्ण से रक्षा नहीं करें*१३ हे धृतराष्ट्र ! योगेश्वर प्रभु जनार्दनजी के न होनेपर वह अर्जुन युद्ध में घोड़े ध्वजा और सारथीसमेत पृथ्वीपर गिरपड़े १४ श्रीकृष्णजी सेही अनेक प्रकारों के उपायों से वह रक्षितकिया हुआ अर्जुन सम्मुख होकर शत्रुओं को विजय करता है १५ वह श्रीकृष्णजी अमोघशक्ति से भी अधिक हैं कि जिन्हों ने पाण्डव अर्जुन को रक्षितकिया नहीं तो वह शक्ति अर्जुन को ऐसे शीघ्र मार डालती जैसे कि बिजली वृक्ष को तत्क्षण मारती है १६ धृतराष्ट्र बोले मेरा पुत्र विरोधी कुमन्त्री अप्राज्ञ अहङ्कारी और निर्बुद्धि है जिसका कि यह अर्जुन के मारने का सिद्ध उपाय हाथ से निष्फल होकर गया १७ हे सूत ! उस बड़े बुद्धिमान् सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कर्णने उस अमोघशक्तिको अर्जुन के ऊपर क्यों न छोड़ा १८ हे सञ्जय ! यह बात तुझको भी किसहेतु से स्मरण नहीं रही इस भूलजाने का क्या कारण था जिससे कि तुमने भी इस प्रयोजन को नहीं सुझाया १९ सञ्जय बोले कि सदैव हररात्रि को मेरी दुर्योधन की शकुनी

की और दुश्शासन की यह सलाह होती थी और सब मिलकर कर्णसे कहते थे कि हे कर्ण! कल तुम सब सेनाओं को छोड़कर अर्जुन को मारो उसके पीछे हम पाण्डव और पाञ्चालों को दासों के समान करके उनको अपना सेवक बनावेंगे २०।२१ अथवा अर्जुन के मरनेपर जो श्रीकृष्णजी दूसरे पाण्डव को नियत करें इसकारणसे श्रीकृष्णही को मारो २२ श्रीकृष्णजी पाण्डवों के मूल हैं अर्जुन स्कन्ध हैं और दूसरे पाण्डव डालियोंके समान हैं और पाञ्चाल पत्तों के समान हैं सब पाण्डव श्रीकृष्णजी केही आश्रित श्रीकृष्णजी काही बल रखनेवाले और श्रीकृष्णहीको अपना स्वामी माननेवाले हैं श्रीकृष्णजी भी इनके ऐसे रक्षाश्रय हैं जैसे कि नक्षत्रों के चन्द्रमा रक्षाश्रय हैं २३। २४ हे कर्ण! इसकारण से पत्र शाखा और स्कन्ध को छोड़कर सर्वत्र सर्वदा श्रीकृष्णही को पाण्डवों का मूल जानो २५ हे राजन्! जो कर्ण कहीं यादवनन्दन श्रीकृष्णजी को मारे तो सम्पूर्ण पृथ्वी तेरे आधीन होजाय २६ जो वह यादववंशीय पाण्डवों के प्रसन्न करनेवाले महात्मा श्रीकृष्णजी मृतक होकर पृथ्वीपर सोवें तो हे महाराज! अवश्य ही यह पृथ्वी पर्वत समुद्रोंसमेत तेरे आधीन वर्तमान होजाय २७ जाग्रत् अवस्थामें देवेश्वर इन्द्रियों के स्वामी अप्रमेय श्रीकृष्णजीके विषय में इसप्रकार कीहुई उस बुद्धि ने युद्ध के समय मोह को पाया २८ केशवजी भी सदैव अर्जुन को कर्ण से रक्षाकरते थे और युद्ध में भी उसको कर्ण के सम्मुख नियत करना नहीं चाहा २९ हे प्रभो! उस अविनाशीने यह शोचकर कि इस अमोघ शक्ति को किसी प्रकार से निष्फल करदूं इस निमित्त दूसरेही महारथियों को उसके सम्मुख नियत किया ३० हे राजन्! जो बड़े साहसी श्रीकृष्णजी इस प्रकार से अर्जुन की रक्षाकरते हैं तो वह पुरुषोत्तम अपनी क्यों नहीं रक्षाकरेगा ३१ शत्रुविजयी चक्रधारी श्रीकृष्णजी को मैं अच्छीरीति से विचार कर देखता हूं कि वह पुरुष तीनों लोकों में भी नहीं है जो जनार्दनजी को विजय करसके ३२ इसके पीछे सत्य पराक्रमी रथियों में श्रेष्ठ महारथी सात्यकी ने कर्ण के विषय में महाबाहु श्रीकृष्णजी से पूछा ३३ कि हे अतुलपराक्रमिन्! यह शक्ति कर्ण के पास बड़ी विश्वसित थी उसको कर्ण ने किसहेतु से अर्जुन के ऊपर नहीं छोड़ा ३४ श्रीवासुदेवजी ने कहा दुश्शासन कर्ण शकुनी और जयद्रथने जिनमें मुख्य दुर्योधन था वारंवार सलाहकरी ३५ कि हे बड़ेधनुषधारिन्!

युद्ध में अमितपराक्रमी विजयी पुरुषों में श्रेष्ठ कर्ण कुन्ती के पुत्र महारथी अर्जुन के सिवाय इस शक्ति को दूसरे किसी के भी ऊपर छोड़ना योग्य नहीं है ३६ वही इन सब पाण्डवों में ऐसा बड़ा यशस्वी है जैसे कि देवताओं में इन्द्र अर्जुन के मरने पर सब सृञ्जयोंसमेत पाण्डव ऐसे मन से उदास होजायँगे जैसे कि अग्नि से रहित देवता होते हैं ३७ हे शिनियों में श्रेष्ठ, सात्यकिन् ! कर्ण ने प्रतिज्ञा करी कि ऐसाही होगा और सदैव कर्ण के हृदय में अर्जुन का मारना बना रहता था ३८ हे शूरवीरों में श्रेष्ठ ! मैंही कर्ण को अचेत और मोहितकरे रहता हूं इसी कारण से उसने पाण्डव अर्जुनपर उस शक्तिको नहीं छोड़ा ३९ हे शूरवीरों में श्रेष्ठ ! यह शोचतेहुए कि वह शक्ति अर्जुन का काल है मुझको न रात्रिमें निद्रा आती थी न दिनमें मनको प्रसन्नता थी ४० हे शूरसात्यकिन् ! अब मैं उस शक्ति को घटोत्कच के ऊपर छोड़ी हुई देखकर अर्जुन को काल के मुख से बचाहुआ देखता हूं ४१ मेरे माता पिता और तुम सब भाइयों समेत अपने प्राण भी वैसे मुझ को नहीं प्यारे हैं जैसे कि युद्ध में अर्जुन मुझ को रक्षाकरने के योग्यहै ४२ हे यादव ! तीनों लोकोंके राजासे भी जो कुछ पदार्थ अलभ्य और दुर्लभ हैं मैं पाण्डव अर्जुन के सिवाय उसको भी नहीं चाहता हूं ४३ हे सात्यकिन् ! अब इस हेतु से मरकर लौटेहुए के समान पाण्डव अर्जुन को देखकर मुझको बड़ी प्रसन्नता हुई है ४४ इसी हेतु से युद्ध में मैंनेही उस राक्षस को कर्ण के पास भेजा था क्योंकि रात्रि के युद्ध में कोई अन्य पुरुष कर्ण के पीड़ा देने को समर्थ न था ४५ सञ्जय बोले कि अर्जुन की वृद्धिमें प्रवृत्त उस के हितही में सदैव प्रीतिमान् देवकीनन्दनजी ने सात्यकीसे यह कहा॥४६॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्र्यशीत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १८३॥

एकसौचौरासी का अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात ! कर्ण, दुर्योधन, शकुनी और सौबल के पुत्रादि की बड़ी विद्या और अधिकतर तेरी १ जो तुम युद्धमें शक्तिको सदैव एक की मारनेवाली हटाने के अयोग्य और इन्द्रसमेत सब देवताओं से भी असह्यमानते थे२ तो हे सञ्जय ! प्रथम युद्ध जारी होनेपर कर्ण ने वह शक्ति किस निमित्तश्रीकृष्ण अथवा अर्जुन के ऊपर नहीं छोड़ी ३ सञ्जय बोले हे कौरवकुल में श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र ! सायङ्काल के समय युद्ध से लौटकर आनेवाले हम सबकी यह सलाह

हुई ४ कि हे कर्ण ! कल प्रातःकाल के समय इस शक्ति को अर्जुन अथवा श्रीकृष्णजी के ऊपर छोड़ना अवश्य योग्य है यह सदैव विचार होता था ५ हे राजन् ! इसके पीछे प्रातःकाल के समय देवताओं के कारण से कर्ण की और दूसरे शूरवीरों की बुद्धि विनाशवान् होती थी ६ मैं दैवको उत्तम मानता हूं जो कर्ण ने अपने हाथ की नियत शक्तिसे युद्ध में अर्जुन को अथवा देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी को नहीं मारा ७ कालरात्रि के समान उठाईहुई वह शक्ति उसके हाथ में नियत थी तब भी कर्ण ने दैवयोग से बुद्धिभ्रंश होने से उसको नहीं छोड़ा ८ हे प्रभो ! दैवकी माया से मोहित कर्ण ने उस इन्द्रकी शक्तिको मारने के निमित्त देवकी के पुत्र श्रीकृष्णजी पर अथवा इन्द्रके समान बली अर्जुन पर नहीं छोड़ा ९ धृतराष्ट्रबोले कि तुम दैव और केशवजीकी निजबुद्धि से हतेहुए हो और इन्द्रकी शक्ति तृणरूप घटोत्कच को मारकर चलीगई १० कर्ण व मेरे पुत्र और अन्य सब राजालोग उस कठिनता से जानने के योग्य श्रीकृष्ण के कारण से यमलोकमें गयेहुए विदित होते हैं ११ अब उसको फिर मुझसे कहो जैसे घटोत्कचके मरनेपर कौरव और पाण्डवों का युद्ध जारीहुआ १२ जो वह प्रहार करनेवाली अलंकृत सेना सृञ्जय और पाञ्चालों समेत द्रोणाचार्य के सम्मुख गई उन्हों ने किस प्रकार से युद्ध किया १३ पाण्डव और सृञ्जयलोग उन भूरिश्रवा और जयद्रथ को मारकर आनेवाले और जीवन को त्यागकरके सेना के मँझानेवाले १४ व्याघ्र के समान जम्भाई लेनेवाले काल के समान खुले मुख धनुष से बाणों के प्रहार करनेवाले द्रोणाचार्य के सम्मुख कैसे गये १५ हे तात ! जिन अश्वत्थामा, कर्ण और कृपाचार्यने जिनमें कि मुख्य दुर्योधन था द्रोणाचार्य को रक्षित किया उन्हों ने युद्धमें कौन सा कर्म किया १६ भारद्वाज द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी भीमसेन और अर्जुन ने युद्ध में मेरे वीरों को कैसे २ रोका हे सञ्जय ! उस वृत्तान्त को मुझसे कहो १७ जयद्रथ और घटोत्कच के मरने से सहन न करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त इन कौरव और पाण्डवोंने रात्रि के समय में कैसे युद्ध किया १८ सञ्जय बोले हे राजन् ! रात्रि के समय कर्ण के हाथ से घटोत्कच के मरने और युद्धाभिलाषी प्रसन्नमन आपके शूरवीरोंके गर्जने १९ सेना के मरने और वेग से चढ़ाई करनेपर घनघोर रात्रि में राजा युधिष्ठिर ने बड़े कष्ट को पाकर २० और दुःखितचित्त होकर महाबाहु भीमसेन

से यह वचन कहा कि हे महाबाहो, भीमसेन ! दुर्योधन की सेनाको रोको २१ घटोत्कच के मरने से मुझ में बड़ा मोह उत्पन्न होगया है इस प्रकार भीमसेन को आज्ञा देकर अपने रथपर सवारहुआ २२ अश्रुपातों से भरा मुख वारंवार श्वास लेता हुआ राजा युधिष्ठिर कर्ण के पराक्रमको देखकर घोर मोह में प्रवृत्त हुआ २३ तब उस प्रकार से राजा को पीड़ित देखकर श्रीकृष्णजी यह वचन बोले हे युधिष्ठिर ! शोक मत करो यह व्याकुलता तुमको करना उचित नहीं है हे भरतवंशिन् ! व्यामोहता साधारण मनुष्यों में होती है आपमें नहीं होनी चाहिये २४ हे समर्थ, राजन्, युधिष्ठिर ! उठो युद्धकरो और भारी धुरको उठाओ आपके अधैर्य होने से विजय में सन्देह होगा धर्मराज युधिष्ठिर श्रीकृष्ण के वचन को सुनकर और हाथों से दोनों नेत्रों को पोंछकर श्रीकृष्णजी से यह वचन बोले २५ । २६ कि हे माधवजी ! धर्मों की परम गति को मैं जानता हूं और जो उपकार को नहीं मानता है उसका फल ब्रह्महत्या है २७ हे जनार्दन जी ! उस महात्मा पुत्र सत्पुरुष घटोत्कच ने भी वनवास में हमलोगों की सहायता करी २८ हे श्रीकृष्णजी ! अस्त्रों के निमित्त यात्राकरनेवाले पाण्डव अर्जुन को जानकर यह बड़ा धनुषधारी घटोत्कच काम्यकवनमें मेरे पास आकर वर्तमान हुआ २९ जबतक अर्जुन नहीं आया तबतक हमारेही साथमें निवास करतारहा और गन्धमादन पर्वत की यात्रा में दुर्गम्य स्थानों से इसने हमको पारकिया ३० इस महात्मा ने थकीहुई द्रौपदी को अपनी पीठ पर सवार किया हे प्रभो ! उसने मेरे निमित्त युद्धोंको प्रारम्भ किया और बड़े युद्धोंमें कठिन २ कर्मकिये ३१ हे जनार्दनजी ! जो मेरी प्रीति सहदेवमें है वही मेरी बड़ी प्रीति राक्षसों के राजा घटोत्कच में थी ३२ वह महाबाहु मेरा भक्त होकर मेरा प्यारा और मैं उसको प्यारा था हे श्रीकृष्णजी ! मैं शोक से सन्तप्त होकर मूर्च्छा को पाता हूं ३३ हे यादवजी ! कौरवों से भगाईहुई सेनाओं को देखो और अच्छे उपाय करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य और कर्ण को देखो ३४ रात्रि के समय इन दोनों से मर्दन की हुई पाण्डवीय सेना को ऐसे देखो जैसे कि दो मतवाले हाथियों से कमल का वन मर्दित होता है ३५ हे माधवजी ! कौरवों ने भीमसेन के भुजबल को और अर्जुन के अद्भुत अस्त्रों को अनादरकरके अपना पराक्रम किया ३६ युद्धभूमि में यह द्रोणाचार्य कर्ण और राजा दुर्योधन युद्ध

में घटोत्कच राक्षस को मारकर प्रसन्नचित्त होकर गर्जते हैं ३७ हे जनार्दनजी ! हमारे और आपके जीतेजी कर्ण से भिड़ेहुए घटोत्कच ने कैसे मृत्युको पाया ३८ हे श्रीकृष्णजी ! अर्जुन के देखते हुए हम सब को अनादर करके महाबली भीमसेन के पुत्र राक्षस को मारा ३९ हे श्रीकृष्णजी ! जब धृतराष्ट्र के दुरात्मा पुत्रों ने अभिमन्यु को मारा तब उस युद्ध में महारथी अर्जुन नहीं था हम सब दुरात्मा जयद्रथ से रोकेगये थे उस कर्म में अपने पुत्र समेत द्रोणाचार्यही कारण रूप हुए ४० । ४१ आप गुरुजी ने उसके मारने का उपाय कर्ण को सिखाया और उस खड्ग खैंचनेवाले के खड्ग को खड्ग सेही दो खण्ड किया ४२ कृतवर्माने निर्दयता के समान उस आपत्ति में वर्तमान अभिमन्यु के घोड़ों को और आगे पीछेवाले सारथियों को अकस्मात् मारा उसी प्रकार अन्य २ बड़े धनुषधारियोंने युद्धमें अभिमन्यु को गिराया ४३ हे यादववर, श्रीकृष्णजी ! गाण्डीव धनुषधारी ने छोटे से कारण से जयद्रथ को मारा वह मेरा बड़ाप्रिय कर्म नहीं हुआ ४४ जो पाण्डवों की ओर से शत्रुओं का मारना न्यायपूर्वक होय तो प्रथम युद्ध में कर्ण और द्रोणाचार्य काही मारना योग्य है यह मेरा अभीष्ट है ४५ हे पुरुषोत्तम ! यह दोनों हमारे कष्टों के मूल हैं दुर्योधन इन दोनोंको पाकर विश्वासयुक्त है ४६ इस स्थानपर द्रोणाचार्य और कर्ण पीछे चलनेवालों समेत मारने के योग्य थे वहां महाबाहु अर्जुनने दूरदेश निवासी जयद्रथ को मारा अब मुझको कर्ण का मारना अत्यन्त योग्य है हे वीर ! इस हेतुसे मैं आपही कर्ण के मारने की इच्छा से जाऊंगा ४७ । ४८ महाबाहु भीमसेन द्रोणाचार्य की सेना से भिड़ाहुआ है शीघ्रता करनेवाला युधिष्ठिर इसप्रकार से कहकर शीघ्रही चलदिया ४९ वह युधिष्ठिर बड़े धनुषको चलायमान करके भेरी शङ्खों को बजाकर सम्मुख हुआ उसके पीछे शिखण्डी हज़ाररथ और तीनसौ हाथी पांचहज़ार घोड़े और पाञ्चालों समेत प्रभद्रकों से युक्त होकर शीघ्रही राजाके पीछे चला ५० । ५१ इसके पीछे कवचधारी पाञ्चालों समेत पाण्डवों ने जिनमें अग्रगामी युधिष्ठिर था भेरी और शङ्खों को बजाया ५२ उस समय महाबाहु वासुदेवजी अर्जुन से बोले ५३ कि यह क्रोधसे भराहुआ युधिष्ठिर कर्ण के मारने की इच्छा से शीघ्र जाता है इसका त्यागना उचित नहीं है ५४ इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी ने इस प्रकार से कहकर शीघ्र घोड़ोंको चलायमान किया और दूर पहुँचेहुए राजा

के पास पहुँचे ५५ कर्ण के मारने की इच्छा से अकस्मात् जानेवाले शोक से विदीर्ण और अग्निसे भस्महुए के समान धर्म के पुत्र युधिष्ठिर को देखकर ५६ समीपमें जाकर व्यासजी यह वचनबोले ५७ कि अर्जुन युद्धमें कर्णको सम्मुख पाकर प्रारब्ध सेही जीवता है अर्जुन के मारने के अभिलाषी कर्ण ने उस शक्ति की बड़ी रक्षाकरी थी अर्जुन ने प्रारब्धसे उसके साथ द्वैरथ युद्धको नहीं प्राप्त किया यह दोनों ईर्षा करनेवाले सब दिव्य अस्त्रों को छोड़ते ५८ । ५९ हे युधिष्ठिर ! युद्ध में अस्त्रों के निष्फल होनेपर पीड़ावान् कर्ण अवश्य इन्द्र की शक्ति को छोड़ता ६० हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! उससे तुमको बड़ा घोर दुःख होता हे बड़ाई देनेवाले ! प्रारब्धही से कर्ण के हाथ से राक्षस मारागया ६१ यह इन्द्रकी शक्ति के बहाने से काल करकेही मारागया हे तात ! वह राक्षस युद्ध में तेरे कारण सेही मारागया ६२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! क्रोध को त्यागकर शोकग्रस्त चित्त को मतकर युधिष्ठिर इस लोक में सब जीवधारियोंकी यही दशा है ६३ हे राजन्, युधिष्ठिर ! सब भाइयों और महात्मा राजाओं समेत युद्धकरो ६४ हे पुत्र ! पांचवेंदिन यह सब पृथ्वी तेरी होगी हे पुरुषोत्तम ! तुम सदैव धर्मही को विचारो ६५ हे पाण्डव ! अत्यन्त प्रसन्नमन होकर तुम तप, दान, क्षमा और सत्यता कोही सेवन करो जिधर धर्म है उधर ही विजय है व्यासजी पाण्डवों से यह कहकर उसी स्थानपर अन्तर्धान होगये ॥ ६६ । ६७ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणियुधिष्ठिरप्रतिव्यासशिक्षावर्णनेचतुरशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १८४॥

एकसौपच्चासी का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे भरतर्षभ ! व्यासजी से इस प्रकार समझाया हुआ धर्मराज युधिष्ठिर आप अपने से कर्ण के मारने में निवृत्त हुआ १ उस रात्रि में कर्ण के हाथ से घटोत्कच के मारेजानेपर दुःख और क्रोध से वशीभूत होकर धर्मराज युधिष्ठिर २ भीमसेन से हटाई हुई आपकी सेना को देखकर धृष्टद्युम्न से यह वचन बोले कि द्रोणाचार्य को हटाओ ३ हे शत्रुओं के सन्तप्त करनेवाले तुम द्रोणाचार्य केही नाश के अर्थ बाण कवच खड्ग और धनुषसमेत अग्नि से उत्पन्न हुए हो ४ युद्ध में प्रसन्नमन होकर सम्मुख दौड़ो तुझको किसी प्रकार भी भय नहीं होगा अत्यन्त प्रसन्नचित्त जनमेजय, शिखण्डी, दौर्मुखि, यशोधर ५ तुम सब चारोंओर से द्रोणाचार्य के सम्मुख जाओ नकुल, सहदेव,

द्रौपदी के पुत्र, प्रभद्रक ६ द्रुपद, विराट, अपने पुत्र भाइयों से संयुक्त सात्यकी, केकय और पाण्डव अर्जुन ७ द्रोणाचार्य के मारने की इच्छा से बड़े वेग से सम्मुख जाओ और उसी प्रकार सब रथी और जो कुछ हाथी घोड़े हैं ८ वह सब और पदातीलोग युद्ध में महारथी द्रोणाचार्य को गिराओ फिर उस महात्मा युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह सब ९ द्रोणाचार्य के मारने की इच्छा से वेग से सम्मुख दौड़े शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने उन आतेहुए पाण्डवों को सब उपायों से युद्ध में रोका १० इसके पीछे द्रोणाचार्य के जीवन को चाहता अत्यन्त क्रोधयुक्त राजा दुर्योधन सब उपायों से पाण्डवों के सम्मुख दौड़ा ११ तदनन्तर परस्पर गर्जनेवाले पाण्डव और कौरवों का वह युद्ध जिसमें सवारियों समेत सेना के लोग थकगये थे जारी हुआ १२ हे महाराज! उन नींदों से उनींदे और युद्ध में थकेहुए महारथियों ने किसी चेष्टा को नहीं पाया १३ यह तीनपहर रात्रि महाघोररूप भयानक प्राणों की लेनेवाली हजार पहर के बराबर होगई १४ उन घायल और अत्यन्त नींद से अन्धे शूरवीरों की आधी रात्रि व्यतीत हुई और सब क्षत्रिय दुःखीमन होकर उत्साह से रहितहुए १५ आपके और दूसरों के शूरवीर अस्त्र और बाणों से रहितहुए तब युद्धव्रत को समाप्त करनेवाले और अत्यन्त लज्जावान् निजधर्म के देखनेवाले उनलोगों ने अपनी सेना को नहीं त्यागकिया दूसरे मनुष्य नींद से अन्धे अस्त्रों को छोड़कर सोगये १६ । १७ हे राजन्! कोई रथोंपर कोई हाथियोंपर और कोई घोड़ोंहीं पर सोगये नींद से अन्धों ने किसी भी चेष्टा को नहीं जाना १८ बहुत से शूरों ने युद्धमें उनको यमलोक में पहुँचाया और कितनेही अत्यन्त अचेत चित्तोंने सोते हुए शत्रुओं को भी मारा १९ युद्ध में कितनोंहीं ने अपनाही अपघात किया और उस बड़े युद्ध में नाना प्रकार के वचनों को कहते उन निद्रान्धलोगों ने अपने शूरवीरों को और शत्रुओं को मारा २० हे महाराज! हमारे बहुत से मनुष्य यह समझकर कि शत्रुओं के साथ अवश्य युद्धकरना उचित है नियतहोकर नींद से लाल लाल नेत्रवाले होकर २१ उस कठिन अन्धकार में चेष्टा करते थे और कुछ नींद से अन्धे शूरवीरों ने युद्ध में अन्य शूरवीरों को भी मारा २२ और निद्रा से अत्यन्त अचेत बहुत आदमियों ने युद्ध में शत्रुओं से अपने को घायल नहीं जाना २३ पुरुषोत्तम अर्जुन उन्हों की ऐसी चेष्टा को जानकर बड़े

उच्चस्वर से दिशाओं को शब्दायमान करता यह वचन बोला २४ कि बहुत धूलि और अन्धकार से सेना के प्रवृत्त होनेपर आप सब सवारियों समेत नींद से अन्धे और श्रमित होगये २५ हे सेना के लोगो ! जो तुम मानो तो विश्राम करो और यहां युद्धभूमि में एकमुहूर्त पलक बन्दकरो २६ हे कौरव, पाण्डव लोगो ! फिर तुम चन्द्रमा के उदय होनेपर नींदसे रहित आनन्दयुक्त होकर परस्पर युद्ध करोगे २७ हे राजन् ! सब धर्मों की जाननेवाली सेनाओं ने उस धार्मिक अर्जुन के उस वचन को स्वीकार किया और उसी प्रकार परस्पर वार्तालापकरी २८ और पुकारे कि हे कर्ण ! हे कर्ण ! हे दुर्योधन ! यह कहकर पाण्डवों की सेना रथों से उतरकर युद्ध की त्यागनेवाली हुई २९ हे भरतवंशिन् ! उसी प्रकार जहां तहां अर्जुन के पुकारते पाण्डवों की और आपकी सेना ने युद्ध से हाथ को खैंचा ३० इस महात्मा के उस वचन को देवताओं समेत ऋषियों ने और प्रसन्नचित्त सब सेनाओं के श्रेष्ठलोगों ने प्रशंसा करी ३१ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ, राजन्, धृतराष्ट्र ! थकेहुए सब सेना के मनुष्य उस दया से युक्त अर्जुन के उस वचन की प्रशंसा करके एक मुहूर्ततक सोये ३२ हे भरतवंशिन् ! फिर वह आपकी सेना विश्राम को पाकर सुख पानेवाली हुई और वीर अर्जुन की सबने ऐसे प्रशंसा करी ३३ कि हे निष्पाप, महाबाहो, अर्जुन ! तुझी में वेद हैं अस्त्र हैं बुद्धि है पराक्रम है तुझी में धर्म है और जीवोंपर तेरी दया है ३४ हम सब आनन्दपूर्वक विश्राम करनेवाले तेरे यश और कल्याण को चाहते हैं हे अर्जुन ! तेरा कल्याण होय हे श्रेष्ठ, वीर ! तू अपने चित्तके अभीष्टों को शीघ्र प्राप्त कर ३५ हे राजन् ! वे महारथी इस प्रकार से उस नरोत्तम अर्जुन की प्रशंसा करतेहुए निद्रा से युद्धभूमि में पड़ेहुए मौन होगये ३६ कोई घोड़ों की पीठपर कोई रथों की नीढ़पर कोई हाथियों के कन्धोंपर और कोई पृथ्वीपर सोगये ३७ कोई मनुष्य शस्त्र, बाजूबन्द, खड्ग, फर्सा, प्रास और कवच समेत पृथक् २ होगये ३८ निद्रा से अन्धे उन हाथियों ने सर्प के फणोंके रूप पृथ्वी की धूलि से लिप्तहुई अपनी सूंड़ों से पृथ्वी को नाक की श्वासों से शीतल किया ३९ वहां पृथ्वीतल पर श्वासायुक्त सोनेवाले लोग ऐसे शोभायमान हुए जैसे श्वास लेनेवाले बड़े सर्पों से युक्त पर्वत होते हैं ४० उन स्वर्णमयी योक्त्रवाले घोड़ों ने बागों पर चिपटेहुए युगसमेत खुरों की नोकों से सम

भूमि को विषमभूमि करदिया ४१ हे महाराज ! वहां सब प्रकार की सवारियोंपर नियत होकर सोगये अर्थात् इस प्रकार बड़े कष्ट से युक्त घोड़े हाथी और शूरवीर युद्ध से निवृत्त होकर सोगये ४२ इसी प्रकार निद्रा में डूबीहुई वह सेना ऐसे अचेत होकर सोगई जैसे कि सावधान चित्रकारों से कपड़ेपर काढ़ीहुई अपूर्व मूर्तियां होती हैं ४३ वह कुण्डलधारी शूरवीर परस्पर शायकों से घायल अङ्ग वाले क्षत्रिय हाथियों के कुम्भों से चिपटेहुए ऐसे सोगये जैसे कि स्त्रियों के कुचों से चिपटेहुए कामीपुरुष सोते हैं ४४ इसके पीछे कुमुदनाम कमल के स्वामी स्त्रियों के कपोलों के समान पीतरङ्ग नेत्रों को आनन्द करनेवाले चन्द्रमा से पूर्वदिशा शोभितहोकर अलंकृत हुई ४५ वह उदयाचल केसरी किरणों से पीत रङ्ग तिमिररूपी हाथियों का विनाश करनेवाला चन्द्रमा तारागणों समेत दिशा-रूपी कन्दरा से उदय हुआ ४६ नन्दीगण के शरीर के समान प्रकाशमान और कामदेव के पूर्ण धनुष के समान प्रकाशित नवीनबधू के मन्द मुसकान के समान सुन्दर मनोहर चन्द्रमा कुमुदिनियों को प्रफुल्लित करताहुआ फैला ४७ इसके पीछे नक्षत्रों के प्रकाशों को मन्दकरते प्रभु भगवान् चन्द्रमा ने एकमुहूर्त मेंही पूर्वदिशामें अरुण को दिखलाया ४८ वह चन्द्रमा की किरणें अपने प्रकाश से अन्धकार को हटाती हुई धीरे २ सब दिशाओं समेत आकाश और पृथ्वीपर फैलगईं ४९ । ५० तदनन्तर वह भवन एक मुहूर्त मेंही ज्योतिरूप होगया और अन्धकार शीघ्रता सेही गुप्त होगया ५१ हे राजन् ! चन्द्रमा के उदय में लोक के प्रकाशित होनेपर रात्रि में घूमनेवाले राक्षसादिक घूमनेवाले हुए और नहीं भी हुए ५२ चन्द्रमा की किरणों से सचेत और सावधान होनेवाली वह सब सेना ऐसे जागी जैसे कि सूर्य की किरणोंसे कमलों का वन प्रफुल्लितहोता है ५३ जैसे कि उदयहुए चन्द्रमा में कम्पायमान और व्याकुल समुद्र होता है उसीप्रकार चन्द्रमा के उदय होने से वह सेनारूपी समुद्र कम्पायमान होकर चेष्टा करनेवाला होगया ५४ इसके पीछे हे राजन् ! संसार के नाश के लिये परलोक चाहनेवालों का वह युद्ध फिर जारी हुआ ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चाशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १८५ ॥

एकसौछियासी का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि फिर क्रोध के स्वाधीन वर्तमान दुर्योधन द्रोणाचार्य के पास

जाकर प्रसन्नता और पराक्रम को उत्पन्न करताहुआ यह वचन बोला १ कि युद्ध में अमर्षपूरित चित्त और अधिकतर लक्ष्यभेदन करनेवाले थके और विश्रामपानेवाले शत्रु क्षमाकरने के योग्य नहीं हैं २ हमने आपके हित की इच्छा से उसको सहलिया परन्तु वह विश्राम करनेवाले पाण्डव अधिकतर पराक्रमी हैं ३ और हमलोग सबप्रकार से तेज और बलों से रहित हैं आपके पोषण और कृपा से वह लोग वारंवार वृद्धि को पाते हैं ४ जो ब्राह्मच आदिक सब दिव्य अस्त्र हैं वह आपके पास अधिकतर नियत हैं ५ पाण्डव हम और अन्य सब धनुषधारीलोग आपके समान धनुषधारी और युद्ध करनेवाले नहीं हैं यह मैं आपसे सत्यसत्यही कहता हूं ६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! सब अस्त्रों के ज्ञाता आप अपने दिव्य अस्त्रों से इन लोगों को देवता असुर और गन्धर्वों समेत भी निस्सन्देह मारसके हैं ७ सो आप शिष्यता अथवा मेरी अभाग्यता को आगे करके इन अपने से अधिक भयभीतों के ऊपर क्षमा करते हो ८ सञ्जय बोले हे राजन् ! इसप्रकार के आपके पुत्र के वचनों से अप्रसन्न और क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य बड़े क्रोधित होकर दुर्योधन से यह वचन बोले ९ हे दुर्योधन ! मैं वृद्ध होकर भी युद्ध में बड़ी सामर्थ्य से उपाय करता हूं इसके पीछे मुझ विजयाभिलाषी से नीचकर्म करने के योग्य है १० यह अस्त्रज्ञता से रहित सब मनुष्यों का समूह मुझ अस्त्रज्ञ से मारने के योग्य है ११ जो आप भी मानते हैं वह अच्छाहोय व बुरा हे कौरव ! मैं तेरे वचन से उसको भी करूंगा इसमें विपरीतता नहीं होगी १२ हे राजन् ! मैं युद्ध में पराक्रम करके सब पाञ्चालों को मारकेही अपने कवच को उतारूंगा मैं सत्यता से शस्त्रों की शपथ खाताहूं १३ हे महाबाहो ! जो तुम कुन्ती के पुत्र अर्जुनको युद्ध में थकाहुआ मानते हो सो हे कौरव ! सत्यतापूर्वक उस के पराक्रम को सुनो १४ उस क्रोधयुक्त अर्जुन को युद्ध में देवता गन्धर्व यक्ष और राक्षस भी विजय करने को उत्साह नहीं करते हैं १५ देवराज भगवान् इन्द्र भी खाण्डववन में जिसके साथ सम्मुख हुआ और वर्षा करताहुआ भी महात्मा के बाणों से रोकागया १६ और जिस नरोत्तम ने घोषयात्रा में गन्धर्व मारे और चित्रसेनादिक विजय किये वह भी तुझको विदित है १७ और उन गन्धर्वों से हरणकियेहुए तुम उस दृढ़धनुषधारी अर्जुनके ही द्वारा छूटे इसी प्रकार देवताओं के शत्रु निवात कवच भी १८ जोकि युद्धमें

देवताओं से भी अवध्य थे उनको भी इसी वीर ने विजय किया इसी पुरुषोत्तमने हिरण्यपुरवासी दानवों के हज़ारों समूहों को १९ विजय किया वह मनुष्यों से कैसे पराजय होने के योग्य है हे राजन्! सब तेरे नेत्रों के प्रत्यक्ष है कि जिसप्रकार तेरी यह सेना हमारे उपाय करतेहुए भी अर्जुन के हाथ से मारी गई २० सञ्जय बोले हे राजन्! तब आपका पुत्र क्रोधयुक्त दुर्योधन उस अर्जुनकी प्रशंसा करने वाले द्रोणाचार्य से फिर यह वचन बोला २१ कि अब मैं दुश्शासन कर्ण और मेरा मामा शकुनी आदिक सब मिलकर सेना के दो भागकरके युद्ध में अर्जुन को मारेंगे २२ उसके उस वचन को सुनकर हँसतेहुए द्रोणाचार्य ने उसको अङ्गीकार किया और कहा कि तेरा कल्याण हो २३ कौन सा क्षत्रिय उस तेज से ज्वलितरूप क्षत्रियों में श्रेष्ठ अविनाशी गाण्डीवधनुषधारी का नाश कर सक्ता है २४ उस शस्त्रधारी को कुबेर, इन्द्र, यमराज, जल का स्वामी वरुण, असुर, सर्प और राक्षस भी विजय नहीं करसक्ते २५ और हे भरतवंशिन्! तुमने जो २ बातें कहीं उन बातों को जो कोई कहते हैं वह अज्ञान है युद्धमें अर्जुन को सम्मुख पाकर कौन कुशलता से घर को जासक्ता है २६ इसके विशेष तू सबपर सन्देह करनेवाला कठोरचित्त और पाप का निश्चय करनेवाला है और अपनी वृद्धि और कल्याण में प्रवृत्त पुरुषों को तू ऐसे २ कठोर वचनों को कहा करता है २७ अब तुम जाकर अपने अर्थ अर्जुन को मारो विलम्ब मतकरो तुम भी लड़ना चाहते हो क्योंकि कुलीन क्षत्रिय हो २८ इन निरपराधी सब क्षत्रियों को क्यों विनाश करवाता है तूही इस शत्रुता का मूल है इसकारण अब शीघ्रता से अर्जुन के सम्मुख हो २९ हे गान्धारी के पुत्र! यह तेरा मामा बुद्धिमान् क्षत्रियधर्मपर चलनेवाला दुर्मति द्यूतकर्मी भी युद्ध में अर्जुन के सम्मुख जाय ३० यह पाशे की विद्या में कुशल कुटिलप्रकृति ज्वारी छली शठ खिलाड़ी छलबुद्धि शकुनी पाण्डवों को विजय करेगा ३१ तुमने कर्णसमेत प्रसन्नचित्त निर्बुद्धियों के समान मोह से धृतराष्ट्र के सुनतेहुए वारंवार यह वचन कहा है ३२ कि हे पितः! मैं और कर्ण और मेरा भाई दुश्शासन तीनोंसाथ होकर युद्ध में पाण्डवों को मारेंगे ३३ प्रत्येक सभा में तुझ कहनेवाले का यही वचन वारंवार सुनागया उस प्रतिज्ञा में नियत हो और उनके साथ में सत्यवक्ताहो ३४ यह तेरा शत्रु पाण्डव निस्सन्देह आगे नियत है क्षत्रियधर्म को विचारकर तेरा

मरना विजय होने से भी अधिक प्रशंसा के योग्य है २५ दान किया भोग किया जपकिया और यथेच्छित ऐश्वर्य को पाया सब ऋणों से निवृत्त अर्थात् देव ऋषि और पितरों के तीनों ऋणों से अऋण है अब भय न कर पाण्डवों से युद्ध कर २६ द्रोणाचार्यजी ऐसा कहकर युद्ध में उधर को लौटे जिधर को कि शत्रु लोग थे इसके अनन्तर सेना के दो विभागकरके अच्छे प्रकारसे युद्ध हुआ ॥२७॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषडशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १८६ ॥

एकसौ सत्तासी का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! रात्रि का तीसराभाग शेष रहनेपर अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरव और पाण्डवों का युद्ध जारी हुआ १ तदनन्तर चन्द्रमा के प्रकाश को म्लान करते आकाश को रक्तवर्ण करते सूर्य के अग्रगामी अरुण का उदय हुआ २ पूर्वदिशा में सूर्य के सारथी अरुण से आरक्तवर्ण कियाहुआ सूर्यमण्डल सुनहरी चक्र के समान शोभायमान हुआ ३ तब कौरव और पाण्डवों के सब शूर वीर रथ, घोड़े, मनुष्य और सवारियों को छोड़कर सूर्य के सम्मुख जप करते सन्ध्या में प्रवृत्त होकर हाथों को जोड़नेलगे ४ तदनन्तर सेना के दो भाग करने पर वह द्रोणाचार्य जिनका अग्रगामी दुर्योधन था सोमक पाण्डव और पाञ्चालों के सम्मुखगये ५ माधवजी दो भाग कियेहुए कौरवों को देखकर अर्जुन से बोले कि शत्रुओं को वाम करके इनको दाहिने करो ६ अर्जुन माधवजी से यह कहकर कि करिये बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और कर्ण के बांईओर को वर्तमान हुआ ७ शत्रुओं के पुरों का विजय करनेवाला भीमसेन श्रीकृष्णजीके चित्त के विचार को जानकर युद्धभूमि में अर्जुनसे बोला ८ कि हे अर्जुन! मेरे वचन को सुन ईश्वर ने क्षत्रियों को जिस निमित्त उत्पन्नकिया है उसका यह समय आगया है ९ इस समय के वर्तमान होनेपर भी जो कल्याण को नहीं पाओ तो तुम अपने अभीष्टों को न प्राप्त होकर बड़े निर्दयकर्म को करोगे १० पराक्रम से सत्यता लक्ष्मी धर्म और यश की अयोग्यता को पाओगे हे शूरवीरों में श्रेष्ठ! सेना को तोड़ो और इनको दाहिने करो ११ सञ्जय बोले कि श्रीकृष्णजी और भीमसेन की आज्ञा पाकर अर्जुन ने कर्ण और द्रोणाचार्य को उल्लङ्घन कर चारोंओर से घेरा १२ इसके पीछे क्षत्रियों में श्रेष्ठलोग उस युद्ध के शिरपर आनेवालेउत्तम क्षत्रियोंके भस्म करनेवाले पराक्रमके द्वारा चढ़ाई करनेवाले १३

अग्नि के समान वृद्धियुक्त अर्जुन के रोकने को समर्थ नहींहुए फिर दुर्योधन कर्ण और सौबल का पुत्र शकुनी यह सब १४ बाणसमूहों से कुन्ती के पुत्र अर्जुनपर वर्षा करनेलगे हे राजेन्द्र! उस श्रेष्ठ अस्त्रज्ञों में भी बड़े श्रेष्ठतम अर्जुन ने उन्हों के सब अस्त्रों को निष्फलकरके बाणों की वर्षा से आच्छादित करदिया १५ हस्तलाघवी जितेन्द्रिय अर्जुन ने अस्त्रों से अस्त्रों को हटाकर सब को तीक्ष्णधारवाले दश २ बाणों से छेदा १६ धूलि की अतिवर्षाहुई और बाणों की अति वृष्टिहुई उस समय घोर अन्धकार और महाशब्द हुआ उसदशामें न आकाश जानागया न दिशाओंसमेत पृथ्वी जानीगई १७ हे राजन्! सेनाकी धूलि से सब संसार मूढ़ और अन्धे के समान होगया उस समय उन्हों ने और हमने परस्पर नहीं पहचाना राजालोग उस वार्तालाप के द्वारा अच्छीरीति से लड़े १८ हे राजन्! रथसवार रथ से रहित हो परस्पर सम्मुख पाकर शिरों के बाल कवच और भुजाओंपर चिपटगये १६ वह रथी जिनके घोड़े सारथी मारेगये वह चेष्टा से रहित होकर मारेगये और जीवतेहुए शूरवीर रुधिर से पीड़ावान् दिखाई पड़े २० इसरीति से घोड़े सवारों समेत पर्वतों के समान मृतक हाथियों से चिपट कर विना पराक्रम के समान दृष्टि गोचरहुए २१ उसके पीछे द्रोणाचार्य संग्रामसे उत्तर दिशामें जाकर निर्धूम अग्नि के समान प्रज्वलितरूप युद्धमें नियतहुए २२ हे राजन्! पाण्डवों की सेना उस युद्ध के शिरोभाग से एकान्त में हटजानेवाले द्रोणाचार्य को देखकर अत्यन्त कम्पायमान हुई २३ हे भरतवंशिन्! दूसरी ओरवाले लोग उस प्रकाशमान शोभासंयुक्त तेज से ज्वलितरूप द्रोणाचार्यको देखकर भयभीतहुए और घूम २ कर मृतकप्रायहोगये २४ शत्रुकी सेनाके बुलानेवाले मतवाले हाथी के समान इन द्रोणाचार्य के विजय करने को ऐसे आशा नहीं करी जैसे कि दानवलोगों ने इन्द्र के विजय करने की आशा को त्यागा था २५ कितनेही उत्साह से रहितहुए कितनेही साहसी चित्त से क्रोधयुक्त हुए कोई आश्चर्ययुक्त और कोई असहन शीलहुए २६ किसी २ राजाओं ने हाथों से हाथों के अग्रभाग को मर्दन किया और कितनेही क्रोधसे मूर्च्छामानों ने दाँतों से ओठों को काटा २७ बहुतों ने शस्त्रों को फेंका अनेकों ने भुजाओं को मर्दन किया शरीर से प्रीतिकरनेवाले बड़े साहसी कितनेहीं लोग उग्र तेजस्वी द्रोणाचार्य के सम्मुख गिरे २८ हे राजेन्द्र! फिर द्रोणाचार्य के शायकों से अधिकतर

पीड़ावान् और युद्ध में अत्यन्त दुःखी पाञ्चाल लोग अच्छेप्रकार से भिड़े २६ इसके पीछे राजा विराट द्रुपद युद्ध में उस प्रकार घूमनेवाले युद्ध में कठिनता से विजय होनेवाले द्रोणाचार्य के सम्मुखगये ३० और राजाद्रुपद के तीनपोते और बड़े धनुषधारी चन्देरी देशीय द्रोणाचार्य के सम्मुख गये ३१ द्रोणाचार्य ने तीक्ष्णधारवाले तीन बाणों से उन तीनों द्रुपद के पौत्रों के प्राणों को हरा और वह मृतक होकर पृथ्वी पर गिरपड़े ३२ फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य ने युद्ध में चन्देरी केकय सृञ्जय और मत्स्यदेशीय सब महारथियों को विजयकिया ३३ हे महाराज ! इसके पीछे राजाद्रुपद और विराट ने युद्ध में क्रोधकरके द्रोणाचार्य के ऊपर बाणों की वर्षाकरी ३४ क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य ने उस बाणवृष्टि को काटकर उन दोनों विराट और द्रुपद को बाणों से ढकदिया ३५ फिर युद्ध में द्रोणाचार्य से ढकेहुए क्रोध युक्त महाक्रोध में नियत उन दोनों ने द्रोणाचार्य को बाणों से घायलकिया ३६ तब क्रोध और असहन शीलता से युक्त द्रोणाचार्य ने अत्यन्त तीक्ष्ण दो भल्लों से उन दोनों के धनुषों को काटा ३७ फिर द्रोणाचार्य के मारने की इच्छा से क्रोधयुक्त विराट ने युद्ध में दशतोमर और दशबाणों को छोड़ा ३८ और क्रोध से पूर्ण द्रुपद ने घोररूप सुवर्ण से शोभित सर्पराजके आकृतिवाली लोहे की शक्ति को द्रोणाचार्य के रथपर फेंका ३९ फिर द्रोणाचार्य ने अत्यन्त तीक्ष्णधार भल्लों से उन दशतोमरों को काटकर सुवर्ण और वैडूर्य से जटित शक्ति को भी शायकों से काटा ४० हे शत्रुमर्दन करनेवाले ! उसके पीछे द्रोणाचार्य ने पीतरङ्गवाले दो भल्लों से द्रुपद और विराट को यमपुर में भेजा ४१ विराट द्रुपद और इसीप्रकार केकयचन्देरी मत्स्य और पाञ्चाल देशियों के नाशमान होने ४२ और राजा द्रुपद के तीनों वीर पौत्रों के मरने पर द्रोणाचार्य के उस कर्म को देखकर क्रोध और दुःख से युक्त ४३ बड़े साहसी धृष्टद्युम्न ने रथियों के मध्यमें शापदिया कि वह पुरुष यज्ञों के फल और बापीआदि बनाने के पुण्य क्षत्रिय धर्म और वेद ब्राह्मणों की भक्ति से रहित हो जाय ४४ जो अपने शत्रु द्रोणाचार्य को अब जीता छोड़े अथवा उसको द्रोणाचार्यही पराजय करें उन सब धनुषधारियों के मध्य में यह प्रतिज्ञा करके ४५ शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला धृष्टद्युम्न सेनासमेत द्रोणाचार्य के सम्मुखगया और पाण्डवों समेत पाञ्चालों ने एकओर से द्रोणाचार्य को घायलकिया ४६

दुर्योधन कर्ण सौबल का पुत्र शकुनी और दुर्योधन के मुख्य २ सगे भाइयों ने युद्ध में द्रोणाचार्य को रक्षित किया ४७ फिर उपाय करनेवाले पाञ्चाल उस प्रकार बड़े २ उन महारथियों से रक्षित द्रोणाचार्य के देखने को भी समर्थ नहीं हुए ४८ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! वहां भीमसेन धृष्टद्युम्न के ऊपर क्रोधयुक्तहुआ उस पुरुषोत्तम ने उसको उग्र वचनों से घायल किया ४९ भीमसेन बोले कि द्रुपद के कुल में उत्पन्न और अस्त्रों में अच्छेकुशल अपने को क्षत्रिय माननेवाला कौन पुरुष सम्मुख नियतहुए शत्रु को देखसक्ता है ५० कौन पुरुष पिता और पुत्रों के मरने को प्राप्तकरके अधिकतर राजसभा में शपथ को खाकर भी फिर क्षमाकरे ५१ यह बाण और धनुषरूपी ईंधन रखनेवाला और अपने तेजसे अग्नि के समान वृद्धि पानेवाला द्रोणाचार्य तेज से क्षत्रियों के समूहों को भस्मकरता है ५२ आगे से पाण्डवों की सेना को नाशकरता है तुम नियत होकर अब मेरे कर्म को देखो मैं द्रोणाचार्य के सम्मुख जाता हूं ५३ क्रोधयुक्त भीमसेन यह कहकर कानतक खैंचेहुए बाणों से आपकी सेना को भगाताहुआ द्रोणाचार्य की सेना में प्रविष्ट हुआ ५४ पाञ्चालदेशीय धृष्टद्युम्न ने भी बड़ी सेना में प्रवेश करके युद्ध में द्रोणाचार्य को सम्मुख पाया तब वहां बड़ा तुमुल युद्ध हुआ ५५ हमने वैसा युद्ध न देखा था न कभी सुनाथा हे राजन् ! जैसे कि सूर्य के उदयहोने पर वह महाभयङ्कर युद्ध हुआ ५६ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र ! रथों के समूह परस्पर भिड़ेहुए दिखाई पड़े और शरीरधारियों के मृतकशरीर पड़ेहुए दीखे ५७ दूसरे स्थान में जानेवाले कोई शूरवीर मार्ग में अन्य शूरों से सम्मुखता कियेगये कोई पीठ की ओर से मुख फेरनेवाले और कोई इधर उधर से घायल कियेगये ५८ इस प्रकार वह कठिन युद्ध अत्यन्त भयानकहुआ इसके पीछे एकक्षण भर मेंही सूर्य सन्ध्या में वर्तमान होताहुआ दिखाई दिया ॥ ५९ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्ताशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १८७ ॥

एकसौ अट्ठासी का अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे महाराज ! युद्धभूमि में उन कवचधारी वीरों ने सन्ध्या में वर्तमान हज़ारकिरणों के स्वामी सूर्यनारायण का उपस्थान किया १ फिर सन्तप्त कियेहुए सुवर्ण के समान प्रकाशमान सूर्य के उदयहोने और संसार के प्रत्यक्ष होनेपर फिर युद्ध जारीहुआ २ वहां सूर्योदय से पूर्वही जो द्वन्द्वयुद्ध जारीहुए

हे भरतवंशिन्! सूर्य के उदयहोनेपर भी वहीं अच्छीरीति से भिड़े ३ रथों के साथ घोड़े घोड़ों के साथ हाथी पदातियों के साथ भी हाथी घोड़ों के साथ घोड़े और पदातियों के साथ पदाती युद्ध करनेलगे ४ भिड़ेहुए और विनाभिड़ेहुए शूरवीर युद्ध में दौड़े रात्रि में युद्ध करनेवाले कर्मकर्ता थके और सूर्य के तेज से ५ क्षुधातृषा से युक्त शरीरवाले बहुत से मनुष्य अचेत होकर सोगये शङ्ख भेरी मृदङ्गों के गर्जनेवाले हाथियों के ६ और मण्डलरूप खिंचेशब्दायमान धनुषों के बड़े शब्द स्वर्ग को स्पर्शकरनेवालेहुए ७ हे भरतर्षभ! चलनेवाले पदाती और गिरनेवालेशस्त्र हींसनेवाले घोड़े लौटनेवाले रथ ८ और पुकारते और गर्जते सेना के लोगों के बड़े कठोर शब्दहुए तब उस अत्यन्त वृद्धियुक्त कठोर शब्द ने स्वर्ग को प्राप्तकिया ९ नाना प्रकार के शस्त्रों से टूटेअङ्ग पृथ्वीपर चेष्टा करनेवालों के महान्शब्द कठिन दुःख से सुनेगये तब गिरेहुए गिरनेवाले पति घोड़े रथ और हाथियों का बड़ा दुःख वर्तमानहुआ उन सब भिड़ीहुई सेनाओं के मध्य में १० । ११ अपनों ने अपनों को दूसरों ने अपनों को और अन्यों ने अन्यों को भी मारा वीरों की भुजा से शूरवीरों पर और हाथियों पर छोड़ेहुए १२ खड्गों के समूह इस प्रकार दिखाईपड़े जैसे कि धोबियों के पास कपड़ों के ढेर होते हैं वीरों की भुजाओं से उठाकर परस्पर मारेहुए खड्गों के १३ शब्द भी ऐसे प्रकार के हुए जैसे कि धुलतेहुए वस्त्रों के शब्द होते हैं अर्धखड्ग, खड्ग, तोमर और फरसों से १४ समीपी युद्ध बड़ाकठिन और भयङ्कर हुआ वीरों ने हाथी घोड़ों के शरीरों से और राजाओं से प्रवाहन युक्त १५ शस्त्ररूपी मछलियोंसेपूर्ण रुधिर मांसरूप कीच रखनेवाली १६ पीड़ा के शब्दों से शब्दायमान पताका शस्त्रों से फेनयुक्त परलोक की ओर को बहनेवाली नदी को जारीकिया १७ बाण शक्तियों से पीड़ित थके और रात्रि में अचेत निर्बुद्धि हाथी और घोड़े सब अङ्गों को अचेष्टकरके नियतहुए १८ भुजा और चित्रित कवचों से शोभित सुन्दर कुण्डलधारी शिर और युद्ध के अन्य२ सामानों से जहां तहां सुशोभित और प्रकाशमानहुए १९ वहां कच्चे मांसाहारी जीवों के समूहों से और मरे अधमरे शूरवीरों से आच्छादित सब युद्धभूमि में रथों का मार्ग नहींरहा २० वह बड़ेघोड़े रथचक्रों के डूबजानेसे थके काँपते बाणोंसे पीड्यमान पराक्रममें नियत होकर बड़े २ उपायों से रथों को लेचले २१ जोकि श्रेष्ठ जाति के बल पराक्रम

से युक्त हाथियों के समान थे हे भरतवंशिन् ! तब सब सेना द्रोणाचार्य और अ-र्जुन के सिवाय व्याकुल भ्रान्ति से युक्त भयभीत और दुःखी होगई और वह दोनों रक्षाश्रय पीड़ावान् लोगों के रक्षा के स्थानहुए २२ । २३ दूसरे शूरवीर उन दोनों को पाकर यमलोक को गये घोड़ों की सब बड़ी सेना महाव्याकुल हुई २४ और भिड़ेहुए पाञ्चालों की सेना भी व्याकुलहुई कुछ नहीं जानागया पृथ्वीपर राजाओं का घोर नाश प्रकट होनेपर वह युद्धभूमि यमराज के क्रीड़ा स्थान के समान भयभीतों के भयको बढ़ानेवाली होगई हे राजन् ! वहां हमने सेना की धूलि से ढके और भिड़ेहुए कर्ण को नहीं देखा, न द्रोणाचार्य को; न अर्जुन को, न युधिष्ठिर को २५ । २६ न भीमसेन, नकुल, सहदेव को, न धृष्टद्युम्न, सात्यकी, दुश्शासन, अश्वत्थामा को और न दुर्योधन समेत शकुनी को देखा २७ कृपाचार्य शल्य कृतवर्मा को न दूसरों को न अपने को न पृथ्वी को और न दिशाओं को देखा २८ धूलिरूप बादल के उठनेपर घोर और कठिन भ्रान्ति में २९ हमलोगों ने दूसरी रात्रि कोही वर्तमान जाना न कौरव न पाञ्चाल और न पाण्डवलोग जानेगये ३० न दिशा आकाश पृथ्वी और न धरती की सम विषमता जानीगई तब हाथ के स्पर्शों से ज्ञात होनेवाले अपने व दूसरों के शूरवीरों को ३१ क्रोधयुक्त इच्छावान् मनुष्यों ने एक ने एक को गिराया धूलि के कठिन उठने और रुधिर के छिड़काव से ३२ अथवा वायु की शीघ्रगामिता से पृथ्वी की धूलि शान्त होगई वहां हाथी घोड़े और शूरवीर रथी पदाती ३३ रुधिर में लिप्त पारिजातक वृक्षों के वनों के समान शोभायमान हुए उसके पीछे दुर्योधन कर्ण द्रोणाचार्य दुश्शासन ३४ यहचारोंरथी चारोंपाण्डवों के साथ भिड़े दुर्योधन अपने भाई समेत नकुल और सहदेव से भिड़ा ३५ कर्ण भीमसेन के साथ और अर्जुन द्रोणाचार्य के साथ युद्ध करनेलगा सब लोगों ने सब ओर से उसघोर और बड़े भारी युद्ध को देखा रथियों में श्रेष्ठ उन उग्र पुरुषों का युद्ध दिव्य और विचित्र रथों से व्याकुल रथ के विचित्र मार्गोंसमेत हुआ ३६ । ३७ उपाय पूर्वक अपूर्व युद्ध करनेवाले परस्पर विजयाभिलाषी रथियों ने अपूर्व युद्धकर्ताओं के उस अद्भुत और विचित्र युद्ध को देखा ३८ सूर्य के समान रथोंपर चढ़ेहुए उन पुरुषोत्तमों ने बाणों की वर्षा से ऐसा ढक-दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल आच्छादित करदेता है ३९ हे महाराज !

फिर क्रोध और असहिष्णुता से युक्त वह युद्धकर्ता ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि चलायमान बिजली से युक्त शरदऋतु के बादल होते हैं ४० इसी प्रकार वह ईर्षा करनेवाले धनुषधारी और उपाय करनेवाले शूरवीर ऐसे परस्पर में भिड़े जैसे कि मतवाले हाथी भिड़ते हैं ४१ हे राजन्! निश्चयकरके समय आये विना शरीर त्याग नहीं होता है जिस स्थानपर सब महारथी एकसाथही शरीरों के छोड़नेवाले नहींहुए ४२ अर्थात् कटेहुएभी जीवयुक्तथे तब युद्धभूमि में कटेहुए भुज चरण कुण्डलधारी शिर धनुष, विशिख, फरसे, खड्ग, प्रास ४३ नालीक, क्षुद्रनाराच, नखर, शक्ति, तोमर और कारीगरों के साफ कियेहुए नाना प्रकार के अन्य उत्तम शस्त्र ४४ नानारूप के विचित्र कवचटूटे विचित्र रथ मरेहुए हाथी घोड़े ४५ और जिनके शूरवीर मारेगये ध्वजा टूटगई उन पर्वत के समान रथ और मनुष्यों से रहित जहां तहां खैंचते भयानक घोड़ों से ४६ और जिनके वीर मारेगये उन वायु के समान वारंवार दौड़नेवाले अलंकृत घोड़े, व्यजन, कुण्डल और गिरीध्वजा ४७ छत्र, भूषण, वस्त्र, सुगन्धित माला, हार, किरीट, मुकुट, पगड़ी, क्षुद्रघण्टिकाओं के समूह ४८ और हृदय पर विराजमान मणि माणिकादि से जटित चूड़ामणियों से ऐसी शोभायमान हुई जैसे नक्षत्रों के समूहों से आकाश शोभित होता है ४९ इसके पीछे क्रोधयुक्त असहनशील राजा दुर्योधनकी सम्मुखता अक्षम नकुल के साथहुई ५० फिर सैकड़ों बाणों को छोड़ते हुए नकुल ने आपके पुत्र को दाहिना किया वहां बड़े शब्दहुए ५१ अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्ध में शत्रु से दाहिने कियेहुए अपने को नहींसहा और उसको भी इसने दाहिना किया ५२ हे महाराज! आपके पुत्र दुर्योधन ने शीघ्रता सेही ऐसाकिया इसके अनन्तर बदला करने के अभिलाषी आपके पुत्र को ५३ चित्रमार्ग के ज्ञाता तेजस्वी नकुल ने रोका फिर बाणजालों से पीड्यमान करते उस दुर्योधन ने इस नकुल को सब ओर से हटाकर ५४ मुखफेरनेवाला किया उस समय सेना के लोगों ने उसकी प्रशंसाकरी फिर नकुल पिछले सबदुःखों को और आपके कुमन्त्रों को स्मरणकरके आपके पुत्र से तिष्ठ २ शब्दों को बोला ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्यष्टाशीत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १८८ ॥

एकसौनवासी का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, फिर क्रोधयुक्त दुश्शासन रथ की कठिन तीव्रता से पृथ्वी को कम्पायमान करता सहदेव के सम्मुखगया १ शत्रुओं के विजय करनेवाले सहदेव ने शीघ्रही उस आतेहुए दुश्शासन के सारथी के शिर को भल्लसे काटा २ दुश्शासन और अन्य किसी सेना के मनुष्यों ने भी सहदेव के हाथ से इस सारथी के शिरकटने को नहीं जाना ३ फिर जब न पकड़ने से घोड़े स्वेच्छाचारी चलनेलगे तब दुश्शासन ने सारथी को मराहुआ जाना ४ वह घोड़ोंकी विद्या में कुशल रथियों में श्रेष्ठ दुश्शासन युद्धभूमि में आपही घोड़ों को पकड़ कर युद्ध करनेलगा वह युद्ध भी बड़ी तीव्रता से अपूर्व और उत्तमहुआ अपने और दूसरों के शूरवीरों ने युद्ध में उसके उस कर्म की प्रशंसा करी ५ जोकि सारथी से रहित रथ की सवारी से निर्भय के समान युद्धभूमि में घूमा फिर सहदेव ने तीक्ष्णबाणों से उन घोड़ों को ढकदिया ६ बाणों से पीड्यमान वह घोड़े शीघ्रही इधर उधर को भागे और उसने बागडोरों में प्रवृत्त होने से धनुष को रखदिया और फिर धनुष से कर्म करनेवाले ने बागडोरों को छोड़ा माद्रीनन्दन ने इन २ अवकाशों पर उसको बाणों से घायलकिया ७ । ८ कर्ण आपके पुत्र को चाहता उसस्थानपर आया उसके पीछे सावधान भीमसेनने कर्ण को ९ कानतक खैंचेहुए तीनभल्लों से भुजाओं समेत छातीपर छेदा फिर कर्ण मलेहुए सर्प की समान लौटा १० और तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन को रोका तब भीमसेन और कर्ण का वह युद्ध भी बड़ा कठिनहुआ ११ बैलों के समान गर्जनेवाले खुले नेत्र क्रोधयुक्त वह दोनों बड़ी तीव्रता से परस्पर सम्मुख दौड़े १२ वहां बाणजाल के कटजानेसे उन युद्ध में कुशल भिड़ेहुए भीमसेन और कर्ण का गदा युद्ध वर्तमान हुआ १३ हे राजन्! फिर भीमसेन ने गदा से कर्ण के रथ कूबर को सौ टुकड़ेकिया यह आश्चर्य सा हुआ १४ इसके पीछे पराक्रमी कर्ण ने भीमसेन की गदा को घुमाकर भीमसेनही के रथपर छोड़ा और गदा से गदा को तोड़ा १५ फिर भीमसेन ने अपनी प्रिय गदा को कर्ण के ऊपर फेंका कर्ण ने सुन्दर पुङ्ख बड़े वेगवान् अन्य बहुत बाणों से उस गदा को फिर खण्डितकिया वह कर्ण के बाणों से हटाई हुई मन्त्र से कीलित सर्पों के समान गदा फिर

भीमसेन के पास आई १६।१७ तदनन्तर उसके आघात से भीमसेन की बड़ी ध्वजा गिरपड़ी और गदा से घायल होकर इसका सारथी अचेतहुआ १८ उस क्रोध से मूर्च्छावान् ने कर्ण के ऊपर आठ शायकों को छोड़ा हे भरतवंशिन् ! शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले हँसतेहुए महारथी भीमसेन ने उनतीक्ष्णधार तीक्ष्णबाणों से उसके ध्वजा धनुष और तूणीर को काटा १६।२० इसपीछे राधा के पुत्र कर्ण ने भी सुवर्णपृष्ठी कठिनतासे चढ़ाने के योग्य दूसरे धनुष को लेकर बाणों से उसके रीछवर्ण घोड़ों को और दोनोंआगे पीछेवाले सारथियों को मारा २१ वह रथ से रहित भीमसेन नकुल के रथपर ऐसे गया जैसे कि शत्रुओं के विजय करने वाले हनुमानजी पर्वत के शिखर को उल्लङ्घकरगये थे २२ हे राजेन्द्र ! इस प्रकारयुद्ध में प्रहार करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य अर्जुन दोनों गुरु और शिष्य ने भी अपूर्व युद्ध किया २३ तेजी से बाण को धनुष पर चढ़ाना और रथों का घुमाना इनदोनों कर्मों से मनुष्यों के नेत्र और चित्तों को मोहित किया २४ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! वह सब युद्ध करनेवाले गुरु शिष्य के उस युद्ध को जिसके समान पूर्व में कभी नहीं देखाथा देखकर युद्ध करने से बन्द होगये तब उन दोनों वीरों ने सेना के मध्य में सव्य अपसव्य रथों के मार्गों को करके परस्पर दक्षिण करना चाहा २५ अत्यन्त आश्चर्यित उनशूरवीरों ने उन दोनों के पराक्रम को देखा उनदोनों द्रोणाचार्य और अर्जुन का युद्ध ऐसा बड़ा भारी हुआ २६ जैसे कि आकाश में मांस के निमित्त दो बाजपक्षियों का होताहै फिर द्रोणाचार्य ने अर्जुन को विजय करने की इच्छा से जो २ कर्म किये २७ उन २ घातों को हँसतेहुए अर्जुन ने शीघ्रही निष्फलकिया जब द्रोणाचार्यजी अर्जुन के मारने को समर्थ नहीं हुए तब अस्त्रमार्गों में अतिप्रवीण ने अस्त्र को प्रकटकिया २८ ऐन्द्र, पाशुपत, त्वाष्ट्र और वायव्य नाम अस्त्र जो द्रोणाचार्य के धनुष से छोड़ेगये उन छोड़ेहुए अस्त्रों को अर्जुन ने निष्फल करदिया २६ जब पाण्डव ने उनके अस्त्रों को अपने अस्त्रों से विधि के अनुसार दूरकिया तब द्रोणाचार्यने बड़े दिव्य अस्त्रों से अर्जुन को ढका ३० उन द्रोणाचार्य ने विजय करने की इच्छा से जिसअस्त्र को अर्जुन के लिये प्रकटकिया अर्जुनने उसअस्त्र के नाश के निमित्त उसी अस्त्रको प्रकटकिया ३१ विधि के अनुसार अर्जुन की ओर से दिव्य अस्त्रों के निष्फल होनेसे द्रोणाचार्य ने मनसे अर्जुन की प्रशंसाकरी ३२

हे भरतवंशिन्! उस शत्रुसन्तापी शिष्य के साथ अपने को इस पृथ्वी के सब शस्त्रज्ञों के मध्य में अधिकतर माना ३३ उन महात्माओं के मध्य में अर्जुन से हटायेहुए आश्चर्य युक्त उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य ने अर्जुन को प्रीति पूर्वक रोका ३४ इसके पीछे अन्तरिक्ष में हजारों देव गन्धर्व ३५ ऋषि और सिद्धोंके समूह देखने की इच्छा से नियतहुए अप्सराओं से पूर्ण यक्ष और गन्धर्वों से संकुलित ३६ वह आकाश फिर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बादलों से युक्त होकर शोभित होता है हे राजन्! वहां जो गुप्तवचन प्रकटहुए ३७ वह वचन द्रोणाचार्य और अर्जुनकी प्रशंसासे संयुक्त सुनेगये अस्त्रोंके छोड़ने में दिशाओं को प्रज्वलितरूप किया ३८ वहां इकट्ठे होनेवाले सिद्ध और ऋषिलोगोंने कहा कि यह युद्ध न मानुषी आसुरी और राक्षसी है ३९ न दैव गान्धर्व और ब्राह्म्य है निश्चय करके यहयुद्ध अत्यन्त विचित्र और अद्भुत है ऐसा युद्ध हमने देखा है न सुना है ४० आचार्यजी पाण्डव अर्जुन से अधिक हैं और पाण्डव अर्जुन द्रोणाचार्य से बहुत अधिक हैं इन दोनों के अन्तर जानने की अन्य किसी मनुष्य की सामर्थ्य नहीं है ४१ जो शिवजी अपने दो रूप करके अपने साथ आपही युद्ध करें तब उनकी समानता करना सम्भव है उनके सिवाय इनकी समता का दूसरा कोई नहीं है ४२ आचार्यजी में केवल एक ज्ञानही नियत है पाण्डव में ज्ञानयोग दोनों नियत हैं आचार्यजी में केवल एकशूरता नियत है और पाण्डव में पराक्रम शूरता दोनों वर्तमान हैं ४३ यह दोनों बड़े धनुषधारी युद्धमें शत्रुओं के हाथ से विजय करने के योग्य नहीं यह दोनों जो इच्छाकरें तो देवताओं समेत संसारका नाशकरडालें ४४ हे महाराज! इनदोनों पुरुषोत्तमों को देखकर गुप्त जीवधारी बातों को कहतेहुए अनेक प्रकार से प्रकटहुए ४५ इसके पीछे युद्ध में पाण्डव को और गुप्तजीवों को अच्छीरीति से तपाते बड़े बुद्धिमान् द्रोणाचार्य ने ब्राह्म्यअस्त्रको प्रकटकिया ४६ तब वृक्ष पर्वतोंसमेत पृथ्वी कम्पायमान हुई और बड़ी कठोर वायुचली और समुद्र उथल पुथल हुए ४७ उस महात्मा के अस्त्र प्रकट होनेपर कौरवीय और पाण्डवीय सेनाओं समेत सब जीवमात्रों को भय उत्पन्नहुआ ४८ हे राजेन्द्र! इसके पीछे व्याकुलता से रहित अर्जुनने भी ब्रह्मअस्त्र के द्वारा उस अस्त्र को हटाया और उसी से सब शान्त होगया ४९ जब उन दोनोंने एकके पार को नहीं पाया तब संकुल युद्धके द्वारा

वह युद्ध महाव्याकुलरूपहुआ ५० इसके अनन्तर फिरभी युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य और पाण्डव अर्जुन के कठिन युद्धजारी होने पर कुछ नहीं जानागया ५१ बादलों के जाल से संयुक्त के समान बाणों के जालों से आकाश के पूर्णहोने पर अन्तरिक्षचारी कोई जीव वहां नहीं आया॥ ५२॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोननवत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १८६॥

एकसौनब्बे का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! इसप्रकार से हाथी घोड़े और मनुष्यों के विनाश वर्तमान होने पर दुश्शासन ने धृष्टद्युम्न से युद्धकिया १ स्वर्णमयी रथ पर सवार और दुश्शासन के बाणों से पीड्यमान उस धृष्टद्युम्नने क्रोधसे आपके पुत्र के घोड़ों को बाणों से ढकदिया २ हे महाराज! उसका वह रथ भी ध्वजा सारथीसमेत एकक्षणहीमें धृष्टद्युम्न के बाणों से चिताहुआ दृष्टिसे गुप्तहोगया ३ महात्मा धृष्टद्युम्नके बाणजालोंसे अत्यन्त पीड्यमान होकर आपका पुत्र उसके सम्मुख नियत होनेको समर्थ नहींहुआ ४ फिर वह धृष्टद्युम्न बाणोंसे दुश्शासन को विमुखकरके हजारों बाणोंको फैलाता युद्धमें द्रोणाचार्य के सम्मुखगया ५ उसी समय हार्दिक्य का पुत्र कृतवर्मा अपने सगे तीन भाइयों समेत मिलकर सम्मुखहुआ उन्हों ने उसको रोका ६ वह दोनों पुरुषोत्तम नकुल सहदेव उस प्रज्वलित अग्नि के समान द्रोणाचार्य के सम्मुख जानेवाले धृष्टद्युम्न के पीछे चले ७ उन सब महारथी क्रोधयुक्त पराक्रमी शुद्ध अन्तःकरण शुद्धचलन स्वर्ग को आगे करनेवाले परस्पर विजयाभिलाषी श्रेष्ठ युद्धकरते महारथियोंने उत्तम लोगों के समान युद्धकिया ८। ६ हे राजन्! पवित्र कुल कर्मवाले बुद्धिमान् उत्तम गति के अभिलाषी उनलोगों ने धर्मयुद्ध किया १० वहां अधर्मयुद्ध से युक्त विनाशस्त्रवाले नहींहुए न कर्णी, नालीक, लिप्त, वस्तिक ११ सूची, कपिश, गवास्थि और गजास्थिक नाम बाण और संश्लिष्ट पूति जिह्मग नाम बाण जोकि कण्टकादि युक्त होते हैं वह कोई नहीं थे १२ उत्तम सीधे युद्ध से ऊपर के लोकों के और कीर्ति को चाहतेहुए उन सबने सीधे और शुद्ध शस्त्रोंको धारण किया १३ तब आपके चारों शूरवीरों का युद्ध तीनोंपाण्डवोंके साथ कठिन और सबदोषों से रहित हुआ १४ हे राजन्! शीघ्र अस्त्र चलानेवाला धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव से रोकेहुए उन रथियों में श्रेष्ठ वीरों को देखकर द्रोणाचार्य के

सम्मुखगया १५ फिर रोकेहुए वह चारोंवीर उनदोनों पुरुषोत्तमों से ऐसे अच्छे भिड़े जैसे कि दो पर्वतों के मध्य में वायु टक्कर खाती हैं १६ रथियोंमें श्रेष्ठ नकुल और सहदेव दो २ रथियों के साथभिड़े इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के सम्मुख वर्तमानहुआ १७ द्रोणाचार्य की ओर जानेवाले युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न को और नकुल सहदेव के साथ भिड़ेहुए चारोंरथियोंको देखकर १८ रुधिर पीनेवालेबाणों को फैलाताहुआ दुर्योधन उस स्थानपर सम्मुखगया सात्यकी फिर भी शीघ्रता से उसके सम्मुख वर्तमानहुआ १९ वहदोनों नरोत्तम कौरव और माधव सम्मुख होकर निर्भयतासे युद्ध करनेलगे २० और प्रसन्नचित्त सब बाल्यावस्थाकी दशा के वृत्तान्तोंको स्मरणकरके वारंवार मुसकान करनेवाले और परस्पर देखनेवाले हुए २१ इसके पीछे राजादुर्योधन अपने चलन की निन्दा करता वारंवार प्यारे मित्र सात्यकी को बोला २२ हे मित्र ! क्रोधको धिक्कार लोभको धिक्कार मोह और अमर्षता को धिक्कार क्षत्रियों के आचार को धिक्कार और बल पराक्रमको धिक्कार हो २३ हे शिनियों में श्रेष्ठ ! जिस स्थानपर तुम मुझको लक्ष्य करते हो और मैं तुम को करताहूं तुम सदैवसे मेरे प्राणोंसे भी प्रियतमथे और इसीप्रकार तुम्हारा मैं भी था २४ मैं उन सब बाल्यावस्था के वृत्तान्तों को स्मरण करताहूं कि अब इस युद्धभूमि में हमारे वह सबव्यवहार प्राचीन होगये २५ हे यादव ! क्रोध और लोभसे निकृष्ट दूसरी कौनसी बात है अब युद्धजारी है बड़े अस्त्रोंका जाननेवाला हँसताहुआ सात्यकी तीक्ष्ण विशिखोंको उठाकर उस प्रकारकी बातें करनेवाले दुर्योधन से बोला हे राजकुमार ! यह सभा नहीं है न गुरु का स्थान है २६ । २७ जहांपर कि इकट्ठे होनेवाले हमलोगोंने क्रीड़ाकरीथी २८ दुर्योधन बोला हे शिनियों में श्रेष्ठ ! बाल्यावस्थामें जो हमारी क्रीड़ाथी वह कहांगई और फिर यहयुद्ध कहां समय कठिनता से उल्लङ्घनके योग्यहै २९ धनकी इच्छा और धनसे हमारा कौन सा कर्म वर्तमान है जहां कि धनके लोभसे इकट्ठे होनेवाले हम सब लड़ते हैं ३० वहां माधव सात्यकी उसप्रकारकी वार्ता करनेवाले उसराजासे बोला क्षत्रियोंका वंश सदैवसे ऐसेही चलनवालाहै इसलोकमें गुरुओंसे भी लड़तेहैं ३१ हे राजन् ! जो मैं तेरा प्यारा हूं तो मुझको मारो विलम्ब मत करो हे भरतर्षभ ! तेरे कारण उत्तमकर्म से मिलने वाले लोकों को पाऊं ३२ जो तेरीशक्ति और पराक्रमहै उसको शीघ्र मुझपर दिखला मैं दूसरों के उस बड़ेदुःखको देखा नहीं

चाहता हूं ३३ सात्यकी प्रत्यक्षमें इस प्रकार कहकर और उत्तर देकर सावधानी सेशीघ्र सम्मुख गया और आत्मापर दया नहीं की ३४ हे राजन् ! आपके पुत्र ने उस आतेहुए महाबाहु सात्यकी को रोका और बाणों से ढकादिया ३५ इसके पीछे कौरव और माधवों में श्रेष्ठ दुर्योधन और सात्यकी का युद्ध ऐसा जारी हुआ जैसे कि परस्पर क्रोधयुक्त दो उत्तम हाथियों का घोरयुद्ध होताहै ३६ क्रोध युक्त दुर्योधन ने युद्ध में दुर्मद सात्यकी को कानतक खैंचकर छोड़ेहुए दश बाणों से घायलकिया ३७ उसीप्रकार सात्यकी ने भी उसको युद्धभूमि में प्रथम पचासबाण से फिर तीस से और फिर दशबाणों से ढकदिया ३८ हे राजन् ! हँसतेहुए आपके पुत्र ने युद्ध में कानतक खैंचे हुए तीक्ष्णधार तीसबाणों से सात्यकी को घायल किया ३९ इसके पीछे क्षुरप्र से इसके बाणसमेत धनुष के दो खण्ड करदिये तदनन्तर उस हस्तलाघवीय सात्यकी ने दूसरे दृढ़धनुष को लेकर ४० आपके पुत्रपर बाणधारा को छोड़ा मारने की इच्छा से उस अकस्मात् आती हुई बाणधारा को ४१ राजा दुर्योधन ने बहुत प्रकारसे काटा इसके पीछे मनुष्य पुकारे और वेग से सात्यकी को ऐसे तिहत्तरबाण से पीड़ित किया ४२ जोकि सुनहरी पुङ्ख साफ़ कानतक खींचकर शीघ्र छोड़ेथे सात्यकी ने धनुषपर बाणोंके चढ़ानेवाले उस दुर्योधनके बाण संयुक्त धनुषको काटा ४३ और शीघ्रही बाणों से भी घायल किया हे महाराज ! वह कठिन घायल दुःखी सात्यकी के बाणों से पीड्यमान दुर्योधन रथ के भीतर बैठगया कुछ कालतक विश्राम लेकर फिर आपका पुत्र सात्यकी के सम्मुख गया ४४ । ४५ और सात्यकी के रथपर बाणजालों को छोड़तागया उसी प्रकार सात्यकी ने भी बाणों को दुर्योधन के रथपर वारंवार फेंका और वह संकुल युद्ध वर्तमान हुआ ४६ वहां फेंकेहुए और शरीरोंपर गिरतेहुए बाणों से ऐसे बड़े शब्दहुए जैसे कि सूखे हुए महावन में अग्नि के शब्द होते हैं ४७ उन दोनों के हजारों बाणों से पृथ्वी ढकगई और आकाश महादुर्गम्यरूप हुआ ४८ उस स्थानपर भी आपके पुत्र को चाहताहुआ कर्ण रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी को अधिक जानकर शीघ्र सम्मुख आया ४९ फिर महाबली भीमसेन ने उसको नहीं सहा और बहुत शीघ्र शायकों को छोड़कर कर्ण के सम्मुख गया ५० हँसते हुए कर्णने उसके तीक्ष्ण बाणोंको काटकर बाणोंसेही उसके धनुष समेत बाणों को काटकर सारथी

को मार ५१ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव भीमसेन ने गदा को लेकर युद्धमें शत्रु की ध्वजा धनुष और सारथीको मर्दनकिया ५२ इसके सिवाय उस महाबली ने कर्ण के रथ के चक्र को तोड़ा पर्वत के समान कम्पायमान कर्ण टूटे चक्रवाले रथपर नियतहुआ ५३ घोड़ों ने एक चक्र रखनेवाले रथ को बहुत विलम्बतक ऐसे चलाया जैसे सप्तऋषि रूपी घोड़े सूर्य के एक चक्रवाले रथको लेचले थे ५४ फिर असह्य कर्ण युद्ध में नाना प्रकार के बाणजाल और बहुत प्रकारके शस्त्रों के द्वारा भीमसेनसे युद्ध करनेलगा ५५ भीमसेनने कर्ण से युद्ध किया इसप्रकार उसयुद्धके वर्तमान होनेपर क्रोध से पूर्ण युधिष्ठिर ५६ नरोत्तम पाञ्चाल और पुरुषोत्तम मत्स्यदेशियों से बोला कि जो हमारे प्राण और शिर हैं और जो हमारे महारथी शूरवीरहैं ५७ वह सब पुरुषोत्तम धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे भिड़े हुए हैं तुम सब अचेत और अज्ञानोंके समान क्यों नियतहो ५८ अब तुम वहां चलो जहां गतज्वर होकर मेरे यह सब रथी क्षत्रियधर्म को आगेकरके लड़रहे हैं ५६ विजय करनेवाले और मरनेवाले होकर तुम सबलोग अभीष्टगति को पाओगे अथवा विजयकरके बड़ी दक्षिणावाले बहुत यज्ञों से पूजन करोगे ६० अथवा शरीर त्यागनेवाले तुम देवरूप होकर श्रेष्ठलोकों को पाओगे राजा की आज्ञा पाकर वह युद्धाभिलाषी महारथीलोग भी ६१ क्षत्रियधर्म को आगेकरके शीघ्रही द्रोणाचार्य के सम्मुखगये पाञ्चालों ने एक ओर से द्रोणाचार्य को तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे घायल किया ६२ और भीमसेन जिनमें मुख्य हैं उनसबलोगों ने भी एक ओर से घेरलिया पाण्डवों के तीन महारथी सीधे चलनेवालेहुए ६३ उन नकुल सहदेव और भीमसेन ने अर्जुन को पुकारा कि हे अर्जुन ! शीघ्र दौड़ो कौरवों को द्रोणाचार्य से पृथक्करो ६४ तदनन्तर पाञ्चालदेशीय इन अरक्षित आचार्यजीको मारेंगे तब अर्जुन अकस्मात् कौरवों के सम्मुख दौड़ा ६५ हे भरतवंशिन् ! फिर द्रोणाचार्य उन पाञ्चालों के जिनमें कि अग्रगामी धृष्टद्युम्न था सम्मुखहुए सब वीरों ने पांचवेंदिन द्रोणाचार्य को मर्दन किया ॥ ६६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिनवत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६० ॥

एकसौइक्यानबे का अध्याय ॥

सञ्जयबोले कि, इसके पीछे द्रोणाचार्य ने पाञ्चालोंका ऐसा विनाश किया जैसे कि पूर्वकालमें क्रोधयुक्त इन्द्र ने दानवोंका नाशकिया था १ हे महाराज !

युद्ध में द्रोणाचार्य के अस्त्र से घायल पराक्रमी महारथी भयभीत नहीं हुए २ और लड़तेलड़ाते महारथी पाञ्चाल और सृञ्जय युद्ध में द्रोणाचार्य के ही सम्मुख गये ३ बाणों को वर्षाकरके चारों ओर से घायल और ढकेहुए उन पाञ्चालों के शब्द भय के उत्पन्न करनेवाले हुए ४ महात्मा द्रोणाचार्य का अस्त्र प्रकटहोने और युद्ध में पाञ्चालों के घायल और मरनेपर पाण्डवों में भय प्रवृत्त हुआ ५ हे महाराज! तब पाण्डवों ने युद्ध में घोड़े और मनुष्यों के बड़े विनाश को देखकर विजय की आशा को त्यागकर ऐसा भयकिया ६ कि कहीं परम अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य हम सब को ऐसे नाश नहीं करदें जैसे कि चैत्र और वैशाख के महीने में भिड़ाहुआ अग्नि सूखे बन को भस्म करदेता है ७ युद्धमें युद्ध करना तो क्या उनके देखनेको भी समर्थ नहीं और धर्मका जाननेवाला अर्जुन कभी इनके साथमें लड़ेगा नहीं ८ वृद्धि में प्रवृत्त बुद्धिमान् केशवजी द्रोणाचार्य के शायकों से पीड़ित और भयभीत पाण्डवों को देखकर अर्जुन से बोले ९ कि यह धनुषधारियों में श्रेष्ठ संग्रामभूमि में धनुष का रखनेवाला किसी दशा में भी युद्ध के द्वारा इन्द्र समेत देवताओं से भी विजय करने के योग्य नहीं है १० युद्ध में शस्त्रों के त्यागनेवालेही होकर यह द्रोणाचार्य मनुष्यों से मारने के योग्य होसक्ते हैं और शस्त्रों समेत इनके मारने को किसी मनुष्य की सामर्थ्य नहीं है इसहेतु से हे पाण्डव! धर्म को छोड़कर विजय में ऐसा उद्योगकरो ११ जिससे कि यह सुवर्णमय रथवाले द्रोणाचार्य युद्धमें सबको नहीं मारें यह द्रोणाचार्य अश्वत्थामा के मरनेपर युद्ध नहीं करेंगे यह मेरा सम्मत है १२ कोई मनुष्य युद्ध में इस अश्वत्थामा का मरना द्रोणाचार्य से कहै यह सुनकर कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने इस बात को अङ्गीकार नहीं किया १३ परन्तु अन्य सब लोगों ने स्वीकार किया और युधिष्ठिर ने भी बड़ेदुःख से स्वीकार किया हे राजन्! इस के पीछे महाबाहु भीमसेन ने अपनी सेना में शत्रुओं के मारनेवाले घोररूप अश्वत्थामा नाम मालवदेश के राजा इन्द्रवर्मा का हाथी था उसको गदा से मारा १४ । १५ तब भीमसेन ने लज्जायुक्त युद्ध में द्रोणाचार्य के पास जाकर उच्चस्वर से शब्द किया कि अश्वत्थामा मारागया १६ अर्थात् अश्वत्थामा नाम से प्रसिद्ध हाथी के मारेजाने के बहाने से भीमसेन ने चित्त में छलको करके उस बात को मिथ्याकहा १७ द्रोणाचार्य भीमसेन के उस अत्यन्त अप्रिय वचन को

सुनकर चित्त से ऐसे निरुपायहुए जैसे कि जल में बालू का किनारा निरुपाय होता है १८ अपने पुत्र के पराक्रम जाननेवाले द्रोणाचार्यजी यह बात सत्य है वं असत्य है इसको ध्यान करतेहुए वह मरगया इस बात को सुनकर धैर्य से कम्पायमान नहीं हुए १९ फिर वह द्रोणाचार्य एक क्षण में ही सचेतहोकर और पुत्र को शत्रुओं से न सहने के योग्य समझकर विश्वासयुक्त हुए २० उस मा-रने के अभिलाषी ने अपने कालरूप धृष्टद्युम्न को सम्मुख होकर एकहजार तीक्ष्ण बाणों से ढकदिया २१ फिर अङ्गिराऋषि के दियेहुए दूसरे दिव्य धनुष को और ब्रह्मदण्ड के समान बाणों को लेकर धृष्टद्युम्न से युद्ध किया २२ अर्थात् उसको बड़ी बाणों की वर्षा से ढकदिया और बड़े क्रोधयुक्त होकर धृष्टद्युम्न को घायल किया २३ अर्थात् द्रोणाचार्य ने शायकों से उसके बाणों के सैकड़ों खण्ड कर-दिये और तीक्ष्णधार बाणों से ध्वजा धनुष और सारथी को भी मारा २४ धृष्ट-द्युम्न ने हँसकर दूसरे धनुष को लेकर उनको तीक्ष्ण बाणों से छाती पर घायल किया युद्ध में व्याकुलतासे रहित अत्यन्त घायल उसबड़े धनुषधारी ने तीक्ष्णधार भल्ल से फिर उसके धनुष को काटा २५ । २६ फिर अजेय द्रोणाचार्य ने सिवाय गदा और खड्ग के धनुषसमेत जो उसके बाणों के लक्ष्यहुए उन सबको काटा २७ हे शत्रुसन्तापिन्, धृतराष्ट्र! क्रोधयुक्त महोग्ररूप जीवन के नाश करनेवाले द्रो-णाचार्य ने तीक्ष्णधारवाले बाणों से घायलकिया २८ ब्रह्मअस्त्र के मन्त्रको पढ़ने वाले बड़ेसाहसी महारथी धृष्टद्युम्न ने उसके रथ के घोड़ोंको अपने रथ के घोड़ों से मिलादिया २९ हे भरतर्षभ! वेगवान् और वायु के समान शीघ्रगामी वह कपोत वर्ण आरक्त घोड़े बहुत शोभायमानहुए ३० जैसे कि वर्षाऋतु में बिजली समेत गर्जते बादल होते हैं हे महाराज! उसी प्रकार युद्ध के शिरपर मिलेहुए घोड़े भी शोभायमानहुए ३१ उस बड़े साहसी ब्राह्मण ने धृष्टद्युम्न के ईशाबन्ध रथबन्ध और चक्रबन्ध को विनाशकिया ३२ उस टूटे धनुष ध्वजा और मृतक सारथीवाले वीर धृष्टद्युम्नने बड़ी आपत्ति को प्राप्तहोकर गदा को हाथ में लिया ३३ क्रोधयुक्त सत्यपराक्रमी महारथी द्रोणाचार्य ने विशिखनाम तीक्ष्ण बाणों से उसकी फेंकी हुई उस गदा को तोड़डाला ३४ फिर नरोत्तम धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य के बाणों से टूटीहुई उस गदा को देखकर निर्मल खड्ग को और सौचन्द्रमा रखनेवाली ढाल को हाथ में लिया ३५ उस दशावाले धृष्टद्युम्न ने समय के वर्तमान होनेपर

आचार्यों में श्रेष्ठ महात्मा द्रोणाचार्य के मारने को निस्सन्देह अच्छा माना ३६ तदनन्तर अपने रथ की नीढ़पर नियत धृष्टद्युम्न मारने की इच्छा से खड्ग को औ सौचन्द्रमा रखनेवाली ढाल को उठाकर गया ३७ कठिनता से करने के योग्य कर्म को करना चाहतेहुए महारथी धृष्टद्युम्न ने युद्ध में भारद्वाज द्रोणाचार्य की छाती को छेदना चाहा ३८ और युग के मध्य युग के बन्धन और घोड़ों की जङ्घार्ध के मध्य में नियतहुआ उससमय सेना के लोगों ने उसकी प्रशंसा करी ३९ युग के कोट और रक्त घोड़ों के ऊपर नियतहुए उस धृष्टद्युम्न का अवकाश द्रोणाचार्य ने नहीं देखा वह आश्चर्य सा हुआ ४० युद्ध में द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का युद्ध ऐसे प्रकार का हुआ जैसे कि मांस के अभिलाषी शीघ्र घूमनेवाले बाज का होता है ४१ रक्त घोड़ों को बचातेहुए द्रोणाचार्य ने रथ शक्ति से उसके उन सब प्रत्येक कपोत वर्ण घोड़ों को मारा ४२ हे राजन् ! धृष्टद्युम्न के वह मरेहुये घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े तब रक्तवर्ण घोड़े उस रथ बन्धन से छूटे ४३ उस शूरवीरों में श्रेष्ठ द्रुपद के पुत्र महारथी धृष्टद्युम्न ने उत्तम ब्राह्मण के हाथ से मारेहुए उन घोड़ों को देखकर क्षमा नहीं की ४४ हे राजन् ! वह खड्गधारियों में श्रेष्ठ रथ से विहीन खड्ग को लेकर द्रोणाचार्य के सम्मुख ऐसे आनकर टूटा जैसे कि सर्प के सम्मुख गरुड़ आनकर टूटता है ४५ हे राजन् ! भारद्वाज के मारने के अभिलाषी धृष्टद्युम्न का रूप ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्वसमय में हिरण्यकश्यप के मारने में नृसिंह अवतार विष्णु का रूप था ४६ हे कौरव्य ! तब युद्ध में घूमतेहुए उस धृष्टद्युम्न ने नानाप्रकार से अत्यन्त उत्तम इक्कीस मार्गों को दिखलाया ४७।४८ खड्ग और ढाल धारण करनेवाले उस धृष्टद्युम्न ने भ्रान्त, उद्भ्रान्त, आविद्ध, आप्लुत, प्रसृत, सृत, परिवृत्त, निवृत्त, सम्पात, समुदीर्ण, नाम मार्गों को दिखलाया ४९ द्रोणाचार्य के नाश की इच्छा से युद्ध में मार्गों को दिखलाता घूमा उस खड्गधारी धृष्टद्युम्न के उन विचित्र मार्गों को घूमतेहुए ५० आकाश में इकट्ठे होनेवाले देवताओं ने और युद्ध में शूरवीरों ने आश्चर्य माना इसके पीछे द्रोणाचार्य ने हजार बाणों से ढाल और खड्ग को गिराया ५१ धृष्टद्युम्न के ढाल और खड्ग के टूटनेपर उस ब्राह्मण ने समीप से साधारण युद्ध करने के योग्य वैतस्तिकनाम बाण ५२ जो कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अर्जुन, कर्ण, प्रद्युम्न, सात्यकी और अभिमन्यु के सिवाय दूसरों के पास नहीं थे उसप्रकार के दृढ़ और बड़े

बाणों को लेकर धनुषपर चढ़ाया ५३। ५४ और सम्मुख वर्तमान पुत्र के समान धृष्टद्युम्न के मारने के इच्छावान् आचार्य ने उस बाण को छोड़नाचाहा सात्यकी ने दश तीक्ष्णबाणों से उसको काटकर ५५ आपके पुत्र और महात्माओं के देखते आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्यजीसे ग्रसेहुए धृष्टद्युम्नको छुड़ाया ५६ हे भरतवंशिन्! द्रोणाचार्य कृपाचार्य और कर्ण के मध्य में वर्तमान और रथमार्गों में घूमनेवाले सत्यपराक्रमी सात्यकी को ५७ महात्मा अर्जुन और श्रीकृष्णजी ने देखा और बहुतश्रेष्ठ धन्य है २ ऐसा कहकर उन दोनों ने उस दिव्य अस्त्रों के दूर करनेवाले अजेय सात्यकी की प्रशंसाकरी ५८। ५९ इसके पीछे अर्जुन और श्रीकृष्णजी दोनों द्रोणाचार्य के पास गये और वहां पहुँचकर अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से कहा हे केशवजी! देखो कि गुरुजी के उत्तम रथों के मध्य में क्रीड़ा करता ६० शत्रु के वीरों का मारनेवाला माधव सात्यकी मुझको फिर प्रसन्न करता है माद्री के पुत्र नकुल, सहदेव, भीमसेन और युधिष्ठिर को भी प्रसन्न करता है ६१ जो वृष्णियों की कीर्ति का बढ़ानेवाला युद्ध की शिक्षा में पूर्ण महारथियों के पास क्रीड़ा करताहुआ घूमता है ६२ उस सात्यकी को यह आश्चर्ययुक्त सिद्ध और सेना के लोग युद्ध में अजेय देखकर धन्य२ शब्दों से उसको प्रसन्न करतेहैं और सब शूरवीरों ने भी दोनों ओर से कर्मों के वर्णन द्वारा बड़ी प्रशंसा करी ॥६३॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकनवत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १९१॥

एकसौबानवे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, क्रोधयुक्त दुर्योधनादिक ने यादव सात्यकीके उस कर्म को देखकर सब ओर से शीघ्रही सात्यकी को रोका १ हे श्रेष्ठ! कृपाचार्य कर्ण और आपके पुत्रों ने युद्ध में शीघ्रता से सात्यकी को सम्मुख जाकर तीक्ष्णधार बाणों से घायल किया २ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और पराक्रमी भीमसेनने सात्यकीको चारोंओर से रक्षितकिया ३ कर्ण महारथी कृपाचार्य और उन दुर्योधनादिक ने बाणों की वर्षा के द्वारा सात्यकी को चारोंओर से रोका ४ उन महारथियों से युद्ध करते सात्यकीने उस घोररूप उठीहुई वर्षाको अकस्मात् रोका ५ महात्माओं के चलायेहुए उन दिव्य अस्त्रों को बड़े युद्धमें विधि के अनुसार अपने दिव्य अस्त्रों से रोका ६ उस राजाओं के युद्ध में वह संग्रामभूमि ऐसी कठिन विदितहुई जैसे कि पूर्व समय में उन पशुओं के मारनेवाले क्रोध

युक्त रुद्रदेवता की भूमि कठिन होती है ७ हाथ शिर धनुष और धनुषसे काटेहुए छत्र और चामरों के समूहोंसे ८ और टूटे चक्रवाले रथ गिरीहुई बड़ी ध्वजा और मृतक शूरवीर सवारों से पृथ्वी आच्छादित होगई ९ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! बाणों के पात से मरे हुए वह शूरवीर अपूर्व युद्ध में अनेक प्रकार की चेष्टाओं को करते हुए दिखाई पड़े १० वहां इसप्रकार देवासुरसंग्राम के समान घोर युद्ध के वर्तमान होने पर धर्मराज युधिष्ठिर क्षत्रियों से बोले ११ हे सावधान, महारथियो! द्रोणाचार्य के सम्मुख जावो यह वीर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य के साथ भिड़ाहुआ है १२ और सामर्थ्य के अनुसार भारद्वाजके मारने में उपाय करताहै इस बड़े युद्धमें हमको ऐसेलक्षण दिखाई देते हैं १३ कि अब क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न युद्ध में द्रोणाचार्य को मारेगा तुम और वह सब साथ होकर द्रोणाचार्य से युद्ध करो १४ युधिष्ठिर की आज्ञापाकर सृञ्जयों के सावधान महारथी द्रोणाचार्य के मारने की इच्छा से सम्मुखगये १५ मरना अवश्य है ऐसा निश्चय करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य वेग से उन सब आनेवाले महारथियों के सम्मुख वर्तमान हुए १६ उस सत्यप्रतिज्ञ के चढ़ाई करनेपर पृथ्वी कम्पायमान हुई और सेना को भयभीत करनेवाली वायु निर्घातों समेतचली १७ और सूर्य से निकलने वाली बड़ी उल्का दोनों सेनाओं को प्रकाशकरती महाभयों को प्रकट करती गिरीं १८ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! द्रोणाचार्य के शस्त्र अग्निरूप हुए रथों ने अत्यन्त शब्दकिये और घोड़ों ने अश्रुपातों को छोड़ा १९ महारथी द्रोणाचार्य भी तेज से रहित मुख हुए और उनके वामनेत्र और भुज भी फड़के २० और धृष्टद्युम्न को युद्ध में आगे देखकर उदास चित्तहुए और ब्रह्मवादी ऋषियों का स्वर्ग मिलने के लिये २१ अच्छे युद्ध से प्राणोंको छोड़नाचाहा तदनन्तर द्रुपदकी सेनाओं से चारोंओर को घिरेहुए २२ द्रोणाचार्य क्षत्रियों के समूहों को भस्म करते युद्धमें घूमनेलगे उस शत्रुओंके मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्यने बीसहजार क्षत्रियों को मारकर २३ तीक्ष्ण विशिखों से एकलाख हाथियों को मारा और बड़ीसावधानी से निर्धूम अग्नि के समान युद्ध में नियतहोकर २४ क्षत्रियों के नाशके अर्थ परमास्त्र के प्रयोगमें प्रवृत्त हुए फिर पराक्रमी भीमसेन शीघ्रही उस विरथ और टूटे बड़े अस्त्रवाले अत्यन्त व्याकुल महात्मा धृष्टद्युम्न के पास गया उसके पीछे शत्रुमर्दन करनेवाला भीमसेन धृष्टद्युम्न को अपने रथपर सवार

करने २५। २६ बाण प्रहारी द्रोणाचार्यको समीप देखकर बोला कि यहां तेरे सिवाय दूसरा महापुरुष आचार्यजी से लड़ने को उत्साह नहीं करताहै २७ इनके मारने में शीघ्रताकरो यह तुझपर भार रक्खाहुआ है इसप्रकार के वचन को सुन-कर उस महाबाहु ने सब भारके उठानेवाले २८ शस्त्रोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त दृढ़ धनुष को शीघ्र दौड़कर लिया क्रोधयुक्त और युद्धमें दुःखसे हटानेके योग्य द्रोणाचार्य के रोकने के अभिलाषी बाणोंको चलाते धृष्टद्युम्न ने बाणोंकी वर्षा से ढकदिया उनश्रेष्ठ और युद्धको शोभा देनेवाले क्रोधयुक्त दोनोंने परस्पर रोका २९। ३० और ब्राह्मय आदिक नाना प्रकार के दिव्यअस्त्रों को प्रकट किया हे महाराज! उसने युद्ध में बड़े अस्त्रों से द्रोणाचार्य को ढकदिया ३१ धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य के सब अस्त्रों को दूरकरके वशाती शिबि बाह्लीक और कौरव ३२ इन सब रक्षकों समेत द्रोणाचार्य को युद्धमें घायलकिया हे राजन्! इसप्रकारसे वह अजेय धृष्ट-द्युम्न चारोंओर को बाणों के जालों से दिशाओं को ढकता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि किरणों से सूर्य शोभित होता है द्रोणाचार्य ने फिर उसके धनुष को काट शिलीमुख बाणोंसे उसको छेदकर ३३। ३४ मर्मोंको घायलकिया तब उसने बड़ी पीड़ाको पाया ३५ पाञ्चालों के बीसहज़ार नरोत्तमों ने उसरीति से युद्ध में घूमनेवाले द्रोणाचार्य को सबओर से बाणोंकरके ढका हमने उन बाणोंसे चितेहुए महारथी द्रोणाचार्यको ऐसे नहींदेखा ३६ जैसे कि वर्षाऋतु में बादलों से ढकेहुए सूर्य को नहीं देखते हैं इसके पीछे शत्रुसन्तापी महारथी द्रोणाचार्य ने पाञ्चालदेशियों के उन बाणसमूहों को इधर उधर करके उन पाञ्चालदेशीय शूरों के मारने के अर्थ ब्रह्मअस्त्रको प्रकटकिया ३७। ३८ फिर द्रोणाचार्यजी सब सेना के मनुष्यों को मारते शोभायमानहुए और उस बड़े युद्ध में पाञ्चालों के भी वीरों को गिराया ३९ इसी प्रकार परिघाओं के रूप सुवर्ण से अलंकृत भुजाओं को गिराया युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथसे मारेहुए वह राजालोग ४० पृथ्वी पर ऐसे गिरे जैसे कि वायु से ताड़ित वृक्षगिरते हैं हे भरतवंशिन्! गिरतेहुए हाथी और घोड़ों से ४१ पृथ्वी महादुर्गम मांस और रुधिर की कीच रखनेवाली हुई पाञ्चालदेशियोंके बीसहज़ार रथसमूहोंको मारकर ४२ निर्धूम अग्निके समान प्रकाशित द्रोणाचार्यजी युद्ध में नियतहुए फिर उसीप्रकार क्रोधयुक्त प्रतापवान् द्रोणाचार्य ने ४३ भल्ल से वसुदान के शिर को शरीर से जुदाकिया फिर पांच

सौ मत्स्यदेशियों को और छःहजार सृञ्जयोंको ४४ और दशहज़ार हाथियों को मारकर दशहज़ार घोड़ोंको भी मारा क्षत्रियों के नाश के अर्थ द्रोणाचार्य को नियत देखकर शीघ्रही वह ऋषिलोग पास आये जिनके अग्रगामी अग्निदेवता थे अर्थात् विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम ४५ । ४६ वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि यह सब ब्रह्मलोकमें लेजाने के इच्छावान् सिकिता, पृश्णी, गर्ग कुलवाले और सूर्य की किरणों के पानकरनेवाले बालखिल्यऋषि ४७ भृगु और अङ्गिरा वंशीय ऋषि और जो अन्य २ पवित्रात्माऋषि और महर्षि हैं वह सब आकर इनयुद्ध के शोभा देनेवाले द्रोणाचार्यसे बोले ४८ कि तुमने अधर्मसे युद्धकिया तुम्हारे मरण का समय है हे द्रोणाचार्य ! युद्ध में शस्त्रों को रखकर सम्मुख नियतहुए हमलोगों को देखो इससे आगे फिर निर्दय कर्मकरने के योग्य नहीं हो मुख्यकरके वेद और वेदाङ्गके जाननेवाले सच्चेधर्म में प्रीति रखनेवाले ४९ । ५० तुझ ब्राह्मणका यह कर्म योग्य नहीं है हे सफल बाणवाले ! शस्त्रोंको त्यागकर सनातन मार्गपर नियत हो ५१ अब नरलोकमें तेरे रहनेका समय समाप्तहुआ तुमने पृथ्वी पर अस्त्रों के न जाननेवाले मनुष्यों को ब्रह्मअस्त्र से भस्मीभूत किया ५२ हे ब्राह्मण ! जो तुमने ऐसा कर्म किया वह अच्छा नहीं किया हे द्रोणाचार्य, ब्राह्मण ! युद्ध में शस्त्र को त्यागकरो विलम्ब न करो ५३ हे द्विजवर्य ! तुम फिर पापकर्म को नहीं करोगे वह द्रोणाचार्य उन ऋषियों के उस वचन को और भीमसेन के कहेहुए वचनको सुनकर ५४ युद्धमें धृष्टद्युम्न को देखकर उदासहुए फिर व्यथित और दह्यमान होकर द्रोणाचार्य ने कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर से ५५ अपने पुत्र के जीवने और मरने के वृत्तान्तको पूछा द्रोणाचार्यकी बुद्धि में यह दृढ़ विश्वास था कि युधिष्ठिर ५६ किसी दशा में त्रिलोकी के भी राज्य के निमित्त मिथ्या नहीं बोलेगा इसी हेतुसे उस द्विजवर्य ने उसी से पूछा दूसरेसे नहीं पूछा ५७ बाल्यावस्था से लेकर इस समयतक उस पाण्डव युधिष्ठिर में सत्य बोलने की आशा रही इसके पीछे पृथ्वी से पाण्डवोंको रहित करने के अभिलाषी शूरवीरोंके स्वामी ५८ द्रोणाचार्यको पीड्यमान जानकर गोविन्दजी धर्मराजसे बोले कि जो क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य आधेदिन भी युद्ध करेगा तो मैं सत्य २ कहता कि हूं तेरी सबसेना नाश होजायगी सो आप हम सबलोगों को द्रोणाचार्य से रक्षित करो इस स्थानपर सत्य से मिथ्या वचनही श्रेष्ठ है ५९ । ६० जीवने

के निमित्त मिथ्या बोलना मिथ्या के पापों से स्पर्श नहीं कियाजाताहै स्त्रियों में विवाहों में और गौवों के भोजनों में और ब्राह्मणों के प्रियकरने में मिथ्या कहने का पातक नहीं है उन दोनोंके इसप्रकार वार्तालाप करनेपर भीमसेन महात्मा द्रोणाचार्य के मारने के उपाय को सुनकर इस वचनको बोले हे महाराज ! तेरी सेनाके मझानेवाले मालवेन्द्र राजाका हाथी ६१।६२ जोकि ऐरावतके समान अश्वत्थामा नाम से प्रसिद्धथा वह युद्धमें पराक्रम करके मारागया था तब मैंने द्रोणाचार्य से कहा था कि हे ब्राह्मण ! अश्वत्थामा मारागया है इससे तुम भी युद्ध से लौटो परन्तु उस पुरुषोत्तम ने मेरे कहनेपर श्रद्धा और विश्वास नहीं किया ६३ । ६४ सो तुम विजयाभिलाषी होकर गोविन्दजी के वचनों को अङ्गीकार करो हे राजन् ! आप द्रोणाचार्य से अश्वत्थामा को मराहुआ कहो ६५ वह उत्तम ब्राह्मण तुम्हारे इस वचन के कहनेपर फिर कदापि युद्ध नहीं करेंगे हे राजन् ! आप इसलोकमें सत्यवक्ता प्रसिद्ध हो ६६ हे महाराज ! उसके उस वचन को सुनकर और श्रीकृष्णजी के वचनों से चलायमान होकर होतव्यता के वशीभूतहोकर कहना आरम्भकिया ६७ मिथ्यापनेके वचनों में डूबे विजय में प्रवृत्तचित्त युधिष्ठिर हाथी के शब्द को गुप्तकरके अश्वत्थामा हाथी मारागया यह शब्द बोला प्रथम उसका रथ पृथ्वी से चारअंगुल ऊंचा रहता था उस वचन के कहतेही उसके घोड़ों ने पृथ्वी को स्पर्श किया ६८ । ६६ महारथी द्रोणाचार्य युधिष्ठिर के उस वचन को सुनकर पुत्रके शोक से दुःखी जीवनसे निराशहुए७० ऋषियों के वचनों से अपने को महात्मा पाण्डवों का अपराधी मानतेहुए द्रोणाचार्य अपने पुत्रको मराहुआ सुनकर और धृष्टद्युम्नको देखकर व्याकुल और अत्यन्त अचेत होगये हे शत्रुविजयिन्, राजन्, धृतराष्ट्र ! फिर पूर्व के समान युद्ध नहीं करसके ॥ ७१ । ७२ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विनवत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १६२ ॥

एकसौतिरानवे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, राजा पाञ्चाल का पुत्र धृष्टद्युम्न उन द्रोणाचार्य को अत्यन्त व्याकुल और शोकसे विदीर्णचित्त देखकर दौड़ा १ जोकि राजाद्रुपद ने बड़ेयज्ञ में पूजनकरके द्रोणाचार्य के नाशके निमित्त ज्वलितरूप अग्निसे प्राप्त किया था २ द्रोणाचार्य के मारने के अभिलाषी बड़ी अग्नि के समान प्रज्वलित उस

धृष्टद्युम्नने बादलके समान शब्दायमान घोर और दृढ़ प्रत्यञ्चावाले अजर दिव्य और विजय करनेवाले धनुष को और विषैले सर्पकी समान अग्निरूप बाणको लेकर उस धनुषपर चढ़ाया ३।४ धनुष के मण्डल और प्रत्यञ्चा के मध्य में उस बाण का रूप ऐसे प्रकार का हुआ जैसे कि मण्डल रखनेवाले प्रकाशमान सूर्य का रूप बादलों के मध्य में होता है ५ सेना के लोगों ने धृष्टद्युम्न के उठाये हुए उस ज्वलितरूप धनुष को देखकर समय का अन्त होनाजाना ६ प्रतापवान् भारद्वाज द्रोणाचार्यने उसके चढ़ायेहुए उस बाण को देखकर शरीरके अन्त समय को जाना ७ हे राजेन्द्र! इसके पीछे आचार्यजी उस बाण के हटाने के लिये बड़े उपाय में नियतहुए परन्तु इन महात्माजी के अस्त्र प्रकट नहीं हुए ८ बाणों को छोड़तेहुए उनके चार दिन और एकरात्रि व्यतीतहुए और दिन के तीसरे पहर में उनके बाणों की नष्टता होगई ९ पुत्रके शोकसे पीड्यमान वह आचार्यजी बाणों की विनाशता को पाकर नाना प्रकार के दिव्यअस्त्रों की अप्रसन्नता से १० और ऋषियों के वचनों की प्रेरणा से अस्त्रों के त्यागने को उत्सुकहुए और पूर्व के समान क्रोधयुक्त होकर नहीं लड़े ११ हे राजन्! इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन द्रोणाचार्य के रथ को पकड़ कर धीरेपनेसे यह वचनबोले १२ कि प्रत्यक्ष है कि अपनेही कर्म में सन्तोष न करनेवाले शिक्षायुक्त ब्रह्मबन्धु आप जो युद्ध नहीं करते तो क्षत्रियोंके समूहों का नाश नहीं होता १३ सब जीवों के मध्य में किसी को दुःख न देनाही धर्म कहाहै उसके मूलरूप ब्राह्मण हैं और आप तो ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ हैं १४ हे ब्राह्मणके पुत्र! और धन की इच्छा से चाण्डाल और अज्ञानी के समान अपनी अज्ञानता से म्लेच्छों के समूह और अन्य २ प्रकार के क्षत्रियसमूहों को मारकर १५ धर्म न जाननेवाले के समान दुष्टकर्म में प्रवृत्त होकर तुम एक पुत्र के निमित्त अपने कर्मपर नियत बहुत क्षत्रियों को मारकर क्यों नहीं लज्जायुक्त होतेहो १६ जिसकेअर्थ अस्त्रोंकोलेकर और जिसको निमित्त मानकर जीवतेहो अबपीछेकी ओर से नहीं जानाहुआ वह आपका पुत्र पृथ्वी पर पड़ा सोताहै धर्मराज का वह वचन मिथ्या और सन्दिग्ध मानने के योग्य नहीं है भीमसेन के इन वचनोंको सुनकर धर्मात्मा द्रोणाचार्य उसधनुषको छोड़कर सब अस्त्रोंके त्यागनेकी इच्छा से बोले हे बड़े धनुषधारिन्! कर्ण कृपाचार्य दुर्योधन १७। १८ युद्ध में उपाय

करो यही मैं वारंवार कहता हूं पाण्डवों से तुम्हारा कल्याण होय मैं अब शस्त्रों को त्यागकरताहूं २० हे महाराज! वहां अश्वत्थामा को भी पुकारा और युद्ध में शस्त्रों को रथ के उपस्थ पर रखकर २१ सब जीवमात्र को अभयतादी और योग में प्राप्तहुए उसके पीछे प्रतापवान् धृष्टद्युम्न ने इनके उस अवकाश को जानकर २२ उस घोर धनुष को बाण समेत रथपर रखकर खड्ग को ले अपने रथसे कूदकर अकस्मात् द्रोणाचार्य के पासगया २३ धृष्टद्युम्न के आधीनता में वर्तमान उस दशावाले द्रोणाचार्य को देखकर सब संसारके गुप्त और प्रकट जीव हाहाकार करनेवाले हुए २४ उन्हों ने बड़ा हाहाकारकरके कहा कि आश्चर्य और धिकार है कि द्रोणाचार्य भी शस्त्रों को रखकर समुद्र से प्रवाह में प्रविष्ट हुए२५ बड़े तपस्वी ज्योति रूप द्रोणाचार्य ने भी इसप्रकार कहकर और योग में नियत होकर प्राचीन पुरुष शरीररूपी पुरी में निवास करनेवाले परब्रह्म को मनसे प्राप्त किया २६ मुख को कुछ ऊंचाकर छाती को आगे से रोक नेत्रों को बन्दकर सतोगुण में नियत हृदयमें धारणाको धारणकरके २७ ज्योतिरूप महा तपस्वी "ओम्" इस अविनाशी और श्रेष्ठतर एकाक्षर प्रभु देवताओं के ईश्वर को ध्यान करके २८ वह आचार्यजी साक्षात् सत्पुरुषोंसे दुष्प्राप्य स्वर्ग को चढ़े उस दशा वाले द्रोणाचार्य के होनेपर हमारी बुद्धिमें आया कि दो सूर्य हैं २९ प्रकाशोंसे पूर्ण आकाश एक से रूप का हुआ और भारद्वाजरूपी सूर्य उस सूर्य के प्रकाश में प्राप्तहुआ ३० फिर वह ज्योति पलमात्र मेंही गुप्त होगई तब अत्यन्त प्रसन्न मन देवताओं के किलकिला शब्दहुए ३१ ब्रह्मलोक में द्रोणाचार्य के जाने और धृष्टद्युम्न के प्रसन्न होने पर हम पांच मनुष्ययोनियों ने ३२ उस परमगति पानेवाले योगी महात्मा को देखा मैं, पाण्डव अर्जुन, भारद्वाज का पुत्र अश्वत्थामा, यादव वासुदेवजी, और धर्मपुत्र युधिष्ठिर इन पांचों के सिवाय अन्य सब लोगों में से किसी ने भी उन बुद्धिमान् योगसे युक्त जातेहुए भारद्वाजजी की महिमा को नहीं जाना वह ब्रह्मलोक बड़ा दिव्य देवताओंसे भी गुप्त और सब से परे है ३३।३५ परमगतिप्राप्त करनेवाले और उत्तमऋषियों समेत योग में नियत होकर ब्रह्मलोकको जाते उन शत्रुविजयी द्रोणाचार्यजीको अज्ञानीलोगों ने नहीं देखा फिर सब जीवों से धिकारी पायेहुए धृष्टद्युम्न ने उस शस्त्रत्यागी और बाण समूहों से पीड़ित अङ्ग रुधिर डालनेवाले द्रोणाचार्य के शरीर को ३६।३७

पकड़लिया उस निर्जीव देह और कुछ न बोलनेवाले के शिरसमेत मस्तक को पकड़कर ३८ खड्ग के द्वारा शरीर से पृथक् किया भारद्वाज के गिराने पर बड़ी प्रसन्नता में युक्त ३९ खड्ग को घुमाते धृष्टद्युम्न ने सिंहनाद किया वह द्रोणाचार्यजी कानतक श्वेत बाल युक्त अवस्था में पचासी वर्ष और प्रत्यक्ष में सोलहवर्ष के से विदित होते थे ४० हेराजन् ! वह तेरेही कारण से युद्धमें सोलहवर्ष की अवस्था वालेके समान युद्ध में घूमनेवालेहुए उनके मारने के समय महाबाहु कुन्ती का पुत्र अर्जुनबोला ४१ हे द्रुपद के पुत्र ! इस जीवतेहुए आचार्य को मतमारो और सब सेना के लोग भी पुकारे कि अवध्य हैं अवध्य हैं ४२ और दयावान् अर्जुन पुकार कर उसकी ओर को चला अर्जुन के और उन सब राजाओं के पुकारने पर ४३ धृष्टद्युम्न ने नरोत्तम द्रोणाचार्य को रथशय्यापरमारा फिर रुधिर से भरे गात्र वह द्रोणाचार्य रथ से पृथ्वीपर गिरपड़े ४४ और फिर वह अजेय रक्तवर्ण वाले सूर्य के समान वर्तमान हुए इसप्रकार सेना के लोगों ने युद्धमें उस मृतक को देखा ४५ हे राजन् ! फिर बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्न ने भारद्वाज के शिर को लेकर आपके पुत्रों के सम्मुख फेंकदिया ४६ आपके शूरवीर भारद्वाज के शिरको देखकर भागने में प्रवृत्तचित्त होकर सब दिशाओं को भागे ४७ हे राजन् ! जब द्रोणाचार्य स्वर्ग में नियत होकर नक्षत्रमार्ग में प्रवेशकरगये तब मैंने द्रोणाचार्य को मराहुआ देखा ४८ सत्यवती के पुत्र व्यासऋषि की क्रिया से ज्वलितरूप निर्धूम अग्नि के समान ४९ स्वर्ग को प्राप्तकरके जानेवाले बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य को देखा द्रोणाचार्य के मरनेपर उत्साह से रहित कौरव पाण्डव और सृञ्जय ५० बड़े वेग से दौड़े तब सेना छिन्नभिन्न होगई जिनके कि बहुत से मनुष्य मारेगये थे वह तीक्ष्ण धारवाले बाणों से नाशहुए ५१ और आपके शूर वीर द्रोणाचार्य के मरने पर पराजय और परलोक के बड़े भारी भय को पाकर निर्जीवों के समानहुए ५२ दोनों लोकों से रहित और भारद्वाज के शरीर को चाहते राजाओं ने मनसे धैर्य को नहीं पाया ५३ परन्तु असंख्य धड़ों से पूरित युद्धभूमि में न जासके हे महाराज ! फिर पाण्डवों ने विजय को पाकर और परलोक में बड़े यश को प्राप्तकरके ५४ बाण शङ्खों के शब्दोंसमेत बड़े सिंहनादों को किया इसके पीछे भीमसेन और धृष्टद्युम्न ५५ परस्पर मिलकर सेना में दिखाई पड़े तब भीमसेन शत्रुसन्तापी धृष्टद्युम्न से बोले कि ५६ हे पर्षत के पौत्र युद्ध में

पापी कर्ण और दुर्योधन के मरनेपर फिर मैं तुझ विजयी से मिलूंगा ५७ बड़ी प्रसन्नता से युक्त पाण्डव भीमसेन ने इतना कहकर भुजाओं के शब्दों से पृथ्वी को कम्पित किया ५८ युद्ध में उसके शब्द से भयभीत और भागने में प्रवृत्त चित्त आपके शूरवीर क्षत्रिय धर्म को छोड़कर भागे ५९ हे राजन्! तब पाण्डव लोग विजय को पाकर प्रसन्नहुए और युद्ध में शत्रुओं का नाशकरके बड़ा आनन्द पाया ॥ ६० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्रोणवधेत्रिनवत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १९३ ॥

एकसौचौरानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे राजन्! द्रोणाचार्य के मरनेपर कौरवलोग शस्त्रों से पीड्यमान और जिनके बड़े वीर मारेगये पृथ्वीपर पड़ेहुए शोक से पूर्णहुए १ और शत्रुओं को उदीर्ण अर्थात् उत्साहयुक्त जानकर वारंवार कम्पायमान अश्रुपातों से पूर्णनेत्र भयभीत होकर दुःखीहुए २ फिर उत्साह से रहित मूर्च्छा से म्लान लोगों ने बड़े पीड़ित शब्द के साथ आपके पुत्र को ऐसे मध्यवर्ती किया ३ जैसे कि पूर्व समय में हिरण्याक्ष के मरनेपर कम्पायमान रजस्वला दशों दिशाओं को देखनेवाली अश्रुपातों से पूर्ण दैत्यों की स्त्रियों ने किया था ४ नीच मृग के समान भयभीत और उन लोगों से संयुक्त वह आपका पुत्र राजा दुर्योधन नियत होने को समर्थ नहीं हुआ ५ हे भरतवंशिन्! क्षुधा तृषा से पीड़ित और म्लानचित्त वह आप के शूरवीर ऐसे उदास होगये जैसे कि सूर्य से अत्यन्त तप्तहुए मनुष्य होते हैं ६ जैसे कि सूर्य का गिरना समुद्र का सूखना मेरुपर्वत का चलायमान होना और इन्द्र का पराजय होना होय ७ उसीप्रकार भारद्वाज द्रोणाचार्य के उस असह्य मरकर गिरने को देखकर अत्यन्त भयभीत कौरवलोग भयकरके भागे ८ भय से पूर्ण गान्धार का राजा शकुनी स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य को मराहुआ सुनकर भयभीत रथियों समेत भागा ९ सूत का पुत्र कर्ण भी उस वेगवान् भागीहुई पताकाधारी बड़ी सेना को साथ लेकर भय से हटगया १० मद्रदेशियों का स्वामी शल्य भी रथ हाथी और घोड़ों से पूर्ण अपनी सेना को आगेकरके देखता हुआ हटगया ११ और जिसके बहुत से बड़े २ शूरवीर मारेगये उस सेनासे युक्त कृपाचार्यजी बड़ा खेद है बड़ा खेद है यह कहतेहुए चलेगये १२ हे राजन्! शेष बचेहुए भोजवंशीय, कलिङ्गदेशीय; आरट्टदेशीय और

बाह्लिकों की सेनासे युक्त कृतवर्मा अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से चले गये १३ और पदातियों के समूहों से युक्त भयभीत और भय से पीड़ित उलूक भी वहां गिराये हुए द्रोणाचार्य को देखकर भागा १४ दर्शनीय तरुण अवस्था युवराजपने का चिह्न रखनेवाला दुश्शासन भी हाथियों समेत भागा १५ वृषसेन गिराये हुए द्रोणाचार्यको देखकर दशहज़ार रथ और तीनहज़ार हाथीको साथ लेकर शीघ्रता से चला १६ हे महाराज ! हाथी घोड़े और रथों से युक्त पदातियों से वेष्टित महारथी दुर्योधन चलदिया १७ सुशर्मा गिरायेहुए द्रोणाचार्य को देखकर अर्जुन के मारने से बाकी बचेहुए संसप्तकों के समूहों को लेकर भागा १८ और सेनाके लोग स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य को मृतकहुआ देखकर हाथी और रथोंपर सवार होकर घोड़ोंको छोड़ २ कर सबओरसे भागे १९ उस समय कौरवलोगों में कोई पिता कोई भाई मामा पुत्र और बराबरवालों को शीघ्रगामी करते हुए भागे २० उसी प्रकार कोई २ सेनाओंको भानजों को और नातेदार आदिक मनुष्यों को चलायमान करते दशोंदिशाओं को भागे २१ कोई बिखरेहुए केश गिरते पड़ते पृथक् २ साथ दौड़नेवाले और यह सेना नहीं है यह मानते उत्साह और पराक्रमों से रहितहुए २२ और हे समर्थ ! बहुत से आपके शूरवीर कवचोंको भी त्याग २ कर भागे और सब सेना के लोगों को परस्पर में पुकारा २३ कि ठहरो २ परन्तु आप वहां नियत नहींहुए किसी २ ने जिसका सारथी मारागया उस रथसे अच्छे २ अलंकृत घोड़ों को खोलकर उनपर सवार हो शीघ्रही घोड़ों को चलायमान किया २४ उस प्रकार भयभीत रूप पराक्रम से रहित सेना के भागजाने पर विरोधी ग्राह के समान अश्वत्थामा शत्रुओं के सम्मुखगया २५ शिखण्डी आदिक प्रभद्रक, पाञ्चाल, चन्देरीदेशीय और केकयों के साथ उसका बड़ाभारी युद्धहुआ २६ और युद्ध में दुर्मद मतवाले हाथीके समान पराक्रमी और कुछेक सङ्कट से रहित अश्वत्थामा पाण्डवोंकी बहुत प्रकार की सेनाओंको मारकर २७ भागनेमें प्रवृत्त दौड़ती गिरतीहुई सेनाको देखकर दुर्योधनसे यह वचन बोले २८ हे भरतवंशिन् ! यह सेना भयभीतों के समान क्यों भागती है हे राजेन्द्र ! इस भागनेवाली सेना को युद्ध में नियत नहीं करते हो २९ और पूर्वके समान तुम अपने स्वभावमें भी नियत नहीं हो और हे राजन् ! यह कर्णआदिक भी नहीं भिड़ते हैं ३० कभी किसी पहले युद्धमें सेना नहीं भागी

हे भरतवंशिन्, महाबाहो ! क्या तेरी सेना की कुशल है २१ हे कौरव, राजन्, दुर्योधन ! किसके मरनेपर आपके उत्तम रथियों की इस सेना ने ऐसी दशाको पाया है यह सब मुझसे कहो २२ तब वह राजाओं में उत्तम दुर्योधन अश्वत्थामा के इन वचनों को सुनकर घोर और अप्रिय वृत्तान्त के कहने को समर्थ नहींहुआ २३ टूटीहुई नौका के समान शोकसमुद्र में डूबाहुआ अश्रुपातों से आर्द्रशरीर आपका पुत्र रथपर चढ़ेहुए अश्वत्थामा को देखकर २४ लज्जा से युक्त होकर कृपाचार्य से यह वचन बोला कि आपका कल्याण होय आपही यहां के उस सब वृत्तान्तको कहिये जैसे कि यह सबसेना भागी है २५ हे राजन् ! इसके पीछे वारंवार पीड़ित होतेहुए कृपाचार्यने अश्वत्थामा से वह सब वृत्तान्त कहा जैसे कि द्रोणाचार्य गिरायेगये थे २६ कृपाचार्य बोले कि हमने पृथ्वीपर अत्यन्त उत्तमरथी द्रोणाचार्य को आगे करके केवल पाञ्चालों केही साथमें युद्ध को जारीकिया २७ उसके पीछे जारीहोनेवाले युद्धमें कौरव और सोमकलोग मिलगये और परस्पर सम्मुख गर्जनेवालों ने शस्त्रों से शरीरों को गिराया २८ इस प्रकार युद्ध के जारीहोने और युद्ध में धृतराष्ट्र के पुत्रों के विनाशवान् होने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त तेरे पिताने ब्रह्मास्त्रको प्रकटकिया २९ फिर ब्रह्मास्त्रके जारी करनेवाले नरोत्तम द्रोणाचार्य ने भल्लों से हजारों सेना के लोगों को मारा ४० कालसे प्रेरित पाण्डव, केकय, मत्स्य और पाञ्चालोंकी सेना युद्धमें द्रोणाचार्यके रथको पाकर अधिकतम नाशयुक्तहुई ४१ द्रोणाचार्यने ब्रह्मास्त्रके योगसे हजार शूरवीर और दोहजार हाथियोंको मृत्यु वशकिया ४२ कानतक श्वेतबाल श्याम वर्ण अवस्थामें पचासी वर्षके वृद्ध द्रोणाचार्यजी सोलहवर्षवालेकी अवस्था के समान युद्ध में घूमनेलगे ४३ सेनाके पीड़ावान् होने और राजाओंके मरनेपर क्रोध के वशीभूत पाञ्चालों ने मुखोंको फेरा ४४ उनके कुछेक पृथक् २ होकर मुखों के फेरनेपर वह शत्रुओं के विजय करनेवाले द्रोणाचार्य दिव्य अस्त्रों को प्रकट करते उदयहुए सूर्यके समान होगये ४५ वह बाणरूपी किरण रखनेवाले आपके पिता प्रतापी द्रोणाचार्य पाण्डवों के मध्य को पाकर मध्याह्न के सूर्य के समान दुःख से देखने के योग्यहुए ४६ सूर्यके समान शोभायमान द्रोणाचार्य से भस्म होतेहुए वह सब वीर पराक्रम से हीन निरुत्साह और अचेतहुए ४७ पाण्डवों के विजयाभिलाषी मधुसूदनजी द्रोणाचार्य के बाणों से पीड्यमान सब

लोगों को देखकर यह वचन बोले कि ४८ यह शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महारथी द्रोणाचार्य मनुष्य तो क्या किन्तु इन्द्रसे भी विजयकरनेको योग्य नहीं है ४९ सो हे पाण्डव ! तुम धर्मको छोड़कर विजयकी रक्षाकरो और वह उपायकरो जिससे कि यह स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य तुम सबको युद्धमें न मारें ५० यह मेरी बुद्धि में आताहै कि यह अश्वत्थामाके मरनेपर कभी युद्ध नहीं करेंगे इस हेतु से सेना का कोई मनुष्य युद्ध में अश्वत्थामा के मरण को कहे ५१ कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने इस बात को अङ्गीकार नहीं किया अन्य सबलोगोंने इसको स्वीकार किया और युधिष्ठिर ने सब के कहने से बड़े कष्ट और खेद से स्वीकार किया ५२ और भीमसेन लज्जायुक्तहोकर आपके पितासे बोले कि अश्वत्थामा मारागया तेरे पिताने उसका विश्वास नहीं किया ५३ उस बात को मिथ्या और अपने पुत्र को प्रिय माननेवाले पिता ने तेरे मरने और जीवने को युद्ध-भूमि में राजा युधिष्ठिर से पूछा ५४ मिथ्या के भय में डूबे और विजय में प्रवृत्त चित्त युधिष्ठिर ने भीमसेनके हाथ से युद्धभूमि में मारेहुए उस अश्वत्थामानाम बड़े हाथी को ५५ जोकि पर्वत के समान शरीर मालवीय क्षत्रिय का हाथी था देखकर उच्चस्वर से उन द्रोणाचार्य से यह कहा कि ५६ जिस के निमित्त हाथ में शस्त्रको लेतेहो और जिसको देखकर जीवतेहो वह अश्वत्थामा सदैव प्यारा पुत्र युद्धमें गिराया गया ५७ और मराहुआ पृथ्वीपर ऐसे सोता है जैसे कि वन में सिंह का बच्चा होताहै वह राजा मिथ्या के दोषोंको जानताहुआभी प्रत्यक्षमें उनसे बोला कि हाथी मारागया ५८ । ५९ वह द्रोणाचार्य युद्धमें तुझको मरा हुआ सुनकर दुःखित और पीड़ित होकर दिव्य अस्त्रों का चलाना बन्द करके पूर्व के समान नहीं लड़े ६० राजा द्रुपद का निर्दयकर्मी पुत्र उस अत्यन्त व्याकुल और शोक में मग्न अचेतहुए द्रोणाचार्य को देखकर दौड़ा ६१ फिर सिद्धान्त में सावधान वह द्रोणाचार्य लोक में विहित और योग्य मृत्यु को देख कर दिव्य अस्त्रोंको त्यागकर युद्धभूमि में शरीरके त्यागने को बैठगये ६२ इसके पीछे धृष्टद्युम्नने वामहस्तसे उनके बालों को पकड़कर सब वीरों के पुकारतेहुए भी उनके शिर को काटा ६३ सब ओरसे वीरोंने कहा कि यह मारने के योग्य नहीं है और धर्मज्ञ अर्जुनभी रथ से उतर शीघ्र भुजा को उठायेहुए बारंबार यह बात कहताहुआ दौड़ा कि गुरुजी को मारना मत सजीव लेआओ ६४ । ६५

हे नरोत्तम ! इसरीति से कौरवों के और अर्जुन के निषेध करने पर भी उस निर्दयीने आपके पिताको मारा ६६ इसके पीछे भय से पीड्यमान सब सेना के लोग भागे और हे निष्पाप ! हम भी तेरे पिता के मरनेपर उत्साह से रहित हुए ६७ सञ्जय बोले कि अश्वत्थामाने युद्ध में पिता के उस मरणको सुनकर चरणसे घायल सर्प के समान कठिन क्रोधकिया ६८ हे श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र! इसके पीछे क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ऐसे अत्यन्त क्रोध से पूर्णहुआ जैसे कि बहुत से इन्धन को पाकर अग्नि प्रज्वलित होती है ६९ तब हथेली से हथेली को और दाँतों से दाँतों को घायल करके दबाया और सर्प के समान श्वास लेता हुआ रक्तवर्ण नेत्रों से क्रुद्ध हुआ ॥ ७० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिचतुर्णवत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १९४ ॥

एकसौपंचानबे का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! अधर्म से धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे हुए वृद्धब्राह्मण पिता को देखकर अश्वत्थामा ने क्या कहा १ जिसके पास वायव्य, वारुण, आग्नेय, पराक्रमी ब्रह्मास्त्र, ऐन्द्र और नारायणास्त्र यह सब सदैव वर्तमान थे २ अधर्म से युद्ध में धृष्टद्युम्न के हाथ से मारेहुए उस धर्म के अभ्यासी आचार्य जी को सुनकर अश्वत्थामा ने क्या कहा ३ जिसने इसलोक में महात्मा परशुराम जी से धनुष और वेद को पाकर गुणग्राहक ने अपने दिव्य अस्त्रों को पुत्र के अर्थ उपदेश किया ४ इस लोक में मनुष्य एक अपनेही पुत्र को अपने से अधिक गुणवान् चाहते हैं और दूसरे को किसी दशा में भी नहीं चाहते ५ महात्मा आचार्यों के पास गुप्तविद्या होती हैं वह सब विद्या भी वह अपने पुत्रके ही निमित्त देते हैं अथवा आज्ञाकारी शिष्यको देते हैं ६ हे सञ्जय ! वह शिष्य शूरवीर अश्वत्थामा उस सब विद्या को मुख्य २ बातों समेत प्राप्त करके युद्धमें द्रोणाचार्य के समान हुआ ७ शस्त्रविद्या में परशुरामजी के समान युद्ध में इन्द्र के तुल्य पराक्रम में सहस्रबाहुके समान बुद्धि में बृहस्पतिजीके समतुल्य ८ बुद्धि की स्थिरता में पर्वत के समान तेज में अग्नि के सदृश तरुणता पूर्वक गम्भीरता में समुद्र के समान और क्रोध में विषधर सर्प के समान है ९ वह इस संसार में सब से श्रेष्ठरथी दृढ़ धनुषधारी श्रम से रहित युद्ध में घूमताहुआ वायु के समान शीघ्रगामी और यमराज के समान क्रोधयुक्त है १० जिस धनुषधारी ने बाणों

की वर्षा से पृथ्वी को पीड़ित किया और सत्यपराक्रमी होकर युद्ध में पीड़ाको नहीं पाया ११ वेदव्रत से स्नान किया हुआ धनुर्वेद का पारगामी महासमुद्रके समान ऐसे व्याकुलता से रहित है जैसे कि दशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी थे १२ अधर्म से युद्ध में धृष्टद्युम्न के हाथ से मारेहुए उस धर्माभ्यासी आचार्य को सुनकर अश्वत्थामा ने क्या कहा १३ जैसे कि धृष्टद्युम्न का कालरूप यज्ञसेन का सुतहुआ उसीप्रकार द्रोणाचार्यका कालरूप द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न हुआ १४ उस निर्दय पापी क्रूर अदीर्घदर्शी धृष्टद्युम्न के हाथ से मारेहुए उन तेजस्वी आचार्यजी को सुनकर अश्वत्थामा ने क्या कहा ॥ १५ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपञ्चनवत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १९५ ॥

एकसौछियानवे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, वह नरोत्तम अश्वत्थामा छल से पापकर्मी धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे हुए पिता को सुनकर क्रोध से और अश्रुपातों से पूर्णमुखवाला हुआ १ हे राजेन्द्र ! उस क्रोधयुक्त का मुख ऐसा प्रकाशमान दिखाई पड़ा जैसे कि प्रलय के समय जीवधारियों के मारने के अभिलाषी काल का मुख होता है २ फिर अश्रुपातों से युक्त दोनों नेत्रों को वारंवार पोंछ और साफ करके क्रोध से श्वासाओं को लेताहुआ दुर्योधन से यह वचन बोला कि ३ जिस प्रकार से शस्त्रों के त्यागनेवाले मेरे पिता नीचके हाथ से मारेगये और धर्मध्वजाधारी युधिष्ठिर ने जो पाप किया वह मेरा जानाहुआ है ४ मैंने धर्मपुत्र के दुष्कर्म युक्त निर्दयता को सुना यद्यपि युद्ध में प्रवृत्त वीरों की विजय और पराजय दोनों अवश्य होती हैं ५ हे राजन् ! इन दोनों में से जो युद्धमें न्यायके अनुसार युद्धकर्ताओं का मारनाहोता है उसी की अधिक प्रशंसा कीजाती है वह दुःखदायी नहीं जानपड़ता है जैसे कि उत्तम ब्राह्मणों से देखागया है वह मेरा पिता निस्सन्देह वीरों के लोकों में गया ६ । ७ हे पुरुषोत्तम ! वह शोच के योग्य नहीं समझा जाता है जिसने कि धर्म में प्रवृत्त होकर विनाश को पाया और जोकि सब सेनाओं के देखतेहुए उनके केशोंका पकड़ना हुआहै ८ यह बात मेरे मर्मों को भेदन कररही है हाय धिक्कार है मुझको जो मेरे जीवतेहुए मेरे पिता के केश पकड़े गये ९ अब कौन से सन्तानवाले लोग अपने पुत्रों की अभिलाषा करेंगे १० जो काम से, क्रोध से, अविज्ञानसे, दर्पसे, लड़कपनसे, धर्मके विपरीत

बातों को करते हैं वह पराजित होते हैं सो इस स्थानपर धृष्टद्युम्न ने यह अधर्म से कर्म किया है ११ उस निर्दयी धृष्टद्युम्न ने निश्चयकरके मेरा अनादरकरके ऐसा कर्म किया इस हेतु से धृष्टद्युम्न उसके भयानक फलको देखेगा १२ और मिथ्यावादी पाण्डव युधिष्ठिरने भी बहुत बुरा निन्दित कर्मकिया जो आचार्यजी को शस्त्रों से रहितकिया १३ अब उस धर्मराजके रुधिरको पृथ्वी पानकरेगी हे कौरव ! मैं सत्य यज्ञ और वापी आदिकके फलकी शपथ खाताहूं १४ मैं पाञ्चालों को विनामारेहुए अपने जीवनको नहींचाहता मैं सब उपायोंसे पाञ्चालोंके मारने में उद्योग करूंगा १५ और युद्धमें पापकर्मी धृष्टद्युम्नको किसी कर्मकरके अवश्य मारूंगा १६ जब पाञ्चालोंको मारलूंगा तभी शान्तिको पाऊंगा हे पुरुषोत्तम, कौरव ! मनुष्य अपने पुत्रको जिस निमित्त चाहते हैं १७ वह बुद्धिसे प्राप्तहोनेवाले पुत्र इसलोक और परलोकमें बड़े भयसे रक्षा करते हैं बान्धवोंसे रहितके समान मेरे पिताने इस दशाको पाया १८ कि मुझ सरीके पर्वतके समान पुत्र और शिष्य के जीवते हुए युद्धभूमिमें उस दशाको पाया मेरे दिव्य अस्त्रोंको धिकार भुजाओंको धिकार और पराक्रम को भी बहुत धिकार है १६ कि मुझ सरीके पुत्र को पाकर भी जिसके बाल पकड़े गये हे भरतर्षभ ! मैं वैसाही कर्म करूंगा २० जिससे कि परलोकगामी अपने पिता के ऋण से उऋण हूंगा यद्यपि उत्तम पुरुष को अपनी प्रशंसा करनी योग्य नहीं है २१ तथापि अब मैं सत्य २ अपने पिता के मारने को न सहकर अपने पुरुषार्थ को दिखलाऊंगा और श्री कृष्णजी समेत सब पाण्डवलोग मुझ सब सेनाओं के मर्दन करनेवाले और प्रलय करनेवाले के पराक्रमको देखेंगे अब देवता गन्धर्व असुर राक्षस २२।२३ और उत्तम मनुष्य भी युद्ध में मुझ रथसवार के विजय करने को समर्थ नहींहैं इसलोक में मेरे और अर्जुन के सिवाय दूसरा अस्त्रज्ञ कहीं नहीं है २४ सेनाके मध्यवर्ती होकर मैंहीं देवसृष्टि लोगोंसे प्रयुक्त अस्त्रोंका प्रकट करनेवाला ऐसा हूं जैसे कि प्रकाशित ज्वलित अग्नियों के मध्य में सूर्य होता है २५ अब इस बड़े युद्ध में धनुष से वारंवार चलाये हुए बाण मेरे पराक्रमको दिखलाते हुए पाण्डवों को मथन करेंगे २६ हे राजन् ! आप इस युद्धभूमि में मेरे तीक्ष्ण बाणों से पूर्ण सब दिशाओं को धाराओं से संयुक्त के समान देखेंगे २७ सब ओर से भयानक शब्द करनेवाले बाणजालों को फैलाता शत्रुओं को ऐसे गिराऊंगा

जैसे कि बड़े २ वृक्षोंको वायु गिराता है २८ हे कौरव ! जो यह अस्त्रविधान संहार समेत मेरे पास है उस अस्त्रको न अर्जुन, श्रीकृष्ण, भीमसेन, नकुल, सहदेव, राजा युधिष्ठिर २६ शिखण्डी, सात्यकी और न वह दुरात्मा धृष्टद्युम्न जानता है ३० पूर्व समय में सम्मुख नियत होकर मेरे पिताने विधि के अनुसार ब्राह्मणरूप श्रीनारायणजी के अर्थ भेट निवेदन करी ३१ फिर उस भगवान् ने आप उस भेट को अङ्गीकार करके वरप्रदान मांगने की आज्ञा करी तब मेरे पिता ने नारायण नाम अस्त्रको मांगा ३२ हे राजन् ! इसके पीछे वह देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् मेरे पिता से बोले कि युद्ध में तेरे समान दूसरा कोई मनुष्य कहीं नहीं होगा ३३ हे ब्राह्मण ! यह अस्त्र विना विचारके किसी दशामें भी छोड़ना न चाहिये यह अस्त्र शत्रु को विना मारेहुए कभी लौटकर नहीं आताहै ३४ हे ब्राह्मण ! यह बात जाननेकेयोग्य नहीं है कि कैसे मारना चाहिये निश्चयकरके यह अस्त्र न मारने के योग्यको भी मारसक्ता है इस हेतु से इस अस्त्र का प्रयोग सहसा नहीं करे ३५ फिर युद्ध में रथ और शस्त्रोंका त्याग करना और प्रार्थनाकरके शत्रुओं का शरण में होना ३६ यह योग महाअस्त्र की शान्ति में संयुक्त है हे शत्रुओं के तपानेवाले ! सब रीति से चलायाहुआ यह अस्त्र युद्धमें पीड़ा देताहुआ अवध्योंको भी मारताहै ३७ मेरे पिताने उस अस्त्र को लेलिया तब प्रभु नारायणजी ने मेरे पिता से कहा कि तुम अनेक प्रकार की सबशस्त्रों की वर्षा को ३८ इस अस्त्र के द्वारा काटोगे और युद्ध में तेज से प्रज्वलित अग्निके समान होगे ऐसा कहकर वह भगवान् प्रभु अपने स्वर्गको चले गये ३६ यह नारायण नाम अस्त्र नारायणजी से मिला और पिता को प्रसन्न रखने से उसको मैंने पाया मैं उस अस्त्र से पाण्डव पाञ्चाल मत्स्यदेशीय और केकय लोगों को युद्धमें ऐसे भगाऊंगा जैसे कि शचीपति इन्द्र असुरों को भगाता है मैं जैसे २ चाहूंगा वैसेही वैसे प्रकार के मेरे बाण होकर ४० । ४१ पराक्रमी शत्रुओं पर गिरेंगे हे भरतवंशिन् ! युद्ध में वर्तमान होकर मैं अपनी इच्छानुसार पाषाणोंकी भी वर्षा को बरसाऊंगा ४२ मैं लोहेके मुखवाले बाणों से महारथियों को भगाऊंगा और तीक्ष्ण बाणों की वर्षा को बरसाऊंगा ४३ मैं शत्रुओं का तपानेवाला होकर पाण्डवों को अनादर करके महानारायणास्त्र से शत्रुओं को मारूंगा ४४ अब मित्र ब्राह्मण और गुरु से शत्रुता करनेवाला

अज्ञानी दुष्ट पाञ्चालों में नीच धृष्टद्युम्न मेरे हाथ से जीवता हुआ नहीं बचसक्ता है ४५ अश्वत्थामा के उस वचन को सुनकर सेना ने चारों ओर से मध्यवर्ती किया फिर सब पुरुषोत्तमों ने महाशङ्खों को बजाया ४६ और प्रसन्नचित्त होकर हजारों दुन्दुभी समेत भेरियों को बजाया इसी प्रकार खुर और नेमियों से अत्यन्त पीड्यमान पृथ्वी अत्यन्त शब्दायमान हुई ४७ उस कठोर शब्दने आकाश स्वर्ग और पृथ्वीको शब्दायमान किया तब बादलों के समान उस शब्द को सुनकर ४८ रथियोंमें श्रेष्ठ पाण्डवोंने मिलकर और इकट्ठेहोके विचारकिया और अश्वत्थामा ने उस प्रकार की बातों को कहके आचमन को करके ४९ उस दिव्य नारायण अस्त्र को प्रकट किया ॥ ५० ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिषण्णवत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १९६ ॥

एकसौसत्तानबे का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, हे प्रभो ! फिर उस नारायणास्त्रके प्रकटहोनेपर पीछेकी ओर से वायु चली और विनाही बादलोंके गर्जना हुई १ पृथ्वी कम्पायमानहुई महासमुद्र व्याकुल हुआ और समुद्रमें मिलनेवाले झिरनेनदी आदिक उलटे फिरने लगे २ पर्वतों के शिखर गिरपड़े और मृगोंने पाण्डवीय सेनाको वामकिया ३ सेना अन्धकार से व्याप्त हुई सूर्य प्रकाश से रहित हुआ और कच्चे मांस खाने वाले जीव अत्यन्त प्रसन्नके समान आपहुँचे ४ हे राजन् ! देवता दानव और गन्धर्व भी भयभीत हुए उस बड़ी व्याकुलताको देखकर परस्पर वार्तालापें हुईं ५ सब राजालोग अश्वत्थामाके उसघोररूप भयानक अस्त्रको देखकर बड़े पीड़ावान् और भयभीत हुए ६ धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें शोकसे अत्यन्त दुःखी और पिताके मरनेको न सहनेवाले अश्वत्थामाके साथ सेनाओंके लौटनेपर ७ आते हुए कौरवों को देखकर पाण्डवों के मध्यमें धृष्टद्युम्न की रक्षाके निमित्त कौनसा विचार हुआ हे सञ्जय ! उसको मुझे समझाकर कहो ८ युधिष्ठिरने अस्त्रके छोड़ने से पूर्वही धृष्टद्युम्नके पुत्रोंको व्यथा से घायल देखकर और फिर कठोर शब्दको सुनकर अर्जुनसे कहा कि ९ हे अर्जुन ! जैसे वज्रधारी इन्द्रके हाथसे वृत्रासुर मारा गया था उसीप्रकार युद्ध में धृष्टद्युम्न के हाथ से द्रोणाचार्य के मरनेपर युद्ध में विजयकी आशा न करनेवाले दुःखी चित्त कौरव लोग अपनी रक्षा में एकमत करके युद्धसे भागे १० । ११ कोई २ व्याकुल राजालोग उनरथोंसे जोकि घूमते थे

और जिनके पहिए यन्त्र टूटे और सारथी मारेगये व पताका ध्वजा छत्रोंसे रहित हुए और जिनके कूबर गिरपड़े १२ नीढ़ टूटे उनरथों से दूसरे रथोंपर चढ़कर कोई भय से विह्वल पदाती और आपही रथों को शीघ्र चलाते टूटे अक्ष युग रथ चक्रवाले रथों के द्वारा चारोंओर से खैंचे जाते थे १३ कोई टूटे रथों को छोड़कर पैदलही भागे और कोई घोड़ों की पीठपर ऐसे सवार थे कि जिनका आधा आसन लटकरहा था खिंचेहुए चले जाते थे १४ हाथियों के कन्धोंपर चिपटे हुए नाराचों से चलायमान आसन कितनेही शूरवीर बाणों से पीड़ित भागे हुए हाथियों के कारण से दशोंदिशाओं को शीघ्रता से गये १५ और कितनेही वीर शस्त्र वर्मों से रहित सवारियों से पृथ्वी पर पड़ेहुए और कितनेही युद्धकर्ता टूटे नीबीवाले रथ घोड़े और हाथियों से मर्दन किये हुए १६ और बहुत से शूर वीर हे पितः! हे पुत्र! इस रीति से पुकारते हुए भयभीत होकर भागे १७ मूर्च्छा से नाशवान् बलवाले योद्धाओं ने परस्पर नहीं पहचाना और कितनेही वीर अत्यन्त घायल हुए अपने पुत्र पिता मित्र और भाइयों को सवारियों पर बैठा कर कवचों को उतार के जल से धोते थे १८ द्रोणाचार्य के मरने पर सेना ऐसी दशा को प्राप्त होकर भागी धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! फिर वह सेना किस कारण से लौटी इसको तुम जानते हो तो मुझसे कहो १९ वहां हींसते घोड़े और चिङ्घाड़ते बड़ेहाथियों के शब्द रथ की नेमियों के शब्दों से युक्त सुनेजाते हैं २० यह अत्यन्त कठोरशब्द कौरवसागर में वारंवार वर्तमान होकर कियाजाता है और मेरे शूरवीरों को भी कम्पायमान करता है २१ जो यह महाकठोर रोमाञ्च को खड़ा करनेवाला शब्द सुनाजाता है वह इन्द्रसमेत तीनोंलोकों को भी पराजय करेगा यह मेरा मत है २२ मैं मानताहूं कि यह भय उत्पन्न करनेवाला शब्द वज्रधारी इन्द्र काही है द्रोणाचार्य के मरने पर साक्षात इन्द्रही कौरवों के अर्थ सम्मुख आता है २३ युधिष्ठिर ने कहा हे अर्जुन! गुरु को मृतक सुनकर उत्तम रथी अत्यन्त खड़ेहुए रोमकूप और व्याकुल हैं यह बड़ा भयकारी शब्द होता है कौरवों में अब कौन सा महारथी उन भागे और छिन्नभिन्न कौरवों को नियतकरके युद्ध के निमित्त ऐसे लौटा रहा है जैसे कि युद्ध में देवताओं का इन्द्र अपनी भागीहुई सेना को लौटाता है २४ । २५ अर्जुन बोले कि जिसके पराक्रम के आश्रित और पराक्रम में नियत कौरवलोग उग्रकर्म के निमित्त

आत्मा को प्रवृत्तकरके शङ्खोंको बजाते हैं २६ हे राजन्! तुमको जो यह सन्देह है कि शस्त्र त्यागनेवाले गुरुजी के मरने पर यह कौन पुरुष धृतराष्ट्र के भागे हुए पुत्रों को नियतकरके गर्जना करता है २७ उस लज्जावान् महाबाहु मतवाले हाथी के समान चलनेवाले व्याघ्रसदृश मुख उग्रकर्मी कौरवों को निर्भयता उत्पन्न करनेवाले २८ को जिसके कि उत्पन्न होनेपर द्रोणाचार्य ने एक हजार गौवें बड़ेयोग्य ब्राह्मणों के अर्थ दान की थीं वही अश्वत्थामा इसगर्जना को करता है २९ जिस वीर ने उत्पन्न होतेही उच्चैःश्रवानाम घोड़े के समान शब्द किया और उस शब्द से पृथ्वी समेत तीनोंलोक कम्पायमान हुए ३० और उसी शब्द को सुनकर गुप्त जीवधारियों ने उसका नाम अश्वत्थामा रक्खा हे पाण्डव, धर्मराज! अब वही शूरवीर गर्जरहा है ३१ धृष्टद्युम्न ने बड़े नीच कर्म को करके बड़े पराक्रम से जो द्रोणाचार्य को अनाथ के समान मारा है सो वह उसका नाथ सम्मुख नियत है ३२ जोकि धृष्टद्युम्न ने मेरे गुरु के बालों को पकड़ा है इससे उसकी वीरता को जानतेहुए अश्वत्थामाजी कभी उसको नहीं सहसकेंगे ३३ और आपनेभी राज्यके निमित्त द्रोणाचार्य से मिथ्यावचन कहा है यह आप सरीखे धर्मज्ञपुरुष से महा अधर्म हुआ है ३४ द्रोणाचार्य के गिराने पर स्थावर जङ्गम जीवों समेत तीनों लोकों में आपकी अपकीर्ति बहुत कालतक वैसीही जारी होगी जैसी कि बालि के मारने से श्रीरामचन्द्रजी की अपकीर्ति विख्यात हुई उन द्रोणाचार्य ने आपके ऊपर ऐसा विश्वास किया था कि यह पाण्डव युधिष्ठिर धर्म से युक्त मेरा शिष्य है कभी मिथ्या नहीं बोलेगा ३५।३६ सो सत्यरूपी कवच धारणकरनेवाले आपने गुरुजी से मिथ्या कहा कि हाथी मारागया ३७ इसके पीछे वह शस्त्रों को त्यागकर अपमान रहित ममता और चैतन्यता से रहित होकर ऐसे व्याकुल होगये जैसे कि उन समर्थ को तुमने देखा ३८ फिर सनातन धर्म को छोड़कर उन शोक से पूर्ण मुख के फेरनेवाले और पुत्र को प्यारा जाननेवाले गुरुजी को शस्त्र से मारा ३९ आपने शस्त्र त्यागनेवाले गुरुजी को अधर्म से मारा अब जो आप समर्थ हैं तो अपने मन्त्रियों समेत नाशवान् पितावाले क्रोधयुक्त आचार्य के पुत्र अश्वत्थामा से ग्रसेहुए धृष्टद्युम्न की रक्षाकरो ४० अब हम सब धृष्टद्युम्न की रक्षा करने को समर्थ नहीं हैं जो उत्तम पुरुष सब जीवों पर बड़ी कृपा और प्रीति करता है अब वह पिता

को शिर के बालों का पकड़ना सुनकर युद्ध में हमको भस्म करेगा ४१ मुझ गुरु के चाहनेवाले के अत्यन्त पुकारने पर भी धर्म को त्यागकर अपने शिष्य के हाथ से गुरुजी मारेगये ४२ हमारी अवस्था बहुत व्यतीत होगई और बहुत थोड़ी बाकी रही है अब उस शेष अवस्था का यह विकाररूप विपरीत भाव है जो आपने ऐसा अधर्म किया ४३ जो गुरुजी सदैव प्रीति करने से और धर्म से भी पिता के समान थे वह थोड़े दिन के राज्य के कारण से मरवाये ४४ हे राजन्! धृतराष्ट्र ने सम्पूर्ण पृथ्वी को राज्य में प्रवृत्त चित्तवाले पुत्रों समेत भीष्म और द्रोणाचार्य के अर्थ अर्पण करी ४५ उस प्रकार की आजीविका को पाकर सदैव प्रतिष्ठा पानेवाले सबके पूज्य गुरुजी ने सदैव मुझको अपने पुत्र से भी अधिक माना ४६ वह शस्त्र त्यागनेवाले गुरुजी तुम्हारे और मेरे देखते अथवा तुमको और मुझको देखते हुए युद्ध में मारेगये निश्चयकरके इन युद्ध करनेवाले गुरुजी को इन्द्र भी नहीं मारसक्ता था ४७ राज्यके अर्थ लोभमें लिप्तबुद्धि हम नीचलोगों ने उन सदैव उपकार करनेवाले वृद्ध आचार्यजीके साथ शत्रुताकरी ४८ बड़े खेदकी बात है कि हमलोगोंने वह महाभयानक पापकर्म किया जो उन साधुरूप द्रोणाचार्य को राज्य के सुख के लोभ से मारा ४९ मेरे गुरुजी सदैव ऐसा जानते थे कि यह इन्द्र का पुत्र मेरी प्रीति से पुत्र, भाई, पिता, ताऊआदि स्त्री समेत जीवन और सब सामान को भी त्यागकरसक्ता है ५० वह मारे जानेवाले गुरुजी मुझ राज्य के अभिलाषीकरके त्याग किये गये हे प्रभो, राजन्, युधिष्ठिर! इस कारणसे हमलोग औंधे शिर होकर नरकमें पड़ेंगे ५१ अब राज्य के निमित्त शस्त्र के त्यागनेवाले वृद्ध ब्राह्मण आचार्य महामुनि को मारकर इस जीवने से मरजानाही अच्छा है॥ ५२॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तनवत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १९७॥

एकसौअट्ठानबे का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, हे महाराज! वहां अर्जुनके वचनको सुनकर सब महारथी अच्छी बुरी बातों मेंसे कोई भी कुछ नहीं बोले १ हे भरतर्षभ! इसके पीछे क्रोधयुक्त महाबाहु भीमसेन पाण्डव अर्जुन की निन्दा करते बोले २ कि हे अर्जुन! तुम धर्म से संयुक्त ऐसे वचनों को कहते हो जैसे कि वन में वर्तमान सब धर्मों से निवृत्तव्रत में निष्ठावान् मुनि और ब्राह्मणलोग कहते हैं ३ दुःखियोंकी रक्षा

करनेवाला शत्रुओं के मारने से अपनी जीविका करनेवाला स्त्री और साधुओं में क्षमा करनेवाला क्षत्रिय शीघ्रही पृथ्वी, धर्म, यश और लक्ष्मी को पाता है ४ सो क्षत्रियों के सब गुणों से युक्त और कुलीन होकर आप अज्ञानों के समान वचनों के कहतेहुए शोभा को नहीं पाते हो ५ हे अर्जुन ! तेरा पराक्रम शचीपति इन्द्रके समानहै तुम धर्म को उल्लङ्घनकर ऐसे कर्म नहीं करतेहो जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्यादा को नहीं उल्लङ्घन करताहै ६ अब तुम्हारी प्रशंसा कौन नहीं करेगा जो तेरहवर्षके अमर्षको भी त्यागकर धर्म कोही चाहते हो ७ हे भाई ! अब तेरा चित्त प्रारब्ध से अपने धर्ममें नियत है और हे अविनाशिन् ! तेरी बुद्धि में सदैव दया रहती है ८ फिर जो धर्म में प्रवृत्त युधिष्ठिरका राज्य अधर्म से हरणकिया और द्रौपदी को सभा में लाकर शत्रुओं ने खैंचा ९ अत्यन्त मृगचर्म की पोशाक को धारण करनेवाले हम लोगों को जोकि उस दशा के योग्य न थे शत्रुओं ने तेरह वर्षतक वनवासी किया १० हे निष्पाप ! मैंने इन सब क्रोध के स्थानों में क्षमाकरके सहनकिया और क्षत्रिय धर्म में प्रवृत्त होकर हमलोगों ने यह सब वनवासादिक व्यतीत किये ११ अब मैं उस दूरहटाये हुए अधर्मको स्मरणकरके तेरी सहायता पाकर उन राज्यहरण करनेवाले नीचों को उनके साथियों समेत मारूंगा १२ प्रथम तुमने कहा था कि युद्धके निमित्त सम्मुख होनेवाले हम सबलोग सामर्थ्य के अनुसार उपाय करेंगे सो तुमहीं अब हमारी निन्दाकरते हो १३ तुम धर्म को जाना चाहते हो तेरा वचन मिथ्याहै भयसे पीड्यमान हमलोगों के मर्मनाम अङ्गोंको अपने वचनों से काटतेहो १४ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले ! तुम हम सब घायलों के घावपर निमक डालकर पीड़ादेते हो तेरे वचनरूपी भाले से पीड़ित होकर मेरा हृदय फटाजाता है १५ हे भाई ! धर्म का अभ्यासी होकर भी तू उस बड़े अधर्म को नहीं जानता है जो तू प्रशंसा के योग्य अपनी और हमारी प्रशंसा नहीं करता है १६ और वासुदेवजी के नियत होनेपर उस अश्वत्थामा की प्रशंसा को करता है जोकि हे अर्जुन ! तेरी सोलहवीं पूर्णकलाके भी योग्य नहीं है १७ आप अपने दोषों को कहतेहुए क्यों नहीं लज्जायुक्त होते हो मैं क्रोध से पृथ्वी को चीरडालूं और पर्वतों को गेरदूं १८ और इस भयानक सुनहरीमाला रखनेवाली भारी गदाको घुमाकर पर्वतों के समान वृक्षों को ऐसे तोड़डालूं जैसे कि वायु तोड़डालता

है १९ और सम्मुख आनेवाले इन्द्रके समेत देवता राक्षसगण असुर सर्प और मनुष्यों को भी भगासक्ता हूं २० हे बड़े पराक्रमिन्, नरोत्तम ! सो मुझ भाईको इस प्रकार का जाननेवाले होकर तुम अश्वत्थामा से भयकरने के योग्य नहीं हो २१ हे अर्जुन ! तुम सब सगे भाइयों समेत कुतूहल देखो मैं अकेलाही हाथ में गदा लेकर युद्ध में इसको विजय करूंगा २२ इसके पीछे द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न अर्जुन से ऐसे बोला जैसे कि अत्यन्त क्रोध युक्त और गर्जना करनेवाले नृसिंहजी से हिरण्यकशिपु दैत्य बोला था २३ धृष्टद्युम्न बोले कि हे अर्जुन ! बुद्धिमानों के ब्रह्मकर्मों को तुम जानते हो यज्ञकराना, पढ़ाना, दान देना, यज्ञ करना, दान लेना २४ छठा पढ़ना इन सब कर्मों में से किसी भी कर्म में नियत न थे इसी से द्रोणाचार्य मेरे हाथ से मारेगये हे अर्जुन ! तुम मेरी निन्दा क्यों करते हो २५ अपने धर्म से पृथक् क्षत्रियधर्म में आश्रित नीचकर्म करनेवाले द्रोणाचार्यजी दिव्य अस्त्रों से हम लोगों को मारते थे २६ और इसीप्रकार माया को प्रकट करनेवाले क्षमा शान्ति से रहित नाममात्र अपने को ब्राह्मण कहने और माननेवाले द्रोणाचार्य को जो पुरुष माया सेही मारे उसमें हे अर्जुन ! कौन सी बात की अयोग्यता है २७ इस रीतिकरके मेरे हाथ से उनके मरनेपर जो द्रोणाचार्य का पुत्र क्रोधसे महाभयकारी शब्दों को करता है इससे मेरी क्या हानि होसक्ती है २८ मैं इसको अपूर्व नहीं मानताहूं क्योंकि यह अश्वत्थामा युद्ध के मिसकरके कौरवों का विध्वंस करवावेगा २९ जो तुम धर्म के अभ्यासी होकर मुझको गुरु का मारनेवाला कहते हो इसका यह वृत्तान्त है कि मैं द्रुपद का पुत्र होकर उन्हीं के मारने के अर्थ अग्नि से उत्पन्न हुआहूं ३० हे अर्जुन ! युद्ध में जिस युद्ध करनेवाले का कार्याकार्य समान होय उसको कैसे ब्राह्मण व क्षत्रिय कहनायोग्य है ३१ जो क्रोध से मूर्च्छावान् ब्रह्मास्त्र के द्वारा अस्त्र न जाननेवालों को मारे वह पुरुषोत्तम किसप्रकार से सब उपायों के द्वारा मारने के योग्य नहीं है ३२ हे धर्म के मूल जाननेवाले, अर्जुन ! उस विपरीत धर्मवाले और उन पूर्वधर्म जाननेवालों के विष के समान द्रोणाचार्य को जानबूझ कर मेरी निन्दा क्यों करता है ३३ और मैंने निरादरकरके उस निर्दय रथी को गिराया है इसके बदले में हे अर्जुन ! मेरी प्रशंसाकरके क्यों नहीं मुझ को प्रसन्न करते हो ३४ हे अर्जुन ! मेरे हाथ से उस कालाग्नि के समान अथवा अग्नि,

सूर्य और विष के सम तुल्य द्रोणाचार्य के काटेहुए भयानक शिर को क्यों नहीं प्रशंसाकरते हो ३५ जिसने युद्ध में मेरे बांधवों को मारा दूसरे के बांधवों को नहीं मारा उसके मस्तक को काटकर मुझको भी विगतज्वर होना अवश्य योग्य है इसीसे मैं उसके ज्वर से रहितहुआ ३६ परन्तु एक वह बात मेरे मर्म-स्थलों को काटरही है अर्थात् पश्चात्ताप होरहा है कि जो मैंने उनके शिर को निषाददेश में उस प्रकार से नहीं फेंका जैसे कि जयद्रथ का शिर फेंकागया था ३७ हे अर्जुन! जो शत्रु का मारना अधर्म सुनाजाता है तो मारना अथवा माराजाना यह क्षत्रियों केही धर्म हैं ३८ हे पाण्डव! वह शत्रु धर्मसंयुक्त मेरे हाथ से युद्ध में ऐसे मारागया है जैसे कि पिता का मित्र शूरवीर भगदत्त तेरे हाथ से मारागया है ३९ तुम भीष्मपितामह को मारकर युद्ध में अपना धर्म मानतेहो और मेरे हाथसे पापीशत्रु के मारेजाने पर किसकारण से अधर्म मानते हो ४० हे अर्जुन! मैं नातेदारी से झुकाहुआ हूं तुम मुझ झुकेहुए नातेदार से इसप्रकार कहने के योग्य नहीं हो जैसे कि अपने शरीर से सोपान बनानेवाले बैठेहुए व्याकुल हाथी से कोई बात कहना अयोग्य है ४१ और मैं द्रौपदी और द्रौपदी के पुत्रों के कारण से तेरे सब विपरीत वचनों को सहताहूं ४२ मेरेकुल की परम्परा से इन आचार्यजी के साथ मेरी शत्रुता चलीआती थी और प्रसिद्ध थी और संसार जानता है क्या तुम नहीं जानते हो ४३ और हे अर्जुन! बड़ा पाण्डव भी मिथ्यावादी नहीं है और मैंभी अधर्म का करनेवाला नहीं हूं शिष्यों का पापी शत्रु मारागया युद्धकरो अब सब तरह से तेरी विजय है ॥ ४४ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणयष्टनवत्युपरिशततमोऽध्यायः ॥ १९८ ॥

एकसौ निन्नानबे का अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, जिस बुद्धिमान् महात्मा ने अङ्गों समेत चारों वेदों को न्याय के अनुसार पढ़ा और जिस लज्जावान् में साक्षात् धनुर्वेद नियत है १ उसी प्रकार जिस महर्षि के पुत्र द्रोणाचार्य के पुकारने पर भी नीचबुद्धि निर्दयी क्षुद्र-बुद्धि गुरुघाती धृष्टद्युम्न ने प्रहार किया २ जिस पुरुषोत्तम की कृपा से युद्ध में उन दिव्य कर्मों को करते हैं जोकि देवताओंसे भी होने कठिन हैं उस द्रोणाचार्य के पुकारनेपर नेत्रों के समक्ष पापकर्मी धृष्टद्युम्न ने मारडाला ऐसे स्थानपर क्रोध नहीं करनाहोता है इसीसे इस क्षत्रियधर्म को और क्रोध को धिकार है ३। ४

सब पाण्डव व राजालोग और पृथ्वीपर जो धनुषधारी हैं उन्हों ने इस बातको सुन कर धृष्टद्युम्न से क्या कहा हे सञ्जय! वह मुझ से कहो ५ सञ्जय बोले हे राजन्! उस निर्दयकर्मी द्रुपद के पुत्र के उन वचनों को सुनकर सब राजालोग मौन होगये ६ फिर अर्जुन तिरछी आँख से धृष्टद्युम्न को तिरछा देखकर अश्रुपातों समेत बड़ी श्वासाओं को लेकर धिक्कार है २ ऐसा वचन बोला ७ हे राजन्! युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण और अन्य २ लोग भी अत्यन्त लज्जायुक्त हुए तब सात्यकी यह वचन बोला ८ कि यहां कोई पुरुष नहीं है जो इस पापपुरुष नरोंमें नीच अकल्याण वचन कहनेवालेको शीघ्रमारे ९ यह सब पाण्डव उस पापकर्म के कारणसे निन्दापूर्वक तुझको ऐसा बुरा कहते हैं जैसे कि ब्राह्मणलोग चाण्डालको बुरा कहते हैं १० इस बड़े पापको करके शोभा-यमान सभा में प्राप्त सब साधुओं से निन्दितहोकर बात करने में किसीप्रकार से भी लज्जाको प्राप्त नहीं होता है ११ हे नीच! क्यों नहीं तेरी जिह्वा सौटुकड़े होती है और मस्तक नहीं फटता है जो पुकारतेहुए गुरुकी अधर्मसे रक्षा नहीं की १२ तू पाण्डव और सब अन्धक वृष्णियों से कहने को योग्य है जो पाप-कर्म को करके सब जनसमूहों में अपनी प्रशंसाको करता है १३ इसप्रकार के अकार्य को करके गुरु की निन्दा करताहुआ तू मरने के योग्य है एकमुहूर्त भी तेरे जीवन से प्रयोजन नहीं है १४ तेरे सिवाय कौन सा उत्तम अथवा नीच पुरुष होगा जो धर्मात्मा सत्पुरुष गुरुके शिरको पकड़कर मारनेको निश्चयकरे १५ तेरे सातपुरुष आगे के और सात पीछेके तुझ कुलकलङ्कीको पाकर अपकीर्तिके साथ नरक में डूबे १६ और जो तैंने नरोत्तम भीष्मजी के विषय में अर्जुन से कहा वह तेरा कहना वृथा है क्योंकि उस महात्मा ने अपने आप अपना नाश नियत किया था १७ उसका भी मारनेवाला वह तेराही सगाभाई है जो बड़ापाप करनेवाला है राजा पाञ्चालों के पुत्रोंके सिवाय इस पृथ्वीपर दूसरा पाप करने वाला नहींहै १८ निश्चयकरके भीष्म का भी नाश करनेवाला तेरेही पिता से उत्पन्नहुआ है जिस निमित्तसे कि वह शिखण्डी रक्षितकियाथा इसीसे वह उस महात्माका मृत्युरूप हुआ १९ सब साधुओं से धिक्कार युक्त तुझको तेरे सगे भाइयों समेत पाकर मित्र और गुरु से शत्रुता करनेवाले नीच पाञ्चाल धर्म से रहितहुए २० फिर इसप्रकार के वचनको जो मेरे सम्मुख कहैगा तो वज्र के

समान गदासे तेरे शिरको तोडूंगा २१ मनुष्य तुझ ब्रह्महत्या करनेवालेको देखकर सूर्यका दर्शन करते हैं हे पापिन् ! तेरी ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तके निमित्तहै २२ हे अत्यन्त दुराचारी, पाञ्चाल ! मेरे आगे मेरे गुरुकी और गुरुके भी गुरुजी की निन्दा करताहुआ तू लज्जा को नहीं प्राप्तहोता है २३ ठहरो २ मेरी गदाके इस एकप्रहार को सहो फिर मैं भी तेरी गदा के बहुत प्रहारों को सहूंगा २४ यादव सात्यकी के इसप्रकार कठोर अक्षर और शब्दवाले वचनों से निन्दायुक्त होकर अत्यन्त क्रोधसे पूर्ण हँसताहुआ धृष्टद्युम्न उस क्रोध भरे सात्यकी से बोला २५ हे माधव ! हम सुनते हैं और क्षमा भी करते हैं सदैव अनार्य नीचपुरुष तू साधु पुरुषकी निन्दाकिया चाहताहै २६ इससंसार में क्षमाकरनाही उत्तम कहाजाताहै परन्तु पापी पुरुष क्षमा करने के योग्य नहीं होता है पापात्मा पुरुष क्षमावान् पुरुष को ऐसा मानलेता है कि मैंने इसको विजयकरलिया २७ सो नीचचलन नीच बुद्धि पापका निश्चय करनेवाला तू केशके अग्रभाग से नखके अग्रभागतक कहने के अयोग्य होनेपर कहना चाहताहै २८ जो खण्डित ध्वजा और शरीर के त्यागने के अर्थ युद्धभूमिमें बैठाहुआ वह भूरिश्रवा तुझ निषेध कियेहुए के हाथसे मारागया उससे अधिकपाप कौनसा होसक्ताहै २९ मैंने युद्धमें दिव्यअस्त्र से मारनेवाले और उत्तमशस्त्रवाले द्रोणाचार्यजी को माराहै इसमें कौनसा पाप किया है ३० हे सात्यकिन् ! जो पुरुष युद्धभूमिमें न लड़नेवाले शरीरत्यागने को आसनपर बैठेहुए शत्रुओंके हाथसे टूटी भुजावाले मुनिको मारे वह कैसे वार्तालाप करसक्ता है ३१ जब उस पराक्रमीने चरणोंसे पृथ्वीपर डालकर खैंचा तब बड़े पुरुषार्थी और पुरुषोत्तम होकर उसको क्यों नहीं मारा ३२ जब पूर्वमें अर्जुनने विजयकरलिया उसके पीछे तुझनीच ने उस प्रतापी शूरवीर भूरिश्रवाको मारा ३३ और द्रोणाचार्यजी जहां २ पाण्डवीय सेनाको भगातेथे वहां २ मैंभी हजारोंबाणों को फैलाता जाताथा ३४ सो तुम आप चाण्डालके समान इसप्रकारके कर्म को करके और कहनेके अयोग्य होकर किसकारणसे कठोर वचनोंके कहनेको योग्य हो ३५ हे वृष्णियोंके कुलमें नीच ! तुम्हींइस कर्मके करनेवाले हो और इस पृथ्वी पर पापकर्मोंके उत्पत्तिस्थान होकर फिर कहो ३६ अथवा मौनरहो अब कभी तुम इस अयोग्य विपरीत बातके कहनेको योग्य नहीं हो ३७ जो फिर कभी अपनी निर्बुद्धितासे ऐसे कठोर वचन मुझसे कहोगे तो मैं बाणों से तुझको यमलोक में

पहुँचाऊंगा ३८ हे मूर्ख! केवल धर्महीसे विजयकरना सम्भव नहींहै अबउन्होंका भी अधर्मसे कियाहुआ कर्म जैसे प्रकारहै उसको भी सुनो ३९ हेसात्यकिन्! प्रथम पाण्डव युधिष्ठिर को अधर्म से ठगा और अधर्महीसे द्रौपदीको दुःखदिया ४० हे अज्ञानिन्! उसीप्रकार से द्रौपदी समेत सब पाण्डवोंको अधर्म सेही वनवासी किया और सम्पूर्ण धनको हरलिया ४१ और दूसरेसे प्रेरणा कियाहुआ मद्रदेश का राजा शल्य अधर्म सेही अपनी ओरको बुलालिया और बालक अभिमन्यु को भी अधर्महीसे मारा ४२ और इस ओर से भी शत्रुओं के पुरों के विजय करनेवाले भीष्मजी भी अधर्महीसे मारेगये और तुझ धर्मज्ञ के हाथ से भूरि-श्रवा क्षत्रिय भी अधर्म करकेही मारागया ४३ हे यादव! इस प्रकार विजय की रक्षा करनेवाले धर्म के भी ज्ञाता वीर पाण्डवों से और अन्य २ लोगों से भी युद्ध में ऐसे २ कर्म कियेगये ४४ वह उत्तम धर्म बड़ी कठिनता से जानने के योग्य हैं और अधर्म भी बड़े कष्ट से जानने के योग्य हैं कौरवों के साथ युद्ध करो और पितृलोक में मत जावो ४५ सञ्जय बोले कि इस प्रकार कठोर रूक्ष वचनों को सुनकर श्रीमान् सात्यकी कम्पायमानों के समान हुआ ४६ उसके वचनों को सुनकर क्रोध से रक्तनेत्र सात्यकी ने सर्प के समान श्वास लेकर रथपर धनुष धर हाथ में गदा को लिया ४७ और धृष्टद्युम्न के पास जाकर क्रोध से यह वचन बोला कि तुझको कठोर वचन नहीं कहूंगा किन्तु तुझ वध के योग्य को वधही करूंगा ४८ उस बड़े पराक्रमी और अत्यन्त क्रोधयुक्त यमराज के समान नाश करनेवाले अकस्मात् धृष्टद्युम्न के सम्मुख आतेहुए सात्यकी को ४९ वासुदेवजी की आज्ञा से महाबली भीमसेन ने शीघ्रही रथ से कूदकर अपनी भुजाओं से रोका ५० बड़ा पराक्रमी पाण्डव भीमसेन उस प्रकार क्रोध में पूर्ण भागतेहुए वेगवान् सात्यकी को बड़े बल से पकड़कर चला ५१ उस भीमसेन ने दोनों चरणों को पकड़के नियत होकर उस पराक्रमियों में श्रेष्ठ सात्यकी को बड़े बलसे छठवें चरणपर पकड़ा ५२ हे राजन्! तब सहदेव शीघ्रही रथ से उतरकर पराक्रमी से पकड़ेहुए सात्यकी से बड़ी मधुर वाणी से यह वचन बोला ५३ कि हे श्रेष्ठ, पुरुषोत्तम! अन्धक, वृष्णी और पाञ्चालों से श्रेष्ठ हमारा दूसरा कोई उत्तम मित्र नहीं हैं ५४ उसी प्रकार अन्धक वृष्णी और मुख्यकर श्रीकृष्णजी का मित्र हमारे सिवाय दूसरा नहीं विद्यमान है ५५ हे सात्यकिन्! समुद्र के

अन्त पर्यन्त खोजना करने से भी पाञ्चालों का ऐसा उत्तम दूसरा मित्र नहीं है जैसे कि पाण्डव और वृष्णी हैं ५६ सो आप ऐसे मित्र हैं उसीप्रकार मत्स्य देशों में आपके इसप्रकार मित्र हैं जैसे कि आप हमारे हैं उसी प्रकार हम आप के हैं ५७ आप सब धर्मों के ज्ञाता होकर हे सात्यकिर् ! तुम मित्रधर्म को विचारकरके इस धृष्टद्युम्न से क्रोध को दूरकरके शान्त होजावो ५८ तुम इस धृष्टद्युम्न के कहने को क्षमाकरो और धृष्टद्युम्न तुम्हारे कहने को क्षमाकरै और हम भी क्षमाकरनेवाले हैं जितेन्द्रिय क्षमावान् होने के सिवाय दूसरी कोई बात उत्तम नहीं होती ५९ हे श्रेष्ठ ! सहदेव के समझाने से सात्यकी के शान्त होजाने पर राजा पाञ्चाल का पुत्र धृष्टद्युम्न यह वचन बोला ६० हे भीमसेन ! इस युद्ध के मद से संयुक्त सात्यकी को छोड़ दो यह मुझको ऐसे पावेगा जैसे कि वायु पर्वत को पाता है ६१ जबतक मैं युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से इसके क्रोध व युद्ध के उत्साह और जीवन को दूर करदूं ६२ फिर मुझको क्या करना योग्य है जो यह पाण्डवों का बड़ा कर्म वर्तमान हुआ और यह कौरव आते हैं ६३ इन सब को तो युद्ध में अर्जुन रोकेगा और मैं शायकों से इसके मस्तक को गिराऊंगा ६४ यह मुझको युद्ध में टूटे भुजवाला भूरिश्रवा मानता है इसको छोड़ दो कैतो मैं इसको अथवा यह मुझको मारेगा ६५ धृष्टद्युम्न के वचनों को सुनता और सर्प के समान श्वास लेता भीमसेन की भुजाओं के मध्य में लगा हुआ पराक्रमी सात्यकी वारंवार निकलने की चेष्टा करता था ६६ वह दोनों बलवान् महापराक्रमी भुजाओं से शोभायमान होकर बैलों के समान गर्जने वाले हुए हे श्रेष्ठ ! फिर वासुदेवजी और धर्मराज ने शीघ्रता से ६७ बड़े उपाय पूर्वक दोनों वीरों को थांभा हे क्षत्रियर्षभ ! फिर उन क्रोध से रक्तनेत्रवाले बड़े धनुषधारियों को रोककर युद्धमें दूसरे युद्धाभिलाषी शूरवीरोंके सम्मुख गये॥६८॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिनवनवत्युपरिशततमोऽध्यायः॥ १९९॥

दोसौ का अध्याय॥

सञ्जय बोले कि, फिर द्रोणनन्दन अश्वत्थामा ने ऐसे शत्रुओं का नाश किया जैसे कि प्रलयकाल में काल पुरुषसे संयुक्त मृत्यु जीवोंका नाशकरती है १ उसने भल्लों से शत्रुओं के मनुष्यों को मारकर शरीरों का ऐसा पर्वत लगादिया जो ध्वजा, वृक्ष, शस्त्र, शिखर और मरेहुए हाथीही पाषाणरूप घोड़े रूप किम्पुरुषों से

पूर्ण धनुषरूपी लता से संयुक्त मांसभक्षी राक्षस और पक्षियों से शब्दायमान भूत और यक्षों के समूहों से व्याकुल था २ । ३ तदनन्तर उस नरोत्तम अश्वत्थामा ने बड़े वेग से गर्जकर अपनी प्रतिज्ञा को फिर आप के पुत्रों को सुनाया ४ कि जो धर्मरूप कवच में नियत कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर ने युद्ध करनेवाले आचार्यसे कहा था कि शस्त्रों को त्याग दो ५ इसके प्रतीकार में उस युधिष्ठिर के देखतेहुए उसकी सेना को भगाऊंगा और सबको भगाकर उस मूर्ख धृष्टद्युम्न को मारूंगा ६ यह मैं तुझसे सत्य प्रतिज्ञा करता हूं कि जो मुझ से युद्ध करेंगे मैं उनको युद्ध में मारूंगा अब तु अपनी सेना को लौटावो ७ फिर आपके पुत्र ने उस वचन को सुनकर बड़े भयको त्यागकर बड़े सिंहनादों समेत सेना को लौटाया ८ हे राजन् ! फिर कौरवीय और पाण्डवीय सेनाकी ऐसी बड़ी कठिन चढ़ाईहुई जैसे कि दो पूर्ण सागरों की होती है ९ क्रोधयुक्त कौरवलोग अश्वत्थामा के साथ नियतरूप थे और द्रोणाचार्य के मारने से कौरव और पाञ्चाल बड़े उत्साहयुक्त उदग्ररूप थे. १० हे राजन् ! उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त अपने विषयमें विजय देखने वाले क्रोध से पूर्ण लोगों का महावेग उत्पन्न हुआ ११ जैसे कि पहाड़ पहाड़ से और सागर सागर से टक्कर खाते हैं वैसेही कौरव और पाण्डवहुए १२ तदनन्तर कौरव और पाण्डवों के अत्यन्त प्रसन्न सेना के लोगों ने हजारों शङ्ख और भेरियों को बजाया १३ जैसे कि मथेहुए समुद्र का शब्द होता है उसी प्रकार आपकी सेना का बड़ा शब्द अपूर्व हुआ १४ इसके पीछे अश्वत्थामाने पाण्डव और पाञ्चालोंकी सेनाको लक्ष्य बनाकर नारायणास्त्रको प्रकटकिया १५ इसके पीछे आकाश में प्रकाशित नोक मुखवाले सर्पों के समान हजारों बाण पाण्डवों को चलायमान करते प्रकट हुए १६ हे राजन् ! उन्हों ने एक मुहूर्त के मध्य में दिशा आकाश और सेना को ऐसे ढकदिया जैसे कि लोकभर को सूर्य की किरणें व्याप्त करलेती हैं १७ हे महाराज ! इसी प्रकार निर्मल आकाश के मध्य में दूसरी प्रकाशित ज्योतियां प्रकटहुईं और कार्ष्णनाम लोहे के गुड़क अथवा चारचक्र और दोचक्र रखनेवाली शक्ति बहुत सी गदा आरों पर छुरे रखनेवाले प्रकाशित मण्डलवाले चक्र १८ । १९ और शस्त्ररूप अस्त्रों से अत्यन्त व्याप्त अन्तरिक्ष को देखकर पाण्डव सृञ्जय और सब पाञ्चाल लोग व्याकुलहुए २० हे राजन् ! जैसे २ कि पाण्डवों के महारथी युद्ध करनेवाले

हुए उसी २ प्रकार वह अस्त्र अधिक वृद्धियुक्त हुआ २१ तब युद्ध में उस नारा-यणास्त्र से घायल वह महारथी अग्नि से भस्महोने के समान सब ओर से पी-ड़ावान् हुए २२ हे प्रभो ! जिसप्रकार शिशिरऋतुके अन्तमें सूखेवन को अग्नि भस्म करताहै उसी प्रकार उस अस्त्रनें पाण्डवों की सेना को भस्म करदिया २३ हे प्रभो ! अस्त्र के तेज से पूर्ण सेना के नाशवान् होनेपर धर्म के पुत्र युधिष्ठिर ने बड़ेभय को पाया २४ उस सेना को भगाहुआ अचेततासे युक्त और अर्जुन की दोनोंओरकी स्थिति को देखकर धर्मपुत्र यह वचन बोला २५ कि हे धृष्टद्युम्न ! पाञ्चालदेशीय सेनासमेत भागो औरहे सात्यकिन् ! तुम भी वृष्णी और अन्ध-कवंशीय क्षत्रियों से युक्त जाओ २६ धर्मात्मा वासुदेवजी भी अपने योग्य कर्म को करेंगे यह सब लोकों के कल्याण को करतेहैं अपने कल्याण को कैसे नहीं करेंगे २७ मैं तुम सब सेना के लोगों से कहता हूं युद्ध न करना चाहिये और मैं अपने सगे भाइयों समेत अग्नि में प्रवेशकरूंगा २८ मैं भयभीतों से कठि-नतापूर्वक पारहोने के योग्य युद्ध में भीष्म और द्रोणाचार्यरूपी समुद्रको तरकर अपने सब समूहों समेत अश्वत्थामारूपी गोपद जल में डूबूंगा २९ अब राजा दुर्योधन की अभिलाषा प्राप्तहोय मेरेही कारणसे कल्याणवृत्तिवाले आचार्यजी युद्ध में गिरायेगये ३० और जिस कारण से युद्धों में अनभिज्ञ वह बालक अ-भिमन्यु उन समर्थ और निर्दयी बहुत से महारथियों के हाथ से मारागया और रक्षित नहीं हुआ ३१ और जिसहेतुसे प्रार्थना करतीहुई विलापयुक्त द्रौपदी सभा में गई और दासभावको प्राप्तहोकर पुत्रसमेत धृतराष्ट्रने जिसको त्यागकिया ३२ और जिसके कारण से उस प्रकार कवच से रक्षित दुर्योधन घोड़ोंके थकजानेपर जयद्रथ की रक्षा के निमित्त अर्जुन को मारने का अभिलाषी हुआ ३३ अब मेरी विजय में उपाय करनेवाले सतजित आदिक पाञ्चाल जिस ब्रह्मअस्त्र जानने वाले के हाथसे मूलसमेत गिरायेगये ३४ अधर्मसे राज्यहीन हमलोगोंको जिस द्रोणाचार्यनेरोका परन्तु उसके वचनके अभिलाषी हमलोग उसके आज्ञावर्ती नहीं हुए ३५ जो वह हमपर अत्यन्त प्रीति करनेवाला मारागया मैंभी बांधवों समेत उसके निमित्त मरण को पाऊंगा ३६ इस प्रकार युधिष्ठिर के कहनेपर श्रीकृष्ण जी शीघ्रही अपनी भुजाओं से सेना को रोककर यह वचन बोले ३७ कि शीघ्र ही शस्त्रों को त्यागकर सवारियों से उतरपड़ो महात्मा की ओर से इस अस्त्र

के रोकने में यह लोक रचागयाहै ३८ तुम सब हाथी घोड़े और रथों से शीघ्र उतर पड़ो इस प्रकारसे इस पृथ्वीपर शस्त्र त्यागनेवाले तुम लोगोंको यह अस्त्र नहीं मारेगा ३६ जिस २ प्रकार से शूरवीर इस अस्त्र के सम्मुख युद्ध करते हैं उसी २ प्रकारसे यह कौरव अधिकतर बलिष्ठ होतेजाते हैं ४० जो पुरुष सवारियों से उतरकर शस्त्रों को रखदेंगे उन मनुष्यों को युद्ध में यह शस्त्र नहीं मारेगा ४१ और जो कोई चित्त से भी इस अस्त्र के सम्मुख लड़ने की इच्छाकरेंगे उन सब को यह अस्त्र मारकर रसातल को भेजेगा ४२ हे भरतवंशिन् ! वह सबलोग वासुदेवजी के उन वचनों को सुनकर देह और मन के द्वारा शस्त्रों के त्यागने में उत्सुक हुए ४३ इसके अनन्तर पाण्डव भीमसेन उन सबवीरों को अस्त्रों के त्यागने में इच्छावान् देखकर प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला ४४ कि यहां किसी दशा में भी किसी को अस्त्रों का त्यागना योग्य नहीं है मैं बाणों से अश्वत्थामा के अस्त्र को रोकूंगा ४५ अथवा अपनी इस सुवर्णजटित भारी गदा से अश्वत्थामा के अस्त्र को तोड़ता हुआ काल के समान प्रहार करूंगा ४६ यहां मेरे पराक्रम के समान कोई पुरुष इसप्रकार से नहीं है जैसे कि सूर्य के समान दूसरी ज्योति वर्तमान नहीं है ४७ गजराज की सूंड़ के समान और शैशिरनाम पर्वतके गिरानेमें समर्थ मेरी भुजाओंको देखो ४८ मैं अकेला ही इस लोक में दशहजार हाथी के समान ऐसा बलवान् हूं जैसे कि स्वर्ग में देवताओं के मध्य में अपनी समानता न रखनेवाला इन्द्र विख्यातहै ४६ अब युद्ध में अश्वत्थामाके प्रकाशित और अग्निरूप ज्वलित अस्त्रके हटाने में मोटे स्कन्ध रखनेवाली मेरी भुजाओं के बल पराक्रमको देखो ५० जो नारायणास्त्र के सम्मुख युद्ध करनेवाला कोई वर्तमान नहीं है तो अब पाण्डव और कौरवों के देखतेहुए इस अस्त्र के सम्मुख मैंही युद्ध करूंगा ५१ हे अर्जुन ! तेरे हाथसे गाण्डीव धनुषका त्याग करना नहीं उचितहै यह अयशरूपी कीच तुम चन्द्रमा के समान रूपवाले की निर्मलता को बिगाड़ेगी ५२ अर्जुन बोले हे भीमसेन ! नारायणास्त्र और गौ ब्राह्मणों में गाण्डीवधनुष मुझसे त्यागकरने केही योग्य है यही मेरा उत्तमव्रत है ५३ इस वचन को सुनकर भीमसेन बादल के समान शब्दायमान और सूर्य के समान प्रकाशित रथ की सवारी से उस शत्रुविजयी अश्वत्थामा के सम्मुख गया ५४ और शीघ्रपराक्रम करनेवाले भीमसेन ने इस

को पाकर हस्तलाघवता से पलमात्र मेंही बाणोंके जाल से ढकदिया ५५ तब अश्वत्थामाने हँसकर और कहकर उस प्रकाशित नोक और मन्त्र पढ़ेहुए बाणों से इस सम्मुख दौड़नेवाले भीमसेनको भी आच्छादित करदिया ५६ वह भीमसेन युद्धमें अग्नि को उल्लङ्घनेवाले प्रकाशितमुख सर्पों के समान बाणोंसे ऐसा ढकगया जैसे कि स्फुलिङ्गोंसे सुवर्ण ढक जाता है ५७ हे राजन्! उस भीमसेन का रूप ऐसे प्रकार का हुआ जैसे कि रात्रिके समय पटबीजनोंसे संयुक्त पहाड़ का रूप होजाताहै ५८ हे महाराज! उसके ऊपर चलानेमें वह अश्वत्थामा का अस्त्र ऐसा बढ़ा जैसे कि वायु से उठायाहुआ अग्नि होता है ५९ उस भयानक पराक्रमवाले भय के बढ़ानेवाले अस्त्र को देखकर एक भीमसेन के सिवाय सब पाण्डवीय सेनामें महाभय उत्पन्न हुआ ६० इसके पीछे वह सबलोग शस्त्रों को पृथ्वीपर छोड़कर रथ हाथी घोड़ेआदि सब सवारियों से उतर पड़े ६१ उन सब के शस्त्र त्यागने और सवारियोंसे उतरजानेपर उस अस्त्रका बड़ा वेग भीमसेन के मस्तकपर गिरा ६२ सब जीवमात्रोंने और विशेषकरके पाण्डवोंने हाहाकार किया और भीमसेन को उसीप्रकार तेज से ढकाहुआ देखा ॥ ६३ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विशततमोऽध्यायः ॥ २०० ॥

दोसौएक का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, अर्जुनने अस्त्रसे ढकेहुए भीमसेनको देखकर तेजके नाशके लिये वारुणास्त्रसे आच्छादित करदिया १ फिर अर्जुनके हस्तलाघव और अस्त्र के तेज के व्याप्तहोनेसे किसीने भी वारुणास्त्रसे युक्त भीमसेनको नहीं देखा २ घोड़े रथ और सारथी समेत भीमसेन अश्वत्थामा के हाथ से ढकाहुआ होकर ज्वालाओं की माला रखनेवाला बड़ी कठिनतासे देखनेके योग्य अग्निके मध्य में रक्खीहुई अग्निके समान दिखाई पड़ा ३ हे राजन्! जैसे कि रात्रिके अन्त होनेपर नक्षत्रादिक अस्ताचलपर प्राप्तहोतेहैं उसीप्रकार भीमसेनके रथपर बाणों के समूह गिरे ४ हे श्रेष्ठ! वह भीमसेन और उसके घोड़े और सारथी समेत रथ अश्वत्थामा के अस्त्र से ढकाहुआ अग्नि के मध्य में वर्तमान हुआ ५ जैसे कि प्रलयकाल में सब स्थावर जङ्गम जीवोंसमेत सब जगत् को अग्निदेवता भस्म करके ईश्वरके मुख में प्राप्त होतेहैं उसी प्रकार से अस्त्रने भी अनेकों को मारकर भीमसेनको ढकदिया ६ जैसे कि अग्नि सूर्यमें और सूर्य अग्निमें प्रवेशकरे उसी

प्रकार वह तेजभी प्रवेशकरगया और वह पाण्डव नहीं जानागया ७ उस प्रकार से भीमसेनके रथपर फैलेहुए उस अस्त्रको देखकर और युद्धमें अपनी समान किसी को न देखनेवाले चेष्टाकरनेवाले अश्वत्थामाको देखकर ८ और उन युधिष्ठिरादिक महारथियोंको विमुखहुए देखकर शस्त्रोंकोत्यागनेवाली सब पाण्डवीयसेना अचेत रूप होगई ९ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले बड़े तेजस्वी वीर अर्जुन और वासुदेव जी रथसे कूदकर भीमसेनकी ओर दौड़े १० तदनन्तर वह दोनों बड़े पराक्रमी अश्वत्थामा के अस्त्रबलसे उत्पन्न होनेवाले तेज को मँझाकर उसीप्रकार माया में प्रवेश करगये ११ तब वारुणास्त्रके प्रयोग और दोनों कृष्णोंके बल पराक्रम द्वारा उस अस्त्रसे उत्पन्न होनेवाली अग्निने उन शस्त्रके त्यागनेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुन को भस्म नहीं किया १२ इसके पीछे उन दोनों नर नारायण ने अस्त्र की शान्ति के अर्थ बल से भीमसेन को खींचा और सब शस्त्रादिकों को पृथक् करदिया १३ उस समय वह खींचाहुआ भीमसेन बड़ेशब्दसे गर्जताथा और उसकी गर्जना से अश्वत्थामा का वह घोर और कठिनता से विजय होनेवाला अस्त्र और भी वृद्धिको पाता था १४ तब वासुदेवजी उससे बोले कि हे पाण्डु-नन्दन ! यह क्या बात है जो निषेध कियाहुआ भी युद्ध से नहीं लौटता है १५ जो यह कौरवनन्दन युद्धसे विजय होजाय तो हम और यह सब राजालोग भी युद्ध को करें १६ हम सब तुम्हारे पक्षवाले रथोंसे उतरे हैं हे भीमसेन ! इस हेतु से तुम भी शीघ्र रथ से उतरो १७ ऐसा कहकर श्रीकृष्णजी ने उस क्रोधसे रक्त-नेत्र सर्पके समान श्वास लेनेवाले भीमसेन को रथसे पृथ्वीपर खड़ाकिया १८ जब वह रथसे पृथक् किया और शस्त्र पृथ्वीपर रखवादिये उसीसमय वह शत्रुओं का तपानेवाला नारायणास्त्र अत्यन्त शान्त होगया १९ सञ्जय बोले कि इस रीति से उस कठिनतासे सहनेके योग्य तेज के अत्यन्त शान्त होजाने पर सब दिशा और विदिशा शुद्ध होगईं २० आनन्दरूपी वायु चली पशु पक्षी आदिक जीव शान्तरूप हुए और सब सवारियां भी प्रसन्नहुईं २१ हे भरतवंशिन् ! इसके पीछे उस घोर तेजके शान्तहोने पर वह बुद्धिमान् भीमसेन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रातःकाल के समय उदय हुआ सूर्य होता है २२ फिर मरने से शेष बचीहुई पाण्डवों की सेना अस्त्र की शान्ति से प्रसन्न आपके पुत्रके मारने की इच्छा से नियत हुई २३ हे महाराज ! उस सेना के नियत होने और उस

प्रकार अस्त्र के निष्फल होनेपर दुर्योधन अश्वत्थामाजी से बोला २४ कि हे अश्वत्थामन् ! अब फिर आप उस अस्त्र को शीघ्र चलाओ क्योंकि विजय के अभिलाषी यह पाञ्चाल फिर सम्मुख आकर नियतहुए २५ हे धृतराष्ट्र ! आप के पुत्र के वचन को सुनकर अश्वत्थामाजी बड़े दुःखी के समान श्वास लेकर उस राजा से यह वचन बोले २६ हे राजन् ! यह अस्त्र दुबारा नहीं प्रकट होता है न प्राप्त होता है और वारंवार चलाहुआ चलानेवालेही पर निस्सन्देह लौट कर आता है २७ इस अस्त्र का निष्फल करना वासुदेवजी ने प्रकट करदिया हे राजन् ! अब अन्य दशा में शत्रु का मारना नियत किया जायगा २८ विजय होय अथवा मृत्यु होय इन दोनों में से विजय की अपेक्षा मृत्यु काही होना श्रेष्ठ है यह मृतकों के समान शत्रु शस्त्रों के त्याग करने से विजय कियेगये २९ दुर्योधन बोले हे अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ गुरुजी के पुत्र ! जो यह अस्त्र दुबारा नहीं चलताहै तौ दूसरे और किसी अस्त्र सेही गुरु के मारनेवालों को मारो ३० आपके पास ऐसे दिव्य अस्त्र हैं जैसे कि बड़े तेजस्वी शिवजी के पास हैं अत्यन्त क्रोधयुक्त इन्द्र भी तुझ अभिलाषी के हाथ से नहीं बचसक्ता है ३१ धृतराष्ट्र बोले कि उपाधि से द्रोणाचार्य के मरने और उस अस्त्र के निष्फल होनेपर दुर्योधन से उस प्रकार कहेहुए अश्वत्थामाने फिर कौन सा काम किया ३२ नारायणास्त्र से छूटे सेना-मुख पर घूमनेवाले और युद्ध के निमित्त सम्मुख नियत पाण्डवों को युद्ध में देखकर क्या किया ३३ सञ्जय बोले कि वह सिंहलांगूल ध्वजाधारी पिता के मरण को जानता क्रोध से युक्त निर्भय होकर धृष्टद्युम्न के सम्मुख गया ३४ हे नरोत्तम ! उस पुरुषोत्तम ने सम्मुख जाकर क्षुद्रकनाम बीस बाणों से और फिर बड़े वेगवाले पांच बाणों से घायल किया ३५ हे राजन् ! इसके पीछे धृष्टद्युम्नने अग्निके समान ज्वलितरूप अश्वत्थामा को तिरसठ बाणों से घायलकिया ३६ और सुनहरीपुङ्ख तीक्ष्णधारवाले बीस बाणों से उसके सारथी को और तेजधार चार बाणों से चारों घोड़ोंको ३७ छेद २ कर पृथ्वी को कम्पायमान करता अश्वत्थामा के ऊपर ऐसा गर्जा मानों उस बड़े युद्धमें सब लोक के प्राणोंको हरण करलेगा ३८ हे राजन् ! फिर अस्त्रज्ञ और निश्चयकरनेवाला धृष्टद्युम्न मृत्यु को निवृत्त करके अश्वत्थामा के सम्मुख दौड़ा ३९ तिसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ बड़े साहसी धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामा के शिरपर बाणों की वर्षाकरी ४० तब तो पिता

के मरण को यादकरतेहुए अश्वत्थामा ने युद्ध में उस क्रोधयुक्त को बाणों से ढक कर दशबाणों से उसको भी छेदा ४१ अश्वत्थामा ने अच्छी रीति से छोड़ेहुए क्षुरनाम दो बाणों से उसकी ध्वजा धनुष को काटकर अन्यबाणों से धृष्टद्युम्न को पीड्यमानकरके ४२ युद्धमें उसको घोड़े सारथी और रथसे रहितभी करदिया और फिर क्रोधपूर्वक बाणोंके प्रहारोंसे उसके सब पीछे चलनेवालोंको घायलकिया ४३ हे राजन्! इसके पीछे पाञ्चालोंकी वह सेना भागी और भ्रान्ति से युक्तरूप महा पीड़ावानोंने परस्पर देखा ४४ फिर सात्यकीने शूरवीरोंको विमुख और धृष्टद्युम्न को पीड़ावान् देखकर शीघ्रही अपने रथको अश्वत्थामा के रथपर चलायमान किया ४५ और क्रोधयुक्तने तीक्ष्णधारवाले आठ बाणों से अश्वत्थामा को पीड़ावान् किया फिर नानाप्रकार के रूपवाले बीस बाणों से घायलकरके ४६ उस को और उसके सारथीको घायलकिया और चारबाणोंसे घोड़ोंको छेदा सात्यकी के नानाप्रकार के बाणों से अत्यन्त घायल बड़ा धनुषधारी ४७ वह अश्वत्थामा हँसताहुआ इस वचनको बोला हे सात्यकिन्! इस गुरु के मारनेवाले में तेरी भी संयुक्तता जानीजाती है ४८ अब तू मुझसे उस ग्रसेहुएको और अपनेको रक्षित नहीं करसकेगा हे सात्यकिन्! मैं अपने सत्य और तपकी शपथ खाता हूं ४९ कि जबतक मैं पाण्डवों के और वृष्णियों के बल पराक्रमरूप सबपाञ्चालोंको न मारलूंगा तबतक शान्ति को नहीं पाऊंगा ५० उनसब को यहां इकट्ठे करो मैं सोमकों को मारूंगा अश्वत्थामा ने ऐसा कहकर सूर्य की किरणरूप अत्यन्त तीक्ष्ण और उत्तम उसबाण को ५१ यादव के ऊपर ऐसे छोड़ा जैसे कि हरि ने वृत्रासुर के ऊपर वज्र को छोड़ा था उसका चलायाहुआ वह शायक उसको कवच समेत छेद के ५२ पृथ्वी को चीरकर ऐसे प्रवेश करगया जैसे कि श्वास लेताहुआ सर्प बिलमें प्रवेशकरता है वह टूटे कवचवाला शूर अंकुश से पीड़ितहुए हाथी के समान ५३ घाव से बहुत रुधिर को डालनेवाला धनुष बाण को छोड़कर रुधिर में लिप्त घायल होकर रथ की उपस्थ पर बैठगया ५४ और सारथी के द्वारा अश्वत्थामा के सम्मुख से शीघ्रही दूसरे रथपर पहुँचायागया फिर शत्रुसन्तापी अश्वत्थामाने सुन्दर पुङ्ख और टेढ़ेपर्ववाले दूसरेबाण से ५५ धृष्टद्युम्न को भृकुटी के मध्य में घायलकिया प्रथम अत्यन्त घायल और पीछे अत्यन्त घायल और पीड्यमान ५६ उस धृष्टद्युम्न ने निश्चलता को पाकर ध्वजा

का सहाराक्षिया हे राजन्! जैसे कि सिंह से पीड्यमान हाथी होता है उसीप्रकार बाण से पीड्यमान उस धृष्टद्युम्न को देखकर ५७ पाण्डवों की ओर से यह पांच शूरवीर रथी बड़े वेग से उसके सम्मुख दौड़े अर्जुन, भीमसेन, पौरव वृद्धक्षत्र, चन्देरीदेशियों का युवराज और मालवसुदर्शन इन हाहाकार करनेवाले सब धनुषधारी वीरों ने ५८। ५९ वीर अश्वत्थामा को सब ओर से घेरलिया बीस पदोंपर उन सावधान वीरों ने उस क्रोधयुक्त गुरुपुत्र को सब ओर से एकसाथही घायलकिया अश्वत्थामा ने विषैले सर्प के रूप तेजधार पच्चीस बाणोंसे ६०।६१ एकही बाण में पच्चीस शायकों को काटा और फिर सात तीक्ष्ण बाणों से पुरूरवा को पीड्यमान किया ६२ तीन बाण से मालव को एक बाण से अर्जुन को और छःबाणोंसे भीमसेनको घायल किया हे राजन्! उसके पीछे उन सब महारथियों ने सुनहरी पुङ्ख तेजधार बाणों से एक समयपर और पृथक् २ भी छेदा युवराज ने बीसबाणों से ६३। ६४ अर्जुन ने आठ बाणों से और बाकी सबों ने तीन २ बाणों से अश्वत्थामा को व्यथित किया फिर अश्वत्थामा ने छःबाणों से अर्जुन को दशबाण से वासुदेवजी को पांच से भीमसेन को चार से युवराज को और दो २ बाणों से मालव और पुरूरवा को घायल किया ६५ अश्वत्थामा ने छःबाणों से भीमसेन के सारथी को दो बाणों से धनुष और ध्वजा को छेद कर अर्जुन को पांच बाणों से घायल करके घोरसिंहनाद से गर्जनाकरी ६६ आगे पीछे से अश्वत्थामा के चलायेहुए उन तेज विषभरे घोरबाणों से पृथ्वी आकाश स्वर्ग दिशा और विदिशा ढक गईं ६७ बड़े तेजस्वी इन्द्र के समान पराक्रमी अश्वत्थामा ने अपने रथपर बैठेहुए सुदर्शन की उन दोनोंभुजाओं को जोकि इन्द्र की ध्वजा के समान थीं और शिरको तीन बाणों से एकही समय में काटा ६८ और पौरव को रथशक्ति से घायलकरके उसके रथको बाणोंसे तिल २ के समान काट श्रेष्ठ चन्दन से लिप्त भुजाओं को काटकर भल्ल के द्वारा उसके शिर को भी शरीर से जुदाकिया ६९ फिर शीघ्रता करनेवालेने हटकर कमलमाला के वर्ण चन्देरीदेश के स्वामी तरुण युवराज को अत्यन्त अग्निरूप प्रज्वलित बाणों से घोड़े सारथी समेत छेदकर मृत्यु के वशीभूत किया ७० नेत्रों के सम्मुख अश्वत्थामा के हाथसे मारेहुये मालवपौरव और चन्देरी के राजा युवराज को देखकर ७१ महाबाहु पाण्डव भीमसेन ने बड़ा क्रोधकिया और शत्रु-

सन्तापी ने बड़े क्रोध में भरकर विषधर सर्प के समान सैकड़ों तीक्ष्ण बाणों से ७२ युद्ध में अश्वत्थामा को आच्छादित करदिया फिर बड़े तेजस्वी क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने उस बाणवृष्टि को काटकर ७३ तेजधार बाणों से भीमसेन को घायल किया उसके पीछे महाबाहु महाबली भीमसेन ने अश्वत्थामा के ७४ धनुष को क्षुरप्र से काटकर उसको भी बाणों से घायल किया फिर बड़े साहसी अश्वत्थामा ने उस टूटे धनुष को डालकर ७५ दूसरे धनुष को लेकर बाणों से भीमसेन को व्यथित किया युद्ध में पराक्रम करनेवाले उन दोनों भीमसेन और अश्वत्थामा ने ७६ वर्षा करनेवाले दो बादलों के समान बाणों की वर्षा को बरसाया भीमसेन के नाम से चिह्नित सुनहरी पुङ्ख तेजधार बाणों ने ७७ अश्वत्थामा को ऐसे ढकदिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य को ढकदेते हैं और उसीप्रकार वह भीमसेन भी अश्वत्थामा के छोड़ेहुये टेढ़े पर्ववाले हज़ारों बाणों से शीघ्र ढकगया युद्ध में शोभा पानेवाले अश्वत्थामा से युद्ध में ढकाहुआ ७८ । ७९ भीमसेन पीड्यमान नहीं हुआ हे महाराज ! वह आश्चर्य सा हुआ फिर महाबाहु भीमसेन ने सुवर्ण से अलंकृत ८० यमराज के दण्ड की समान तीक्ष्ण दशनाराचों को छोड़ा हे राजन् ! वह बाण अश्वत्थामा के शत्रुस्थान को ८१ घायलकरके पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगये जैसे बामी में सर्प घुसजाते हैं महात्मा पाण्डव के हाथ से अत्यन्त घायल उन अश्वत्थामाजी ने ८२ ध्वजाकी लाठी को पकड़कर दोनों नेत्रों को बन्दकरलिया हे राजन् ! फिर वह अश्वत्थामा एकमुहूर्त में सचेत होकर ८३ युद्ध में रुधिर से लिप्त बड़े क्रोध में नियतहुए उस महात्मा पाण्डव से अत्यन्त घायल ८४ उस महाबाहु ने भीमसेन के रथपर वेगकिया फिर कानतक खैंचेहुए बड़े प्रकाशित ८५ विषैले सर्प के रूप सौ बाण उसके ऊपर फेंके फिर युद्ध में प्रशंसनीय उसके पराक्रम को साधारण माननेवाले पाण्डव भीमसेन ने भी ८६ शीघ्र उग्र बाणों की वर्षाकरी इसके पीछे क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने विशिखनाम बाणों से उसके धनुष को काटकर ८७ तेजधार बाणों से पाण्डव को छातीपर घायल किया फिर क्रोधयुक्त भीमसेन ने धनुष को लेकर ८८ युद्ध में तेजधार पांच बाणों से अश्वत्थामा को घायलकिया वर्षाऋतुमें बादलों के समान बाणवृष्टियों के बरसानेवाले ८९ क्रोध से रक्तनेत्र उन दोनों ने युद्ध में परस्पर ढकदिया फिर तालोंके घोरशब्दोंसे परस्पर डरानेवाले ९० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्म पर

कर्म करने की इच्छा से युद्धकरने लगे अश्वत्थामा ने सुवर्णजटित बड़े धनुष को चलायमानकरके ९१ सम्मुख से बाण चलानेवाले भीमसेनको ऐसे देखा जैसे कि शरदऋतुमें मध्याह्नके समय प्रकाशित किरणोंके स्वामी सूर्य होते हैं ९२ विशिखों के लेनेवाले बाणों के चढ़ानेवाले और खैंचकर छोड़नेवाले अश्वत्थामा का अन्तर मनुष्यों ने नहीं देखा ९३ हे महाराज! तब बाणों के छोड़नेवाले उन अश्वत्थामाजी का धनुषमण्डल आलातचक्र के स्वरूप होगया उसके धनुष से गिरेहुए सैकड़ों हज़ारोंबाण आकाश में ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि टीड़ियों के समूह दिखाई देते हैं ९४। ९५ फिर अश्वत्थामा के छोड़ेहुए सुवर्ण से अलंकृत वह घोरबाण लगातार भीमसेन के रथपर फैले ९६ हे भरतवंशिन्! वहां हम ने भीमसेन के बड़े अद्भुत पराक्रम बल सामर्थ्य प्रभाव और निश्चयको देखा ९७ जैसे कि वर्षाऋतु में बड़ीघोर वृष्टि होती है उसीप्रकार चारोंओर से बुद्धिमान् अश्वत्थामा की प्रकट की हुई उस बाणवृष्टि को ध्यान न करते उस ९८ भयानक पराक्रमी अश्वत्थामा के मारने को इच्छाकरते भीमसेन ने बाणोंकी ऐसी वर्षाकरी जैसे कि वर्षाऋतु में बादल करता है ९९ बड़े युद्धमें भीमसेन का सुवर्ण पृष्ठी खैंचाहुआ धनुष द्वितीय इन्द्रधनुष के समान शोभायमान हुआ १०० उस धनुष से युद्ध में सैकड़ों हज़ारोंबाण उस युद्ध के शोभादेनेवाले अश्वत्थामा को ढकते प्रकटहुए १०१ हे श्रेष्ठ,राजन्, धृतराष्ट्र! इसप्रकार बाणजालोंको उन दोनोंके छोड़ते में मध्यकी वायु भी समीपजाने को समर्थ नहींहुई १०२ हे महाराज! जिस प्रकार अश्वत्थामा ने भीमसेन के मारनेकी इच्छा से सुवर्ण से अलंकृत तेलमले साफ़ नोकवाले बाणोंको चलाया १०३ उसीप्रकार अश्वत्थामाको मारना चाहते भीमसेन ने भी उनबाणों के विशिखों से अन्तरिक्ष में तीन २ खण्डकरदिये १०४ फिर बलवान् क्रोधयुक्त पाण्डव भीमसेन ने अश्वत्थामा के मारने की इच्छा से घोर और उग्रबाणों को बरसाया १०५ इसके पीछे महाअस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने उस बाणवृष्टि को अपनी अस्त्रमाया से रोककर शीघ्रही भीमसेन के धनुष को काटा १०६ और क्रोधभरे नेत्र बहुत से बाणोंसे उसको भी छेदा उस टूटे धनुष वाले पराक्रमी भीमसेन ने बड़ी भयानक रथशक्ति को १०७ वेग से घुमाकर अश्वत्थामा के रथपर फेंका युद्ध में हस्तलाघवता को दिखलाते अश्वत्थामा ने उस बड़ी उल्कारूप अकस्मात् आतीहुई रथशक्ति को तेजबाणों से काटा इसी

अन्तर में मन्दमुसकान करते भीमसेन ने दृढ़धनुष को लेकर १०८ । १०६ विशिखों से अश्वत्थामा को घायलकिया हे महाराज ! फिर उस अश्वत्थामा ने भीमसेन के सारथी को ११० टेढ़ेपर्ववाले बाण से ललाटपर घायल किया हे राजन् ! फिर बलवान् अश्वत्थामा के हाथसे अत्यन्त घायल उस सारथीने १११ घोड़ों की बागडोरों को छोड़कर बड़ी अचेतता को पाया फिर रथसारथी के अचेत होनेपर घोड़े भागे ११२ हे राजेन्द्र ! सब धनुषधारियों के देखते भीमसेन के घोड़े भागे भागेहुए घोड़ों के कारण से युद्धभूमि से हटायेहुए उस भीमसेन को देख कर ११३ अत्यन्त प्रसन्नचित्त अजेय अश्वत्थामा ने बड़े शङ्ख को बजाया फिर सब पाञ्चाल और पाण्डव भीमसेन ११४ भय से पूर्ण धृष्टद्युम्न के रथको छोड़कर दिशाओं को भागे तब अश्वत्थामाजी उन छिन्नभिन्नों को पीछे की ओर से बाणोंकरके घायलकरते वेग से पाण्डवीसेना को चलायमान करते सम्मुख वर्तमानहुए ११५ हे राजन् ! युद्ध में अश्वत्थामा के हाथ से घायलहुए उन राजाओं ने उस द्रोणपुत्र के भय से सब दिशाओं को सेवन किया ॥ ११६ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वण्येकोपरिद्विशततमोऽध्यायः ॥ २०१ ॥

दोसौदो का अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि, उस इधर उधर होनेवाली सेना को देखकर कुन्ती के पुत्र बड़े साहसी अर्जुन ने अश्वत्थामा के विजय करने की इच्छा से सेना को रोका १ तब गोविंदजी और अर्जुन के बड़ेउपाय से नियत कियेहुए वह सेना के लोग वहां नियत नहीं हुए २ अकेला अर्जुनही सोमक मत्स्य देशीय और अन्य वीरों समेत कौरवों के सम्मुख वर्तमान हुआ ३ फिर बड़ा धनुषधारी अर्जुन शीघ्र दौड़कर सिंहलांगूल ध्वजाधारी अश्वत्थामा से बोला ४ कि हे अश्वत्थामन् ! आप अपनी बुद्धि सामर्थ्य बल वीरता और धृतराष्ट्र के पुत्रों में जो प्रीतिपूर्वक हमारे साथ में जो शत्रुता है ५ और जो आपमें तेजहै उस सबको मुझपर दिखलावो और द्रोणाचार्य का मारनेवाला वह धृष्टद्युम्नही आपके अभिमान को दूरकरेगा ६ कालाग्नि के समान प्रसिद्ध शत्रुओं की मृत्युरूप धृष्टद्युम्न के और केशवजी समेत मेरेभी सम्मुख हो ७।८ अब युद्ध में तुझ दुर्वृत्त के अहङ्कारको नाशकरूंगा धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! आचार्य का पुत्र पराक्रमी प्रतिष्ठा के योग्य है उसकी प्रीति अर्जुन के साथ है और वह महात्मा अर्जुन का प्यारा है प्रथम

अर्जुन का ऐसा कठोर वचन नहीं हुआ फिर अर्जुन ने किसहेतु से अपने मित्र से रूखे वचन कहे ६ सञ्जय बोले कि बाण और अस्त्र की रीति के ज्ञाता माधव सुदर्शन युवराज और पौरव वृद्धक्षत्र के मरनेपर १० धृष्टद्युम्न सात्यकी और भीमसेन के पराजय होने और उन वचनों से युधिष्ठिर के मर्मस्थलों के चलायमान होने ११ और दुःख को स्मरणकर हृदय की व्याकुलता उत्पन्न होनेपर अर्जुन का क्रोध जैसा पहिले नहींहुआ था उससे अधिक उत्पन्नहुआ १२ उस कारण से नीच पुरुष के समान होकर प्रतिष्ठा के योग्य आचार्य के पुत्र अश्वत्थामा से अयोग्य, अप्रिय, निन्दित और रूखे वचन कहे १३ हे राजन्! सबमर्मों के छेदनेवाले अर्जुन के वचनों से इस प्रकार कठोर वचन सुननेवाले क्रोधसे श्वास लेते बड़े धनुषधारी १४ सावधान अश्वत्थामाजी ने अधिकतर श्रीकृष्ण और अर्जुन पर क्रोध करके युद्ध में नियत होकर पवित्रता से आचमनकर १५ देवताओं से भी अजेय आग्नेय अस्त्र को धारण किया और दृष्टि के सम्मुख आने वाले शत्रुओं के समूहोंको लक्ष्य बनाकर १६ निर्धूम ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित बाण को परममन्त्र पढ़कर बड़े क्रोध में प्रवृत्त होकर फेंका १७ फिर आकाश में बाणों की कठिन वर्षाहुई अग्नि की ज्वालाओं से पूर्ण उस बाणों की वर्षा ने अर्जुन को चलायमान किया १८ आकाशसे उल्कापातहुए दिशा अविदित हुईं भयकारी अन्धकार से अकस्मात् वह सब सेना व्याप्त होगई १९ और इकट्ठे होनेवाले राक्षस और पिशाच अत्यन्त शब्द करनेलगे अशुभ वायु चलीं सूर्य अप्रकाशित हुए और सबदिशाओं में काक भयानकशब्द करनेलगे और रुधिर की वर्षा करनेवाले बादल भी आकाश में गर्जनेलगे २० । २१ पशु, पक्षी, गौ, योगी और सुन्दर व्रतवाले मुनियों ने भी बड़ी अशान्ति को पाया २२ जिसमें सूर्य समेत सब जीवधारी घूमते दिखाई पड़तेथे वह त्रिलोकी चारोंओर से दुःखी और तापों से व्याप्त होगई २३ इसी प्रकार अस्त्र के तेज से अत्यन्त सन्तप्त पृथ्वी में रहनेवाले सर्पादिक भी श्वास लेते हुए घोर तेज के देखने की इच्छासे ऊपर आये २४ हे भरतवंशिन्! जल के स्थानों के गर्म होने से जलते हुए जलजीवों ने भी बड़ी व्याकुलता को पाया २५ बाणों की छोटी बड़ी वर्षा जोकि गरुड़ और वायुके समान वेगवान्थीं दिशा, विदिशा, आकाश, पृथ्वी और सब ओरसे हुई २६ वज्रके समान वेगवान् अश्वत्थामाजी के बाणों

से घायल और अत्यन्त भस्मीभूत शत्रु ऐसे गिरपड़े जैसे कि अग्निके जलाये हुए वृक्ष गिरपड़ते हैं २७ जलतेहुए बड़े हाथी बादलके शब्दके समान भयानक शब्दोंको गर्जते चारोंओर से पृथ्वीपर गिरपड़े २८ हे राजन्! भयसे भयभीतहुए अन्य हाथी दिशाओंको भागे और ऐसे शब्द करनेलगे जैसे कि पूर्व समयमें वनके मध्यमें दावानल नाम अग्निसे घिरेहुए २९ पुकारते हैं हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र! जैसे दावानल अग्निसे जलीहुई वृक्षोंकी चोटियां होती हैं उसीप्रकार घोड़े और रथोंके समूह दृष्टिगोचरहुए ३० और जहांतहां रथोंके हजारों समूह भी गिरपड़े हे राजन्! उसभयसे व्याकुल सेनाको युद्धमें ऐसेभस्म करदिया ३१ जैसे कि प्रलयकालमें संवर्तक नाम अग्नि सबजीवों को भस्म करदेता है फिर युद्ध में जलती पाण्डवी सेनाको देखकर ३२ अत्यन्तप्रसन्नचित्त आपके शूरवीरोंने सिंहनादोंको किया इसकेपीछे नानाप्रकारके रूपवाले हजारों बाजोंको भी ३३ विजय से शोभायमान और प्रसन्नचित्त आपकी सेनाके लोगोंने शीघ्रबजाया हे राजन्! अँधेरेसे लोकके ढकजानेपर सब अक्षौहिणीसमेत पाण्डव अर्जुन ३४ बड़े युद्धमें दिखाई नहीं पड़े उसप्रकारका अस्त्र प्रथमहमने देखाथा न सुनाथा ३५ जैसा कि क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने प्रकटकिया हे महाराज! फिर अर्जुन ने उस ब्रह्मास्त्रको प्रकटकिया ३६ जोकि ब्रह्माजीने सब अस्त्रोंके दूरकरने को प्रकट किया था तदनन्तर एकमुहूर्त मेंही वह अन्धकार दूर होगया ३७ शीतलवायु चली निर्मल दिशा शोभायमान हुई उससमय वहांपर हमने सम्पूर्ण अक्षौहिणीको अपूर्वरूप से मृतक ३८ और अस्त्रके तेजसे ऐसा भस्महुआ देखा कि जिनकारूप नहीं जानाजाता था उसके पीछे बड़े धनुषधारी वीर अर्जुन और केशवजी अस्त्र से छूटेहुए ३९ एकसाथही ऐसे दिखाईपड़े जैसे कि आकाशमें दो सूर्यहोते हैं फिर गाण्डीव धनुषधारी और केशवजी दोनों अजेय दिखाई पड़े ४० और आपके शूरवीरों का भयउत्पन्न करनेवाला जुड़ाहुआ वह रथ, पताका, ध्वजा, अनुकर्ष, घोड़े और उत्तम शस्त्रोंसमेत शोभायमान हुआ ४१ इसकेपीछे एकक्षणभरमेंही अत्यन्त प्रसन्न पाण्डवों के किलकिला शब्द, शङ्ख, भेरी आदिक बाजों समेत उत्पन्नहुए ४२ वहां वेग के साथ आनेवाले केशवजी और अर्जुन को देखकर दोनों सेनाओं का यह विचारहुआ था कि मारेगये ४३ फिर उन विना घायल और अत्यन्त प्रसन्नचित्तों ने उत्तम शङ्खोंको बजाया आपके सब पुत्र पाण्डवोंको

अत्यन्त प्रसन्न देखकर पीड्यमानहुए ४४ हे श्रेष्ठ! बड़े दुःखी अश्वत्थामा ने दोनों महात्माओं को छुटाहुआ देखकर एकमुहूर्तभर चिन्ता करी कि यह क्या बात है ४५ हे राजेन्द्र! इसके पीछे ध्यान और शोक में नियत अश्वत्थामाजी चिन्ता करके उष्ण और लम्बी श्वासा लेते चित्तसे उदास हुए ४६ और धनुष को त्याग शीघ्र रथसे कूद यह सब मिथ्याहै इस शब्दको बड़ी धिकारीके साथ कहतेहुए युद्धसे हटगये ४७ फिर स्वच्छ बादलके रूप पापों से रहित साक्षात् धर्म के समान आगे वर्तमान वेदव्यासजी को देखा ४८ अश्वत्थामाजी उस कौरव कुलके तारनेवाले व्यासजी को आगे नियत देखकर रुकेहुए कण्ठ और महादुःखीके समान नमस्कारकरके इस वचनको बोले ४९ कि हे व्यासजी! नाशयुक्तका अविनाशीपनके साथ दर्शनहोना और अस्त्रका नियमसे रहितहोना हम इसको नहीं जानते हैं कि इसमें क्या व्यतिक्रमहै यह मेरा अस्त्रकैसे निष्फलहुआ इसमें मेरा कौनसा विपरीत कर्म है ५० अथवा यहलोकों का पराजय न होनाही विपरीतहै जो यह दोनों कृष्ण जीवते हैं निश्चयकाल दुःखसे उल्लङ्घन होनेवाला है ५१ असुर, गन्धर्व, राक्षस, पिशाच, सर्प, यक्ष, पक्षी और मनुष्य किसी दशामें भी ५२ मेरे चलायेहुए अस्त्रको निष्फल नहीं करसक्तेहैं सो यह ज्वालारूप अस्त्र सेनाको मारकर शान्त होगया ५३ मैंने सबका मारनेवाला बड़ा भयानक अस्त्र छोड़ा इस अस्त्रने इन मरणधर्मा केशवजी और अर्जुनको कैसे नहीं मारा ५४ हे भगवन्! इस मेरे पूछतेहुए मेरे सन्देहको शीघ्र निवृत्त करके सब ब्योरे समेत वृत्तान्त कहिये हे महामुने! मैं उस सब वृत्तान्तको मूलसमेत सुनना चाहता हूं ५५ व्यासजी बोले कि यह बड़ाभारी प्रयोजनहै जिसको कि तुमने बड़े आश्चर्यपूर्वक मुझसे पूछा है मैं उस सबको मूलसमेत तुमसे कहता हूं तुम चित्तको सावधानकरके सुनो ५६ जो यह विश्वका उत्पन्न करनेवाला प्राचीनों का भी प्राचीन कार्य करनेके अर्थ धर्मका पुत्र नारायणनाम उत्पन्नहुआहै ५७ वह बड़े तेजस्वी अग्नि और सूर्य के समान हिमालय पर्वतपर स्थित ऊर्ध्वबाहु होकर तेज व्रतमें नियतहुआ ५८ तब वायु भक्षण करनेवाले कमललोचन ने छासठिहजार वर्षतक अपने शरीरको सुखाया ५९ फिर दूसरी तपस्याकरके तीसरे तपको भी तपकर उससे भी द्विगुणित तपस्याको करके इसमें पृथ्वी और आकाश के मध्यभाग को अपने तेजसे भरदिया ६० हे तात! जब वह उस तपसे

अत्यन्त निवृत्तहुए तब विश्वके ईश्वर विश्वके उत्पत्तिस्थान जगत् के प्रभु ६१ अत्यन्त अजेय और सब देवताओं से स्तूयमान उन शिवजी महाराजको देखा जोकि छोटों से भी छोटा अर्थात् महासूक्ष्म और स्थूलोंसे भी महास्थूल ६२ रुद्र ईशान श्रेष्ठ हर शम्भु जटाजूटधारी सबके चैतन्य करनेवाले स्थावर जङ्गममात्र के बड़े उत्पत्तिस्थान ६३ दुर्वारण अर्थात् कठिनता से हटाने के योग्य दुर्धर अर्थात् विरूपाक्ष अथवा दुःखसे धारणकरनेके योग्य दुष्टोंपर कठिनक्रोधकरनेवाले महात्मा और सबके नाश करनेवाले साधुलोगों पर उदारता करनेवाले दिव्य धनुष तूणीर के धारण करनेवाले सुवर्णकवची अपारबल पराक्रमवाले पिनाक, वज्र, प्रकाशित शूल, फरसा, गदा और बड़े खड्ग के रखनेवाले श्वेतवर्ण जटा मूसलधारी चन्द्रमौलि और व्याघ्रचर्मके धारणकरनेवाले दण्डधारी ६४ । ६५ शुभ बाजूबन्दों समेत नागों काही यज्ञोपवीत धारणकरनेवाले विश्वेदेवताओं के गण और जीवसमूहों से शोभायमान अपना पराया न रखनेवाले तपोंके रक्षाश्रय वृद्धोंके प्रियवचनोंसे स्तूयमान ६६ जल, दिशा, आकाश, पृथ्वी, चन्द्रमा, सूर्य, वायु और अग्निरूप कालस्वरूप दुराचारी पुरुष जिनके दर्शन को नहीं करसक्के और वेद ब्राह्मणों के शत्रुओं के मारनेवाले होकर मोक्ष का कारणरूप हैं ६७ अत्यन्त प्रसन्नचित्त वासुदेवजी उनका दर्शनकरके मन वाणी वचन और बुद्धि समेत प्रसन्न हुए और जिसको सदाचारी शोक से रहित अन्तःकरणवाले ब्राह्मण पापों से रहित होकर देखते हैं उन धर्मरूप प्रशंसनीय विश्वरूप शिवजी का भक्त वासुदेवजीने अपने तपके द्वारा आताहुआ देखा ६८ इसके पीछे नारायण जीने रुद्राक्ष की माला से संयुक्त शरीर प्रकाशों के समूह विश्व के उत्पत्तिस्थान शिवजी महाराज को दण्डवत् करी ६९ भक्तिमान् कमललोचन नारायणजीने उस वरदाता प्रभु क्रीड़ा करनेवाले जीवोंके समूहों से युक्त अजन्मा ईशान अर्थात् सर्वेश्वर गुप्त, कारण आत्मा, अविनाशी, अन्धकके मारनेवाले विरूपाक्ष रुद्रजी को पार्वतीजी समेत दण्डवत् करके स्तुति की ७० । ७१ श्रीनारायणजी बोले कि हे मोक्ष के अभिलाषिन्, पुरुषों के प्राप्यरूप, आदिदेव ! वह सब प्रजापति तुमसे उत्पन्न हुए जोकि इस भवन के रक्षक हैं हे देव ! जिन्हों ने इस पृथ्वी पर आकर पूर्व समयमें आपकी उत्पन्न कीहुई इस प्राचीन सृष्टिकी रक्षा करी ७२ में देवता, असुर, नाग, राक्षस, पिशाच, मनुष्य, गरुड़, गन्धर्व, यक्ष और पृथक् २

प्रकार के जीवसमूहों को तुमसेही उत्पन्न हुआ जानता हूं ७३ इन्द्र, यम, कुबेर, वरुण, त्वष्टा और पितृसम्बन्धी शुभकर्म आपकेही निमित्त हैं अर्थात् सब देवताओं करके आपही तृप्त करने के योग्य हो रूप, तेज, शब्द, आकाश, वायु, स्वादयुक्त जल, गन्ध, पृथ्वी ७४ काल, ब्रह्मा, वेद, ब्राह्मण और सब जड़ चैतन्यात्मक जगत् तुमसेही उत्पन्न होनेवाला है जैसे कि समुद्र से अम्बुकण पृथक्२ होजातेहैं और फिर अन्तसमय पर उन समुद्रों के साथ ऐक्यताको पाते हैं ७५ इसी प्रकार ज्ञानी पुरुष जीवों की उत्पत्ति और नाश को मानकर आप की सायुज्यता को पाता है हृदयाकाश में प्रकट होनेवाले मायारूप विद्या अविद्यासे संयुक्त महत्तत्त्व अहङ्कार पञ्चतन्मात्रा नाम मानसी प्रकृतिसे संयुक्त जीव ईश्वरनाम दो पक्षी हैं उनके रात्रिके निवासस्थान अश्वत्थवृक्ष हैं जोकि मानसी प्रकृति और दशोंइन्द्रियों के रक्षक हैं जो पुट कि पञ्चतत्त्वात्मक शरीरके धारण करनेवाले हैं वह सब आपही से उत्पन्न हैं तुम इनसे श्रेष्ठ और पृथक् हो अर्थात् छब्बीसों तत्त्वादिसे तुम परमात्मारूप सत्ताईसवें हो भूत भविष्य वर्तमानकाल ईश्वर और सब विश्वसम्बन्धी भवन आपसे उत्पन्न हैं ७६ । ७७ मुझ भजनेवाले भक्तपर कृपाकरो अर्थात् पालन पोषण करो मेरे अप्रिय कर्म को मेरे चित्त में प्रवेश करने से मुझको मतमारो अहङ्कार आदिकसे पृथक् जीवात्मा की निरुपाधिस्वरूप माया से रहित तुझ ब्रह्म को इस प्रकार जानकर ज्ञानी प्राप्त होता है ७८ हे देवताओं में श्रेष्ठ ! तुझ सर्वरूप के पूजनको करनाचाहते और तलाश करते मैंने तुझ प्रशंसनीय की स्तुतिकरी तुम मुझसे स्तूयमान होकर मेरे प्रिय और कठिनता से पाने के योग्य वरों को दो तुमने माया को बहुत रूप से प्रकट किया है उस माया को मेरे ऊपर कभी प्रकट न करो ७९ व्यासजी बोले कि नारायण ऋषि से स्तूयमान अचिन्त्यात्मा पिनाकधनुषधारी नीलकण्ठजी ने उस देवताओं में श्रेष्ठ और योग्य नारायणजी के अर्थ वर दिया ८० श्रीभगवान् शिवजी बोले कि हे नारायण ! तुम मेरी कृपा से मनुष्य देवता और गन्धर्वों में बड़े पराक्रमी और बुद्धिमान् होगे ८१ और देवता, असुर, महासर्प, पिशाच, गन्धर्व और यक्ष राक्षस भी तुमको नहीं सहसकेंगे ८२ और गरुड़ नाग सिंह और व्याघ्रादिक भी तुम्हारे तेजको नहीं सहसकेंगे और कोई देवता भी तुमको युद्ध में विजय नहीं करसकेगा ८३ और मेरी कृपा से कोई किसी दशा में भी वज्र,

वायु, शस्त्र, अग्नि, शुष्कता, आर्द्रता, सब स्थावर, जङ्गमों के द्वारा तुम्हारी पीड़ा को नहीं करसकेगा और युद्ध में जाकर मुझसे भी अधिक होगे ८४।८५ प्रथमही से श्रीकृष्णजीने इन वरों को पाया है वही यह कृष्णदेवता अपनी मायासे मोहित होकर इस जगत्में घूमताहै ८६ उसके तपसे नरनाम महामुनि उत्पन्न हुआ उस नरनाम अर्जुन को सदैव इस श्रीकृष्ण देवताही के समान जानो ८७ वही यह देवताओं के आदि नर नारायण ऋषि बड़ेतपों से युक्त लोकयात्रा विधान के अर्थ युग २ में उत्पन्न होते हैं ८८ हे महाबुद्धिमन्! उसी प्रकार तुम भी शीघ्र अपने कर्म और बड़े तपके द्वारा तेज और क्रोधको धारण करते रुद्रस्वरूप उत्पन्न हुए ८९ सो नारायण देवता के समान ज्ञानी आपने संसार को शम्भुरूप जानकर उसके प्रिय करने की इच्छा से शरीर को नियमों के द्वारा अत्यन्त दुर्बल किया ९० हे बड़ाई देनेवाले! आपने प्रकाशमान मन्त्र को करके जप होम और उपहारों के द्वारा महापुरुष स्वरूपको पूजन किया ९१ हे पण्डित! इसीप्रकार पूर्व देहों में तुमसे पूजेहुए वह शिवजी प्रसन्न हुए और तुम्हारे हृदयके बहुत वरों को दिया ९२ तेरे और उनदोनों नरनारायणों के जन्म कर्म तप और योग श्रेष्ठ हैं प्रत्येक युगमें उन दोनों नर नारायण रूप सूक्ष्मशरीरवाले सगुणरूप देवता में ❀ ९३ जो पुरुष प्रभु शिवजीको सर्वरूप जानकर सूक्ष्मरूप में पूजन करता है निश्चय करके उस सूक्ष्मरूप में सनातन आत्मयोग और शास्त्रयोग है ९४ इस प्रकारसे पूजन करनेवाले देवता सिद्ध और महर्षिलोग परलोकमें अकेले शिवजीको चाहते हैं वह सबके उत्पन्न करने वालेहैं सनातन श्रीकृष्णजी यज्ञोंके द्वारा पूजन करनेके योग्यहैं ९५।९६ जो पुरुष सब जीवों के उत्पत्तिस्थान शिवजी को जानकर प्रभुके सूक्ष्मरूपका पूजन करता है उसपर शिवजी बड़ी कृपा को करते हैं ९७ फिर महारथी अश्वत्थामा ने उनके उस वचन को सुनकर रुद्रजीको नमस्कारकरके श्रीकृष्णजीको बहुत

❀ इस स्तुति में लिखा है कि चारकी विद्यमानता में जलफल प्राप्तहोता है वह विनाशवान् है और दो की विद्यमानता में अविनाशी फल मिलता है अब जोकि मूर्तिपूजन करने में पूजन करनेवाले का चित्त, आत्मा, इन्द्रिय और विषय इनचारों की वर्तमानता होती है इसहेतुसे नर नारायण जी में सूक्ष्मरूप में शिवजीका पूजन किया क्योंकि उसमें केवल आत्मा और चित्तकी ही वर्तमानता होती है ॥ ९३ ॥

माना ९८ खड़ेहुए रोमाञ्च जितेन्द्रियरूप उस अश्वत्थामा ने व्यास महर्षिजी को दण्डवत् करके सेनाको देखकर विश्रामको करवाया ९९ हे राजन् ! युद्ध में द्रोणाचार्य के गिराने के पीछे पाण्डवों का और दुःखी कौरवों का विश्राम हुआ १०० हे धृतराष्ट्र ! इसप्रकारसे वेदके पारङ्गत होनेवाले द्रोणाचार्य ब्राह्मण पांच दिन युद्धकरके सेना मारकर ब्रह्मलोक में गये ॥ १०१ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वितीयोपरिद्विशततमोऽध्यायः ॥ २०२ ॥

दोसौतीनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि, धृष्टद्युम्न के हाथ से उस अतिरथी द्रोणाचार्य के मरने पर मेरेपुत्र और पाण्डवों ने क्या किया १ सञ्जय बोले कि धृष्टद्युम्न के हाथ से उस अतिरथी द्रोणाचार्य के मरने और कौरवों के छिन्न भिन्न होनेपर भरतवंशियों में श्रेष्ठ कुन्तीके पुत्र अर्जुन ने २ अपनी विजय प्रकट करनेवाले बड़े आश्चर्य को देखकर दैवेच्छासे आयेहुए व्यासजीसे पूछा ३ कि स्वच्छ शस्त्रों से युद्धमें शत्रुओंको मारतेहुए मैंने आगे से जातेहुए अग्निके समान प्रकाश भरेहुए पुरुष को देखा ४ हे महामुने ! वह ज्वालायमान पुरुष शूल को उठाकर जिस दिशा में प्राप्त होता है उसी दिशा में मेरे सब शत्रु छिन्न भिन्न होजाते हैं ५ सबलोग उससे छिन्न भिन्न कियेहुए शत्रुओंको मेरे हाथसे भगाया और छिन्न भिन्न किया हुआ मानते हैं मैं उसके पीछेकी ओरसे उससे छिन्न भिन्न कियेहुए सेनाके लोगों के पीछे जाताहूं ६ हे भगवन् ! उनको आप वर्णन कीजिये कि वह पुरुषोत्तम कौनहैं जिसको कि मैंने शूल हाथ में लिये तेज से सूर्य के समान देखा ७ वह चरणोंसे न पृथ्वीको स्पर्शकरताहै न शूलको छोड़ताहै उसके तेजकेकारण शूल से हजारों शूल गिरे ८ व्यासजी बोले कि हे अर्जुन ! तुमने प्रजापति के अर्थात् ब्रह्मा विष्णु रुद्रके आदि, चिन्मात्ररूप और शरीररूप सब पुरियों में व्यासआदि, प्रभु, पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्गरूप प्रकाशमान सबलोकोंके ईश्वरसमर्थ ९ महेश्वर, वरदाता, शङ्करजी को देखाहै उस वरदाता भुवनेश्वर देवताकी शरणको प्राप्त हो १० जोकि महादेव, महात्मा, ईशान, जटाधारी, विभु, त्रिनेत्र, दीर्घबाहु, रुद्र, शिखाधारी, चीर वस्त्रों से युक्त शरीर ११ महादेव, हरि, स्थाणु, वरदाता, भुवनेश्वर, जगत्प्रधान, अजेय, जगत्पति, ईश्वरसे भी अधिक अर्थात् उपाधि से रहित चिन्मात्र १२ जगत् के माता पिता रूप, विजयी, जगद्दाति, विश्वात्मा,

विश्वके उत्पन्न करनेवाले, विश्वमूर्ति, यशस्वी १३ विश्व, विश्वेश्वर, जगत् के आनन्द उत्पन्न करनेवाले, सबकर्मोंके ईश्वर, प्रभु, शम्भु, स्वयम्भु अर्थात् अपने आप उत्पन्न होनेवाले जीवमात्रों के स्वामी, भूत भविष्य वर्तमान के उत्पन्न करनेवाले १४ कर्मयोगरूप योगेश्वर, सर्वात्मा और जो सब लोकों के ईश्वरहैं उनकेभी ईश्वर, सबसे श्रेष्ठ, जगत्से श्रेष्ठ, वृद्धतम, ब्रह्मारूप १५ तीनों लोकोंके रचनेवाले एक, तीनोंलोकों के रक्षाश्रय, शुद्धात्मा, भव, भयानकरूप, चन्द्रशेखर १६ सनातन पृथ्वीके धारणकरनेवाले देवता और जो सर्वप्राणियों का ईश्वर है उसके भी ईश्वर अनधिकारियों को कठिनता से मिलने के योग्य जरा, जन्म, मरणादिकों से रहित १७ ज्ञानस्वरूप, ज्ञान से मिलने के योग्य, ज्ञान में श्रेष्ठ दुःख से जानने के योग्य और भक्तोंको उन वरोंके देनेवाले हैं जो कि उनकी कृपासे विचार कियेजायँ १८ उस समर्थके पार्षद, दिव्य और नाना प्रकार के रूपों से वामन, जटिल, मुण्ड, छोटी ग्रीवा, बड़ाउदर १९ बड़ाशरीर, बड़ाउत्साह इसीप्रकार बड़े २ श्रवण भी धारण करनेवाले हैं हे अर्जुन ! वह महादेव महेश्वर इस प्रकार के भयानक मुख चरण रूपान्तर पोशाक भूषण वाले पार्षदों से पूजित हैं हे तात ! वह तेजस्वी शिवजी अपनी कृपा से तेरे आगे चलते हैं २० । २१ हे अर्जुन ! सदैव उस घोर और रोमाञ्चों के खड़े करने वाले युद्ध में बड़े धनुषधारी प्रहार करनेवाले अश्वत्थामा कर्ण और कृपाचार्य से रक्षित २२ सेना को सिवाय भवरूपधारी बड़े धनुषधारी देवता महेश्वर के और कौन सा पुरुष मनकरके भी पराजय करसक्ता है २३ उस ईश्वरके आगे नियत होनेपर कोई सम्मुख होने को उत्साह नहीं करता है तीनों लोकों में उसके समान जीवधारी कोई वर्तमान नहीं है २४ युद्ध में उस क्रोधरूप की गन्ध से भी वह शत्रुलोग अचेत होकर काँपते हैं और गिरते हैं जिनके कि बहुत से आदमी मारेगये २५ देवतालोग उन शिवजी के अर्थ नमस्कार करते स्वर्ग में नियत हैं और लोकों में जो अन्य २ स्वर्ग के विजय करनेवाले मनुष्य हैं वह २६ और जो भक्त सदैव अनन्यभाव हैं उस वरदाता देवता शिव रुद्र उमापति सुरेशकी उपासना करते हैं वह इसलोक में सुखको पाकर परमगति को पाते हैं २७ हे कुन्ती के पुत्र ! तुम सदैव उस शान्तरूप के अर्थ नमस्कारकरो उस रुद्र नीलकण्ठ सूक्ष्मरूप बड़े सूक्ष्मरूप तेजस्वी २८ गङ्गाजल से पूर्ण जटाधारी

कराल कुबेर को भी वरदेनेवाले मायाशवल, ब्रह्म बाल के समान जिसकी किरण हैं उस आनन्द उत्पन्न करनेवाले को नमस्कारकरो २६ सब का अभिलाषित पिङ्गलाक्ष स्थाणु और पुष्टीरूप शरीरों में वर्तमान होनेवाले पिङ्गलवर्ण केशधारी मुण्ड सूक्ष्म और संसारसागर के पार करनेवाले के अर्थ नमस्कारकरो ३० सूर्यरूप संसार के प्रकाश करनेवाले शोभायमान विभूतिवाले देवताओं के भी देवता भगवान् भवरूप नाशकर्ता और संसार के प्यारे और प्रिय पोशाक ३१ वेष्टन बांधनेवाले शुभवस्त्रधारी सहस्राक्ष वर्षा करनेवाले पर्वतनिवासी बड़ेशान्त वल्कलधारी स्वामी के निमित्त नमस्कार करो ३२ सुवर्णमय-भुजा राजारूप उग्रदिशाओं के स्वामी बादल और जीवोंके स्वामी के अर्थ नमस्कारहै ३३ वृक्षों के और गौओं के स्वामी वृक्षों से युक्त शरीरवाले सेनापति अन्तर्यामी के अर्थ नमस्कार ३४ श्रुवा हाथ में रखनेवाले अध्वर्यु प्रकाशमान धनुषधारी और श्री परशुरामरूप के अर्थ नमस्कार है भवरूप विश्व के स्वामी तपरूप विस्तरधारी के अर्थ नमस्कार है ३५ सहस्रशीर्ष सहस्राक्ष सहस्रभुज और सहस्रपाद के अर्थ नमस्कार है ३६ हे कुन्ती के पुत्र ! उस वरदाता भुवनेश्वर विरूपाक्ष दक्षयज्ञविध्वंसी ३७ उमापतिकी शरण जाओ जोकि प्रजाओं के स्वामी बड़े उग्र जीवों के पति अविनाशी जटाजूटधारी ब्रह्मादिक उत्तम पुरुषों को माया से भ्रमानेवाले उत्तम नाभि रखनेवाले वृषभध्वज ३८ तीनों लोकों के नाश में समर्थ अहङ्कार रखनेवाले धर्म के स्वामी धर्महीको श्रेष्ठ माननेवाले वर्षा का अन्त और फल करनेवाले इन्द्रादिक देवताओं में श्रेष्ठ धर्म से प्रकाशमान पुरुषों को बड़ा फल देनेवाले धर्म सेही आत्मा का साक्षात्कार करनेवाले धर्म सेही पाने के योग्य सुन्दर नेत्र ३९ उत्तम शस्त्रवाले विष्णुरूप बाण रखनेवाले धर्मरूप महेश्वर और करोड़ों ब्रह्माण्डों के आश्रय स्थानरूप उदर रखनेवाले ब्रह्माण्डरूप व्याघ्रचर्म से संयुक्त शरीर ४० लोक के ईश्वर वरदाता वेद ब्राह्मणों के स्वामी ब्राह्मणप्रिय हाथ में त्रिशूल खड्ग और ढालके रखनेवाले प्रभु ४१ पिनाकधनुषधारी लोकों के पति ईश्वर देवता शरण्य चीर विस्तरधारी की शरण को प्राप्त होता हूं ४२ उस देवताओं के ईश्वर के अर्थ नमस्कार है जिसका सखा कुबेर देवता है ऐसे सुन्दर व्रत श्रेष्ठपोशाकवालेके अर्थ नमस्कारहै ४३ उग्रशस्त्रधारी देवताओंमें श्रेष्ठ देवताके अर्थ नमस्कार भवरूप को नमस्कार बहुधन्वी के अर्थ नमस्कार स्थाणु

के अर्थ सदैव नमस्कार धनुषधारी पार्षद रखनेवाले देवता को नमस्कार ४४ धनुषधारी धनुषधारियों के प्यारे धनुषधारी देवता को नमस्कार और तुझ धन्वन्तरि धनुषरूप धनुषधारियों के आचार्य के अर्थ नमस्कार ४५ त्रिपुर के मारनेवाले भग के नेत्र उखाड़नेवाले वनस्पतियों के पति और नरों के स्वामी के अर्थ नमस्कार माताओं के और गौओं के स्वामी के अर्थ नमस्कार ४६ गौओं के पति और सदैव यज्ञों के स्वामी के अर्थ नमस्कार जलों के और देवताओं के स्वामी के अर्थ नमस्कार ४७ पूषा देवता के दांततोड़नेवाले और तीन नेत्ररखनेवाले वरदाता नीलकण्ठ पिङ्गलवर्ण सुवर्णकेशधारी के अर्थ नमस्कार ४८ ज्ञानी महादेवजी के जो दिव्य कर्म हैं उनको अपनी बुद्धि की सामर्थ्य के अनुसार कहता हूं ४६ उन शिवजी के क्रोधयुक्त होनेपर पातालवर्ती देवता असुर गन्धर्व और राक्षस लोक में सुख से वृद्धि नहीं पाते हैं ५० पूर्वसमय में क्रोधयुक्त महादेवजी ने विधि से रचेहुए दक्ष के यज्ञको विध्वंस किया उससमय वह शिवजी दया से रहितहोकर ५१ धनुष से बाण को छोड़कर बड़े शब्द से गर्जे तब उन देवताओं ने सुख व शान्ति को पाया ५२ अकस्मात् यज्ञ के विध्वंस होने और महेश्वरजी के क्रोधयुक्त होनेपर उस तल प्रत्यञ्चा के शब्दसे सबलोक महाव्याकुल हुए ५३ हे अर्जुन ! देवता और असुर गिरपड़े और आधीनता में वर्तमान हुए और सब समुद्र व्याकुल होकर पृथ्वी भी कम्पायमान हुई ५४ पर्वत फटगये दिशाओं समेत सर्प मोहितहुए कठिन अन्धकार से पूर्ण लोक नहीं जानेगये ५५ सूर्यसमेत सब प्रकाशमानों के प्रकाशों को अस्तकिया और वह सब भयसे व्याकुल अचेतहोगये इसीप्रकार ५६ सुख चाहनेवाले ऋषियों ने अपनी और जीवधारियों की शान्तिको किया और हँसतेहुए शिवजी पूषा देवता की ओर दौड़े ५७ और पुरोडास भक्षण करनेवाले के दाँतों को उखाड़ा इसके पीछे उन शिवजी से गुप्तहोनेवाले कम्पायमान देवता उस यज्ञशाला से निकल गये ५८ फिर बुद्धिमान् शिवजीने धुएं और पतङ्गों से युक्त बिजली बादल के रूप तेजवाले देवताओं के बाणों को धनुषपर चढ़ाया ५६ फिर सबदेवताओंने बाणों को देख महेश्वरजीको दण्डवत् करके रुद्रजी के उत्तम यज्ञभाग को कल्पना किया ६० हे राजन् ! देवता भयसे शरणमें आये तब क्रोध रहित शिवजी केही द्वारा वह यज्ञ पूर्ण हुआ ६१ और भिन्न २ देवता जो अब तक उनसे भयभीत हैं आकाश के मध्यमें बलवान् असुरों के लोहमयी रजतमयी

और स्वर्णमयी तीनपुर बहुत बड़े २ थे स्वर्णमयी कमलाक्ष का रजतमयी ताराक्ष का ६२ । ६३ और तीसरा लोहमयी विद्युन्माली राक्षस का था इन्द्र अपने सब अस्त्रों से भी उनपुरों के तोड़ने को समर्थनहीं हुआ ६४ उसके पीछे सब देवता पीड्यमान होकर रुद्रजी की शरणमें गये और इन्द्रसमेत वह सब देवता रुद्रजी से बोले ६५ कि यह त्रिपुरवासी घोर दैत्य ब्रह्माजीसे वर पाकर लोकों को अधिक पीड़ादेते हैं और वर केही पाने से वह बड़े अहङ्कारी हैं ६६ हे देवताओं के महेश्वर, महादेवजी ! आपके सिवाय दूसरा कोई किसी प्रकार से भी उनके मारने को समर्थ नहीं है हे ईश्वर! उन देवताओं से शत्रुता करनेवालों को आप मारिये हे रुद्रजी ! सबकर्मों में पशु रुद्र होंगे हे भूतेश्वर ! तुम इन असुरों को मारोगे ६७। ६८ देवताओं के वचनों को सुनकर उन हर ने तथास्तु यह कह-कर देवताओंके प्रिय की इच्छा से गन्धमादन और विंध्याचलपर्वतको अपनी छोटीध्वजा बनाकर ६९ उन त्रिनेत्रधारी शङ्करजी ने सागर वन समेत पृथ्वी को रथ बनाकर सर्पों के राजा शेषनाग को रथ का अक्ष बनाकर ७० चन्द्रमा और सूर्य को रथ के पहिये बनाके और ऐलपुत्र और पुष्पदन्त को कमानी बनाकर ७१ मलयाचल को युगकरके तक्षक को त्रिवेणु बना के सर्पों समेत पर्वतों को पोकच बनाकर चारों वेदों को चारों घोड़े बनाकर धनुर्वेद आदिक उपवेदों को लगाम बनाकर ७२ । ७३ सावित्री को रस्सी ओंकार को चाबुक बनाकर और ब्रह्माजी को सारथी बनाकर ७४ उसी प्रकार मन्दराचल पर्वतको गाण्डीव और वासुकि सर्प को गुणकरके विष्णुजी को उत्तम बाण और अग्नि को भाल बनाकर ७५ वायु को बाण के पक्षों में यमराज को पुङ्खमें बिजली को निश्राणबना के और मेरु पहाड़ को ध्वजा करके ७६ फिर प्रहार करनेवालों में उत्तम और अचल शिवजी सब देवताओं के उस दिव्य रथपर सवार होकर त्रि-पुर के मारने के निमित्त ७७ असुरों के नाशकर्ता बड़े पराक्रमी तपोधन ऋषि और देवताओं से स्तुति कियेहुए श्रीमान् ७८ प्रभु शिवजी अपने से सम्बन्ध रखनेवाली दिव्य और अनूपम सवारी को बनाकर अचलरूप हजार वर्षतक नि-यत हुए ७९ जब अन्तरिक्ष के मध्य में तीनोंपुर मिलगये तब उन शिवजी ने तीन पर्व और तीन भाल रखनेवाले बाण से उन पुरों को तोड़ा ८० दानवलोग उस कालाग्नि से युक्त विष्णु और चन्द्रमासे संयुक्त उस बाण की ओर देखने को

भी समर्थ नहीं हुए ८१ फिर देवीपार्वती आप पञ्चशिखाधारी बालकको गोदी में करके उन पुरोंके भस्म करनेवाले शिवजी के देखने को गईं ८२ जाननेकी इच्छा करके उमादेवी देवताओं से बोलीं कि यह कौन है तब सब लोकों के ईश्वर समर्थ प्रभु शिवजीने हँसकर शीघ्रही उसक्रोधयुक्त और निन्दा करनेवाली और वज्र से प्रहार करनेवाली इन्द्रकी उस भुजाको वज्रसमेत रोकदिया ८३।८४इसकेपीछे वह अचल भुजावाला इन्द्र देवताओंके समूहोंसे युक्त शीघ्र अविनाशी प्रभु ब्रह्माजीके पास गया ८५ तब वह सब देवता उनको प्रणामकरके हाथजोड़कर बोले कि हे ब्राह्मण ! पार्वतीजी की गोदी में वर्तमान अपूर्व जीवधारी कौन पुरुष था ८६ वह बालरूपधारी हमसे नहीं देखागया इसहेतु से आप को पूछना चाहते हैं जिस युद्ध न करनेवाले बालक की लीला सेही इन्द्रसमेत हम सब देवता पराजितहुए तब ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ ब्रह्माजी उन देवताओंके वचनों को सुनकर ८७। ८८ स्वयम्भू ब्रह्माजी उस बड़े तेजस्वी बालक को ध्यानकरके इन्द्रादिक देवताओं से बोले ८९ कि वह बालक भगवान् हर चराचर जगत् का प्रभु है उस महेश्वर से दूसरा कोई बड़ा नहीं है जो महातेजस्वी उमा देवीके साथ तुमने देखाहै उन शिवजी ने पार्वतीजीके कारणसे बालरूप को धारणकिया तुमलोग मुझ समेत उसी को प्राप्तकरो ९० । ९१ वही भगवान् देवता सब लोकों का ईश्वर प्रभु है प्रजापतियों समेत उन सब देवताओं ने उस भुवनेश्वर बाल सूर्य के समान प्रकाशमान को नहीं जाना इसके पीछे उन पितामह ब्रह्माजीने पासजाकर महेश्वरजीको देखकर ९२।९३ उत्तम जानकर स्तुतिकरी ९४ ब्रह्माजी बोले कि तुम यज्ञ अर्थात् विष्णुरूप हो तुम्हीं इस भुवन के पालन करनेवाले हो तुम्हीं लयस्थान हो तुम्हीं उत्पत्ति के कारण हो हे महादेवजी ! तुम परमज्योतिरूप स्थान हो ९५ हे भगवन् ! हे भूत भविष्य वर्तमानके स्वामिन्, लोकनाथ, जगत्पते! यह सब स्थावर जङ्गम संसार तुमसे व्याप्तहै ९६ आपके क्रोधसे पीड़ावान् होनेवाले इन्द्र के ऊपर कृपाकरो व्यासजी बोले कि ब्रह्माजी के इन वचनों को सुनकर प्रसन्नचित्त महेश्वरजी ने कृपापूर्वक सम्मुख होकर अट्टाट्टहास किया ९७ फिर सबदेवताओंने उमादेवी समेत रुद्रजीको प्रसन्नकिया और इन्द्र की भुजा फिर यथावस्थित होगई ९८ वह देवताओं में श्रेष्ठ दक्षयज्ञविध्वंसी भगवान् शिवजी उमादेवीसमेत उन देवताओंके ऊपर प्रसन्नहुए ९९ वही रुद्र हैं

वही शिव है वही अग्नि है वही सर्वरूप है वही सबका ज्ञाता है वही इन्द्र वायु अश्विनीकुमार और वही बिजलीहै १०० वही उत्पत्ति का कारण बादल और वही महादेव है वही सनातन है वही चन्द्रमा वही ईशान और सूर्य है वही वरुण है १०१ वही काल वही नाश करनेवाली मृत्यु है वही यमराज है वही दिन रातहै वही मास, पक्ष, ऋतु, सन्ध्या और वर्ष है वही धाता, विधाता, विश्वात्मा और सृष्टिका उत्पन्न करनेवाला है वही अशरीरी होकर सब देवताओं के शरीरों को धारण करताहै १०२ सबदेवताओं से स्तूयमान वह देवता एकप्रकार अनेक प्रकार अथवा हज़ारों लाखों प्रकारका और लाखों रूपों का रखनेवाला है १०३ वेदज्ञ ब्राह्मणों ने उस देवता के दो शरीर जानेहैं एक घोर दूसरा अघोरहै फिर वह दोनोंशरीर बहुतप्रकारकेहैं १०४ उसका जो घोरशरीरहै वह अग्नि विष्णु और सूर्य है और उसका अघोर शरीर जल ज्योति अर्थात् नक्षत्र और चन्द्रमा है १०५ वेद, वेदाङ्ग, उपनिषद, पुराण यह सब आत्मतत्त्व का निश्चय करने वाले हैं जो इनमें बड़ा गुप्तहै वही निश्चय करके देवता महेश्वर है १०६ वह फिर अजन्मा भगवान् महादेवजी ऐसे हैं कि उनके गुणों का वर्णन मैं हज़ार वर्षतक भी नहीं करसक्ता हे पाण्डुनन्दन! वह शरण्य अत्यन्त प्रसन्न शिवजी सब ग्रहों के पञ्जे में फँसे हुए सब पापों से युक्त शरणागत भक्तों को मुक्त करते हैं १०७।१०८ वह शिवजी आयु नीरोगता ऐश्वर्य धन और उत्तम कामनाओं को अपने भक्तोंको देते हैं फिर वही गिराता है १०९ इन्द्र समेत सब देवताओं में उसीका ऐश्वर्य कहाजाताहै वही लोकमें मनुष्यों के शुभाशुभ कर्मोंका फल देताहै ११० वह कामनाओं के ऐश्वर्यसे ईश्वर और महेश्वर भी कहाजाताहै वह बड़े २ जीवोंका भी ईश्वर है १११ निश्चयकरके वह अनेक प्रकारके असंख्य रूपों से विश्व को व्याप्त करताहै उस देवता का जो मुख है वह समुद्र में नियत है ११२ वही बड़वानल नाम से विख्यात होकर हव्य को पानकरताहै यही देवता श्मशानभूमियोंमें सदैव वास करताहै ११३ मनुष्य उस वीरस्थान पर इस ईश्वरको पूजते हैं इसके रूप प्रकाशमान और घोर अनेकहैं ११४ मनुष्य लोकमें इसके जिन रूपों को पूजते और स्तुति करते हैं और लोकमें उसके सार्थक अनेक नामहैं ११५ प्रतिष्ठा और कर्मोंकी प्रसिद्धिसे सदैव कहेजाते हैं और वेदमें उसकी शतरुद्री गाईजाती है और उस महात्मा का उपस्थान अनन्त रुद्र

नामहै ११६ वह देवता कामनाओं का प्रभु है जो दिव्य और मानुष है वह विभु और प्रभु बड़ा देवता विश्वको व्यापित करताहै ११७ ब्राह्मण और मुनिलोग उसको सब से परे कहते हैं यही देवताओं का आदि है इसी के मुख से अग्नि उत्पन्नहुई है ११८ जिसहेतुसे कि सबप्रकारकरके जीवोंका पालन करताहै साथ रहताहै और उन्होंका बड़ा स्वामी है इसीसे विश्वपति कहागयाहै ११६ जिस हेतुसे कि उसका लिङ्ग अविनाशी और ब्रह्मचर्यके साथ नियतहै और लोकका पालन करताहै उस हेतुसे महेश्वर कहागयाहै १२० ऋषि, देवता, गन्धर्व और अप्सराओंने उसके लिङ्गको पूजा वह भी सबसे परे नियतहै १२१ उस लिङ्गके पूजे जानेपर वह महेश्वरजी अत्यन्त प्रसन्न होतेहैं और उस पूजासे वह सूक्ष्म शरीरसे भी बहुत सुखीहोके सर्वानन्द को देते हैं १२२ जिस हेतु से कि उसके बहुत प्रकारके जड़चैतन्य नामरूप भूत भविष्य और वर्तमान तीनोंकालोंमें नियत हैं उस हेतुसे भवरूप कहेजातेहैं १२३ अग्निरूप एकनेत्र रखनेवाला और सब ओरको नेत्र रखनेसे भी प्रकाशमानहै और जो क्रोधसे लोकों में व्याप्तहुआ इस हेतुसे सर्वरूप कहागया १२४ और जोकि उसकाधूम्ररूपहै इसीसेधूर्जटीकहाजाता है और जोकि उसमें विश्वेदेवा तन्मयहैं इसीसे वह विश्वरूप कहागया १२५ जब स्वर्ग जल पृथ्वीनाम यह तीनों देवी उस भुवनेश्वरको भजती हैं उस हेतु से त्र्यम्बक कहेजाते हैं १२६ जोकि वह सब कर्मों में मनुष्यों के कल्याण को चाहता है उसहेतु से शिव कहाजाताहै १२७ और जोकि यह महापुरुष सहस्राक्ष अयुताक्ष और सब ओर को नेत्र करके विश्व का पोषण करता है उस हेतु से महादेव कहाजाता है १२८ जोकि महत्तत्त्व से पूर्व नियतहुआ और जिस हेतु से प्राण की उत्पत्ति स्थिति से भी पूर्वहुआ और सदैव अचल स्वरूपवाला है उस हेतुसे स्थाणु कहाजाताहै १२६ लोकमें जो सूर्य चन्द्रमा और अग्निकी किरणें प्रकाश को करती हैं वह सूर्य चन्द्रमा और अग्निरूप नेत्र रखनेवाले शिवजी के केश संज्ञकनाम हैं इसी हेतु से व्योमकेश कहेजाते हैं १३० जोकि तीनों कालों में उत्पन्न होनेवाला सब जगत् शिवरूप है इसहेतु से वह तीनों कालों का उत्पत्तिस्थान है १३१ शरीरों के मध्य में दशप्रकार के विषम रूपों से नियत है और इस लोक में आत्मारूप होनेसे सब जीवों का समरूप है वह विषमता में नियत जीवों के मध्य में प्राण और अपानरूप वायु है १३२ जोकि उस

महात्मा के स्वरूप और लिङ्गको भी पूजता है वह लिङ्ग का पूजन करनेवाला सदैव बड़ी लक्ष्मी को भोगता है १३३ दोनों जङ्घाओं से ऊपर शिवजी का शरीर अग्निरूप है अर्थात् भोगनेवाला है उसी से ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्पन्न हुए और शिवजी का आधाशरीर चन्द्रमारूप है अर्थात् भोजनरूप है उसमें से वैश्य और शूद्र उत्पन्नहुए इस प्रकार से शिवजी का आधा शरीर अग्नि और आधा चन्द्रमा कहा जाता है १३४ उसका बड़ा शरीर देवताओं से भी अधिक तेजस्वी और प्रकाशमान है और नरलोकों के मध्य में उसका प्रकाशमान घोर शरीर अग्निरूप कहाजाता है १३५ इसी प्रकार जो उसका शिवनाम शरीर है वह ब्रह्मचर्य को करता है और जो उसका बड़ा घोररूप है वह ईश्वररूप सब का भक्षण करता है १३६ जोकि अग्नि के समान भस्म करता है और शस्त्र के समान तीक्ष्ण है और यमराज के समान उग्र है और काल के समान प्रतापवान् है और मांस रुधिर और मज्जा का भक्षण करनेवाला है इन सब कारणों से रुद्र कहाजाता है १३७ कपि शब्द श्रेष्ठ का वाची है और वृष धर्म कहा जाता है इसी हेतु से वह देवताओं का भी देवता भगवान् वृषाकपि नाम कहाजाता है १३८ और जोकि ब्रह्मा इन्द्र वरुण और कुबेर को अपने आधीन करता है इसहेतु से हरनाम कहाजाता है १३९ देवता महेश्वर ने बन्द कियेहुए नेत्रों समेत बलकरके अपने ललाट में तीसरे नेत्र को उत्पन्न किया उसी हेतु से वह त्र्यक्ष कहाजाता है १४० हे अर्जुन ! यह देवता महादेव हैं जो युद्ध में पिनाक धनुषधारी होकर तेरे आगे शत्रुओं के मनुष्यों को मारताहुआ तुझ को दिखाई दिया १४१ हे निष्पाप ! जिसको कि तैंने जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञाके समय स्वप्नावस्था में गिरिराज के ऊपर श्रीकृष्णजी के द्वारा देखा १४२ वही देवता युद्धमें तेरेआगे होकर अपनी भक्तवत्सलता से उपाय करता है जिसने कि तुझ को वह अस्त्र दिये जिन अस्त्रों के द्वारा तुमने दानवों को मारा १४३ हे अर्जुन ! यह मैंने देवताओं के देवता शिवजी की शतरुद्री तुझसे कही यह शतरुद्री धन यश और आयु की देनेवाली पवित्र वेदों के समान १४४ सब मनोरथों की पूरी करनेवाली सबपापों की नाशक और भयों की निवारण करनेवाली है १४५ जो मनुष्य शुद्धतापूर्वक इस मोक्ष धन कीर्ति आदिके देनेवाले स्तोत्र को सदैव शुद्ध, यश, सूत्र, विराट इन चारों प्रकारों से श्रद्धा से सुनताहै वह सब शत्रुओंको

विजयकर के रुद्रलोकमें पूजितहोता है १४६ यह युद्धसम्बन्धी महात्मा शिवजी का प्राचीन चरित्र मैंने कहा जो सावधान मनुष्य इस नरलोक में इस शतरुद्री को सदैव पढ़ता और सुनता है १४७ वह पुरुष विष्णु ईश्वर देवता का भक्त होकर शिवजी के प्रसन्नहोने पर उत्तम कामनाओं को पाता है १४८ हे कुन्ती के पुत्र! जाओ युद्धकरो तेरी पराजय नहीं है जिसके कि मन्त्री रक्षक १४९ मित्र शुभचिन्तक बन्धुरूप और पार्श्ववर्ती श्रीकृष्णजी हैं उसकी पराजय कैसे होसक्ती है १५० सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ, शत्रुओं के विजय करनेवाले धृतराष्ट्र! वह व्यासजी युद्ध में अर्जुन से ऐसा कहकर जैसे आये थे वैसेही चले गये १५१ हे राजन्! महाबली अद्भुतपराक्रमी ब्राह्मण द्रोणाचार्यजी पांचदिन घोर युद्धकरके मारेगये और ब्रह्मलोक को प्राप्तभये १५२ अच्छीरीति से वेदके पढ़नेमें जो फल है वह इस पर्व में है क्योंकि इसमें भयसे रहित क्षत्रियोंका बड़ा यश संयुक्त है १५३ जो इस पर्व को पढ़ेगा या सदैव सुनेगा वह बड़े महापापों से और कियेहुए घोर कर्मों से छूटेगा १५४ इस घोरयुद्ध में सदैव ब्राह्मणको तो यज्ञ का फल और क्षत्रियों को उत्तम यश का फल मिलता है और शेष बचे हुए वैश्य और शूद्र वर्णों को अभीष्ट फल मिलता है इन फलों के सिवाय चारों वर्णवाले अपने २ प्रिय पौत्रादि धन ऐश्वर्य को भी पाते हैं॥ १५५॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणितृतीयोपरिद्विशततमोऽध्यायः॥ २०३॥

द्रोणपर्व समाप्तहुआ—शुभंभूयात्॥

———*———